

सापत ॐ ताड़त परुष कहंता । विप्र पूज्य अस गावहिं संता ॥  
 पूजिअ विप्र सील गुन हीना । सूद्र न गुन गन ग्यान प्रवीना ॥  
 कहि निज धर्म ताहि समुझावा । निज पद प्रीति देखि मन भावा  
 रघुपति चरन कमल सिरु नाई । गयउ गगन आपनि गति पाई ॥  
 ताहि देइ गति राम उदारा । सबरी कैं आश्रम पगु धारा ॥  
 सबरी देखि राम गृहँ आए । मुनि के बचन समुझि जियँ भाए  
 सरसिज लोचन बाहु विसाला । जटा मुकुट सिर उर बनमाला ॥  
 स्याम गौर सुंदर दोउ भाई । सबरी परी चरन लपटाई ॥  
 प्रेम मगन मुख बचन न आवा । पुनि पुनि पद सरोज सिर नावा  
 सादर जल लै चरन पखारे । पुनि सुंदर आसन बैठारे ॥  
 दो०—कंद मूल फल सुरस अति दिए राम कहूँ आनि ।

प्रेम सहित प्रभु खाए बारंबार बखानि ॥ ३४ ॥

पानि जोरि आगें भइ ठाढ़ी । प्रभुहि बिलोकि प्रीति अति बाढ़ी  
 केहि विधि अस्तुति करौं तुम्हारी । अधम जाति मैं जड़मति भारी  
 अधम ते अधम अधम अति नारी । तिन्ह महँ मैं मतिमंद अघारी ॥  
 कह रघुपति सुनु भामिनि बाता । मानउँ एक भगति कर नाता ॥  
 जाति पाँति कुल धर्म बढ़ाई । धन बल परिजन गुन चतुराई ॥  
 भगति हीन नर सोहइ कैसा । विनु जल वारिद देखिअ जैसा  
 नवधा भगति कहउँ तोहि पाहीं । सावधान सुनु धरु मन माहीं ॥  
 प्रथम भगति संतन्ह कर संगी । दूसरि रति मम कथा प्रसंगी ॥



दो०-पुरइनि सघन ओट जल वेगि न पाइअ मर्म ।

मायालज्ज न देखिए जैसैं निर्गुन ब्रह्म ॥३९(क)॥

सुखी मीन सब एकरस अति अगाध जल माहिं ।

जथा धर्मसीलन्ह के दिन सुख संशुत जाहिं ॥३९(ख)॥

विकसे सरसिज नाना रंगा । मधुर मुखर गुंजत बहु भृंगा ॥

बोलत जलकुवकुट कलहंसा । प्रभु विलोकि जनु करत प्रसंसा ॥

चक्रवाक बक खग समुदाई । देखत बनइ वरनि नहिं जाई ॥

सुंदर गगन गिरा सुहाई । जात पथिक जनु लेत बोलाई ॥

ताल समीप मुनिन्ह गृह छाए । चहु दिसि कानन बिटप सुहाए ॥

चंपक बकुल कदंब तमाला । पाटल पनस परास रसाला ॥

नय पल्लव कुसुमित तरु नाना । चंचरीक पटली कर गाना ॥

सीतल मंद सुगंध सुभाऊ । संतत बहइ मनोहर बाऊ ॥

कुहू कुहू कोकिल धुनि करहीं । सुनि रव सरस ध्यान मुनि टरहीं ॥

दो०-फल भारन नमि बिटप सब रहे भूमि निभराइ ।

पर उपकारी पुरुष जिमि नवहिं सुसंपति पाइ ॥ ४० ॥

देखि राम अति रुचिर तलावा । मज्जनु कीन्ह परम सुख पावा ॥

देखी सुंदर तरुवर छाया । बैठे अनुज सहित रघुराया ॥

तहँ पुनि सकल देव मुनि आए । अस्तुति करि निज धाम सिधाए ॥

बैठे परम प्रसन्न कृपाला । कहत अनुज सन कथा रसाला ॥

विरहवंत भगवंतहि देखी । नारद मन भा सोच विशेषी ॥

मोर साप करि अंगीकारा । सहत राम नाना दुख भारा ॥  
 ऐसे प्रभुहि त्रिलोकउँ जाई । पुनि न वनिहि अस अवसर आई  
 यह विचारि नारद कर बीना । गए जहाँ प्रभु सुख आसीना ॥  
 गावत राम चरित मृदु वानी । प्रेम सहित बहु भाँति बखानी ॥  
 करत दंडवत लिए उठाई । राखे बहुत बार उर लाई ॥  
 स्वागत पूँछि निकट बैठारे । लछिमन सादर चरन पखारे ॥

दो०—नाना विधि चिन्तनी करि प्रभु प्रसन्न जियँ जानि ।

नारद बोले बचन तब जोरि सरोरुह पानि ॥ ४१ ॥

सुनहु उदार सहज रघुनाथक । सुंदर अगम सुगम वर दायक ॥  
 देहु एक वर मागउँ स्वामी । जद्यपि जानत अंतरजामी ॥  
 जानहु मुनि तुम्ह मोर सुभाऊ । जन सन कबहुँ कि करउँ दुराऊ  
 कवन वस्तु असि प्रिय मोहि लागी । जो मुनिवर न सकहु तुम्ह मागी ॥  
 जन कहूँ कद्यु अदेय नहि मोरें । अस विस्वास तत्रहु जनि भोरें ॥  
 तब नारद बोले हरपाई । अस वर मागउँ करउँ दिठाई ॥  
 जद्यपि प्रभु के नाम अनेका । श्रुति कह अधिक एक तें एका ॥  
 राम सकल नामन्ह ते अधिका । होउ नाथ अब खग गन बाधिका ॥

दो०—राका रजनी भगति तब राम नाम सोइ सोम ।

अपर नाम उडगन विमल बसहुँ भगत उर व्योम ॥ ४२ (क) ॥

एवमस्तु मुनि सन कहै कृपा सिंधु रघुनाथ ।

तब नारद मन हरष अति प्रभु पद नाथ उ माथ ॥ ४२ (ख) ॥



अति प्रसन्न रघुनाथहि जानी । पुनि नारद बोले मृदु बानी ॥  
 राम जबहिं प्रेरेउ निज माया । मोहेहु मोहि सुनहु रघुराया ॥  
 तव विवाह मैं चाहउँ कीन्हा । प्रभु केहि कारन करै न दीन्हा ॥  
 सुनु मुनि तोहि कहउँ सहरोसा । भजहिं जे मोहि तजि सकल भरोसा  
 करउँ सदा तिन्ह कै रखवारी । जिमि बालक राखइ महतारी ॥  
 गह सिसु बच्छ अनल अहि धाई । तहँ राखइ जननी अरगाई ॥  
 प्रौढ़ भएँ तेहि सुत पर माता । प्रीति करइ नहिं पाछिलि वाता ॥  
 मोरें प्रौढ़ तनय सम ग्यानी । बालक सुत सम दास अमानी ॥  
 जनहि मोर बल निज बल ताही । दुहु कहँ काम क्रोध रिपु आही ॥  
 यह विचारि पंडित मोहि भजहीं । पाएहुँ ग्यान भगति नहिं तजहीं ॥

दो०—काम क्रोध लोभादि मद प्रबल मोह कै धारि ।

तिन्ह महँ अति दारुन दुखद मायारूपी नारि ॥ ४३ ॥

सुनु मुनि कह पुरान श्रुति संता । मोह विपिन कहँ नारि बसंत ॥  
 जप तप नेम जलाश्रय शारी । होइ ग्रीष्म सोषइ सब नारी ॥  
 काम क्रोध मद मत्सर भेका । इन्हहि हरपप्रद वरषा एका ॥  
 दुर्वासना कुमुद समुदाई । तिन्ह कहँ सरद सदा सुखदाई ॥  
 धर्म सकल सरसीरुह बृंदा । होइ हिम तिन्हहि दहइ सुख मंदा ॥  
 पुनि ममता जवास बहुताई । पल्लवइ नारि सिसिर रितु पाई ॥  
 पाप उलूक निकर सुखकारी । नारि निविड़ रजनी अँधिआरी ॥  
 बुधि बल सील सत्य सब मीना । बनसी सम त्रिय कहहिं प्रवीना ॥

दो०—भवगुन मूल सूलप्रद प्रमदा सब दुख खानि ।

ताते कीन्ह निवारन मुनि मैं यह जियँ जानि ॥ ४४ ॥

मुनि रघुपति के बचन सुहाए । मुनि तन पुलक नयन भरि आए  
कहहु कवन प्रभु कै असि रीती । सेवक पर ममता अरु प्रीती ॥  
जे न भजहिँ अस प्रभु भ्रम त्यागी । ग्यान रंक नर मंद अभागी ॥  
पुनि सादर बोले मुनि नारद । सुनहु राम विग्यान विसारद ॥  
संतन्ह के लच्छन रघुबीरा । कहहु नाथ भव भंजन भीरा ॥  
सुनु मुनि संतन्ह के गुन कहजँ । जिन्ह ते मैं उन्ह कैं बस रहजँ ॥  
पट विकारजित अनघ अकामा । अचल अकिंचन सुचि सुखधामा  
अमितबोध अनीह मितभोगी । सत्यसार कवि कोविद जोगी ॥  
सावधान मानद मदहीना । धीर धर्म गति परम प्रवीना ॥

दो०—गुनागार संसार दुख रहित विगत संदेह ।

तजि मम चरन सरोज प्रिय तिन्ह कहूँ देह न गेह ॥ ४५ ॥

निज गुन श्रवन सुनत सकुचार्हीं । पर गुन सुनत अधिक हरषार्हीं  
सम सीतल नहिँ त्यागहिँ नीती । सरल सुभाउ सबहि सन प्रीती ॥  
जप तप व्रत दमसंजम नेमा । गुरु गोविंद विप्र पद प्रेमा ॥  
श्रद्धा छमा मयत्री दाया । मुदिता मम पद प्रीति अमाया ॥  
विरति विवेक विनय विग्याना । बोध जथारथ वेद पुराना ॥  
दंभ मान मद करहिँ न काऊ । भूलि न देहिँ कुमारग पाऊ ॥  
गावहिँ सुनहिँ सदा मम लीला । हेतु रहित परहित रत सीला ॥

मुनि सुनु साधुन्ह के गुन जेते । कहि न सकहि सारद श्रुति तेते ॥

छं०—कहि संक न सारद सेष नारद सुनत पद पंकज गहे ।  
अस दीनबंधु कृपाल अपने भगत गुन निज मुख कहे ॥  
सिरु नाइ बारहिं वार चरनन्हि ब्रह्मपुर नारद गए ।  
ते धन्य तुलसीदास आस बिहाइ जे हरि रँग रँग ॥

दो०—रावनारि जसु पावन गावहिं सुनहिं जे लोग ।  
राम भगति दृढ़ पावहिं बिनु विराग जप जोग ॥ ४६ (क) ॥  
दीप सिखा सम जुबति तन मन जनि होसि परंग ।  
भजहि राम तजि काम मद करहि सदा सतसंग ॥ ४६ (ख) ॥

मासपारायण, चाईसवाँ विश्राम

ते श्रीमद्रामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसने  
तृतीयः सोपानः समाप्तः ।

(अरण्यकाण्ड समाप्त)



॥ श्रीरामाय नमः ॥

# श्रीरामचरितमानस

किष्किन्धाकाण्ड



## समुद्रतटपर—( सीताकी खोज )



अस कहि लवनसिंधु तट जाई ।

बैठे कपि सब दर्भ डसाई ॥

श्रीगणेशाय नमः

श्रीजानकीवल्लभो विजयते

# श्रीरामचरितमानस

— ❁ —

## चतुर्थ सोपान

( किष्किन्धाकाण्ड )

— ❁ —

श्लोक

कुन्देन्दीवरसुन्दरावतिबलौ विज्ञानधामाबुभौ  
शोभाढ्यौ वरधन्विनौ श्रुतिनुतौ गोविप्रवृन्दप्रियौ ।  
मायामानुपरूपिणौ रघुवरौ सद्धर्मवर्मौ हितौ  
सीतान्वेषणतत्परौ पथिगतौ भक्तिप्रदौ तौ हि नः ॥ १ ॥

ब्रह्माम्भोधिसमुद्भवं कलिमलप्रध्वंसनं चाव्ययं  
श्रीमच्छम्भुमुखेन्दुसुन्दरवरे संशोभितं सर्वदा ।

संसारामयभेषजं सुखकरं श्रीजानकीजीवनं  
धन्यास्ते कृतिनः पिबन्ति सततं श्रीरामनामामृतम् ॥ २ ॥

सो०-सुक्ति जन्म महि जानि ग्यान खानि भव हानिकर ।  
जहँ बस संभु भवानि सो कासी सेइअ कस न ॥  
जरत सकल सुर वृंद विषम गरल जेहिं पान किय ।  
तेहि न भजसि मन मंद को कृपाल संकर सरिस ॥

आगेँ चले बहुरि रघुराया । रिष्यमूक पर्वत निअराया ॥  
तहँ रह सचिव सहित सुग्रीवा । आवत देखि अतुल बल सींवा ॥  
अति सभीत कहसुनु हनुमाना । पुरुष जुगल बल रूप निधाना ॥  
धरि बटु रूप देखु तैं जाई । कहेसु जानि जियँ सयन बुझाई ॥  
पठए बालि होहिं मन मैला । भागौँ तुरत तजौँ यह सैला ॥  
विप्र रूप धरि कपि तहँ गयऊ । माथ नाइ पूछत अस भयऊ ॥  
को तुम्ह स्यामल गौर सरीरा । छत्री रूप फिरहु बन बीरा ॥  
कठिन भूमि कोमल पद गामी । कवन हेतु विचरहु बन स्वामी ॥  
मृदुल मनोहर सुंदर गाता । सहत दुसह बन आतप बाता ॥  
की तुम्ह तीनि देव महँ कोऊ । नर नारायन की तुम्ह दोऊ ॥

दो०-जग कारन तारन भव भंजन धरंती भार ।

की तुम्ह अखिल भुवन पति लीन्ह मनुज अवतार ॥ १ ॥

कोसलेस दसरथ के जाए । हम पितु वचन मानि बन आए ॥  
नाम राम लछिमन दोउ भाई । संग नारि सुकुमारि सुहाई ॥

हौं हरी निमिचर वैदेही । विप्र फिरहिं हम खोजत तेही ॥  
 आपन चरित कहा हम गार्ह । कहहु विप्र निज कथा सुगार्ह ॥  
 प्रभु पहिचानि परेउ गहि चरना । मो सुख उमा जाइ नहिं वरना ॥  
 ललित तन मुख आवन वचना । देवत कचिर बेर कै रचना ॥  
 पुनि धीरु धरि अस्तुति कीन्दी । हृष्य हृदयै निज नाथहि चीन्दी ॥  
 मोर न्याउ मैं पूछा गार्ह । तुम्ह पूछहु कम नर की नाई ॥  
 तव माया बस फिरउँ भुजाना । ता ते मैं नहिं प्रभु पहिचाना ॥  
 श्लो०—एकु मैं मंद मोहयस कुटिल हृदय अग्यान ।

पुनि प्रभु मोहि दिसारेउ दीन बंधु भगवान ॥ २ ॥  
 तदपि नाथ बहु अयगुन मोरे । सेवक प्रभुहि परे जनि मोरे ॥  
 नाथ जीव तव माया मोहा । सो निस्तरह तुम्हारेहि छोहा ॥  
 ना पर मैं रघुवीर दोहाई । जानउँ नहिं कहु भजन उपाई ॥  
 सेवक सुत पति मातु भरोसे । रहइ अमोच बनइ प्रभु पोसे ॥  
 प्रस कहि परेउ चरन अकुलार्ह । निज तनु प्रगटि प्रीति उर छाई ॥  
 तव रघुपति उठाइ उर लावा । निज लोचन जल सींचि जुड़ावा ॥  
 तुनु कपि जियै मानसि जनि ऊना । तैं मम प्रिय लछिमन ते दूना ॥  
 समदरसी मोहि कह सव कोऊ । सेवक प्रिय अनन्यगति सोऊ ॥  
 श्लो०—सो अनन्य जाकैं असि मति न टरइ हनुमंत ।

मैं सेवक सचराचर रूप स्वामि भगवंत ॥ ३ ॥  
 तखि पवनसुत पति अनुकूला । हृदयै हरष वीती सव सूला ॥



नाथ सैल पर कपिपति रहई । सो सुग्रीव दास तव अहई ॥  
 तेहि सन नाथ मयत्री कीजे । दीन जानि तेहि अभय करीजे ॥  
 सो सीता कर खोज कराइहि । जहँ तहँ मरकट कोटि पठाइहि ॥  
 एहि विधि सकल कथा समुझाई । लिए दुऔ जन पीठि चढ़ाई ॥  
 जब सुग्रीवँ राम कहँ देखा । अतिसय जन्म धन्य करि लेखा ॥  
 सादर मिलेउ नाइ पद माथा । भेंटैउ अनुज सहित रघुनाथा ॥  
 कपि कर मन बिचार एहि रीती । करिहहि विधि मो सन ए प्रीती ॥  
 दो०—तव हनुमंत उभय दिसि की सब कथा सुनाइ ।

पावक साखी देइ करि जोरी प्रीति दढ़ाइ ॥ ४ ॥

कीन्हि प्रीति कछु बीच न राखा । लछिमन राम चरित सब भाषा  
 कह सुग्रीव नयन भरि बारी । मिलिहि नाथ मिथिलेसकुमारी ॥  
 मंत्रिन्ह सहित इहाँ एक बारा । बैठ रहेउँ मैं करत बिचारा ॥  
 गगन पंथ देखी मैं जाता । परबस परी बहुत बिलपाता ॥  
 राम राम हा राम पुकारी । हमहि देखि दीन्हेउ पट डारी ॥  
 मागा राम तुरत तेहि दीन्हा । पट उर लाइ सोच अति कीन्हा ॥  
 कह सुग्रीव सुनहु रघुवीरा । तजहु सोच मन आनहु धीरा ॥  
 सब प्रकार करिहउँ सेवकाई । जेहि विधि मिलिहि जानकी आई  
 दो०—सखा वचन सुनि हरषे कृपासिंधु बलसीव ।

कारन कवन बसहु बन मोहि कहहु सुग्रीव ॥ ५ ॥

नाथ वालि अरु मैं द्वौ भाई । प्रीति रही कछु बरनि न जाई ॥

मय सुत मायायी तेहि नाऊँ । आया सो प्रभु हमरें गाऊँ ॥  
 अर्थ राति पुर द्वार चुकाया । बाली गिधु बल नई न पाया ॥  
 धाया बालि देखि सो भागा । मैं पुनि गयउँ बंधु संग लागा ॥  
 गिरिधर गुहौं पैठ सो जाई । तब बाली मोहि कहा बुझाई ॥  
 परिलेसु मोहि एक पल्लवारा । नहि आयाँ तब जानेसु मारा ॥  
 मास द्वियस तहँ रहेउँ खरारी । निगरी नथिर धार तहँ भारी ॥  
 बालि हतेसि मोहि मागिहि आई । सिला देइ तहँ चलेउँ फगाई ॥  
 मंथिन्ह पुर देखा विनु आई । दानेउ मोहि राज बरिआई ॥  
 बाली ताहि मारि गृह आया । देखि मोहि जियँ भेद बढ़ाया ॥  
 रिपु नम मोहि मांगेसि अति भारी । हरि लीनेसि सर्वसु अर नारी ॥  
 ताकें भय न्युर्वार कृपाया । सकल भुवन मैं किं उँ विहाया ॥  
 इहौं गाय बस आवत नही । तदसि समीन गहँ मन मारी ॥  
 सुनि सेवक दुख दानदयाला । परकि उठौं द्वै भुजा बिसाला ॥

दो०-सुनु सुग्राय मारिहउँ बालिहि एकहिं यान ।

माय रद सरनागत गयँ न उबरिहिं प्रान ॥ ६ ॥

जे न मित्र दुख होहिं दुखारी । तिन्हहि विलोकत पातक मारी ॥  
 निज दुख गिरि गम रज करि जाना । मित्रक दुख रज मेरु समाना ॥  
 जिन्ह कें आँउ मति सहज न आई । ते सठ कत हठि करत मिताई ॥  
 कुपथ निवारि सुबंध चलाया । गुन प्रगटे अवगुनहि दुराया ॥  
 देत लेत मन संक न भरई । बल अनुमान सदा हित करई ॥

विपति काल कर सतगुन नेहा । श्रुति कह संत मित्र गुन एहा ॥  
 आगें कह मृदु वचन बनाई । पाछें अनहित मन कुटिलाई ॥  
 जा कर चित अहि गति सम भाई । अस कुमित्र परिहरेहिं भलाई ॥  
 सेवक सठ नृप कृपन कुनारी । कपटी मित्र सूल सम चारी ॥  
 सखा सोच त्यागहु बल मोरें । सब विधि घटव काज मैं तोरें ॥  
 कह सुग्रीव सुनहु रघुवीरा । बालि महाबल अति रनधीरा ॥  
 दुंदुभि अस्थि ताल देखराए । विनु प्रयास रघुनाथ ढहाए ॥  
 देखि अमित बल बाढ़ी प्रीती । बालिवधव इन्ह भइ परतीती ॥  
 बार बार नावइ पद सीसा । प्रभुहि जानि मन हरप कपीसा ॥  
 उपजा ग्यान वचन तव बोला । नाथ कृपाँ मन भयउ अलोला ॥  
 सुख संपति परिवार बढ़ाई । सब परिहरि करिहउँ सेवकाई ॥  
 ए सब राम भगति के बाधक । कहहिं संत तव पद अवराधक ॥  
 सत्रु मित्र सुख दुख जग माहीं । माया कृत परमारथ नाहीं ॥  
 बालि परम हित जासु प्रसादा । मिलेहु राम तुम्ह समन विषादा ॥  
 सपनैं जेहि सन होइ लराई । जागें समुझत मन सकुचाई ॥  
 अब प्रभु कृपा करहु एहि भाँती । सब तजि भजनु करौं दिन रा ॥  
 सुनि विराग संजुत कपिवानी । बोले विहँसि रामु धनुपा ॥  
 जो कछु कहेहु सत्य सब सोई । सखा वचन मम मृपा न होई ॥  
 नट मरकट इव सबहि नचावत । रामु खगेस वेद अस गावत ॥  
 लैं सुग्रीव संग रघुनाथा । चले चाप सायक गहि हवा ॥  
 तव रघुपति सुग्रीव पठावा । गर्जेसि जाइ निकट बल ॥

सुनत बालि क्रोधातुर धावा । गहि कर चरन नारि समुक्षावा ॥  
सुनु पति जिन्हहि मिलेउ सुग्रीवा । ते द्वौ बंधु तेज बल सीवा ॥  
कोसलेस सुत लछिमन रामा । कालहु जीति सकहि संग्रामा ॥

दो०—कह बाली सुनु भीरु प्रिय समदरसी रघुनाथ ।

जौं कदाचि मोहि मारहिं तौ पुनि होई सनाथ ॥ ७ ॥

अस कहि चला महा अभिमानी । तून समान सुग्रीवहि जानी ॥  
भिरे उभौ बाली अति तर्जा । मुटिका मारि महाधुनि गर्जा ॥  
तब सुग्रीव विकल होइ भागा । मुष्टि प्रहार बज्र सम लागा ॥  
मैं जो कहा रघुवीर कृपाला । बंधु न होइ मोर बह काया ॥  
एकरूप तुम्ह भ्राता दोऊ । वेदि भ्रम तैं नहिं मारैं मंजु ॥  
कर परसा सुग्रीव स्त्रीरा । तनु मा झुंझि गहं मर पीरा ॥  
मेली कंठ सुमन कै मात । पटवा पुनि बल देइ विमला ॥  
पुनि नाना विधि मई लगाई । चित्त अंत देखहिं रघुगई ॥

दो०—बहु छल बल सुग्रीव कर दिई हाथ मय मानि ।

मारा बालि राम तब हृदय मरु कर दानि ॥ ८ ॥

परा विकल मदि कर के लग्यो । पुनि उठै दै देखि प्रभु अग्यो ॥  
स्याम गाव सिर जय कर दो । अन्न नल्ल नर जय चह्यो ॥  
पुनि पुनि चितइ चरन चित देख्यो । सुख बल्य कान मरु चह्यो ॥  
हृदय प्रीति मुख बचन कटो । बोल्य चित्त ॥  
धर्म हेतु अयतंहु मंग्यो । मोह्यो मोहि ॥

मैं बैरी सुग्रीव पिआरा। अवगुन कवन नाथ मोहि मारा॥  
 अनुजबधू भगिनी सुतनारी। सुनु सठ कन्या सम ए चारी॥  
 इन्हहि कुट्टि विलोकइ जोई। ताहि बधैं कछु पाप न होई॥  
 मूढ़ तोहि अतिसय अभिमाना। नारि सिखावन करसि न काना  
 मम भुज बल आश्रित तेहि जानी॥ मारा चहसि अधम अभिमानी॥

दो०-सुनहु राम स्वामी सन चल न चातुरी मोरि ।

प्रभु अजहूँ मैं पापी अंत काल गति तोरि ॥ ९ ॥

सुनत राम अति कोमल बानी। बालि सीस परसेउ निज पानी॥  
 अचल करौं तनु राखहु प्राणा। बालि कहा सुनु कृपानिधाना॥  
 तन्म जन्म मुनि जतनु कराहीं। अंत राम कहि आवत नाहीं॥  
 जासु नाम बल संकर कासी। देत सबहि सम गति अबिनासी॥  
 मम लोचन गोचर सोइ आवा। बहुरि कि प्रभु अस बनिहि बनावा

छं०-सो नयन गोचर जासु गुन नित नेति कहि श्रुति गावहीं ।  
 जिति पवन मन गो निरस करि गुनि ध्यान कबहुँक पावहीं ॥  
 मोहि जानि अति अभिमान बस प्रभु कहेउ राखु सरीरही ।  
 अस कवन सठ हठि काटि सुरस्तरु बारि करिहि बबूरही ॥१॥  
 अब नाथ करि करुना विलोकहु देहु जो वर मागऊँ ।  
 जेहिं जोनि जन्मौं कर्म बस तहँ राम पद अनुरागऊँ ॥  
 यह तनय मम सम विनय बल कल्याणप्रद प्रभु लीजिए ।  
 गहि बाँह सुर नर नाह आपन दास अंगद कीजिए ॥

दो:- एक वरन हूँ प्रीति करि बलि कोन्ह तुल्य ।

हरन नाल विनि कों दे गिरन न जानू नाल ॥ १० ॥

रन बलि निज मन गवाव । नर लेन लन नालुल बाल ।

नन विधि विधान कर तार । कुहे को न हो रौनार ।

तर विजय होखे सुख । होखे मन हरि लीली नाल ।

विनि कर नाल नाल नाल । नन रनिन अति अति नाल ।

नन को नु लन नाल । नन नाल को नाल नाल ।

नन नाल नाल नाल । नन नाल नाल नाल ।

नन नाल नाल नाल । नन नाल नाल नाल ।

नन नाल नाल नाल । नन नाल नाल नाल ।

नन नाल नाल नाल । नन नाल नाल नाल ।

नन नाल नाल नाल । नन नाल नाल नाल ।

नन नाल नाल नाल । नन नाल नाल नाल ।

नन नाल नाल नाल । नन नाल नाल नाल ।

रह दीन दुखी नाल । नन नाल नाल नाल ॥ ११ ॥

नन नाल नाल नाल । नन नाल नाल नाल ।

नन नाल नाल नाल । नन नाल नाल नाल ।

नन नाल नाल नाल । नन नाल नाल नाल ।

नन नाल नाल नाल । नन नाल नाल नाल ।

नन नाल नाल नाल । नन नाल नाल नाल ।

नन नाल नाल नाल । नन नाल नाल नाल ।

नन नाल नाल नाल । नन नाल नाल नाल ।

मैं बैरी सुग्रीव पिआरा । अवगुन कवन नाथ मोहि मारा ॥  
 अनुजबधू भगिनी सुतनारी । सुनु सठ कन्या सम ए चारी ॥  
 इन्हहि कुदृष्टि बिलोकइ जोई । ताहि वर्धे कछु पाप न होई ॥  
 मूढ़ तोहि अतिसय अभिमाना । नारि सिखावन करसि न काना  
 मम भुज बल आश्रित तोहि जानी । मारा चहसि अधम अभिमानी ॥

दो०—सुनहु राम स्वामी सन चल न चातुरी मोरि ।

प्रभु अजहूँ मैं पापी अंत काल गति तोरि ॥ ९ ॥

सुनत राम अति कोमल बानी । बालि सीस परसेउ निज पानी ॥  
 अचल करौं तनु राखहु प्राणा । बालि कहा सुनु कृपानिधाना ॥  
 जन्म जन्म मुनि जतनु कराहीं । अंत राम कहि आवत नाहीं ॥  
 जासु नाम बल संकर कासी । देत सबहि सम गति अबिनासी ॥  
 मम लोचन गोचर सोइ आवा । बहुरि कि प्रभु अस बनिहि बनावा

दं०—सो नयन गोचर जासु गुन नित नेति कहि श्रुति गावहीं ।

जिति पवन मन गो निरस करि गुनि ध्यान कबहुँक पावहीं ॥  
 मोहि जानि अति अभिमान बस प्रभु कहेउ राखु सरिरही ।  
 अस कवन सठ हठि काटि सुरतरु बारि करिहि बबूरही ॥१  
 अब नाथ करि करुना बिलोकहु देहु जो वर मागऊँ ।  
 जेहिं जोनि जन्मों कर्म बस तहँ राम पद अनुरागऊँ ॥  
 यह तनय मम सम विनय बल कल्याणप्रद प्रभु लीजिए ।  
 गहि वाँह सुर नर नाह आपन दास अंगद कीजिए ॥

दो०—राम चरन दृढ़ प्रीति करि बालि कीन्ह तनु त्याग ।

सुमन माल जिमि कंठ ते गिरत न जानइ नाग ॥ १० ॥  
 राम बालि निज धाम पठावा । नगर लोग सब व्याकुल धावा ॥  
 नाना विधि विलाप कर तारा । छूटे केस न देह सँभारा ॥  
 तारा विकल देखि रघुराया । दीन्ह ग्यान हरि लीन्ही माया ॥  
 छिति जल पावक गगन समीरा । पंच रचित अति अधम सरीरा ॥  
 प्रगट सो तनु तव आगें सोच । जीव नित्य केहि लगि तुम्ह रोवा ॥  
 उपजा ग्यान चरन तव लागी । लीन्हेसि परम भगति बर मागी ॥  
 उमा दारु जोषित की नाई । सबहि नचावत रामु गोसाई ॥  
 तव सुग्रीवहि आयसु दीन्हा । मृतक कर्म विधिवत सब कीन्हा ॥  
 राम कहा अनुजहि समुझाई । राज देहु सुग्रीवहि जाई ॥  
 रघुपति चरन नाइ करि माथा । चले सकल प्रेरित रघुनाथा ॥

दो०—लछिमन नुरत बोलाण् पुरजन विप्र समाज ।

राजु दीन्ह सुग्रीव कहँ भंगद कहँ जुवराज ॥ ११ ॥  
 उमा राम सम हित जग माहीं । गुर पितु मातु बंधु प्रभु नाहीं ॥  
 सुर नर मुनि सब कै यह रीती । स्वारथ लागि करहिं सब प्रीती ॥  
 बालि त्रास व्याकुल दिन राती । तन बहु व्रन चितौं जर छाती ॥  
 सोइ सुग्रीव कीन्ह कपिराज । अति कृपाल रघुवीर सुभाज ॥  
 जानतहूँ अस प्रभु परिहरहीं । काहे न विपति ज... परहीं ॥  
 पुनि सुग्रीवहि लीन्ह बोलाई । बहु प्रकार ... ॥



कह प्रभु सुनु सुग्रीव हरीसा । पुर न जाउँ दस चारि वरीसा ॥  
 गत ग्रीष्म वर्षा रिनु आई । रहिहउँ निकट सैल पर छाई ॥  
 अंगद सहित करहु तुम्ह राजू । संतत हृदयँ धरेहु मम काजू ॥  
 जब सुग्रीव भवन फिरि आए । रामु प्रवरपन गिरि पर छाए ॥

दो०—प्रथमहिं देवन्ह गिरि गुहा राखेउ रुचिर बनाइ ।

राम कृपानिधि कछु दिन बास करहिंगे आइ ॥ १२ ॥

सुंदर बन कुसुमित अति सोभा । गुंजत मधुप निकर मधु लोभा ॥  
 कंद मूल फल पत्र सुहाए । भए बहुत जब ते प्रभु आए ॥  
 देखि मनोहर सैल अनूपा । रहे तहँ अनुज सहित सुरभूपा ॥  
 मधुकर खग मृग तनु धरि देवा । करहिं सिद्ध मुनि प्रभु कै सेवा ॥  
 मंगलरूप भयउ बन तब ते । कीन्ह निवास रमापति जब ते ॥  
 फटिक सिला अति सुभ्र सुहाई । सुख आसीन तहाँ द्वौ भाई ॥  
 कहत अनुज सन कथा अनेका । भगति बिरति नृपनीति विवेका ॥  
 वर्षा काल मेघ नभ छाए । गरजत लागत परम सुहाए ॥

दो०—लछिमन देखु मोर गन नाचत बारिद पेखि ।

गृही बिरति रत हरष जस बिष्णुभगत कहूँ देखि ॥ १३ ॥

घन घमंड नभ गरजत घोरा । प्रिया हीन डरपत मन मोरा ॥  
 दामिनि दमक रह न घन माहीं । खल कै प्रीति जथा धिर नाहीं ॥  
 वर्षहिं जलद भूमि निअराएँ । जथा नवहिं बुध विद्या पाएँ ॥  
 बूँद अघात सहहिं गिरि कैसैं । खल के वचन संत सह जैसैं ॥

छुद्र नदीं भरि चलीं तोराई । जस योरेहुँ धन खल इतराई ॥  
भूमि परत भा ढाबर पानी । जनु जीवहि माया लपटानी ॥  
समिटि समिटि जल भरहिं तलावा । जिमि सदगुन सजन पहिं आवा  
सरिता जल जलनिधि महुँ जाई । होइ अचल जिमि जिव हरि पाई  
दो०—हरित भूमि तृन संकुल समुक्षि परहिं नहिं पंथ ।

जिमि पाखंड बाद ते गुस होहिं सदग्रंथ ॥ १४ ॥

दादुर धुनि चहुँ दिसा सुहाई । वेद पढ़हिं जनु बडु समुदाई ॥  
नव पल्लव भए बिटप अनेका । साधक मन जस मिले बिबेका ॥  
अर्क जवास पात बिनु भयऊ । जस सुराज खल उद्यम गयऊ ॥  
खोजत कतहुँ मिलइ नहिं धूरी । करइ क्रोध जिमि धरमहि दूरी ॥  
ससि संपन्न सोह महि कैसी । उपकारी कै संपति जैसी ॥  
निसि तम धन खद्योत विराजा । जनु दंभिन्ह कर मिला समाजा ॥  
महावृष्टि चलिं फूटि किआरीं । जिमि सुतंत्र भएँ बिगरहिं नारीं ॥  
कृषी निरावहिं चतुर किसाना । जिमि बुध तजहिं मोह मद माना ॥  
देखिअत चक्रचाक खग नाहीं । कलिहि पाइ जिमि धर्म पराहीं ॥  
ऊपर वरपइ तृन नहिं जामा । जिमि हरिजन हियँ उपज न कामा  
बिबिध जंतु संकुल महि भ्राजा । प्रजा बाढ़ जिमि पाइ सुराजा ॥  
जहँ तहँ रहे पथिक थकि नाना । जिमि इंद्रिय गन उपजें ग्याना ॥

दो०—कयहुँ प्रबल वह मारुत जहँ तहँ मेघ बिलाहि ।

जिमि कपूत के उपजें कुल ॥

कयहुँ दिवस महँ निबिड़ तम कबहुँक प्रगट पतंग ।

बिनसइ उपजइ ग्यान जिमि पाइ कुसंग सुसंग ॥१५॥(ख)॥

बरषा विगत सरद रितु आई । लछिमन देखहु परम सुहाई ॥  
 फूलें कास सकल महि छाई । जनु बरषाँ कृत प्रगट बुढ़ाई ॥  
 उदित अगस्ति पंथ जल सोपा । जिमि लोभहि सोपइ संतोषा ।  
 सरिता सर निर्मल जल सोहा । संत हृदय जस गत मद मोहा ॥  
 रस रस सूख सरित सर पानी । ममता त्याग करहिं जिमि ग्यानी ॥  
 जानि सरद रितु खंजन आए । पाइ समय जिमि सुकृत सुहाए ॥  
 पंक न रेनु सोह असि धरनी । नीति निपुन नृप कै जसि करनी ॥  
 जल संकोच विकल भइँ मीना । अबुध कुटुंबी जिमि धनहीना ॥  
 विनु घन निर्मल सोह अकासा । हरिजन इव परिहरि सब आसा ॥  
 कहूँ कहूँ वृष्टि सारदी थोरी । कोउ एक पाव भगति जिमि मोरी ॥

दो०—चले हरषि तजि नगर नृप तापस बनिक भिखारि ।

जिमि हरि भगति पाइ श्रम तजहिं आश्रमी चारि ॥ १६ ॥

सुखी मीन जे नीर अगाधा । जिमिं हरि सरन न एकउ बाधा  
 फूलें कमल सोह सर कैसा । निर्गुन ब्रह्म सगुन भएँ जैसा  
 गुंजत मधुकर मुखर अनूपा । सुंदर खग रव नाना रूप  
 चक्रवाक मन दुख निसिपेखी । जिमि दुर्जन पर संपति देख  
 चातक रटत तृपा अति ओही । जिमि सुख लंहइ न संकरद्री  
 सरदातप निसि ससि अपहरई । संत दरस जिमि पातक ट

देखि इंदु चकोर समुदाई । चितवहिं जिमि हरिजन हरि पाई ॥  
मसक दंस बीते हिम त्रासा । जिमि द्विज द्रोह किएँ कुल नासा ॥

दो०—भूमि जीव संकुल रहे गए सरद रितु पाइ ।

सदगुर मिलें जाहिं जिमि संसय भ्रम समुदाइ ॥ १७ ॥

वरपा गत निर्मल रितु आई । सुधि न तात सीता कै पाई ॥  
एक बार कैसेहुँ सुधि जानौं । कालहु जीति निमिष महुँ आनौं ॥  
कतहुँ रहउ जौं जीवति होई । तात जतन करि आनउँ सोई ॥  
सुग्रीवहुँ सुधि मोरि बिसारी । पावा राज कोस पुर नारी ॥  
जेहिं सायक मारा मैं बाली । तेहिं सर हतौं मूढ़ कहँ काली ॥  
जासु कृपाँ छूटहिं मद मोहा । ता कहुँ उमा कि सपनेहुँ कोहा ॥  
जानहिं यह चरित्र मुनि ग्यानी । जिन्ह रघुबीर चरन रति मानी ॥  
लछिमन क्रोधवंत प्रभु जाना । धनुष चढ़ाइ गहे कर बाना ॥

दो०—तव अनुजहि समुझावा रघुपति करुना सीव ।

भय देखाइ लै आवहु तात सखा सुग्रीव ॥ १८ ॥

इहाँ पवनसुत हृदयँ विचारा । राम काजु सुग्रीवँ बिसारा ॥  
निकट जाइ चरनन्हि सिख नावा । चारिहु बिधि तेहि कहि समुझावा ॥  
मुनि सुग्रीवँ परम भय माना । बिषयँ मोर हरि लीन्हेउ ग्याना ॥  
अब मारुतसुत दूत समूहा । पठवहु जहँ तहँ बानर जूहा ॥  
कहहु पाख महुँ आवन जोई । मोरें कर ताकर बध होई ॥  
तव हनुमंत बोलाए दूता । सब कर करि

कयहुँ दिवस महँ निबिड़ तम कबहुँक प्रगट पतंग ।

बिनसइ उपजइ ग्यान जिमि पाइ कुसंग सुसंग ॥ १५ (ख) ॥

बरषा बिगत सरद रितु आई । लछिमन देखहु परम सुहाई ॥  
 फूलें कास सकल महि छाई । जनु बरषाँ कृत प्रगट बुढ़ाई ॥  
 उदित अगस्ति पंथ जल सोपा । जिमि लोभहि सोपइ संतोषा ॥  
 सरिता सर निर्मल जल सोहा । संत हृदय जस गत मद मोहा ॥  
 रस रस सूख सरित सर पानी । ममता त्याग करहिं जिमि ग्यानी ॥  
 जानि सरद रितु खंजन आए । पाइ समय जिमि सुकृत सुहाए ॥  
 पंक न रेनु सोह असि धरनी । नीति निपुन नृप कै जसि करनी ॥  
 जल संकोच बिकल भई मीना । अबुध कुटुंबी जिमि धनहीना ॥  
 बिनु धन निर्मल सोह अकासा । हरिजन इव परिहरि सय आसा ॥  
 कहूँ कहूँ वृष्टि सारदी थोरी । कोउ एक पाव भगति जिमि मोरी ॥

दो०—चले हरषि तजि नगर नृप तापस बनिक भिखारि ।

जिमि हरि भगति पाइ श्रम तजहिं आश्रमी चारि ॥ १६ ॥

सुखी मीन जे नीर अगाधा । जिमि हरि सरन न एकउ बाधा ॥  
 फूलें कमल सोह सर कैसा । निर्गुन ब्रह्म सगुन भएँ जैसा ॥  
 गुंजत मधुकर मुखर अनूपा । सुंदर खग रव नाना रूपा ॥  
 चक्रवाक मन दुख निसिपेखी । जिमि दुर्जन पर संपति देखी ॥  
 चातक रटत तृषा अति ओही । जिमि सुख लंहइ न संकरदोही ॥  
 सरदातप निसि ससि अपहरई । संत दरस जिमि पातक टरई ॥

देखि इंदु चकोर समुदाई । चितवहिं जिमि हरिजन हरि पाई ॥  
मसक दंस वीते हिम त्रासा । जिमि द्विज द्रोह किएँ कुल नासा ॥

दो०—भूमि जीव संकुल रहे गए सरद रितु पाइ ।

सदगुर मिलें जाहिं जिमि संसय भ्रम समुदाइ ॥ १० ॥

वरपा गत निर्मल रितु आई । सुधि न तात सीता कै पाई ॥  
एक बार कैसेहुँ सुधि जानौं । कालहु जीति निमिष महुँ आनौं ॥  
कतहुँ रहउ जाँ जीवति होई । तात जतन करि आनउँ सोई ॥  
सुग्रीवहुँ सुधि मोरि विसारी । पाया राज कोस पुर नारी ॥  
जेहिं सायक मारा मैं वाली । तेहिं सर हतौं मूढ़ कहँ काली ॥  
जासु कृपाँ छूटहिं मद मोहा । ता कहुँ उमा कि सपनेहुँ कोहा ॥  
जानहिं यह चरित्र मुनि ग्यानी । जिन्ह खुबीर चरन रति मानी ॥  
लछिमन क्रोधवत प्रभु जाना । धनुष चढ़ाइ गहे कर बाना ॥

दो०—तव अनुजहि समुझावा रघुपति करुना सीव ।

भय देखाइ लैं आवहु तात सखा सुग्रीव ॥ १८ ॥

इहाँ पवनसुत हृदयँ विचारा । राम काजु सुग्रीवँ विसारा ॥  
निकट जाइ चरनन्हि सिरु नावा । चारिहु विधि तेहि कहि समुझावा  
मुनि सुग्रीवँ परम भय माना । विषयँ मोर हरि लीन्हेउ ग्याना ॥  
अब मारुतसुत दूत समूहा । पठवहु जहँ तहँ बानर जूहा ॥  
कहहु पाख महुँ आवन जोई । मोरें कर ताकर बध होई ॥  
तव हनुमंत बोलाए दूता । सब कर करि सनमान बहूता ॥

कबहुँ दिवस महँ निबिड़ तम कबहुँक प्रगट पतंग ।  
 बिनसइ उपजइ ग्यान जिमि पाइ कुसंग सुसंग ॥१५(ख)॥  
 बरषा विगत सरद रितु आई । लल्लिमन देखहु परम सुहाई ॥  
 फूलें कास सकल महि छाई । जनु बरषाँ कृत प्रगट बुढ़ाई ॥  
 उदित अगस्ति पंथ जल सोपा । जिमि लोभहि सोपइ संतोपा ॥  
 सरिता सर निर्मल जल सोहा । संत हृदय जस गत मद मोहा ॥  
 रस रस सूख सरित सर पानी । ममता त्याग करहिं जिमि ग्यानी ॥  
 जानि सरद रितु खंजन आए । पाइ समय जिमि सुकृत सुहाए ॥  
 पंक न रेनु सोह असि धरनी । नीति निपुन नृप कै जसि करनी ॥  
 जल संकोच बिकल भइँ मीना । अबुध कुटुंबी जिमि धनहीना ॥  
 विनु धन निर्मल सोह अकासा । हरिजन इव परिहरि सब आसा ॥  
 कहुँ कहुँ वृष्टि सारदी थोरी । कोउ एक पाव भगति जिमि मोरी ॥  
 दो०—चले हरषि तजि नगर नृप तापस बनिक भिखारि ।  
 जिमि हरि भगति पाइ श्रम तजहिं आश्रमी चारि ॥ १५

सुखी मीन जे नीर अगाधा । जिमि हरि सरन न एकउ वा  
 फूलें कमल सोह सर कैसा । निर्गुन ब्रह्म सगुन भएँ जै  
 गुंजत मधुकर मुखर अनूपा । सुंदर खग रव नाना  
 चक्रवाक मन दुख निसिपेखी । जिमि दुर्जन पर संपति  
 चातक रटत तृषा अति ओही । जिमि सुख लंहइ न संक  
 सरदातप निसि ससि अपहरई । संत दरस जिमि पातक

देखि इंदु चकोर समुदाई । चितवहिं जिमि हरिजन हरि पाई ।  
मसक दंस वीते हिम त्रासा । जिमि द्विज द्रोह किएँ कुल नासा ॥

दो०—भूमि जीव संकुल रहे गए सरद रितु पाइ ।

सदगुर मिलें जाहिं जिमि संसय भ्रम समुदाइ ॥ १७ ॥

वरषा गत निर्मल रितु आई । सुधि न तात सीता कै पाई ॥  
एक बार कैसेहुँ सुधि जानौं । कालहु जीति निमिष महुँ आनौं ॥  
कतहुँ रहउ जाँ जीवति होई । तात जतन करि आनउँ सोई ॥  
सुग्रीवहुँ सुधि मोरि बिसारी । पावा राज कोस पुर नारी ॥  
जेहिं सायक मारा मैं बाली । तेहिं सर हतौं मूढ़ कहँ काली ॥  
जासु कृपाँ छूटहिं मद मोहा । ता कहुँ उमा कि सपनेहुँ कोहा ॥  
जानहिं यह चरित्र मुनि ग्यानी । जिन्ह रघुबीर चरन रति मानी ॥  
लछिमन क्रोधवंत प्रभु जाना । धनुष चढ़ाइ गहे कर बाना ॥

दो०—तब अनुजहि समुझावा रघुपति करुना सींव ।

भय देखाइ लै आवहु तात सखा सुग्रीव ॥ १८ ॥

इहाँ पवनसुत हृदयँ विचारा । राम काजु सुग्रीवँ बिसारा ॥  
निकट जाइ चरनन्हि सिरु नावा । चारिहु बिधि तेहि कहि समुझावा ॥  
सुनि सुग्रीवँ परम भय माना । विषयँ मोर हरि लीन्हेउ ग्याना ॥  
अब मारुतसुत दूत समूहा । पठवहु जहँ तहँ बानर जूहा ॥  
कहहु पाख महुँ आवन जोई । मोरें कर ताकर बध होई ॥  
तब हनुमंत बोलाए दूता । सब कर करि सनमान बहूता ॥



भयं अरु प्रीति नीति देखराई । चले सकल चरनन्हि सिर नाई ॥  
एहि अवसर लछिमन पुर आए । क्रोध देखि जहँ तहँ कपि धाए ॥

दो०—धनुष चढ़ाइ कहा तब जारि करउँ पुर छार ।

व्याकुल नगर देखि तब आयउ बालिकुमार ॥ १९ ॥

चरन नाइ सिरु बिनती कीन्ही । लछिमन अभय बाँह तेहि दीन्ही ॥  
क्रोधवंत लछिमन सुनि काना । कह कपीस अति भयँ अकुलाना ॥  
सुनु हनुमंत संग लै तारा । करि बिनती समुझाउ कुमारा ॥  
तारा सहित जाइ हनुमाना । चरन बंदि प्रभु सुजस बखाना ॥  
करि बिनती मंदिर लै आए । चरन पखारि पलंग बैठाए ॥  
'तब कपीस चरनन्हि सिरु नावा । गहि भुज लछिमन कंठ लगावा ॥  
नाथ विषय सम मद कछु नार्हीं । मुनि मन मोह करइ छन मारहीं ॥  
सुनत विनीत वचन सुख पावा । लछिमन तेहि बहु विधि समुझावा ॥  
पवनतनय सब कथा सुनाई । जेहि विधि गए दूत समुदाई ॥

दो०—हरषि चले सुग्रीव तब अंगदादि कपि साथ ।

रामानुज आगें करि आए जहँ रघुनाथ ॥ २० ॥

नाइ चरन सिरु कह कर जोरी । नाथ मोहि कछु नाहिन खोरी ॥  
अतिसय प्रबल देव तव माया । छूटइ राम करहु जौं दाय ॥  
विषय बस्य सुर नर मुनि स्वामी । मैं पावँर पसु कपि अति काम ॥  
नारि नयन सर जाहिन लगा । घोर क्रोध तम निसि जो जा ॥  
लौभ पाँस जेहिं गर न बँधाया । सो नर तुम्ह समान रघुरा ॥

यह गुन साधन तैं नहिं होई । तुम्हरी कृपाँ पाव कोइ कोई ॥  
तत्र रघुपति बोले मुसुकाई । तुम्ह प्रिय मोहि भरत जिमि भाई ॥  
अब सोइ जतनु करहु मन लाई । जेहि बिधि सीता कै सुधि पाई ॥  
दो०—एहि विधि होत बतकही आए बानर जूथ ।

नाना बरन सकल दिसि देखिअ कीस बरूथ ॥ २१ ॥  
बानर कटक उमा मैं देखा । सो मूरख जो करन चह लेखा ॥  
आइ राम पद नावहिं माथा । निरखि बदन सव होहिं सनाथा ॥  
अस कपि एक न सेना माहीं । राम कुसल जेहि पूछी नाहीं ॥  
यह कछु नहिं प्रभु कइ अधिकाई । विस्वरूप व्यापक रघुराई ॥  
ठाढ़े जहँ तहँ आयसु पाई । कह सुग्रीव सबहि समुझाई ॥  
राम काजु अरु मोर निहोरा । बानर जूथ जाहु चहुँ ओरा ॥  
जनकसुता कहँ खोजहु जाई । मास दिवस महँ आएहु भाई ॥  
अवधि मेटि जो विनु सुधि पाएँ । आवइ बनिहि सो मोहि मराएँ ॥  
दो०—वचन सुनत सब बानर जहँ तहँ चले तुरंत ।

तव सुग्रीवँ बोलाए अंगद नल हनुमंत ॥ २२ ॥  
सुनहु नील अंगद हनुमाना । जामवंत मतिधीर सुजाना ॥  
सकल सुभट मिलि दच्छिन जाहू । सीता सुधि पूँछेहु सब काहू ॥  
मन क्रम वचन सो जतन विचारेहु । रामचंद्र कर काजु सँवारेहु ॥  
भानु पीठि सेइअ उर आगी । स्वामिहि सर्व भाव छल त्यागी ॥  
तजि माया सेइअ परलोका । मिटहिं सकल भवसंभव सोका ॥

देह धरे कर यह फलु भाई । भजिअ राम सब काम बिहाई ॥  
 सोइ गुनग्य सोई बड़भागी । जो रघुबीर चरन अनुरागी ॥  
 आयसु मागि चरन सिरु नाई । चले हरषि सुमिरत रघुराई ॥  
 पाछें पवन तनय सिरु नावा । जानि काज प्रभु निकट बोलावा ॥  
 परसा सीस सरोरुह पानी । करमुद्रिका दीन्हि जन जानी ॥  
 बहु प्रकार सीतहि समुझाएहु । कहि बल विरह वेगि तुम्ह आएहु ॥  
 हनुमत जन्म सुफल करि माना । चलेउ हृदयँ धरि कृपानिधाना ॥  
 जद्यपि प्रभु जानत सब बाता । राजनीति राखत सुरवाता ॥  
 दो०—चले सकल बन खोजत सरिता सर गिरि खोह ।

राम काज लयलीन मन बिसरा तन कर छोह ॥ २३ ॥

कतहुँ होइ निसिचर सैं भेटा । प्रान लेहिँ एक एक चपेटा ॥  
 बहु प्रकार गिरि कानन हेरहिँ । कोउ मुनि मिलइ ताहि सब घेरहिँ ॥  
 लागि तृपा अतिसय अकुलाने । मिलइ न जल घन गहन भुलाने ॥  
 मन हनुमान कीन्ह अनुमाना । मरन चहत सब विनु जल पाना ॥  
 चढ़ि गिरि सिखर चहुँ दिसि देखा । भूमि विवर एक कौतुक पेखा ॥  
 चक्रवाक बक हंस उड़ार्हीं । बहुतक खग प्रविसहिँ तेहि माहीं ॥  
 गिरि ते उतरि पवनसुत आवा । सब कहूँ लै सोइ विवर देखावा ॥  
 आगें कै हनुमंतहि लीन्हा । पैठे विवर बिलंबु न कीन्हा ॥

दो०—दीख जाइ उपवन वर सर विगसित बहु कंज ।

मंदिर एक रुचिर तहँ बैठि नारि तपपुंज ॥ २४ ॥

दूरे ते ताहि सत्रन्हि सिरु नावा । पूछें निज वृत्तान्त सुनावा ॥  
 तेहिं तव कहा करहु जल पाना । खाहु सुरस सुंदर फल नाना ॥  
 मजनु कीन्ह मधुर फल खाए । तासु निकट पुनि सत्र चलि आए ॥  
 तेहिं सत्र आपनि कथा सुनाई । मैं अब जाव जहाँ खुराई ॥  
 मूदहु नयन विवर तजि जाहू । पैहहु सीतहि जनि पछिताहू ॥  
 नयन मूदि पुनि देखहिं वीरा । ठाढ़े सकल सिंधु कैं तीरा ॥  
 सो पुनि गई जहाँ रघुनाथा । जाइ कमल पद नाएसि माथा ॥  
 नाना भाँति विनय तेहिं कीन्ही । अनपायनी भगति प्रभु दीन्ही ॥

दो०—बदरीबन कहूँ सो गई प्रभु अग्या धरि सीस ।

उर धरि राम चरन जुग जे बंदत अज ईस ॥ २५ ॥

इहाँ विचारहिं कपि मन माहीं । वीती अवधि काज कछु नाहीं ॥  
 सत्र मिलि कहहिं परस्पर वाता । बिनु सुधि लएँ करत्र का भ्राता ॥  
 कह अंगद लोचन भरि वारी । दुहुँ प्रकार भइ मृत्यु हमारी ॥  
 इहाँ न सुधि सीता कै पाई । उहाँ गएँ मारिहि कपिराई ॥  
 पिता बधे पर मारत मोही । राखा राम निहोर न ओही ॥  
 पुनि पुनि अंगद कह सत्र पाहीं । मरन भयउ कछु संसय नाहीं ॥  
 अंगद वचन सुनत कपि वीरा । बोलि न सकहिं नयन बह नीरा ॥  
 छन एक सोच मगन होइ रहे । पुनि अस वचन कहत सत्र भए ॥  
 हम सीता कै सुधि लीन्हें बिना । नहिं जैहैं जुवराज प्रवीना ॥  
 अस कहि लवनसिंधु तट जाई । बैठे कपि सत्र ~~दुख~~ डसाई ॥

जामवंत अंगद दुख देखी। कहीं कथा उपदेस बिसेषी ॥  
 तात राम कहूँ नर जनि मानहु। निर्गुन ब्रह्म अजित अज जानहु ॥  
 हम सब सेवक अति बड़भागी। संतत सगुन ब्रह्म अनुरागी ॥

दो०—निज इच्छाँ प्रभु अवतरइ सुर महि गो द्विज लागि ।

सगुन उपासक संग तहँ रहहिं मोच्छ सब त्यागि ॥ २६ ॥

एहि विधि कथा कहहिं बहु भाँती। गिरि कंदराँ सुनी संपाती ॥  
 बाहेर होइ देखि बहू कीसा। मोहि अहार दीन्ह जगदीसा ॥  
 आजु सगहि कहँ भच्छन करजँ। दिन बहु चले अहार बिनु मरजँ  
 कबहुँ न मिल भरि उदर अहारा। आजु दीन्ह विधि एकहिं बारा  
 डरपे गीध वचन सुनि काना। अब भा मरन सत्य हम जाना ॥  
 कपि सब उठे गीध कहँ देखी। जामवंत मन सोच बिसेषी ॥  
 कह अंगद बिचारि मन, माहीं। धन्य जटायू सम कोउ नाहीं ॥  
 राम काज कारन तनु त्यागी। हरिपुर गयउ परम बड़भागी ॥  
 सुनि खग हरष सोक जुत बानी। आवा निकट कपिन्ह भय मानी  
 तिन्हहि अभय करि पूछेसि जाई। कथा सकल तिन्ह ताहि सुनाई ॥  
 सुनि संभाति बंधु कै करनी। रघुपति महिमा बहु विधि बरनी  
 दो०—मोहि लै जाहु सिंधुतट देउँ तिलांजलि ताहि ।

वचन सहाइ करबि मैं पैहहु खोजहु जाहि ॥ २७ ॥

अनुज क्रिया करि सागर तीरा। कहि निज कथा सुनहु कपि वीरा  
 हम द्वौ बंधु प्रथम तरुनाई। गगन गए रवि निकट उड़ाई ॥

दो०—भव भेषज रघुनाथ जसु सुनहिं जे नर अरु नारि ।

तिन्ह कर सकल मनोरथ सिद्ध करहिं त्रिसिरारि ॥३०(क)॥

सो०—नीलोत्पल तन स्याम काम कोटि सोभा अधिक ।

सुनिअ तासु गुन ग्राम जासु नाम अघ खग बधिक ॥३०(ख)॥

मासपारायण, तेईसवाँ विश्राम

इति श्रीमद्रामचरितमानसे सकलकलिकलुप्रविध्वंसने

चतुर्थः सोपानः समाप्तः ।

( किष्किन्धाकाण्ड समाप्त )



## शरणागत विभीषण



श्रवन सुजसु सुनि आयउँ प्रभु भंजन भवभीर ।  
त्राहि त्राहि आरति हरन सरन सुखद रघुवीर ॥

श्रीगणेशाय नमः

श्रीजानकीवल्लभो विजयते

# श्रीरामचरितमानस



पञ्चम सोपान

( सुन्दरकाण्ड )



श्लोक

शान्तं शाश्वतमप्रमेयमनघं निर्वाणशान्तिप्रदं  
ब्रह्माशम्भुफणीन्द्रसेव्यमनिशं वेदान्तवेद्यं विभुम् ।  
रामाख्यं जगदीश्वरं सुरगुरुं मायामनुष्यं हरिं  
वन्देऽहं कल्याणकरं रघुवरं भूपालचूडामणिम् ॥ १ ॥

नान्या स्पृहा रघुपते हृदयेऽस्मदीये

सत्यं वदामि च भवानखिलान्तरात्मा ।



भक्तिं प्रयच्छ रघुपुङ्गव निर्भरां मे

कामादिदोषरहितं कुरु मानसं च ॥२॥

अतुलितबलधामं हेमशैलाभदेहं

दनुजवमकृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम् ।

सकलगुणनिधानं वानराणामधीशं

रघुपतिप्रियभक्तं वातजातं नमामि ॥३॥

जामवंत के बचन सुहाए । सुनि हनुमंत हृदय अति भाए  
तब लागि मोहि परिखेहु तुम्ह भाई । सहि दुख कंद मूल फल खाई  
जब लागि आवौं सीतहि देखी । होइहि काजु मोहि हरष विशेषी  
यह कहि नाइ सबन्हि कहूँ माथा । चलेउ हरषि हियँ धरि रघुनाथा  
सिंधु तीर एक भूधर सुंदर । कौतुक कूदि चढ़ेउ ता ऊपर ॥  
बार बार रघुवीर सँभारी । तरकेउ पवनतनय बल भारी ॥  
जेहि गिरि चरन देखि हनुमंता । चलेउ सो गा पाताल तुरंता ॥  
जिमि अमोघ रघुपति कर वाना । एही भाँति चलेउ हनुमाना ॥  
जलनिधि रघुपति दूत विचारी । तैं मैनाक होहि श्रमहारी ॥

दो०—हनूमान तेहि परसा कर पुनि कीन्ह प्रनाम ।

राम काजु कीन्हें यिनु मोहि कहाँ विश्राम ॥ १ ॥

जात पवनसुत देवन्ह देखा । जानैं कहूँ बल बुद्धि विशेषा ॥  
सुरसा नाम अहिन कै माता । पठइन्हि आइ कही तेहि वाता ॥  
आजु सुरन्ह मोहि दीन्ह अहारा । सुनत बचन कह पवनकुमारा ॥

राम काजु करि फिरि मैं आवौं । सीता कइ मुधि प्रभुहि सुनावौं ॥  
 तव तव वदन पैठिहउँ आई । सत्य कहउँ मोहि जान दे माई ॥  
 कवनेहुँ जतन देइ नहिं जाना । ग्रससि न मोहि कहेउ हनुमाना ॥  
 जोजन भरि तेहिं वदनु पसारा । कपि तनु कीन्ह दुगुन विस्तारा ॥  
 सोरह जोजन मुख तेहिं ठयऊ । तुरत पवनसुत वत्तिस भयऊ ॥  
 जस जस सुरसा वदनु बढावा । तामु दून कपि रूप देखावा ॥  
 सत जोजन तेहिं आनन कीन्हा । अति लघु रूप पवनसुत लीन्हा ॥  
 वदन पइठि पुनि बाहेर आवा । मागा विद्रा ताहि मिरु नाचा ॥  
 मोहि सुरन्ह जेहि लागि पटावा । बुधि बल मगसु तोर मैं पावा ॥

दो०-राम काजु सबु करिहहु तुम्ह बल बुद्धि निधान ।

आसिष देइ गई सो हरपि चलेउ हनुमान ॥ २ ॥

निसिचरि एक सिंधु महुँ रहई । करि माया नभु के खग गहई ॥  
 जीव जंतु जे गगन उड़ाहीं । जल विलोकि तिन्ह कै परिच्छाहीं ॥  
 गहई छाँह सक सो न उड़ाई । एहि विधि मदा गगन चर गवाई ॥  
 सोइ छल हनुमान कहैं कीन्हा । तामु कपटु कपि तुरतहिं चीन्हा ॥  
 ताहि मारि मारुतसुत वीरा । वारिधि पार गयउ मतिवीरा ॥  
 तहाँ जाइ देखी वन सोभा । गुंजत चंचरीक मधु लोभा ॥  
 नाना तरु फल फूल सुहाए । खग मृग बृंद देखि मन भाए ॥  
 सैल विसाल देखि एक आगें । ता पर धाइ चढ़ेउ भय त्यागें ॥  
 उमान कछु कपि कै अधिकारि । प्रभु प्रताप जो कालहि खारि ॥

गिरि पर चढ़ि लंका तेहि देखी । कहि न जाइ अति दुर्ग त्रिसेषी ॥  
अति उत्तंग जलनिधि चहु पासा । कनक कोट कर परम प्रकासा ॥

छं०—कनक कोट बिचित्र मनि कृत सुंदरायतना घना ।  
चउहट्ट हट्ट सुबट्ट दीर्घीं चारु पुर बहु बिधि बना ॥  
गज बाजि खच्चरनिकर पदचर रथ बरूथन्हि को गनै ।  
बहुरूप निसिचर जूय अतिबल सेन वरनत नहिं बनै ॥१॥  
वन बाग उपवन बाटिका सर कूप बापीं सोहहीं ।  
नर नाग सुर गंधर्व कन्या रूप मुनि मन मोहहीं ॥  
कहुँ माल देह विसाल सैल समान अतिबल गर्जहीं ।  
नाना अखारेन्ह भिरहिं बहु बिधि एक एकन्ह तर्जहीं ॥२॥  
करि जतन भट कोटिन्ह बिकट तन नगर चहुँ दिसि रच्छहीं ।  
कहुँ महिष मानुष धेनु खर अज खल निसाचर भच्छहीं ॥  
एहि लागि तुलसीदास इन्ह की कथा कछु एक है कही ।  
रघुबीर सर तीरथ सरीरन्हि त्यागि गति पैहहिं सही ॥३॥

दो०—पुर रखवारे देखि बहु कपि मन कीन्ह विचार ।  
अति लघु रूप धरौं निसि नगर करौं पइसार ॥ ३ ॥  
मसक समान रूप कपि धरी । लंकहि चलेउ सुमिरि नरहरी ॥  
नाम लंकिनी एक निसिचरी । सो कह चलेसि मोहि निंदरी ॥  
जानेहि नहीं मरमु सठ मोरा । मोर अहार जहाँ लगि चोरा ॥  
मुठिका एक महा कपि हनी । रुधिर वमत धरनीं दनमनी ।



विप्र रूप धरि बचन सुनाए। सुनत विभीषन उठि तहँ आए  
 करि प्रनाम पूँछी कुसलाई। विप्र कहहु निज कथा बुझाई ॥  
 की तुम्ह हरिदासन्ह महुँ कोई। मोरें हृदय प्रीति अति होई ॥  
 की तुम्ह रामु दीन अनुरागी। आयहु मोहि करन बड़भागी ॥  
 दो०-तब हनुमंत कही सब राम कथा निज नाम ।

सुनत जुगल तन पुलक मन नगन सुमिरि गुन ग्राम ॥ ६ ॥

सुनहु पवनसुत रहनि हमारी। जिमि दसनन्हि नहुँ जीम विचारी  
 तात कबहुँ मोहि जानि अनाथा। करिहिं कृपा भानुकुल नाथा ॥  
 तामस तनु कछु छाधन नार्हो। प्रीतिन पद सरोज मन मार्हो ॥  
 अब मोहि भा भरोस हनुमंता। विनु हरि कृपा मिलहिं नहिं संता  
 नै खुबीर अनुग्रह कीन्हा। तौ तुम्ह मोहि दरसु हठि दीन्हा ॥  
 उगहु विभीषन प्रभु कै रोती। कराहिं सदा सेवक पर प्रीती ॥  
 कहहु कवन मैं परम कुलीना। कपि चंचल सबहो विधि हीना ॥  
 प्रात लेइ जो नाम हमारा। तेहि दिन ताहि न मिलै अहार ॥

दो०-अस मैं अधम सखा सुनु मोहू पर खुबीर ।

कीन्ही कृपा सुमिरि गुन भरे बिलोचन नीर ॥ ७ ॥

जानतहुँ अस स्वामि विचारी। फिहिं ते काहे न होहिं दुखारी  
 एहि विधि कहत राम गुन ग्रामा। पावा अनिवांच्य विश्रामा।  
 पुनि सब कथा विभीषन कही। जेहि विधि जनकसुता तहँ रही।  
 तब हनुमंत कहा सुनु भ्राता। देखी चहउँ जानकी माता ।

जुगुति विभीषन सकल सुनाई । चलेउ पवनसुत विदा कराई ॥  
करि सोइ रूप गयउ पुनि तहवाँ । वन असोक सीता रह जहवाँ ॥  
देखि मनहि महुँ क्रीन्ह प्रनामा । बैठेहि रीति जात निमि जामा ॥  
कृप तनु सीस जटा एक वेनी । जपति हृदयँ रघुपति गुन श्रेनी ॥

दो०-निज पद नयन दिउँ मन राम पद कमल लीन ।

परम दुखी भा पवनसुत देखि जानकी दीन ॥ ८ ॥

तब पल्लव महुँ रहा लुकाई । करइ विचार कर्गें का भाई ॥  
तेहि अवसर रावनु तहँ आया । संग नारि बहु किएँ बनाया ॥  
बहु विधि खल सीतहि समुझाया । जम दान भव भेद देखाया ॥  
कह रावनु सुनु सुमुखि स्यानी । मंदोदरी आदि सब रानी ॥  
तब अनुचरों करउँ पन मोरा । एक बार बिलोकु मम ओरा ॥  
तुन धरि ओट कहति बैदेही । सुमिरि अवधपति परम सनेही ॥  
सुनु दसमुख खद्योत प्रकासा । कबहुँ कि नलिनी करइ बिकासा ॥  
अस मन समुझ कहति जानकी । खल सुवि नहिं रघुवीरवान की ॥  
सठ सूनें हरि आनेहि मोही । अधम निलज लाज नहिं तोही ॥

दो०-आपुहि सुनि खद्योत सम रामहि भानु समान ।

पल्लव वचन सुनि काहि असि बोला अति त्रिसिआन ॥ ९ ॥

सीता तैं मम कृत अपमाना । कटिहउँ तब सिर कटिन कृपाना  
नहिं त सपदि मानु मम बानी । सुमुखि होति न त जीवन हानी ॥  
स्याम सरोज दाम सम सुंदर । प्रभु भुज करि कर सम दसकंधरा ॥

सो भुज कंठ कि तव असि घोरा । सुनु सठ अस प्रवान पन मोरा ॥  
 चंद्रहास हर मम परितापं । रघुपति विरह अनल संजातं ॥  
 सीतल निसित बहसि बर धारा । कह सीता हर मम दुख भारा ॥  
 सुनत वचन पुनि मारन धावा । मयतनयाँ कहि नीति बुझावा ॥  
 कहेसि सकल निसिचरिन्ह बोलाई । सीतहि बहु विधि त्रासहु जाई  
 मास दिवस महुँ कहा न माना । तौ मैं मारवि काढ़ि कृपाना ॥

दो०—भवन गयउ दसकंधर इहाँ पिसाचिनि वृंद ।

सीतहि त्रास देखावहिं धरहिं रूप बहु मंद ॥ १० ॥

त्रिजटा नाम राच्छसी एका । राम चरन रति निपुन विवेका ॥  
 सयन्हौ बोलि सुनाएसि सपना । सीतहि सेंइ करहु हित अपना ॥  
 सपनं बानर लंका जारी । जातुधान सेना सब मारी ॥  
 खर आरूढ़ नगन दससीसा । मुंडित सिर खंडित भुज बीसा ॥  
 एहि विधि सो दच्छिन दिसि जाई । लंका मनहुँ विभीषन पाई ॥  
 नगर फिरी रघुवीर दोहाई । तब प्रभु सीता बोलि पठाई ॥  
 यह सपना मैं कहउँ पुकारी । होइहि सत्य गएँ दिन चारी ॥  
 तासु वचन सुनि ते सब डरीं । जनकसुता के चरनन्हि परीं ॥

दो०—जहँ तहँ गई सकल तब सीता कर मन सोच ।

मास दिवस बीतें मोहि मारिहि निसिचर पोच ॥ ११ ॥

त्रिजटा सन बोलीं कर जोरी । मातु विपति संगिनि तैं मोरी ॥  
 तजौं देह कर बेगि उपाई । दुसह विरहु अत्र नहिं सहि जाई ॥

आनि काठ रचु चिता बनाई । मातु अनल पुनि देहि लगाई ॥  
 सत्य करहि मम प्रीति सयानी । सुनै को श्रवन सूल सम बानी ॥  
 सुनत वचन पद गहि समुझाएसि । प्रभु प्रताप बल सुजसु सुनाएसि  
 निसि न अनल मिल सुनु सुकुमारी । अस कहि सो निज भवन सिधारी  
 कह सीता विधि भा प्रतिकूला । मिलिहि न पावक मिटिहि न सूला  
 देखिअत प्रगट गगन अंगारा । अवनि न आवत एकउ तारा ॥  
 पावकमय ससि खवत न आगी । मानहुँ मोहि जानि हतभागी ॥  
 सुनहि विनय मम ब्रिटप असोका । सत्य नाम करु हरु मम सोका ॥  
 नूतन किसलय अनल समाना । देहि अग्निनि जनि करहि निदाना  
 देखि परम बिरहाकुल सीता । सो छन कपिहि कल्प सम बीता ॥

सो०—कपि करि हृदयँ विचार दीन्हि मुद्रिका डारि तब ।

जनु असोक अंगार दीन्ह हरषि उठि कर गहेउ ॥ १२ ॥

तब देखी मुद्रिका मनोहर । राम नाम अंकित अति सुंदर ॥  
 चकित चितव मुदरी पहिचानी । हरष विषाद हृदयँ अकुलानी ॥  
 जीति को सकइ अजय रघुराई । माया तें असि रचि नहिं जाई ॥  
 सीता मन विचार कर नाना । मधुर वचन बोलेउ हनुमाना ॥  
 रामचंद्र गुन बरनै लगा । सुनतहिं सीता कर दुख भागा ॥  
 लागीं सुनै श्रवन मन लाई । आदिहु तें सब कथा सुनाई ॥  
 श्रवनामृत जेहिं कथा सुहाई । कही सो प्रगट होति किन भाई ॥  
 तब हनुमंत निकट चलि गयऊ । फिरि बैठी मनु



राम दूत मैं मातु जानकी । सत्य सपथ करुना निधान की ॥  
 यह मुद्रिका मातु मैं आनी । दीन्ह राम तुम्ह कहँ सहिदानी ॥  
 नर बानरहि संग कहु कैसैं । कही कथा भइ संगति जैसैं ॥  
 दो०—कपि के वचन सप्रेम सुनि उपजा मन बिस्वास ।

जाना मन क्रम बचन यह कृपासिंधु कर दास ॥ १३ ॥

हरिजन जानि प्रीति अति गाढ़ी । सजल नयन पुलकावलि बाढ़ी ॥  
 बूझत विरह जलधि हनुमाना । भयहु तात मो कहँ जलजाना ॥  
 अथ कहु कुसल जाउँ बलिहारी । अनुज सहित सुख भवन खरारी  
 कोमलचित्त कृपाल रघुराई । कपि केहि हेतु धरी निठुराई ॥  
 सहज बानि सेवक सुख दायक । कबहुँक सुरति करत रघुनायक ॥  
 नयन मम सीतल ताता । होइहि निरखि स्याम मृदु गाता  
 बचनु न आव नयन भरे बारी । अहह नाथ हौं निपट बिसारी ॥  
 देखि परम विरहाकुल सीता । बोला कपि मृदु बचन विनीता ॥  
 मातु कुसल प्रभु अनुज समेता । तव दुख दुखी सुकृपा निकेता ॥  
 जनि जननी मानहु जियँ ऊना । तुम्ह ते प्रेमु राम कै दूना ॥

दो०—रघुपति कर संदेसु अब सुनु जननी धरि धीर ।

अस कहि कपि गदगद भयउ भरे विलोचन नीर ॥ १४ ॥

कहेउ राम त्रियोग तव सीता । मो कहँ सकल भए विपरीता ॥  
 नव तरु किसलय मनहुँ कृसानू । कालनिसा सम निसि ससि भानू ॥  
 कुवलय त्रिपिन कुंत वन सरिसा । वारिद तपत तेल जनु वरिसा ॥

जे हित रहे करत तेइ पीरा । उरग स्वास सम त्रिविध समीरा ॥  
 कहेहू तें कछु दुख घटि होई । काहि कहौ यह जान न कोई ॥  
 तत्व प्रेम कर मम अरु तोरा । जानत प्रिया एकु मनु मोरा ॥  
 सो मनु सदा रहत तोहि पाहीं । जानु प्रीति रसु एतनेहि माहीं ॥  
 प्रभु संदेसु सुनत बैदेही । मगन प्रेम तन सुधि नहिं तेही ॥  
 कह कपि हृदयँ धीर धरु माता । सुमिरु राम सेवक सुखदाता ॥  
 उर आनहु रघुपति प्रभुताई । सुनि मम वचन तजहु कदराई  
 दो०-निसिचर निकर पतंग सम रघुपति बान कृसानु ।

जननी हृदयँ धीर धरु जरे निसाचर जानु ॥ १५ ॥  
 जौं रघुवीर होति सुधि पाई । करते नहिं बिलंबु रघुराई ॥  
 राम बान रवि उएँ जानकी । तम बरूथ कहँ जातुधान की ॥  
 अवहिं मातु मैं जाउँ लवाई । प्रभु आयसु नहिं राम दोहाई ॥  
 कछुक दिवस जननी धरु धीरा । कपिन्ह सहित अइहहिं रघुवीरा  
 निसिचर मारि तोहि लै जैहहिं । तिहुँ पुर नारदादि जसु गैहहिं ॥  
 हैं सुत कपि सब तुम्हहि समाना । जातुधान अति भट बलवाना ॥  
 मोरें हृदय परम संदेहा । सुनि कपि प्रगट कीन्हि निज देहा  
 कनक भूधराकार सरीरा । समर भयंकर अतिबल वीरा ॥  
 सीता मन भरोस तब भयऊ । पुनि लघु रूप पवनसुत लयऊ ॥  
 दो०-सुनु माता साखामृग नहिं बल बुद्धि विसाल ।

प्रभु प्रताप तें गरुड़हि खाइ परम लघु ब्याल ॥ १६ ॥

मन संतोष सुनत कपि बानी । भगति प्रताप तेज बल सानी ॥  
 आसिष दीन्हि रामप्रिय जाना । होहु तात बल सील निधाना ॥  
 अजर अमर गुननिधि सुत होहु । करहुँ बहुत रघुनायक छोहु ॥  
 करहुँ कृपा प्रभु अस सुनि काना । निर्भर प्रेम मगन हनुमाना ॥  
 बार बार नाएसि पद सीसा । बोला वचन जोरि कर कीसा ॥  
 अब कृतकृत्य भयउँ मैं माता । आसिष तव अमोघ विख्याता ॥  
 सुनहु मातु मोहि अतिसय भूखा । लागि देखि सुंदर फल रूखा ॥  
 सुनु सुत करहिं त्रिपिन रखवारी । परम सुभट रजनीचर भारी ॥  
 तिन्ह कर भय माता मोहि नार्हीं । जौं तुम्ह सुख मानहु मन मारिं  
 दो०—देखि बुद्धि बल निपुन कपि कहेउ जानकीं जाहु ।

रघुपति चरन हृदयँ धरि तात मधुर फल खाहु ॥ १७ ॥

चलेउ नाइ सिरु पैठेउ बागा । फल खाएसि तर तोरैं लागा ॥  
 रहे तहाँ बहु भट रखवारे । कछु मारेसि कछु जाइ पुकारे ॥  
 नाथ एक आवा कपि भारी । तेहिं असोक बाटिका उजारी ॥  
 खाएसि फल अरु बिटप उपारे । रच्छक मर्दि मर्दि महि डारे ॥  
 सुनि रावन पठए भट नाना । तिन्हहि देखि गर्जेउ हनुमाना ॥  
 सब रजनीचर कपि संघारे । गए पुकारत कछु अधमारे ॥  
 पुनि पठयउ तेहिं अच्छकुमार । चला संग लै सुभट अपारा ॥  
 आवत देखि बिटप गहि तर्जा । ताहि निपाति महाधुनि गर्जा ॥

दो०—कछु मारेसि कछु मर्दिसि कछु मिलएसि धरि धूरि ।

कछु पुनि जाइ पुकारे प्रभु मर्कट बल भूरि ॥ १८ ॥

सुनि सुत बध लंकेस रिसाना । पठएसि मेघनाद बलवाना ॥  
 मारसि जनि सुत बाँधेसु ताही । देखिअ कपिहि कहाँ कर आही ॥  
 चला इंद्रजित अतुलित जोधा । बंधु निधन सुनि उपजा क्रोधा ॥  
 कपि देखा दारुन भट आवा । कटकटाइ गर्जा अरु धावा ॥  
 अति बिसाल तरु एक उपारा । बिरथ कीन्ह लंकेस कुमारा ॥  
 रहे महाभट ताके संगी । गहि गहि कपि मर्दइ निज अंगी ॥  
 तिन्हहि निपाति ताहि सन बाजा । भिरे जुगल मानहुँ गजराजा ॥  
 मुठिका मारि चढ़ा तरु जाई । ताहि एक छन मुरुछा आई ॥  
 उठि बहोरि कीन्हिसि बहु माया । जीति न जाइ प्रभंजन जाया ॥  
 दो०—ब्रह्म अस्त्र तेहिँ साँधा कपि मन कीन्ह विचार ।

जौ न ब्रह्मसर मानउँ महिमा मिटइ अपार ॥ १९ ॥

ब्रह्मवान कपि कहूँ तेहिँ मारा । परतिहुँ बार कटकु संधारा ॥  
 तेहिँ देखा कपि मुरुछित भयऊ । नागपास बाँधेसि लै गयऊ ॥  
 जासु नाम जपि सुनहु भवानी । भव बंधन काटहिँ नर ग्यानी ॥  
 तासु दूत कि बंध तरु आवा । प्रभु कारज लागि कपिहिँ बंधावा ॥  
 कपि बंधन सुनि निसिचर धाए । कौतुक लागि सभाँ सब आए ॥  
 दसमुख सभा दीखि कपि जाई । कहि न जाइ कछु अति प्रभुताई ॥  
 कर जोरें सुर दिसिप विनीता । भृकुटि बिलोकत सकल समीता ॥  
 देखि प्रताप न कपि मन संका । जिमि अहिगन महुँ गरुड़ असंका ॥

दो०—कपिहि बिलोकि दसानन बिहसा कहि दुर्वाद ।

सुत बध सुरति कीन्हि पुनि उपजा हृदय विषाद ॥ २० ॥

कह लंकेस कवन तैं कीसा । केहि कैं बल घालेहि वन खीसा ॥  
 की धौं श्रवन सुनेहि नहिं मोही । देखउँ अति असंक सठ तोही ॥  
 मारे निसिचर केहिं अपराधा । कहु सठ तोहि न प्रान कइ बाधा  
 सुनु रावन ब्रह्मांड निकाया । पाइ जासु बल विरचति माया ॥  
 जाकैं बल विरंचि हरि ईसा । पालत सृजत हरत दससीसा ॥  
 जा बल सीस धरत सहसानन । अंडकोस समेत गिरि कानन ॥  
 धरइ जो विविध देह सुर त्राता । तुम्ह से सठन्ह सिखावनु दाता ॥  
 हर कोदंड कठिन जेहिं भंजा । तेहि समेत नृप दल मद गंजा ॥  
 खर दूषन तिसिरा अरु बाली । बधे सकल अतुलित बलसाली ॥

दो०—जाके बल लवलेस तैं जितेहु चराचर झारि ।

तासु दूत मैं जा करि हरि आनेहु प्रिय नारि ॥२१॥

जानउँ मैं तुम्हारि प्रभुताई । सहसत्राहु सन परी लराई ॥  
 समर बालि सन करि जसु पावा । सुनि कपि वचन बिहसि बिहरावा  
 खायउँ फल प्रभु लागी भूँखा । कपि सुभाव ते तोरेउँ रुखा ॥  
 सब कैं देह परम प्रिय स्वामी । मारहिं मोहि कुमारग गामी ॥  
 जिन्ह मोहि मारा ते मैं मारे । तेहि पर बाँधेउँ तनयँ तुम्हारे ॥  
 मोहि न कछु बाँधे कइ लाजा । कीन्ह चहउँ निज प्रभु कर काजा  
 विनती करउँ जोरि कर रावन । सुनहु मान तजि मोर सिखावन ॥  
 देखहु तुम्ह निज कुलहि विचारी । भ्रम तजि भजहु भगत भयहार  
 जाकैं डर अति काल डेराई । जो सुर असुर चराचर खाई ।

तासों बयर कबहुँ नहिं कीजै। मोरे कहें जानकी दीजै ॥

दो०—प्रनतपाल रघुनायक करुना सिंधु खरारि ।

गएँ सरन प्रभु राखिहैं तव अपराध बिसारि ॥ २२ ॥

राम चरन पंकज उर धरहू। लंका अचल राजु तुम्ह करहू ॥

रिषि पुलस्ति जसु विमल मयंका। तेहि ससि महुँ जनि होहु कलंका ॥

राम नाम बिनु गिरा न सोहा। देखु बिचारि त्यागि मद मोहा ॥

बसन हीन नहिं सोह सुरारी। सब भूषन भूषित बर नारी ॥

राम बिमुख संपति प्रभुताई। जाइ रही पाई बिनु पाई ॥

सजल मूल जिन्ह सरितन्ह नाहीं। बरषि गएँ पुनि तबहिं सुखाहीं ॥

सुनु दसकंठ कहउँ पन रोपी। बिमुख राम त्राता नहिं कोपी ॥

संकर सहस बिष्णु अज तोही। सकहिं न राखि राम कर द्रोही ॥

दो०—मोहमूल बहु सूल प्रद त्यागहु तम अभिमान ।

भजहु राम रघुनायक कृपा सिंधु भगवान ॥ २३ ॥

जदपि कही कपि अति हित बानी। भगति बिवेक बिरति नय सानी ॥

बोला बिहसि महा अभिमानी। मिला हमहि कपि गुर बड़ ग्यानी ॥

मृत्यु निकट आई खल तोही। लागेसि अधम सिखावन मोही ॥

उलटा होइहिं कह हनुमाना। मतिभ्रम तोर प्रगट मैं जाना ॥

सुनि कपि बचन बहुत खिसिआना। बेगि न हरहु मूढ़ कर प्राणा ॥

सुनत निसाचर मारन धाए। सचिवन्ह सहित बिभीषनु आए ॥

नाइ सीस करि बिनय बहूता। नीति बिरोध न मारिअ दूता ॥

आन दंड कछु करिअ गोसाँई । सबहीं कहा मंत्र भल भाई ॥  
 सुनत बिहसि बोला दसकंधर । अंग भंग करि पठइअ बंदर ॥

दो०—कपि कें ममता पूँछ पर सबहि कहउँ समुझाइ ।

तेल बोरि पट बाँधि पुनि पावक देहु लगाइ ॥ २४ ॥

पूँछहीन बानर तहँ जाइहि । तब सठ निज नाथहि लइ आइहि  
 जिन्ह कै कीन्हिसि बहुत बड़ाई । देखउँ मैं तिन्ह कै प्रभुताई ॥  
 बचन सुनत कपि मन मुसुकाना । भइ सहाय सारद मैं जाना ॥  
 जातुधान सुनि रावन बचना । लागे रचैं मूढ़ सोइ रचना ॥  
 रहा न नगर बसन धृत तेला । बाढ़ी पूँछ कीन्ह कपि खेला ॥  
 कौतुक कहँ आए पुरवासी । मारहिं चरन कारहिं बहु हाँसी ॥  
 बाजहिं ढोल देहिं सब तारी । नगर फेरि पुनि पूँछ प्रजारी ॥  
 पावक जरत देखि हनुमंता । भयउ परम लघुरूप तुरंता ॥  
 निबुकि चढ़ेउ कपि कनक अटारी । भई सभित निसाचर नारी ॥

दो०—हरि प्रेरित तेहि अवसर चले मरुत उनचास ।

अट्टहास करि गर्जा कपि बड़ि लाग अकास ॥ २५ ॥

देह बिसाल परम हरुआई । मंदिर तैं मंदिर चढ़ धाई ॥  
 जरइ नगर भा लोग बिहाला । झपट लपट बहु कोटि कराला ॥  
 तात मातु हा सुनिअ पुकारा । एहि अवसर को हमहि उबारा ॥  
 हम जो कहा यह कपि नहिं होई । बानर रूप धरें सुर कोई ॥  
 साधु अवग्या कर फलु ऐसा । जरइ नगर अनाथ कर जैसा ॥

जारा नगर निमिष एक माहीं । एक विभीषन कर गृह नाहीं ॥  
ता कर दूत अनल जेहि सिरिजा । जरा न सो तेहि कारन गिरिजा  
उलटि पलटि लंका सब जारी । कूदि परा पुनि सिंधु मझारी ॥

दो०-पूँछ बुझाई खोइ श्रम धरि लघु रूप बहोरि ।

जनकसुता कें आगें ठाढ़ भयउ कर जोरि ॥ २६ ॥

मातु मोहि दीजे कछु चीन्हा । जैसैं रघुनायक मोहि दीन्हा ॥  
चूड़ामनि उतारि तब दयऊ । हरष समेत पवनसुत लयऊ ॥  
कहेहु तात अस मोर प्रनामा । सब प्रकार प्रभु पूरनकामा ॥  
दीन दयाल विरिदु संभारी । हरहु नाथ मम संकट भारी ॥  
तात सकसुत कथा सुनाएहु । बान प्रताप प्रभुहि समुझाएहु ॥  
मास दिवस महुँ नाथु न आवा । तौ पुनि मोहि जिअत नहिं पावा  
कहु कपि केहि विधि राखौं प्राणा । तुम्हहू तात कहत अब जाना ॥  
तोहि देखि सीतलि भइ छाती । पुनि मो कहुँ सोइ दिनु सो राती

दो०-जनकसुतहि समुझाइ करि बहु विधि धीरजु दीन्ह ।

चरन कमल सिरु नाइ कपि गवनु राम पहिं कीन्ह ॥ २७ ॥

चलत महाधुनि गर्जेसि भारी । गर्भ खवहिं सुनि निसिचर नारी  
नाधि सिंधु एहि पारहि आवा । सबद किलिकिला कपिन्ह सुनावा  
हरषे सब त्रिलोकि हनुमाना । नूतन जन्म कपिन्ह तब जाना ॥  
मुख प्रसन्न तन तेज विराजा । कीन्हेसि रामचंद्र कर काजा ॥  
मिले सकल अति भए सुखारी । तलफत मीन पावु जिमि वारी ॥



चले हरषि रघुनायक पासा । पूँछत कहत नवल इतिहासा ॥  
तव मधुवन भीतर सब आए । अंगद संमत मधु फल खाए ॥  
रखवारे जब बरजन लागे । मुष्टि प्रहार हनत सब भागे ॥

दो०—जाइ पुकारे ते सब वन उजार जुबराज ।

सुनि सुग्रीव हरष कपि करि आए प्रभु काज ॥ २८ ॥

जौं न होति सीता सुधि पाई । मधुवन के फल सकहिं कि खाई  
एहि विधि मन विचार कर राजा । आइ गए कपि सहित समाजा ॥  
आइ सबन्हि नावा पद सीसा । मिलेउ सबन्हि अति प्रेम कपीसा  
पूँछी कुसल कुसल पद देखी । राम कृपाँ भा काजु बिसेषी ॥  
नाथ काजु कीन्हेउ हनुमाना । राखे सकल कपिन्ह के प्राना ॥  
सुनि सुग्रीव बहुरि तेहि मिलेऊ । कपिन्ह सहित रघुपति पहिं चलेउ  
राम कपिन्ह जब आवत देखा । किँएँ काजु मन हरष बिसेषा ॥  
फटिक सिला बैठे द्वौ भाई । परे सकल कपि चरनन्हि जाइ ॥

दो०—प्रीति सहित सब भेटे रघुपति करुना पुंज ।

पूँछी कुसल नाथ अब कुसल देखि पद कंज ॥ २९ ॥

जामवंत कह सुनु रघुराया । जा पर नाथ करहु तुम्ह दाया ॥  
ताहि सदा सुभ कुसल निरंतर । सुर नर मुनि प्रसन्न ता ऊपर ॥  
सोइ बिजई बिनई गुन सागर । तासु सुजसु त्रैलोक उजागर ॥  
प्रभु कीं कृपा भयउ सब काजू । जन्म हमार सुफल भा आजू ॥  
नाथ पवनसुत कीन्हि जो करनी । सहसहुँ मुख न जाइ सो बरनी ॥

नतनय के चरित सुहाए । जामवंत रघुपतिहि सुनाए ॥  
 त कृपानिधि मन अति भाए । पुनि हनुमान हरषि हियँ लाए ॥  
 हु तात केहि भाँति जानकी । रहति करति रच्छा स्वप्राण की

०-नाम पाहरू दिवस निसि ध्यान तुम्हार कपाट ।

लोचन निज पद जंत्रित जाहिं प्राण केहिं बाट ॥ ३० ॥

त मोहि चूड़ामनि दीन्ही । रघुपति हृदयँ लाइ सोइ लीन्ही  
 य जुगल लोचन भरि वारी । वचन कहे कछु जनककुमारी ॥  
 भुज समेत गहेहु प्रभु चरना । दीन बंधु प्रनतारति हरना ॥  
 क्रम वचन चरन अनुरागी । केहिं अपराध नाथ हौं त्यागी ॥  
 गुन एक मोर मैं माना । विद्युरत प्राण न कीन्ह पयाना ॥  
 य सो नयनन्हि को अपराधा । निसरत प्राण करहिं हठि बाधा ॥  
 ह अगिनि तनु तूल समीरा । स्वास जरइ छन माहिं सरीरा ॥  
 न खचहिं जलु निज हित लागी । जरैं न पाव देह विरहागी ॥  
 ता कै अति विपति त्रिसाला । विनहिं कहें भलि दीनदयाला ॥

०-निमिष निमिष कहनानिधि जाहिं कल्प सम वीति ।

वेगि चलिअ प्रभु आनिअ भुज बल खल दल जीति ॥ ३१ ॥

न सीता दुख प्रभु सुख अयना । भरि आए जल राजिव नयना ॥  
 न कायँ मन मम गति जाही । सपनेहुँ वृद्धिअ विपति कि ताही  
 ह हनुमंत विपति प्रभु सोई । जय तव सुमिरन भजन न होई  
 तेक बात प्रभु जातुधान की । रिपुहि जीति आनिबी ज्ञानकी

सुनु कपि तोहि समान उपकारी । नहिं कोउ सुर नर मुनि तनुधारी  
 प्रति उपकार करौं का तोरा । सनमुख होइ न सकत मन मोरा  
 सुनु सुत तोहि उरिन मैं नाहीं । देखेउँ करि विचार मन माहीं ॥  
 पुनि पुनि कपिहि चितव सुरत्राता । लोचन नीर पुलक अति गाता  
 दो०—सुनि प्रभु वचन विलोकि मुख गात हरषि हनुमंत ।

चरन परेउ प्रेमाकुल त्राहि त्राहि भगवंत ॥ ३२ ॥

बार बार प्रभु चहइ उठावा । प्रेम भगन तेहि उठव न भावा ॥  
 प्रभु करपंकज कपि कै सीमा । सुमिरि सो दसा भगन गौरीसा ॥  
 सावधान मन करि पुनि संकर । लागे कहन कथा अति सुंदर ॥  
 कपि उठाइ प्रभु हृदय लगावा । कर गहि परम निकट बैठावा ॥  
 कहु कपि रावन पालित लंका । केहि विधि दहेहु दुर्ग अति बंका  
 प्रभु प्रसन्न जाना हनुमाना । बोला वचन विगत अभिमाना ॥  
 साखामृग कै बड़ि मनुसाई । साखा तैं साखा पर जाई ॥  
 नाथि सिंधु हाटकपुर जारा । निसिचर गन बधि विपिन उजारा  
 सो सब तव प्रताप खुराई । नाथ न कछू मोरि प्रभुताई ॥  
 दो०—तां कहूँ प्रभु कछु अगम नहिं जा पर तुम्ह अनुकूल ।

तव प्रभावं चड़वानलहि जारि सकइ खलु तूल ॥ ३३ ॥

नाथ भगति अति सुखदायनी । देहु कृपा करि अनपायनी ।  
 सुनि प्रभु परम सरल कपि बानी । एवमस्तु तव कहेउ भवानी ।  
 उमा राम सुभाउ जेहिं जाना । ताहि भजनु तजि भाव न आना

यह संवाद जासु उर आना । रघुपति चरन भगति सीध पावा  
 सुनि प्रभु वचन कहहि कपि ब्रह्मा । जय जय जय प्रताप रघुन पौवा  
 तब रघुपति कपिपनिहि बोलावा । कहा चरि का कबहु पावावा ॥  
 अब विलंबु छेहि कामन बीजे । तुरत कपिन्ह कहैं आयम् दीजे ॥  
 कौतुक देखि रुदन बहू बरपी । नम नै मयन चरि मूर हरी ॥

दो०—कपिपनि ब्रह्म ब्रह्मा, आय, नयम नय ।

नाना वरन अरु अरु वरन वानर ब्रह्म वरन ॥ ११ ॥

कटकटहिं मर्कट बिकट भट बहु कोटि कोटिन्ह धावहीं ।  
 जय राम प्रबल प्रताप कोसलनाथ गुन गन गावहीं ॥१॥  
 सहि सक न भार उदार अहिपति बार बारहिं मोहई ।  
 गह दसन पुनि पुनि कमठ पृष्ठ कठोर सो किमि सोहई ॥  
 रघुवीर रुचिर प्रयाण प्रस्थिति जानि परम सुहावनी ।  
 जनु कमठ खर्पर सर्पराज सो लिखत अविचल पावनी ॥२॥

दो०—एहि विधि जाइ कृपानिधि उत्तरे सागर तीर ।

जहँ तहँ लागे खान फल भालु बिपुल कपि बीर ॥ ३५ ॥

उहाँ निसाचर रहहिं ससंका । जव तैं जायि गयउ कपि लंका ॥  
 निज निज गृहँ सब करहिं विचारा । नहिं निसिचर कुल केर उवारा  
 जासु दूत बल बरनि न जाई । तेहि आएँ पुर कवन भलाई ॥  
 दूतिन्ह सन सुनि पुरजन वानी । मंदोदरी अधिक अकुलानी ॥  
 रहसि जोरि कर पति पग लागी । बोली बचन नीति रस पागी ॥  
 कंत करण हरि सन परिहरहू । मोर कहा अति हित हियँ धरहू ॥  
 समुझत जासु दूत कह करनी । खवहिं गर्भ रचनीचर घरनी ॥  
 तासु नारि निज सचिव बोलाई । पठवहु कंत जो चहहु भलाई ॥  
 तव कुल कमल विपिन दुखदाई । सीता सीत निसा सम आई ॥  
 सुनहु नाथ सीता विनु दीन्हें । हित न तुम्हार संभु अज कीन्हें ॥

दो०—राम वान अहि गन सरिस निकर निसाचर भेक ।

जव लगि असत न तब लगि जतनु करहु तजि टेक ॥ ३६ ॥

श्रवण सुनी सठ ता करि बानी । बिहसा जगत बिदित अभिमानी  
सभय सुभाउ नारि कर साचा । मंगल महुँ भय मन अति काचा ॥  
जौ आवइ मर्कट कटकाई । जिअहिं बिचारे निसिचर खाई ॥  
कंपहिं लोकप जाकीं त्रासा । तासु नारि सभीत बड़ि हासा ॥  
अस कहि बिहसि ताहि उर लाई । चलेउ सभाँ ममता अधिकाई ॥  
मंदोदरी हृदयँ कर चिंता । भयउ कंत पर विधि विपरीता ॥  
बैठेउ सभाँ खवरि असि पाई । सिंधु पार सेना सत्र आई ॥  
बूझेसि सचिव उचित मत कहहू । ते सत्र हँसे मष्ट करिरहहू ॥  
जितेहु सुरासुर तत्र श्रम नाहीं । नर वानर केहि लेखे माहीं ॥

दो०—सचिव वैद गुर तीनि जौ प्रिय बोलहिं भय भास ।

राज धर्म तन तीनि कर होइ बेगहीं नास ॥ ३७ ॥  
सोइ रावन कहूँ बनी सहारै । अस्तुति करहिं सुनाइ सुनाई ॥  
अवसर जानि विभीषनु आवा । भ्राता चरन सीसु तेहिं नावा ॥  
पुनि सिरु नाइ बैठ निज आसन । बोला बचन पाइ अनुलसन ॥  
जौ कृपाल पूँछिहु मोहि वाता । मति अनुल्य कहउँ हित ताता ॥  
जो आपन चाहै कल्याना । मुजसु मुमति मुम गति मुन नाना ॥  
सो परनारि लिलार गोसाई । तनउ चउयि कै चंद्र किनाई ॥  
चौदह भुवन एक पति होई । भूतश्रेष्ठ तिष्ठइ ॥  
गुन सागर नागर नर जोऊ । अल्प लोभ मर ॥

दो०—काम क्रोध मद लोभ सब नाथ नरक के पंथ ।

सब परिहरि रघुवीरहि भजहु भजहिं जेहि संत ॥ ३८ ॥

तात राम नहिं नर भूपाला । भुवनेस्वर कालहु कर काला ॥  
 ब्रह्मा अनामय अज भगवंता । व्यापक अजित अनादि अनंता ॥  
 गो द्विज धेनु देव हितकारी । कृपा सिंधु मानुष तनुधारी ॥  
 जन रंजन भंजन खल ब्राता । वेद धर्म रच्छक सुनु भ्राता ॥  
 ताहि वयरु तजि नाइअ माथा । प्रनतारति भंजन रघुनाथा ॥  
 देहु नाथ प्रभु कहूँ बैदेही । भजहु राम विनु हेतु सनेही ॥  
 सरन गएँ प्रभु ताहु न त्यागा । विस्व द्रोह कृत अध जेहि लागा ॥  
 जासु नाम त्रय ताप नसावन । सोइ प्रभु प्रगट समुझु जियँ रावन  
 दो०—बार बार पद लागउँ विनय करउँ दससीस ।

परिहरि मान मोह मद भजहु कोसलाधीस ॥ ३९(क) ॥

मुनि पुलस्ति निज सिष्य सन कहि पठई यह बात ।

तुरत सो मैं प्रभु सन कही पाइ सुअवसर तात ॥ ३९(ख) ॥

माल्यवंत अति सचिव सयाना । तासु वचन सुनि अति सुख माना  
 तात अनुज तव नीतिविभूषन । सो उर धरहु जो कहत विभीषन ॥  
 रिपु उत्तकरष कहत सठ दोऊ । दूरि न करहु इहाँ हइ कोऊ ॥  
 माल्यवंत गृह गयउ बहोरी । कहइ विभीषनु पुनि कर जोरी ॥  
 सुमति कुमति सब कें उर रहहीं । नाथ पुरान निगम अस कहहीं ॥  
 जहाँ सुमति तहँ संपति नाना । जहाँ कुमति तहँ विपति निदाना ॥

तव उर कुमति बसी बिपरीता । हित अनहित मानहु रिपु प्रीता ॥  
कालराति निसिचर कुल केरी । तेहि सीता पर प्रीति घनेरी ॥

दो०—तात चरन गहि मागउँ राखहु मोर दुलार ।

सीता देहु राम कहूँ अहित न होइ तुम्हार ॥ ४० ॥

बुध पुरान श्रुति संमत बानी । कही बिभीषन नीति बखानी ॥  
सुनत दसानन उठा रिसाई । खल तोहि निकट मृत्यु अब आई  
जिअसि सदा सठ मोर जिआवा । रिपु कर पच्छ मूढ़ तोहि भावा ॥  
कहसि न खल अस को जग माहीं । भुज बल जाहि जिता मैं नाहीं ॥  
मम पुर बसि तपसिन्ह पर प्रीती । सठ मिलु जाइ तिन्हहि कहु नीती  
अस कहि कीन्हेसि चरन प्रहारा । अनुज गहे पद वारहिं वारा ॥  
उमा संत कइ इहइ बड़ाई । मंद करत जो करइ भलाई ॥  
तुम्ह पितु सरिस भलेहिं मोहि मारा । रामु भजैं हित नाथ तुम्हारा ॥  
सचिव संग लै नभ पथ गयऊ । सवहि सुनाइ कहत अस भयऊ ॥

दो०—रामु सत्यसंकल्प प्रभु सभा कालबस तोरि ।

मैं रघुबीर सरन अब जाउँ देहु जनि खोरि ॥ ४१ ॥

अस कहि चला बिभीषनु जवहीं । आयूहीन भए सब तवहीं ॥  
साधु अवग्या तुरत भवानी । कर कल्याण अखिल कै हानी ॥  
रावन जवहिं बिभीषन त्यागा । भयउ बिभव विनु तवहिं अभागा  
चलेउ हरपि रघुनायक पाहीं । करत मनोरथ बहु मन माहीं ॥  
देखिहुँ जाइ चरन जलजाता । अरुन मृदुल सेवक सुखदाता ॥



जे पद परसि तरी रिपिनारी । दंडक कानन पावनकारी ॥  
 जे पद जनकसुताँ उर लाए । कपट कुरंग संग धर धाए ॥  
 हर उर सर सरोज पद जेई । अहो भाग्य में देखिहउँ तेई ॥  
 दो०—जिन्ह पायन्ह के पादुकन्हि भरतु रहे मन लाइ ।

ते पद आजु बिलोकिहउँ इन्ह नयनन्हि अब जाइ ॥ ४२ ॥

एहि विधि करत सप्रेम विचारा । आयउ सपदि सिंधु एहिं पारा ॥  
 कपिन्ह विभीषनु आवत देखा । जाना कोउ रिपु दूत बिसेषा ॥  
 ताहि राखि कपीस पहिं आए । समाचार सब ताहि सुनाए ॥  
 कह सुग्रीव सुनहु रघुराई । आवा मिलन दसानन भाई ॥  
 कह प्रभु सखा बूझिऐ काहा । कहइ कपीस सुनहु नरनाहा ॥  
 जानि न जाइ निसाचर माया । कामरूप केहि कारन आया ॥  
 भेद हमार लेन सठ आवा । राखिअ बाँधि मोहि अस भावा ॥  
 सखा नीति तुम्ह नीकि विचारी । मूम पन सरनागत भयहारी ॥  
 सुनि प्रभु वचन हरप हनुमाना । सरनागत बच्छल भगवाना ॥

दो०—सरनागत कहूँ जे तजहिं निज अनहित अनुमानि ।

ते नर पावँर पापमय तिन्हहि बिलोकत हानि ॥ ४३ ॥

कोटि विप्र बध लागहिं जाहू । आएँ सरन तजउँ नहिं ताहू ।  
 सनमुख होइ जीव मोहि जवहीं । जन्म कोटि अध नासहिं तवहीं ।  
 पापवंत कर सहज सुभाऊ । भजनु मोर तेहि भाव न काऊ ।  
 जौँ पै दुष्टहृदय सोइ होई । मोरें सनमुख आव कि सोई ।

निर्मल मन जन सो मोहि पावा । मोहि कपट छल छिद्र न भावा ॥  
भेद लेन पठवा दससीसा । तबहुँ न कछु भय हानि कपीसा ॥  
जग महुँ सखा निसाचर जेते । लछिमनु हनइ निमिष महुँ तेते ॥  
जाँ सभीत आवा सरनाई । रखिहउँ ताहि प्रान की नार्ई ॥

दो०—उभय भाँति तेहि आनहु हँसि कह कृपानिकेत ।

जय कृपाल कहि कपि चले अंगद हनू समेत ॥ ४४ ॥

सादर तेहि आगें करि बानर । चले जहाँ रघुपति करुनाकर ॥  
दूरिहि ते देखे द्वौ भ्राता । नयनानंद दान के दाना ॥  
बहुरि राम छवि धाम विलोकी । रहेउ ठटुकि एकटक पल रोकी  
भुज प्रलंब कंजारुन लोचन । स्यामल गात प्रनत भय मोचन  
सिंघ कंध आयत उर सोहा । आनन अमित मदन मन मोहा ॥  
नयन नीर पुलकित अति गाता । मन धरि धीर कही मृदु वाता ॥  
नाथ दसानन कर मैं भ्राता । निसिचर वंस जनम सुरत्राता ॥  
सहज पापप्रिय तामस देहा । जथा उलूकहि तम पर नेहा ॥

दो०—श्रवन सुजसु सुनि आयउँ प्रभु भंजन भव भीर ।

त्राहि त्राहि आरति हरन सरन सुखद रघुवीर ॥ ४५ ॥

अस कहि करत दंडवत देखा । तुरत उठे प्रभु हरष विसेषा ॥  
दीन वचन सुनि प्रभु मन भावा । भुज विसाल गहि हृदयँ लगावा  
अनुज सहित मिलि ढिग बैठारी । बोले वचन भगत भयहारी ॥  
कहु लंकेस सहित परिवारा । कुसल कुठाहर बास तुम्हारा ॥

# ॥ रामचरितमानस ॥

मंडली बसतु दिनु राती। सखा भय निबद्ध कोहि भौती  
जानउँ तुम्हारि सब रीती। अति नय निपुन न भान अनीती  
भल बास नरक कर ताता। दुष्ट संग जनि देष्ट विपाता ॥  
पद देखि कुसल खुराया। जौं तुम्ह कीन्ह जानि जन दाया  
दो०—तब लागि कुसल न जीव कहूँ सपनेहूँ मन बिभाम।  
जब लागि भजत न राम कहूँ सोक धाम तजि काम ॥४६॥  
तब लागि हृदयँ बसत खल नाना। लोभ मोह मन्त्र मद माना ॥  
जब लागि उर न बसत खुनाया। धरे चाप सायक कटि भाया ॥  
ममता तरुन तभी अँधिआरी। राम द्वेष उरूक सुखकारी ॥  
नन लागि बसति जीव मन भाही। जब लागि प्रभु प्रताप रनि नाहीं  
सुख मित्रे भय भारे। देखि राम पद कमल तुम्हारे ॥  
जा पर अनुकला। ताहि न व्याप निनिध भय सूख  
पर अति अधम सुभाऊ। सुभ आचरनु कीन्ह नहिं काऊ  
सु रूप मुनि ध्यान न आवा। तेहिं प्रभु हरषि हृदयँ मोहि ला  
दो०—अहोभाग्य मम अमित अति राम कृपा सुखपुंज।  
देखेउँ नयन बिरंचि सिव सेव्य जुगल पद कंज ॥४७॥  
सुनहु सखा निज कहउँ सुभाऊ। जान भुसुंछि संभु गिरिजाऊ  
जौं नर होइ चराचर द्रोही। जानै सभय सरन तकि मोह  
तजि मद मोह कपट लल नाना। करउँ सग तेहि साधु समा  
जगनी जनक बंधु सुत दाया। तनु धनु भवन सुहृद परिव

सब कै ममता ताग बटोरी । मम पद मनहि बाँध बरि डोरी ॥  
समदरसी इच्छा कछु नाहीं । हरष सोक भय नहिं मन माहीं ॥  
अस सजन मम उर बस कैसें । लोभी हृदयँ बसइ धनु जैसें ॥  
तुम्ह सारिखे संत प्रिय मोरें । धरउँ देह नहिं आन निहोरें ॥

दो०—सगुन उपासक परहित निरत नीति दृढ़ नेम ।

ते नर प्राण समान मम जिन्ह के द्विज पद प्रेम ॥४८॥

सुनु लंकेस सकल गुन तोरें । तातें तुम्ह अतिसय प्रिय मोरें ॥  
राम वचन सुनि बानर जूथा । सकल कहहिं जय कृपा बरूथा ॥  
सुनत विभीषनु प्रभु कै बानी । नहिं अघात श्रवनामृत जानी ॥  
पद अंबुज गहि बारहिं बारा । हृदयँ समात न प्रेमु अपारा ॥  
सुनहु देव सचराचर स्वामी । प्रनतपाल उर अंतरजामी ॥  
उर कछु प्रथम बासना रही । प्रभु पद प्रीति सरित सो बही ॥  
अब कृपाल निज भगति पावनी । देहु सदा सिव मन भावनी ॥  
एवमस्तु कहि प्रभु रनधीरा । मागा तुरत सिंधु कर नीरा ॥  
जदपि सखा तव इच्छा नाहीं । मोर दरसु अमोघ जग माहीं ॥  
अस कहि राम तिलक तेहि सारा । सुमन वृष्टि नभ भई अपारा ॥

दो०—रावन क्रोध अनल निज स्वास समीर प्रचंड ।

जरत विभीषनु राखेउ दीन्हेउ राजु अखंड ॥४९(क)॥

जो संपति सिव रावनहि दीन्हि दिउँ दस माथ ।

सोइ संपदा विभीषनहि सकुचि दीन्हि रघुनाथ ॥४९(ख)॥

अस प्रभु छाड़ि भजहिं जे आना । ते नर पसु बिनु पूँछ विधाना ॥  
 निज जन जानि ताहि अपनावा । प्रभु सुभाव कपि कुल मन भावा ॥  
 पुनि सर्वग्य सर्व उर बासी । सर्वरूप सब रहित उदासी ॥  
 बोले वचन नीति प्रतिपालक । कारन मनुज दनुज कुल घालक ॥  
 सुनु कपीस लंकापति वीरा । केहि विधि तरिअ जलधि गंभीरा ॥  
 संकुल मकर उरग झप जाती । अति अगाध दुस्तर सब भाँती ॥  
 कह लंकेस सुनहु खुनायक । कोटि सिंधु सोपक तव सायक ॥  
 जद्यपि तदपि नीति असि गाई । विनय करिअ सागर सन जाई ॥  
 दो०—प्रभु तुम्हार कुलगुर जलधि कहिहि उपाय विचारि ।

बिनु प्रयास सागर तरिहि सकल भालु कपि धारि ॥ ५० ॥  
 सखा कही तुम्ह नीकि उपाई । करिअ दैव जौं होइ सहाई ।  
 मंत्र न यह लछिमन मन भावा । राम वचन सुनि अति दुख पावा ।  
 नाथ दैव कर कवन भरोसा । सोपिअ सिंधु करिअ मन रोसा ।  
 कादर मन कहँ एक अधारा । दैव दैव आलसी पुकार ।  
 सुनत बिहसि बोले खुबीरा । ऐसेहिं करब धरहु मन धीरा ।  
 अस कहि प्रभु अनुजहि समुझाई । सिंधु समीप गए खुरा ।  
 प्रथम प्रनाम कीन्ह सिरु नाई । बैठे पुनि तट दर्भ डसा ।  
 जबहिं विभीषन प्रभु पहिं आए । पाछें रावन दूत पावे ।  
 दो०—सकल चरित तिन्ह देखे धरें कपट कपि देह ।  
 प्रभु गुन हृदय सराहिं सरनागत पर नेह ॥

प्रगट बखानहिं राम सुभाऊ । अति सप्रेम गा विसरि दुराऊ ॥  
 रिपु के दूत कपिन्ह तब जाने । सकल बाँधि कपीस पहिं आने ॥  
 कह सुग्रीव सुनहु सब वानर । अंग भंग करि पठवहु निसिचर ॥  
 सुनि सुग्रीव बचन कपि धाए । बाँधि कटक चहु पास फिराए ॥  
 बहु प्रकार मारन कपि लागे । दीन पुकारत तदपि न त्यागे ॥  
 जो हमार हर नासा काना । तेहि कोसलाधीस कै आना ॥  
 सुनि लछिमन सब निकट बोलाए । दया लागि हँसि तुरत छोड़ाए ॥  
 रावन कर दीजहु यह पाती । लछिमन बचन बाचु कुलघाती ॥

दो०—कहेहु मुखागर मूढ़ सन मम संदेसु उदार ।

सीता देइ मिलहु न त आवा कालु तुम्हार ॥ ५२ ॥

तुरत नाइ लछिमन पद माथा । चले दूत वरनत गुन गाथा ॥  
 कहत राम जसु लंकाँ आए । रावन चरन सीस तिन्ह नाए ॥  
 बिहसि दसानन पूँछी वाता । कहसि न सुक आपनि कुसलाता ॥  
 पुनि कहु खबरि विभीषन केरी । जाहि मृत्यु आई अति नेरी ॥  
 करत राज लंका सठ त्यागी । होइहि जव कर कीट अभागी ॥  
 पुनि कहु भालु कीस कटकाई । कठिन काल प्रेरित चलि आई ॥  
 जिन्ह के जीवन कर रखवारा । भयउ मृदुल चित सिंधु विचारा ॥  
 कहु तपसिन्ह कै बात बहोरी । जिन्ह के हृदयँ त्रास अति मोरी ॥

दो०—की भइ भेंट कि फिरि गए श्रवन सुजसु सुनि मोर ।

कहसि न रिपु दल तेज बल बहुत चकित चित तोर ॥ ५३ ॥

नाथ कृपा करि पूँछहु जैसे । मानहु कहा क्रोध तजि तैसे ॥  
 मिला जाइ जब अनुज तुम्हारा । जातहि राम तिलक तेहि सारा ॥  
 रावन दूत हमहि सुनि काना । कपिन्ह बाँधि दीन्हे दुख नाना ॥  
 श्रवन नासिका काटैं लागे । राम सपथ दीन्हें हम त्यागे ॥  
 पूँछिहु नाथ राम कटकाई । वदन कोटि सत वरनि न जाई ॥  
 नाना वरन भालु कपि धारी । बिकटानन बिसाल भयकारी ॥  
 जेहि पुर दहेउ हतेउ सुत तोरा । सकल कपिन्ह महुँ तेहि बलु थोरा ॥  
 अमित नाम भट कठिन कराला । अमित नाग बल विपुल बिसाला ॥  
 दो०—द्विविद मयंद नील नल अंगद गद बिकटासि ।

दधिमुख केहरि निसठ संठ जामवंत बलरासि ॥ ५४ ॥

ए कपि सब सुग्रीव समाना । इन सम कोटिन्ह गनइ को नाना ॥  
 राम कृपाँ अतुलित बल तिन्हहीं । तृन समान त्रैलोकहि गनहीं ॥  
 अस मैं सुना श्रवन दसकंधर । पंदुमं अठारह जूथप बंदर ॥  
 नाथ कटक महुँ सो कपि नाहीं । जो न तुम्हहि जीतै रन माहीं ॥  
 परम क्रोध मीजहिं सब हाथा । आयसुँ पै न देहिं रघुनाथा ॥  
 सोषहिं सिंधु सहित श्लष व्याला । पूरहिं न त भरि कुधर बिसाला ।  
 मर्दि गर्द मिलवहिं दससीसा । ऐसेइ वज्रन कहहिं सब कीसा ।  
 गर्जहिं तर्जहिं सहज असंका । मानहुँ ग्रसन चहत हहिं लंका ।

दो०—सहज सूर कपि भालु सब पुनि सिर पर प्रभु राम ।

रावन काल कोटि कहुँ जीति सकहिं संग्राम ॥ ५५ ॥

राम तेज बल बुधि विपुलाई । सेप सहस सत संकहिं न गाई ॥  
 सक सर एक सोपि सत सागर । तव भ्रातहि पूँछेउ नय नागर ॥  
 तासु वचन सुनि सागर पाहीं । मागत पंथ कृपा मन माहीं ॥  
 सुनत वचन विहसा दससीसा । जौं असि मति सहाय कृत कीसा  
 सहज भीरु कर वचन दढ़ाई । सागर सन ठानी मचलाई ॥  
 मूढ़ मृषा का करसि बड़ाई । रिपु बल बुद्धि थाह में पाई ॥  
 सचिव सभित विभीषन जाकें । विजय विभूति कहाँ जग ताकें ॥  
 सुनि खल वचन दूत रिस बाढ़ी । समय विचारि पत्रिका काढ़ी ॥  
 रामानुज दीन्ही यह पाती । नाथ वचाइ जुड़ावहु छाती ॥  
 विहसि वाम कर लीन्ही रावन । सचिव बोलि सठ लाग वचावन  
 दो०-बातन्ह मनहि रिझाइ सठ जनि घालसि कुल खीस ।

राम विरोध न उवरसि सरन विष्णु अज ईस ॥५६(क)॥

की तजि मान अनुज इव प्रभु पद पंकज भृंग ।

होहि कि राम सरानल खल कुल सहित पतंग ॥५६(ख)॥

सुनत सभय मन मुख मुसुकाई । कहत दसानन सवहि सुनाई ॥  
 भूमि परा कर गहत अकासा । लवु तापस कर वाग विलासा ॥  
 कहं सुक नाथ सत्य सव बानी । समुझहु छाड़ि प्रकृत अभिमानी  
 सुनहु वचन मम परिहरि क्रोधा । नाथ राम सन तजहु विरोधा ॥  
 अति कोमल रघुवीर सुभाऊ । जद्यपि अखिल लोक कर राऊ ॥  
 मिलत कृपा तुम्ह पर प्रभु करिही । उर अपराध न एकउ धरिही ॥



जनकसुता रघुनाथहि दीजे । एतना कहा मोर प्रभु कीजे ॥  
 जब तेहि कहा देन बैदेही । चरन प्रहार कीन्ह सठ तेही ॥  
 नाइ चरन सिरु चला सो तहाँ । कृपा सिंधु रघुनाथक जहाँ ॥  
 करि प्रनामु निज कथा सुनाई । राम कृपाँ आपनि गति पाई ॥  
 रिपि अगस्ति कीं साप भवानी । राछस भंयउ रहा मुनि ग्यानी ॥  
 ब्रंदि राम पद बारहिं बारा । मुनिनिज आश्रम कहूँ पगु धारा  
 दो०—विनय न मानत जलधि जड़ गए तीनि दिन बीति ।

बोले राम सकोप तब भय बिनु होइ न प्रीति ॥५७॥

लछिमन बान सरासन आनू । सोपाँ वारिधि विसिख कृसानू ॥  
 सठ सन विनय कुटिल सन प्रीती । सहज कृपन सन सुंदर नीती ॥  
 ममता रत सन ग्यान कहानी । अति लोभी सन विरति बखानी  
 क्रोधिहि सम कामिहि हरि कथा । ऊसर बीज वएँ फल जथा ॥  
 अस कहि रघुपति चाप चढ़ावा । यह मत लछिमन के मन भावा ॥  
 संधानेउ प्रभु विसिख कराला । उठी उदधि उर अंतर ज्वाला ॥  
 मकर उरग झप गन अकुलाने । जरत जंतु जलनिधि जब जाने ॥  
 कनक थार भरि मनि गन नाना । विप्र रूप आयउ तजि माना ॥

दो०—काटेहिं पइ कदरी फरइ कोटि जतन कोउ सींच ।

विनय न मान खगोस सुनु डाटेहिं पइ नव नीच ॥५८॥

सभय सिंधु गहि पद प्रभु केरे । छंमहु नाथ सत्र अवगुन मेरे ॥  
 गगन समीर अनल जल धरनी । इन्ह कइ नाथ सहज जड़ करनी

तव प्रेरित मायाँ उपजाए । सृष्टि हेतु सब ग्रंथनि गाए ॥  
 प्रभु आयसु जेहि कहँ जस अहई । सो तेहि भाँति रहें सुख लहई ॥  
 प्रभु भल कीन्ह मोहि सिख दीन्ही । मरजादा पुनि तुम्हरी कीन्ही ॥  
 ढोल गवाँर सूद्र पसु नारी । सकल ताड़ना के अधिकारी ॥  
 प्रभु प्रताप मैं जात्र सुखाई । उतरिहि कटकु न मोरि बड़ाई ॥  
 प्रभु अग्या अपेल श्रुति गाई । करौं सो बेगि जो तुम्हहि सोहाई

दो०—सुनत बिनीत बचन अति कह कृपाल मुसुकाइ ।

जेहि बिधि उत्तरै कपि कटकु तात सो कहहु उपाइ ॥५९॥

नाथ नील नल कपि द्वौ भाई । लरिकाईं रिपि आसिष पाई ॥  
 तिन्ह कें परस किएँ गिरि भारे । तरिहहिं जलधि प्रताप तुम्हारे ॥  
 मैं पुनि उर धरि प्रभु प्रभुताई । करिहउँ बल अनुमान सहाई ॥  
 एहिबिधि नाथ पयोधि बँधाइअ । जेहिं यह सुजसु लोक तिहुँ गाइअ  
 एहिं सर मम उत्तर तट बासी । हतहु नाथ खल नर अघ रासी ॥  
 सुनि कृपाल सागर मन पीरा । तुरतहिं हरी राम रनधीरा ॥  
 देखि राम बल पौरुष भारी । हरषि पयोनिधि भयउ सुखारी ॥  
 सकल चरित कहि प्रभुहि सुनावा । चरन बंदि पाथोधि सिधावा ॥

छं०—निज भवन गवनेउ सिंधु श्रीरघुपतिहि यह मत भायऊ ।

यह चरित कलि मलहर जथामति दास तुलसी गायऊ ॥

सुख भवन संसय समन दवन विषाद रघुपति गुन गना ।

तजि सकल भास भरोस गावहि सुनहि संतत सठ मना ॥

दो०—सकल सुमंगल दायक रघुनायक गुन गान ।  
सादर सुनहिं ते तरहिं भव सिंधु बिना जलजान ॥ ६० ॥

मासपारायण, चौबीसवाँ विश्राम  
इति श्रीमद्रामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसने  
पञ्चमः सोपानः समाप्तः ।

( सुन्दरकाण्ड समाप्त )



॥ श्रीरामाय नमः ॥

# श्रीरामचरितमानस

लंकाकाण्ड



दो०-सकल सुमंगल दायक रघुनायक गुन गान ।  
सादर सुनहिं ते तरहिं भव सिंधु बिना जलजान ॥ ६० ॥

मासपारायण, चौबीसवाँ विश्राम  
इति श्रीमद्रामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसने  
पञ्चमः सोपानः समाप्तः ।

( सुन्दरकाण्ड समाप्त )



॥ श्रीरामाय नमः ॥

# श्रीरामचरितमानस

लंकाकाण्ड



## रामके लिये देव-रथ



पुंज रथ दिव्य अनूपा ।

हरापि चढे कोसलपुर भूपा ॥

श्रीगणेशाय नमः

श्रीजानकीवल्लभो विजयते

# श्रीरामचरितमानस

षष्ठ सोपान

( लंकाकाण्ड )

श्लोक

रामं कामारिसेव्यं भवभयहरणं कालमत्तेभसिंहं  
योगीन्द्रं ज्ञानगम्यं गुणनिधिमजितं निर्गुणं निर्विकारं ।  
मायातीतं सुरेशं खलवधनिरतं ब्रह्मवृन्दैकदेवं  
वन्दे कन्दावदातं सरसिजनयनं देवमुर्वीशरूपम् ॥१॥  
शङ्खेन्द्राभमतीवसुन्दरतनुं शार्दूलचर्माम्बरं  
कालव्यालकरालभूषणधरं गङ्गाशशाङ्कप्रियम् ।



काशीशं कलिकल्मषौघशमनं कल्याणकल्पद्रुमं  
 नौमीढ्यं गिरिजापतिं गुणनिधिं कन्दर्पहं शङ्करम् ॥२॥  
 यो ददाति सतां शम्भुः कैवल्यमपि दुर्लभम् ।  
 खलानां दण्डकृद्योऽसौ शङ्करः शं तनोतु मे ॥ ३ ॥

दो०—लव निमेष परमानु जुग बरष कलप सर चंड ।  
 भजसि न मन तेहि राम को कालु जासु कोदंड ॥

सो०—सिंधु बचन सुनि राम सचिव बोलि प्रभु अस कहेउ ।  
 अब बिलंबु केहि काम करहु सेतु उत्तरै कटकु ॥  
 सुनहु भानु कुल केतु जामवंत कर जोरि कह ।  
 नाथ नाम तव सेतु नर चढ़ि भव सागर तरहिं ॥

लघु जलधि तरत कति बारा । अस सुनि पुनि कह पवनकुमारा  
 मु प्रताप बड़वानल भारी । सोपेउ प्रथम पयोनिधि वारी ॥  
 रिपु नारि रुदन जल धारा । भरेउ बहोरि भयउ तेहिं खारा ॥  
 सुनि अति उकुति पवनसुत केरी । हरषे कपि रघुपति तन हेरी ॥  
 जामवंत बोले दोउ भाई । नल नीलहि सत्र कथा सुनाई ॥  
 राम प्रताप सुमिरि मन माहीं । करहु सेतु प्रयास कछु नाहीं ॥  
 बोलि लिए कपि निकर बहोरी । सकल सुनहु विनती कछु मोरी ॥  
 राम चरन पंकज उर धरहू । कौतुक एक भालु कपि करहू ॥  
 धावहु मर्कट विकट बरूथा । आनहु बिटप गिरिन्ह के जूथा ॥  
 सुनि कपि भालु चले करि हूहा । जय रघुवीर प्रताप समूहा ॥

दो०—अति उतंग गिरि पादप लीलहिं लेहिं उठाइ ।

आनि देहिं नल नीलहि रचहिं ते सेतु बनाइ ॥ १ ॥

सैल विसाल आनि कपि देहीं । कंदुक इव नल नील ते लेहीं ॥  
देखि सेतु अति सुंदर रचना । विहसि कृपानिधि बोले वचना  
परम रम्य उत्तम यह धरनी । महिमा अमित जाइ नहिं बरनी  
करिहउँ इहाँ संभु थापना । मोरे हृदयँ परम कल्पना ॥  
सुनि कपीस बहु दूत पठाए । मुनिवर सकल बोलि लैं आए ॥  
लिंग थापि विधिवत करि पूजा । सिव समान प्रिय मोहि न दूजा  
सिव द्रोही मम भगत कहावा । सो नर सपनेहुँ मोहि न पावा ॥  
संकर विमुख भगति चह मोरी । सो नारकी मूढ़ मति थोरी ॥

दो०—संकरप्रिय मम द्रोही सिव द्रोही मम दास ।

ते नर करहिं कल्प भरि बोर नरक महुँ बास ॥ २ ॥

जे रामेस्वर दरसनु करिहहिं । ते तनु तजि मम लोक सिधरिहहिं  
जो गंगाजलु आनि चढ़ाइहि । सो साजुज्य मुक्ति नर पाइहि ॥  
होइ अकाम जो छल तजि सेइहि । भगति मोरि तेहि संकर देइहि ॥  
मम कृत सेतु जो दरसनु करिही । सो विनु श्रम भव सागर तरिही ॥  
राम वचन सत्र के जिय भाए । मुनिवर निज निज आश्रम आए  
गिरिजा खूपति कै यह रीती । संतत करहिं प्रनत पर प्रीती ॥  
बाँधा सेतु नील नल नागर । राम कृपाँ जसु भयउ उजागर ॥  
बूझिं आनहि बोरहिं जेई । भाप जगल बोझित मम वेई ॥

महिमा यह न जलधि कइ बरनी। पाहन गुन न कपिन्ह कइ करनी॥

दो०—श्री रघुवीर प्रताप ते सिंधु तरे पाषाण ।

ते मतिमंद जे राम तजि भजहिं जाइ प्रभु आन ॥ ३ ॥

बाँधि सेतु अति सुदृढ़ बनावा । देखि कृपानिधि के मन भावा ॥

चली सेन कछु बरनि न जाई । गर्जहिं मर्कट भट समुदाई ॥

सेतुबंध ढिग चढ़ि रघुराई । चितव कृपाल सिंधु बहुताई ॥

देखन कहूँ प्रभु करुना कंदा । प्रगट भए सब जलचर वृंदा ॥

मकर नक्र नाना झप व्याला । सत जोजन तन परम विसाला ॥

अइसेउ एक तिन्हहि जे खाहीं । एकन्ह केँ डर तेपि डेराहीं ॥

प्रभुहि बिलोकहिं टरहिं न टारे । मन हरषित सब भए सुखारे ॥

तिन्ह की ओट न देखिअ वारी । मगन भए हरि रूप निहारी ॥

चला कटकु प्रभु आयसु पाई । को कहि सक कपि दल त्रिपुलाई ॥

दो०—सेतुबंध भइ भीर अति कपि नभ पंथ उड़ाहिं ।

अपर जलचरन्हि ऊपर चढ़ि चढ़ि पारहि जाहिं ॥ ४ ॥

अस कौतुक बिलोकि द्वौ भाई । विहँसि चले कृपाल रघुराई ॥

सेन सहित उतरे रघुवीरा । कहि न जाइ कपि जूथप भीरा ॥

सिंधु पार प्रभु डेरा कीन्हा । सकल कपिन्ह कहूँ आयसु दीन्हा ॥

खाहु जाइ फल मूल सुहाए । सुनत भालु कपि जहँ तहँ धाए ॥

सब तरु फरे राम हित लागी । रितु अरु कुरितु काल गति त्यागी ॥

खाहिं मधुर फल बिटप हलावहिं । लंका सन्मुख सिखर चलावहिं ॥

जहँ कहँ फिरत निसाचर पावहिं । घेरि सकल बहु नाच नचावहिं ॥  
 दसनन्हि काटि नासिका काना । कहि प्रभु सुजसु देहिं तत्र जाना ॥  
 जिन्ह कर नासा कान निपाता । तिन्ह रावनहि कही सत्र वाता ॥  
 सुनत श्रवन वारिधि बंधाना । दस मुख बोलि उठा अकुलाना ॥  
 दो०—ब्रँध्यो वननिधि नीरनिधि जलधि सिंधु बारीस ।

सत्य तोयनिधि कंपति उदधि पयोधि नदीस ॥ ५ ॥

निज विकलता विचारि बहोरी । विहँसि गयउ गृह करि भय भोरी  
 मंदोदरीं सुन्यो प्रभु आयो । कौतुकीं पाथोधि बँधायो ॥  
 कर गहि पतिहि भवन निज आनी । बोली परम मनोहर बानी ॥  
 चरन नाइ सिरु अंचलु रोपा । सुनहु बचन पिय परिहरि कोपा ॥  
 नाथ बयर कीजे ताही सों । बुधि बल सक्रिअ जीति जाही सों  
 तुम्हहि रघुपतिहि अंतर कैसा । खलु खद्योत दिनकरहि जैसा ॥  
 अतिबल मधु कैटभ जेहिं मारे । महावीर दितिसुत संघारि ॥  
 जेहिं बलि ब्रँधि सहसभुज मारा । सोइ अवतरेउ हरन महि भारा ॥  
 तासु विरोध न कीजिअ नाथा । काल करम जिव जाकें हाथा ॥

दो०—रामहि सौँपि जानकी नाइ कमल पद माथ ।

सुत कहँ राज समर्पि वन जाइ भजिअ रघुनाथ ॥ ६ ॥

नाथ दीन दयाल रघुराई । बाघउ सनमुख गएँ न खाई ॥  
 चाहिअ करन सो सत्र करि वीते । तुम्ह सुर असुर चराचर जीते ॥  
 संत कहहिं असि नीति दसानन । चौथेपन जाइहि नृप कानन ॥

तासु भजनु कीजिअ तहँ भर्ता । जो कर्ता पालक संहर्ता ॥  
 सोइ रघुवीर प्रनत अनुरागी । भजहु नाथ ममता सब त्यागी ॥  
 मुनिवर जतनु करहिं जेहि लागी । भूप राजु तजि होहिं विरागी ॥  
 सोइ कोसलाधीस रघुराया । आयउ करन तोहि पर दाया ॥  
 जौं पिय मानहु मोर सिखावन । सुजसु होइ तिहुँ पुर अति पावन ॥

दो०—अस कहि नयन नीर भरि गहि पद कंठित गात ।

नाथ भजहु रघुनाथहि अचल होइ अहिबात ॥ ७ ॥  
 तव रावन मयसुता उठाई । कहै लाग खल निज प्रभुताई ॥  
 सुनु तैं प्रिया वृथा भय माना । जग जोधा को मोहि समाना ॥  
 वरुन कुबेर पवन जम काला । भुज बल जितेउँ सकल दिगपाला ॥  
 देव दनुज नर सब बस मोरें । कवन हेतु उपजा भय तोरें ॥  
 नाना विधि तेहि कहेसि बुझाई । सभाँ बहोरि बैठ सो जाई ॥  
 मंदोदरीं हृदयँ अस जाना । काल बस्य उपजा अभिमाना ॥  
 सभाँ आइ मंत्रिन्ह तेहिं बूझा । करब कवन विधि रिपु सैं जूझा ॥  
 कहहिं सचिव सुनु निसिचर नाहा । बार बार प्रभु पूछहु काहा ॥  
 कहहु कवन भय करिअ विचारा । नर कपि भालु अहार हमारा ॥

दो०—सब के बचन श्रवन सुनि कह प्रहस्त कर जोरि ।

नीति विरोध न करिअ प्रभु मंत्रिन्ह मति अति थोरि ॥ ८ ॥  
 कहहिं सचिव सठ ठकुरसोहाती । नाथ न पूर आव एहि भाँती ॥  
 बारिधि नाधि एक कपि आवा । तासु चरित मन महुँ सबु गाव ॥

छुधा न रही तुम्हहि तब काहू । जारत नगरु कस न धरि खाहू ॥  
 सुनत नीक आगें दुख पावा । सचिवन अस मत प्रभुहि सुनावा ॥  
 जेहि बारीस बँधायउ हेल। उतरेउ सेन समेत सुवेला ॥  
 सो भनु मनुज खाव हम भाई । बचन कहहिं सब गाल फुलाई ॥  
 तात बचन मम सुनु अति आदर । जनि मन गुनहु मोहि करि कादर ॥  
 प्रिय बानी जे सुनहिं जे कहहीं । ऐसे नर निकाय जग अहहीं ॥  
 बचन परम हित सुनत कठोरे । सुनहिं जे कहहिं ते नर प्रभु थोरे ॥  
 प्रथम बसीठ पठउ सुनु नीती । सीता देख करहु पुनि प्रीती ॥  
 दो०—नारि पाइ फिरि जाहिं जौं तौ न बढाइअ रारि ।

नाहिं त सन्मुख समर महि तात करिअ हठि मारि ॥ ९ ॥

यह मत जौं मानहु प्रभु मोरा । उभय प्रकार सुजसु जग तोरा ॥  
 सुत सन कह दसकंठ रिसाई । असि मति सठ केहिं तोहि सिखाई ॥  
 अबहीं ते उर संसय होई । वेनुमूल सुत भयहु घमोई ॥  
 पुनि पितु गिरा परुष अति घोरा । चला भवन कहि बचन कठोरा ॥  
 हित मत तोहि न लागत कैसें । काल विवस कहूँ भेषज जैसें ॥  
 संध्या समय जानि दससीसा । भवन चलेउ निरखत भुज बीसा ॥  
 लंका सिखर उपर आगारा । अति बिचित्र तहँ होइ अखारा ॥  
 बैठ जाइ तेहि मंदिर रावन । लागे किंनर गुन गन गावन ॥  
 बाजहिं ताल पखाउज बीना । नृत्य करहिं अपछरा प्र

तासु भजनु कीजिअ तहँ भर्ता । जो कर्ता पालक संहर्ता ॥  
 सोइ रघुवीर प्रनत अनुरागी । भजहु नाथ ममता सब त्यागी ॥  
 मुनिवर जतनु करहि जेहि लागी । भूप राजु तजि होहि विरागी ॥  
 सोइ कोसलाधीस रघुराया । आयउ करन तोहि पर दाया ॥  
 जौं पिय मानहु मोर सिखावन । सुजसु होइ तिहुँ पुर अति पावन ॥

दो०—अस कहि नयन नीर भरि गहि पद कंपित गात ।

नाथ भजहु रघुनाथहि अचल होइ अहिबात ॥ ७ ॥

तत्र रावन मयसुता उठाई । कहै लाग खल निज प्रभुताई ॥  
 सुनु तैं प्रिया वृथा भय माना । जग जोधा को मोहि समाना ॥  
 बरुन कुबेर पवन जम काला । भुज बल जितेउँ सकल दिगपाला ॥  
 देव दनुज नर सब बस मोरें । कवन हेतु उपजा भय तोरें ॥  
 नाना विधि तेहि कहेसि बुझाई । सभाँ बहोरि बैठ सो जाई ॥  
 मंदोदरीं हृदयँ अस जाना । काल बस्य उपजा अभिमाना ॥  
 सभाँ आइ मंत्रिन्ह तेहिं बूझा । करब कवन विधि रिपु सैं जूझा ॥  
 कहहिं सचिव सुनु निसिचर नाहा । बार बार प्रभु पूछहु काहा ॥  
 कहहु कवन भय करिअ विचारा । नर कपि भालु अहार हमारा ॥

दो०—सब के वचन श्रवन सुनि कह प्रहस्त कर जोरि ।

नीति विरोध न करिअ प्रभु मंत्रिन्ह मति अति थोरि ॥ ८ ॥

कहहिं सचिव सठ ठकुरसोहाती । नाथ न पूर आव एहि भाँती ॥  
 वारिधि नाधि एक कपि आवा । तासु चरित मन महुँ सदा ॥

धुधा न रही तुम्हहि तब काहू । जारत नगरु कस न धरि खाहू ॥  
 मुनत नीक आगें दुख पावा । सचिवन अस मत प्रभुहि सुनावा ॥  
 केहि बारीस बँधायउ हेली । उतरेउ सेन समेत सुबेला ॥  
 तो भनु मनुज खाव हम भाई । बचन कहहि सब गाल फुलाई ॥  
 तात बचन मम सुनु अति आदर । जनि मन गुनहु मोहि करि कादर ॥  
 प्रिय बानी जे सुनहिं जे कहहीं । ऐसे नर निकाय जग अहहीं ॥  
 बचन परम हित सुनत कठोरे । सुनहिं जे कहहिं ते नर प्रभु थोरे ॥  
 प्रथम बसीठ पठउ सुनु नीती । सीता देइ करहु पुनि प्रीती ॥  
 दो०—नारि पाइ फिरि जाहिं जौं तौ न बढाइअ रारि ।

नाहिं त सन्मुख समर महि तात करिअ हठि मारि ॥ ९ ॥  
 यह मत जौं मानहु प्रभु मोरा । उभय प्रकार सुजसु जग तोरा ॥  
 सुत सन कह दसकंठ रिसाई । असि मति सठ केहिं तोहि सिखाई ॥  
 अबहीं ते उर संसय होई । बेनुमूल सुत भयहु घमोई ॥  
 सुनि पितु गिरा परुष अति घोरा । चला भवन कहि बचन कठोरा ॥  
 हित मत तोहि न लागत कैसें । काल बिबस कहूँ भेषज जैसें ॥  
 संध्या समय जानि दससीसा । भवन चलेउ निरखत भुज बीसा ॥  
 लंका सिखर उपर आगारा । अति विचित्र तहँ होइ अखारा ॥  
 बैठ जाइ तेहिं मंदिर रावन । लागे किंनर गुन गन गावन ॥  
 जहिं ताल पखाउज बीना । नृत्य करहिं अपछरा प्रबीना ॥





कुधा न रही तुम्हहि तब काहू । जारत नगरु कस न धरि खाहू ॥  
 सुनत नीक आगेँ दुख पावा । सचिवन अस मत प्रभुहि सुनावा ॥  
 केहिं वारीस वैधायउ हेली । उत्तरेउ सेन समेत सुबेला ॥  
 तो भनु मनुज खाव हम भाई । बचन कहहिं सब गाल फुलाई ॥  
 तात बचन मम सुनु अति आदर । जनि मन गुनहु मोहि करि कादर ॥  
 प्रिय बानी जे सुनहिं जे कहहीं । ऐसे नर निकाय जग अहहीं ॥  
 बचन परम हित सुनत कठोरे । सुनहिं जे कहहिं ते नर प्रभु थोरे ॥  
 प्रथम बसीठ पठउ सुनु नीती । सीता देइ करहु पुनि प्रीती ॥  
 दो०—नारि पाइ फिरि जाहिं जौं तौ न बढाइअ रारि ।

नाहिं त सन्मुख समर महि तात करिअ हठि मारि ॥ ९ ॥

यह मत जौं मानहु प्रभु मोरा । उभय प्रकार सुजसु जग तोरा ॥  
 सुत सन कह दसकंठ रिसाई । असि मति सठ केहिं तोहि सिखाई ॥  
 अबहीं ते उर संसय होई । बेनुमूल सुत भयहु घमोई ॥  
 पुनि पितु गिरा परुष अति घोरा । चला भवन कहि बचन कठोरा ॥  
 हेत मत तोहि न लागत कैसें । काल बिबस कहूँ भेषज जैसें ॥  
 श्रद्धा समय जानि दससीसा । भवन चलेउ निरखत भुज बीसा ॥  
 लंका सिखर उपर आगारा । अति विचित्र तहँ होइ अखारा ॥  
 बैठ जाइ तेहिं मंदिर रावन । लागे किंनर गुन गन गावन ॥  
 बाजहिं ताल पखाउज बीना । नृत्य करहिं अपछरा प्रबीना ॥

तासु भजनु कीजिअ तहँ भर्ता । जो कर्ता पालक संहर्ता ॥  
 सोइ रघुवीर प्रनत अनुरागी । भजहु नाथ ममता सब त्यागी ॥  
 मुनिवर जतनु करहि जेहि लागी । भूप राजु तजि होहि विरागी ॥  
 सोइ कोसलाधीस रघुराया । आयउ करन तोहि पर दाया ॥  
 जौं पिय मानहु मोर सिखावन । सुजसु होइ तिहुँ पुर अति पावन ॥  
 दो०—अस कहि नयन नीर भरि गहि पद कंपित गात ।

नाथ भजहु रघुनाथहि अचल होइ अहिवात ॥ ७ ॥

तव रावन मयसुता उठाई । कहै लाग खल निज प्रभुताई ॥  
 सुनु तैं प्रिया वृथा भय माना । जग जोधा को मोहि समाना ॥  
 बरुन कुबेर पवन जम काला । भुज बल जितेउँ सकल दिगपाला ॥  
 देव दनुज नर सब बस मोरें । कवन हेतु उपजा भय तोरें ॥  
 नाना विधि तेहि कहेसि बुझाई । सभाँ बहोरि बैठ सो जाई ॥  
 मंदोदरीं हृदयँ अस जाना । काल बस्य उपजा अभिमाना ॥  
 सभाँ आइ मंत्रिन्ह तेहिं बूझा । करव कवन विधि रिपु सैं जूझा ॥  
 कहहिं सचिव सुनु निसिचर नाहा । बार बार प्रभु पूछहु काहा ॥  
 कहहु कवन भय करिअ विचारा । नर कपि भालु अहार हमारा ॥

दो०—सब के बचन श्रवन सुनि कह प्रहस्त कर जोरि ।

नीति विरोध न करिअ प्रभु मंत्रिन्ह मति अति थोरि ॥ ८ ॥

कहहिं सचिव सठ ठकुरसोहाती । नाथ न पूर आव एहि भाँती ॥  
 बारिधि नाधि एक कपि आवा । तासु चरित मन महुँ सबु गावा ॥

छुधा न रही तुम्हहि तव काहू । जारत नगरु कस न धरि खाहू ॥  
 सुनत नीक आगें दुख पाया । सचिवन अस मत प्रभुहि सुनावा  
 जेहि बारीस बँधायउ हेल्ला । उतरेउ सेन समेत सुवेल ॥  
 सो भनु मनुज खात्र हम भाई । बचन कहहि सत्र गाल फुलाई ॥  
 तात बचन मम सुनु अति आदर । जनि मन गुनहु मोहि करि कादर  
 प्रिय बानी जे सुनहि जे कहहीं । ऐसे नर निकाय जग अहहीं ॥  
 अचन परम हित सुनत कठोरे । सुनहि जे कहहि ते नर प्रभु थोरे ॥  
 अथम बसीठ पठउ सुनु नीती । सीता देइ करहु पुनि प्रीती ॥  
 १०—नारि पाइ फिरि जाहिं जौं तौ न बढाइअ रारि ।

नाहिं त सन्मुख समर महि तात करिअ हठि मारि ॥ ९ ॥  
 ह मत जौं मानहु प्रभु मोरा । उभय प्रकार सुजसु जग तोरा ॥  
 त सन कह दसकंठ रिसाई । असि मति सठ केहि तोहि सिखाई  
 त्वहीं ते उर संसय होई । वेनुमूल सुत भयहु घमोई ॥  
 नि पितु गिरा परुष अति घोरा । चला भवन कहि बचन कठोरा ॥  
 त मत तोहि न लागत कैसें । काल बिबस कहूँ भेषज जैसें ॥  
 व्या समय जानि दससीसा । भवन चलेउ निरखत भुज बीसा ॥  
 का सिखर उपर आगारा । अति विचित्र तहँ होइ अखारा ॥  
 ५ जाइ तेहि मंदिर रावन । लागे किंनर गुन गन गावन ॥  
 जहिं ताल पखाउज बीना । नृत्य करहि अपछरा प्रवीना ॥

अस कौतुक करि राम सर प्रबिसेउ आइ निपंग ।

रावन सभा ससंक सब देखि महा रस भंग ॥ १३ (ख) ॥

कंप न भूमि न मरुत विसेपा । अछ सछ कछु नयन न देखा ॥  
 सोचहिं सव निज हृदय मझारी । असगुन भयउ भयंकर भारी ॥  
 दसमुख देखि सभा भय पाई । विहसि वचन कह जुगुति बनाई  
 सिरउ गिरे संतत सुभ जाही । मुकुट परे कस असगुन ताही ॥  
 सयन करहु निज निज गृह जाई । गयने भवन सकल सिर नाई ॥  
 मंदोदरी सोच उर वसेऊ । जव ते श्रवनपूर महि खसेऊ ॥  
 सजल नयन कह जुग कर जोरी । सुनहु प्रानपति बिनती मोरी ॥  
 कंत राम विरोध परिहरहु । जानि मनुज जनि हठ मन धरहु  
 दो०-विस्वरूप रघुवंसमनि करहु वचन बिस्वासु ।

लोक कल्पना वेद कर अंग अंग प्रति जासु ॥ १४ ॥

पद पाताल सीस अज धामा । अपर लोक अँग अँग विश्रामा  
 भृकुटि विलास भयंकर काला । नयन दिवाकर कच धन माला  
 जासु प्रान अस्विनीकुमारा । निसि अरु दिवस निमेष अपा  
 श्रवन दिसा दस वेद बखानी । मारुत स्वास निगम निज वा  
 अधर लोभ जम दसन कराला । माया हास बाहु दिगपाला  
 आनन अनल अंबुपति जीहा । उत्तपति पालन प्रलय समीहा  
 रोम राजि अष्टादस भारा । अस्थि सैल सरिता नस जारा  
 उदर उदधि अधगो जातना । जगमय प्रभु का बहु कल्पन

दो०—अहंकार सिव बुद्धि अज मन ससि चित्त महान ।

मनुज बास सचराचर रूप राम भगवान ॥१५(क)

अस बिचारि सुनु प्रानपति प्रभु सन बयरु विहाइ ।

प्रीति करहु रघुबीर पद मम अहिबात न जाइ ॥१५(ख)

बिहँसा नारि बचन सुनि काना । अहो मोह महिमा बलवाना ।

नारि सुभाउ सत्य सब कहहीं । अवगुन आठ सदा उर रहहीं ।

साहस अनृत चपलता माया । भय अबिबेक असौच अदाया ।

रिपु कर रूप सकल तैं गावा । अति बिसाल भय मोहि सुनाव ।

सो सब प्रिया सहज बस मोरें । समुझि परा प्रसाद अब तोरें ।

जानिउँ प्रिया तोरि चतुराई । एहि बिधि कहहु मोरि प्रभुता ।

तव बतकही गूढ़ मृंगलोचनि । समुझत सुखद सुनत भय मोच ।

मंदोदरि मन महुँ अस ठयऊ । पियाहि काल बस मतिभ्रम भय ।

दो०—एहि बिधि करत बिनोद बहु प्रात प्रगट दसकंध ।

सहज असंकलंकपति सभाँ गयउ मद अंध ॥१६(क)

सो०—फूलइ फारइ न बेत जदपि सुधा बरषहिं जलद ।

मूरुख हृदयँ न चेत जौं गुर मिलहिं बिरंचि सम ॥१६(ख)

इहाँ प्रात जागे रघुराई । पूछा मत सब सचिव बोलाई ।

कहहु बेगि का करिअ उपाई । जामवंत कह पद सिरु नाई ।

सुनु सर्वग्य सकल उर बासी । बुधिबल तेज धर्म गुन रासी ।

मंत्र कहउँ निज मति अनुसारा । दूत पठाइअ बालिकुमारा ॥

नीक मंत्र सब के मन माना । अंगद सन कह कृपानिधाना ॥  
 बालितनय बुधि बल गुन धामा । लंका जाहु तात मम कामा ॥  
 बहुत बुझाइ तुम्हहि का कहउँ । परम चतुर मैं जानत अहउँ ॥  
 काजु हमार तासु हित होई । रिपु सन करेहु बतकही सोई ॥

सो०—प्रभु अग्या धरि सीस चरन बंदि अंगद उठेउ ।

सोइ गुन सागर ईस राम कृपा जा पर करहु ॥ १७ (क) ॥

स्वयं सिद्ध सब काज नाथ मोहि आदरु दियउ ।

अस बिचारि जुवराज तन पुलकित हरषित हियउ ॥ १७ (ख) ॥

बंदि चरन उर धरि प्रभुताई । अंगद चलेउ सबहि सिरु नाई ॥  
 प्रभु प्रताप उर सहज असंका । रन बाँकुरा बालिसुत बंका ॥  
 पुर पैठत रावन कर बेटा । खेलत रहा सो होइ गै भेटा ॥  
 बातहि बात करप बढि आई । जुगल अतुल बल पुनि तरुनाई  
 तेहि अंगद कहूँ लात उठाई । गहि पद पटकेउ भूमि भवाँई ॥  
 निसिचर निकर देखि भट भारी । जहँ तहँ चले न सकहिं पुकारी ॥  
 एक एक सन मरमु न कहहीं । समुझि तासु बध चुप करि रहहीं  
 भयउ कोलाहल नगर मझारी । आवा कपि लंका जेहि जारी ॥  
 अब धौं कहा करिहि करतारा । अति समीत सब करहिं विचार  
 विनु पूछें मगु देहिं दिखाई । जेहि बिलोक सोइ जाइ सुखाई  
 दो०—गयउ सभा दरबार तब सुमिरि राम पद कंज ।

सिंह ठवनि हत उत चितव धीर वीर बल पुंज ॥ १८ ॥

तुरत निसाचर एक पठावा । समाचार रावनहि जनावा ॥  
 सुनत बिहँसि बोला दससीसा । आनहु बोलि कहाँ कर कीसा ॥  
 आयसु पाइ दूत बहु धाए । कपिकुंजरहि बोलि लै आए ॥  
 अंगद दीख दसानन बैसैं । सहित प्रान कजलगिरि जैसैं ॥  
 भुजा बिटप सिर संग समाना । रोमावली लता जनु नाना ॥  
 मुख नासिका नयन अरु काना । गिरि कंदरा खोह अनुमाना ॥  
 गयउ सभाँ मन नेकु न मुरा । बालितनय अतिबल बाँकुरा ॥  
 उठे सभासद कपि कहूँ देखी । रावन उर भा क्रोध बिसेपी ॥  
 दो०—जथा मत्त गज जूथ महुँ पंचानन चलि जाइ ।

राम प्रताप सुमिरि मन बैठ सभाँ सिरु नाइ ॥ १९ ॥

कह दसकंठ कवन तैं बंदर । मैं रघुवीर दूत दसकंधर ॥  
 मम जनकहि तोहि रही मिताई । तव हित कारन आयउँ भाई ॥  
 उत्तम कुल पुलस्ति कर नाती । सिव विरंचि पूजेहु बहु भाँती ॥  
 बर पायहु कीन्हेहु सव काजा । जीतेहु लोकपाल सव राजा ॥  
 नृप अभिमान मोह बस किंवा । हरि आनिहु सीता जगदंबा ॥  
 अब सुभ कहा सुनहु तुम्ह मोरा । सव अपराध छमिहि प्रभु तोरा ॥  
 दसन गहहु तून कंठ कुठारी । परिजन सहित संग निज नारी ॥  
 सादर जनकसुता करि आगें । एहि विधि चलहु सकल भय त्यागें ॥  
 दो०—प्रनतपाल रघुवंसमनि त्राहि त्राहि अब मोहि ।

आरत गिरा सुनत प्रभु अभय कैगो तोहि ॥ २० ॥



रे कपि पोत बोलु संभारी । मूढ़ न जानेहि मोहि सुरारी ॥  
 कहु निज नाम जनक कर भाई । केहि नातें मानिए मिताई ॥  
 अंगद नाम बालि कर बेटा । तासों कबहुँ भई ही भेटा ॥  
 अंगद बचन सुनत सकुचाना । रहा बालि बानर मैं जाना ॥  
 अंगद तहीं बालि कर बालक । उपजेहु बंस अनल कुल घालक ॥  
 गर्भ न गयहु व्यर्थ तुम्ह जायहु । निज मुख तापस दूत कहायहु ॥  
 अब कहु कुसल बालि कहँ अहई । बिहँसि बचन तब अंगद कहई  
 दिन दस गएँ बालि पहिँ जाई । बूझेहु कुसल सखा उर लाई ॥  
 राम विरोध कुसल जसि होई । सो सब तोहि सुनाइहि सोई ॥  
 सुनु सठ भेद होइ मन ताकें । श्रीरघुवीर हृदयँ नहिँ जाकें ॥

दो०—हम कुल घालक सत्य तुम्ह कुल पालक दससीस ।

अंधउ बधिर न अस कहहिं नयन कान तब बीस ॥ २१ ॥

सिव त्रिरंचि सुर मुनि समुदाई । चाहत जासु चरन सेवकाई ।  
 तासु दूत होइ हम कुल बोरा । अइसिहुँ मति उर बिहरन तोर  
 सुनि कठोर बानी कपि केरी । कहत दसानन नयन तरेरी  
 खल तब कठिन बचन सब सहऊँ । नीति धर्म मैं जानत अहऊँ  
 कह कपि धर्मसीलता तोरी । हमहुँ सुनी कृत पर त्रिय चोरी  
 देखी नयन दूत रखवारी । बूढ़ि न मरहु धर्म व्रत धारी  
 कान नाक बिनु भगिनि निहारी । छमा कीन्हि तुम्ह धर्म विचारी  
 धर्मसीलता तब जग जागी । पावा दरसु हमहुँ बड़भार्ग

दो०—जनि जल्पसि जड़ जंतु कपि सठ बिलोकु मम बाहु ।

लोकपाल बल विपुल ससि ग्रसन हेतु सब राहु ॥२२(क)॥

पुनि नभ सर मम कर निकर कमलन्हि पर करि बास ।

सोभत भयउ मराल इव संभु सहित कैलास ॥२२(ख)॥

तुम्हरे कटक माझ सुनु अंगद । मो सन भिरिहि कवन जोधा ब्रद

तव प्रभु नारि धिरहँ बलहीना । अनुजं तासु दुख दुखी मलीना ॥

तुम्ह सुग्रीव कूलद्रुम दोऊ । अनुज हमार भीरु अति सोऊ ॥

जामवंत मंत्री अति बूढ़ा । सो कि होइ अब समरारूढ़ा ॥

सिल्पि कर्म जानहिं नल नीला । है कपि एक महा बलसीला ॥

आवा प्रथम नगरु जेहिं जारा । सुनत बचन कह बालिकुमारा ॥

सत्य बचन कहु निसिचर नाहा । साँचेहुँ कीस कीन्ह पुर दाहा ॥

रावन नगर अल्प कपि दहई । सुनि अस बचन सत्य को कहई

जो अति सुभट सराहेहु रावन । सो सुग्रीव केर लघु धायन ॥

चलइ बहुत सो वीर न होई । पठवा खवरि लेन हम सोई ॥

दो०—सत्य नगरु कपि जारेउ बिनु प्रभु आयसु पाइ ।

फिरि न गयउ सुग्रीव पहिं तेहिं भय रहा लुकाइ ॥२३(क)॥

सत्य कहहि दसकंठ सब मोहि न सुनि कछु कोह ।

कोउ न हमारै कटक अस तो सन लरत जो सोह ॥२३(ख)॥

प्रीति बिरोध समान सन करिअ नीति असि आहि ।

जौ मृगपति बध मेडुकन्हि भल कि कहइ कोउ ताहि ॥२३(ग)॥

जद्यपि लघुता राम कहूँ तोहि वधे बड़ दोष ।

तदपि कठिन दसकंठ सुनु दृत्र जाति कर रोष ॥२२(घ)॥

बक्र उक्ति धनु बचन सर हृदय दहेउ रिपु कीस ।

प्रतिउत्तर सड़सिन्ह मनहुँ काढ़त भट दससीस ॥२३(ङ)॥

हँसि बोलेउ दसमौलि तब कपि कर बड़ गुन एक ।

जो प्रतिपालह तासु हित करइ उपाय अनेक ॥२३(च)॥

धन्य कीस जो निज प्रभु काजा । जहँ तहँ नाचइ परिहरि लाजा ॥

नाचि कूदि करि लोग रिझाई । पति हित करइ धर्म निपुनाई ॥

अंगद स्वामिभक्त तब जाती । प्रभु गुन कस न कहसि एहि भाँती

मैं गुन गाहक परम सुजाना । तब कटु रटनि करउँ नहिं काना

कह कपि तब गुन गाहकताई । सत्य पवनसुत मोहि सुनाई ॥

बन बिधंसि सुत बधि पुर जारा । तदपि न तोहिं कछु कृत अपकारा

सोइ बिचारि तब प्रकृति सुहाई । दसकंधर मैं कीन्हि ढिठाई ॥

देखेउँ आइ जो कछु कपि भापा । तुम्हरेँ लाज न रोष न माखा ॥

जौँ असि मति पितु खाए कीसा । कहि अस बचन हँसा दससीसा ।

पितहि खाइ खातेउँ पुनि तोही । अत्रहीं समुझि परा कछु मोही ।

बालि विमल जस भाजन जानी । हतउँ न तोहि अधम अभिमान

कहु रावन रावन जग केते । मैं निज श्रवन सुने सुनु जेते

बलिहि जितन एक गयउ पताला । राखेउ बाँधि सिसुन्ह ह्यसात

खेलहिं बालक मारहिं जाई । दया लागि बलि दीन्ह छोड़ाई

एक बहोरि सहस भुज देखा । धाइ धरा जिमि जंतु बिसेषा ॥  
कौतुक लागि भवन लै आवा । सो पुलस्ति मुनि जाइ छोड़ावा  
दो०—एक कहत मोहि सकुच अति रहा वालि कीं काँख ।

इन्ह महुँ रावन तैं कवन सत्य बदाहि तजि माख ॥२४॥

सुनु सठ सोइ रावन बलसीला । हरगिरि जान जासु भुजलीला ॥  
जान उमापति जासु सुराई । पूजेउँ जेहि सिर सुमन चढ़ाई ॥  
सिर सरोज निज करन्हि उत्तारी । पूजेउँ अमित बार त्रिपुरारी ॥  
भुज विक्रम जानहिं दिगपाला । सठ अजहूँ जिन्ह कें उर साला ॥  
जानहिं दिग्गज उर कठिनाई । जत्र जत्र भिरउँ जाइ बरिआई ॥  
जिन्ह के दसन कराल न फूटे । उर लागत मूलक इव दूटे ॥  
जासु चलत डोलति इमि धरनी । चढ़त मत्त गज जिमि लवु तरनी ॥  
सोइ रावन जग विदित प्रतापी । सुनहि न श्रवन अलीक प्रलापी ॥  
दो०—तेहि रावन कहँ लवु कहसि नर कर करसि बखान ।

रे कपि बर्बर खर्व खल अब जाना तव ग्यान ॥२५॥

सुनि अंगद सकोप कह बानी । बोलु सँभारि अधम अभिमानी ॥  
सहसत्राहु भुज गहन अपारा । दहन अनल सम जासु कुठारा ॥  
जासु परसु सागर खर धारा । बूड़े नृप अगनित बहु बारा ॥  
तासु गर्व जेहि देखत भागा । सो नर क्यों दससीस अभागा ॥  
राम मनुज कस रे सठ बंगा । धन्वी कामु नदी पुनि गंगा ॥  
पसु सुरधेनु कल्पतरु रूखा । अन्न दान अरु रस पीयूषा ॥

बैनतेय खग अहि सहसानन । चिंतामनि पुनि उपल दसानन ॥  
 सुनु मतिमंद लोक बैकुंठा । लाभ कि रघुपति भगति अकुंठा  
 दो०—सेन सहित तव मान मथि बन उजारि पुर जारि ।

कस रे सठ हनुमान कपि गयउ जो तव सुत मारि ॥२६॥  
 सुनु रावन परिहरि चतुराई । भजसिन कृपा सिंधु रघुराई ॥  
 जौं खल भएसि राम कर द्रोही । ब्रह्म रुद्र सक राखि न तोही ॥  
 मूढ़ वृथा जनि मारसि गाला । राम बयर अस होइहि हाला ॥  
 तव सिर निकर कपिन्ह के आगें । परिहहिं धरनि राम सर लागें ॥  
 ते तव सिर कंदुक सम नाना । खेलिहहिं भालु कीस चौगाना ॥  
 जबहिं समर कोपिहि रघुनायक । छुटिहहिं अति कराल बहु सायक  
 तब कि चलिहि अस गाल तुम्हारा । अस विचारि भजु राम उदारा  
 सुनत बचन रावन परजरा । जरत महानल जनु धृत परा ॥  
 दो०—कुंभकरन अस बंधु मम सुत प्रसिद्ध सकारि ।

मोर पराक्रम नहिं सुनेहि जितेउँ चराचर झारि ॥२७॥  
 सठ साखामृग जोरि संहारि । बाँधा सिंधु इहइ प्रभुताई ॥  
 नाघहिं खग अनेक वारीसा । सूर न होहिं ते सुनु सत्र कीसा ॥  
 मम भुज सागर बल जल पूरा । जहँ बूढ़े बहु सुर नर सूर ॥  
 बीस पयोधि अगाध अपारा । को अस वीर जो पाइहि पारा ॥  
 दिगपालन्ह मैं नीर भरावा । भूप सुजस खल मोहि सुनावा ॥  
 जौं पै समर सुभट तव नाथा । पुनि पुनि कहसि जासु गुन गाथा

तौ बसीठ पठवत केहि काजा । रिपु सन प्रीति करत नहिं लाजा ।  
हरगिरि मथन निरखु मम बाहु । पुनि सठ कपि निज प्रभुहि सराहु ।

दो०—सूर कवन रावन सरिस स्वकर काटि जेहिं सीस ।

हुने अनल अति हरष बहु बार साखि गौरीस ॥ २८ ॥

जरत विलोकेउँ जवहिं कपाला । विधि के लिखे अंक निज भाला ।  
नर कै कर आपन बध बाँची । हसेउँ जानि विधि गिरा असाँची ।  
सोउ मन समुझि त्रास नहिं मोरें । लिखा बिरंचि जरठ मति भोरें ।  
आन वीर बल सठ मम आगें । पुनि पुनि कहसि लाज पति त्यागें ।  
कह अंगद सलज्ज जग माहीं । रावन तोहि समान कोउ नाहीं ॥  
लाजवंत तव सहज सुभाऊ । निज मुख निज गुन कहसि न काऊ ।  
सिर अरु सैल कथा चित रहि । ताते बार बीस तैं कही ॥  
सो भुजबल राखेहु उर घाली । जीतेहु सहसबाहु बलि बाली ॥  
सुनु मतिमंद देहि अब पूरा । काटें सीस कि होइअ सूरा ॥  
इंद्रजालि कहूँ कहिअ न वीरा । काटइ निज कर सकल सरीरा ॥

दो०—जरहिं पतंग मोह बस भार बहहिं खर बृंद ।

ते नहिं सूर कहावहिं समुझि देखु मतिमंद ॥ २९ ॥

अब जनि ब्रतबढ़ाव खल करही । सुनु मम बचन मान परिहरही ॥  
दसमुख मैं न बसीठीं आयउँ । अस बिचारि रघुवीर पठायउँ ॥  
बार बार अस कहइ कृपाला । नहिं गजारि जसु वधें सूकाला ॥  
मन महुँ समुझि बचन प्रभु केरे । सहेउँ कठोर बचन सठ तेरे ॥

नाहिं त करि मुख भंजन तोरा । लै जातेउँ सीतहि वरजोरा ॥  
 जानेउँ तव बल अधम सुरारी । सूनै हरि आनिहि परनारी ॥  
 तैं निसिचर पति गर्व बहूता । मैं रघुपति सेवक कर दूता ॥  
 जौं न राम अपमानहि डरउँ । तोहि देखत अस कौतुक करउँ ॥

दो०—तोहि पटक महि सेन हति चौपट करि तव गाउँ ।

तव जुवतिन्ह समेत सठ जनकसुतहि लै जाउँ ॥ ३० ॥

जौं अस करौं तदपि न बड़ाई । मुएहि बधे नहिं कछु मनुसाई ॥  
 कौल कामवस कृपिन विमूढ़ा । अति दरिद्र अजसी अति बूढ़ा ॥  
 सदा रोगवस संतत क्रोधी । विष्णु विमुख श्रुति संत विरोधी ॥

पोषक निंदक अघखानी । जीवत सब सम चौदह प्रानी ॥  
 अस विचारि खल बधउँ न तोही । अव्र जनि रिस उपजावसि मोही ॥  
 सुनि सक्रोप कह निसिचर नाथा । अधर दसन दसि मीजत हाथा ॥  
 रे कपि अधम मरन अव चहसी । छोटे बदन बात बड़ि कहसी ॥  
 कटु जल्पसि जड़ कपि बल जाकैं । बल प्रताप बुधि तेज न ताकैं ॥

दो०—अगुन अमान जानि तेहि दीन्ह पिता बनवास ।

सो दुख अरु जुवती विरह पुनि निसि दिन मम त्रास ॥ ३१ (क) ॥

जिन्ह के बल कर गर्व तोहि अइसे मनुज अनेक ।

खाहिं निसाचर दिवस निसि मूढ़ समुझु तजि टेक ॥ ३१ (ख) ॥

जब तेहिं कीन्हि राम कै निंदा । क्रोधवंत तव भयउ कपिंदा ॥  
 हरि हर निंदा सुनइ जो काना । होइ पाप गोघात समाना ॥

टकटान कपिकुंजर भारी । दुहु भुजदंड तमकि महि मारी ॥  
 लत धरनि सभासद खसे । चले भाजि भय मारुत ग्रसे ॥  
 रत सँभारि उठा दसकंधर । भूतल परे मुकुट अति सुंदर ॥  
 छुतेहिं लै निज सिरन्हि सँवारे । कछु अंगद प्रभु पास पवारे ॥  
 आवत मुकुट देखि कपि भागे । दिनहीं लूक परन बिधि लागे ॥  
 नी रावन करि कोप चलाए । कुलिस चारि आवत अति धाए ॥  
 ह प्रभु हँसि जनि हृदयँ डेराहू । लूक न असनि केतु नहिं राहू ॥  
 ए किरीट दसकंधर केरे । आवत बालितनय के प्रेरे ॥

श्लो०—तरकि पवनसुत कर गहे आनि धरे प्रभु पास ।

कौतुक देखहिं भालु कपि दिनकर सरिस प्रकास ॥३२(क)॥

उहाँ सकोप दसानन सब सन कहत रिसाइ ।

धरहु कपिहि धरि मारहु सुनि अंगद मुसुकाइ ॥३२(ख)॥

एहि बिधि बेगि सुभट सब धावहु । खाहु भालु कपि जहँ जहँ पावहु  
 कटहीन करहु महि जाई । जिअत धरहु तापस द्वौ भाई ॥  
 मुनि सकोप बोलेउ जुवराजा । गाल बजावत तोहि न लाजा ॥  
 मरु गर काटि निलज कुलघाती । बल बिलोकि बिहरति नहिं छाती  
 त्रिय चोर कुमारग गामी । खल मल रासि मंदमति कामी ॥  
 अन्यपात जल्पसि दुर्बादा । भएसि कालबस खल मनुजादा ॥  
 पाको फलु पावहिगो आगें । बानर भालु चपेटन्हि लागें ॥  
 रामु मनुज बोलत असि बानी । गिरहिं न तव रसना अभिमानी ॥



गिरिहहिं रसना संसय नाहीं । सिरन्हि समेत समर महि माहीं ॥

सो०—सो नर क्यों दसकंध बालि बध्यो जेहिं एक सर ।

बीसहुँ लोचन अंध धिग तव जन्म कुजाति जड़ ॥३३(क)॥

तव सोनित की प्यास तृषित राम सायक निकर ।

तजउँ तोहि तेहि त्रास कटु जल्पक निसिचर अधम ॥३३(ख)॥

मैं तव दसन तोरिबे लायक । आयसु मोहि न दीन्ह रघुनायक ॥

असि रिस होति दसउ मुख तोरौं । लंका गहि समुद्र महुँ बोरौं ॥

गूलरि फल समान तव लंका । बसहु मध्य तुम्ह जन्तु असंका ॥

मैं बानर फल खात न बारा । आयसु दीन्ह न राम उदारा ॥

जुगुति सुनत रावन मुसुकाई । मूढ़ सिखिहि कहँ बहुत झुठाई ॥

बालि न कबहुँ गाल अस मारा । मिलि तपसिन्ह तैं भएसि लबारा ॥

साँचेहुँ मैं लवार भुजब्रीहा । जौं न उपारिउँ तव दस जीहा ॥

समुझि राम प्रताप कपि कोपा । सभा माझ पन करि पद रोपा ॥

जौं मम चरन सकसि सठ टारी । फिरहिं रामु सीता मैं हारी ॥

सुनहु सुभट सत्र कह दससीसा । पद गहि धरनि पछारहु कीसा ॥

इंद्रजीत आदिक बलवाना । हरषि उठे जहँ तहँ भट नाना ॥

झपटहिं करि बल त्रिपुल उपाई । पद न टरइ बैठहिं सिरु नाई ॥

पुनि उठि झपटहिं सुर आराती । टरइ न कीस चरन एहि भाँती ॥

पुरुष कुजोगी जिमि उरगारी । मोह बिटप नहिं सकहिं उपारी ॥

दो०—कोटिन्ह मेघनाद सम सुभट उठे हरषाइ ।

झपटहिं टरै न कपि चरन पुनि बैठहिं सिर नाइ ॥३४(क)॥

भूमि न छाँड़त कपि चरन देखत रिपु मद भाग ।

कोटि विघ्न ते संत कर मन जिमि नीति न त्याग ॥३४(ख)॥

कपि बल देखि सकल हियँ हारे । उठा आपु कपि कैं परचारे ।

गहत चरन कह बालिकुमारा । मम पद गहें न तोर उबारा ॥

गहसि न राम चरन सठ जाई । सुनत फिरा मन अति सकुचाई ।

भयउ तेजहत श्री सब गई । मध्यदिवस जिमि ससि सोहई ॥

सिंघासन बैठेउ सिर नाई । मानहुँ संपति सकल गँवाई ॥

जगदातमा प्रानपति रामा । तासु विमुख किमि लह विश्रामा ॥

उमा राम कीं भृकुटि बिलासा । होइ बिस्व पुनि पावइ नासा ॥

तृन ते कुलिस कुलिस तृन करई । तासु दूत पन कहु किमि टरई ॥

पुनि कपि कही नीति विधि नाना । मान न ताहि कालु निअरान्ना ॥

रिपु मद मथि प्रभु सुजसु सुनायो । यह कहि चल्यो बालि नृप जाय ॥

हतौ न खेत खेलाइ खेलाई । तोहि अबहिं का करौं बढ़ाई ॥

प्रथमहिं तासु तनय कपि मारा । सो सुनिरावन भयउ दुखारा ॥

जातुधान अंगद पन देखी । भय व्याकुल सब भए बिसेषी ॥

दो०—रिपु बल धरषि हरषि कपि बालितनय बल पुंज ।

पुलक सरीर नयन जल गढे राम पद कंज ॥३५(क)॥

साँझ जानि दसकंधर भवन गयउ बिलखाइ ।

मंदोदरीं रावनहि बहुरि कहा समुझाइ ॥३५॥(ख)

कंत समुझि मन तजहु कुमतिही । सोह न समर तुम्हहि रघुपतिही  
रामानुज लघु रेख खचाई । सोउ नहिं नावेहु असि मनुसा  
पिय तुम्ह ताहि जितव संग्रामा । जाके दूत केर यह कामा  
कौतुक सिंधु नाधि तव लंका । आयउ कपि केहरी असंका  
रखवारे हति विपिन उजारा । देखत तोहि अच्छ तेहिं मारा  
जारि सकल पुर कीन्हेसि छारा । कहाँ रहा बल गर्व तुम्हारा ।  
अव पति मृग्या गाल जनि मारहु । मोर कहा कछु हृदयँ विचारहु  
पति रघुपतिहि नृपतिजनि मानहु । अग जग नाथ अतुलबलजान  
वान प्रताप जान मारीचा । तासु कहा नहिं मानेहि नीचा ।  
जनक सभाँ अगनित भूपाला । रहे तुम्हउ बल अतुल बिसाल  
भंजि धनुष जानकी विआही । तव संग्राम जितेहु किन ताही ।  
सुरपति सुत जानइ बल थोरा । राखा जिअत आँखि गहि फोरा  
सूपनखा कै गति तुम्ह देखी । तदपि हृदयँ नहिं लाजविं

दो०—बधि बिराध खर दूपनहि लीलाँ हत्यो कबंध ।

बालि एक सर मारयो तेहि जानहु दसकंध

जेहिं जलनाथ बँधायउ हेला । उतरे प्रभु दल सहित  
कारुनीक दिनकर कुल केतू । दूत पठायउ तव  
सभा माझ जेहिं तव बल मथा । करि बरूथ मँ

अंगद हनुमत अनुचर जाके । रन बाँकुरे वीर अति बाँके ॥  
 तेहि कहँ पिय पुनि पुनि नर कहहू । मुधा मान ममता मद बहहू ॥  
 अहह कंत कृत राम विरोधा । काल विवस मन उपजन बोधा ॥  
 काल दंड गहि काहु न मारा । हरइ धर्म बल बुद्धि विचारा ॥  
 निकट काल जेहि आवत साई । तेहि भ्रम होइ तुम्हारिहि नाई ॥

दो०—दुइ सुत मरे दहेउ पुर अजहुँ पूर पिय देहु ।

कृपासिंधु रघुनाथ भजि नाथ विमल जमु लेंहु ॥३७॥

नारि बचन सुनि बिसिख समाना । सभाँ गयउ उठि होत विहाना ॥  
 बैठ जाइ सिंघासन फूली । अति अभिमान त्रास सब भूली ॥  
 इहाँ राम अंगदहि बोलावा । आइ चरन पंकज सिद्ध नावा ॥  
 अति आदर समीप बैठारी । बोले विहँसि कृपाल खरारी ॥  
 बालितनय कौतुक अति मोही । तात सत्य कहु पृछउँ तोही ॥  
 रावनु जातुधान कुल टीका । भुज बल अतुल जासु जग लीका ॥  
 तासु मुकुट तुम्ह चारि चलाए । कहहु तात कयनी विधि पाए ॥  
 सुनु सर्वग्य प्रनत सुखकारी । मुकुट न होहि भूप गुन चारी ॥  
 साम दान अरु दंड बिभेदा । नृप उर बसहि नाथ कह बेदा ॥  
 नीति धर्म के चरन सुहाए । अस जियँ जानि नाथ पहि आए ॥  
 दो०—धर्महीन प्रभु पद बिमुख काल विवस दससीस ।

तेहि परिहरि गुन आए सुनहु कोसलाधीस ॥३८(क)॥

परम चतुरता श्रवन सुनि बिहँसे राम उदार ।

समाचार पुनि सब कहे गढ़ के बालिकुमार ॥३८(ख)॥

रिपु के समाचार जब पाए । राम सचिव सब निकट बोलाए ॥  
लंका बाँके चारि दुआरा । केहि बिधि लागिअ करहु बिचारा ॥  
तब कपीस रिच्छेस बिभीषन । सुमिरि हृदयँ दिनकर कुल भूषन  
करि बिचार तिन्ह मंत्र दढ़ावा । चारि अनी कपि कटकु बनावा ॥  
जथाजोग सेनापति कीन्हे । जूथप सकल बोलि तब लीन्हे ॥  
प्रभु प्रताप कहि सब समुझाए । सुनि कपि सिंघनाद करि धाए ॥  
हरषित राम चरन सिर नावहिं । गहि गिरि सिखर वीर सब धावहिं  
। जँ तर्जहिं भालु कपीसा । जय रघुवीर कोसलाधीसा ॥  
जानत परम दुर्ग अति लंका । प्रभु प्रताप कपि चले असंका ॥  
घटाटोप करि चहुँ दिसि घेरी । मुखहिं निसान बजावहिं भेरी ॥

दो०—जयति राम जय लछिमन जय कपीस सुग्रीव ।

गर्जहिं सिंघनाद कपि भालु महा बल सीव ॥ ३९ ॥

लंकाँ भयउ कोलाहल भारी । सुना दसानन अति अहँकारी ॥  
देखहु वनरन्ह केरि ढिठाई । बिहँसि निसाचर सेन बोलाई ॥  
आए कीस काल के प्रेरे । छुधावंत सब निसिचर मेरे ॥  
अस कहि अट्टहास सठ कीन्हा । गृह बैठे अहार बिधि दीन्हा ॥  
सुभट सकल चारिहुँ दिसि जाहू । धरि धरि भालु कीस सब खाहू ॥  
उमा रावन्हि अस अभिमाना । जिमि टिटिम खग सूत उताना

चले निसाचर आयसु मागी । गहि कर भिडिपाल वर साँगी ।  
तोमर मुद्गर परसु प्रचंडा । सूल कृपान परिघ गिरिखंडा ।  
जिमि अरुनोपल निकर निहारी । धावहिं सठ खग मांस अहारी ।  
चोंच भंग दुख तिन्हहि न सूझा । तिमि धाए मनुजाद अवूझा ।

दो०—नानायुध सर चाप धर जातुवान बल वीर ।

कोट कँगूरन्हि चढ़ि गए कोटि कोटि रनधीर ॥ ४० ॥

कोट कँगूरन्हि सोहहिं कैसे । मेरु के संगनि जनु घन वैसे ।  
बाजहिं ढोल निसान जुझाऊ । सुनि धुनि होइ भटन्हि मन चाव ।  
बाजहिं भेरि नफीरि अपारा । सुनि कादर उर जाहिं दरारा ।  
देखिन्ह जाइ कपिन्ह के ठट्टा । अति बिसाल तनु भालु सुभट्टा ।  
धावहिं गनहिं न अवघट घाटा । पर्यंत फोरि करहिं गहि बाटा ।  
कटकटहिं कोटिन्ह भट गर्जहिं । दसन ओठ काटहिं अति तर्जहिं ।  
उत रावन इत राम दोहाई । जयति जयति जय परी लराई ॥  
निसिचर सिखर समूह ढहावहिं । कूदि धरहिं कपि फेरि चलावहिं ।

छं०—धरि कुधर खंड प्रचंड मर्कट भालु गढ़ पर डारहीं ।

झपटहिं चरन गहि पटक महि भजि चलत बहुरि पचारहीं ॥

अति तरल तरुन प्रताप तरपहिं तमकि गढ़ चढ़ि चढ़ि गए ।

कपि भालु चढ़ि मंदिरन्ह जहँ तहँ राम जसु गावत भए ॥

दो०—एकु एकु निसिचर गहि पुनि कपि चले पराइ ।

ऊपर आपु हेठ भट गिरहिं धरनि पर आइ ॥ ४१ ॥

राम प्रताप प्रबल कपिजूया । मर्दहिं निसिचर सुभट बरूथा ॥  
 चढ़े दुर्ग पुनि जहँ तहँ बानर । जय रघुवीर प्रताप दिवाकर ॥  
 चले निसाचर निकर पराई । प्रबल पवन जिमि धन समुदाई ॥  
 हाहाकार भयउ पुर भारी । रोवहिं बालक आतुर नारी ॥  
 सब मिलि देहिं रावनहि गारी । राज करत एहिं मृत्यु हँकारी ॥  
 निज दल बिचल सुनी तेहिं काना । फेरि सुभट लंकेस रिसाना ॥  
 जो रन विमुख सुना मै काना । सो मै हतब कराल कृपाना ॥  
 सर्वसु खाइ भोग करि नाना । समर भूमि भए बल्लभ प्राना ॥  
 उग्र वचन सुनि सकल डेराने । चले क्रोध करि सुभट लजाने ॥  
 सन्मुख मरन वीर कै सोभा । तब तिन्ह तजा प्रान कर लोभा ॥

५१०—बहु आयुध धर सुभट सब भिरहिं पचारि पचारि ।

ब्याकुल किए भालु कपि परिघ त्रिसूलन्हि मारि ॥ ४२ ॥

भय आतुर कपि भागन लागे । जद्यपि उमा जीतिहहिं आगे ॥  
 कोउ कह कहँ अंगद हनुमंता । कहँ नल नील दुविद बलवंता ॥  
 निज दल विकल सुना हनुमाना । पच्छिम द्वार रहा बलवाना ॥  
 मेघनाद तहँ करइ लराई । दूट न द्वार परम कठिनाई ॥  
 पवनतनय मन भा अति क्रोधा । गर्जेउ प्रबल काल सम जोधा ॥  
 कूदि लंक गढ़ ऊपर आवा । गहि गिरिमेघनाद कहँ धावा ॥  
 भंजेउ रय सारथी निपाता । ताहि हृदय महुँ मारेसि लाता ॥  
 दुसरें सूत विकल तेहि जाना । स्यंदन घालि तुरत गृह आना ॥

दो०—अंगद सुना पवनसुत गढ़ पर गयउ अकेल ।

रन बाँकुरा बालिसुत तरकि चढ़ेउ कपि खेल ॥ ४३ ॥

जुद्ध बिरुद्ध क्रुद्ध द्वौ बंदर । राम प्रताप सुमिरि उर अंतर ॥  
 रावन भवन चढ़े द्वौ धाई । करहिं कोसलाधीस दोहाई ॥  
 कलस सहित गहि भवनु ढहावा । देखि निसाचरपति भय पावा ॥  
 नारि बृंद कर पीटहिं छाती । अब दुइ कपि आए उतपाती ॥  
 कपिलीला करि तिन्हहि डेरावहिं । रामचंद्र कर सुजसु सुनावहिं ॥  
 पुनि कर गहि कंचन के खंभा । कहेन्हि करिअ उतपात अरंभा  
 गर्जि परे रिपु कटक मझारी । लागे मदै भुज बल भारी ॥  
 काहुहि लात चपेटन्हि केहू । भजहु न रामहि सो फल लेहू ॥

दो०—एक एक सों मर्दहिं तोरि चलावहिं मुंड ।

रावन आगे परहिं ते जनु फूटहिं दधि कुंड ॥ ४४ ॥

महा महा मुखिआ जे पावहिं । ते पद गहि प्रभु पास चलावहिं ॥  
 कहइ विभीषनु तिन्ह के नामा । देहिं राम तिन्हहू निज धामा ॥  
 खल मनुजाद द्विजामिष भोगी । पावहिं गति जो जाचत जोगी ॥  
 उमा राम मृदुचित करुनाकर । बरार भाव सुमिरत मोहि निसिचर  
 देहिं परम गति सो जियँ जानी । अस कृपाल को कहहु भवानी ॥  
 अस प्रभु सुनि न भजहिं भ्रम त्यागी । नर मतिमंद ते परम अभागी  
 अंगद अरु हनुमंत प्रवेसा । कीन्ह दुर्ग अस कह अवधेसा ॥  
 लंकाँ द्वौ कपि सोहहिं कैसैं । मथहिं सिंधु दुइ मंदर जैसैं ॥



दो०-भुज बल रिपु दल दलमलि देखि दिवस कर अंत ।

कूदे जुगल विगत श्रम आए जहँ भगवंत ॥ ४५ ॥

प्रभु पद कमल सीस तिन्ह नाए । देखि सुभट रघुपति मन भाए ॥  
राम कृपा करि जुगल निहारे । भए विगतश्रम परम सुखारे ॥  
गए जानि अंगद हनुमाना । फिरे भालु मर्कट भट नाना ॥  
जातुधान प्रदोष बल पाई । धाए करि दससीस दोहाई ॥  
निसिचर अनी देखि कपि फिरे । जहँ तहँ कटकटाइ भट भिरे ॥  
द्वौ दल प्रबल पचारि पचारी । लरत सुभट नहिं मानहिं हारी ॥  
महावीर निसिचर सब कारे । नाना वरन बलीमुख भारे ॥  
सबल जुगल दल समबल जोधा । कौतुक करत लरत करि क्रोधा ॥  
प्राविट सरद पयोद घनेरे । लरत मनहुँ मारुत के प्रेरे ॥  
अनिप अकंपन अरु अतिकाया । विचलत सेन कीन्हि इन्ह माया ॥  
भयउ निमिप महँ अति अँधिआरा । वृष्टि होइ रुधिरापल छारा ॥

दो०-देखि निविड़ तम दसहुँ दिसि कपि दल भयउ खभार ।

एकहि एक न देखई जहँ तहँ करहिं पुकार ॥ ४६ ॥

सकल मरमु रघुनायक जाना । लिए बोलि अंगद हनुमाना ॥  
समाचार सब कहि समुझाए । सुनत कोपि कपिकुंजर धाए ॥  
पुनि कृपाल हँसि चाप चढ़ावा । पावक सायक सपदि चलावा ॥  
भयउ प्रकास कतहुँ तम नाहीं । ग्यान उदयँ जिमि संसय जाहीं ॥  
भालु बलीमुख पाइ प्रकासा । धाए हरष विगत श्रम त्रासा ॥

हनूमान अंगद रन गाजे । हाँक सुनत रजनीचर भाजे ॥  
भागत भट पटकहिं धरि धरनी । करहिं भालु कपि अद्भुत करनी  
गहि पद डारहिं सागर माहीं । मकर उरग झष धरि धरि खाहीं  
दो०—कछु मारे कछु घायल कछु गढ़ चढ़े पराइ ।

गर्जहिं भालु बलीमुख रिपु दल बल बिचलाइ ॥ ४७ ॥  
निसा जानि कपि चारिउ अनी । आए जहाँ कोसलाधनी ॥  
राम कृपा करि चितवा सबही । भए विगतश्रम बानर तबही ॥  
उहाँ दसानन सचिव हँकारे । सब सन कहेसि सुभट जे मारे ॥  
आधा कटकु कपिन्ह संघारा । कहहु बेगि का करिअ बिचारा  
माल्यवंत अति जरठ निसाचर । रावन मातु पिता मंत्री बर ॥  
बोला बचन नीति अति पावन । सुनहु तात कछु मोर सिखावन  
जब ते तुम्ह सीता हरि आनी । असगुन होहिं न जाहिं बखानी ॥  
बेद पुरान जासु जसु गायो । राम बिमुख काहुँ न सुख पायो ॥  
दो०—हिरन्याच्छ भ्राता सहित मधु कैटभ बलवान ।

जेहिं मारे सोइ भवतरेउ कृपा सिंधु भगवान ॥ ४८(क) ॥

### मासपारायण पचीसवाँ विश्राम

कालरूप खल बन दहन गुनागार घनबोध ।  
सिव बिरंचि जेहि सेवहिं तासों कवन बिरोध ॥ ४८(ख) ॥  
परिहरि बयर देहु बैदेही । भजहु कृपानिधि परम सनेही ॥  
ताके बचन बान सम लागे । करिआ मुह करि जाहि अभागै

बूढ़ भएसि न त मरतेउँ तोही । अव जनि नयन देखावसि मोही  
 तेहिं अपने मन अस अनुमाना । वध्यो चहत एहि कृपानिधाना ॥  
 सो उठि गयउ कहत दुर्वादा । तव सक्रोध बोलेउ घननादा ॥  
 कौतुक प्रात देखिअहु मोरा । करिहउँ बहुत कहाँ का थोरा ॥  
 सुनि सुत वचन भरोसा आवा । प्रीति समेत अंक बैठावा ॥  
 करत विचार भयउ भिनुसारा । लागे कपि पुनि चहूँ दुआरा ॥  
 कोपि कपिन्ह दुर्घट गढु घेरा । नगर कोलाहलु भयउ घनेरा ॥  
 विविधायुध धर निसिचर धाए । गढ़ ते पर्वत सिखर ढहाए ॥  
 छं०-ढाहे महीधर सिखर कोटिन्ह विविध विधि गोला चले ।

घहरात जिमि पविपात गर्जत जनु प्रलय के बादले ॥  
 मर्कट विकट भट जुटत कटत न लटत तन जर्जर भए ।  
 गहि सैल तेहि गढ़ पर चलावहिं जहँ सो तहँ निसिचर हए ॥

दो०-मेघनाद सुनि श्रवन अस गढु पुनि छँका आइ ।

उतरयो वीर दुर्ग तें सन्मुख चलयो वजाइ ॥ ४९ ॥

कहँ कोसलाधीस द्वौ भ्राता । धन्वी सकल लोक विख्याता ॥  
 कहँ नल नील दुविद सुग्रीवा । अंगद हनूमंत बल सींवा ॥  
 कहाँ विभीषनु भ्राताद्रोही । आजु सबहि हठि मारउँ ओही ॥  
 अस कहि कठिन वान संधाने । अतिसय क्रोध श्रवन लगि ताने  
 सर समूह सो छाड़ै लागा । जनु सपच्छ धावहिं बहु नागा ॥  
 जहँ तहँ परत देखिअहिं वानर । सन्मुख होइ न सके तेहि अवसर

जहँ तहँ भागि चले कपि रीछा । बिसरी सबहि जुद्ध कै ईछा ॥  
सो कपि भालु न रन महुँ देखा । कीन्हेसि जेहि न प्रान अवसेषा ॥

दो०—दस दस सर सब मारेसि परे भूमि कपि बीर ।

सिंहनाद करि गर्जा मेघनाद बल धीर ॥ ५० ॥

देखि पवनसुत कटक बिहाला । क्रोधवत जनु धायउ काला ॥  
महासैल एक तुरत उपारा । अतिरिस मेघनाद पर डारा ॥  
आवत देखि गयउ नभ सोई । रथ सारथी तुरग सब खोई ॥  
बार बार पचार हनुमाना । निकट न आव मरमु सो जाना ॥  
रघुपति निकट गयउ घननादा । नाना भाँति करेसि दुर्वादा ॥  
अख सख आयुध सब डारे । कौतुकीं प्रभु काटि निवारे ॥  
देखि प्रताप मूढ़ खिसिआना । करै लाग माया विधि नाना ॥  
जिमि कोउ करै गरुड़ सैं खेला । डरपावै गहि स्वल्प सपेला ॥

दो०—जासु प्रबल माया बस सिव बिरंचि बड़ छोट ।

ताहि दिखावइ निसिचरनिज माया मति खोट ॥ ५१ ॥

नभ चढ़ि वरष बिपुल अंगारा । महि ते प्रगट होहिं जलधारा ॥  
नाना भाँति पिसाच पिसाची । मारु काटु धुनि बोलहिं नाची ॥  
विष्टा पूय रुधिर कच हाड़ा । वरषइ कबहुँ उपल बहु छाड़ा ॥  
वरषि धूरि कीन्हेसि अँधिआरा । सूझ न आपन हाथ पसारा ॥  
कपि अकुलाने माया देखें । सब कर मरन बना एहि लेखें ॥  
कौतुक देखि राम मुसुकाने । भए समीत सकल कपि जाने ॥

एक बान काटी सब माया । जिमि दिनकर हर तिमिर निकाया  
कृपादृष्टि कपि भालु बिलोके । भए प्रबल रन रहहि न रोके ॥

दो०—आयसु मागि राम पहिं अंगदादि कपि साथ ।

लछिमन चले क्रुद्ध होइ बान सरासन हाथ ॥ ५२ ॥  
छतज नयन उर बाहु विसाला । हिमगिरि निभ तनु कछु एक लाला  
इहाँ दसानन सुभट पठाए । नाना अस्त्र सस्त्र गहि धाए ॥  
भूधर नख चिटपायुध धारी । धाए कपि जय राम पुकारी ॥  
भिरे सकल जोरहि सन जोरी । इत उत जय इच्छा नहि थोरी ॥  
मुठिकन्ह लातन्ह दातन्ह काटहिं । कपि जयसील मारि पुनि डाटहिं  
मारु मारु धरु धरु धरु मारु । सीस तोरि गहि भुजा उपारु ॥  
असि रव पूरि रही नव खंडा । धावहिं जहँ तहँ रुंड प्रचंडा ॥  
देखहिं कौतुक नभ सुर वृंदा । कबहुँक विसमय कबहुँ अनंदा ॥

दो०—संधर गाड़ भरि भरि जम्बो ऊपर धूरि उड़ाइ ।

जनु अँगार रासिन्ह पर मृतक धूम रह्यो छाइ ॥ ५३ ॥  
घायल वीर विराजहिं कैसे । कुसुमित किंसुक के तरु जैसे ॥  
लछिमन मेघनाद द्वौ जोधा । भिरहिं परसपर करि अति क्रोधा  
एकहि एक सकइ नहिं जीती । निसिचर छल बल करइ अनीती  
क्रोधवंत तब भयउ अनंता । भंजेउ रथ सारथी तुरंता ।  
नाना विधि प्रहार कर सेपा । राच्छस भयउ प्रान अवसेपा ।  
रावनसुत निज मन अनुमाना । संकठ भयउ हरिहि मम प्राना ।

बीरघातिनी छाड़िसि साँगी । तेज पुंज लछिमन उर लागी ॥  
 मरुछा भई सक्ति के लागें । तव चलि गयउ निकट भय त्यागें  
 दो०-मेघनाद सम कोटि सत जोधा रहे उठाइ ।

जगदाधार सेष किमि उठै चले खिसिआइ ॥ ५४ ॥

सुनु गिरिजा क्रोधानल जासू । जारइ भुवन चारिदस आसू ॥  
 सक संग्राम जीति को ताही । सेवहिं सुर नर अग जग जाही ॥  
 यह कौतूहल जानइ सोई । जा पर कृपा राम कै होई ॥  
 संध्या भइ फिरि द्वौ बाहनी । लगे सँभारन निज निज अनी ॥  
 व्यापक ब्रह्म अजित भुवनेस्वर । लछिमन कहाँ बूझ करुनाकर  
 तब लगि लै आयउ हनुमाना । अनुज देखि प्रभु अति दुख माना  
 जामवंत कह वैद सुषेना । लंकाँ रहइ को पठई लेना ॥  
 धरि लघु रूप गयउ हनुमंसा । आनेउ भवन समेत तुरंता ॥

दो०-राम पदारविंद सिर नायउ आइ सुषेन ।

कहा नाम गिरि औषधी जाहु पवनसुत लेन ॥ ५५ ॥

राम चरन सरसिज उर राखी । चला प्रभंजनसुत बल भाषी ॥  
 उहाँ दूत एक मरमु जनावा । रावनु कालनेमि गृह आवा ॥  
 दसमुख कहा मरमु तेहिं सुना । पुनि पुनि कालनेमि सिर धुना ॥  
 देखत तुम्हहि नगर जेहिं जारा । तासु पंथ को रोकन पारा ॥  
 भजि रघुपति करु हित आपना । छाँड़हु नाथ मृषा जल्पना ॥  
 नील कंज तनु सुंदर स्यामा । हृदयँ राखु लोचनाभिरामा ॥

एक बान काटी सब माया । जिमि दिनकर हर तिमिर निकाया  
कृपादृष्टि कपि भालु बिलोके । भए प्रबल रन रहहि न रोके ॥

दो०—आयसु मागि राम पहिं अंगदादि कपि साथ ।

लछिमन चले क्रुद्ध होइ बान सरासन हाथ ॥ ५२ ॥

छतज नयन उर बाहु बिसाला । हिमगिरि निभ तनु कछु एक लाला  
इहाँ दसानन सुभट पठाए । नाना अस्त्र सस्त्र गहि धाए ॥  
भूधर नख बिटपायुध धारी । धाए कपि जय राम पुकारी ॥  
भिरे सकल जोरिहि सन जोरी । इत उत जय इच्छा नहिं थोरी ॥  
मुठिकन्ह लातन्ह दातन्ह काटहिं । कपि जयसील मारि पुनि डाटहिं  
मारु मारु धरु धरु धरु मारु । सीस तोरि गहि भुजा उपारु ॥  
असि रव पूरि रही नव खंडा । धावहिं जहँ तहँ रुंड प्रचंडा ॥  
देखहिं कौतुक नभ सुर वृंदा । कबहुँक बिसमय कबहुँ अनंदा ॥

दो०—रुधिर गाड़ भरि भरि जम्यो ऊपर धूरि उड़ाइ ।

जनु अंगार रासिन्ह पर मृतक धूम रह्यो छाड़ ॥ ५३ ॥

घायल वीर विराजहिं कैसे । कुसुमित किंसुक के तरु जैसे ॥  
लछिमन मेघनाद द्वौ जोधा । भिरहिं परसपर करि अति क्रोधा  
एकहि एक सकइ नहिं जीती । निसिचर छल बल करइ अनीती  
क्रोधवंत तब भयउ अनंता । भंजेउ रथ सारथी तुरंता ॥  
नाना विधि प्रहार कर सेवा । राच्छस भयउ प्रान अवसेषा ॥  
रावनसुत निज मन अनुमाना । संकठ भयउ हरिहि मम प्राना ॥

गिरघातिनी छाड़िसि साँगी । तेज पुंज लछिमन उर लागी ॥  
 भुलछा भई सक्ति के लागें । तब चलि गयउ निकट भय त्यागें  
 दो०-मेघनाद सम कोटि सत जोधा रहे उठाइ ।

जगदाधार सेष किमि उठै चले खिसिआइ ॥ ५४ ॥

मुनु गिरिजा क्रोधानल जासू । जारइ भुवन चारिदस आसू ॥  
 सक संग्राम जीति को ताही । सेवहिं सुर नर अग जग जाही ॥  
 यह कौतूहल जानइ सोई । जा पर कृपा राम कै होई ॥  
 संध्या भइ फिरि द्वौ बाहनी । लगे सँभारन निज निज अनी ॥  
 व्यापक ब्रह्म अजित भुवनेस्वर । लछिमन कहाँ वृझ करुनाकर  
 तब लगि लै आयउ हनुमाना । अनुज देखि प्रभु अति दुख माना  
 जामवंत कह बैद सुषेना । लंकाँ रहइ को पठई लेना ॥  
 धरि लघु रूप गयउ हनुमंता । आनेउ भवन समेत तुरंता ॥

दो०-राम पदारविंद सिर नायउ आइ सुषेन ।

कहा नाम गिरि औषधी जाहु पवनसुत लेन ॥ ५५ ॥

राम चरन सरसिज उर राखी । चला प्रमंजनसुत बल भाषी ॥  
 उहाँ दूत एक मरमु जनावा । रावनु कालनेमि गृह आवा ॥  
 दसमुख कहा मरमु तेहिं सुना । पुनि पुनि कालनेमि सिर धुना ॥  
 देखत तुम्हहि नगर जेहिं जारा । तासु पंथ को रोकन पारा ॥  
 भजि खुपति करु हित आपना । छाँड़हु नाथ मृषा जल्पना ॥  
 नील कंज तनु सुंदर स्यामा । हृदयँ राखु लोचनाभिरामा ॥



मैं तैं मोर मूढ़ता त्यागू । महा मोह निसि सूतत जागू ॥  
काल ब्याल कर भच्छक जोई । सपनेहुँ समर कि जीतिअ सोई ॥

दो०—सुनि दसकंठ रिसान अति तेहिं मन कीन्ह विचार ।

राम दूत कर मरौं बरु यह खल रत मल भार ॥५६॥  
अस कहि चला रचिसि मग माया । सर मंदिर वर बाग बनाया ॥  
मारुतसुत देखा सुभ आश्रम । मुनिहि वृद्धिजल पियौं जाइ श्रम  
राछस कपट वेष तहँ सोहा । मायापति दूतहि चह मोहा ॥  
जाइ पवनसुत नायउ माया । लाग सो कहै राम गुन गाथा ॥  
होत महा रन रावन रामहिं । जितिहहिं राम न संसय या महिं ॥  
इहाँ भएँ मैं देखउँ भाई । ग्यानदृष्टि बल मोहि अधिकारि ॥  
मागा जल तेहिं दीन्ह कमंडल । कह कपि नहिं अघाउँ थोरें जल ॥  
सर मजन करि आतुर आवहु । दिच्छा देउँ ग्यान जेहिं पावहु ॥

दो०—सर पैठत कपि पद गहा मकरीं तव अकुलान ।

मारी सो धरि दिव्य तनु चली गगन चढ़ि जान ॥५७॥  
कपि तव दरस भइउँ निष्पापा । मिटा तात मुनिवर कर सापा ॥  
मुनि न होइ यह निसिचर घोरा । मानहु सत्य वचन कपि मोरा ॥  
अस कहि गई अपछरा जवहीं । निसिचर निकट गयउ कपि तबहीं  
कह कपि मुनि गुरदछिना लेहू । पाछें हमहि मंत्र तुम्ह देहू ॥  
सिर लंगूर लपेटि पछारा । निज तनु प्रगटेसि भरती वारा ॥  
राम राम कहि छाड़ेसि प्राणा । सुनि मन हरापि चलेउ हनुमाना



सुनि कपि मन उपजा अभिमाना । मोरें भार चलिहि किमि बाना ॥  
राम प्रभाव विचारि बहोरी । बंदि चरन कह कपि कर जोरी ॥

दो०—तव प्रताप उर राखि प्रभु जैहउँ नाथ तुरंत ।

अस कहि आयसु पाइ पद बंदि चलेउ हनुमंत ॥६० (क) ॥

भरत बाहु बल सील गुन प्रभु पद प्रीति अपार ।

मन महुँ जात सराहत पुनि पुनि पवनकुमार ॥६० (ख) ॥

उहाँ राम लछिमनहि निहारी । बोले बचन मनुज अनुसारी ॥  
अर्ध राति गइ कपि नहीं आयउ । राम उठाइ अनुज उर लायउ  
सकहु न दुखित देखि मोहि काऊ । बंधु सदा तव मृदुल सुभाऊ ॥  
हित लागि तजेहु पितु माता । सहेहु विपिन हिम आतप बाता  
सो अनुराग कहाँ अब भाई । उठहु न सुनि मम बच बिकलाई  
जौं जनतेउँ वन बंधु विछोहू । पिता बचन मनतेउँ नहीं ओहू ॥  
सुत वित नारि भवन परिवारा । होहि जाहिं जग बारहिं बारा ॥  
अस विचारि जियँ जागहु ताता । मिलइ न जगत सहोदर भ्राता ॥  
जथा पंख बिनु खग अति दीना । मनि बिनु फनि करिबर कर हीना  
अस मम जीवन बंधु बिनु तोही । जौं जइ दैव जिआवै मोही ॥  
जैहउँ अवध कौन मुहु लाई । नारि हेतु प्रिय भाइ गँवाई ॥  
वरु अपजस सहतेउँ जग माहीं । नारि हानि बिसेष छति नाहीं ॥  
अब अपलोकु सोकु सुत तोरा । सहिहि निठुर कठोर उर मोरा ॥  
निज जननी के एक कुमारा । तात तासु तुम्ह प्रान अघारा ॥

सौंपेसि मोहि तुम्हहि गहि पानी । सब विधि सुखद परम हित जानी  
उतरु काह दैहउँ तेहि जाई । उठि किन मोहि सिखावहु भाई  
बहु विधि सोचत सोच विमोचन । स्वत सलिल राजिव दल लोचन  
उमा एक अखंड रघुराई । नर गति भगत कृपाल देखाई ॥

सो०—प्रभु प्रलाप सुनि कान विकल भए बानर निकर ।

आइ गयउ हनुमान जिमि कहना महुँ वीर रस ॥ ६१ ॥

हरपि राम भेटेउ हनुमाना । अति कृतग्य प्रभु परम सुजाना ॥  
तुरत बैद तव कीन्हि उपाई । उठि बैठे लछिमन हरषाई ॥  
हृदयँ लाइ प्रभु भेटेउ भ्राता । हरपे सकल भालु कपि ब्राता ॥  
कपि पुनि बैद तहाँ पहुँचावा । जेहि विधि तबहिं ताहि लइ आवा  
यह वृत्तांत दसानन सुनेऊ । अति विषाद पुनि पुनि सिर धुनेऊ  
व्याकुल कुंभकरन पहिं आवा । विविध जतन करि ताहि जगावा  
जागा निसिचर देखिअ कैसा । मानहुँ कालु देह धरि बैसा ॥  
कुंभकरन वूझा कहु भाई । काहे तव मुख रहे सुखाई ॥  
कथा कही सब तेहिं अभिमानी । जेहि प्रकार सीता हरि आनी ॥  
तात कपिन्ह सब निसिचर मारे । महा महा जोधा संग्रारे ॥  
दुर्मुख सुररिपु मनुज अहारी । भट अतिकाय अर्कपन भारी ॥  
अपर महोदर आदिक वीरा । परे समर महि सब रनधीरा ॥

दो०—सुनि दसकंधर बचन सब कुंभकरन बिलखान ।

जगदंबा हरि आनि अब सठ चाहत ॥ ६२ ॥

मल न कीन्ह तैं निसिचर नाहा । अब मोहि आइ जगाएहि काहा  
 अजहूँ तात त्यागि अभिमाना । भजहु राम होइहि कल्याणा ॥  
 हैं दससीस मनुज रघुनायक । जाके हनूमान से पायक ॥  
 अहह बंधु तैं कीन्हि खोटाई । प्रथमहि मोहि न सुनाएहि आई  
 कीन्हेहु प्रभु विरोध तेहि देवक । सिव त्रिरंचि सुर जाके सेवक ॥  
 नारद मुनि मोहि ग्यान जो कहा । कहतेउँ तोहि समय निरवहा ॥  
 अब भरि अंक भेंटु मोहि भाई । लोचन सुफल करौ मैं जाई ॥  
 स्याम गात सरसीरुह लोचन । देखौं जाइ ताप त्रय मोचन ॥  
 दो०—राम रूप गुन सुमिरत मगन भयउ छन एक ।

रावन मागेउ कोटि घट मद अरु महिष अनेक ॥ ६३ ॥

महिष खाइ करि मदिरा पाना । गर्जा बज्राघात समाना ॥  
 कुंभकरन दुर्मद रन रंगा । चला दुर्ग तजि सेन न संग्गा ॥  
 देखि विभीषनु आगे आयउ । परेउ चरन निज नाम सुनायउ ॥  
 अनुज उठाइ हृदयँ तेहि लायो । रघुपति भक्त जानि मन भायो ॥  
 तात लात रावन मोहि मारा । कहत परम हित मंत्र विचारा ॥  
 तेहिं गलानि रघुपति पहिं आयउँ । देखि दीन प्रभु के मन भायउँ ॥  
 सुनु सुत भयउ कालवस रावन । सो कि मान अब परम सिखावन  
 धन्य धन्य तैं धन्य विभीषन । भयहु तात निसिचर कुल भूपन  
 बंधु बंस तैं कीन्ह उजागर । भजेहु राम सोभा सुख सागर ॥

दो०—बचन कर्म मन कपट तजि भजेहु राम रनधीर ।

जाहु न निज पर सूझ मोहि भयउँ कालवस बीर ॥ ६४ ॥

बंधु वचन सुनि चला विभीषन । आयउ जहँ त्रैलोक विभूषन ॥  
 नाथ भूधराकार सरीरा । कुंभकरन आवत रत्नधीरा ॥  
 एतना कपिन्ह सुना जय काना । किलकिलाइ धाए बलवाना ॥  
 लिएउठाइ बिटप अरु भूधर । कटकटाइ डारहिं ता ऊपर ॥  
 कोटि कोटि गिरि सिखर प्रहारा । करहिं भालु कपि एक एक वारा ॥  
 सुरथो न मनु तनु टारथो न टारथो । जिमि गज अर्क फलनि को मारथो ॥  
 तब मारुतसुत मुठिका हन्यो । परथो धरनि व्याकुल सिर धुन्यो ॥  
 पुनि उठि तेहिं मारेउ हनुमंता ॥ घुर्मित भूतल परेउ तुरंता ॥  
 पुनि नल नीलहि अवनि पछारेसि । जहँ तहँ पटक पटक भट डारेसि ॥  
 चली बलीमुख सेन पराई । अति भय त्रसित न कोउ समुहाई ॥

दो०—अंगदादि कपि मुरुछित करि समेत सुग्रीव ।

काँख दाबि कपिराज कहूँ चला अमित बल सीव ॥ ६५ ॥

उमा करत रघुपति नरलीला । खेलत गरुड़ जिमि अहिगन मीला ॥  
 भृकुटि भंग जो कालहि खाई । ताहि कि सोहइ ऐसि लराई ॥  
 जंग पावनि कीरति विस्तरिहहिं । गाइ गाइ भवनिधि नर तारिहहिं ॥  
 मुरुछा गइ मारुतसुत जागा । सुग्रीवहि तब खोजन लागा ॥  
 सुग्रीवहु कै मुरुछा वीती । निबुकि गयउ तेहि मृतक प्रतीती ॥  
 काटेसि दसन नासिका काना । गरजि अकास चलेउ तेहिं जाना ॥  
 गहेउ चरन गहि भूमि पछारा । अति लाघवँ उठि पुनि तेहि मारा ॥  
 पुनि आयउ प्रभु पहिं बलवाना । जयति जयति जय कृपानिधाना ॥

नाक कान काटे जियँ जानी । फिरा क्रोध करि भइ मन ग्लानी ॥  
सहज भीम पुनि विनु श्रुति नासा । देखत कपि दल उपजी त्रासा ॥

दो०—जय जय जय रघुवंसमनि धाए कपि दै हूह ।

एकहि बार तासु पर छाढ़ेन्हि गिरि तरु जूह ॥ ६६ ॥

कुंभकरन रन रंग विरुद्धा । सन्मुख चला काल जनु क्रुद्धा ॥  
कोटि कोटि कपि धरि धरि खाई । जनु टीढ़ी गिरि गुहाँ समाई ॥  
कोटिन्ह गहि सरीर सन मर्दा । कोटिन्ह मीजि मिलव महि गर्दा ॥  
मुख नासा श्रवनन्हि कीं बाटा । निसरि पराहिं भालु कपि ठाटा ॥  
रन मद मत्त निसाचर दर्पा । विस्व ग्रसिहि जनु एहि विधि अपा ॥  
मुरे सुभट सब फिरहिं न फेरे । सूझ न नयन सुनिहिं नहिं टेरे ॥  
कुंभकरन कपि फौज बिडारी । सुनि धाई रजनीचर धारी ॥  
देखी राम विकल कटकाई । रिपु अनीक नाना विधि आई ॥

दो०—सुनु सुग्रीव बिभीषन अनुज सँभारेहु सैन ।

मैं देखउँ खल बल दलहि बोले राजिवनैन ॥ ६७ ॥

कर सारंग साजि कटि भाथा । अरि दल दलन चले रघुनाथा ॥  
प्रथम कीन्हि प्रभु धनुष टँकोरा । रिपु दल बधिर भयउ सुनि सोरा ॥  
सत्यसंध छाँड़े सर लच्छा । कालसर्प जनु चले सपच्छा ॥  
जहँ तहँ चले विपुल नाराचा । लगे कटन भट विकट पिसाचा ॥  
कटहिं चरन उर सिर भुजदंडा । बहुतक बीर होहिं सत खंडा ॥  
धुमिं धुमिं घायल महि परहीं । उठि सँभारि सुभट पुनि लरहीं ॥

लागत बान जलद जिमि गाजहिं । बहुतक देखि कठिन सर भाजहिं ।  
रंड प्रचंड मुंड विनु धावहिं । धरु धरु मारु मारु धुनि गावहिं ।

दो०—छन महुँ प्रभु के सायकन्हि काटे बिकट पिसाच ।

पुनि रघुबीर निपंग महुँ प्रविसे सब नाराच ॥ ६८ ॥

कुंभकरन मन दीख विचारी । हति छन माझ निसाचर धारी ॥  
भा अति क्रुद्ध महाबल बीरा । कियो मृगनायक नाद गँभीरा ॥  
कोपि महीधर लेइ उपारी । डारइ जहँ मर्कट भट भारी ॥  
आवत देखि सैल प्रभु भारे । सरन्हि काटि रज सम करि डारे ॥  
पुनि धनु तानि कोपि रघुनायक । छाँड़े अति कराल बहु सायक ॥  
तनु महुँ प्रबिसि निसरि सर जाहीं । जिमि दामिनि घन माझ समाहीं ॥  
सोनित सवत सोह तन कारे । जनु कज्जल गिरि गेरु पनारे ॥  
बिकल बिलोकि भालु कपि धाए । बिहँसा जबहिं निकट कपि आए ॥

दो०—महानाद करि गर्जा कोटि कोटि गहि कीस ।

महि पटकइ गजराज इव सपथ करइ दससीस ॥ ६९ ॥

भागै भालु बलीमुख जूथा । बृकु बिलोकि जिमि मेष बरूथा  
चले भागि कपि भालु भवानी । बिकल पुकारत आरत बानी ॥  
यह निसिचर दुकाल सम अहई । कपिकुल देस परन अब चहई ॥  
कृपा बारिधर राम खरारी । पाहि पाहि प्रनतारति हारी ॥  
सकरुन वचन सुनत भगवाना । चले सुधारि सरासन बाना ॥  
राम सेन निज पाछें घाली । चले सकोप महा बलसाली ॥



नाक कान काटे जियँ जानी । फिरा क्रोध करि भइ मन ग्लानी ॥  
सहज भीम पुनि बिनु श्रुति नासा । देखत कपि दल उपजी त्रासा ॥

दो०—जय जय जय रघुवंसमनि धाए कपि दै हूह ।

एकहि बार तासु पर छाढ़ेन्हि गिरि तरु जूह ॥ ६६ ॥

कुंभकरन रन रंग बिरुद्धा । सन्मुख चला काल जनु क्रुद्धा ॥  
कोटि कोटि कपि धरि धरि खाई । जनु टीढ़ी गिरि गुहाँ समाई ॥  
कोटिन्ह गहि सरीर सन मर्दा । कोटिन्ह मीजि मिलय महि गर्दा ॥

मुख नासा श्रवनन्हि कीं बाटा । निसरि पराहिं भालु कपि ठाटा ॥

रन मद मत्त निसाचर दर्पा । विस्व ग्रसिहि जनु एहि विधि अपा ॥

सुरे सुभट सब फिरहिं न फेरे । सूझ न नयन सुनिहिं नहिं टेरे ॥

कुंभकरन कपि फौज बिडारी । सुनि धाई रजनीचर धारी ॥

देखी राम बिकल कटकाई । रिपु अनीक नाना विधि आई ॥

दो०—सुनु सुग्रीव बिभीषन अनुज सँभारेहु सैन ।

मैं देखउँ खल बल दलहि बोले राजिवनैन ॥ ६७ ॥

कर सारंग साजि कटि भाथा । अरि दल दलन चले रघुनाथा ॥

प्रथम कीन्हि प्रभु धनुष टँकोरा । रिपु दल बधिर भयउ सुनि सोरा ॥

सत्यसंध छाँड़े सर लच्छा । कालसर्प जनु चले सपच्छा ॥

जहँ तहँ चले विपुल नाराचा । लगे कटन भट बिकट पिशाचा ॥

कटहिं चरन उर सिर भुजदंडा । बहुतक नीर होहिं सत खंडा ॥

धुर्मि धुर्मि घायल महि परहीं । उठि संभारि सुभट पुनि लरहीं ॥

छं०—संग्राम भूमि विराज रघुपति अतुल बल कोसल धनी ।  
 श्रम बिंदु मुख राजीव लोचन अरुन तन सोनित कनी ॥  
 भुज जुगल फेरत सर सरासन भालु कपि चहु दिसि बने ।  
 कह दास तुलसी कहि न सक छबि सेष जेहि आनन घने ॥

दो०—निसिचर अधम मलाकर ताहि दीन्ह निज धाम ।

गिरिजा ते नर मंदमतिजे न भजहिं श्रीराम ॥ ७१ ॥

दिन के अंत फिरीं दोउ अनी । समर भई सुभटन्ह श्रम घनी ॥  
 राम कृपाँ कपि दल बल बाढ़ा । जिमि तृन पाइ लाग अति डाढ़ा ॥  
 छीजहिं निसिचर दिनु अरु राती । निज मुख कहें सुकृत जेहि भाँती  
 बहु बिलाप दसकंधर करई । बंधु सीस पुनि पुनि उर धरई ॥  
 रोवहिं नारि हृदय हति पानी । तासु तेज बल बिपुल बखानी ॥  
 मेघनाद तेहि अवसर आयउ । कहि बहु कथा पिता समुझायउ ॥  
 देखेहु कालि मोरि मनुसाई । अबहिं बहुत का करौं बढ़ाई ॥  
 इष्टदेव सैं बल रथ पायउँ । सो बल तात न तोहि देखायउँ ॥  
 एहि विधि जल्पत भयउ बिहाना । चहुँ दुआर लागे कपि नाना ॥  
 इत कपि भालु काल सम वीरा । उत रजनीचर अति रनधीरा ॥  
 लरहिं सुभट निज निज जय हेतू । वरनि न जाइ समर खगकेतू ॥

दो०—मेघनाद मायामय रथ चढ़ि गयउ भकास ।

गर्जेउ अट्टहास करि भइ कपि कटकहि त्रास ॥ ७२ ॥

सक्ति सूल तरवारि कृपाना । अछ सछ कुलिसायुध नाना ॥

डारइ परसु परिष पाषाणा । लागेउ वृष्टि करै बहु वाना ॥  
 दस दिशि रहे वान नभ छाई । मानहुँ मघा मेघ झरि लाई ॥  
 धरु धरु मारु सुनिअ धुनि काना । जो मारइ तेहि कोउ न जाना ॥  
 गहि गिरि तरु अक्रास कपि धावहिं । देखहिं तेहि न दुखित फिरि आवहिं ॥  
 अवघट घाट बाट गिरि कंदर । माया बल कीन्हैसि सर पंजर ॥  
 जाहिं कहाँ व्याकुल भए बंदर । सुरपति बंदि परे जनु मंदर ॥  
 मारुतसुत अंगद नल नीला । कीन्हैसि बिकल सकल बलसीला ॥  
 पुनि लछिमन सुग्रीव विभीषन । सरन्हि मारि कीन्हैसि जर्जर तन ॥  
 पुनि रघुपति सैं जूझै लागा । सर छाँड़इ होइ लागहिं नागा ॥  
 व्याल पास बस भए खरारी । स्वयंस अनंत एक अत्रिकारी ॥  
 नट इव कपट चरित कर नाना । सदा स्वतंत्र एक भगवाना ॥  
 रन सोभा लागि प्रभुहिं बँधायो । नागपास देवन्ह भय पायो ॥

दो०—गिरिजा जासु नाम जपि सुनि काटहिं भव पास ।

सो कि बंध तर आवइ व्यापक बिस्व निवास ॥ ७२ ॥

चरित राम के सगुन भवानी । तर्कि न जाहिं बुद्धि बल बानी ॥  
 अस विचारि जे तग्य विरागी । रामहि भजहिं तर्क सब त्यागी ॥  
 व्याकुल कटकु कीन्ह घननादा । पुनि भा प्रगट कहइ दुर्वादा ॥  
 जामवंत कह खल रहु ठाढ़ा । सुनि करि ताहि क्रोध अति वाढ़ा ॥  
 बूढ़ जानि सठ छाँड़ेउँ तोही । लागेसि अधम पचारै मोही ॥  
 अस कहि तरल तिसूल चलायो । जामवंत कर गहि सोइ धायो ॥

मारिसि मेघनाद कै छाती । परा भूमि धुर्मित सुरवाती ।  
पुनि रिसान गहि चरन फिरायो । महि पछारि निज बल देखरायो ।  
वर प्रसाद सो मरइ न मारा । तव गहि पद लंका पर डारा ॥  
इहाँ देवरिषि गरुड़ पठायो । राम समीप सपदि सो आयो ॥

दो०-खगपति सब धरि खाए माया नाग बरूथ ।

माया विगत भए सब हरषे वानर जूथ ॥ ७४ (क) ॥

गहि गिरि पादप उपल नख धाए कीस रिसाइ ।

चले तमीचर विकलतर गढ़ पर चढ़े पराइ ॥ ७४ (ख) ॥

मेघनाद कै मुरछा जागी । पितहि विलोकि लाज अति लागी ॥  
तुरत गयउ गिरिवर कंदरा । करौं अजय मख अस मन धरा ॥  
इहाँ विभीषन मंत्र विचारा । सुनहु नाथ बल अतुल उदारा ॥  
मेघनाद मख करइ अपावन । खल मायावी देव सतावन ॥  
जौं प्रभु सिद्ध होइ सो पाइहि । नाथ वेगि पुनि जीति न जाइहि ॥  
सुनि खगपति अतिसय सुख माना । बोले अंगदादि कपि नाना ॥  
लछिमन संग जाहु सब भाई । करहु विधंस जग्य कर जाई ॥  
तुम्ह लछिमन मारेहु रन ओही । देखि समय सुर दुख अति मोही ॥  
मारेहु तेहि बल बुद्धि उपाई । जेहि छीजै निश्चिन्त सुनु भाई ॥  
जामवंत सुग्रीव विभीषन । सेन समेत रहेहु तीनिउ जन ॥  
जब खगवीर दीन्हि अनुसासन । कटि निघंग कसि साजि सरासन ॥  
प्रभु प्रताप उर धरि रनधीरा । बोले वन इव गिरा गँभीरा ॥

जौं तेहि आजु ब्रधे बिनु आवौं । तौ रघुपति सेवक न कहावौं ॥  
जौं सत संकर करहि सहाई । तदपि हतउँ रघुवीर दोहाई ॥

दो०—रघुपति चरन नाह सिरु चलेउ तुरंत अनंत ।

अंगद नील मयंद नल संग सुभट हनुमंत ॥ ७५ ॥

जाइ कपिन्ह सो देखा बैसा । आहुति देत रुधिर अरु भैंसा ॥  
कीन्ह कपिन्ह सब जग्य विधंसा । जय न उठइ तब करहि प्रसंसा ॥  
तदपि न उठइ धरेन्हि कच जाई । लातन्हि हति हति चले पराई ॥  
लै तिसूल धावा कपि भागे । आये जहँ रामानुज आगे ॥  
आवा परम क्रोध कर मारा । गर्ज घोर रव वारहि वारा ॥  
कोपि मरुतसुत अंगद धाए । हति तिसूल उर धरनि गिराए ॥  
प्रभु कहँ छाँड़ैसि सूल प्रचंडा । सर हति कृत अनंत जुग खंडा ॥  
उठि बहोरि मारुति जुवराजा । हतहिं कोपि तेहि घाउ न बाजा ॥  
फिरे वीर रिपु मरइ न मारा । तब धावा करि घोर चिकारा ॥  
आवत देखि क्रुद्ध जनु काला । लछिमन छाड़े विसिख कराला ॥  
देखेसि आवत पवि सम वाना । तुरत भयउ खल अंतरधाना ॥  
बिविध वेष धरि करइ लराई । कबहुँक प्रगट कबहुँ दुरि जाई ॥  
देखि अजय रिपु डरपे कीसा । परम क्रुद्ध तब भयउ अहीसा ॥  
लछिमन मन अस मंत्र दृढ़ावा । एहि पापिहि मैं बहुत खेलावा ॥  
सुमिरि कोसलाधीस प्रतापा । सर संधान कीन्ह करि दापा ॥  
छाड़ा वान माझ उर लागा । मरती चार कपटु सब त्यागा ॥

दो०—रामानुज कहँ रामु कहँ अस कहि छाँड़ेसि प्रान ।

धन्य धन्य तव जननी कह अंगद हनुमान ॥ ७६ ॥

बिनु प्रयास हनुमान उठायो । लंका द्वार राखि पुनि आयो ॥

तासु मरन सुनि सुर गंधर्वा । चढ़ि बिमान आए नभ सर्वा ॥

वरषि सुमन दुंदुभीं बजावहिं । श्रीरघुनाथ बिमल जसु गावहिं ॥

जय अनंत जय जगदाधारा । तुम्ह प्रभु सब देवन्हि निस्तारा ॥

अस्तुति करि सुर सिद्ध सिधाए । लछिमन कृपासिंधु पहिं आए ॥

सुत ब्रध सुना दसानन जबहीं । मुरुछित भयउ परेउ महि तबहीं ॥

मंदोदरी रुदन कर भारी । उर ताड़न बहु भाँति पुकारी ॥

नगर लोग सब व्याकुल सोचा । सकल कहहिं दसकंधर पोचा ॥

दो०—तब दसकंठ विविधि विधि समुझाई सब नारि ।

नस्वर रूप जगत सब देखहु हृदयँ बिचारि ॥ ७७ ॥

तिन्हहि ग्यान उपदेसा रावन । आपुन मंद कथा सुभ पावन ॥

पर उपदेस कुसल बहुतेरे । जे आचरहिं ते नर न घनेरे ॥

निसा सिरानि भयउ भिनुसारा । लगे भालु कपि चारिहुँ द्वारा ॥

सुभट बोलाइ दसानन बोला । रन सन्मुख जा कर मन डोला ॥

सो अवहीं बरु जाउ पराई । संजुग बिमुख भएँ न भलाई ॥

निज भुज बल मैं बयरु बढ़ावा । देहउँ उतरु जो रिपु चढ़ि आव ॥

अस कहि मरुत वेग रथ साजा । बाजे सकल जुझाऊ बाजा ॥

चले वीर सब अतुलित बली । जनु कज्जल कै आँधी चली ॥

असगुन अमित होहिं तेहि काला। गनइ न भुज बल गर्व विसाला॥

छं०—अति गर्व गनइ न सगुन असगुन स्वहिं आयुध हाथ ते ।

भट गिरत रथ ते वाजि गज चिकरत भाजहिं साथ ते ॥

गोमाय गीध कराल खर ख स्नान बोलहिं अति घने ।

जनु कालदूत उलूक बोलहिं बंचन परम भयावने ॥

दो०—साहि कि संपति सगुन सुभ सपनेहुं मन बिश्राम ।

भूव द्रोह रत मोहवस राम विमुख रति काम ॥ ७८ ॥

चलेउ निसाचर कटकु अपारा । चतुरंगिनी अनी बहु धारा ॥

विबिध भांति बाहन रथ जाना । विपुल वरन पताक ध्वज नाना ॥

चले मत्त गज जूय घनेरे । प्राविट जलद मरुत जनु प्रेरे ॥

वरन वरन विरदैत निकाया । समर सूर जानहिं बहु माया ॥

अति विचित्र बाहिनी विराजी । वीर बसंत सेन जनु साजी ॥

चलत कटक दिगसिंधुर डगहीं । छुभित पयोधि कुधर डगमगाहीं ॥

उठी रेनु रवि गयउ छपाई । मरुत थकित बसुधा अकुलाई ॥

पनव निसान घोर ख बाजहिं । प्रलय समय के घन जनु गाजहिं ॥

भेरि नफीरि बाज सहनाई । मारू राग सुभट सुखदाई ॥

केहरिनाद वीर सब करहीं । निज निज बल पौरुष उचरहीं ॥

कहइ दसानन सुनहु सुभट्टा । मर्दहु भालु कपिन्ह के ठट्टा ॥

हैं मारिहउँ भूप द्वौ भाई । अस कहि सन्मुख फौज रेंगाई ॥

यह सुधि सकल कपिन्ह जब पाई । धाए करि रघुवीर दोहाई ॥

छं०-धाए बिसाल कराल मकंठ भालु काल समान ते ।  
मानहुँ सपच्छ उड़ाहिं भूधर वृंद नाना वान ते ॥  
नख दसन सैल महाद्रुमायुध सबल संक न मानहीं ।  
जय राम रावन मत्त गज मृगराज सुजसु बखानहीं ॥

दो०-दुहु दिसि जय जयकार करि निज निज जोरी जानि ।  
भिरे बीर इत रामहि उत रावनहि बखानि ॥७९॥  
रावनु रथी विरथ रघुबीरा । देखि विभीषन भयउ अधीरा ॥  
अधिक प्रीति मन भा संदेहा । बंदि चरन कह सहित सनेहा ॥  
नाथ न रथ नहिं तन पद त्राना । केहि विधि जितव ब्रवीर बलवाना ॥  
सुनहु सखा कह कृपानिधाना । जेहिं जय होइ सो स्यंदन आना ॥  
सौरज धीरज तेहि रथ चाका । सत्य सील दृढ़ ध्वजा पताका ॥  
बल विवेक दम परहित घोरे । छमा कृपा समता रजु जोरे ॥  
ईस भजनु सारथी सुजाना । विरति चर्म संतोष कृपाना ॥  
दान परसु बुधि सक्ति प्रचंडा । बर विग्यान कठिन कोदंडा ॥  
अमल अचल मन त्रोन समाना । सम जम नियम सिलीमुख नाना ॥  
कवच अमेद विप्र गुर पूजा । एहि सम विजय उपाय न दूजा ॥  
सखा धर्ममय अस रथ जाकैं । जीतन कहँ न कतहुँ रिपु ताकैं ॥

दो०-महा अजय संसार रिपु जीति सकइ सो बीर ।  
जाकैं अस रथ होइ दृढ़ सुनहु सखा मतिधीर ॥८०(क)॥  
सुनि प्रभु बचन विभीषन हरषि गहे पद कंज ।  
एहि मिस मोहि उपदेसेहु राम कृपा सुख पुंज ॥८०(ख)॥



उत पचार दसकंधर इत अंगद हनुमान ।

लरत निसाचर भालु कपि करि निज निज प्रभु आन ॥८०(ग)॥

सुर ब्रह्मादि सिद्ध मुनि नाना । देखत रन नभ चढ़े विमाना ॥

हमहू उमा रहे तेहिं संगी । देखत राम चरित रन रंगा ॥

सुभट समर रस दुहु दिसि माते । कपि जयसील राम बल ताते ॥

एक एक सन भिरहिं पचारहिं । एकन्ह एक मर्दि महि पारहिं ॥

मारहिं काटहिं धरहिं पछारहिं । सीस तोरि सीसन्ह सन मारहिं ॥

उदर बिदारहिं भुजा उपारहिं । गहि पद अवनि पटक भट डारहिं

सिचर भट महि गाड़हिं भालू । ऊपर ढारि देहि बहु बालू ॥

बीर बलीमुख जुद्ध विरुद्धे । देखिअत विपुल काल जनु क्रुद्धे

छं०—क्रुद्धे कृतांत समान कपि तन खवत सोनित राजहीं ।

मर्दिहिं निसाचर कटक भट बलवंत घन जिमि गाजहीं ॥

मारहिं चपेटन्हि डाटि दातन्ह काटि लातन्ह मीजहीं ।

चिक्करहिं मर्कट भालु छल बल करहिं जेहिं खल छीजहीं ॥ १ ॥

धरि गाल फारहिं उर बिदारहिं गल अँतावरि मेलहीं ।

प्रह्लादपति जनु विविध तनु धरि समर अंगन खेलहीं ॥

धरु मारु काटु पछारु घोर गिरा गगन महि भरि रही ।

जय राम जो तृन ते कुलिस कर कुलिस ते कर तृन सही ॥ २ ॥

दो०—निज दल बिचलत देखेसि बीस भुजाँ दस चाप ।

रथ चढ़ि चलेउ दसानन फिरहु फिरहु करि दाप ॥ ८१ ॥



पुनि सत सर मारा उर माहीं । परेउ धरनि तल सुधि कछु नाहीं ॥  
उठा प्रबल पुनि मुरुछा जागी । छाड़िसि ब्रह्म दीन्हि जो साँगी ॥

छं०—सो ब्रह्म दत्त प्रचंड सक्ति अनंत उर लागी सही ।

परयो बीर बिकल उठाव दसमुख अतुल बल महिमा रही ॥

ब्रह्मांड भवन विराज जाकेँ एक सिर जिमि रज कनी ।

तेहि चह उठावन मूढ़ रावन जान नहिं त्रिभुवन धनी ॥

दो०—देखि पवनसुत धायउ बोलत बचन कठोर ।

आवत कपिहि हन्यो तेहिं मुष्टि प्रहार प्रघोर ॥८३॥

तु टेकि कपि भूमि न गिरा । उठा सँभारि बहुत रिस भरा ॥

८३ एक ताहि कपि मारा । परेउ सैल जनु बज्र प्रहारा ॥

मुरुछा गै बहोरि सो जागा । कपि बल बिपुल सराहन लागा ॥

धिग धिग मम पौरुष धिग मोही । जाँ तैं जिअत रहेसि सुरद्रोही ॥

अस कहि लछिमन कहूँ कपि ल्यायो । देखि दसानन विसमय पायो

कह रघुबीर समुझु जियँ भ्राता । तुम्ह कृतांत भच्छक सुर त्राता ॥

सुनत बचन उठि बैठ कृपाला । गई गगन सो सकति कराला ॥

पुनि कोदंड बान गहि धाए । रिपु सन्मुख अति आतुर आए

छं०—आतुर बहोरि विभंजि स्यंदन सूत हति व्याकुल कियो ।

गिरयो धरनि दसकंधर बिकलतर बान सत बेध्यो हियो ॥

सारथी दूसर घालि रथ तेहि तुरत लंका लै गयो ।

रघुबीर बंधु प्रताप पुंज बहोरि प्रभु चरनन्हि नयो ॥



वानर निसाचर निकर मर्दहिं राम बल दर्पित भए ।

संग्राम अंगन सुभट सोवहिं राम सर निकरन्हि हए ॥

दो०—रावन हृदय बिचारा भा निसिचर संघार ।

मैं अकेल कपि भालु बहु माया करौ अपार ॥ ८८ ॥

देवन्ह प्रभुहि पयादें देखा । उपजा उर अति छोभ विसेपा ॥

सुरपति निज रथ तुरत पठावा । हरष सहित मातलि लै आवा ॥

तेज पुंज रथ दिव्य अनूपा । हरषि चढ़े कोसलपुर भूपा ॥

चंचल तुरग मनोहर चारी । अजर अमर मन सम गतिकारी

रथारूढ रघुनाथहि देखी । धाए कपि बलु पाइ विसेपी ॥

सही न जाइ कपिन्ह कै मारी । तव रावन माया विस्तारी ॥

सो माया रघुवीरहि बाँची । लछिमन कपिन्ह सो मानी साँची ॥

देखी कपिन्ह निसाचर अनी । अनुज सहित बहु कोसलधनी ॥

छं०—बहु राम लछिमन देखि मर्कट भालु मन अति अपडरे ।

जनु चित्र लिखित समेत लछिमन जहँ सो तहँ चितवहिं खरे ॥

निज सेन चकित बिलोकि हँसि सर चाप सजि कोसल धनी ।

माया हरी हरि निमिष महुँ हरषी सकल मर्कट अनी ॥

दो०—बहुरि राम सब तन चितइ बोले बचन गँभीर ।

द्वंदजुद्ध देखहु सकल श्रमित भए अति बीर ॥ ८९ ॥

अस कहि रथ रघुनाथ चलावा । विप्र चरन पंकज सिर नावा ॥

तव लंकेस क्रोध उर छावा । गर्जत तर्जत सन्मुख धावा ॥

जीतेहु जे भट संजुग माहीं। सुनु तापस मैं तिन्ह सम नाहीं ॥  
 रावन नाम जगत जस जाना। लोकप जाकें बंदीखाना ॥  
 खर दूषन विराध तुम्ह मारा। बधेहु व्याध इव बालि बिचारा ॥  
 निसिचर निकर सुभट संघारेहु। कुंभकरन घननादहि मारेहु ॥  
 आजु बयर सबु लेउँ निवाही। जौ रन भूप भाजि नहिं जाही ॥  
 आजु करउँ खलु काल हवाले। परेहु कठिन रावन के पाले ॥  
 सुनि दुर्बचन काल बस जाना। बिहँसि बचन कह कृपानिधाना  
 सत्य सत्य सत्र तव प्रभुताई। जल्पसि जनि देखाउ मनुसाई ॥

छं०—जनि जल्पना करि सुजसु नासहि नीति सुनहि करहि छमा।  
 संसार महँ पुरुष त्रिविध पाटल रसाल पनस समा ॥  
 एक सुमनप्रद एक सुमन फल एक फलइ केवल लागहीं।  
 एक कहहिं कहहिं करहिं अपर एक करहिं कहत न बागहीं ॥

दो०—राम बचन सुनि बिहँसा मोहि सिखावत ग्यान।

बयरु करत नहिं तब डरे अब लागे प्रिय प्रान ॥ ९० ॥

कहि दुर्बचन क्रुद्ध दसकंधर। कुलिस सम् न लाग छाँड़ै सर ॥  
 नानाकार सिलीमुख धाए। दिसि अरु। बदिसि गगन महि छाए  
 पावक सर छाँड़ेउ रघुबीरा। छन महँ जरे निसाचर तीरा ॥  
 छाड़िसि तीव्र सक्ति खिसिआई। वान संग प्रभु फेरि चलाई ॥  
 कोटिन्ह चक्र त्रिसूल पनारै। बिनु प्रयास प्रभु काटि निवारै ॥  
 निफल होहिं रावन सर कैसें। खल के सकल मनोरथ जैसें ॥

तव सत वान सारथी मारेसि । परेउ भूमि जय राम पुकारेसि ॥  
राम कृपा करि सूत उठावा । तव प्रभु परम क्रोध कहूँ पावा ॥

छं०—भए क्रुद्ध जुद्ध बिरुद्ध रघुपति त्रोन सायक कसमसे ।  
कोदंड धुनि अति चंड सुनि मनुजाद सब मारुत ग्रसे ॥  
मंदोदरी उर कंप कंपति कमठ भू भूधर ग्रसे ।  
चिक्करहिं दिग्गज दसन गहि महि देखि कौतुक सुर हँसे ॥

दो०—तानेउ चाप श्रवन लागि छाँड़े बिसिख कराल ।

राम मारगन गन चले लहलहात जुनु व्याल ॥ ९१ ॥

चले वान सपच्छ जुनु उरगा । प्रथमहिं हतेउ सारथी तुरगा ॥  
रथ विभंजि हति केतु पताका । गर्जा अति अंतर बल याका ॥  
तुरत आन रथ चढ़ि खिसिआना । अस्त्र सस्त्र छाँड़ेसि विधि नाना  
विफल होहिं सब उद्यम ताके । जिमि परद्रोह निरत मनसा के ॥  
तव रावन दस सूल चलावा । वाजि चारि महि मारि गिरावा  
तुरग उठाइ कोपि रघुनायक । खैंचि सरासन छाँड़े सायक ॥  
रावन सिर सरोज वनचारी । चलि रघुवीर सिलीमुख धारी ॥  
दस दस वान भाल दस मारे । निसरि गए चले रुधिर पनारे ॥  
स्ववत रुधिर धायउ बलवाना । प्रभु पुनि कृत धनु सर संधाना ॥  
तीस तीर रघुवीर पनारे । भुजन्हि समेत सीस महि पारे ॥  
काटतहीं पुनि भए नवीने । राम बहोरि भुजा सिर छीने ॥  
प्रभु बहु बार बाहु सिर हए । कटत झटिति पुनि नूतन भए ॥

पुनि पुनि प्रभु काटत भुज सीसा । अति कौतुकी कोसलाधीसा ॥  
रहे छाड़ नभ सिर अरु बाहू । मानहुँ अमित केतु अरु राहू ॥

छं०-जनु राहु केतु अनेक नभ पथ स्रवत सोनित धावहीं ।  
रघुबीर तीर प्रचंड लागहिं भूमि गिरन न पावहीं ॥  
एक एक सर सिर निकर छेदे नभ उड़त इमि सोहहीं ।  
जनु कोपि दिनकर कर निकर जहँ तहँ विधुंतुद पोहहीं ॥

दो०-जिमि जिमि प्रभु हर तासु सिर तिमि तिमि होहिं अपार ।  
सेवत विषय विबर्ध जिमि नित नित नूतन मार ॥९२॥

दसमुख देखि सिरन्ह कै बाढ़ी । विसरा मरन भई रिम गाढ़ी ॥  
गजेंउ मूढ़ महा अभिमानी । धायउ दसहु सगसन तानी ॥  
समर भूमि दसकंधर कोप्यो । वरपि वान रघुपति रथ तोप्यो ॥  
दंड एक रथ देखि न परेऊ । जनु निहार महुँ दिनकर दुरेऊ ॥  
हाहाकार सुरन्ह जय कीन्हा । तव प्रभु कोपि कारमुक लीन्हा ॥  
सर निवारि रिपु के सिर काटे । ते दिसि त्रिदिसि गगन महि पाटे ॥  
काटे सिर नभ मारग धावहिं । जय जय धुनि करि भय उपजावहिं ॥  
कहँ लछिमन सुग्रीव कपीसा । कहँ रघुबीर कोसलाधीसा ॥

छं०-कहँ रामु कहि सिर निकर धाए देखि मर्कट भजि चले ।  
संधानि धनु रघुबंसमनि हँसि सरन्हि सिर बेधे भले ॥  
सिर मालिका कर कालिका गहि वृद्ध वृंदन्हि बहु मिलीं ।  
करि सुधिर सरि मज्जनु मनहुँ संग्राम बट पूजन चलीं ॥



दो०—पुनि दसकंठ क्रुद्ध होइ छाँड़ी सक्ति प्रचंड ।

चली विभीषन सन्मुख मनहुँ काल कर दंड ॥९३॥

आवत देखि सक्ति अति घोरा । प्रनतारति भंजन पन मोरा ॥  
 तुरत विभीषन पाछें मेला । सन्मुख राम सहेउ सोइ सेला ॥  
 लागि सक्ति मुरुछा कछु भई । प्रभु कृत खेल सुरन्ह बिकलई ॥  
 देखि विभीषन प्रभु श्रम पायो । गहि कर गदा क्रुद्ध होइ धायो ॥  
 रे कुभाग्य सठ मंद कुबुद्धे । तैं सुर नर मुनि नाग बिरुद्धे ॥  
 सादर सिव कहूँ सीस चढ़ाए । एक एक के कोटिन्ह पाए ॥  
 तेहि कारन खल अब लागि बाँच्यो । अब तव काल सीस पर नाच्यो ॥  
 राम विमुख सठ चहसि संपदा । अस कहि हनेसि माझ उर गदा ॥

छं०—उर माझ गदा प्रहार घोर कठोर लागत महि पश्यो ।

दस वदन सोनित स्रवत पुनि संभारि धायो रिस भरयो ॥

द्वौ भिरे अतिबल मल्लजुद्ध बिरुद्ध एक एकहि हनै ।

रघुबीर बल दर्पित विभीषनु घालि नहिं ता कहूँ गनै ॥

दो०—उमा विभीषनु रावनहि सन्मुख चितव कि काउ १ ।

सो अब भिरत काल ज्यों श्रीरघुबीर प्रभाउ ॥ ९४ ॥

देखा श्रमित विभीषनु भारी । धाएउ हनूमान गिरि धारी ॥

रथ तुरंग सारथी निपाता । हृदय माझ तेहि मारेसि लाता ॥

टाढ़ रहा अति कंपित गाता । गयउ विभीषनु जहँ जनवाता ॥

पुनि रावन कपि हतेउ पचारी । चलेउ गगन कपि पूँछ पसारी ॥

गहिसि पूँछ कपि सहित उड़ाना । पुनि फिरि भिरेउ प्रबल हनुमाना ॥  
लरत अकास जुगल सम जोधा । एकहि एकु हनत करि क्रोधा ॥  
सोहहिं नभ छल बल बहु करहीं । कजलगिरि सुमेरु जनु लरहीं ॥  
बुधि बल निसिचर परइ न पारयो । तव मारुतसुत प्रभु संभारयो ॥

छं०-संभारि श्रीरघुवीर धीर पचारि कपि रावनु हन्यो ।  
महि परत पुनि उठि लरत देवन्ह जुगल कहूँ जय जय मन्यो ॥  
हनुमंत संकट देखि मर्कट भालु क्रोधातुर चले ।  
रन मत्त रावन सकल सुभट प्रचंड भुज बल दलमले ॥

दो०-तव रघुवीर पचारे धाए कीस प्रचंड ।  
कपि बल प्रबल देखि तेहिं कीन्ह प्रगट पापंड ॥ ९५ ॥

अंतरधान भयउ छन एका । पुनि प्रगटे खल रूप अनेका ॥  
रघुपति कटक भालु कपि जेते । जहँ तहँ प्रगट दसानन तेते ॥  
देखे कपिन्ह अमित दससीसा । जहँ तहँ भजे भालु अरु कीसा ॥  
भागो बानर धरहिं न धीरा । त्राहि त्राहि लछिमन रघुवीरा ॥  
दहँ दिसि धावहिं कोटिन्ह रावन । गर्जहिं घोर कठोर भयावन ॥  
डरे सकल सुर चले पराई । जय कै आस तजहु अब भाई ॥  
सब सुर जिते एक दसकंधर । अब बहु भए तकहु गिरि कंदर ॥  
रहे विरंचि संभु मुनि ग्यानी । जिन्ह जिन्ह प्रभु महिमा कह्यु जानी ॥

छं०-जाना प्रताप ते रहे निर्भय कपिन्ह रिपु माने फुरे ।  
चले विचलि मर्कट भालु सकल कृपाल पाहि भयातुरे ॥

हनुमंत अंगद नील नल अतिबल लरत रन बाँकुरे ।

मर्दहिं दसानन कोटि कोटिन्ह कपट भू भट अंकुरे ॥

दो०—सुर वानर देखे बिकल हँस्यो कोसलाधीस ।

सजि सारंग एक सर हते सकल दससीस ॥ ९६ ॥

प्रभु छन महुँ माया सब काटी । जिमि रवि उएँ जाहिं तम फाटी

रावनु एकु देखि सुर हरषे । फिरे सुमन बहु प्रभु पर वरपे ॥

भुज उठाइ रघुपति कपि फेरे । फिरे एक एकन्ह तव टेरे ॥

प्रभु बलु पाइ भालु कपि धाए । तरल तमकि संजुग महि आए ॥

अस्तुति करत देवतन्हि देखें । भयउँ एक मैं इन्ह केलेखें ॥

सठहु सदा तुम्ह मोर मरायल । अस कहि कोपि गगन पर धायल

हाहाकार करत सुर भागे । खलहु जाहु कहँ मोरें आगे ॥

देखि बिकल सुर अंगद धायो । कूदि चरन गहि भूमि गिरायो ॥

छं०—गहि भूमि पारयो लात मारयो बालिसुत प्रभु पहिं गयो ।

संभारि उठि दसकंठ घोर कठोर, रव गर्जत भयो ॥

करि दाप चाप चढ़ाइ दस संधानि सर बहु वरपई ।

किए सकल भट घायल भयाकुल देखि निज बल हरपई ॥

दो०—तव रघुपति रावन के सीस भुजा सर चाप ।

काटे बहुत बड़े पुनि जिमि तीरथ कर पाप ॥ ९७ ॥

सिर भुज बाढ़ि देखि रिपु केरी । भालु कपिन्ह रिस भई घनेरी ॥

मरत न मूढ़ कटेहुँ भुज सीसा । धाए कोपि भालु भट कीसा ॥

बालितनय मारुति नल नीला । वानरराज दुविद बलसीला ॥  
 विष्टप महीधर करहिं प्रहारा । सोइ गिरि तरु गहि कपिन्ह सो मारा  
 एक नखन्हि रिपु वपुष विदारी । भागि चलहिं एक लातन्ह मारी  
 तब नल नील सिरन्हि चढ़ि गयऊ । नखन्हि लिलार विदारत भयऊ  
 रुधिर देखि विषाद उर भारी । तिन्हहि धरन कहूँ भुजा पसारी ॥  
 गहे न जाहिं करन्हि पर फिरहीं । जनु जुग मधुप कमल बन चरहीं  
 कोपि कूदि द्वौ धरेसि बहोरी । महि पटकत भजे भुजा मरोरी ॥  
 पुनि संकोप दस धनु कर लीन्हे । सरन्हि मारि घायल कापे कीन्हे  
 हनुमदादि मुरुछित करि बंदर । पाइ प्रदोष हरप दसकंधर ॥  
 मुरुछित देखि सकल कपि वीरा । जामवंत धायउ रनधीरा ॥  
 संग भालु भूधर तरु धारी । मारन लगे पचारि पचारी ॥  
 भयउ क्रुद्ध रावन बलवाना । गहि पद महि पटकइ भट नाना ॥  
 देखि भालुपति निज दल घाता । कोपि माझ उर मारेसि लाता ॥

छं०—उर लात घात प्रचंड लागत बिकल रथ ते महि परा ।  
 गहि भालु वीसहुँ कर मनहुँ कमलन्हि बसे निसि मधुकरा ॥  
 मुरुछित बिलोकि बहोरि पद हति भालुपति प्रभु पहिं गयो ।  
 निसि जानि स्यंदन घालि तेहि तब सूत जतनु करत भयो ॥

दो०—मुरुछा विगत भालु कपि सब आए प्रभु पास ।

निसिचर सकल रावनहि वेरि रहे अति त्रास ॥९८॥

मासपारायण, छव्यीसवाँ विश्राम

तेही निसि सीता पहिं जाई । त्रिजटा कहि सत्र कथा सुनाई ॥  
 सिर भुज बाढ़ि सुनत रिपु केरी । सीता उर भइ त्रास घनेरी ॥  
 मुख मलीन उपजी मन चिंता । त्रिजटा सन बोली तब सीता ॥  
 होइहि कहा कहसि किन माता । केहि बिधि मरिहि बिस्व दुखदाता  
 रघुपति सर सिर कटेहुँ न मरई । बिधि विपरीत चरित सत्र करई ॥  
 मोर अभाग्य जिआवत ओही । जेहिं हौं हरि पद कमल बिछोही ॥  
 जेहिं कृत कपट कनक मृग शूठा । अजहुँ सो दैव मोहि पर रूठा ॥  
 जेहिं बिधि मोहि दुख दुसह सहाए । लछिमन कहुँ कटु वचन कहाए  
 रघुपति बिरह सबिष सर भारी । तकि तकि मार बार बहु मारी ॥  
 ऐसेहुँ दुख जो राख मम प्राणा । सोइ बिधि ताहि जिआव न आना  
 बहु बिधि कर बिलाप जानकी । करि करि सुरति कृपानिधान की ॥  
 कह त्रिजटा सुनु राजकुमारी । उर सर लागत मरइ सुरारी ॥  
 प्रभु ताते उर हतइ न तेही । एहि के हृदयँ बसति वैदेही ॥

छं०—एहि के हृदयँ बस जानकी जानकी उर मम बास है ।  
 मम उदर भुवन अनेक लागत बान सब कर नास हैं ॥  
 सुनि वचन हरष बिषाद मन अति देखि पुनि त्रिजटाँ कहा ।  
 अब मरिहि रिपु एहि बिधि सुनहि सुंदरि तजहि संसय महा ॥

दो०—काटत सिर होइहि विकल छुटि जाइहि तब ध्यान ।

तब रावनहि हृदय महुँ मरिहहिं रामु सुजान ॥ ९९ ॥

अस कहि बहुत भाँति समुझाई । पुनि त्रिजटा निज भवन सिधार्ई

राम सुभाउ सुमिरि बैदेही । उपजी विरह विथा अति तेही ॥  
 निसिहि ससिहि निंदति बहु भाँती । जुग सम भई सिराति न राती  
 करति विलाप मनहिं मन भारी । राम विरहँ जानकी दुखारी ॥  
 जव अति भयउ विरह उर दाहू । फरकेउ बाम नयन अरु बाहू ॥  
 सगुन विचारि धरी मन धीरा । अब मिलिहहिं कृपाल रघुवीरा  
 इहाँ अर्धनिसि रावनु जागा । निज सारथि सन खीझन लागा  
 सठ रनभूमि छड़ाइसि मोही । धिग धिग अधम मंदमति तोही  
 तेहिं पद गहि बहु विधि समुझावा । मोरु भएँ रथ चढ़ि पुनि धावा  
 सुनि आगवनु दसानन केरा । कण्ठिल खरभर भयउ घनेरा  
 जहँ तहँ भूधर बिटप उपारी । धाए कटकटाइ भट भारी ॥

छं०—धाए जो मर्कट बिकट भालु कराल कर भूधर धरा ।  
 अति कोप करहिं प्रहार मारत भजि चले रजनीचरा ॥  
 बिचलाइ दल बलवंत कीसन्ह घेरि पुनि रावनु लियो ।  
 चहुँ दिसि चपेटन्ह मारि नखन्ह बिदारि तनु व्याकुल कियो

दो०—देखि महा मर्कट प्रबल रावन कीन्ह बिचार ।

अंतरहित होइ निमिष महुँ कृत माया विस्तार ॥१००॥

छं०—जब कीन्ह तेहिं पापंड । भए प्रगट जंतु प्रचंड ॥

बेताल भूत पिसाच । कर धरें धनु नाराच ॥

जोगिनि गहें करबाल । एक हाथ मनुज कपाल ॥

करि सद्य सोनित पान । नाचहिं करहिं ॥

धरु मारु बोलहिं घोर । रहि पूरि धुनि चहुँ ओर ॥  
 मुख बाइ धावहिं खान । तब लगे कीस परान ॥ ३ ॥  
 जहँ जाहिं मर्कट भागि । तहँ बरत देखहिं आगि ॥  
 भए विकल बानर भालु । पुनि लाग बरषै बालु ॥ ४ ॥  
 जहँ तहँ थकित करि कीस । गजेंउ बहुरि दससीस ॥  
 लछिमन कपीस समेत । भए सकल वीर अचेत ॥ ५ ॥  
 हा राम हा रघुनाथ । कहि सुभट मीजहिं हाथ ॥  
 एहि विधि सकल बल तोरि । तेहिं कीन्ह कपट बहोरि ॥ ६ ॥  
 प्रगटेसि विपुल हनुमान । धाए गहे पाषान ॥  
 तिन्ह रामु घेरे जाइ । चहुँ दिसि बरूथ बनाइ ॥ ७ ॥  
 मारहु धरहु जनि जाइ । कटकटहिं पूँछ उठाइ ॥  
 दहँ दिसि लँगूर विराज । तेहिं मध्य कोसलराज ॥ ८ ॥

छं०—तेहिं मध्य कोसलराज सुंदर स्याम तन सोभा लही ।  
 जनु इंद्रधनुष अनेक की बरं चारि तुंग तमालही ॥  
 प्रभु देखि हरष विषाद उर सुर वदत जय जय जय करी ।  
 रघुवीर एकहिं तीर कोपि निमेष सहुँ माया हरी ॥ १ ॥  
 माया विगत कपि भालु हरषे बिटप गिरि गहि सब फिरे ।  
 सर निकर छाड़े राम रावन बाहु सिर पुनि महि गिरे ॥  
 श्रीराम रावन समर चरित अनेक कल्प जो गावहीं ।  
 सत सेष सारद निगम कबि तेउ तदपि पार न पावहीं ॥ २ ॥

श्री०-ताके गुन गन कछु कहे जड़मति तुलसीदास ।

जिमि निज बल अनुरूप ते माछी उड़इ अकास ॥१०१(क)॥

काटे सिर भुज बार बहु मरत न भट लंकेस ।

प्रभु क्रीड़त सुर सिद्ध मुनि व्याकुल देखि कलेस ॥१०१(ख)॥

काटत बढ़हिं सीस समुदाई । जिमि प्रति लाभ लोभ अधिकारि

मरइ न रिपु श्रम भयउ विसेषा । राम विभीषन तन तव देखा ॥

उमा काल मर जाकीं ईछा । सो प्रभु जन कर प्रीति परीछा ॥

सुनु सरवग्य चराचर नायक । प्रनतपाल सुर मुनि सुखदायक

नाभिकुंड पियूष बस याकें । नाथ जिअत रावनु बल ताकें ॥

सुनत विभीषन बचन कृपाला । हरपि गहे कर वान कराला ॥

असुभ होन लागे तव नाना । रोवहिं खर सुकाल बहु स्वाना

बोलहिं खग जग आरति हेतू । प्रगट भए नभ जहँ तहँ केतू ॥

दसदिसि दाह होन अति लागा । भयउ परब विनु रवि उपरागा

मंदोदरि उर कंपति भारी । प्रतिमा खवहिं नयन मग वारी ॥

छं०-प्रतिमा रुदहिं पविपात नभ अति बात बह डोलति मही ।

बरपहिं बलाहक रुधिर कच रज असुभ अति सक को कही ॥

उतपात अमित विलोकि नभ सुर विकल बोलहिं जय जए ।

सुर सभय जानि कृपाल रघुपति चाप सर जोरत भए ॥

श्री०-खैचि सरासन श्रवन लागि लाड़े सर एकतीस ।

रघुनायक सायक चले मानहुँ काल फनीस ॥१०२॥



सायक एक नाभि सर सोषा । अपर लगे भुज सिर करि रोषा ॥  
 लै सिर बाहु चले नाराचा । सिर भुज हीन कंड महि नाचा ॥  
 धरनि धसइ धर धाव प्रचंडा । तब सर हति प्रभु कृत दुइ खंडा  
 गर्जेउ मरत घोर रव भारी । कहाँ रामु रन हतौ पचारी ॥  
 डोली भूमि गिरत दसकंधर । छुभित सिंधु सरि दिग्गज भूधर  
 धरनि परेउ द्वौ खंड बढ़ाई । चापि भालु मर्कट समुदाई ॥  
 मंदोदरि आगें भुज सीसा । धरि सर चले जहाँ जगदीसा ॥  
 प्रविसे सब निपंग महुँ जाई । देखि सुरन्ह दुंदुभी बजाई ॥  
 तासु तेज समान प्रभु आनन । हरषे देखि संभु चतुरानन ॥  
 जय जय धुनि पूरी ब्रह्मंडा । जय रघुवीर प्रबल भुजदंडा ॥  
 वरषहिं सुमन देव मुनि वृंदा । जय कृपाल जय जयति मुकुंदा ॥

छं०—जय कृपा कंद मुकुंद द्वंद हरन सरन सुखप्रद प्रभो ।

खल दल विदारन परम कारन कारुणीक सदा बिभो ॥

सुर सुमन वरषहिं हरष संकुल बाज दुंदुभि गहगही ।

संग्राम अंगन राम अंग अनंग बहु सोभा लही ॥१॥

सिर जटा मुकुट प्रसून बिच बिच अति मनोहर राजहीं ।

जनु नील गिरि पर तड़ित पटल समेत उडुगन भ्राजहीं ॥

भुजदंड सर कोदंड फेरत रुधिर कन तन अति बने ।

जनु रायमुनीं तमाल पर बैठीं विपुल सुख आपने ॥२॥

दो०—कृपादृष्टि करि नृष्टि प्रभु अभय किए सुर वृंद ।

भालु कीस सब हरषे जय सुख धाम मुकुंद ॥१०२॥

पति सिर देखत मंदोदरी । मुरुछित बिकल धरनि खसि परी  
 जुवति वृंद रोवत उठि धाई । तेहि उठाइ रावन पहिं आई ॥  
 पति गति देखि ते करहिं पुकारा । छूटे कच नहिं बपुष सँगारा ॥  
 उर ताड़ना करहिं विधि नाना । रोवत करहिं प्रताप बखाना ॥  
 तव बल नाथ डोल नित धरनी । तेजहीन पावक ससि तरनी ॥  
 सेष कमठ सहि सकहिं न भारा । सो तनु भूमि परेउ भरि छारा ॥  
 बरुन कुवेर सुरेस समीरा । रन सन्मुख धरि काहुं न धीरा ॥  
 भुज बल जितेहु काल जम साई । आजु परेहु अनाथ की नाई ॥  
 जगत विदित तुम्हारि प्रभुताई । सुत परिजन बल बरनि न जाई ॥  
 राम विमुख अस हाल तुम्हारा । रहा न कोउ कुल रोवनिद्वारा ॥  
 तव बस विधि प्रपंच सब नाथा । समय दिसिप नित नाचहिं माथा  
 अब तव सिर भुज जंघुक खाई । राम विमुख यह अनुचित नाई ॥  
 काल विवस पति कहा न माना । अग जग नाथु मनुज करि जाना  
 छं०—जान्यो मनुज करि दनुज कानन दहन पावक हरि स्वयं ।  
 जेहि नमत सिव ब्रह्मादि सुरपिय भजेहु नहिं कल्पामयं ॥  
 आजन्म ते परद्रोह रत पापौवस्य तव वल्लु श्रयं ।  
 तुमहू दियो निज धाम राम नमामि ब्रह्म निरामयं ॥

दो०—अहह नाथ रघुनाथ सम छुपा गिंघु नहिं आन ।

जोगि वृंद दुर्लभ गति तोहि दीन्हि भगवान ॥ १०४ ॥

मंदोदरी वचन सुनि काना । सु मुनि मिद्व सर्वान्त सुख माना ।

अज महेस नारद सनकादी । जे मुनिवर परमारथवादी ॥  
 भरि लोचन रघुपतिहि निहारी । प्रेम मगन सब भए सुखारी ॥  
 रुदन करत देखीं सब नारी । गयउ विभीषनु मन दुख भारी ॥  
 बंधु दसा विलोकि दुख कीन्हा । तब प्रभु अनुजहि आयसु दीन्हा  
 लछिमन तेहि बहु विधि समुझायो । बहुरि विभीषन प्रभु पहिं आयो  
 कृपा दृष्टि प्रभु ताहि विलोका । करहु क्रिया परिहरि सब सोका ॥  
 कीन्हि क्रिया प्रभु आयसु मानी । विधिवत देस काल जियँ जानी ॥  
 दो०—मंदोदरी आदि सब देइ तिलांजलि ताहि ।

भवन गई रघुपति गुन गन वरनत मन माहि ॥१०५॥

आइ विभीषन पुनि सिर नायो । कृपासिंधु तब अनुज बोलायो ॥  
 तुम्ह कपीस अंगद नल नीला । जामवंत मारुति नयसीला ॥  
 सब मिलि जाहु विभीषन साथ । सारेहु तिलक कहेउ रघुनाथ ॥  
 पिता वचन मैं नगर न आवउँ । आपु सरिस कपि अनुज पठावउँ  
 तुरत चले कपि सुनि प्रभु वचना । कीन्ही जाइ तिलक की रचना ॥  
 सादर सिंहासन बैठारी । तिलक सारि अस्तुति अनुसारी ॥  
 जोरि पानि सबहीं सिर नाए । सहित विभीषन प्रभु पहिं आए ॥  
 तब रघुवीर बोलि कपि लीन्हे । कहि प्रिय वचन सुखी सब कीन्हे ॥  
 छं०—किए सुखी कहि बानी सुधा सम बल तुम्हारें रिपु हयो ।  
 पायो विभीषन राज तिहुँ पुर जसु तुम्हारो नित नयो ॥

मोहि सहित सुभ कीरति तुम्हारी परम प्रीति जो गाइहैं ।  
संसार सिंधु अपार पार प्रयास बिनु नर पाइहैं ॥

श्लो०—प्रभु के वचन श्रवन सुनि नहिं अघाहिं कपि पुंज ।

बार बार सिर नावहिं गहहिं सकल पद कंज ॥१०६॥

पुनि प्रभु बोलि लियउ हनुमाना । लंका जाहु कहेउ भगवाना ॥

समाचार जानकिहि सुनावहु । तासु कुसल लै तुम्ह चलि आवहु ॥

तव हनुमंत नगर महुँ आए । सुनि निसिचरी निसाचर धाए ॥

बहु प्रकार तिन्ह पूजा कीन्ही । जनकसुता देखाइ पुनि दीन्ही ॥

दूरिहि ते प्रनाम कपि कीन्हा । खुयति दूत जानकी चीन्हा ॥

कहहु तात प्रभु कृपा निकेता । कुसल अनुज कपि सेन समेता ॥

सब विधि कुसल कोसलाधीसा । मातु समर जीत्यो दससीसा ॥

अविचल राजु विभीषन पायो । सुनि कपि वचन हरष उर छायो ॥

श्लो०—अति हरष मन तन पुलक लोचन सजल कह पुनि पुनि रमा ।

का देखै तोहि त्रैलोक्य महुँ कपि किमपि नहिं बानी समा ॥

सुनु मातु मैं पायो अखिल जग राजु आजु न संसयं ।

रन जीति रिपु दल बंधु जुत पस्यामि राममनामयं ॥

श्लो०—सुनु सुत सदगुन सकल तव हृदयँ बसहुँ हनुमंत ।

सानुकूल कोसलपति रहहुँ समेत अनंत ॥१०७॥

अब सोइ जतन करहु तुम्ह ताता । देखौं नयन स्याम मृदु गाता ॥

तव हनुमान राम पहिं जाई । जनकसुता कै कुसल सुनाई ॥

अज महेस नारद सनकादी । जे मुनिवर परमारथवादी ॥  
 भरि लोचन रघुपतिहि निहारी । प्रेम मगन सब भए सुखारी ॥  
 रुदन करत देखीं सब नारी । गयउ विभीषनु मन दुख भारी ॥  
 बंधु दसा विलोकि दुख कीन्हा । तब प्रभु अनुजहि आयसु दीन्हा ॥  
 लछिमन तेहि बहु विधि समुझायो । बहुरि विभीषन प्रभु पहिँ आयो ॥  
 कृपा दृष्टि प्रभु ताहि विलोका । करहु क्रिया परिहरि सब सोका ॥  
 कीन्हि क्रिया प्रभु आयसु मानी । विधिवत देस काल जियँ जानी ॥  
 दो०—मंदोदरी आदि सब देह तिलांजलि ताहि ।

भवन गई रघुपति गुन गन बरनत मन माहि ॥१०५॥

आइ विभीषन पुनि सिरु नायो । कृपासिंधु तब अनुज बोलायो ॥  
 तुम्ह कपीस अंगद नल नीला । जामवंत मारुति नयसीला ॥  
 सब मिलि जाहु विभीषन साथ । सारेहु तिलक कहेउ रघुनाथा ॥  
 पिता वचन मैं नगर न आवउँ । आपु सरिस कपि अनुज पठावउँ ॥  
 तुरत चले कपि सुनि प्रभु वचना । कीन्ही जाइ तिलक की रचना ॥  
 सादर सिंहासन बैठारी । तिलक सारि अस्तुति अनुसारी ॥  
 जोरि पानि सबहीं सिर नाए । सहित विभीषन प्रभु पहिँ आए ॥  
 तब रघुवीर बोलि कपि लीन्हे । कहि प्रिय वचन सुखी सब कीन्हे ॥  
 छं०—किए सुखी कहि बानी सुधा सम बल तुम्हारें रिपु हयो ।  
 पायो विभीषन राज तिहुँ पुर जसु तुम्हारो नित नयो ॥

मोहि सहित सुभ कीरति तुम्हारी परम प्रीति जो गाइहैं ।  
संसार सिंधु अपार पार प्रयास विनु नर पाइहैं ॥

दो०—प्रभु के बचन श्रवन सुनि नहिं अघाहिं कपि पुंज ।

बार बार सिर नावहिं गहहिं सकल पद कंज ॥१०६॥

पुनि प्रभु बोलि लियउ हनुमाना । लंका जाहु कहेउ भगवाना ॥  
समाचार जानकिहि सुनावहु । तासु कुसल लै तुम्ह चलि आवहु ॥  
तव हनुमंत नगर महुँ आए । सुनि निसिचरी निसाचर धाए ॥  
बहु प्रकार तिन्ह पूजा कीन्ही । जनकसुता देखाइ पुनि दीन्ही ॥  
दूरिहि ते प्रनाम कपि कीन्हा । रघुपति दूत जानकीं चीन्हा ॥  
कहहु तात प्रभु कृपा निकेता । कुसल अनुज कपि सेन समेता ॥  
सब विधि कुसल कोसलाधीसा । मातु समर जीत्यो दससीसा ॥  
अविचल राजु विभीषन पायो । सुनि कपि बचन हरष उर छायो ॥

छं०—अति हरष मन तन पुलक लोचन सजल कह पुनि पुनि रमा ।

का देउ तोहि त्रैलोक महुँ कपि किमपि नहिं बानी समा ॥

सुनु मातु मैं पायो अखिल जग राजु आजु न संसयं ।

रन जीति रिपु दल बंधु जुत पस्यामि राममनामयं ॥

दो०—सुनु सुत सदगुन सकल तव हृदय बसहुँ हनुमंत ।

सानुकूल कोसलपति रहहुँ समेत अनंत ॥१०७॥

अब सोइ जतन करहु तुम्ह ताता । देखौं नयन स्याम मृदु गाता ॥

तव हनुमान राम पहिं जाई । जनकसुता कै कुसल सुनाई ॥

सुनि संदेसु भानुकुलभूषन । बोलि लिए जुवराज विभीषन ॥  
 मारुतसुत के संग सिधावहु । सादर जनकसुतहि लै आवहु ॥  
 तुरतहिं सकल गए जहँ सीता । सेवहिं रुद्र नितिचरौ विनीता ॥  
 बेगि विभीषन तिन्हहि सिखायो । तिन्ह बहु विधि मजन करवायो  
 बहु प्रकार भूषन पहिराए । तिविका रुचिर साजि पुनि ल्याए  
 ता पर हरषि चढ़ी वैदेही । सुमिरि राम सुख धाम सनेही ॥  
 बेतपानि रच्छक चहुँ पासा । चले सकल मन परम हुलासा ॥  
 देखन भालु कीस सब आए । रच्छक कोपि निवारन धाए ॥  
 कह रघुवीर कहा मम मानहु । सीतहि सखा पयादेँ आनहु ॥  
 देखहुँ कपि जननी की नाई । विहसि कहा रघुनाथ गोसाई ॥  
 सुनि प्रभु बचन भालु कपि हरषे । नमते ॥ मन बहु वरषे ॥  
 सीता प्रथम अनल महुँ राखी । प्रग ॥ साखी ॥

जौं मन वच क्रम मम उर माहीं । तजि खुबीर आन गति नाहीं ॥  
तौ कृसानु सब कै गति जाना । मो कहूँ होउ श्रीखंड समाना ॥

०-श्रीखंड सम पावक प्रवेस कियो सुमिरि प्रभु मैथिली ।  
जय कोसलेस महेस बंदित चरन रति अति निर्मली ॥  
प्रतिबिंब अरु लौकिक कलंक प्रचंड पावक महुँ जरे ।  
प्रभु चरित काहुँ न लखे नभ सुर सिद्ध मुनि देखहिं खरे ॥१॥  
धरि रूप पावक पानि गहि श्री सत्य श्रुति जग विदित जो ।  
जिमि छीरसागर इंदिरा रामहि समर्पी आनि सो ॥  
सो राम वाम विभाग राजति रुचिर अति सोभा भली ।  
नव नील नीरज निकट मानहुँ कनक पंकज की कली ॥२॥

दो०-वरषहिं सुमन हरषि सुर बाजहिं गगन निसान ।  
गावहिं किंनर सुरवधूँ नाचहिं चढ़ीं विमान ॥१०९(क)॥  
जनकसुता समेत प्रभु सोभा अमित अपार ।  
देखि भालु कपि हरषे जय रघुपति सुख सार ॥१०९(ख)॥

तब रघुपति अनुसासन पाई । मातलि चलेउ चरन सिरु नाई  
आए देव सदा स्वारथी । वचन कहहिं जनु परमारथी ॥  
दीन बंधु दयाल रघुराया । देव कीन्हि देवन्ह पर दाया ॥  
विस्व द्रोह रत यह खल कामी । निज अघ गयउ कुमारगगामी  
तुम्ह समरूप ब्रह्म अविनासी । सदा एकरस सहज उदासी ॥  
अकल अगुन अज अनघ अनामय । अजित अमोघसक्ति करुनामय ॥



मीन कमठ सूकर नरहरी । वामन परसुराम वपु धरी ॥  
 जब जब नाथ सुरन्ह दुखु पायो । नाना तनु धरि तुम्हैं नसायो ॥  
 यह खल मलिन सदा सुरद्रोही । काम लोभ मद रत अति कोही ॥  
 अधम सिरोमनि तव पद पावा । यह हमरें मन त्रिसमय आवा ॥  
 हम देवता परम अधिकारी । स्वारथ रत प्रभु भगति विसारी ॥  
 भव प्रवाहँ संतत हम परे । अब प्रभु पाहि सरन अनुसरे ॥  
 दो०—करि बिनती सुर सिद्ध सब रहे जहँ तहँ कर जोरि ।

अति सप्रेम तन पुलकि बिधि अस्तुति करत बहोरि ॥ ११० ॥

छं०—जय राम सदा सुखधाम हरे । रघुनायक सायक चाप धरे ॥  
 वारन दारन सिंह प्रभो । गुन सागर नागर नाथ बिभो ॥  
 काम अनेक अनूप छत्री । गुन गावत सिद्ध मुनींद्र कबी ॥  
 जसु पावन रावन नाग महा । खगनाथ जथा करि कोप गहा ॥  
 जन रंजन भंजन सोक भयं । गतक्रोध सदा प्रभु बोधमयं ॥  
 अवतार उदार अपार गुनं । महि भार बिभंजन ग्यानघनं ॥  
 अज व्यापकमेकमनादि सदा । करुनाकर राम नमामि मुदा ॥  
 रघुवंस बिभूषन दूषन हा । कृत भूष बिभीषन दीन रहा ॥  
 गुन ग्यान निधान अमान अर्ज । नित राम नमामि बिभुं बिरजं ॥  
 भुजदंड प्रचंड प्रताप बलं । खल बृंद निकंद महा कुसलं ॥  
 बिनु कारन दीन दयाल हितं । छबि धाम नमामि रमा सहितं ॥  
 भव तारन कारन काज परं । मन संभव दारुन दोष हरं ॥  
 सर चाप मनोहर त्रोन धरं । जलजारुन लोचन भूपवरं ॥

सुख मंदिर सुंदर श्रीरमनं । मद्र मार मुधा ममता समनं ॥  
 अनवद्य अखंड न गोचर गो । सबरूप सदा सब होइ न गो ॥  
 इति वेद वदंति न दंतकथा । रवि आतप भिन्नमभिन्न जथा ॥  
 कृतकृत्य बिभो सब बानर ए । निरखंति तवानन सादर ए ॥  
 धिग जीवन देव सरीर हरे । तव भक्ति विना भव भूलि परे ॥  
 अब दीनदयाल दया करिए । मति मोरि बिभेदकरी हरिए ॥  
 जेहि ते विपरीत क्रिया करिए । दुख सो सुख मानि सुखी चरिए  
 खल खंडन मंडन रम्य छमा । पद पंकज सेवित संभु उमा ॥  
 नृप नायक दे वरदानमिदं । चरनांबुज प्रेमु सदा सुभदं ॥

दो०—विनय कीन्हि चतुरानन प्रेम पुलक अति गात ।

सोभासिंधु बिलोकत लोचन नहीं अघात ॥१११॥

तेहि अवसर दसरथ तहँ आए । तनय विलोकि नयन जल छाए ॥  
 अनुज सहित प्रभु बंदन कीन्हा । आसिरवाद पिताँ तव दीन्हा ॥  
 तात सकल तव पुन्य प्रभाऊ । जीत्यो अजय निसाचर राऊ ॥  
 सुनि सुत वचन प्रीति अति वादी । नयन सलिल रोमावलि ठादी ॥  
 रघुपति प्रथम प्रेम अनुमाना । चितइ पितहि दीन्हेउ दृढ़ ग्याना  
 ताते उमा मोच्छ नहीं पायो । दसरथ भेद भगति मन लायो ॥  
 सगुनोपासक मोच्छ न लेहीं । तिन्ह कहँ राम भगति निज देहीं ॥  
 बार बार करि प्रभुहि प्रनामा । दसरथ हरषि गए सुरधामा ॥

दो०—अनुज जानकी सहित प्रभु कुसल कोसलाधीन ।

सोभा देखि हरषि मन अस्तुति कर सुर

छं०—जय राम सोभा धाम । दायक प्रनत विश्राम ॥

धृत त्रोन वर सर चाप । भुजदंड प्रबल प्रताप ॥ १ ॥

जय दूषनारि खरारि । मर्दन निसाचर धारि ॥

यह दुष्ट मारेउ नाथ । भए देव सकल सनाथ ॥ २ ॥

जय हरन धरनी भार । महिमा उदार अपार ॥

जय रावनारि कृपाल । किए जातुधान विहाल ॥ ३ ॥

लंकेस अति बल गर्व । किए वस्य सुर गंधर्व ॥

मुनि सिद्ध नर खग नाग । हठि पंथ सब कें लाग ॥ ४ ॥

परद्रोह रत अति दुष्ट । पायो सो फलु पापिष्ट ॥

अब सुनहु दीन दयाल । राजीव नयन विसाल ॥ ५ ॥

मोहि रहा अति अभिमान । नहिं कोउ मोहि समान ॥

अब देखि प्रभु पद कंज । गत मान प्रद दुख पुंज ॥ ६ ॥

कोउ ब्रह्म निर्गुन ध्याव । अव्यक्त जेहि श्रुति गाव ॥

मोहि भाव कोसल भूप । श्रीराम सगुन सरूप ॥ ७ ॥

वैदेहि अनुज समेत । मम हृदयँ करहु निकेत ॥

मोहि जानिए निज दास । दे भक्ति रमानिवास ॥ ८ ॥

छं०—दे भक्ति रमानिवास त्रास हरन सरन सुखदायकं ।

सुख धाम राम नमामि काम अनेक छवि रघुनायकं ॥

सुर वृंद रंजन द्वंद भंजन मनुज तनु अतुलितवलं ।

ब्रह्मादि संकर सेव्य राम नमामि करुना कोमलं ॥

दो०—अब करि कृपा विलोकि मोहि आयसु देहु कृपाल ।

काह करौं सुनि प्रिय वचन बोले दीनदयाल ॥११३॥

सुनु सुरपति कपि भालु हमारे । परे भूमि निसिचरन्हि जे मारे ।

मम हित लागि तजे इन्ह प्राना । सकल जिआउ सुरेस सुजाना ।

सुनु खगेस प्रभु कै यह वानी । अति अगाध जानहिं मुनि ग्यान ।

प्रभु सक त्रिभुअन मारि जिआई । केवल सकहि दीन्ह बड़ाई ।

सुधा वरषि कपि भालु जिआए । हरषि उठे सब प्रभु पहिं आए ।

सुधा वृष्टि भै दुहु दल ऊपर । जिए भालु कपि नहिं रजनीचर ।

रामाकार भए तिन्ह के मन । मुक्त भए छूटे भव बंधन ।

सुर अंसिक सब कपि अरु रीछा । जिए सकल रघुपति कीं ईछा ।

राम सरिस को दीन हितकारी । कीन्हे मुकुत निसाचर झारी ।

खल मल धाम काम रत रावन । गति पाई जो मुनिवर पाव न ।

दो०—सुमन बरसि सब सुर चले चढ़ि चढ़ि रुचिर विमान ।

देखि सुअवसर प्रभु पहिं आयउ संभु सुजान ॥११४(क)॥

परम प्रीति कर जोरि जुग नलिन नयन भरि वारि ।

पुलकित तन गदगद गिराँ विनय करत त्रिपुरारि ॥११४(ख)॥

छं०—मामभिरक्षय रघुकुल नायक । दूत वर चाप रुचिर कर सायक ।

मोह महा घन पटल प्रभंजन । संसय विपिन अनल सुर रंजन ।

अगुन सगुन गुन मंदिर सुंदर । अम तम प्रबल प्रताप दिवाकर ।

काम क्रोध मद गज पंचानन । बसहु निरंतर जन मेन कानन ॥२॥

विषय मनोरथ पुंज कंज वन । प्रबल तुषार उदार पार मन ॥  
 भव वारिधि मंदर परमं दर । वारय तारय संसृति दुस्तर ॥३॥  
 स्याम गात राजीव बिलोचन । दीन वंधु प्रनतारति मोचन ॥  
 अनुज जानकी सहित निरंतर । बसहु राम नृप मम उर अंतर ॥४॥  
 मुनि रंजन महि मंडल मंडन । तुलसिदास प्रभु त्रास बिखंडन ॥५॥

दो०—नाथ जबहिं कोसलपुरीं होइहि तिलक तुम्हार ।

कृपासिंधु मैं आउब देखन चरित उदार ॥११५॥

करि विनती जब संभु सिधाए । तब प्रभु निकट विभीषनु आए  
 नाइ चरन सिरु कह मृदु बानी । विनय सुनहु प्रभु सारंगपानी ॥  
 सकुल सदल प्रभु रावन मारयो । पावन जस त्रिभुवन विस्तारयो  
 दीन मलीन हीन मति जाती । मो पर कृपा कीन्हि बहु भाँती ॥  
 अब जन गृह पुनीत प्रभु कीजे । मजनु करिअ सभर श्रम छीजे ॥  
 देखि कोस मंदिर संपदा । देहु कृपाल कपिन्ह कहूँ मुदा ॥  
 सब विधि नाथ मोहि अपनाइअ । पुनि मोहि सहित अवधपुर जाइअ  
 सुनत वचन मृदु दीनदयाला । सजल भए द्रौ नयन विसाला ॥

दो०—तोर कोस गृह मोर सब सत्य बचन सुनु भ्रात ।

भरत दसा सुमिरत मोहि निमिष कल्प सम जात ॥११६(क)॥

तापस वेष गात कृस जपत निरंतर मोहि ।

देखौं बेगि सो जतनु करु सखा निहोरउँ तोहि ॥११६(ख)॥

वीतें अवधि जाउँ जौं जिअत न पावउँ वीर ।

सुमिरत अनुज प्रीति प्रभु पुनि पुनि पुलक सरीर ॥११६(ग)

करेहु कल्प भरि राजु तुम्ह मोहि सुमिरेहु मन माहिं ।

पुनि मम धाम पाइहहु जहाँ संत सब जाहिं ॥११६(घ)

मुनत विभीषन बचन राम के । हरषि गहे पद कृपाधाम के ॥

गानर भालु सकल हरषाने । गहि प्रभु पद गुन बिमल बखाने

हुरि विभीषन भवन सिधायो । मनि गन ब्रसन विमान भरायो ॥

हे पुष्पक प्रभु आगें राखा । हँसि करि कृपासिंधु तब भाषा ॥

अदि विमान सुनु सखा विभीषन । गगन जाइ ब्रपहु पट भूपन ॥

राम पर जाइ विभीषन तबही । बरषि दिए मनि अंबर सबही ॥

जोइ जोइ मन भावइ सोइ लेहीं । मनि मुख मेलि डारि कपि देहीं

सैं रामु श्री अनुज समेता । परम कौतुकी कृपा निकेता ॥

श्लो०-मुनि जेहि ध्यान न पावहिं नेति नेति कह वेद ।

कृपासिंधु सोइ कपिन्ह सन करत अनेक बिनोद ॥११७(क)

उमा जोग जप दान तप नाना मख व्रत नेम ।

राम कृपा नहिं करहिं तसि जसि निष्केवल प्रेम ॥११७(ख)

भालु कपिन्ह पट भूपन पाए । पहिरि पहिरि रघुपति पहिं आए ॥

गाना जिनस देखि सब कीसा । पुनि पुनि हँसत कोसलाधीसा ॥

चेतइ सगुन्हि पर कीन्ही दाया । बोले मृदुल बचन रघुराया ॥

तुम्हें बल मैं रावनु मारयो । तिलक विभीषन कहँ पुनि सारयो

निज निज गृह अब तुम्ह सब जाहू । सुमिरेहु मोहि डरपहु जनि काहू  
 सुनत वचन प्रेमाकुल वानर । जोरि पानि बोले सब सादर ॥  
 प्रभु जोइ कहहु तुम्हहि सब सोहा । हमरें होत वचन सुनि मोहा ॥  
 दीन जानि कपि किए सनाथा । तुम्ह त्रैलोक ईस रघुनाथा ॥  
 सुनि प्रभु वचन लाज हम मरहीं । मसक कहूँ खगपति हित करहीं ॥  
 देखि राम रुख वानर रीछा । प्रेम मगन नहिं गृह कै ईछा ॥

दो०—प्रभु प्रेरित कपि भालु सब राम रूप उर राखि ।

हरष विषाद सहित चले विनय विविध विधि भाषि ॥११८(क)

कपिपति नील रीछपति अंगद नल हनुमान ।

सहित बिभीषन अपर जे जूथप कपि बलवान ॥११८(ख)

कहि न सकहिं कछु प्रेम बस भरि भरि लोचन बारि ।

सन्मुख चितवहिं राम तन नयन निमेष निवारि ॥११८(ग)

अतिसय प्रीति देखि रघुराई । लीन्हे सकल विमान चढ़ाई ॥

मन महुँ विप्र चरन सिरु नायो । उत्तर दिसिहि विमान चलायो ॥

चलत विमान कोलाहल होई । जय रघुवीर कहइ सबु कोई ॥

सिंहासन अति उच्च मनोहर । श्री समेत प्रभु बैठे ता पर ॥

राजतं रामु सहित भामिनी । मेरु संग जनु घन दामिनी ॥

रुचिर विमानु चलेउ अति आतुर । कीन्हीं सुमन वृष्टि हरये सुर ॥

परम सुखद चलि त्रिविध बयारी । सागर सर सरि निर्मल वारी ॥

सगुन होहिं सुंदर चहुँ पासा । मन प्रसन्न निर्मल नभ आसा ॥

कह-रघुवीर देखु रन सीता । लछिमन इहाँ हत्यो ईंद्रजीता ॥  
हनुमान अंगद के मारे । रन मंहि परे निसाचर भारे ॥  
कुंभकरन रावन द्रौ भाई । इहाँ हते सुर मुनि दुखदाई ॥

दो०—इहाँ सेतु बाँध्यों अरु थापेउँ सिव सुख धाम ।

सीता सहित कृपानिधि संभुहि कीन्ह प्रनाम ॥११९(क)॥

जहँ जहँ कृपासिंधु बन कीन्ह वास विश्राम ।

सकल देखाए जानकिहि कहे सबन्हि के नाम ॥११९(ख)॥

तुरत विमान तहाँ चलि आवा । दंडक बन जहँ परम सुहावा ॥  
कुंभजादि मुनिनायक नाना । गए रामु सब कें अस्थाना ॥  
सकल रिपिन्ह सन पाइ असीसा । चित्रकूट आए जगदीसा ॥  
तहँ करि मुनिन्ह केर संतोषा । चला विमानु तहाँ ते चोखा ॥  
बहुरि राम जानकिहि देखाई । जमुना कलि मल हरनि सुहाई ॥  
पुनि देखी सुरसरी पुनीता । राम कहा प्रनाम करु सीता ॥  
तीरथपति पुनि देखु प्रयागा । निरखत जन्म कोटि अघ भागा ॥  
देखु परम पावनि पुनि बेनी । हरनि सोक हरि लोक निसेनी ॥  
पुनि देखु अवधपुरी अति पावनि । त्रिविध ताप भव रोग नसावनि ॥  
दो०—सीता सहित अवध कहूँ कीन्ह कृपाल प्रनाम ।

सजल नयन तन पुलकित पुनि पुनि हरपित राम ॥१२०(क)॥

पुनि प्रभु आइ त्रिवेनीं हरषित मज्जनु कीन्ह ।

कपिन्ह सहित विप्रन्ह कहूँ दान विविध विधि दीन्ह ॥१२०(ख)॥



प्रभु हनुमंतहि कहा बुझाई । धरि बटु रूप अवधपुर जाई ॥  
 भरतहि कुसल हमारि सुनाएहु । समाचार लै तुम्ह चलि आएहु ॥  
 तुरत पवनसुत गवनत भयऊ । तब प्रभु भरद्वाज पहिं गयऊ ॥  
 नाना विधि मुनि पूजा कीन्ही । अस्तुति करि पुनि आसिष दीन्ही  
 मुनि पद बंदि जुगल कर जोरी । चढ़ि विमान प्रभु चले बहोरी ॥  
 इहाँ निषाद सुना प्रभु आए । नाव नाव कहँ लोग बोलाए ॥  
 सुरसरि नाधि जान तब आयो । उत्तरेउ तट प्रभु आयसु पायो ॥  
 तब सीताँ पूजी सुरसरी । बहु प्रकार पुनि चरनन्हि परी ॥  
 असीस हरपि मन गंगा । सुंदरि तव अहिवात अभंगा ॥  
 गुहा धायउ प्रेमाकुल । आयउ निकट परम सुख संकुल  
 प्रभुहि सहित विलोकि बैदेही । परेउ अवनितन सुधि नहिं तेही  
 प्रीति परम विलोकि खुराई । हरपि उठाइ लियो उर लाई ॥

ॐ०—लियो हृदयँ लाइ कृपा निधान सुजान रायँ रमापती ।  
 बैठारि परम समाप बूझी कुसल सो कर वीनती ॥  
 अब कुसल पद पंकज विलोकि विरंचि संकर सेव्य जे ।  
 सुख धाम पूरनकाम राम नमामि राम नमामि ते ॥१॥  
 सब भाँति अधम निषाद सो हरि भरत ज्यों उर लाइयो ।  
 मतिमंद तुलसीदास सो प्रभु मोह बस बिसराइयो ॥  
 यह रावनारि चरित्र पावन राम पद रतिप्रद सदा ।  
 कामादिहर विग्यानकर सुर सिद्ध मुनि गानहिं मुदा ॥२॥

०-समर बिजय रघुवीर के चरित जे सुनहिं सुजान ।

बिजय बिबेक बिभूति नित तिन्हहि देहिं भगवान् ॥१२१(क)॥

यह कलिकाल मलायतन मन करि देखु विचार ।

श्रीरघुनाथ नाम तजि नाहिन आन अधार ॥१२१(ख)॥

मासपारायण, सत्ताईसवाँ विश्राम

इति श्रीमद्रामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसने

षष्ठः सोपानः समाप्तः ।

( लङ्काकाण्ड समाप्त )



## प्रभुका ऐश्वर्य



अमित रूप प्रगटे तेहि काल ।

जयाजोग मिले सवहि कृपाल ॥

श्रीगणेशाय नमः

श्रीजानकीवल्लभो विजयते

# श्रीरामचरितमानस

—ॐ नमो भगवते वासुदेवाय—

सप्तम सोपान

( उत्तरकाण्ड )

श्लोक

केकीकण्ठाभनीलं सुरवरविलसद्विप्रपादाब्जचिह्नं  
शोभाढ्यं पीतवस्त्रं सरसिजनयनं सर्वदा सुप्रसन्नम् ।  
पाणौ नाराचचापं कपिनिकरयुतं बन्धुना सेव्यमानं  
नौमीढ्यं जानकीशं रघुवरमनिशं पुष्पकरूढरामम् ॥ १ ॥  
कोसलेन्द्रपदकञ्जमञ्जुलौ कोमलावजमहेशवन्दितौ ।  
जानकीकरसरोजलालितौ चिन्तकस्य मनभृङ्गसङ्गिनौ ॥ २ ॥

कुन्दइन्दुदरगौरसुन्दरं अम्बिकापतिमभीष्टसिद्धिदम् ।

कारुणीककलकञ्जलोचनं नौमि शङ्करमनङ्गमोचनम् ॥ ३ ॥

दो०—रहा एक दिन अवधि कर अति आरत पुर लोग ।

जहँ तहँ सोचहिं नारि नर कृस तन राम बियोग ॥

सगुन होहिं सुंदर सकल मन प्रसन्न सब केर ।

प्रभु आगवन जनाव जनु नगर रम्य चहुँ फेर ॥

कौसल्यादि मातु सब मन अनंद अस होइ ।

आयउ प्रभु श्री अनुज जुत कहन चहत अब कोइ ॥

भरत नयन भुज दच्छिन फरकत बारहिं बार ।

जानि सगुन मन हरष अति लागे करन विचार ॥

रहेउ एक दिन अवधि अधारा । समुझत मन दुख भयउ अपारा

कारन कवन नाथ नहिं आयउ । जानि कुटिल किधौ मोहि बिसरायउ

अहह धन्य लछिमन बड़भागी । राम पदारविंदु अनुरागी ॥

कपटी कुटिल मोहि प्रभु चीन्हा । ताते नाथ संग नहिं लीन्हा ॥

जौं करनी समुझै प्रभु मोरी । नहिं निस्तार कल्प सत कोरी ॥

जन अवगुन प्रभु मान न काऊ । दीनबंधु अति मृदुल सुभाऊ ॥

मेरे जियँ भरोस दड़ सोई । मिलिहहिं राम सगुन सुभ होई ॥

वातँ अवधि रहहिं जौं प्राणा । अधम कवन जग मोहि समाना ॥

दो०—राम विरह सागर महँ भरत मगन मन होत ।

त्रिप्र रूप धरि पवनसुत आइ गयउ जनु पोत ॥ १ (क) ॥

बैठे देखि कुसासन जटा मुकुट कृस गात ।

राम राम रघुपति जपत खवत नयन जलजात ॥१ (ख)॥

देखत हनूमान अति हरषेउ । पुलक गात लोचन जल बरषेउ  
मन महुँ बहुत भाँति सुख मानी । बोलेउ श्रवन सुधा सम बानी ॥  
जासु बिरहँ सोचहु दिन राती । रटहु निरंतर गुन गन पाँती ॥  
रघुकुल तिलक सुजन सुखदाता । आयउ कुसल देव मुनि त्राता ॥  
रिपु रन जीति सुजस सुर गावत । सीता सहित अनुज प्रभु आवत  
सुनत बचन विसरे सब दूखा । तृषावंत जिमि पाइ पियूषा ॥  
कोतुम्ह तात कहाँ ते आए । मोहि परम प्रिय बचन सुनाए ॥  
मारुत सुत मैं कपि हनुमाना । नामु मोर सुनु कृपा निधाना ॥  
दीन बंधु रघुपति कर किंकर । सुनत भरत भेंटेउ उठि सादर ॥  
मिलत प्रेम नहिँ हृदयँ समाता । नयन खवत जल पुलकित गाता  
कपि तव दरस सकल दुख वीते । मिले आजु मोहि राम पिरिते ॥  
बार बार बूझी कुसलाता । तो कहूँ देउँ काह सुनु भ्राता ॥  
एहि संदेस सरिस जग माहीं । करि बिचार देखेउ कछु नाहीं ॥  
नाहिन तात उरिन मैं तोही । अब प्रभु चरित सुनावहु मोही ॥  
तव हनुमंत नाइ पद माथा । कहे सकल रघुपति गुन गाथा ॥  
कहु कपि कबहुँ कृपाल गोसाई । सुमिरहिँ मोहि दास की नाई ॥  
छं०-निज दास ज्यों रघुवंसभूषन कबहुँ मम सुमिरन करयो ।  
सुनि भरत बचन बिनीत अति कपि पुलकि तन चरनन्हि परयो ॥

रघुवीरनिज मुख जासु गुन गन कहत अग जग नाथ जे  
काहे न होइ विनीत परम पुनीत सदगुन सिंधु से

दो०—राम प्रान प्रिय नाथ तुम्ह सत्य बचन मम तात ।

पुनि पुनि मिलत भरत सुनि हरष न हृदयँ समात ॥२(क)

सो०—भरत चरन सिरु नाइ तुरित गयउ कपि राम पहिं ।

कही कुसल सब जाइ हरषि चलेउ प्रभु जान चढ़ि ॥२(ख)

हरषि भरत कोसलपुर आए । समाचार सब गुरहि सुनाए  
पुनि मंदिर महुँ बात जनाई । आवत नगर कुसल रघुराई  
सुनत सकल जननीं उठि धाई । कहि प्रभु कुसल भरत समुझा  
समाचार पुरबासिन्ह पाए । नर अरु नारि हरषि सब धाए  
दधि दुर्वा रोचन फल फूला । नव तुलसीदल मंगल मूला  
भरि भरि हेम थार भामिनी । गावत चलिं सिंधुरगामिनी  
जे जैसेहिं तैसेहिं उठि धावहिं । बाल वृद्ध कहँ संग न लावहिं  
एक एकन्ह कहँ बूझहिं भाई । तुम्ह देखे दयाल रघुराई  
अवधपुरी प्रभु आवत जानी । भई सकल सोभा कै खानी ।  
वहइ सुहावन त्रिविध समीरा । भइ सरजू अति निर्मल नीरा ।

दो०—हरषित गुर परिजन अनुज भूसुर बृंद समेत ।

चले भरत मन प्रेम अति सन्मुख कृपानिकेत ॥३(क)

बहुतक चढ़ीं अटारिन्ह निरखहिं गगन विमान ।

देखि मधुर सुर हरषित करहिं सुमंगल गान ॥३(ख)

राका ससि रघुपति पुर सिंधु देखि हरषान ।

बढ़यो कोलाहल करत जनु नारि तरंग समान ॥ ३ (ग) ॥

इहाँ भानुकुल कमल दिवाकर । कपिन्ह देखावत नगर मनोहर ॥

सुनु कपीस अंगद लंकेसा । पावन पुरी रुचिर यह देसा ॥

जद्यपि सब बैकुण्ठ बखाना । वेद पुरान बिदित जगु जाना ॥

अवधपुरी सम प्रिय नहिं सोऊ । यह प्रसंग जानइ कोउ कोऊ ॥

जन्मभूमि मम पुरी सुहावनि । उत्तर दिसि ब्रह सरजू पावनि ॥

जा मजन ते बिनहिं प्रयासा । मम समीप नर पावहिं वासा ॥

अति प्रिय मोहि इहाँ के वासी । मम धामदा पुरी सुख रासी ॥

हरषे सब कपि सुनि प्रभु बानी । धन्य अवध जो राम बखानी ॥

दो०-आवत देखि लोग सब कृपा सिंधु भगवान ।

नगर निकट प्रभु प्रेरेउ उतरेउ भूमि विमान ॥ ४ (क) ॥

उत्तरि कहेउ प्रभु पुष्पकहि तुम्ह कुबेर पहिं जाहु ।

प्रेरित राम चलेउ सो हरपु बिरहु अति ताहु ॥ ४ (ख) ॥

आए भरत संग सब लोगा । कृस तन श्रीरघुवीर वियोगा ॥

ब्रामदेव ब्रसिष्ट मुनिनायक । देखे प्रभु महि धरि धनु सायक ॥

धाइ धरे गुर चरन सरोरुह । अनुज सहित अति पुलक तनोरुह ॥

भेंटि कुसल बूझी मुनिराया । हमरें कुसल तुम्हारिहिं दाया ॥

सकल द्विजन मिलि नायउ माथा । धर्म धुरंधर रघुकुलनाथा ॥

गहे भरत पुनि प्रभु पद पंकज । नमत जिन्हहि सुर मुनि संकर अज ॥



परे भूमि नहिं उठत उठाए । बर करि कृपासिंधु उर लाए ॥  
 स्यामल गात रोम भए ठाढ़े । नवराजीव नयन जल बाढ़े ॥

छं०—राजीव लोचन स्रवत जल तन ललित पुलकावलि बनी ।  
 अति प्रेम हृदयँ लगाइ अनुजहि मिले प्रभु त्रिभुवन धनी ॥  
 प्रभु मिलत अनुजहि सोह मो पहिं जाति नहिं उपमा कही ।  
 जनु प्रेम अरु सिंगार तनु धरि मिले बर सुपमा लही ॥१॥  
 वृक्षत कृपानिधि कुसल भरतहि बचन बेगि न आवई ।  
 सुनु सिवा सो सुख बचन मन ते भिन्न जान जो पावई ॥  
 अब कुसल कौसलनाथ आरत जानि जन दरसन दियो ।  
 वृद्धत विरह बारीस कृपानिधान मोहि कर गहि लियो ॥२॥

दो०—पुनि प्रभु हरषि सत्रुहन भेंटे हृदयँ लगाइ ।

लछिमन भरत मिले तव परम प्रेम दोउ भाइ ॥ ५ ॥  
 भरतानुज लछिमन पुनि भेंटे । दुसह विरह संभव दुख मेटे ॥  
 सीता चरन भरत सिरु नावा । अनुज समेत परम सुख पावा ॥  
 प्रभु विलोकि हरषे पुरबासी । जनित त्रियोग त्रिपति सब नासी ॥  
 प्रेमातुर सब लोग निहारी । कौतुक कीन्ह कृपाल खरारी ॥  
 अमित रूप प्रगटे तेहि काल । जथाजोग मिले सबहि कृपाल ॥  
 कृपा दृष्टि खुबीर विलोकी । किए सकल नर नारि विसोकी ॥  
 छन महिं सबहि मिले भगवाना । उमा मरम यह काहुँ न जाना ॥  
 यदि विधि सगदि सखी करि गप्य ॥ अग्यें नले मील गन धामा ॥

कौसल्यादि मातु सव धाई । निरखि बच्छ जनु धेनु लवाई ।

छं०-जनु धेनु बालक बच्छ तजि गृहँ चरन बन परबस गई ।

दिन अंत पुर लख श्रवत थन हुंकार करि धावत भई ॥

अति प्रेम प्रभु सव मातु भेटौ बचन मृदु बहुविधि कहे ।

गइ विपम विपति वियोग भव तिन्ह हरष सुख अगनित लहे

दो०-भेटेउ तनय सुमित्राँ राम चरन रति जानि ।

रामहि मिलत कैकई हृदयँ बहुत सकुचानि ॥६(क)

लछिमन सव मातन्ह मिलि हरषे आसिष पाइ ।

कैकई कहँ पुनि पुनि मिले मन कर छोभु न जाइ ॥६(ख)

सासुन्ह सवनि मिली वैदेही । चरनन्ह लागि हरषु अति तेही

देहिं असीस वृद्धि कुसलाता । होइ अचल तुम्हार अहिवाता ॥

सव रघुपति मुख कमल विलोकहिं । मंगल जानि नयन जल रोकहिं

कनक थार आरती उतारहिं । बार बार प्रभु गात निहारहिं ।

नाना भाँति निछावरि करहीं । परमानंद हरष उर भरहीं ।

कौसल्या पुनि पुनि रघुवीरहि । चितवति कृपा सिंधु रन धीरहि ।

हृदयँ विचारति बारहिं बारा । कवन भाँति लंकापति मारा ।

अति सुकुमार जुगल मेरे वारे । निशिचर सुमट महाबल भारे ।

दो०-लछिमन अरु सीता सहित प्रभुहि विलोकति मातु ।

परमानंद मगन मन पुनि पुनि पुलकित गातु ॥ ७ ॥

लंकापति कपीस नल नीला । जामवंत अंगद सुभसीला ॥

हनुमदादि सब बानर वीरा । धरे मनोहर मनुज सरीरा ॥  
 भरत सनेह सील व्रत नेमा । सादर सब बरनहिं अति प्रेमा ॥  
 देखि नगरवासिन्ह कै रीती । सकल सराहहिं प्रभु पद प्रीती ॥  
 पुनि रघुपति सब सखा बोलाए । मुनि पद लागहु सकल सिखाए ॥  
 गुर वसिष्ठ कुल पूज्य हमारे । इन्ह की कृपाँ दनुज रन मारे ॥  
 ए सब सखा सुनहु मुनि मेरे । भए समर सागर कहँ बरे ॥  
 मम हित लागि जन्म इन्ह हारे । भरतहु ते मोहि अधिक पिआरे ॥  
 सुनि प्रभु वचन मगन सब भए । निमिष निमिष उपजत सुख नए ॥  
 दो०—कौसल्या के चरनन्हि पुनि तिन्ह नायउ माथ ।

आसिष दीन्हे हरषि तुम्ह प्रिय मम जिमि रघुनाथ ॥ ८(क) ॥

सुमन वृष्टि नभ संकुल भवन चले सुखकंद ।

चढ़ी अटारिन्ह देखहिं नगर नारि नर वृंद ॥ ८(ख) ॥

कंचन कलस त्रिचित्र सँवारे । सबहिं धरे सजि निज निज द्वारे ॥  
 बंदनवार पताका केतू । सबन्हि बनाए मंगल हेतू ॥  
 वीथीं सकल सुगंध सिँचाई । गजमनि रचि बहु चौक पुराई ॥  
 नाना भाँति सुमंगल साजे । हरषि नगर निसान बहु बाजे ॥  
 जहँ तहँ नारि निछावारी करहीं । देहिं असीस हरष उर भरहीं ॥  
 कंचन थार आरतीं नाना । जुवतीं सजें करहिं सुभ गाना ॥  
 करहिं आरती आरतिहर कैं । रघुकुल कमल विपिन दिनकर कैं ॥  
 पुर सोभा संपति कल्याणा । निगम सेष सारदा दखाना ॥



राम कहा सेवकन्ह बुलाई । प्रथम सखन्ह अन्हवावहु जाई ॥  
 सुनत वचन जहँ तहँ जन धाए । सुग्रीवादि तुरत अन्हवाए ॥  
 पुनि करुनानिधि भरत हँकारे । निज कर राम जटा निरुआरे ॥  
 अन्हवाए प्रभु तीनिउ भाई । भगत बछल कृपाल रघुराई ॥  
 भरत भाग्य प्रभु कोमलताई । सेप कोटि सत सकहिं न गाई ॥  
 पुनि निज जटा राम विवराए । गुर अनुसासन मागि नहाए ॥  
 करि मजन प्रभु भूपन साजे । अंग अनंग देखि सत लाजे ॥

दो०—सासुन्ह सादर जानकिहि मजन तुरत कराइ ।

दिव्य बसन वर भूपन अँग अँग सजे बनाइ ॥ ११(क) ॥

राम वाम दिसि सोभति रमा रूप गुन खानि ।

देखि मातु सब हरपीं जन्म सुफल निज जानि ॥ ११(ख) ॥

सुनु खगेस तेहि अवसर ब्रह्मा सिव मुनि बृंद ।

चढ़ि विमान आए सब सुर देखन सुखकंद ॥ ११(ग) ॥

प्रभु त्रिलोकि मुनि मन अनुरागा । तुरत दिव्य सिंघासन मागा ॥

रवि सम तेज सो वरनि न जाई । बैठे राम द्विजन्ह सिख नाई ॥

जनकसुता समेत रघुराई । पेखि प्रहरषे मुनि समुदाई ॥

वेद मंत्र तब द्विजन्ह उचारे । नभ सुर मुनि जय जयति पुकारे ॥

प्रथम तिलक बसिए मुनि कीन्हा । पुनि सब विप्रन्ह आयसु दीन्हा ॥

सुत त्रिलोकि हरपीं महतारी । बार बार आरती उतारी ॥

विप्रन्ह दान विविधि विधि दीन्हे । जाचक सकल अजाचक कीन्हे

सिंघासन पर त्रिभुवन साई । देखि सुरन्ह दुंदुभीं बजाई ॥

छं०—नभ दुंदुभीं याजहिं विपुल गंधर्व किंनर गावहीं ।  
 नाचहिं अपहरा वृंद परमानंद सुर मुनि पावहीं ॥  
 भंरतादि अनुज विभीषणांगद हनुमदादि समेत ते ।  
 गहैं छत्र चामर व्यजन धनु असि चर्म सक्ति विराजते ॥ १ ॥  
 श्री सहित दिनकर बंस भूपन काम बहु छवि सोहई ।  
 नव अंबुधर वर गात अंबर पीत सुर मन मोहई ॥  
 मुकुटांगदादि विचित्र भूपन अंग अंगान्हि प्रति सजे ।  
 अंभोज नयन विसाल उरभुज धन्य नर निरखंति जे ॥ २ ॥

दो०—वह सोभा समाज सुख कहत न बनइ खगेस ।  
 बरनहिं सारद सेष श्रुति सो रस जान महेस ॥ १२(क) ॥  
 भिन्न भिन्न अस्तुति करि गए सुर निज निज धाम ।  
 बंदी वेष वेद तव आए जहैं श्रीराम ॥ १२(ख) ॥  
 प्रभु सर्वग्य कीन्ह अति आदर कृपानिधान ।  
 लखेउ न काहूँ मरम कछु लगे करन गुन गान ॥ १२(ग) ॥

छं०—जय सगुन निर्गुन रूप रूप अनूप भूप सिरोमने ।  
 दसकंधरादि प्रचंड निसिचर प्रवल खल भुज बल हने ॥  
 अवतार नर संसार भार विभंजि दारुन दुख दहे ।  
 जय प्रनतपाल दयाल प्रभु संशुक्त सक्ति ना

## \* रामचरितमानस \*

तव विषम माया बस सुरासुर नाग नर अग जग हरे ।  
 भव पंथ भ्रमत अमित दिवस निसि काल कर्म गुननि भरे ॥  
 जे नाथ करि कहना बिलोके त्रिविधि दुख ते निर्बहे ।  
 भव खेद छेदन दच्छ हम कहूँ रच्छ राम नमामहे ॥२॥  
 जे ग्यान मान विमत्त तव भव हरनि भक्ति न आदरी ।  
 ते पाइ सुर दुर्लभ पदादपि परत हम देखत हरी ॥  
 विस्वास करि सब आस परिहरि दास तव जे होइ रहे ।  
 जपि नाम तव बिनु श्रम तरहिं भव नाथ सो समरामहे ॥३॥  
 जे चरन सिव अज पूज्य रज सुभ परसि मुनिपतिनी तरी ।  
 नख निर्गता मुनि बंदिता त्रैलोक पावनि सुरसरी ॥  
 ध्वज कुलिस अंकुस कंज जुत बन फिरत कंटक किन लहे ।  
 पद कंज द्वंद मुकुंद राम रमेस नित्य भजामहे ॥४॥  
 अव्यक्तमूलमनादि तरु त्वच चारि निगमागम भने ।  
 घट कंध साखा पंच बीस अनेक पर्न सुमन घने ॥  
 फल जुगल बिधि कटु मधुर बेलि अकेलि जेहि आश्रित रहे ।  
 पल्लवत फूलत नवल नित संसार विटप नमामहे ॥५॥  
 जे ब्रह्म अजमद्वैतमनुभवगम्य मनपर ध्यावहीं ।  
 ते कहहुँ जानहुँ नाथ हम तव सगुन जस नित गावहीं ॥  
 कहनायतन प्रभु सदगुनाकर देव यह वर मागहीं ।  
 मन यचन कर्म बिकार तजि तव चरन हम अनुरागहीं ॥६॥

१०-सब के देखत बेदन्ह बिनती कीन्ह उदार ।

अंतर्धान भए पुनि गए ब्रह्म आगार ॥१३(क)॥

बैनतेय सुनु संभु तब आए जहँ रघुबीर ।

बिनय करत गदगद गिरा पूरित पुलक सरीर ॥१३(ख)॥

७०-जय राम रमारमनं समनं । भव ताप भयाकुल पाहि जनं ॥

अवधेस सुरेस रमेस बिभो । सरनागत मागत पाहि प्रभो ॥

दससीस बिनासन बीस भुजा । कृत दूरि महा महि भूरि रुजा ॥

रजनीचर बृंद पतंग रहे । सर पावक तेज प्रचंड दहे ॥

महिमंडल मंडन चारुतरं । धृत सायक चाप निषंग वरं ॥

मद मोह महा ममता रजनी । तम पुंज दिवाकर तेज अनी ॥

मनजात किरात निपात किए । मृग लोग कुभोग सरेन हिए ॥

हति नाथ अनाथनि पाहि हरे । बिषया बन पावँर भूलि परे ॥

बहु रोग वियोगन्हि लोग हए । भवदंघ्रि निरादर के फल ए ॥

भव सिंधु अगाध परे नर ते । पद पंकज प्रेम न जे करते ॥

अति दीन मलीन दुखी नितहीं । जिन्ह के पद पंकज प्रीति नहीं ॥

अवलंब भवंत कथा जिन्ह के । प्रिय संत अनंत सदा तिन्ह के ॥

नहिं राग न लोभ न मान मदा । तिन्ह के सम बैभव वा विपदा ॥

एहि ते तव सेवक होत मुदा । मुनि त्यागत जोग भरोस सदा ॥

करि प्रेम निरंतर नेम लिएँ । पद पंकज सेवत सुद्ध हिएँ ॥

सम मानि निरादर आदरही । सब संत सुखी बिचरंति मही ॥



मुनि मानस पंकज भृंग भजे । रघुवीर महा रनधीर भज ॥  
 तव नाम जपामि नमामि हरी । भव रोग महागद मान अरी ॥  
 गुन सील कृपा परमायतन । प्रनमामि निरंतर श्रीरमन ॥  
 रघुनंद निकंदय द्वंद्वघन । महिपाल बिलोक्य दीन जन ॥

दो०-बार बार वर मागउँ हरषि देहु श्रीरंग ।

पद सरोज अनपायनी भगति सदा संतसंग ॥१४(क)॥

वरनि उमापति राम गुन हरषि गए कैलास ।

तव प्रभु कपिन्ह दिवाए सब बिधि सुखप्रद बास ॥१४(ख)॥

सुनु खगपति यह कथा पावनी । त्रिविध ताप भव भय दावनी ॥  
 महाराज कर सुभ अभिषेका । सुनत लहहिं नर विरति बिषेका ॥  
 जे सकाम नर सुनहिं जे गावहिं । सुख संपति नाना बिधि पावहिं ॥  
 सुर दुर्लभ सुख करि जग माहीं । अंतकाल रघुपति पुर जाहीं ॥  
 सुनहिं विमुक्त विरत अरु विषई । लहहिं भगति गति संपति नई ॥  
 खगपति राम कथा मैं बरनी । स्वमति बिलास त्रास दुख हरनी ॥  
 विरति बिषेक भगति दृढ़ करनी । मोह नदी कहैं सुंदर तरनी ॥  
 नित नव मंगल कौसलपुरी । हरषित रहहिं लोग सब कुरी ॥  
 नित नई प्रीति राम पद पंकज । सब कैजिन्हहिं नमत सिव मुनि भज  
 मंगन बहु प्रकार पहिराए । द्विजन्ह दान नाना बिधि पाए ॥  
 दो०-ब्रह्मानंद मगन कपि सब कै प्रभु पद प्रीति ।

जात न जाने दिवस तिन्ह गए मास षट बीति ॥ १५ ॥

बिसरे गृह सपनेहुँ सुधि नहीं । जिमि परद्रोह संत मन माहीं ॥  
 तब रघुपति सब सखा बोलाए । आइ सबन्हि सादर सिर नाए ॥  
 परम प्रीति समीप बैठारे । भगत सुखद मृदु वचन उचारे  
 तुम्ह अति कीन्हि मोरि सेवकाई । मुख पर केहि विधि करौं बड़ाई  
 ताते मोहि तुम्ह अति प्रिय लागे । मम हित लागि भवन सुख त्यागे  
 अनुज राज संपति बैदेही । देह गेह परिवार सनेही ॥  
 सब मम प्रिय नहीं तुम्हहि समाना । मृषा न कहउँ मोर यह बाना ॥  
 सब केँ प्रिय सेवक यह नीती । मोरें अधिक दास पर प्रीती ॥

दो०—अब गृह जाहु सखा सब भजेहु मोहि दृढ़ नेम ।

सदा सर्वगत सर्वहित जानि करेहु अति प्रेम ॥ १६ ॥

सुनि प्रभु वचन मगन सब भए । को हम कहाँ बिसरि तन गए ॥  
 एकटक रहे जोरि कर आगे । सकहिं न कछु कहि अति अनुरा  
 परम प्रेम तिन्ह कर प्रभु देखा । कहा विविधि विधि ग्यान विसेष  
 प्रभु सन्मुख कछु कहन न पारहिं । पुनि पुनि चरन सरोज निहारहिं  
 तब प्रभु भूषन वसन मगाए । नाना रंग अनूप सुहाए ॥  
 सुग्रीवहि प्रथमहिं पहिराए । वसन भरत निज हाथ बनाए ॥  
 प्रभु प्रेरित लछिमन पहिराए । लंकापति रघुपति मन भाए ॥  
 अंगद बैठ रहा नहीं डोला । प्रीति देखि प्रभु ताहि न बोला ॥

दो०—जामवंत नीलादि सब पहिराए रघुनाथ ।

हियँ धरि राम रूप सब चले नाइ पद माथ ॥ १७(क) ॥

तब अंगद उठि नाह सिरु सजल नयन कर जोरि ।

अति विनीत बोलेउ बचन मनहुँ प्रेमरस बोरि ॥१७(ख)॥

सुनु सर्वग्य कृपा सुख सिंधो । दीन दयाकर आरत बंधो ॥  
मरती बेर नाथ मोहि वाली । गयउ तुम्हारेहि कोंछें घाली ॥  
असरन सरन विरदु संभारी । मोहि जनि तजहु भगत हितकारी  
मोरें तुम्ह प्रभु गुर पितु माता । जाउँ कहाँ तजि पद जलजाता ॥  
तुम्हहि विचारि कहहु नरनाहा । प्रभु तजि भवन काज मम काहा  
बालक ग्यान बुद्धि बल हीना । राखहु सरन नाथ जन दीना ॥  
नीचि टहल गृह कै सब करिहउँ । पद पंकज बिलोकि भव तरिहउँ  
अस कहि चरन परेउ प्रभु पाही । अब जनि नाथ कहहु गृह जाही  
दो०—अंगद बचन विनीत सुनि रघुपति करुना सीव ।

प्रभु उठाइ उर लायउ सजल नयन राजीव ॥१८(क)॥

निज उर माल वसन मनि बालितनय पहिराइ ।

विदा कीन्हि भगवान तब बहु प्रकार समुझाइ ॥१८(ख)॥

भरत अनुज सौमित्रि समेता । पठवन चले भगत कृत चेता  
अंगद हृदयँ प्रेम नहिं थोरा । फिरि फिरि चितव राम कीं ओ  
बार बार कर दंड प्रनामा । मन अस रहन कहहिं मोहिं रा  
राम बिलोकनि बोलनि चलनी । सुमिरि सुमिरि सोचत हँसि मि  
प्रभु रुख देखि विनय बहु भाषी । चलेउ हृदयँ पद पंकज राख  
अति आदर सब कपि पहुँचाए । भाइन्ह सहित भरत पुनि आ

तव सुग्रीव चरन गहि नाना । भाँति विनय कीन्हे हनुमाना ॥  
दिन दस करि रघुपति पद सेवा । पुनि तव चरन देखिहउँ देवा ॥  
पुन्य पुंज तुम्ह पवनकुमारा । सेवहु जाइ कृपा आगारा ॥  
अस कहि कपि सब चले तुरंता । अंगद कहइ सुनहु हनुमंता ॥

दो० कहेहु दंडवत प्रभु सैं तुम्हहि कहउँ कर जोरि ।

बार बार रघुनायकहि सुरति कराएहु मोरि ॥१९(क)॥

अस कहि चलेउ बालिसुत फिरि आयउ हनुमंत ।

तासु प्रीति प्रभु सन कही मगन भए भगवंत ॥१९(ख)॥

कुलिसहु चाहि कठोर अति कोमल कुसुमहु चाहि ।

चित्त खगेस राम कर समुझि परइ कहु काहि ॥१९(ग)॥

पुनि कृपाल लियो बोलि निषादा । दीन्हे भूपन वसन प्रसादा ॥

जाहु भवन मम सुमिरन करेहू । मन क्रम वचन धर्म अनुसरेहू ॥

तुम्ह मम सखा भरत सम भ्राता । सदा रहेहु पुर आवत जाता ॥

वचन सुनत उपजा सुख भारी । परेउ चरन भरि लोचन बारी ॥

वरन नलिन उर धरि गृह आवा । प्रभु सुभाउ परिजनन्हि सुनावा

रघुपति चरित देखि पुरवासी । पुनि पुनि कहहिं धन्य सुखरासी

राम राज बैठैं त्रैलोका । हरषित भए गए सब सोका ॥

यह न कर काहू सन कोई । राम प्रताप विषमता खोई ॥

दो०—चरनाश्रम निज निज धरम निरत वेद पथ लोग ।

चलहिं सदा पावहिं सुखहि नहिं भय सोक न रोग ॥ २० ॥

## \* रामचरितमानस \*

मा रमा ब्रह्मादि बंदिता । जगदंबा संततमनिंदिता ॥

०-जासु कृपा कटाच्छु सुर चाहत चितव न सोइ ।

राम पदारविंद रति करति सुभावहिं खोइ ॥ २४ ॥

वहिं सानकूल सब भाई । राम चरन रति अति अधिकाई  
 मधु मुख कमल बिलोकत रहहीं । कबहुँ कृपाल हमहि कछु कहहीं  
 राम करहिं भ्रातन्ह पर प्रीती । नाना भाँति सिखावहिं नीती ॥  
 हरप्रित रहहिं नगर के लोगा । करहिं सकल सुर दुर्लभ भोगा ॥  
 अह्निसि विधिहि मनावत रहहीं । श्रीखुबीर चरन रति चहहीं ॥  
 दुइ सुत सुंदर सीताँ जाए । लव कुसवेद पुरानन्ह गाए ॥  
 दोउ बिजई बिनई गुन मंदिर । हरि प्रतिबिंब मनहुँ अति सुंदर  
 दुइ दुइ सुत सब भ्रातन्ह केरे । भए रूप गुन सील घनेरे ॥

दो०-ग्यान गिरा गोतीत अज माया मन गुन पार ।

सोइ सच्चिदानंद घन कर नर चरित उदार ॥ २५ ॥

प्रातकाल सरऊ करि मजन । बैठहिं सभा संग द्विज सजन ॥  
 वेद पुरान बसिए बखानहिं । सुनहिं राम जद्यपि सब जानहिं  
 अनुजन्ह संजुत भोजन करहीं । देखि सकल जननीं सुख भरहीं  
 भरत सत्रुहन दोनउ भाई । सहित पवनसुत उपवन जाई ॥  
 बूझहिं बैठि राम गुन गाहा । कह हनुमान सुमति अवगाहा ।  
 सुनत विमल गुन अति सुख पावहिं । बहुरि बहुरि करि बिनय कहावहिं  
 सब कें गृह गृह होहिं पुराना । राम चरित पावन विधि नाना

नर अरु नारि राम गुन गानहिं । करहिं दिवस निसि जात न जानहिं  
दो०—अवधपुरीवासिन्ह कर सुख संपदा समाज ।

सहस सेष नहिं कहि सकहिं जहँ नृप राम विराज ॥ २६ ॥

नारदादि सनकादि मुनीसा । दरसन लागि कोसलाधीसा ॥  
दिन प्रति सकल अजोध्या आवहिं । देखि नगर विरागु विसरावहिं ॥  
जातरूप मनि रचित अटारीं । नाना रंग रुचिर गच ढारीं ॥  
पुर चहुँ पास कोट अति सुंदर । रचे कँगूरा रंग रंग बर ॥  
नव ग्रह निकर अनीक बनाई । जनु घेरी अमरावति आई ॥  
महि बहु रंग रचित गच काँचा । जो बिलोकि मुनिवर मन नाचा ॥  
धवल धाम ऊपर नभ चुंबत । कलस मनहुँ रवि ससि दुति निंदत  
बहु मनि रचित झरोखा भ्राजहिं । गृह गृह प्रति मनि दीप विराजहिं  
छं०—मनि दीप राजहिं भवन भ्राजहिं देहरीं विद्रुम रची ।

मनि खंभ भीति विरंचि विरची कनक मनि मरकत खची ॥  
सुंदर मनोहर मंदिरायत अजिर रुचिर फटिक रचे ।  
प्रति द्वार द्वार कपाट पुरट बनाइ बहु बज्रन्हि खचे ॥

दो०—चारु चित्रसाला गृह गृह प्रति लिखे बनाइ ।

रामचरित जे निरख मुनि ते मन लेहिं चोराइ ॥ २७ ॥

सुमन बाटिका सबहिं लगाई । विविध भाँति करि जतन बनाई ॥  
लता ललित बहु जाति सुहाई । फूलहिं सदा वसंत कि नाई ॥  
गुंजत मधुकर मुखर मनोहर । मारुत त्रिविधि सदा बह सुंदर ॥

उमा रमा ब्रह्मादि बंदिता । जगदंबा संतंतमनिदिता ॥

दो०-जासु कृपा कटाच्छु सुर चाहत चितव न सोइ ।

राम पदारविंद रति करति सुभावहिं खोइ ॥ २४ ॥

सेवहिं सानकूल सब भाई । राम चरन रति अति अधिकाई  
प्रभु मुख कमल बिलोकत रहहीं । कबहुँ कृपाल हमहि कछु कहहीं  
राम करहिं भ्रातन्ह पर प्रीती । नाना भाँति सिखावहिं नीती ॥  
हरपित रहहिं नगर के लोगा । करहिं सकल सुर दुर्लभ भोगा ॥  
अहनिसि विधिहि मनावत रहहीं । श्रीरघुवीर चरन रति चहहीं ॥  
दुइ सुत सुंदर सीताँ जाए । लव कुसवेद पुरानन्ह गाए ॥  
दोउ विजई विनई गुन मंदिर । हरि प्रतिविंन मनहुँ अति सुंदर  
दुइ दुइ सुत सब भ्रातन्ह केरे । भए रूप गुन सील घनेरे ॥

दो०-ग्यान गिरा गोतीत अज माया मन गुन पार ।

सोइ सच्चिदानंद धन कर नर चरित उदार ॥ २५ ॥

प्रातकाल सरऊ करि मज्जन । बैठहिं सभा संग द्विज सज्जन ॥  
वेद पुरान बसिष्ट बखानहिं । सुनहिं राम जद्यपि सब जानहिं  
अनुजन्ह संजुत भोजन करहीं । देखि सकल जननीं सुख भरहीं  
भरत सत्रुहन दोनउ भाई । सहित पवनसुत उपवन जाई ॥  
बूझहिं बैठि राम गुन गाहा । कह हनुमान सुमति अवगाहा ॥  
सुनत विमल गुन अति सुख पावहिं । बहुरि बहुरि करि विनय कहावहिं ॥  
सब केँ गृह गृह होहिं पुराना । राम चरित पावन विधि नाना ॥





नाना खग बालकन्हि जिआए। बोलत मधुर उड़ात सुहाए ॥  
 मोर हंस सारस पारावत। भवननि पर सोभा अति पावत ॥  
 जहँ तहँ देखहि निज परिछाहीं। बहु विधि कूजहि नृत्य कराहीं ॥  
 सुक सारिका पढ़ावहि बालक। कहहु राम रघुपति जनपालक ॥  
 राज दुआर सकल विधि चारु। वीथी चौहट रुचिर बजारु ॥

छं०—बाजार रुचिर न बनइ बरनत वस्तु बिनु गथ पाइए।  
 जहँ भूप रमानिवास तहँ की संपदा किमि गाइए ॥  
 बैठे बजाज सराफ बनिक अनेक मनहुँ कुबेर ते।  
 सब सुखी सब सचरित सुंदर नारि नर सिसु जरठ जे ॥

दो०—उत्तर दिसि सरजू वह निर्मल जल गंभीर।

बाँधे घाट मनोहर स्वल्प पंक नहिं तीर ॥ २८ ॥

दूरि फराक रुचिर सो घाटा। जहँ जल पिअहिं बाजि गज ठाटा  
 पनिघट परम मनोहर नाना। तहाँ न पुरुष करहि अस्नाना ॥  
 राजघाट सब विधि सुंदर बर। मजहिं तहाँ बरन चारिउ नर ॥  
 तीर तीर देवन्ह के मंदिर। नहुँ दिसि तिन्ह के उपवन सुंदर  
 कहूँ कहूँ सरिता तीर उदासी। बसहिं ग्यान रत मुनि संन्यासी ॥  
 तीर तीर तुलसिका सुहाई। वृंद वृंद बहु मुनिन्ह लगाई ॥  
 पुर सोभा कछु बरनि न जाई। बाहेर नगर परम रुचिराई।  
 देखत पुरी अखिल अघ भागा। बन उपवन बापिका तड़ागा ॥



जिन्हहि सोक ते कहउँ बखानी । प्रथम अविद्या निसा नसानी ॥  
 अघ उलूक जहँ तहाँ लुकाने । काम क्रोध कैरव सकुचाने ॥  
 विविध कर्म गुन काल सुभाऊ । एचकोर सुख लहहि न काऊ ॥  
 मत्सर मान मोह मद चोरा । इन्ह कर हुनर न कवनिहुँ ओरा ॥  
 धरम तड़ाग ग्यान विग्याना । एपंकज विकसे विधिनाना ॥  
 सुख संतोष विराग विवेका । विगत सोक एकोक अनेका ॥

दो०—यह प्रताप रवि जाकेँ उर जब करइ प्रकास ।

पछिले बाढ़हिं प्रथम जे कहे ते पावहिं नास ॥ ३१ ॥

भ्रातन्ह सहित रामु एक बारा । संग परम प्रिय पवनकुमारा ॥  
 सुंदर उपवन देखन गए । सब तरु कुसुमित पल्लव नए ॥  
 जानि समय सनकादिक आए । तेज पुंज गुन सील सुहाए ॥  
 ब्रह्मानंद सदा लयलीना । देखत बालक बहुकालीना ॥  
 रूप धरें जनु चारिउ वेदा । समदरसी मुनि विगत बिभेदा ॥  
 आसा बसन व्यसन यह तिन्हहीं । रघुपति चरित होइ तहँ सुनहीं ॥  
 तहाँ रहे सनकादि भवानी । जहँ घटसंभव मुनिवर ग्यानी ॥  
 राम कथा मुनिवर बहु बरनी । ग्यान जोनि पावक जिमि अरनी ॥

दो०—देखि राम मुनि आवत हरपि दंडवत कीन्ह ।

स्वागत पूछि पीत पट प्रभु बैठन कहँ दीन्ह ॥ ३२ ॥

कीन्ह दंडवत तीनिउँ भाई । सहित पवनसुत सुख अधिकाई ॥  
 मुनि रघुपति छवि अतुल बिलोकी । भए मगन मन सके न रोकी ॥

स्यामल गात सरोरुह लोचन । सुंदरता मंदिर भव मोचन ॥  
 एकटक रहे निमेष न लावहिं । प्रभु कर जोरें सीसनवावहिं ॥  
 तिन्ह कै दसा देखि रघुवीरा । खवत नयन जल पुलक सरीरा ॥  
 कर गहि प्रभु मुनिवर बैठारे । परम मनोहर वचन उचारे ॥  
 आजु धन्य मैं सुनहु मुनीसा । तुम्हरे दरस जाहिं अघ खीसा ॥  
 बड़ें भाग पाइव सतसंगा । विनहिं प्रयास होहिं भव भंगा ॥

दो०—संत संग अपवर्ग कर कामी भव कर पंथ ।

कहहिं संत कवि कोविद श्रुति पुरान सदग्रंथ ॥ ३३ ॥

सुनि प्रभु वचन हरपि मुनि चारी । पुलकित तन अस्तुति अनुसारी ॥  
 जय भगवंत अनंत अनामय । अनघ अनेक एक करुनामय ॥  
 जय निर्गुन जय जय गुन सागर । सुख मंदिर सुंदर अति नागर ॥  
 जय हृदिरा रमन जय भूधर । अनुपम अज अनादि सोभाकर ॥  
 ग्यान निधान अमान मानप्रद । पावन सुजस पुरान वेद वद ॥  
 तग्य कृतग्य अग्यता भंजन । नाम अनेक अनाम निरंजन ॥  
 सर्व सर्वगत सर्व उरालय । वससि सदा हम कहूँ परिपालय ॥  
 हृंद विपति भव फंद विभंजय । हृदि वसि राम काम मद गंजय ॥

दो०—परमानंद कृपायतन मन परिपूरन काम ।

प्रेम भगति अनपायनी देहु हमहि श्रीराम ॥ ३४ ॥

देहु भगति रघुपति अति पावनि । त्रिविधि ताप भव दाप नसावनि ॥  
 प्रनत काम सुरधेनु कलपतरु । होइ प्रसन्न दीजै प्रभु यह वर ॥

भव वारिधि कुंभज रघुनायक । सेवत सुलभ सकल सुख दायक ।  
 मन संभव दारुन दुख दारय । दीनबंधु समता विस्तारय ।  
 आस त्रास इरिषादि निवारक । विनय विवेक विरति विस्तारक ।  
 भूप मौलि मनि मंडन धरनी । देहि भगति संसृति सरि तरनी ।  
 मुनि मन मानस हंस निरंतर । चरन कमल वंदित अज संकर ॥  
 रघुकुल केतु सेतु श्रुति रच्छक । काल करम सुभाउ गुन भच्छक ॥  
 तारन तरन हरन सब दूषन । तुलसिदास प्रभु त्रिभुवन भूपन ॥  
 दो०-वार वार अस्तुति करि प्रेम सहित सिरु नाइ ।

ब्रह्म भवन सनकादि गे अति अभीष्ट बर पाइ ॥ ३५ ॥

सनकादिक विधि लोक सिधाए । भ्रातन्ह राम चरन सिरु नाए ॥  
 पूछत प्रभुहि सकल सकुचार्हीं । चितवहिं सब मारुतसुत पार्हीं ॥  
 सुनी चहहिं प्रभु मुख कै बानी । जो सुनि होइ सकल भ्रम हानी ॥  
 अंतरजामी प्रभु सभ जाना । बूझत कहहु काह हनुमाना ॥  
 जोरि पानि कह तब हनुमंता । सुनहु दीनदयाल भगवंता ॥  
 नाथ भरत कछु पूँछन चहहीं । प्रसन्न करत मन सकुचत अहहीं ॥  
 तुम्ह जानहु कपि मोर सुभाऊ । भरतहि मोहि कछु अंतर काऊ ॥  
 सुनि प्रभु बचन भरत गहे चरना । सुनहु नाथ प्रनतारति हरना ॥  
 दो०-नाथ न मोहि संदेह कछु सपनेहुँ सोक न मोह ।

केवल कृपा तुम्हारिहि कृपानंद संदोह ॥ ३६ ॥

करउँ कृपानिधि एक दिठाई । मैं सेवक तुम्ह जन सुखदाई ॥



तिन्ह कर संग सदा दुखदाई । जिमि कपिलहि घालइ हरदाई ॥  
 खलन्ह हृदयँ अति ताप विसेषी । जरहिं सदा पर संपति देखी ॥  
 जहँ कहँ निंदा सुनहिं पराई । हरपहिं मनहुँ परी निधि पाई ॥  
 काम क्रोध मद लोभ परायन । निर्दय कपटी कुटिल मलायन ॥  
 वयस् अकारन सब काहू सों । जो कर हित अनहित ताहू सों ॥  
 झूठइ लेना झूठइ देना । झूठइ भोजन झूठ चबेना ॥  
 बोलहिं मधुर वचन जिमि मोरा । खाइ महा अहि हृदय कठोरा ॥

दो०—पर द्रोही पर दार रत पर धन पर अपवाद ।

ते नर पाँवर पापमय देह धरें मनुजाद ॥ ३९ ॥  
 लोभइ ओढ़न लोभइ डासन । सिस्नोदर पर जमपुर त्रास न ॥  
 काहू की जाँ सुनहिं बड़ाई । स्वास लेहिं जनु जूड़ी आई ॥  
 जब काहू कै देखहिं विपती । सुखी भए मानहुँ जग नृपती ॥  
 स्वारथ रत परिवार विरोधी । लंपट काम लोभ अति क्रोधी ॥  
 मातु पिता गुर विप्र न मानहिं । आपु गए अरु घालहिं आनहिं ॥  
 करहिं मोह बस द्रोह परावा । संत संग हरि कथा न भावा ॥  
 अवगुन सिंधु मंदमति कामी । वेद विदूषक परधन स्वामी ॥  
 विप्र द्रोह पर द्रोह विसेषा । दंभ कपट जियँ धरें सुवेपा ॥  
 दो०—ऐसे अधम मनुज खल कृतजुग त्रेताँ नाहिं ।

द्वापर कछुक वृंद बहु होइहहिं कलियुग माहिं ॥ ४० ॥  
 पर हित सरिस धर्म नहिं भाई । पर पीड़ा सम नहिं अधमाई ॥





बैठे गुर मुनि अरु द्विज सजन । बोले वचन भगत भव भंजन ॥  
 सुनहु सकल पुरजन मम बानी । कहउँ न कछु ममता उर आनी  
 नहिं अनीति नहिं कछु प्रभुताई । सुनहु करहु जो तुम्हहि सोहाई ॥  
 सोइ सेवक प्रियतम मम सोई । मम अनुसासन मानै जोई ॥  
 जौं अनीति कछु भापौं भाई । तौ मोहि वरजहु भय विसराई ॥  
 बड़ें भाग मानुष तनु पावा । सुर दुर्लभ सब ग्रंथन्हि गावा ॥  
 साधन धाम मोच्छ कर द्वारा । पाइ न जेहिं परलोक सँवारा ॥

दो०—सो परत्र दुख पावइ सिर धुनि धुनि पछिताइ ।

कालहि कर्महि ईस्वरहि मिथ्या दोस लगाइ ॥ ४३ ॥

एहि तन कर फल विषय न भाई । स्वर्गउ स्वल्प अंत दुखदाई ॥  
 नर तनु पाइ विषयँ मन देहीं । पलटि सुधा ते सठ विष लेहीं ॥  
 ताहि कबहुँ भल कहइ न कोई । गुंजा ग्रहइ परस मनि खोई ॥  
 आकर चारि लच्छू चौरासी । जोनि भ्रमत यह जिव अविनासी ॥  
 फिरत सदा माया कर प्रेरा । काल कर्म सुभाव गुन बेरा ॥  
 कबहुँक करि करुना नरदेही । देत ईस विनु हेतु सनेही ॥  
 नर तनु भव वारिधि कहूँ बेरो । सन्मुख मरुत अनुग्रह मेरो ॥  
 करनधार सदगुर दृढ़ नावा । दुर्लभ साज सुलभ करि पावा ॥

दो०—जो न तरै भव सागर नर समाज अस पाइ ।

सो कृत निंदक मंदमति आत्माहन गति जाइ ॥ ४४ ॥

जौं परलोक इहाँ सुख चहहू । सुनि मम वचन हृदयँ दृढ़ गहहू



मामवलोकय पंकज लोचन । कृपा बिलोकनि सोच विमोचन ।  
नील तामरस स्याम काम अरि । हृदय कंज मकरंद मधुप हरि ।  
जातुधान बरूथ बल भंजन । मुनि सजन रंजन अध गंजन ।  
भूसुर ससि नव वृंद बलाहक । असरन सरन दीन जन गाहक ।  
भुज बल विपुल भार महि खंडित । खर दूषन विराध बध पंडित ॥  
रावनारि सुखरूप भूपवर । जय दसरथ कुल कुमुद सुधाकर  
सुजस पुरान विदित निगमागम । गावत सुर मुनि संत समागम ॥  
कारुणीक व्यलीक मद खंडन । सत्र विधि कुसल कोसला मंडन ॥  
कलि मल मथन नाम ममताहन । तुलसिदास प्रभु पाहि प्रनत जन

दो०—प्रेम सहित मुनि नारद बरनि राम गुन ग्राम ।

सोभासिंधु हृदयँ धरि गए जहाँ विधि धाम ॥ ५१ ॥

गिरिजा सुनहु बिसद यह कथा । मैं सत्र कही मोरि मति जथा ॥  
राम चरित सत कोटि अपारा । श्रुति सारदा न बरनै पारा ॥  
राम अनंत अनंत गुनानी । जन्म कर्म अनंत नामानी ॥  
जल सीकर महि रज गनि जाहीं । रघुपति चरित न बरनि सिराहीं ॥  
विमल कथा हरि पद दायनी । भगति होइ सुनि अनपायनी ॥  
उमा कहिउँ सत्र कथा सुहाई । जो भुसुंडि खगपतिहि सुनाई ॥  
कछुक राम गुन कहेउँ बखानी । अब का कहौं सो कहहु भवानी ॥  
सुनि सुभ कथा उमा हरषानी । बोली अति विनीत मृदु बानी ॥  
धन्य धन्य मैं धन्य पुरारी । सुनेउँ राम युन भव भय हारी ॥

दो०-तुम्हरी कृपाँ कृपायतन अब कृतकृत्य न सोह ।

जानेउँ राम प्रताप प्रभु चिदानंद संदेह ॥५२॥

नाथ तवानन ससि स्रवत कथा सुधा रघुवीर ।

श्रवन पुटन्हि मन पान करि नहिं अघात सतिश्रीर ॥५३॥

राम चरित जे सुनत अघाहीं । रस विसेष जाना तिन्ह नाहीं

जीवनमुक्त महामुनि जेऊ । हरि गुन सुनिहिं निरंतर तेऊ

भव सागर चह पार जो पावा । राम कथा ता कहैं दृढ़ नाथ

विषइन्ह कहैं पुनि हरि गुन ग्रामा । श्रवन सुखद अरु मन अभि

श्रवनवंत अस को जग माहीं । जाहिन रघुपति चरित सोहाई

ते जड़ जीव निजात्मक घाती । जिन्हहि न रघुपति कथा सोहा

हरिचरित्रमानस तुम्ह गावा । सुनि मैं नाथ अमिति सुख पा

तुम्ह जो कही यह कथा सुहाई । कागभसुंड़ि गरुड़ प्रति गा

दो०-विरति ग्यान विग्यान दृढ़ राम चरन अति नेह ।

बायस तन रघुपति भगति मोहि परम संदेह ॥५४॥

नर सहस्र महुँ सुनहु पुरारी । कोउ एक होइ धर्म गतवा

धर्मसील कोटिक महुँ कोई । विषय विमुख विराग रत हो

कोटि विरक्त मध्य श्रुति कहई । सम्यक ग्यान सकृत् कोउ ल

ग्यानवंत कोटिक महुँ कोऊ । जीवनमुक्त सकृत् जग

तिन्ह सहस्र महुँ सत्र सुख खानी । दुर्लभ ब्रह्मलीन वि

सब ते सो दुर्लभ सुरराया । राम भगति रत गत मद माया ॥  
 सो हरिभगति काग किमि पाई । विस्वनाथ मोहि कहहु बुझाई ॥

दो०—राम परायन ग्यान रत गुनागार मति धीर ।

नाथ कहहु केहि कारन पायउ काक सरीर ॥ ५४ ॥

यह प्रभु चरित पवित्र सुहावा । कहहु कृपाल काग कहँ पावा ॥  
 तुम्ह केहि भाँति सुना मदनारी । कहहु मोहि अति कौतुक भारी  
 गरुड़ महाग्यानी गुन रासी । हरि सेवक अति निकट निवासी  
 तेहिं केहि हेतु काग सन जाई । सुनी कथा मुनि निकर बिहाई ॥  
 कहहु कवन विधि भा संवादा । दोउ हरिभगत काग उरगादा ॥  
 गौरि गिरा सुनि सरल सुहाई । बोले सिव सादर सुख पाई ॥  
 धन्य सती पावन मति तोरी । रघुपति चरन प्रीति नहिं थोरी ॥  
 सुनहु परम पुनीत इतिहासा । जो सुनि सकल लोक भ्रम नासा  
 उपजइ राम चरन विस्वासा । भवनिधि तर नर विनहिं प्रयासा  
 दो०—ऐसिअ प्रज्ञ विहंगपति कीन्हि काग सन जाइ ।

सो सब सादर कहिहउँ सुनहु उमा मन लाइ ॥ ५५ ॥

मैं जिमि कथा सुनी भव मोचनि । सो प्रसंग सुनु सुमुखि सुलोचनि  
 प्रथम दच्छ गृह तव अवतारा । सती नाम तव रहा तुम्हारा ॥  
 दच्छ जग्य तव भा अपमाना । तुम्ह अति क्रोध तजे तव प्राणा ॥  
 मम अनुचरन्ह कीन्ह मख भंगा । जानहु तुम्ह सो सकल प्रसंगा ॥  
 तव अति सोच भयउ मन मोरें । दुखी भयउँ वियोग प्रिय तोरें ॥

सुंदर बन गिरि सरित तड़ागा । कौतुक देखत फिरउँ बेरागा ॥  
गिरि सुमेर उत्तर दिसि दूरी । नील सैल एक सुंदर भूरी ॥  
तासु कनकमय सिखर सुहाए । चारि चारु मोरे मन भाए ॥  
तिन्ह पर एक एक ब्रिटप बिसाला । बट पीपर पाकरी रसाला ॥  
सैलोपरि सर सुंदर सोहा । मनि सोपान देखि मन मोहा ॥

दो०—सीतल अमल मधुर जल जलज बिपुल बहुरंग ।

कूजत कलरव हंस गन गुंजत मंजुल भृंग ॥ ५६ ॥

तेहिं गिरि रुचिर बसइ खग सोई । तासु नास कल्पांत न होई ॥  
माया कृत गुन दोष अनेका । मोह मनोज आदि अविवेका ॥  
रहे व्यापि समस्त जग माहीं । तेहि गिरि निकट कबहुँ नहिं जाई ॥  
तहँ बसि हरिहि भजइ जिमि कागा । सो सुनु उमा सहित अनुरागा ॥  
पीपर तरु तर ध्यान सो धरई । जाप जग्य पाकरि तर करई ॥  
आँव छाँह कर मानस पूजा । तजि हरि भजनु काजु नहिं दूजा ॥  
बर तर कह हरि कथा प्रसंगा । आवहिं सुनहिं अनेक बिहंगा ॥  
राम चरित बिचित्र विधि नाना । प्रेम सहित कर सादर गाना ॥  
सुनहिं सकल मति बिमल मराला । बसहिं निरंतर जे तेहिं काला ॥  
जब मैं जाइ सो कौतुक देखा । उर उपजा आनंद विशेषा ॥

दो०—तब कछु काल मराल तनु धरि तहँ कीन्ह निवास ।

सादर सुनि रघुपति गुन पुनि आयउँ कैलास ॥ ५७ ॥

गिरिजा कहेउँ सो सब इतिहासा । मैं जेहि समय गयउँ खग पासा ॥

अब सो कथा सुनहु जेहि हेतू । गयउ काग पहिं खग कुल केतू  
जब रघुनाथ कीन्हि रन क्रीड़ा । समुझत चरित होति मोहि ब्रीड़ा  
इंद्रजीत कर आपु बँधायो । तब नारद मुनि गरुड़ पठायो  
बंधन काटि गयो उरगादा । उपजा हृदयँ प्रचंड विपादा ॥  
प्रभु बंधन समुझत बहु भाँती । करत विचार उरग आराती ॥  
व्यापक ब्रह्म बिरज बागीसा । माया मोह पार परमीसा ॥  
सो अवतार सुनेउँ जग माहीं । देखेउँ सो प्रभाव कछु नाहीं ॥

दो०—भव बंधन ते छूटहिं नर जपि जा कर नाम ।

खर्व निसाचर बाँधेउ नागपास सोइ राम ॥ ५९ ॥  
नाना भाँति मनहि समुझावा । प्रगट न ग्यान हृदयँ भ्रम छावा  
खेद खिन्न मन तर्क बढ़ाई । भयउ मोहबस तुम्हरिहिं नाई ॥  
व्याकुल गयउ देवरिपि पाहीं । कहेसि जो संसय निज मन माहीं  
सुनि नारदहि लागि अति दाया । सुनु खग प्रबल राम कै माया ॥  
जो ग्यानिन्ह कर चित अपहरई । बरिआई विमोह मन करई ॥  
जेहिं बहु बार नचावा मोही । सोइ व्यापी विहंगपति तोही ॥  
महामोह उपजा उर तोरें । मिटिहि न बेगि कहें खग मोरें ॥  
चतुरानन पहिं जाहु खगेसा । सोइ करेहु जेहि होइ निदेसा ॥

दो०—अस कहि चले देवरिपि करत राम गुन गान ।

हरि माया बल बरनत पुनि पुनि परम सुजान ॥ ५९ ॥  
तब खगपति विरंचि पहिं गयऊ । निज संदेह सुनावत भयऊ ॥

नि विरंचि रामहि सिरु नावा । समुझि प्रताप प्रेम अति छावा ॥  
 न महुँ करइ विचार विधाता । माया बस कवि कोविद ग्याता ॥  
 रि माया कर अमिति प्रभावा । विपुल वार जेहिं मोहि नचावा ॥  
 भग जगमय जग मम उपराजा । नहिं आचरज मोह खगराजा ॥  
 त्र बोले विधि गिरा सुहाई । जान महेस राम प्रभुताई ॥  
 नैतेय संकर पहिं जाहू । तात अनत पूछहु जनि काहू ॥  
 हँ होइहि तब संसय हानी । चलेउ विहंग सुनत विधि बानी ॥

दो०-परमातुर विहंगपति आयउ तब मो पास ।

जात रहेउँ कुवेर गृह रहिहु उमा कैलास ॥६०॥

हेहिं मम पद सादर सिरु नावा । पुनि आपन संदेह सुनावा ॥  
 पुनि ता करि बिनती मृदु बानी । प्रेम सहित मैं कहेउँ भवानी ॥  
 मिलेहु गरुड़ मारग महुँ मोही । कवन भाँति समुझावौं तोही ॥  
 तबहिं होइ सब संसय भंगा । जव बहु काल करिअ सतसंगा ॥  
 सुनिअ तहाँ हरि कथा सुहाई । नाना भाँति मुनिन्ह जो गाई ॥  
 जेहि महुँ आदि मध्य अवसाना । प्रभु प्रतिपाद्य राम भगवाना ॥  
 निज हरि कथा होत जहँ भाई । पठवउँ तहाँ सुनहु तुम्ह जाई ॥  
 जाइहि सुनत सकल संदेहा । राम चरन होइहि अति नेहा ॥

दो०-बिनु सतसंग न हरि कथा तेहि बिनु मोह न भाग ।

मोह गएँ बिनु राम पद होइ न दृढ़ अनुराग ॥६१॥

मिलहिं न रघुपति बिनु अनुरागा । किएँ जोग तप ग्यान विरागा ॥



उत्तर दिसि सुंदर गिरि नीला । तहँ रह काकभुसुंडि सुसीला ॥  
 राम भगति पथ परम प्रवीना । ग्यानी गुन गृह बहु कालीना ॥  
 राम कथा सो कहइ निरंतर । सादर सुनिहिं विविध विहंगवर ॥  
 जाइ सुनहु तहँ हरि गुन भूरी । होइहि मोह जनित दुख दूरी ॥  
 मैं जय तेहि सय कहा बुझाई । चलेउ हरषि मम पद सिरु नाई ॥  
 ताते उमा न मैं समुझावा । रघुपति कृपाँ मरसु मैं पावा ॥  
 होइहि कीन्ह कबहुँ अभिमाना । सो खोवै चह कृपानिधाना ॥  
 कछु तेहि ते पुनि मैं नहिं राखा । समुझइ खग खगही कै भाया ॥  
 उ माया बलवंत भवानी । जाहि न मोह कवन अस ग्यानी ॥

दो०—ग्यानी भगत सिरोमनि त्रिभुवनपति करं जान ।

ताहि मोह माया नर पावँर करहिं गुमान ॥६२(क)॥

भासपारायण. अट्टाईसवाँ विश्राम

सिव त्रिरंचि कहूँ मोहइ को है बपुरा आन ।

अस जियँ जानि भजहिं मुनि माया पति भगवान् ॥६२(ख)॥

गयउ गरुड़ जहँ बसइ भुसुंडा । मति अकुंठ हरि भगति अखंडा  
 देखि सैल प्रसन्न मन भयऊ । माया मोह सोच सय गयऊ ॥  
 करि तड़ाग मज्जन जलपाना । बट तर गयउ हृदयँ हरपाना ॥  
 वृद्ध वृद्ध विहंग तहँ आए । सुनै राम के चरित सुहाए ॥  
 कथा अरंभ करै सोइ चाहा । तेही समय गयउ खगनाहा ॥  
 आवत देखि सकल खगराजा । हरषेउ वायस सहित समाजा ॥

अति आदर खगपति कर कीन्हा । स्वागत पूछि सुआसन दीन्हा ॥  
करि पूजा समेत अनुरागा । मधुर वचन तव बोलेउ कागा ॥

दो०—नाथ कृतारथ भयउँ मैं तव दरसन खगराज ।

आयसु देहु सो करौं अब प्रभु आयहु केहि काज ॥६३(क)॥

सदा कृतारथ रूप तुम्ह कह मृदु वचन खगेस ।

जेहि कै अस्तुति सादर निज मुख कीन्हि महेस ॥६३(ख)॥

सुनहु तात जेहि कारन आयऊँ । सो सब भयउ दरस तव पायऊँ ॥

देखि परम पावन तव आश्रम । गयउ मोह संसय नाना भ्रम ॥

अब श्रीराम कथा अति पावनि । सदा सुखद दुख पुंज नसावनि ॥

सादर तात सुनावहु मोही । बार बार बिनवउँ प्रभु तोही ॥

सुनत गरुड़ कै गिरा बिनीता । सरल सुप्रेम सुखद सुपुनीता ॥

भयउ तासु मन परम उछाहा । लाग कहै रघुपति गुन गाहा ॥

प्रथमहिं अति अनुराग भवानी । रामचरित सर कहेसि बखानी ॥

पुनि नारद कर मोह अपारा । कहेसि बहुरि रावन अवतारा ॥

प्रभु अवतार कथा पुनि गाई । तब सिसुचरित कहेसि मन लाई ॥

दो०—बालचरित कहि बिबिधि बिधि मन महीं परम उछाह ।

रिषि आगवन कहेसि पुनि श्रीरघुवीर बिवाह ॥६४॥

बहुरि राम अभिषेक प्रसंगा । पुनि नृप वचन राज रस भंगा ॥

पुरवासिन्ह कर बिरह बिषादा । कहेसि राम लछिमन संवादा ॥

विपिन गवन केवट अनुरागा । सुरसरि उतरि निवास प्रयागा ॥

बालमीक प्रभु मिलन बखाना । चित्रकूट जिमि बसे भगवाना ॥  
 सचिवागवन नगर नृप भरना । भरतागवन प्रेम बहु बरना ॥  
 करि नृप क्रिया संग पुरवासी । भरत गए जहँ प्रभु सुख रासी ॥  
 पुनि रघुपति बहु विधि समुझाए । लै पादुका अवधपुर आए ॥  
 भरत रहनि सुरपति सुत करनी । प्रभु अरु अत्रि भेंट पुनि बरनी ॥  
 दो०—कहि विराध बध जेहि विधि देह तजी सरभंग ।

बरनि सुतीछन प्रीति पुनि प्रभु भगस्ति सतसंग ॥ ६५ ॥  
 कहि दंडक बन पावनताई । गीध मइत्री पुनि तेहिं गाई ॥  
 पुनि प्रभु पंचवटीं कृत बासा । भंजी सकल मुनिन्ह की त्रासा ॥  
 पुनि लल्लिमन उपदेस अनूपा । सूपनखा जिमि कीन्हि कुरूपा ॥  
 खर दूषन बध बहुरि बखाना । जिमि सब मरमु दसानन जाना ॥  
 दसकंधर मारीच बतकही । जेहि विधि भई सो सब तेहिं कही ॥  
 पुनि माया सीता कर हरना । श्रीरघुवीर विरह कछु बरना ॥  
 पुनि प्रभु गीध क्रिया जिमि कीन्हि । बधि कबंध सबरिहि गति दीन्हि ॥  
 बहुरि विरह बरनत रघुवीरा । जेहि विधि गए सरोवर तीरा ॥

दो०—प्रभु नारद संवाद कहि मास्ति मिलन प्रसंग ।

पुनि सुग्रीव मिताई बालि प्रान कर भंग ॥ ६६(क) ॥

कपिहि तिलक करि प्रभु कृत सैल प्रबरपन बास ।

बरनन वर्षा सरद अरु राम रोष कपि त्रास ॥ ६६(ख) ॥

जेहि विधि कपिपति कीस पठाए । सीता खोज सकल दिसि धाए ॥

बिबर प्रवेस कीन्ह जेहि भाँती । कपिन्ह बहोरि मिला संपाती ॥  
 सुनि सब कथा समीरकुमारा । नाघत भयउ पयोधि अपारा ॥  
 लंकाँ कपि प्रवेस जिमि कीन्हा । पुनि सीतहि धीरजु जिमि दीन्हा  
 बन उजारि रावनहि प्रबोधी । पुर दहि नाघेउ बहुरि पयोधी ॥  
 आए कपि सब जहँ रघुराई । वैदेही की कुसल सुनाई ॥  
 सेन समेति जथा रघुबीरा । उतरे जाइ बारिनिधि तीरा ॥  
 मिला विभीषन जेहि विधि आई । सागर निग्रह कथा सुनाई ॥

दो०—सेतु बाँधि कपि सेन जिमि उतरी सागर पार ।

गयउ बसीठी बीरबर जेहि विधि बालिकुमार ॥६७(क)॥

निसिचर कीस लराई बरनिसि विविधि प्रकार ।

कुंभकरन घननाद कर बल पौरुष संघार ॥६७(ख)॥

निसिचर निकर मरन विधि नाना । रघुपति रावन समर बखाना ॥  
 रावन बध मंदोदरि सोका । राज विभीषन देव असोका ॥  
 सीता रघुपति मिलन बहोरी । सुरन्ह कीन्हि अस्तुति कर जोरी  
 पुनि पुष्पक चढ़ि कपिन्ह समेता । अवध चले प्रभु कृपा निकेता ॥  
 जेहि विधि राम नगर निज आए । बायस बिसद चरित सब गाए ॥  
 कहेसि बहोरि राम अभिषेका । पुर बरनत नृपनीति अनेका ॥  
 कथा समस्त भुसुंड बखानी । जोमैं तुम्ह सन कही भवानी ॥  
 सुनि सब राम कथा खगनाहा । कहत बचन मन परम उछाहा ॥

सो०-गयउ मोर संदेह सुनेउँ सकल रघुपति चरित ।

भयउ राम पद नेह तव प्रसाद बायस तिलक ॥६८(क)॥

मोहि भयउ अति मोह प्रभु बंधन रन महुँ निरखि ।

चिदानंद संदोह राम विकल कारन कवन ॥६८(ख)॥

देखि चरित अति नर अनुसारी । भयउ हृदयँ मम संसय भारी ॥

सोइ भ्रम अव हित करि मै माना । कीन्ह अनुग्रह कृपानिधाना ॥

जो अति आतप व्याकुल होई । तर छाया सुख जानइ सोई ॥

जौ नहिँ होत मोह अति मोही । मिलतेउँ तात कवन विधि तोही ॥

सुनतेउँ किमि हरि कथा सुहाई । अति विचित्र बहु विधि तुम्ह गाई ॥

निगमागम पुरान मत एहा । कहहिँ सिद्ध मुनि नहिँ संदेहा ॥

संतविसुद्ध मिलहिँ परि तेही । चितवहिँ राम कृपा करि जेही ॥

राम कृपाँ तव दरसन भयऊ । तव प्रसाद सब संसय गयऊ ॥

दो०-सुनि विहंगपति बानी सहित विनय अनुराग ।

पुलक गात लोचन सजल मन हरपेउ अति काग ॥६९(क)॥

श्रोता सुमति सुसील सुचि कथा रसिक हरिदास ।

पाइ उमा अति गोप्यमपि सज्जन करहिँ प्रकास ॥६९(ख)॥

बोलेउ काकभसुंड बहोरी । नभगनाथ पर प्रीति न थोरी ॥

सब विधि नाथ पूज्य तुम्ह मेरे । कृपापात्र रघुनायक केरे ॥

तुम्हहिँ न संसय मोह न माया । मो पर नाथ कीन्हि तुम्ह दाया ॥

पठइ मोह मिस खगपति तोही । रघुपति दीन्हि बड़ाई मोही ॥

तुम्ह निज मोह कही खग साई । सो नहिं कछु आचरज गोसाई ॥  
नारद भव त्रिरंचि सनकादी । जे मुनिनायक आतमवादी ॥  
मोह न अंध कीन्ह केहि केही । को जग काम नचाव न जेही ॥  
तृष्णा केहि न कीन्ह बौराहा । केहि कर हृदय क्रोध नहिं दाहा ॥

दो०—ग्यानी तापस सूर कवि कोविद गुन आगार ।

केहि कै लोभ बिडंबना कीन्हि न एहिं संसार ॥७०(क)॥

श्री मद बक्र न कीन्हि केहि प्रभुता बधिर न काहि ।

मृगलोचनि के नैन सर को अस लाग न जाहि ॥७०(ख)॥

गुन कृत सन्यपात नहिं केही । कोउ न मान मद तजेउ निवेही ॥  
जोबन ज्वर केहि नहिं बलकावा । ममता केहि कर जस न नसावा ॥  
मच्छर काहि कलंक न लावा । काहि न सोक समीर डोलावा ॥  
चिंता साँपनि को नहिं खाया । को जग जाहि न व्यापी माया ॥  
कीट मनोरथ दारु सरीरा । जेहि न लाग धुन को अस धीरा ॥  
सुत बित लोक ईषना तीनी । केहि कै मति इन्ह कृत न मलीनी ॥  
यह सब माया कर परिवारा । प्रबल अमिति को बरनै पारा ॥  
सिव चतुरानन जाहि डेराहीं । अपर जीव केहि लेखे माहीं ॥

दो०—व्यापि रहेउ संसार महुँ माया कटक प्रचंड ।

सेनापति कामादि भट दंभ कपट पापंड ॥७१(क)॥

सो दासी रघुबीर कै समुझै मिथ्या सोपि ।

छूट न राम कृपा बिनु नाथ कहउँ पद रोपि ॥७१(ख)॥

जो माया सब जगहि नचावा । जासु चरित लखि काहुँ न पावा ॥  
 सोइ प्रभु भ्रू विलास खगराजा । नाच नटी इव सहित समाजा ॥  
 सोइ सच्चिदानंद घन रामा । अज विग्यान रूप बल धामा ॥  
 व्यापक व्याप्य अखंड अनंता । अखिल अमोघसक्ति भगवंता ॥  
 अगुन अदभ्र गिरा गोतीता । सबदरसी अनवद्य अजीता ॥  
 निर्मम निराकार निरमोहा । नित्य निरंजन सुख संदोहा ॥  
 प्रकृति पार प्रभु सब उर बासी । ब्रह्म निरीह बिरज अविनासी ॥  
 इहाँ मोह कर कारन नाहीं । रवि सन्मुख तम कबहुँ कि जाहीं ॥

०-भगत हेतु भगवान प्रभु राम धरेउ तनु भूप ।

किणु चरित पावन परम प्राकृत नर अनुरूप ॥७२(क)॥

जथा अनेक बेष धरि नृत्य करइ नट कोइ ।

सोइ सोइ भाव देखावइ आपुन होइ न सोइ ॥७२(ख)॥

प्रसि रघुपति लीला उरगारी । दनुज विमोहनि जन सुखकारी ॥  
 जे मति मलिन विषयवस कामी । प्रभु पर मोह धरहिं इमि स्वामी ॥  
 नयन दोष जा कहँ जत्र होई । पीत वरन ससि कहँ कह सोई ॥  
 जत्र जेहि दिसि भ्रम होइ खगेसा । सो कह पच्छिम उयउ दिनेसा ॥  
 नौकारूढ़ चलत जग देखा । अचल मोह वस आपुहि लेखा ॥  
 बालक भ्रमहिं न भ्रमहिं गृहादी । कहहिं परस्पर मिथ्यावादी ॥  
 हरि विपइक अस मोह विहंगा । सपनेहुँ नहिं अग्यान प्रसंगा ॥  
 मायावस मतिमंद अभागी । हृदयँ जमनिका बहुविधि लागी ॥

ते सठ हठ वस संसय करहीं । निज अग्यान राम पर धरहीं ।

दो०—काम क्रोध मद लोभ रत गृहासक्त दुखरूप ।

ते किमि जानहिं रघुपतिहि मूढ़ परे तम कूप ॥७३(क

निर्गुन रूप सुलभ अति सगुन जान नहिं कोइ ।

सुगम अगम नाना चरित सुनि मुनि मन भ्रम होइ ॥७३(ख

सुनु खगेस रघुपति प्रभुताई । कहउँ जथामति कथा सुहाई  
जेहि विधि मोह भयउ प्रभु मोही । सोउ सब कथा सुनावउँ तोही  
राम कृपा भाजन तुम्ह ताता । हरि गुन प्रीति मोहि सुखदाता  
ताते नहिं कछु तुम्हहि दुरावउँ । परम रहस्य मनोहर गावउँ  
सुनहु राम कर सहज सुभाऊ । जन अभिमान न राखहिं काऊ  
संसृत मूल सूलप्रद नाना । सकल सोक दायक अभिमाना  
ताते करहिं कृपानिधि दूरी । सेवक पर ममता अति भूरी  
जिमि सिसु तन ब्रन होइ गोसाई । मातु चिराव कठिन की नाई

दो०—जदपि प्रथम दुख पावइ रोवइ बाल अधीर ।

ब्याधि नास हित जननी गनति न सो सिसु पीर ॥७४(क

तिमि रघुपति निज दास कर हरहिं मान हित लागि ।

तुलसिदास ऐसे प्रभुहि कस न भजहु भ्रम त्यागि ॥७४(ख

राम कृपा आपनि जड़ताई । कहउँ खगेस सुनहु मन लाई  
जब जब राम मनुज तनु धरहीं । भक्त हेतु लीला बहु करहीं  
तब तब अवधपुरी मैं जाऊँ । बालचरित विलोकि हरषाऊँ



जन्म महोत्सव देखउँ जाई । बरप पाँच तहँ रहउँ लोभाई ॥  
 इष्टदेव मम बालक रामा । सोभा वपुष कोटि सत कामा ॥  
 निज प्रभु बदन निहारि निहारी । लोचन सुफल करउँ उरगारी ॥  
 लघु बायस वपु धरि हरि संगी । देखउँ बालचरित बहु रंगी ॥  
 दो०—लरिकाई जहँ जहँ फिरहिं तहँ तहँ संग उड़ाई ।

जूठनि परइ अजिर महँ सो उठाइ करि खाउँ ॥ ७५ (क)

एक बार अतिसय सब चरित किए रघुबीर ।

सुमिरत प्रभु लीला सोइ पुलकित भयउ सरीर ॥ ७५ (ख)

ह२ भसुंड सुनहु खगनायक । रामचरित सेवक सुखदायक ॥  
 नृपमंदिर सुंदर सब भाँती । खचित कनक मनि नाना जाती  
 बरनि न जाइ रुचिर अँगनाई । जहँ खेलहिं नित चारिउ भाई ॥  
 बालबिनोद करत रघुराई । विचरत अजिर जननि सुखदाई  
 मरकत मृदुल कलेवर स्यामा । अंग अंग प्रति छवि बहु कामा  
 नव राजीव अरुन मृदु चरना । पदज रुचिर नख ससि दुति हरना  
 ललित अंक कुलिसादिक चारी । नूपुर चारु मधुर रवकारी ॥  
 चारु पुरट मनि रचित बनाई । कटि किंकिनि कल मुखर सुहाई  
 दो०—रेखा त्रय सुंदर उदर नाभी रुचिर गँभीर ।

उर आयत भ्राजत त्रिविधि बाल विभूषन चीर ॥ ७६ ॥

अरुन पानि नख करज मनोहर । बाहु विसाल विभूषन सुंदर ॥  
 कंध बाल केहरि दर ग्रीवा । चारु चिबुक आनन छवि सीवा

कलवल वचन अधर अरुनारे । दुइ दुइ दसन विसद वर वारे ॥  
ललित कपोल मनोहर नासा । सकल सुखद ससि कर सम हासा ॥  
नील कंज लोचन भव मोचन । भ्राजत भाल तिलक गोरोचन  
विकट भृकुटि सम श्रवन सुहाए । कुंचित कच मेचक छवि छाए  
पीत झीनि झगुली तन सोही । किलकनि चितवनि भावति मोही  
रूप रासि नृप अजिर बिहारी । नाचहिं निज प्रतिविम्ब निहारी  
मोहि सन करहिं विविधि विधि क्रीड़ा । वरनत मोहि होति अति ब्रीड़ा  
किलकर्त मोहि धरन जव धावहिं । चलउँ भागि तव पूष देखावहिं

दो०—आवत निकट हँसहिं प्रभु भाजत रुदन कराहिं ।

जाउँ समीप गहन पद फिरि फिरि चितइ पराहिं ॥७७(क)॥

प्राकृत सिसु इव लीला देखि भयउ मोहि मोह ।

कवन चरित्र करत प्रभु चिदानंद संदोह ॥७७(ख)॥

एतना मन आनत खगराया । रघुपति प्रेरित व्यापी माया ॥  
सो माया न दुखद मोहि काहीं । आन जीव इव संसृत नाहीं ॥  
नाथ इहाँ कछु कारन आना । सुनहु सो सावधान हरिजाना ॥  
ग्यान अखंड एक सीतावर । माया वस्य जीव सचराचर ॥  
जौं सब कै रह ग्यान एकरस । ईस्वर जीवहि भेद कहहु कस ॥  
माया वस्य जीव अभिमानी । ईस वस्य माया गुनखानी ॥  
परवस जीव स्ववस भगवंता । जीव अनेक एक श्रीकंता ॥  
मुधा भेद जद्यपि कृत माया । विनु हरि जाइ न कोटि उपाया ॥

जन्म महोत्सव देखउँ जाई । बरप पाँच तहँ रहउँ लोभाई ॥  
 इष्टदेव मम बालक रामा । सोभा ब्रपुष कोटि सत कामा ॥  
 निज प्रभु वदन निहारि निहारी । लोचन सुफल करउँ उरगारी ॥  
 लघु बायस ब्रपु धरि हरि संगी । देखउँ बालचरित बहु रंगी ॥  
 दो०—लरिकाई जहँ जहँ फिरहिं तहँ तहँ संग उड़ाउँ ।

जूठनि परइ अजिर महँ सो उठाइ करि खाउँ ॥७५(क)

एक बार अतिसय सब चरित किणु रघुवीर ।

सुमिरत प्रभु लीला सोइ पुलकित भयउ सरीर ॥७५(ख)

कहइ भसुंड सुनहु खगनायक । रामचरित सेवक सुखदायक ॥  
 पमंदिर सुंदर सब भाँती । खचित कनक मनि नाना जाती  
 नरनि न जाइ रुचिर अँगनाई । जहँ खेलहिं नित चारिउ भाई ॥  
 बालबिनोद करत खुराई । विचरत अजिर जननि सुखदाई  
 मरकत मृदुल कलेवर स्यामा । अंग अंग प्रति छवि बहु कामा  
 नव राजीव अरुन मृदु चरना । पदज रुचिर नख ससि दुति हरना  
 ललित अंक कुलिसादिक चारी । नूपुर चारु मधुर रवकारी ॥  
 चारु पुरट मनि रचित बनाई । कटि किंकिनि कल मुखर सुहाई  
 दो०—रेखा त्रय सुंदर उदर नाभी रुचिर गँभीर ।

उर आयत भ्राजत विविधि बाल विभूषन चीर ॥ ७६ ॥

अरुन पानि नख करज मनोहर । बाहु विसाल विभूषन सुंदर ॥  
 कंध बाल केहरि दर ग्रीवा । चारु चिबुक आनन छवि सीवा

कलत्रल वचन अधर अरुनारे । दुइ दुइ दसन विसद वर वारे ॥  
ललित कपोल मनोहर नासा । सकल सुखद ससि कर सम हासा ॥  
नील कंज लोचन भव मोचन । भ्राजत भाल तिलक गोरोचन  
विकट भृकुटि सम श्रवन सुहाए । कुंचित कच मेचक छवि छाए  
पीत झीनि झगुली तन सोही । किलकनि चितवनि भावति मोही  
रूप रासि नृप अजिर बिहारी । नाचहिं निज प्रतिविंब निहारी  
मोहि सन करहिं विविधि विधि क्रीड़ा । वरनत मोहि होति अति व्रीडा  
किलकर्त मोहि धरन जब धावहिं । चलउँ भागि तब पूष देखावहिं

दो०—आवत निकट हँसहिं प्रभु भाजत रुदन कराहिं ।

जाउँ समीप गहन पद फिरि फिरि चितइ पराहिं ॥७७(क)॥

प्राकृत सिसु इव लीला देखि भयउ मोहि मोह ।

कवन चरित्र करत प्रभु चिदानंद संदोह ॥७७(ख)॥

एतना मन आनत खगराया । रघुपति प्रेरित व्यापी माया ॥  
सो माया न दुखद मोहि काहीं । आन जीव इव संसृत नाहीं ॥  
नाथ इहाँ कछु कारन आना । सुनहु सो सावधान हरिजाना ॥  
ग्यान अखंड एक सीतावर । माया बस्य जीव सचराचर ॥  
जौं सब कें रह ग्यान एकरस । ईस्वर जीवहि भेद कहहु क  
माया बस्य जीव अभिमानी । ईस बस्य माया गुनखा  
परबस जीव स्वयस भगवंता । जीव अनेक एक श्रीकंत  
मुधा भेद जद्यपि कृत माया । बिनु हरि जाइ न कोटि ३५।

दो०—रामचंद्र के भजन बिनु जो चह पद निर्बान ।

ग्यानवंत अपि सो नर पसु बिनु पूँछ बिषान ॥७८(क)॥

राकापति षोडस उअहिं तारागन समुदाइ ।

सकल गिरिन्ह दव लाइअ बिनु रबि राति न जाइ ॥७८(ख)॥

ऐसेहिं हरि बिनु भजन खगेसा । मिटइ न जीवन्ह केर कलेसा ॥

हरि सेवकहि न व्याप अविद्या । प्रभु प्रेरित व्यापइ तेहि बिद्या ॥

ताते नास न होइ दास कर । भेद भगति बाढ़इ बिहंगवर ॥

भ्रम तैं चकित राम मोहि देखा । बिहँसे सो सुनु चरित बिसेषा ॥

तेहि कौतुक कर मरमु न काहूँ । जाना अनुज न मातु-पिताहूँ ॥

जानु पानि धाए मोहि धरना । स्यामल गात अरुन कर चरना ॥

तब मैं भागि चलेउँ उरगारी । राम गहन कहँ भुजा पसारी ॥

जिमि जिमि दूरि उड़ाउँ अकासा । तहँ भुज हरि देखउँ निज पासा ॥

दो०—ब्रह्मलोक लागि गयउँ मैं चितयउँ पाछ उड़ात ।

जुग अंगुल कर बीच सब राम भुजहि मोहि तात ॥७९(क)॥

सप्तावरन भेद करि जहाँ लगें गति मोरि ।

गयउँ तहाँ प्रभु भुज निरखि व्याकुल भयउँ बहोरि ॥७९(ख)॥

मूदेउँ नयन त्रसित जब भयऊँ । पुनि चितवत कोसलपुर गयऊँ

मोहि विलोकि राम मुसुकाहीं । बिहँसत तुरत गयउँ मुख माहीं ॥

उदर माझ सुनु अंडज राया । देखेउँ बहु ब्रह्मांड निकाया ॥

अति विचित्र तहँ लोक अनेका । रचना अधिक एक ते एका ॥

कोटिन्ह चतुरानन गौरीसा । अगनित उडगन रवि रजनीसा  
अगनित लोकपाल जम काला । अगनित भूधर भूमि बिसाला ॥  
सागर सरि सर विपिन अपारा । नाना भाँति सृष्टि बिस्तारा ॥  
सुर मुनि सिद्ध नाग नर किंनर । चारि प्रकार जीव सचराचर ॥

दो०—जो नहिं देखे नहिं सुना जो मनहूँ न समाइ ।

सो सब अद्भुत देखेउँ बरनि कवनि विधि जाइ ॥८०(क)॥

एक एक ब्रह्मांड महुँ रहउँ बरष सत एक ।

एहि विधि देखत फिरउँ मैं अंड कटाह अनेक ॥८०(ख)॥

लोक लोक प्रति भिन्न विधाता । भिन्न विष्णु सिव मनु दिसिनाता  
नर गंधर्व भूत वेताला । किंनर निसिचर पसु खग व्याला  
देव दनुज गन नाना जाती । सकल जीव तहँ आनहि भाँती ॥  
महि सरि सागर सर गिरि नाना । सब प्रपंच तहँ आनइ आना ॥  
अंडकोस प्रति प्रति निज रूपा । देखेउँ जिनस अनेक अनूपा ॥  
अवधपुरी प्रति भुवन निनारी । सरजू भिन्न भिन्न नर नारी ॥  
दसरथ कौसल्या सुनु ताता । विविध रूप भरतादिक भ्राता ॥  
प्रति ब्रह्मांड राम अवतारा । देखेउँ बालबिनोद अपारा ॥

दो०—भिन्न भिन्न मैं दीख सबु अति विचित्र हरिजान ।

अमनित भुवन फिरेउँ प्रभु राम न देखेउँ आन ॥८१(क)॥

सोइ सिसुपन सोइ सोभा सोइ कृपाल रघुवीर ।

भुवन भुवन देखत फिरउँ प्रेरित मोह समीर ॥८१(ख)॥

भ्रमत मोहि ब्रह्मांड अनेका । बीते मनहुँ कल्प सत एका ॥  
 फिरत फिरत निज आश्रम आयउँ । तहँ पुनि रहि कछु काल गवाँयउँ  
 निज प्रभु जन्म अवध सुनि पायउँ । निर्भर प्रेम हरषि उठि धायउँ ॥  
 देखउँ जन्म महोत्सव जाई । जेहि विधि प्रथम कहा मैं गाई ॥  
 राम उदर देखेउँ जग नाना । देखत बनइ न जाइ बखाना ॥  
 तहँ पुनि देखेउँ राम सुजाना । माया पति कृपाल भगवाना ॥  
 करउँ विचार बहोरि बहोरी । मोह कलिल व्यापित मति मोरी ॥  
 उभय घरी महँ मैं सब देखा । भयउँ भ्रमित मन मोह विसेपा ॥  
 दो०—देखि कृपाल बिकल मोहि विहँसे तब रघुबीर ।

विहँसतहीं मुख बाहेर आयउँ सुनु मतिधीर ॥८२(क)॥

सोइ लरिकाई मो सन करन लगे पुनि राम ।

कोटि भाँति समुझावउँ मनु न लहइ विश्राम ॥८२(ख)॥

देखि चरित यह सो प्रभुताई । समुझत देह दसा विसराई ॥  
 धरनि परेउँ मुख आव न बाता । त्राहि त्राहि आरत जन त्राता ॥  
 प्रेमाकुल प्रभु मोहि विलोकी । निज माया प्रभुता तब रोकी ॥  
 कर सरोज प्रभु मम सिर धरेऊ । दीनदयाल सकल दुख हरेऊ ॥  
 कीन्ह राम मोहि विगत विमोहा । सेवक सुखद कृपा संदोहा ॥  
 प्रभुता प्रथम विचारि विचारी । मन महँ होइ हरष अति भारी ॥  
 भगत बछलता प्रभु कै देखी । उपजी मम उर प्रीति विसेपी ॥  
 सजल नयन पुलकित कर जोरी । कीन्हिउँ बहु विधि विनय बहोरी

दो०—सुनि सप्रेम मम बानी देखि दीन निज दास ।

बचन सुखद गंभीर मृदु बोले रमानिवास ॥८३(क)॥

काकभसुंढि मागु बर अति प्रसन्न मोहि जानि ।

अनिमादिक सिधि अपर रिधि मोच्छ सकल सुख खानि ॥८३(ख)॥

यान बिबेक विरति विग्याना । मुनि दुर्लभ गुन जे जग नाना ॥

आजु देउँ सब संसय नार्हीं । मागु जो तोहि भाव मन मारहीं ॥

मुनि प्रभु बचन अधिक अनुरागेउँ । मन अनुमान करन तब लागेउँ

प्रभु कह देन सकल सुख सही । भगति आपनी देन न कही ॥

भगति हीन गुन सब सुख ऐसे । लवन बिना बहु बिंजन जैसे ॥

भजन हीन सुख कवने काजा । अस विचारि बोलेउँ खगराजा ॥

जौ प्रभु होइ प्रसन्न बर देहू । मो पर करहु कृपा अरु नेहू ॥

मन भावत बर मागउँ स्वामी । तुम्ह उदार उर अंतरजामी ॥

दो०—अबिरल भगति बिसुद्ध तव श्रुति पुरान जो गाव ।

जेहि खोजत जोगीस मुनि प्रभु प्रसाद कोउ पाव ॥८४(क)॥

भगत कल्पतरु प्रनत हित कृपा सिंधु सुख धाम ।

सोइ निज भगति मोहि प्रभु देहु दया करि राम ॥८४(ख)॥

एवमस्तु कहि रघुकुलनायक । बोले बचन परम सुखदायक ॥

सुनु बायस तैं सहज सयाना । काहे न मागसि अस बरदाना ॥

सब सुख खानि भगति तैं मागी । नहिं जग कोउ तोहि सम बड़भागी

जो मुनि कोटि जतन नहिं लहहीं । जे जप जोग अनल तन लहहीं ॥



रीझेऊँ देखि तोरि चतुराई । मागेहु भगति मोहि अति भारी ॥  
 सुनु बिहंग प्रसाद अब मोरें । सब सुभ गुन बसिहहि उर तोरें ॥  
 भगति ग्यान विग्यान बिरागा । जोग चरित्र रहस्य विभार्गा ॥  
 जानव तैं सबही कर भेदा । मम प्रसाद नहि साधन खेदा ॥

दो०—माया संभव भ्रम सब अब न व्यापिहहि तोहि ।

जानेसु ब्रह्म अनादि अज अगुन गुनाकर मोहि ॥८५(क)॥

मोहि भगत प्रिय संतत अस बिचारि सुनु काग ।

कायँ वचन मन मम पद करेसु अचल अनुराग ॥८५(ख)॥

अब सुनु परम विमल मम बानी । सत्य सुगम निगमादि बखानी ॥  
 निज सिद्धांत सुनावउँ तोही । सुनु मन धरु सब तजि भजु मोही ॥  
 मूम माया संभव संसारा । जीव चराचर त्रिविधि प्रकारा ॥  
 सब मम प्रिय सब मम उपजाए । सब ते अधिक मनुज मोहि भाए ॥  
 तिन्ह महुँ द्विज द्विज महुँ श्रुतिधारी । तिन्ह महुँ निगम धरम अनुसारी ॥  
 तिन्ह महुँ प्रिय विरक्त पुनि ग्यानी । ग्यानिहु ते अति प्रिय विग्यानी ॥  
 तिन्ह ते पुनि मोहि प्रिय निज दासा । जेहि गति मोरि न दूसरि आसा ॥  
 पुनि पुनि सत्य कहउँ तोहि पाहीं । मोहि सेवक सम प्रिय कोउ नाहीं ॥  
 भगति हीन विरंचि किन होई । सब जीवहु सम प्रिय मोहि सोई ॥  
 भगतिवंत अति नीचउ प्राणी । मोहि प्रानप्रिय असि मम बानी ॥

दो०—सुचि सुसील सेवक सुमति प्रिय कहु काहि न लाग ।

श्रुति पुरान कह नीति असि सावधान सुनु काग ॥८६॥

एक पिता के विपुल कुमारा । होहिं पृथक् गुन सील अचारा ।  
 कोउ पंडित कोउ तापस ग्याता । कोउ धनवंत सूर कोउ दाता ॥  
 कोउ सर्वग्य धर्मरत कोई । सब पर पितहि प्रीति सम होई ॥  
 कोउ पितु भगत वचन मन कर्मा । सपनेहुँ जान न दूसर धर्मा ॥  
 सो सुत प्रिय पितु प्रान समाना । जद्यपि सो सब भौंति अयाना ॥  
 एहि त्रिधि जीव चराचर जेते । त्रिजग देव नर असुर समेते ॥  
 अखिल बिस्व यह मोर उपाया । सब पर मोहि बराबरि दाया ॥  
 तिन्ह महुँ जो परिहरि मद माया । भजै मोहि मन बच अरु काया ॥  
 दो०—पुरुष नपुंसक नारि वा जीव चराचर कोइ ।

सर्व भाव भज कपट तजि मोहि परग प्रिय सोइ ॥८७(क)॥

सो०—सत्य कहउँ खग तोहि सुचि सेवक मम प्रानप्रिय ।

अस बिचारि भजु मोहि परिहरि आस भरोस सब ॥८७(ख)॥

कबहुँ काल न व्यापिहि तोही । सुमिरेसु भजेसु निरंतर मोही ॥  
 प्रभु वचनामृत सुनि न अघाऊँ । तनु पुलकित मन अति हरषाऊँ ॥  
 सो सुख जानइ मन अरु काना । नहिं रसना पहिं जाइ बखाना ॥  
 प्रभु सोभा सुख जानहिं नयना । कहि किमि सकहिं तिन्हहि नहिं बयन ॥  
 बहु त्रिधि मोहि प्रबोधि सुख देई । लगे करन सिसु कौतुक तेई ॥  
 संजल नयन कछु मुख करि रूखा । चितइ मातु लागी अति भूखा ॥  
 देखि मातु आतुर उठि धाई । कहि मृदु वचन लिए उर लाई ॥  
 गोद राखि कराव पय पाना । रघुपति चरित ललित कर गाना ॥

सो०—जेहि सुख लागि पुरारि असुभ बेष कृत सिव सुखद ।

अवधपुरी नर नारि तेहि सुख महुँ संवत मगन ॥८८(क)॥

सोई सुख लवलेस जिन्ह बारक सपनेहुँ लहेउ ।

ते नहिं गनहिं खगेस ब्रह्मसुखहि सज्जन सुमति ॥८८(ख)॥

मैं पुनि अवध रहेउँ कछु काला । देखेउँ बालबिनोद रसाला ॥

राम प्रसाद भगति बर पायउँ । प्रभु पद बंदि निजाश्रम आयउँ

तब ते मोहि न व्यापी माया । जब ते रघुनायक अपनाया ॥

यह सब गुप्त चरित मैं गावा । हरि मायाँ जिमि मोहि नचावा

निज अनुभव अब कहउँ खगेसा । बिनु हरि भजन न जाहिं कलेसा

राम कृपा बिनु सुनु खगराई । जानि न जाइ राम प्रभुताई ॥

जानैं बिनु न होइ परतीती । बिनु परतीति होइ नहिं प्रीती ॥

। बिना नहिं भगति दिढ़ाई । जिमि खगपति जल कै चिकनाई

सो०—बिनु गुर होइ कि ग्यान ग्यान कि होइ बिराग बिनु ।

गावहिं बेद पुरान सुख कि लहिअ हरि भगति बिनु ॥८९(क)॥

कोउ बिश्राम कि पाव तात सहज संतोष बिनु ।

चलै कि जल बिनु नाव कोटि जतन पचि पचि मरिअ ॥८९(ख)॥

बिनु संतोष न काम नसाहीं । काम अच्छत सुख सपनेहुँ नाहीं ॥

राम भजन बिनु मिटहिं कि कामा । थल बिहीन तरु कबहुँ कि जामा

बिनु भिग्यान कि समता आवइ । कोउ अवकास कि नभ बिनु पावइ

भद्रा बिना धर्म नहिं होई । बिनु महिगंध कि पावइ कोई ॥

नु तप तेज कि कर बिस्तारा । जल बिनुरस कि होइ संसारा ॥  
 ल कि मिल बिनु बुध सेवकाई । जिमि बिनु तेज न रूप गोसाँई ॥  
 ज सुख बिनु मन होइ कि थीरा । परस कि होइ बिहीन समीरा ॥  
 वनिउ सिद्धि कि बिनु बिस्वासा । बिनु हरि भजन न भव भय नास  
 १०-बिनु बिस्वास भगति नहिं तेहि बिनु द्रवहिं न रामु ।

राम कृपा बिनु सपनेहुँ जीव न लह विश्रामु ॥९०(क)॥

१०-अस बिचारि मतिधीर तजि कुतर्क संसय सकल ।

भजहु राम रघुबीर करुनाकर सुंदर सुखद ॥९०(ख)॥

नेज मति सरिस नाथ मैं गाई । प्रभु प्रताप महिमा खगराई ॥

हेउँ न कछु करि जुगुति बिसेषी । यह सब मैं निज नयनन्हि देखी

हिमा नाम रूप गुन गाथा । सकल अमित अनंत रघुनाथा ॥

नेज निज मति मुनि हरि गुन गावहिं । निगम सेष सिव पार न पावहिं

हहि आदि खग मसक प्रजंता । नभ उड़ाहिं नहिं पावहिं अंता ॥

तमि रघुपति महिमा अवगाहा । तात कबहुँ कोउ पाव कि थाहा

रामु काम सत कोटि सुभग तन । दुर्गा कोटि अमित अरि मर्दन ॥

क्र कोटि सत सरिस बिलासा । नभ सत कोटि अमित अवकासा

१०-मरुत कोटि सत बिपुल बल रवि सत कोटि प्रकास ।

ससि सत कोटि सुसीतल समन सकल भव त्रास ॥९१(क)॥

काल कोटि सत सरिस अति दुस्तर दुर्ग दुरंत ।

धूमकेतु सत कोटि सम दुराधरष भगवंत ॥९१(ख)॥

प्रभु अगाध सत कोटि पताला । समन कोटि सत सरिस कराला  
 तीरथ अमित कोटि सम पावन । नाम अखिल अघ पूरा नसावन  
 हिमगिरि कोटि अचल खुबीरा । सिंधु कोटि सत सम गंभीरा ॥  
 कामधेनु सत कोटि समाना । सकल काम दायक भगवाना ॥  
 सारद कोटि अमित चतुराई । त्रिधिसत कोटि सृष्टि निपुनाई ॥  
 विष्णु कोटि सम पालन कर्ता । रुद्र कोटि सत सम संहर्ता ॥  
 धनद कोटि सत सम धनवाना । माया कोटि प्रपंच निधाना ॥  
 भार धरन सत कोटि अहीसा । निरवधि निरुपम प्रभु जगदीसा ॥

छं०—निरुपम न उपमा आन राम समान रामु निगम कहै ।  
 जिमि कोटि सत खद्योत सम रवि कहत अति लघुता लहै ॥  
 एहि भाँति निज निज मति बिलास मुनीस हरिहि बखानहीं ।  
 प्रभु भाव गाहक अति कृपाल सप्रेम सुनि सुख मानहीं ॥

दो०—रामु अमित गुन सागर थाह कि पावइ कोइ ।  
 संतन्ह सन जस किछु सुनेउँ तुम्हहि सुनायँ सोइ ॥९२(क)॥

सो०—भाव यस्य भगवान् सुख निधान करुना भवन ।  
 तजि ममता मद मान भजिअ सदा सीतारवन ॥९२(ख)॥  
 सुनि मुसुंडि के बचन सुहाए । हरषित खगपति पंख फुलाए ॥  
 नयन नीर मन अति हरषाना । श्रीरघुपति प्रताप उर आना ॥  
 पाछिल मोह समुझि पछिताना । ब्रह्म अनादि मनुज करि माना ॥  
 पुनि पुनि काग चरन सिरु नावा । जानि राम सम प्रेम बढ़ावा ॥

रविनु भव निधि तरङ्ग न कोई । जौं बिरंचि संकर सम होई ॥  
सय सर्प ग्रसेउ मोहि ताता । दुखद लहरि कुतर्क बहु ब्राता ॥  
व सरूप गारुड़ि रघुनायक । मोहि जिआयउ जन सुखदायक  
व प्रसाद मम मोह नसाना । राम रहस्य अनूपम जाना ॥

१०—ताहि प्रसंसि विविधि बिधि सीस नाइ कर जोरि ।

बचन बिनीत सप्रेम मृदु बोलेउ गरुड़ बहोरि ॥९३(क)॥

प्रभु अपने अबिवेक ते बूझउँ स्वामी तोहि ।

कृपासिंधु सादर कहहु जानि दास निज मोहि ॥९३(ख)॥

तुम्ह सर्वग्य तग्य तम पारा । सुमति सुसील सरल आचारा ॥

पान बिरति विग्यान निवासा । रघुनायक के तुम्ह प्रिय दासा ॥

गंरन कवन देह यह पाई । तात सकल मोहि कहहु बुझाई ॥

म चरित सर सुंदर स्वामी । पायहु कहाँ कहहु नभगामी ॥

नाथ सुना मैं अस सिव पाहीं । महा प्रलयहुँ नास तव नाहीं ॥

पुधा बचन नहीं ईस्वर कहई । सोउ मोरें मन संसय अहई ॥

मग जग जीव नाग नर देवा । नाथ सकल जगु काल कलेवा ॥

मंड कटाह अमित लय कारी । कालु सदा दुरतिक्रम भारी ॥

१०—तुम्हहि न ब्यापत काल अति कराल कारन कवन ।

मोहि सो कहहु कृपाल ग्यान प्रभाव कि जोग बल ॥९४(क)॥

१०—प्रभु तव आश्रम आएँ मोर मोह भ्रम भाग ।

कारन कवन सो नाथ सब कहहु सहित अनुराग ॥९४(ख)॥

ऋड़ गिरा सुनि हरषेउ कागा । बोलेउ उमा परम अनुरागा ॥  
 अन्य धन्य तव मति उरगारी । प्रसन्न तुम्हारि मोहि अति प्यारी ॥  
 सुनि तव प्रसन्न सप्रेम सुहाई । बहुत जनम कै सुधि मोहि आई ॥  
 सब निज कथा कहउँ मैं गाई । तात सुनहु सादर मन लाई ॥  
 जप तप मख सम दम व्रत दाना । विरति विवेक जोग विग्याना ॥  
 सब कर फल रघुपति पद प्रेमा । तेहि बिनु कोउ न पावइ छेमा ॥  
 एहि तन राम भगति मैं पाई । ताते मोहि ममता अधिकाई ॥  
 जेहि तैं कछु निज स्वारथ होई । तेहि पर ममता कर सब कोई ॥

सो०—पद्मगारि असि नीति श्रुति संमत सजन कहहिं ।

अति नीचहु सन प्रीति करिअ जानि निज परम हित ॥९५(क)॥

पाट कीट तैं होइ तेहि तैं पाटंबर रुचिर ।

कृमि पालइ सबु कोइ परम अपावन प्राण सम ॥९५(ख)॥

स्वारथ साँच जीव कहूँ एहा । मन क्रम वचन राम पद नेहा ॥  
 सोइ पावन सोइ सुभग सरीरा । जो तनु पाइ भजिअ रघुबीरा ॥  
 राम त्रिमुख लहि विधि सम देही । कबि कोविद न प्रसंसहिं तेही ॥  
 राम भगति एहि तन उर जामी । ताते मोहि परम प्रिय स्वामी ॥  
 तजउँ न तन निज इच्छा मरना । तन बिनु वेद भजन नहिं बरना ॥  
 प्रथम मोहँ मोहि बहुत विगोवा । राम त्रिमुख सुख कबहुँ न सोवा ॥  
 नाना जनम कर्म पुनि नाना । किए जोग जप तप मख दाना ॥  
 कवन जोनि जनमेउँ जहँ नाहीं । मैं खगेस भ्रमि भ्रमि जग माहीं ॥

देखेउँ करि सब करम गोसाईं । सुखी न भयउँ अबहिं की नाई ॥  
सुधि मोहि नाथ जन्म बहु केरी । सिव प्रसाद मति मोहूँ न घेरी ॥

दो०—प्रथम जन्म के चरित अब कहउँ सुनहु बिहगोस ।

सुनि प्रभु पद रति उपजइ जातें मिटहि कलेस ॥९६(क)॥

पूरुष कल्प एक प्रभु जुग कलिजुग मल मूल ।

नर अरु नारि अधर्म रत सकल निगम प्रतिकूल ॥९६(ख)॥

तेहिं कलिजुग कोसलपुर जाई । जन्मत भयउँ सूद्र तनु पाई ॥

सिव सेवक मन क्रम अरु बानी । आन देव निंदक अभिमानी ॥

धन मद मत्त परम बाचाला । उग्रबुद्धि उर दंभ विसाला ॥

जदपि रहेउँ रघुपति रजधानी । तदपिन कछु महिमा तब जानी ॥

अब जाना मैं अवध प्रभावा । निगमागम पुरान अस गावा ॥

कवनेहुँ जन्म अवध बस जोई । राम परायन सो परि होई ॥

अवध प्रभाव जान तब प्रानी । जब उर बसहिं रामु धनुपानी ॥

सो कलिकाल कठिन उरगारी । पाप परायन सब नर नारी ॥

दो०—कलि मल ग्रसे धर्म सब लुप्त भए सदग्रंथ ।

दंभिन्ह निज मति कल्पि करि प्रगट किए बहु पंथ ॥९७(क)॥

भए लोग सब मोहबस लोभ ग्रसे सुभ कर्म ।

सुनु हरिजान ग्यान निधि कहउँ कछुक कलिधर्म ॥९७(ख)॥

वरन धर्म नहिं आश्रम चारी । श्रुति विरोध रत सब नर नारी

दिज श्रुति बेचक भूप प्रजासन । कोउ नहिं मान निगम अनुसासन



मारग सोइ जा कहूँ जोइ भावा । पंडित सोइ जो गाल बजावा ॥  
 मिथ्यारंभ दंभ रत जोई । ता कहूँ संत कहइ सब कोई ॥  
 सोइ सयान जो परधन हारी । जो कर दंभ सो बड़ आचारी ॥  
 जो कह झूठ मसखरी जाना । कलिजुग सोइ गुनवंत बखाना  
 निराचार जो श्रुति पथ त्यागी । कलिजुग सोइ ग्यानी सो बिरागी  
 जाकें नख अरु जटा बिसाला । सोइ तापस प्रसिद्ध कलिकाला ॥

दो०—असुभ वेष भूषन धरें भच्छाभच्छ जे खाहिं ।

तेइ जोगी तेइ सिद्ध नर पूज्य ते कलिजुग माहिं ॥९८(क)॥

सो०—जे अपकारी चार तिन्ह कर गौरव मान्य तेइ ।

मन क्रम बचन लवार तेइ बकता कलिकाल महुँ ॥९८(ख)॥

नारि ब्रिस नर सकल गोसाईं । नाचहिं नट मर्कट की नाई ॥  
 सूद्र द्विजन्ह उपदेसहिं ग्याना । मेलि जनेऊ लेहिं कुदाना ॥  
 सब नर काम लोभ रत क्रोधी । देव विप्र श्रुति संत विरोधी ॥  
 गुन मंदिर सुंदर पति त्यागी । भजहिं नारि पर पुरुष अभागी  
 सौभागिनीं विभूषन हीना । विधवन्ह के सिंगार नवीना ॥  
 गुर सिष बधिर अंध का लेखा । एक न सुनइ एक नहिं देखा ॥  
 हरइ सिष्य धन सोक न हरई । सो गुर घोर नरक महुँ परई ॥  
 मातु पिता बालकन्हि बोलावहिं । उदर भरै सोइ धर्म सिखावहिं ॥

दो०—ब्रह्म ग्यान बिनु नारि नर कहहिं न दूसरि बात ।

कौढी लागि लोभ बस करहिं बिप्र गुर घात ॥९९(क)॥

बादहिं सूद्र द्विजन्ह सन हम तुम्ह ते कछु घाटि ।

जानइ ब्रह्म सो विप्रवर आँखि देखावहिं डाटि ॥९९(ख)॥

पर त्रिय लंपट कपट सगाने । मोह द्रोह ममता लपटाने ॥

तेइ अभेदवादी ग्यानी नर । देखा मै चरित्र कलिजुग कर ॥

आपु गए अरु तिन्हहू घालहिं । जे कहूँ सत मारग प्रतियालहिं ॥

कल्प कल्प भरि एक एक नरका । परहिं जे दूषहिं श्रुति करि तरका ॥

जे बरनाधम तेलि कुम्हारा । स्वपच किरात कोल कलवारा ॥

नारि मुई गृह संपति नासी । मूड़ मुड़ाइ होहिं संन्यासी ॥

ते विप्रन्ह सन आपु पुजावहिं । उभय लोक निज हाथ नसावहिं ॥

विप्र निरच्छर लोलुप कामी । निराचार सठ वृपली स्वामी ॥

सूद्र करहिं जप तप व्रत नाना । बैठि बरासन कहहिं पुराना ॥

सब नर कल्पित करहिं अचारा । जाइ न बरनि अनीति अपारा ॥

दो०—भए बरन संकर कलि भिन्नसेतु सब लोग ।

करहिं पाप पावहिं दुख भय रुज सोक वियोग ॥१००(क)॥

श्रुति संमत हरि भक्ति पथ संजुत विरति विवेक ।

तेहिं न चलहिं नर मोह बस कल्पहिं पंथ अनेक ॥१००(ख)॥

छं०—बहु दाम सँवारहिं धाम जती । विषया हरि लीन्हि न रहि विरती ॥

तपसी धनवंत दरिद्र गृही । कलि कौतुक तात न जात कही ॥

कुलवंति निकारहिं नारि सती । गृह आनहिं चेरि निवेरि गती ॥

सुत मानहिं मातु पिता तब लौं । अवलानन दीख नहीं जब लौं ॥

ससुरारि पिआरिलगी जब तैं । रिपुरूप कुटुंब भए तब तैं ॥  
 नृप पाप परायन धर्म नहीं । करि दंड बिडंब प्रजा नितहीं ॥  
 धनवंत कुलीन मलीन अपी । द्विजचिन्ह जनेउ उधार तपी ॥  
 नहिं मान पुरान न त्रैदहि जो । हरि सेवक संत सही कलि सो ॥  
 कबि वृंद उदार दुनी न सुनी । गुन दूषक द्रात न कोपि गुनी ॥  
 कलि बारहिं बार दुकाल परै । विनु अन्न दुखी सब लोग मरै ॥  
 दो०—सुनु खगेस कलि कपट हठ दंभ द्वेष पापंड ।

मान मोह मारादि मद व्यापि रहे ब्रह्मंड ॥१०१(क)॥

तामस धर्म करहिं नर जप तप ब्रत मख दान ।

देव न वरषहिं धरनीं बए न जामहिं धान ॥१०१(ख)॥

छं०—अबला कच भूषन भूरि छुधा । धनहीन दुखी ममता बहुधा  
 सुख चाहहिं मूढ़ न धर्म रता । मति थोरि कठोरि न कोमलता ॥१॥  
 नर पीड़ित रोग न भोग कहीं । अभिमान बिरोध अकारनहीं ॥  
 लघु जीवन संवतु पंच दसा । कलपांत न नास गुमानु असा ॥२॥  
 कलिकाल बिहाल किए मनुजा । नहिं मानत छौ अनुजा तनुजा ॥  
 नहिं तोष विचार न सीतलता । सब जाति कुजाति भए मगता ॥३॥  
 इरिषा परुषाच्छर लोलुपता । भरि पूरि रही समता बिगता ॥  
 सब लोग त्रियोग बिसोक हए । वरनाश्रम धर्म अचार गए ॥४॥  
 दम दान दया नहिं जानपनी । जड़ता परबंचनताति घनी ॥  
 तनु पोषक नारि नरा सगरे । परनिंदक जे जग सो बगरे ॥५॥

दो०-सुनु व्यालारि काल कलि मल अवगुन आगार ।

गुनउ बहुत कलिजुग कर बिनु प्रयास निस्तार ॥१०२(क)॥

कृतजुग त्रेताँ द्वापर पूजा मख अरु जोग ।

जो गति होइ सो कलि हरि नाम ते पावहिं लोग ॥१०२(ख)॥

कृतजुग सब जोगी विग्यानी । करि हरि ध्यान तरहिं भव प्रान

त्रेताँ विविध जग्य नर करहीं । प्रभुहि समर्पि कर्म भव तरहीं ।

द्वापर करि रघुपति पद पूजा । नर भव तरहिं उपाय न दूजा ।

कलिजुग केवल हरि गुन गाहा । गावत नर पावहिं भव थाहा ।

कलिजुग जोग न जग्य न ग्याना । एक अधार राम गुन गाना ।

सब भरोस तजि जो भज रामहि । प्रेम समेत गाव गुन ग्रामहि ।

सोइ भव तर कछु संसय नाही । नाम प्रताप प्रगट कलि माहीं ।

कलि कर एक पुनीत प्रतापा । मानस पुन्य होहिं नहिं पापा ।

दो०-कलिजुग सम जुग आन नहिं जौ नर कर बिस्वास ।

गाइ राम गुन गन बिमल भव तर बिनहिं प्रयास ॥१०३(क)॥

प्रगट चारि पद धर्म के कलि महुँ एक प्रधान ।

जेन केन बिधि दीन्हें दान करइ कल्याण ॥१०३(ख)॥

नित जुग धर्म होहिं सब केरे । हृदयँ राम माया के प्रेरे ।

सुद्ध सत्य समता विग्याना । कृत प्रभाव प्रसन्न मन जाना ।

सत्य बहुत रज कछु रति कर्मा । सब बिधि सुख त्रेता कर धर्मा ।

बहु रज स्वल्प सत्य कछु तामस । द्वापर धर्म हरष भय मानस ।

तामस बहुत रजोगुन योरा । कलि प्रभाव विरोध चहुँ ओरा ॥  
 बुध जुग धर्म जानि मन माहीं । तजि अधर्म रति धर्म कराहीं ॥  
 काल धर्म नहिं व्यापहिं ताही । रघुपति चरन प्रीति अति जाही ॥  
 नट कृत विकट कपट खगराया । नट सेव कहि न व्यापइ माया ॥

दो०—हरि माया कृत दोष गुन बिनु हरि भजन न जाहिं ।

भजिअ राम तजि काम सब अस विचारि मन माहिं ॥१०४(क)॥

तेहिं कलिकाल बरष बहु बसेउँ अवध बिहगेस ।

परेउ दुकाल विपति बस तब मैं गयउँ विदेस ॥१०४(ख)॥

गयउँ उजेनी सुनु उरगारी । दीन मलीन दरिद्र दुखारी ।

गएँ काल कछु संपति पाई । तहँ पुनि करउँ संभु सेवकाई ।

विप्र एक वैदिक सिव पूजा । करइ सदा तेहिं काजु न दूजा ।

परम साधु परमारथ बिंदक । संभु उपासक नहिं हरि निंदक ।

तेहि सेवउँ मैं कपट समेता । द्विज दयाल अति नीति निकेत

बाहिज नम्र देखि मोहि साई । विप्र पढ़ाव पुत्र की नाई

संभु मंत्र मोहि द्विजवर दीन्हा । सुभ उपदेस विविध विधि कीन्हा

जपउँ मंत्र सिव मंदिर जाई । हृदयँ दंभ अहमिति अधिकाई

दो०—मैं खल मल संकुल मति नीच जाति बस मोह ।

हरि जन द्विज देखें जरउँ करउँ बिष्णु कर द्रोह ॥१०५(क)

सो०—गुर नित मोहि प्रबोध दुखित देखि आचरन मम ।

मोहि उपजइ अति क्रोध वृंभिहि नीति कि भावई ॥१०५(ख)

एक बार गुर लीन्ह बोलाई । मोहि नीति बहु भाँति सिखाई ॥  
 सेव सेवा कर फल सुत सोई । अत्रिरल भगति राम पद होई ॥  
 रामहि भजहिं तात सिव धाता । नर पावँर कै केतिक वाता ॥  
 जासु चरन अज सिव अनुरागी । तासु द्रोहँ सुख चहसि अभागी ॥  
 हर कहँ हरि सेवक गुर कहेऊ । सुनि खगनाथ हृदय मम दहेऊ  
 अधम जाति मैं बिद्या पाएँ । भयउँ जथा अहि दूध पिआएँ ॥  
 मानी कुटिल कुभाग्य कुजाती । गुर कर द्रोह करउँ दिनु राती ॥  
 अति दयाल गुर स्वल्प न क्रोधा । पुनि पुनि मोहि सिखाव सुबोधा  
 जेहि ते नीच बड़ाई पावा । सो प्रथमहिं हति ताहि नसावा ॥  
 धूम अनल संभव सुनु भाई । तेहि बुझाव घन पदवी पाई ॥  
 रज मग परी निरादर रहई । सब कर पद प्रहार नित सहई ॥  
 मरुत उड़ाव प्रथम तेहि भरई । पुनि नृप नयन किरीटन्हि परई ॥  
 सुनु खगपति अस समुझि प्रसंगा । बुध नहिं करहिं अधम कर संग्गा ॥  
 कवि कोविद गावहिं असि नीती । खल सन कलह न भल नहिं प्रीती  
 उदासीन नित रहिअ गोसाई । खल परिहरिअ स्वान की नाई ॥  
 मैं खल हृदयँ कपट कुटिलाई । गुर हित कहइ न मोहि सोहाई ॥

दो०—एक बार हर मंदिर जपत रहेउँ सिव नाम ।

गुर आयउ अभिमान तें उठि नहिं कीन्ह प्रनाम ॥१०६(क)॥

सो दयाल नहिं कहेउ कहु उर न रोष लवलेस ।

अति अध गुर अपमानता सहि नहिं सके महेस ॥१०६(ख)॥

मंदिर माझ भई नभयानी । रे हतभाग्य अंग्य अभिमानी ॥  
 जद्यपि तव गुर कें नहिं क्रोधा । अति कृपाल चित सम्यक बोधा ॥  
 तदपि साप सठ दैहउँ तोही । नीति विरोध सोहाइ न मोही ॥  
 जौं नहिं दंड करौं खल तोरा । भ्रष्ट होइ श्रुतिमारग मोरा ॥  
 जे सठ गुर सन इरिषा करहीं । रौरव नरक कोटि जुग परहीं ॥  
 त्रिजग जोनि पुनि धरहिं सरीरा । अयुत जन्म भरि पावहिं पीरा ॥  
 बैठ रहेसि अजगर इव पापी । सर्प होहि खल मल मति व्यापी ॥  
 महा बिटप कोटर महुँ जाई । रहु अधमाधम अधगति पाई ॥

दो०-हाहाकार कीन्ह गुर दारुन सुनि सिव साप ।

कंपित मोहि विलोकि अति उर उपजा परिताप ॥ १०७(क) ॥

करि दंडवत सप्रेम द्विज सिव सन्मुख कर जोरि ।

बिनय करत गदगद स्वर समुझि घोर गति मोरि ॥ १०७(ख) ॥

नमामीशमीशान निर्वाणरूपं । विभुं व्यापकं ब्रह्म वेदस्वरूपं ॥  
 निजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं । चिदाकाशमाकाशवासं भजेऽहं ॥  
 निराकारमोंकारमूलं तुरीयं । गिरा ज्ञान गोतीतमीशं गिरीशं ॥  
 करालं महाकाल कालं कृपालं । गुणागार संसारपारं नतोऽहं ॥  
 तुषाराद्रि संकाश गौरं गभीरं । मनोभूत कोटि प्रभा श्री शरीरं ॥  
 स्फुरन्मौलि कल्लोलिनी चारु गंगा । लसद्भालबालेन्दु कंठे भुजंगा ॥  
 चलत्कुंडलं भ्रू सुनेत्रं विशालं । प्रसन्नाननं नीलकंठं दयालं ॥  
 मृगाध्रीशचर्माम्बरं मुण्डमालं । प्रियं शंकरं सर्वनाथं भजामि ॥

वडं प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशं । अखंडं अजं भानुकोटिप्रकाशं ॥  
 यः शूल निर्मूलनं शूलपाणिं । भजेऽहं भवानीपतिं भावगम्यं ॥  
 लातीत कल्याण कल्पान्तकारी । सदा सजनानन्ददाता पुरारी  
 दानन्दसन्दोह मोहापहारी । प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मथारी ॥  
 यावद् उमानाथ पादारविन्दं । भजंतीह लोके परे वा नराणां ॥  
 तावत्सुखं शान्ति सन्तापनाशं । प्रसीद प्रभो सर्वभूताधिवासं ॥  
 जानामि योगं जपं नैव पूजां । नतोऽहं सदा सर्वदा शंभु तुभ्यं ॥  
 रा जन्म दुःस्वौघ तातप्यमानं । प्रभो पाहि आपन्नमामीश शंभो  
 लोक-रुद्राष्टकमिदं प्रोक्तं विप्रेण हरतोषये ।

ये पठन्ति नरा भक्त्या तेषां शम्भुः प्रसीदति ॥ ९ ॥

१०-सुनि बिनती सर्वग्य सिव देखि बिप्र अनुरागु ।

पुनि मंदिर नभबानी भइ द्विजवर बर मारु ॥ १०८(क) ॥

जौं प्रसन्न प्रभु मो पर नाथ दीन परनेहु ।

निज पद भगति देइ प्रभु पुनि दूसर बर देहु ॥ १०८(ख) ॥

तव माया बस जीव जइ संतत फिरइ भुलान ।

तेहि पर क्रोध न करिअ प्रभु कृपा सिंधु भगवान ॥ १०८(ग) ॥

संकर दीनदयाल अब एहि पर होहु कृपाल ।

साप अनुग्रह होइ जेहिं नाथ थोरेहीं काल ॥ १०८(घ) ॥

एहि कर होइ परम कल्याणा । सोइ करहु अब कृपानिधाना ॥

बेप्रगिरा सुनि परहित सानी । एवमस्तु इति भइ नभबानी ॥



जदपि कीन्ह एहिं दारुन पापा । मैं पुनि दीन्हि कोप करि सापा ॥  
 तदपि तुम्हारि साधुता देखी । करिहउँ एहि पर कृपा विसेषी ॥  
 छमासील जे पर उपकारी । ते द्विज मोहि प्रिय जथा खरारी  
 मोर श्राप द्विज व्यर्थ न जाइहि । जन्म सहस अवस्य यह पाइहि ॥  
 जनमत मरत दुसह दुख होई । एहि स्वल्पउ नहिं व्यापिहि सोई  
 कवनेउँ जन्म मिटिहि नहिं ग्याना । सुनहि सूद्र मम बचन प्रवाना ॥  
 रघुपति पुरी जन्म तव भयऊ । पुनि तैं मम सेवौं मन दयऊ ॥  
 पुरी प्रभाव अनुग्रह मोरें । राम भगति उपजिहि उर तोरें ॥  
 सुनु मम बचन सत्य अब भाई । हरितोषन व्रत द्विज सेवकाई ॥  
 अब जनि करहि विप्र अपमाना । जानेसु संत अनंत समाना ॥  
 इंद्र कुलिस मम सूल बिसाला । कालदंड हरि चक्र कराला ॥  
 जो इन्हें कर मारा नहिं मरई । विप्रद्रोह पावक सो जरई ॥  
 अस त्रिवेक राखेहु मन माहीं । तुम्ह कहैं जग दुर्लभ कछु नाहीं ॥  
 औरउ एक आसिषा मोरी । अप्रतिहत गति होइहि तोरी ॥

दो०—सुनि सिव बचन हरपि गुर एवमस्तु इति भाषि ।

मोहि प्रयोधि गयउ गृह संमु चरन उर राखि ॥१०९(क)॥

प्रेरित काल बिंधिगिरि जाइ भयउँ मैं व्याल ।

पुनि प्रयास बिनु सो तनु तजेउँ गएँ कछु काल ॥१०९(ख)॥

जोइ तनु धरउँ तजउँ पुनि अनायास हरिजान ।

जिमि नूतन पट पहिरइ नर परिहरइ पुरान ॥१०९(ग)॥

सिखँ राखी श्रुति नीति अरु मैं नहिं पावा क्लेश ।

एहि विधि धरेउँ विविधि तनु ग्यान न गयउ खगेस ॥ १०९ (घ)

त्रिजग देव नर जोइ तनु धरऊँ । तहँ तहँ राम भजन अनुसरऊँ ॥  
 एकं सूल मोहि बिसर न काऊ । गुर कर क्रोमल सील सुभाऊ ॥  
 चरम देह द्विज कै मैं पाई । सुर दुर्लभ पुरान श्रुति गाई ॥  
 खेलउँ तहूँ बालकन्ह मीला । करउँ सकल रघुनायक लीला ॥  
 प्रौढ़ भएँ मोहि पिता पढ़ावा । समझउँ सुनउँ गुनउँ नहिं भावा ॥  
 मन ते सकल बासना भागी । केवल राम चरन लय लागी ॥  
 कहु खगेस अस कवन अभागी । खरी सेव सुरधेनुहि त्यागी ॥  
 प्रेम मगन मोहि कछु न सोहाई । हारेउ पिता पढ़ाइ पढ़ाई ॥  
 भएँ कालबस जब पितु माता । मैं बन गयउँ भजन जननाता ॥  
 जहँ जहँ बिपिन मुनीस्वर पावउँ । आश्रम जाइ जाइ सिरु नावउँ ॥  
 बूझउँ तिन्हहि राम गुन गाहा । कहहिं सुनउँ हरपित खगनाहा ॥  
 सुनत फिरउँ हरि गुन अनुवादा । अब्याहत गति संभु प्रसादा ॥  
 छूटी त्रिविधि ईषना गाढ़ी । एक लालसा उर अति बाढ़ी ॥  
 राम चरन बारिज जब देखौं । तब निज जन्म सफल करि लेखौं ॥  
 जेहि पूँछउँ सोइ मुनि अस कहई । ईस्वर सर्व भूतमय अहई ॥  
 निर्गुन मत नहिं मोहि सोहाई । सगुन ब्रह्म रति उर अधिकाई ॥

दो०—गुर के बचन सुरति करि राम चरन मनु ला

रघुपति जस गावत फिरउँ छन छन नव अनुरा

मेरुसिखर बट छायाँ मुनि लोमस आसीन ।

देखि चरन सिरु नायउँ बचन कहेउँ अति दीन ॥११०(ख)॥

मुनि मम बचन बिनीत मृदु मुनि कृपाल खगराज ।

मोहि सादर पूँछत भए द्विज आयहु केहि काज ॥११०(ग)॥

तब मैं कहा कृपानिधि तुम्ह सर्वग्य सुजान ।

सगुन ब्रह्म अवराधन मोहि कहहु भगवान ॥११०(घ)॥

तब मुनीस रघुपति गुन गाथा । कहे कछुक सादर खगनाथा ॥

ब्रह्मग्यान रत मुनि त्रिग्यानी । मोहि परम अधिकारी जानी ॥

लागे करन ब्रह्म उपदेसा । अज अद्वैत अगुन हृदयेसा ॥

अकल अनीह अनाम अरूपा । अनुभव गम्य अखंड अनूपा ॥

मन गोतीत अमल अविनासी । निर्विकार निरवधि सुख रासी ॥

सो तैं ताहि तोहि नहिं भेदा । बारि बीचि इव गावहिं बेदा ॥

बिबिधि भाँति मोहि मुनि समुझावा । निर्गुन मत मम हृदयँ न आवा

पुनि मैं कहेउँ नाइ पद सीसा । सगुन उपासन कहहु मुनीसा ॥

राम भगति जल मम मन मीना । किमि बिलगाइ मुनीस प्रवीना ॥

सोइ उपदेस कहहु करि दाया । निज नयनन्हि देखौं रघुराया ॥

भरिलोचन बिलोकि अवधेसा । तब मुनिहउँ निर्गुन उपदेसा ॥

मुनि पुनि कहि हरिकथा अनूपा । खंडि सगुन मत अगुन निरूपा

तब मैं निर्गुन मत कर दूरी । सगुन निरूपउँ करि हठ भूरी ॥

उत्तर प्रतिउत्तर मैं कीन्हा । मुनि तन भए क्रोध के चीन्हा ॥

सुनु प्रभु बहुत अवग्या किएँ । उपज क्रोध ग्यानिन्ह के हिएँ ॥  
अति संघरषन जाँ कर कोई । अनल प्रगट चंदन ते होई ॥

दो०—बारंबार सकोप मुनि करइ निरूपन ग्यान ।

मैं अपने मन बैठ तब करउँ बिबिधि अनुमान ॥१११(क)॥

क्रोध कि द्वैतबुद्धि बिनु द्वैत कि बिनु अग्यान ।

मायाबस परिछिन्न जड़ जीव कि ईस समान ॥१११(ख)॥

कबहुँ कि दुख सब कर हित ताकै । तेहि कि दरिद्र परस मनि जाकै  
परद्रोही की होहि निसंका । कामी पुनि कि रहहि अकलंका ॥  
बंस कि रह द्विज अनहित कीन्हें । कर्म कि होहि खलपहि चीन्हें ॥  
काहू सुमति कि खल सँग जामी । सुभ गति पाव कि परत्रिय गामि  
भव कि परहि परमात्मा विंदक । सुखी कि होहि कबहुँ हरिनिंदक  
राजु कि रहइ नीति बिनु जानै । अध कि रहहि हरिचरित बखानै  
पावन जस कि पुन्य बिनु होई । बिनु अव अजस कि पावइ कोई  
लाभु कि किछु हरि भगति समाना । जेहि गावहि श्रुति संत दुगना ॥  
हानि कि जग एहि सम किछु भाई । भजिअ न रामहि नर तनु पाई  
अध कि पिसुनता सम कछु आना । धर्म कि दया सरिस हिनाना ॥  
एहि विधि अमिति जुगुति मन गुनऊँ । मुनि उपदेश न मानु मुनऊँ  
पुनि पुनि सगुन पच्छ मैं रोपा । तब मुनि बोलेउ बचन सुकोपा ॥  
मूढ़ परम सिख देऊँ न मानसि । उत्तर प्रतिउत्तर बहु जानसि ॥  
सत्य बचन बिस्वास न करही । वायस इय स्वही ते इन्हें ॥

सठ स्वपच्छ तव हृदयँ बिसाला । सपदि होहि पच्छी चंडाला ॥  
लीन्ह श्राप मैं सीस चढ़ाई । नहिं कछु भय न दीनता आई ॥

दो०—तुरत भयउँ मैं काग तब पुनि मुनि पद सिरु नाइ ।

सुमिरि राम रघुवंस मनि हरषित चलेउँ उड़ाइ ॥११२(क)॥

उसा जे राम चरन रत बिगत काम मद क्रोध ।

निज प्रभुमय देखहिं जगत केहि सन करहिं बिरोध ॥११२(ख)॥

सुनु खगेस नहिं कछु रिषि दूषन । उर प्रेरक रघुवंसबिभूषन ॥  
कृपासिंधु मुनि मति करि भोरी । लीन्ही प्रेम परिच्छा मोरी ॥  
मन बच क्रम मोहि निज जन जाना । मुनि मति पुनि फेरी भगवाना  
रिषि मम महत सीलता देखी । राम चरन बिस्वास बिसेषी ॥  
अति बिसमय पुनि पुनि पछिताई । सादर मुनि मोहि लीन्ह बोलाई  
मम परितोष बिबिधि बिधि कीन्हा । हरषित राममंत्र तब दीन्हा ॥  
बालकरूप राम कर ध्याना । कहेउ मोहि मुनि कृपानिधाना ॥  
सुंदर सुखद मोहि अति भावा । सो प्रथमहिं मैं तुम्हहि सुनावा ॥  
मुनि मोहि कछुक काल तहँ राखा । रामचरितमानस तब भाषा ॥  
सादर मोहि यह कथा सुनाई । पुनि बोले मुनि गिरा सुहाई ॥  
रामचरित सर गुप्त सुहावा । संभु प्रसाद तात मैं पावा ॥  
तोहि निज भगत राम कर जानी । ताते मैं सब कहेउँ बखानी ॥  
राम भगति जिन्ह कैं उर नाहीं । कबहुँ न तात कहिअ तिन्ह पाहीं  
मुनि मोहि बिबिधि भाँति समुझावा । मैं सप्रेम मुनि पद सिरु नावा ॥

निज कर कमल परति मन सीत । हरषित आसिष दीन्ह सुनीति ॥  
राम भगति अदिरल उर तेरे । बलिहि सदा प्रसाद अब नोरे ॥

दो०—सदा राम प्रिय होहु तुन्ह सुन गुन भवन अनाम ।

कामरूप इच्छानरन ग्यान विराग निवान ॥११३(क)॥

जेहिं आश्रम तुन्ह बसव पुनि सुनिरत श्रीभगवंत ।

व्यापिहि तहै न अविद्या जोजन एक प्रजंत ॥११३(ख)॥

काल कर्म गुन दोष सुमाज । कहु दुख तुन्हहि न व्यापिहि काज  
राम रहस्य ललित विधि नाना । गुप्त प्रगट इतिहास पुराना ॥  
बिनु श्रम तुन्ह जानव सय सोऊ । नित नव नेह राम पद होऊ ॥  
जो इच्छा करिहहु मन माहीं । हरि प्रसाद कहु दुर्लभ नाहीं ॥  
सुनि मुनि आसिष सुनु मतिधीरा । ब्रह्मगिरा भइ गगन गँभीरा ॥  
एवमस्तु तव वच मुनि ग्यानी । यह मम भगत कर्म मन बानी ॥  
सुनि नभगिरा हरष मोहि भयऊ । प्रेम मगन सब संसय गयऊ ॥  
करि बिनती मुनि आयसु पाई । पद सरोज पुनि पुनि चिर नाई ॥  
हरष सहित एहिं आश्रम आयउँ । प्रभु प्रसाद दुर्लभ वर पावउँ ॥  
इहाँ बसत मोहि सुनु खग ईसा । बीते कल्प सात अर बीसा ॥  
करउँ सदा रघुपति गुन गाना । सादर सुनहिं बिहंग सुजाना ॥  
जब जब अवधपुरीं रघुवीरा । धरहिं भगत हित मनुज सरीरा ॥  
तब तब जाइ राम पुर रहऊँ । सिसुलीला बिलोकि सुख लहऊँ ॥  
पुनि उर राखि राम सिसुरूपा । निज आश्रम आवउँ खगभूपा ॥  
कया सकल मैं तुम्हहि सुनाई । काग देह जेहिं कारन पाई ॥  
कहिउँ तात सब प्रसन्न तुम्हारी । राम भगति महिमा अति भारी ॥

दो०—ताते यह तन मोहि प्रिय भयउ राम पद नेह ।

निज प्रभु दरसन पायउँ गए सकल संदेह ॥११४(क)॥

### मासपारायण, उन्तीसवाँ विश्राम

भगति पच्छ हठ करि रहेउँ दोन्हि महारिपि साप ।

मुनि दुर्लभ वर पायउँ देखहु भजन प्रताप ॥११४(ख)॥

जे असि भगति जानि परिहरहीं । केवल ग्यान हेतु श्रम करहीं ॥  
 ते जड़ कामधेनु गृहँ त्यागी । खोजत आकु फिरीहँ पय लागी ॥  
 सुनु खगेस हरि भगति बिहाई । जे सुख चाहहिं आन उपाई ॥  
 ते सठ महासिंधु बिनु तरनी । पैरि पार चाहहिं जड़ करनी ॥  
 मुनि भसुंडि के वचन भवानी । बोलेउ गरुड़ हरषि मृदु बानी ॥  
 तव प्रसाद प्रभु मम उर माहीं । संसय सोक मोह भ्रम नाहीं ॥  
 सुनेउँ पुनीत राम गुन ग्रामा । तुम्हरी कृपाँ लहेउँ विश्रामा ॥  
 एक बात प्रभु पूँछउँ तोही । कहहु बुझाइ कृपानिधि मोही ॥  
 कहहिं संत मुनि वेद पुराना । नहिं कछु दुर्लभ ग्यान समाना ॥  
 सोइ मुनि तुम्ह सन कहेउ गोसाई । नहिं आदरेहु भगति की नाई ॥  
 ग्यानहि भगतिहि अंतर केता । सकल कहहु प्रभु कृपा निकेता ॥  
 सुनि उरगारि बचन सुख माना । सादर बोलेउ काग सुजाना ॥  
 भगतिहि ग्यानहि नहिं कछु भेदा । उभय हरहिं भव संभव खेदा ।  
 नाथ मुनीस कहहिं कछु अंतर । सावधान सोउ सुनु बिहंगवर ।  
 ग्यान विराग जोग विग्याना । ए सत्र पुरुष सुनहु हरिजाना ।





जड़ चेतनहि ग्रंथि परि गई । जदपि मृषा छूटत कठिनई ॥  
 तब ते जीव भयउ संसारी । छूटन ग्रंथि न होइ सुखारी ॥  
 श्रुति पुरान बहु कहेउ उपाई । छूटन अधिक अधिक अरुझाई  
 जीव हृदयँ तम मोह विसेषी । ग्रंथि छूट किमि परइ न देखी ॥  
 अस संजोग ईसु जब करई । तबहुँ कदाचित सो निरुअरई  
 सात्विक श्रद्धा धेनु सुहाई । जौ हरि कृपाँ हृदयँ बस आई ॥  
 जप तप व्रत जम नियम अपारा । जे श्रुति कह सुभ धर्म अचारा ॥  
 तेइ तून हरित चरै जब गाई । भाव बच्छ सिसु पाइ पेन्हाई ॥  
 नोइ निवृत्ति पात्र बिस्वासा । निर्मल मन अहीर निज दासा ॥  
 परम धर्ममय पय दुहि भाई । अवटै अनल अकाम बनाई ॥  
 तोष मरुत तब छमाँ जुड़ावै । धृति सम जायनु देइ जमावै ॥  
 मुदिताँ मयै विचार मथानी । दम आधार रजु सत्य सुबानी ॥  
 तब मयि काढ़ि लेइ नवनीता । विमल विराग सुभग सुपुनीता  
 दो०—जोग अगिनि करि प्रगट तब कर्म सुभासुभ लाइ ।

बुद्धि सिरावै ग्यान घृत ममता मल जरि जाइ ॥११७(क)॥

तब विग्यानरूपिनी बुद्धि बिसद घृत पाइ ।

चित्त दिआ भरि धरै दृढ़ समता दिअटि बनाइ ॥११७(ख)॥

तीनि अवस्थाँ तीनि गुन तेहि कपास तँ काढ़ि ।

तूल तुरीय सँवारि पुनि बाती करै सुगाढ़ि ॥११७(ग)॥

सो०—एहि बिधि लेसै दीप तेज रासि बिग्यानमय ।

जातहिं जासु समीप जरहिं मदादिक सलभ सब ॥११७(घ)॥

सोहमस्मि इति वृत्ति अखंडा । दीपसिखा सोइ परम प्रचंडा ॥  
 आतम अनुभव सुख सुप्रकासा । तब भव मूल भेद भ्रम नासा ॥  
 प्रबल अविद्या कर परिवारा । मोह आदि तम मिटइ अपारा ॥  
 तब सोइ बुद्धि पाइ उँजिआरा । उर गृहँ बैठि ग्रंथि निरुआरा ॥  
 छोरन ग्रंथि पाव जौं सोई । तब यह जीव कृतारथ होई ॥  
 छोरत ग्रंथि जानि खगराया । बिघ्न अनेक करइ तब माया ॥  
 रिद्धि सिद्धि प्रेरइ बहु भाई । बुद्धिहि लोभ दिखावहिं आई ॥  
 कल बल छल करि जाहिं समीपा । अंचल बात बुझावहिं दीपा ॥  
 होइ बुद्धि जौं परम सयानी । तिन्ह तन चितव न अनहित जान ॥  
 जौं तेहि बिघ्न बुद्धि नहिं बाधी । तौ बहोरि सुर करहिं उपाधी ।  
 इंद्री द्वार झरोखा नाना । तहँ-तहँ सुर बैठे करि थाना ।  
 आवत देखहिं बिषय बयारी । ते हठि देहिं कपाट उघारी ।  
 जब सो प्रभंजन उर गृहँ जाई । तबहिं दीप बिग्यान बुझाई ।  
 ग्रंथि न छूटि मिटा सो प्रकासा । बुद्धि विकल भइ बिषय ब्रतास ॥  
 इंद्रिन्ह सुरन्ह न ग्यान सोहाई । बिषय भोग पर प्रीति सदाई ।  
 बिषय समीर बुद्धि कृत भोरी । तेहि बिधि दीप को बार बहोर

दो०—तब फिरि जीव बिबिधि बिधि पावइ संसृति क्लेस ।

हरि माया अति दुस्तर तरि न जाइ बिहगेस ॥११८(क)

कहत कठिन समुझत कठिन साधत कठिन बिबेक ।

होइ घुनाच्छर न्याय जौ पुनि प्रत्यूह अनेक ॥११८(ख)॥

ग्यान पंथ कृपान कै धारा । परत खगेस होइ नहिं बारा ॥

जो निर्विघ्न पंथ निर्बहई । सो कैवल्य परम पद लहई ॥

अति दुर्लभ कैवल्य परम पद । संत पुरान निगम आगम बद ॥

राम भजत सोइ मुकुति गोसाई । अनइच्छित आवइ बरिआई ॥

जिमि थल बिनु जल रहि न सकाई । कोटि भाँति कोउ करै उपाई ॥

तथा मोच्छ सुख सुनु खगराई । रहि न सकइ हरि भगति बिहाई

अस विचारि हरि भगत सयाने । मुक्ति निरादर भगति लुभाने

भगति करत बिनु जतन प्रयासा । संसृति मूल अविद्या नासा ॥

भोजन करिअ तृपिति हित लागी । जिमि सो असन पचवै जठरागी

असि हरिभगति सुगम सुखदाई । को अस मूढ़ न ज़ाहि सोहाई ॥

दो०—सेवक सेव्य भाव बिनु भव न तरिअ उरगारि ।

भजहु राम पद पंकज अस सिद्धांत बिचारि ॥११९(क)॥

जौ चेतन कहँ जइ करइ जइहि करइ चैतन्य ।

अस समर्थ रघुनायकहि भजहिं जीव ते धन्य ॥११९(ख)॥

कहेउ ग्यान सिद्धांत बुझाई । सुनहु भगति मनि कै प्रभुताई ॥

राम भगति चिंतामनि सुंदर । बसइ गरुड़ जाके उर अंतर ॥

परम प्रकास रूप दिन राती । नहिं कछु चहिअ दिआ धृत बाती

मोह दरिद्र निकट नहिं आवा । लोभ बात नहिं ताहि बुझावा ॥

प्रबल अविद्या तम मिटि जाई । हारहिं सकल सलभ समुदाई ॥  
 खल कामादि निकट नहिं जाहीं । बसइ भगति जाके उर माहीं ॥  
 गरल सुधासम अरि हित होई । तेहि मनि बिनु सुख पाव न कोई  
 व्यापहिं मानस रोग न भारी । जिन्ह के बस सब जीव दुखारी ॥  
 राम भगति मनि उर बस जाकें । दुख लवलेस न सपनेहुँ ताकें ॥  
 चतुर सिरोमनि तेइ जग माहीं । जे मनि लागि सुजतन कराहीं ॥  
 सो मनि जदपि प्रगट जग अहई । राम कृपा बिनु नहिं कोउ लहई  
 सुगम उपाय पाइवे केरे । नर हतभाग्य देहिं भटभेरे ॥  
 पावन पर्वत बेद पुराना । राम कथा रुचिराकर नाना ॥  
 मर्म सजन सुमति कुदारी । ग्यान विराग नयन उरगारी ॥  
 भाव सहित खोजइ जो प्रानी । पाव भगति मनि सब सुख खानी  
 मोरें मन प्रभु अस बिस्वासा । राम ते अधिक राम कर दासा ॥  
 राम सिंधु घन सजन धीरा । चंदन तरु हरि संत समीरा ॥  
 सब कर फल हरि भगति सुहाई । सो बिनु संत न काहूँ पाई ॥  
 अस बिचारि जोइ कर सतसंगा । राम भगति तेहि सुलभ विहंगा  
 दो०—ब्रह्म पयोनिधि मंदर ग्यान संत सुर आहिं ।

कथा सुधा मधि काढ़हिं भगति मधुरता जाहिं ॥१२०(क)॥

बिरति चर्म असि ग्यान मद लोभ मोह रिपु मारि ।

जय पाइअ सो हरि भगति देखु खगेस बिचारि ॥१२०(ख)॥

पुनि सप्रेम बोलेउ खगराऊ । जौं कृपाल मोहि ऊपर भाऊ ॥

नाथ मोहि निज सेवक जानी । सत प्रसन्नम कहहु बखानी ॥  
 प्रथमहि कहहु नाथ मतिधीरा । सत्र ते दुर्लभ कवन सरीरा ॥  
 बड़ दुख कवन कवन सुख भारी । सोउ संछेपहि कहहु विचारी ॥  
 संत असंत मरम तुम्ह जानहु । तिन्ह कर सहज सुभाव बखानहु  
 कवन पुन्य श्रुति विदित बिसाला । कहहु कवन अघ परम कराला ॥  
 मानस रोग कहहु समुझाई । तुम्ह सर्वग्य कृपा अधिकाई ॥  
 तात सुनहु सादर अति प्रीती । मै संछेप कहउँ यह नीती ॥  
 नर तन सम नहि कवनिउ देही । जीव चराचर जाचत तेही ॥  
 नरक स्वर्ग अपवर्ग निसेनी । ग्यान विराग भगति सुभ देनी ॥  
 सो तनु धरि हरि भजहि न जे नर । होहि विषय रत मंद मंद तर ॥  
 काँच किरिच बदलें ते लेहीं । करते डारि परसमनि देहीं ॥  
 नहि दरिद्र सम दुख जग माहीं । संत मिलन सम सुख जग नाहीं  
 पर उपकार बचन मन काया । संत सहज सुभाउ खगाराया ॥  
 संत सहहि दुख परहित लागी । परदुख हेतु असंत अभागी ॥  
 भूर्ज तरु सम संत कृपाला । परहित निति सह विपति बिसाल  
 सन इव खल पर बंधन करई । खाल कढ़ाह विपति सहि मरई ।  
 खल विनु स्वारथ पर अपकारी । अहि मूषक इव सुनु उरगारी ॥  
 पर संपदा बिनासि नसाहीं । जिमि ससि हति हिम उपल बिलाहीं ॥  
 दुष्ट उदय जग आरति हेतू । जया प्रसिद्ध अधम ग्रह केतू ॥  
 संत उदय संतत सुखकारी । बिस्व सुखद जिमि इंदु तमारी ॥  
 परम धर्म श्रुति विदित अहिंसा । परनिंदा सम अघ न गरीसा ॥

हर गुर निंदक दादुर होई । जन्म सहस्र पाव तन सोई ॥  
 द्विज निंदक बहु नरक भोग करि । जग जनमइ बायस सरीर धरि ॥  
 सुर श्रुति निंदक जे अभिमानी । रौरव नरक परहिं ते प्रानी ॥  
 होहिं उत्कृष्ट संत निंदा रत । मोह निसा प्रिय ग्यान भानुगत  
 सब कै निंदा जे जड़ करहीं । ते चमगादुर होइ अवतरहीं ॥  
 मुनहु तात अत्र मानस रोगा । जिन्ह ते दुख पावहिं सब लोगा  
 मोह सकल व्याधिन्ह कर मूला । तिन्ह ते पुनि उपजहिं बहु सूला  
 काम बात कफ लोभ अपारा । क्रोध पित्त नित छाती जारा ॥  
 प्रीति करहिं जौं तीनिउ भाई । उपजइ सन्यपात दुखदाई ॥  
 विषय मनोरथ दुर्गम नाना । ते सब सूल नाम को जाना ॥  
 ममता दादु कंडु इरषाई । हरष विषाद गरह बहुताई ॥  
 पर सुख देखि जरनि सोइ छई । कुष्ठ दुष्टता मन कुटिलई ॥  
 अहंकार अति दुखद डमरुआ । दंभ कपट मद मान नेहरुआ ॥  
 तृस्ना उदरवृद्धि अति भारी । त्रिविधि ईषना तरुन तिजारी ॥  
 जुग विधि ज्वर मत्सर अत्रिवेका । कहैं लगि कहौं कुरोग अनेका ॥

दो०—एक व्याधि बस नर मरहिं ए असाधि बहु व्याधि ।

पीड़हिं संतत जीव कहूँ सो किमि लहै समाधि ॥१२१(क)॥

नेम धर्म आचार तप ग्यान जग्य जप दान ।

भेषज पुनि कोटिन्ह नहिं रोग जाहिं हरिजान ॥१२१(ख)॥

एहि विधि सकल जीव जग रोगी । सोक हरष भय प्रीति त्रियोगी ॥

मानस रोग कछुक में गाए । हहिं सव कैं लखि विरलेन्ह पाए ॥  
 जाने ते छीजहिं कछु पापी । नास न पावहिं जन परितापी ॥  
 विषय कुपथ्य पाइ अंकुरे । मुनिहु हृदयैं का नर बापुरे ॥  
 राम कृपाँ नासहिं सव रोगा । जौं एहि भाँति बनै संजोगा ॥  
 सदगुर बैद वचन विस्वासा । संजम यह न विषय कै आसा ॥  
 रघुपति भगति सजीवन मूरी । अनूपान श्रद्धा मति पूरी ॥  
 एहि विधि भलेहिं सो रोग नसाहीं । नाहिं त जतन कोटि नहिं जाहीं ॥  
 जानिअ तव मन विरुज गोसाँई । जव उर बल विराग अधिकाई ॥  
 सुमति द्रुधा बाढ़इ नित नई । विषय आस दुर्बलता गई ॥  
 विमल ग्यान जल जव सो नहाई । तव रह राम भगति उर छाई ॥  
 सिव अज सुक सनकादिक नारद । जे मुनि ब्रह्म विचार बिसारद ॥  
 सत्र कर मत खगनायक एहा । करिअ राम पद पंकज नेहा ॥  
 श्रुति पुरान सत्र ग्रंथ कहाहीं । रघुपति भगति बिना सुख नाहीं ॥  
 कमठ पीठ जामहिं बरु बारा ॥ बंध्या सुत बरु काहुहि मारा ॥  
 फूलहिं नभ बरु बहुविधि फूला । जीव न लह सुख हरि प्रतिकूला ॥  
 तृपा जाइ बरु मृगजल पाना । बरु जामहिं सस सीस विपाना ॥  
 अंधकार बरु रविहि नसावै । राम विमुख न जीव सुख पावै ॥  
 हिम ते अनल प्रगट बरु होई । विमुख राम सुख पाव न कोई ॥  
 दो०-बारि मयें घृत होइ बरु सिकता ते बरु तेल ।

बिनु हरि भजन न भव तरिअ यह सिद्धान्त अपेल ॥ १२२(क) ॥

मसकहि करइ विरंचि प्रभु अजहि मसक ते हीन ।

अस बिचारि तजि संसय रामहि भजहिं प्रवीन ॥१२२(ख)॥

श्लोक-विनिश्चितं वदामि ते न अन्यथा वचांसि मे ।

हरिं नरा भजन्ति येऽतिदुस्तरं तरन्ति ते ॥१२२(ग)॥

कहेउँ नाथ हरि चरित अनूपा । व्यास समास स्वमति अनुरूपा  
श्रुति सिद्धांत इहइ उरगारी । राम भजिअ सब काज विसारी ॥  
प्रभु रघुपति तजि सेइअ काही । मोहि से सठ पर ममता जाही ॥  
तुम्ह विग्यानरूप नहिं मोहा । नाथ कीन्हि मो पर अति छोहा ॥  
पूँछिहु राम कथा अति पावनि । सुक सनकादि संभु मन भावनि  
सतसंगति दुर्लभ संसारा । निमिष दंड भरि एकउ बारा ॥  
देखु गरुड़ निज हृदयँ विचारी । मैं रघुवीर भजन अधिकारी ॥  
सकुनाधम सब भाँति अपावन । प्रभु मोहि कीन्ह विदित जग पाव  
दो०-आजु धन्य मैं धन्य अति जद्यपि सब विधि हीन ।

निज जन जानि राम मोहि संत समागम दीन ॥१२३(क)॥

नाथ जथामति भाषेउँ राखेउँ नहिं कछु गोइ ।

चरित सिंधु रघुनायक थाह कि पावइ कोइ ॥१२३(ख)॥

सुमिरि राम के गुन गन नाना । पुनि पुनि हरप भुसुंडि सुजाना  
महिमा निगम नेति करि गाई । अतुलित बल प्रताप प्रभुताई ॥  
सिव अज पूज्य चरन रघुराई । मो पर कृपा परम मृदुलाई ॥  
अस सुभाउ कहूँ सुनउँ न देखउँ । केहि खगेस रघुपति सम लेखउँ



साधक सिद्ध विमुक्त उदासी । कवि कोविद कृतंग्य संन्यासी ॥  
 जोगी सूर सुतापस ग्यानी । धर्म निरत पंडित विग्यानी ॥  
 तरहिं न विनु सेएँ मम स्वामी । राम नमामि नमामि नमामी ॥  
 सरन गएँ मो . से अधरासी । होहिं सुद्ध नमामि अविनासी ॥

दो०-जासु नाम भव भेषज हरन घोर त्रय सूल ।

सो कृपाल मोहि तो पर सदा रहउ अनुकूल ॥१२४(क)॥

सुनि भुसुंडि के वचन सुभ देखि राम पद नेह ।

बोलेउ प्रेम सहित गिरा गरुड़ विगत संदेह ॥१२४(ख)॥

मैं कृतकृत्य भयउँ तव बानी । सुनि रघुवीर भगति रस सानी ॥  
 राम चरन नूतन रति भई । माया जनित विपति सब गई ॥  
 मोह जलधि बोहित तुम्ह भए । मो कहँ नाथ विविध सुख दए ॥  
 मो पहिं होइन प्रति उपकारा । बंदउँ तव पद बारहिं बारा ॥  
 पूरन काम राम अनुरागी । तुम्ह सम तात न कोउ बड़भागी ॥  
 संत विटप सरिता गिरि धरनी । परहित हेतु सबन्ह कै करनी ॥  
 संत हृदय नवनीत समाना । कहा कविन्ह परि कहै न जाना ॥  
 निज परिताप द्रवइ नवनीता । पर दुख द्रवहिं संत सुपुनीता ॥  
 जीवन जन्म सुफल मम भयऊ । तव प्रसाद संसय सब गयऊ ॥  
 जानेहु सदा मोहि निज किंकर । पुनि पुनि उमा कहइ विहंगवर ॥  
 दो०-तासु चरन सिरु नाइ करि प्रेम सहित मतिधीर ।

गयउ गरुड़ बैकुंठ तब हृदयँ राखि रघुवीर ॥१२५(क)॥

गिरिजा संत समागम सम न लाभ कछु आन ।

बिनु हरि कृपा न होइ सो गावहिं वेद पुरान ॥१२५(ख)॥

कहेउँ परम पुनीत इतिहासा । सुनत श्रवन छूटहिं भव पासा ॥  
 प्रनत कल्पतरु करुना पुंजा । उपजइ प्रीति राम पद कंजा ॥  
 मन क्रम बचन जनित अघ जाई । सुनहिं जे कथा श्रवन मन लाई ॥  
 तीर्थाटन साधन समुदाई । जोग विराग ग्यान निपुनाई ॥  
 नाना कर्म धर्म व्रत दाना । संजम दम जप तप मख नाना ॥  
 भूत दया द्विज गुर सेवकाई । विद्या विनय विवेक बड़ाई ॥  
 जहँ लगि साधन वेद बखानी । सब कर फल हरि भगति भवानी ॥  
 सो रघुनाथ भगति श्रुति गाई । राम कृपाँ काहूँ एक पाई ॥

दो०—मुनि दुर्लभ हरि भगति नर पावहिं विनहिं प्रयास ।

जे यह कथा निरंतर सुनहिं मानि बिस्वास ॥१२६॥

सोइ सर्वग्य गुनी सोइ ग्याता । सोइ महि मंडित पंडित दाता ॥  
 धर्म परायन सोइ कुल त्राता । राम चरन जाकर मन राता ॥  
 नीति निपुन सोइ परम स्याना । श्रुति सिद्धांत नीक तेहिं जाना ॥  
 सोइ कवि कोविद सोइ रनधीरा । जो छल छाड़ि भजइ रघुवीरा ॥  
 धन्य देस सो जहँ सुरसरी । धन्य नारि पतिव्रत अनुसरी ॥  
 धन्य सो भूपु नीति जो करई । धन्य सो द्विज निज धर्म न टरई ॥  
 सो धन धन्य प्रथम गति जाकी । धन्य पुन्य रत मति सोइ पाकी ॥  
 धन्य घरी सोइ जव सतसंगा । धन्य जन्म द्विज भगति अभंगा ॥

दो०—सो कुल धन्य उमा सुनु जगत पूज्य सुपुनीत ।

श्रीरघुवीर परायन जेहिं नर उपज विनीत ॥१२७॥

मति अनुरूप कथा मैं भापी । जद्यपि प्रथम गुप्त करि राखी ॥  
तव मन प्रीति देखि अधिकारि । तव मैं रघुपति कथा सुनाई ॥  
यह न कहिअ सठही हठसीलहि । जो मन लाइ न सुन हरिलीलहि  
कहिअ न लेभिहि क्रोधिहि कामिहि । जो न भजइ सचराचर स्वामिहि ॥  
द्विज द्रोहिहि न सुनाइअ कबहूँ । सुरपति सरिस होइ नृप जबहूँ ॥  
राम कथा के तेइ अधिकारी । जिन्ह कें सतसंगति अति प्यारी  
गुर पद प्रीति नीति रत जेई । द्विज सेवक अधिकारी तेई ॥  
ता कहँ यह विशेष सुखदाई । जाहि प्रानप्रिय श्रीरघुराई ॥

दो०—राम चरन रति जो चह अथवा पद निर्वाण ।

भाव सहित सो यह कथा करउ श्रवन पुट पान ॥१२८॥

राम कथा गिरिजा मैं बरनी । कलि मल समनि मनोमल हरनी ॥  
संसृति रोग सजीवन मूरी । राम कथा गावहिं श्रुति सूरी ॥  
एहि महुँ रुचिर सत सोपाना । रघुपति भगति केर पंधाना ॥  
अति हरिकृपा जाहि पर होई । पाउँ देइ एहिं मारग सोई ॥  
मन कामना सिद्धि नर पावा । जे यह कथा कपट तजि गावा ॥  
कहहिं सुनहिं अनुमोदन करहीं । ते गोपद इव भवनिधि तरहीं ॥  
सुनि सव कथा हृदय अति भाई । गिरिजा बोली गिरा सुहाई ॥  
नाथ कृपाँ मम गत संदेहा । राम चरन उपजेउ नव नेहा ॥

दो०-मैं कृतकृत्य भयउँ अब तव प्रसाद बिस्वेस ।

उपजी राम भगति दृढ़ बीते सकल कलेस ॥१२९॥

यह सुभ संभु उमा संवादा । सुख संपादन समन विषादा ॥

भव भंजन गंजन संदेहा । जन रंजन सजन प्रिय एहा ॥

राम उपासक जे जग माहीं । एहि सम प्रिय तिन्ह कैं कछु नाहीं ॥

रघुपति कृपाँ जथामति गावा । मैं यह पावन चरित सुहावा ॥

एहिं कलिकाल न साधन दूजा । जोग जग्य जप तप व्रत पूजा ॥

रामहि सुमिरिअ गाइअ रामहि । संतत सुनिअ राम गुन ग्रामहि ॥

जासु पतित पावन बड़ बाना । गावहिं कवि श्रुति संत पुराना ॥

ताहि भजहि मन तजि कुटिलाई । राम भजें गति केहिं नहिं पाई ॥

छं०-पाई न केहिं गति पतित पावन राम भजि सुनु सठ मना ।

गनिका अजामिल व्याध गीध गजादि खल तारे घना ॥

आभीर जमन किरात खस स्वपचादि अति अघरूप जे ।

कहि नाम बारक तेपि पावन होहिं राम नमामि ते ॥१॥

रघुवंसभूषन चरित यह नर कहहिं सुनहिं जे गावहीं ।

कलि मल मनोमल धोइ बिनु श्रम राम धाम सिधावहीं ॥

सत पंच चौपाई मनोहर जानि जो नर उर धरै ।

दारुन अविद्या पंच जनित बिकार श्री रघुवर हरै ॥२॥

सुंदर सुजान कृपा निधान अनाथ पर कर प्रीति जो ।

सो एक राम अकाम हित निर्वानप्रद सम आन को ॥

जाकी कृपा लवलेस ते मतिमंद तुलसीदास हूँ ।  
पायो परम विश्रामु राम समान प्रभु नहीं कहूँ ॥२॥

दो०—मो सम दीन न दीन हित तुम्ह समान रघुवीर ।

अस बिचारि रघुवंसमनि हरहु त्रिपम भव भीर ॥१३०(क)॥

कामिहि नारि पिभारि जिमि लोभिहि प्रिय जिमि दाम ।

तिमि रघुनाथ निरंतर प्रिय लागहु मोहि राम ॥१३०(ख)॥

श्लो०—यत्पूर्वं प्रभुणा कृतं सुकविना श्रीशम्भुना दुर्गमं

श्रीमद्रामपदाब्जभक्तिमनिशं प्राप्यै तु रामायणम् ।

मत्वा तद्रघुनाथनामनिरतं स्वान्तस्तमःशान्तये

भाषावद्धमिदं चकार तुलसीदासस्तथा मानसम् ॥ १ ॥

पुण्यं पापहरं सदा शिवकरं विज्ञानभक्तिप्रदं

मायामोहमलापहं सुविमलं प्रेमाम्बुपूरं शुभम् ।

श्रीमद्रामचरित्रमानसमिदं भक्त्यावगाहन्ति ये

ते संसारपतङ्गवोरकिरणैर्दहन्ति नो मानवाः ॥ २ ॥

मासपारायण, तीसवाँ विश्राम ।

नवाह्नपारायण, नवाँ विश्राम ॥

इति श्रीमद्रामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसने

सप्तमः सोपानः समाप्तः ।

( उत्तरकाण्ड समाप्त )



# गीताप्रेस, गोरखपुरकी पुस्तक-सूची

## गीमद्भगवद्गीता

गीता तत्त्वविवेचनी	४.००
गीता शांकरभाष्य	३.५०
गीता रामानुजभाष्य	३.००
गीता श्रीधरी	२.५०
सजिल्द	३.००
गीता बड़ी पदच्छेद, अन्वय मोटा टाइप	१.२५
गीता प्रत्येक अध्यायके माहात्म्यसहित अ०	१.१०
सजिल्द	१.५०
गीता गुटका पदच्छेद अन्वय सजिल्द	०.७५
गीता सटीक मोटे अक्षर- वाली अजिल्द	०.६०
सजिल्द	१.००
गीता मूल मोटा टाइप	०.३१
गीता केवल भाषा	०.३०
गीता-पञ्चरत्न	०.२५
गीता छोटी भाषाटीका	०.२०
गीता तावीजी	०.२०
गीता मूल विष्णुसहस्र	०.१२

गीता दैनन्दिनी १९७१ की. ७५

॥ ॥ सजि०. ०.९०

## उपनिषद्

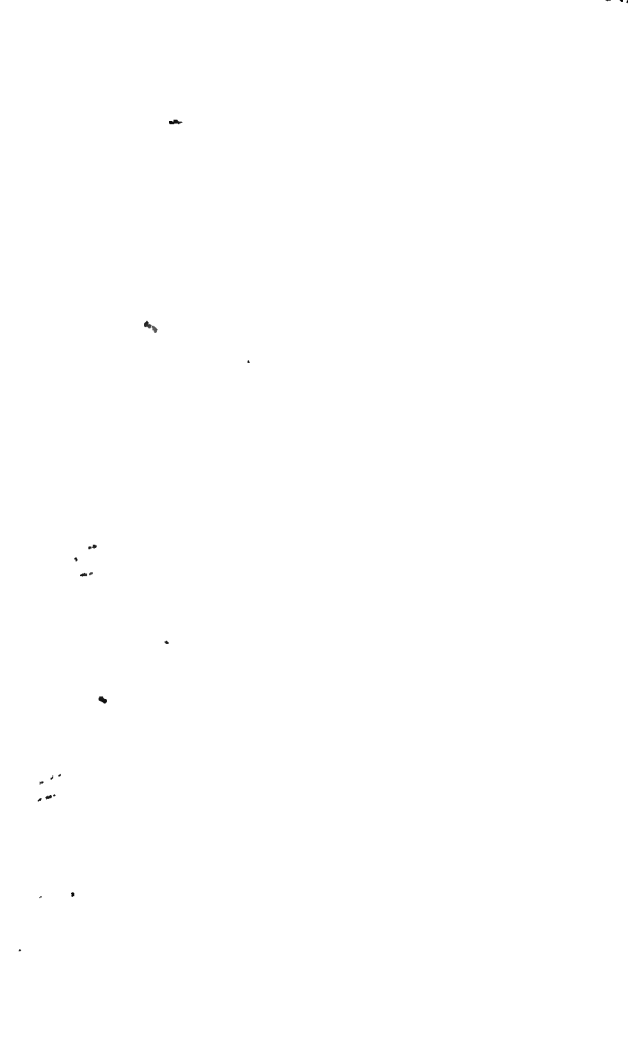
बृहदारण्यक-शांकरभाष्य	६.५०
छान्दोग्योपनिषद् ॥	५.००
ईशावास्य ॥	०.२५
केन ॥	०.६०
कठ ॥	०.७०
मुण्डक ॥	०.५५
प्रश्न ॥	०.५५
माण्डूक्य ॥	१.२५
ऐतरेय ॥	०.४५
तैत्तिरीय ॥	१.००
श्वेताश्वतर ॥	१.०५
ईशावास्य सानुवाद	०.१०

## अन्य शास्त्र-ग्रन्थ

श्रीविष्णुपुराण सटीक	५.००
अध्यात्मरामायण सटीक	४.००
पातञ्जलयोगदर्शन सटीक	०.९०
लघुसिद्धान्तकौमुदी	०.९०

दुर्गासप्तशती-मूल,	
मोटा टाइप	१.२५
दुर्गासप्तशती सटीक	१.००
दुर्गासप्तशती-मूल	०.६५
<u>महाभारत-सटीक</u>	
आदि, सभापर्व	१३.२५
वन, विराटपर्व	१५.००
उद्योग, भीष्मपर्व	१५.००
द्रोणसे स्त्रीपर्वतक	१८.००
शान्तिपर्व	१३.७५
अनुशासनसे स्वर्गा-	
रोहणपर्वतक	१५.००
<u>श्रीमन्महाभारतम् मूल</u>	
आदि, सभा, वनपर्व	७.००
विराटसे द्रोणपर्वतक	७.००
कर्णसे शान्तिपर्वतक	७.००
अनुशासनसे स्वर्गारोहण	५.५०
हरिवंश सटीक	१४.००
महाभारत-नामानुक्र०	२.५०
महाभारत-परिचय	१.७५
श्रीजैमिनीयाश्वमेधपर्व	६.००

सनत्सुजात-शांकर०	२.५०
<u>श्रीमद्भागवत</u>	
श्रीशुक-सुधासागर	२५.००
भागवत सटीक	२०.००
भागवत-सुधासागर	१०.००
„ मूल मोटा टाइप	७.५०
मूल-गुटका	४.००
प्रेम-सुधासागर	४.५०
श्रीभागवतामृत	२.००
एकादश स्कन्ध	१.२५
<u>वाल्मीकीय रामायण</u>	
सटीक (दो जिल्दोंमें)	२०.००
केवल भाषा	१३.००
केवल मूल	९.००
सुन्दरकाण्ड	१.००
<u>श्रीरामचरितमानस</u>	
बृहदाकार सटीक	१८.००
मोटा टाइप-सटीक	८.५०
मञ्जला साइज-सटीक	४.००
मोटा टाइप-मूल	५.००
मञ्जला साइज मूल	२.००





मनुष्यका परम कर्तव्य १.००

आत्मोद्धारके सरल

उपाय ०.७५

आनन्दमय जीवन १.००

अमृतके घूँट १.२५

स्वर्ण-पथ ०.९०

सत्सङ्गके बिखरे मोती ०.९०

एक महात्माका प्रसाद ०.९०

एक लोटा पानी ०.९०

**तत्त्व-चिन्तामणि (बड़ा)**

भाग १ ०.६२

" २ ०.८७

" ३ ०.७०

" ४ ०.८१

" ५ ०.८१

" ६ १.००

" ७ १.१२

**तत्त्व-चिन्तामणि (गुटका)**

भाग १ सजिल्द ०.५०

" २ " ०.५६

" ३ " ०.५०

" ४ " ०.६२

" ५ " ०.५६

**श्रीचैतन्यचरितावली**

खण्ड १ १.१५

" २ १.४०

" ३ १.२५

" ४ ०.८५

" ५ १.००

संत-वाणी ( दस हज़ार

अनमोल बोल ०.७५

सूक्ति-सुधाकर ०.७

विदुरनीति ०.७

स्तोत्ररत्नावली ०.६

सत्सङ्ग-सुधा ०.६

प्रेम-सत्संगसुधामाला ०.१

सुखी जीवन ०.

**भगवच्चर्चा**

भाग १ ०

" ३ ०

" ४ ०

" ५ ०

" ६ ०

श्रीभीष्मपितामह

सती द्रौपदी

नित्यकर्मप्रयोग	०.५५	उपयोगी कहानियाँ	०.
जीवनका कर्तव्य	०.५५	प्रेम-दर्शन	०.
भक्त-भारती	०.५५	विवेक-चूडामणि	०.४
भक्त नरसिंह मेहता	०.४५	श्रीकृष्ण-गीतावली	०.३
रामायणके कुछ		भवरोगकी रामत्राण दवा	०.३५
आदर्श पात्र	०.३७	<u>भक्त-चरित-माला</u>	
उपनिषदोंके १४ रत्न	०.४५	भक्त बालक	०.४०
<u>शोक-परलोकका सुधार</u>		भक्त नारी	०.४०
कामकेपत्र) भाग १	०.४५	भक्त-पञ्चरत्न	०.४०
" " २	०.४५	आदर्श भक्त	०.४०
" " ३	०.६०	भक्त-चन्द्रिका	०.४०
" " ४	०.६०	भक्त सतरत्न	०.४०
" " ५	०.६०	भक्त कुसुम	०.४०
समझो और करो	०.४५	प्रेमी भक्त	०.४०
जीवनसे शिक्षा	०.४५	प्राचीन भक्त	०.४०
शिक्षा	०.४५	भक्त-सरोज	०.६०
लिये		भक्त-सुमन	०.४५
कर्तव्य-शिक्षा	०.३७	भक्त-सौरभ	०.४५
सीख	०.४५	भक्त-सुधाकर	०.४०
गार	०.४५	भक्त-महिलारत्न	०.६०
कन	०.४५	भक्त-दिवाकर	०.५५
नियाँ	०.४०	भक्त-रत्नाकर	०.५५
			०.५५

आदर्श चरित-माला

भक्तराज हनुमान्	०.३५
सत्यप्रेमी हरिश्चन्द्र	०.३५
प्रेमी भक्त उद्धव	०.२५
महात्मा विदुर	०.२०
भक्तराज ध्रुव	०.२५
शिक्षाप्रद ग्यारह	
कहानियाँ	०.२५
सती सुकला	०.३०

परमार्थ-पत्रावली

" भाग १	०.२५
" भाग २	०.२५
" भाग ३	०.५०
" भाग ४	०.५०

अध्यात्मविषयक पत्र	०.५०
शिक्षाप्रद पत्र	०.५०

कल्याण-कुञ्ज

" भाग १	०.३०
" भाग २	०.३५
" भाग ३	०.४५

महाभारतके आदर्श पात्र	०.२५
भगवान्पर विश्वास	०.३०

गीताप्रेस-लीला-चित्र-मन्दिर दोहावली	०.३०
-------------------------------------	------

गीताद्वार ( गीताप्रेसका प्रवेशद्वार )	०.३०
---------------------------------------	------

बाल-चित्र-रामायण

" भाग १	०.३०
" भाग २	०.३०

बाल-चित्रमय चैतन्यलीला	०.४०
बाल-चित्रमय बुद्धलीला	०.४०

बाल-चित्रमय श्रीकृष्ण-लीला (भाग १)	०.४५
------------------------------------	------

बाल-चित्रमय श्रीकृष्ण-लीला (भाग २)	०.४५
------------------------------------	------

भगवान राम भाग १	०.३०
" " भाग २	०.३०

भगवान श्रीकृष्ण

" " भाग १	०.३०
" " भाग २	०.३०

आरती-संग्रह	०.३०
सत्सङ्गमाला	०.३०

बालकोंकी बातें	०.३०
वीर बालक	०.३०

सच्चे और ईमानदार  
बालक ०.३०

गुरु और माता-पिताके  
भक्त बालक ०.३०

### आदर्श चरितावली

" भाग १ ०.३०

" " २ ०.३०

" " ३ ०.३०

" " ४ ०.३०

बालकके गुण ०.२८

### संस्कृति-माला

" पहला भाग ०.२५

" २ " ०.३०

" ३ " ०.३५

" ४ " ०.४५

" ५ " ०.४५

" ६ " ०.४५

" ७ " ०.६५

" ८ " ०.६५

वीर बालिकाएँ ०.२५

दयालु और परोपकारी

बालक-बालिकाएँ ०.२५

जानकीमङ्गल ०.२५

श्रीपार्वतीमङ्गल ०.१५

हनुमान-बाहुक ०.

### हिंदी-बालपोथी

शिशु पाठ भाग १ ०.

" भाग २ ०.

" भाग ३ ०.

" भाग ४ ०.

दैनिक कल्याण-सूत्र ०.

ध्यान और मानसिक पूजा ०.

ध्यानावस्थामें प्रभुसे

वार्तालाप ०.

प्रार्थना ०.

आदर्श नारी सुशीला ०.

आदर्श भ्रातृ-प्रेम ०.

मानव-धर्म ०.

श्रीमद्भगवद्गीताके कुछ

श्लोकोंपर विवेचन ०.

श्रीराघामाधव-रस-सुधा ०.

आओ बच्चो तुम्हें बतायें ०.

गीता-निबन्धावली ०.

साधन-पथ ०.

अपरोक्षानुभूति ०.

मनन-माला ०.

भारतमें आर्य बाहरसे

नहीं आये ०.

( ८ )

लकोंकी बोलचाल	०.२०	श्रीविष्णुसहस्रनाम सटीक	०.१२
लकोंको सीख	०.१५	श्रीहनुमत्सहस्रनाम-	
लकके आचरण	०.१५	स्तोत्रम्	०.१२
लककी दिनचर्या	०.१५	श्रीसीतासहस्रनामस्तोत्रम्	०.१२
नवधा-भक्ति	०.१२	गायत्रीसहस्रनामस्तोत्रम्	०.१२
बाल-शिक्षा	०.१२	श्रीराधिकासहस्रनाम मूल	०.१५
श्रीभरतजीमें नवधाभक्ति	०.१२	श्रीशिवसहस्रनाम "	०.१२
गीता-भवन-दोहा-संग्रह	०.१५	श्रीरामसहस्रनाम "	०.१२
वैराग्य-संदीपनी	०.१५	श्रीलक्ष्मीसहस्रनाम "	०.१२
बरवै रामायण	०.१५	श्रीसूर्यसहस्रनाम "	०.१२
<u>भजन-संग्रह</u>		गजेन्द्रमोक्ष	०.१२
प्रथम भाग	०.१५	शाण्डिल्यभक्तिसूत्र	०.१२
द्वितीय भाग	०.१५	बालप्रश्नोत्तरी	०.१२
तृतीय भाग	०.१५	स्वास्थ्य-सम्मान-सुख	०.१२
चतुर्थ भाग	०.१५	बीधर्मप्रश्नोत्तरी	०.१२
पञ्चम भाग	०.१५	नारीधर्म	०.१२
गङ्गासहस्रनाम सटीक	०.२०	गोपी-प्रेम	०.१२
श्रीलक्ष्मीनृसिंहसहस्रनामस्तोत्रम्	०.२०	मनुस्मृति	०.१२
श्रीगणेशसहस्रनामस्तोत्रम्	०.१५	तर्पण-विधि	०.१२

अन्य पुस्तकोंका जानकारीके लिये सूचीपत्र मुक्त मँगवा  
व्यवस्थापक-गीताप्रेस, पो० गीताप्रेस (गोरखपुर)



दो०-निगम नीति कुल रीति करि अरघ पाँवड़े देत ।

वधुन्ह सहित सुत परिछि सब चलीं लवाइ निकेत ॥३४९॥

चारि सिंघासन सहज सुहाए । जनु मनोज निज हाथ बनाए ॥

तिन्ह पर कुअँरि कुअँर बैठारे । सादर पाय पुनीत पखारे ॥

धूप दीप नैवेद वेद विधि । पूजे वर दुलहिनि मंगलनिधि ॥

बारहिं वार आरती करहीं । व्यजन चारु चामर सिर ढरहीं ॥

बस्तु अनेक निछावरि होहीं । भरी प्रमोद मातु सत्र सोहीं ॥

पावा परम तत्व जनु जोगी । अमृत लहेउ जनु संतत रोगी ॥

जनम रंक जनु पारस पावा । अंधहि लोचन लाभु सुहावा ॥

मूक बदन जनु सारद छाई । मानहुँ समर सूर जय पाई ॥

०-एहि सुख ते सत कोटि गुन पावहिं मातु अनंदु ।

भाइन्ह सहित विआहि घर आए रघुकुलचंदु ॥३५०(क)॥

लोक रीति जननीं करहिं वर दुलहिनि सकुचाहिं ।

मोदु बिनोदु विलोकि बड़ रामु मनहिं मुसुकाहिं ॥३५०(ख)॥

देव पितर पूजे विधि नीकी । पूजां सकल वासना जी की ॥

सबहि वंदि मागहिं वरदाना । भाइन्ह सहित राम कल्याना ॥

अंतरहित सुर आसिष देहीं । मुदित मातु अंचल भरिलेहीं ॥

भूपति बोलि वराती लीन्हे । जान बसन मनि भूषन दीन्हे ॥

आयसु पाइ राखि उर रामहि । मुदित गए सब निज निज धामहि

पुर नर नारि सकल पहिराए । घर घर वाजन लगे बधाए ॥

जाचक जन जाचहिं जोइ जोई । प्रमुदित छठ देखिं सोइ सोई ॥  
 सेवक सकल बजनिआ नाना । पूरन किए दान सनमाना ॥  
 दो०—देहिं भसीम जोहारि सब गावहिं गुन गन गाथ ।

सब गुर भूसुर सहित गृह गवनु कीन्ह मरनाथ ॥३५१॥  
 जो बसिष्ट अनुसासन दीन्ह । लोक वेद विधि सादर कीन्ह ॥  
 भूसुर भीर देखि सब रानी । सादर उठी भाग्य बढ़ जानी ॥  
 राय पत्नारि सकल अन्धपाए । पूजि मली विधि भूप जेवाए ॥  
 आदर दान प्रेम परिपोषे । देत असीस चले मन तोषे ॥  
 बहुत विधि कीन्ह गाधिमुत पूजा । नाथ मोहि सम धन्य न वृजा ॥  
 कीन्ह प्रसंसा भूपति भूरी । रानिन्ह सहित लीन्ह पग धूरी ॥  
 भीतर भयन दीन्ह घर बाह्य । मन जोगयत रह नृपु रनिवास ॥  
 पूजे गुर पद कमल बहोरी । कीन्ह विनय उर प्रीति न दोरी ॥  
 दो०—बभुन्ह समेत कुमार सब रानिन्ह सहित महीनू ।

पुनि पुनि बंदत गुर चरन देत भसीस मुनीसु ॥३५२॥  
 विनय कीन्ह उर अति अनुरागे । सुत सपदा राखि सब आगे ॥  
 नेगु मागि मुनिनायक लीन्ह । आकरिबाहु बहुत विधि दीन्ह ॥  
 उर धरि रामहि सोय समेता । हरि कीन्ह गुर गवनु निकेता ॥  
 विप्रबधू सब भूप बोलाई । बैल चाद भयन पहिराई ॥  
 बहुति बोलाई मुआभिनि लीन्ह । कंचि विनारि पहिरावनि दीन्ह ॥  
 नेगी नेग लोग सब लेहीं । रनि अनुरूप भूप ॥३५३॥



प्रिय पाहुने पूज्य जे जाने । भूपति भली भाँति सनमाने ॥  
देव देखि रघुवीर बिबाहू । वरपि प्रसून प्रसंसि उछाहू ॥

दो०—चले निसान बजाइ सुर निज निज पुर सुख पाइ ।

कहत परसपर राम जसु प्रेम न हृदयँ समाइ ॥३५३॥

सब विधि सबहि समदि नरनाहू । रहा हृदयँ भरि पूरि उछाहू ॥  
जहँ रनिवासु तहाँ पगु धारे । सहित बहूटिन्ह कुअँर निहारे ॥  
लिए गोद करि मोद समेता । को कहि सकइ भयउ सुखु जेता ॥  
बधू सप्रेम गोद बैठारीं । बार बार हियँ हरषि दुलारीं ॥  
देखि समाजु मुदित रनिवासु । सब कँउर अनंद कियो बासू ॥  
कहेउ भूपजिमि भयउ बिबाहू । सुनि सुनि हरषु होत सब काहू ॥  
राज गुन सीलु बड़ाई । प्रीति रीति संपदा सुहाई ॥  
बहुविधि भूप भाट जिमि बरनी । रानीं सब प्रमुदित सुनि करनी ॥

दो०—सुतन्ह समेत नहाइ नृप बोलि विप्र गुर ग्याति ।

भोजन कीन्ह अनेक विधि घरी पंच गइ राति ॥३५४॥

मंगलगान करहिं वर भामिनि । भै सुखमूल मनोहर जामिनि ॥  
अँचइ पान सब काहूँ पाए । सग सुगंध भूषित छवि छाए ॥  
रामहि देखि रजायसु पाई । निज निज भवन चले सिर नाई ॥  
प्रेमु प्रमोदु विनोदु बड़ाई । समउ समाजु मनोहरताई ॥  
कहि न सकहिं सत सारद सेसू । वेद विरंचि महेस गनेसू ॥  
सो मैं कहाँ कवन विधि बरनी । भूमिनागु सिर धरइ कि धरनी ॥

नृप मय भौंति सखि मनमानी । कोहे मृदु बचन बोलार्हे रानी ॥  
बधू तारिकनी पर घर आई । रामेहु नयन पलक की नाई ॥

श्लो०-लरिका धर्मित उनीद बय मयन करावहु जाइ ।

भस कहि गे विश्रामगृहे राम चरन चिनु लाइ ॥३५५॥

भूप बचन मुनि महज सुदाए । जगित कनक मनि पलंग डसाए ॥  
सुभग सुरभि पय पेन ममाना । कोमल कलित सुपेती नाना ॥  
उपवरदन घर बगनि न जाई । स्वग सुगम मनिमंदिर माहीं ॥  
स्तनदीप मुठि चारु चैंदोषा । कहन न बनद जान जेहि जोषा ॥  
मेज रुचिर रचि राम उठाए । प्रेम ममेत पलंग पौड़ाए ॥  
अग्या पुनि पुनि भादन्ह दीन्ही । निज निज मेज मयन तिन्ह कोन्ही ॥  
देगि लग्य मृदु मजुन गाता । कहि मप्रेम बचन सय माता ॥  
माग जात भयायनि भारी । केहि बिधि तात ताइका मागी ॥

श्लो०-घोर निमाचर बिकट भट ममर मनहि नहिं काहु ।

मारे सहित महाय किमि गल मारीच सुपाहु ॥३५६॥

मुनि प्रसाद बलि तात तुम्हारी । ईम अनेक करवरे टारी ॥  
मल रग्यकारी करि दुहुं भाई । गुरु प्रसाद मय विद्या पाई ॥  
मुनितिय तरी लगत पग धूरी । कीरति रही भुवन भरि पूरी ॥  
कमठ पीठि पयि कूट बडोरा । नृप ममाज महं गिय धनु तोरा ॥  
विस्र बिजय जमु जानकि पाई । आण भवन व्याहि मय भाई ॥  
मरल अमानुष करम तुम्हारे । केवल कोमिद कुरे ॥

आजु सुफल जग जनमु हमारा । देखि तात त्रिधुवदन तुम्हारा ॥  
जे दिन गए तुम्हहि बिनु देखें । ते विरंचि जनि पारहिं लेखें ॥

दो०—राम प्रतोषीं मातु सब कहि विनीत वर वैन ।

सुमिरि संभु गुर विप्र पद किए नीदवस नैन ॥३५७॥

नीदउँ वदन सोह सुठि लोना । मनहुँ साँझ सरसीरुह सोना ॥  
घर घर करहिं जागरन नारीं । देहिं परसपर मंगल गारीं ॥  
पुरी विराजति राजति रजनी । रानीं कहहिं त्रिलोकहु सजनी ॥  
सुंदर बधुन्ह सासु लै सोई । फनिकन्ह जनु सिरमनि उर गोई ॥  
प्रात पुनीत काल प्रभु जागे । अरुनचूड़ वर बोलन लागे ॥  
बंदि मागधन्हि गुनगन गाए । पुरजन द्वार जोहारन आए ॥  
दि विप्र सुर गुर पितु माता । पाइ असीस मुदित सब भ्राता ॥  
जननिन्ह सादर वदन निहारे । भूपति संग द्वार पगु धारे ॥  
दो०—कीन्हि सौच सब सहज सुचि सरित पुनीत नहाइ ।

प्रातकिया करि तात पहिं आए चारिउ भाइ ॥३५८॥

**नवाह्नपारायण, तीसरा विश्राम**

नूप त्रिलोकि लिए उर लाई । बैठे हरषि रजायसु पाई ।  
देखि रामु सब सभा जुड़ानी । लोचन लाभ अवधि अनुमानी  
पुनि वसिष्ठु मुनि कौसिकु आए । सुभग आसनन्हि मुनि बैठाए  
सुतन्ह समेत पूजि पद लागे । निरखि रामु दोउ गुर अनुरागे  
कहहिं वसिष्ठु धरम हतिहासा । सुनहिं महीसु सहित रनिवासा

मुनि मन अगम गाधिमुन करनी। मुदिन रागिष्ट विपुल विधि वरन  
बोले रामदेउ सब साँचा। करानि कलिन लोक तिहुँ मार्च  
मुनि आनहु भयउ सब काहु। गम लखन उर अधिक उछाहु।

दो०—मंगल मोद उछाह निन जाहिं दिवस गृहि भौति ।

उमगी अवध अनंद भरि अधिक अधिक अधिकाति ॥२५९॥

मुदिन सोधि कल ककन छोरे। मंगल मोद विनोद न थोरे ॥  
नित नय मुख मुर दोख सिहाही। अवध जन्म जाचहि विधि पाही  
विस्वामित्र चलन नित चढ़ी। राम संगे म विनय बस रहही ॥  
दिन दिन सयगुन भूपति भाऊ। देखि सगह महामुनिराऊ ॥  
मागत विदा राउ अनुगये। मुनन्द समेत टाढ भे आगे ॥  
नाथ सकल संपदा तुम्हारी। मैं सेवकु समेत सुत नारी ॥  
करय सदा लरिकन्ह पर छोहू। दरसन देन रहय मुनि मोहू ॥  
अब कहि राउ सहित मुन रानी। परेउ चरन मुख आव न रानी ॥  
दीन्हि असीम विप्र यहू भौती। चलेन प्रीति रीति कहि जाती ॥  
राम संगे संग सब भाई। आयसु पाइ फिरे पहुँचाई ॥

दो०—राम रूपु भूपति भगनि ब्याह उछाह अनंदु ।

जात सराहत मनहिं मन मुदिन गाधिकुलचंदु ॥२६०॥

रामदेय सुकुल गुर ग्यानी। बहुरि गाधिमुन कथा बखानी  
मुनि मुनि मुजसु मनहिं मन राऊ। वरनत आपन पुन्य प्रभाऊ ॥  
बहुरे लोग रजायसु भयऊ। मुनन्द समेत नृपति ग्रहें गयऊ

हैं तहँ राम व्याहु सत्रु गावा । सुजसु पुनीत लोक तिहुँ छावा ॥  
 माए व्याहि रामु घर जय तैं । बसइ अनंद अवध सब तय तैं ॥  
 यमु बिबाहैं जस भयउ उछाहू । सकहिं न बरनि गिरा अहिनाहू  
 कबिकुल जीवनु पावन जानी । राम सीय जसु मंगल खानी ॥  
 तेहि ते मैं कछु कहा यखानी । करन पुनीत हेतु निज यानी ॥

छं०-निज गिरा पावनि करन कारन राम जसु तुलसीं कह्यो ।  
 रघुबीर चरित अपार बारिधि पारु कवि कौनैं लह्यो ॥  
 उपबीत व्याह उछाह मंगल सुनि जे सादर गावहीं ।  
 बेदेहि राम प्रसाद ते जन सर्वदा सुख पावहीं ॥  
 ०-सिय रघुबीर बिबाहु जे सप्रेम गावहिं सुनहिं ।

तिन्ह कहुँ सदा उछाहु मंगलायतन राम जसु ॥३६१॥

मासपारायण, बारहवाँ विश्राम

इति श्रीमद्रामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसने  
 प्रथमः सोपानः समाप्तः ।

( बालकाण्ड समाप्त )

॥ श्रीरामाय नमः ॥

# श्रीरामचरितमानस

अयोध्याकाण्ड



## राम-भरत-मिलन



बरबस लिए उठाइ उर लाए कृपानिधान ।  
भरत राम की मिलनि लखि बिसरे सबहि अपान ॥

श्रीगणेशाय नमः

श्रीज्ञानकीर्तनमो विजयते

# श्रीरामचरितमानस

~\*~\*~\*~

## द्वितीय सोपान

( अयोध्याकाण्ड )

—\*—\*—

श्लोक

यस्याङ्गे च विभाति भूधरसुता देवापगा मन्मथे  
भाले बालविधुर्गले च गरले यस्योरमि प्यालराट् ।  
सोऽयं भूतिविभूषणः सुरवरः सर्वोधिपः सर्वज्ञ  
शर्वः सर्वगतः शिवः शशिनिभः श्रीशङ्करः पानु माम् ॥ १ ॥  
प्रसन्नतां या न गताभिप्रेकनम्लघा न मम्ले धनवामदुःखनः ।  
मुन्नाम्बुजश्री रघुनन्दनस्य मे सदास्तु मा मञ्जुलमङ्गलप्रदा ॥ २ ॥  
नीलाम्बुजश्यामलकोमल्यङ्गं सीताममारोपितवामभागम् ।  
पाणौ महामायकचारुचापं नमामि रामं रघुवंशनाथम् ॥ ३ ॥



दो०-श्रीगुरुं चरन सरोज रज निज मनु मुकुरु सुधारि ।

वरनउँ रघुवर विमल जसु जो दायकु फल चारि ॥

जब तैं रामु व्याहि घर आए । नित नव मंगल मोद बधाए ॥  
 भुवन चारिदस भूधर भारी । सुकृत मेघ वरप्रहिं सुख बारी ॥  
 रिधि सिधि संपति नदीं सुहाई । उमगि अवध अंबुधि कहूँ आई  
 मनगन पुर नर नारि सुजाती । सुचि अमोल सुंदर सब भाँती ॥  
 कहि न जाइ कछु नगर विभूती । जनु एतनिअ विरंचि करतूती ॥  
 सब विधि सब पुर लोग सुखारी । रामचंद मुख चंदु निहारी ॥  
 सुदित मातु सब सर्खां सहेली । फलित विलोकि मनोरथ बेली ॥  
 राम रूपु गुन सीलु सुभाऊ । प्रमुदित होइ देखि सुनि राज ॥

०-सब कै उर अभिलाषु अस कहहिं मनाइ महेसु ।

आप अछत जुवराज पद रामहि देउ नरेसु ॥ १ ॥

एक समय सब सहित समाजा । राजसभाँ रघुराजु बिराजा ॥  
 अकल सुकृत मूरति नरनाहू । राम सुजसु सुनि अतिहि उछाहू  
 नृप सब रहहिं कृपा अभिलाषैं । लोकप करहिं प्रीति रुख राखैं ॥  
 तिभुवन तीनि काल जग माहीं । भूरिभाग दसरथ सम नाहीं ॥  
 मंगलमूल रामु सुत जासू । जो कछु कहिअ थोर सब तासू  
 रायँ सुभायँ मुकुरु कर लीन्हा । वदनु विलोकि मुकुडु सम कीन्हा  
 श्रवन समीप भए सित केसा । मनहुँ जरठपनु अस उपदेसा  
 नृप जुवराजु राम कहूँ देहू । जीवन जनम लाहु किन लेहू

दो०—यह बिचार उर आनि नृप मुदिनु सुभवसरु पाइ ।

प्रेम पुलकि तन मुदित मन गुरहि सुनायउ जाइ ॥ २ ॥

कहइ भुआलु मुनिअ मुनिनायक। भए राम मय विधि सच लायक॥  
 सेयक सचिप सकल पुरवासी। जे हमारे अरि मित्र उदासी॥  
 सगहि रामु प्रिय जेहि विधि मोही। प्रभु अर्मास जनु तनु धरि सोही॥  
 पित्र सहित परिवार गोसाईं। करहि छोडु सब तौरिहि नाई॥  
 जे गुर चरन रेनु मिर धरही। ते जनु सकल विभव दस करही॥  
 मोहि सम यहु अनुभवउ न दूजें। सब पायउ रज पायनि पूजें॥  
 अब अभिरागु एकु मन मोरें। पूजिहि नाथ अनुग्रह तोरें॥  
 मुनि प्रसन्न ललित सहज स्नेह। कहेउ नरेस रजायसु देह॥

दो०—राजन राउर नामु जमु सब अभिमत दातार ।

कल अनुगामी महिप मनि मन अभिलाषु तुम्हार ॥ ३ ॥

सब विधि गुरु प्रसन्न जियें जानी। सोलेउ राउ रहैंसि मृदु बानी॥  
 नाथ रामु करिआइ जुयराजू। कहिअ कृपा करि करिअ स्माजू॥  
 मोहि अछत यहु होइ उछाहू। लहहि लोग सब रोचन लाहू॥  
 प्रभु प्रसाद छिन्न स्यार निवाही। यह लालसा एक मन नहै॥  
 पुनि न सोच तनु रहउ कि जाऊ। जेहि न होइ पाछें रछिहू॥  
 मुनि मुनि दसरथ बचन सुहाए। मंगल मोद मूल न नहै॥  
 मुनु रूप जासु बिमुख पछिताही। आसु मज्जन दिनु बरजै न नहै॥  
 ममउ तुम्हार मनस सोइ स्वामी। रामु पुनीउ प्रे च्युतरै॥

दो०—बेगि बिलंबु न करिअ नृप साजिअ सबुइ समाजु ।

सुदिनु सुमंगलु तवहिं जब रामु होहिं जुवराजु ॥ १  
मुदित महीपति मंदिर आए। सेवक सचिव सुमंत्रु बोल  
कहि जयजीव सीस तिन्ह नाए। भूप सुमंगल वचन सुन  
जौं-पाँचहि मत लागै नीका। करहु हरपि हियँ रामहि टी  
मंत्री मुदित सुनत प्रिय बानी। अभिमत बिरवँ परेउ जनु प  
बिनती सचिव करहिं कर जोरी। जिअहु जगतपति बरिस करं  
जग मंगल भल काजु बिचारा। बेगिअ नाथ न लाइअ बा  
नृपहि मोदु सुनि सचिव सुभाषा। बढ़त बाँड़ जनु लही सुसार  
दो०—कहेउ भूप मुनिराज कर जोइ जोइ आयसु होइ ।

राम राज अभिषेक हित बेगि करहु सोइ सोइ ॥ ५  
मुनीस कहेउ मृदु बानी। आनहु सकल सुतीरथ पा  
मूल फूल फल पाना। कहे नाम गनि मंगल ना  
चामर चरम बसन बहु भाँती। रोम पाट पट अगनित जा  
मनिगन मंगल वस्तु अनेका। जो जग जोगु भूप अभिषेक  
वेद विदित कहि सकल विधाना। कहेउ रचहु पुर विविध वि  
सफल रसाल पूगफल केरा। रोपहु वीथिन्ह पुर चहुँ फे  
रचहु मंजु मनि चौकें चारू। कहहु बनावन बेगि बजार  
पूजहु गनपति गुर कुलदेवा। सब विधि करहु भूमिसुर सेव  
दो०—ध्वज पताक तोरन कलस सजहु तुरग रथ नाग ।

सिर धरि मुनिबर बचन सवु निज निज काजहिं लाग ॥ ६

जो मुनीस जेहि आयसु दीन्हा । सो तेहि काजु प्रथम जनु कीन्हा ॥  
 विप्र साधु सुर पूजन राजा । करत राम हित मंगल काजा ॥  
 सुनत राम अभियेक सुहावा । राज गहागह अवध बधावा ॥  
 राम सीय तन सगुन जनाए । फरकहि मंगल अंग सुहाव ॥  
 पुलकि सप्रेम परस्पर कहई । भरत आगमनु सूचक अहई ॥  
 भए बहुत दिन अति अवसरी । सगुन प्रतीति भेंट प्रिय कैरी ॥  
 भरत सरित प्रिय को जग माही । इहइ सगुन फल दूसर नाही ॥  
 रामहि बंधु सोच दिन राती । अइन्हि कमठ हृदउ जेहि भौंती  
 दो०—एहि अवसर मंगसु परम सुनि रहैसेउ रनिवासु ।

सोभत लखि विधु बदन जनु थारिधि बीच बिलासु ॥ ७ ॥

प्रथम जाइ जिन्ह वचन सुनाए । भूपन वसन भूरि तिन्ह पाए ॥  
 प्रेम पुलकि तन मन अनुरागी । मंगल कलस सजन सब लागी ॥  
 चौकें चार सुमित्राँ पूरी । मनिमय विविध भौंति अति स्त्री  
 आनंद मगन राम महतारी । दिए दान बहु विप्र हँकारी ॥  
 पूजाँ प्रामदेयि सुर नागा । कहेउ बहोरि देन बलिभागा ॥  
 जेहि विधि होइ राम कल्याण । देहु दया कारे सो परदान ॥  
 गावई मंगल कोकिलबयनी । विधुबदनी मृगशवकनयनी ॥

दो०—राम राज अभियेकु सुनि हियँ हरये नर नारि ।

लगे सुमंगल सजन सब विधि अनुकूल विचारि ॥ ८ ॥

तब नरनाहें बसिष्ठु बोलाए । रामघोम सिख देन पठाए ॥

गुर आगमनु सुनत रघुनाथा । द्वार आइ पद नायउ माथा ॥  
 सादर अरघ देइ घर आने । सोरह भाँति पूजि सनमाने ॥  
 गहे चरन सिय सहित बहोरी । बोले रामु कमल कर जोरी ॥  
 सेवक सदन स्वामि आगमनू । मंगल मूल अमंगल दमनू ॥  
 तदपि उचित जनु बोलि सप्रीती । पठइअ काज नाथ असि नीती ॥  
 प्रभुता तजि प्रभु कीन्ह सनेहू । भयउ पुनीत आजु यहु गेहू ॥  
 आयसु होइ सो करौ गोसाई । सेवकु लहइ स्वामि सेवकाई ॥  
 दो०—सुनि सनेह साने बचन मुनि रघुबरहि प्रसंस ।

राम कस न तुम्ह कहहु अस हंस बंस अवसंस ॥ ९ ॥

बरनि राम गुन सीलु सुभाऊ । बोले प्रेम पुलकि मुनिराऊ ॥  
 भूप सजेउ अभिषेक समाजू । चाहत देन तुम्हहि जुवराजू ॥  
 राम करहु सब संजम आजू । जौ बिधि कुसल निबाहै काजू ॥  
 गुरु सित्य देइ राय पहिँ गयऊ । राम हृदयँ अस विसमउ भयऊ ॥  
 जनमे एक संग सब भाई । भोजन सयन केलि लरिकाई ॥  
 करनबेध उपवीत बिआहा । संग संग सब भए उछाहा ॥  
 विमल बंस यहु अनुचित एकू । बंधु बिहाइ बड़ेहि अभिषेकू ॥  
 प्रभु सप्रेम पछितानि सुहाई । हरउ भगत मन कै कुटिलाई ॥  
 दो०—तेहि अवसर आए लखन मगन प्रेम आनंद ।

सनमाने प्रिय बचन कहि रघुकुल कैरवचंद ॥ १० ॥

बाजहिं बाजने विविध विधाना । पुर प्रमोदु नहिं जाइ बखाना ॥

भरत आगमनु सकल मनावहिं । आवहुं बेगि नयन फलु पावहिं ॥  
 हाट बाट घर गलीं अयाई । कहहिं परस्पर लोग लोगाई ॥  
 कालि लगन भलि केतिक बारा । पूजिहि विधि अभिलापु हमारा ॥  
 कनक सिंघासन तीय समेता । बैठहिं रामु होइ चित चेता ॥  
 सकल कहहिं कव होइहि काली । विघन मनावहिं देव कुचाली ॥  
 तिन्हहि सोहाइ न अवध बधाया । चोरहि चंदिनि राति न भावा ॥  
 सारद बोलि विनय सुर करहीं । बारहिं बार पाय लै परहीं ॥

दो०—विपति हमारि बिलोकि यदि मातु करिअ सोइ भासु ।

रामु जाहिं बन रासु तजि होइ सकल सुरकासु ॥ ११ ॥  
 पुनि सुर विनय ठाढ़ि पछिताती । भरुं सरोज विपिन हिमराती ॥  
 देखि देव पुनि कहहिं निहोरी । मातु तोहि नहिं घोरिउ खोरी ॥  
 विसमय हरप रहित रघुराऊ । तुम्ह जानहु सब राम प्रभाऊ ॥  
 जीय करम यस सुख दुख भागी । जाइअ अवध देव हित लागी ॥  
 बार बार गहि श्रवन सँकोची । चली विचारि विबुध मति पोची ॥  
 ऊँच नियासु नीचि करतूती । देखि न सकहिं पराई विभूती ॥  
 आगिल कासु विचारि बहोरी । करिहहिं चाह कुसल कवि मोरी ॥  
 हरपि हृदयँ दसरथ पुर आई । जनुग्रह दसा दुसह दुखदाई ॥

दो०—नासु मंथरा मंदमति चेरी कैफह केरि ।

अजस पेढारी ताहि करि गई गिरा मति केरि ॥ १२ ॥  
 दीख मंथरा नगर बनावा । मंझुल मंगल बाज बधावा ॥

पूछेसि लोगन्ह काह उछाहू। राम तिलकु सुनि भा उर द  
 करइ विचार कुबुद्धि कुजाती। होइ अकाजु कवनि विधि रा  
 देखि लागि मधु कुटिल किराती। जिमि गवँ तकइ लेउँ केहि  
 भरत मातु पहिं गइ विलखानी। का अनमनि हसि कह हँसि  
 ऊतर देइ न लेइ उसासू। नारि चरित करि दारइ अ  
 हँसि कह रानि गालु बड़ तोरें। दीन्ह लखन सिख अस म  
 तवहुँ न बोल चेरि बड़ि पापिनि। छाड़इ स्वास कारि जनु स  
 दो०—सभय रानि कह कहसि किन कुसल रामु महिपालु।

लखनु भरतु रिपुदमनु सुनि भा कुबरी उर सालु ॥

कत सिख देइ हमहि कोउ माई। गालु करव केहि कर बल  
 रामहि छाड़ि कुसल केहि आजू। जेहि जनेसु देइ जु  
 भयउ कौसिलहि विधि अति दाहिन। देखत गरव रहत उर  
 देखहु कस न जाइ मय सोभा। जो अवलोकि मोर मनु छे  
 पूतु विदेस न सोचु तुम्हारें। जानति हहु बम नाहु ह  
 नीद बहुत प्रिय सेज तुराई। लखहु न भूप कपट चत  
 सुनि प्रिय वचन मलिन मनु जानी। झुकी रानि अवरहु उ  
 पुनि अस कवहुँ कहसि घरफोरी। तव धरि जीभ कढ़ावउँ

दो०—काने खोरे कवरे कुटिल कुचाली जानि।

तिय बिसेपि पुनि चेरि कहि भरतमातु मुसुकानि ॥

प्रियवादिनि सिख दीन्हउँ तोही। सपनेहुँ तो पर कोपु न

मुदिनु सुमंगल दापकु सोई । तोर कहा फुर जेहि दिन होई ॥  
 जेठ स्वामि सेवक ल्यु माई । यह दिनकर कुल रीति मुदाई ॥  
 राम तिलकु जौ सौंचेहु काली । देउँ मागु मन भावत आली ॥  
 कौसल्या सम सब मदतारी । रामहि सदा सुभायै पिआरी ॥  
 मो पर कछि सनेहु बिलेखी । मैं करि प्रीति परीछा देखी ॥  
 जौ शिधि जनमुदेह करि छोडू । होहु राम सिंग पूत पुतोडू ॥  
 प्रान तैं अधिक रामु प्रिय मोरें । निन्द कैं तिरक छोडु कह तोरें ॥  
 दो०—भरत सपथ तोहि सत्य कहु परिहरि कपट दुराड ।

हरप समय विममड कामि कारन मोहि सुनाड ॥ १५ ॥

एकदि बार आठ सब पूजी । अब कह्यु कह्य जीम करि दूजी  
 पोरै जोगु कण्ठ अमागा । भलेउ कहत दुख रउयेहि लागी  
 कहहि छठि पुरि बात बनाई । ते प्रिय तुम्हहि करुइ मैं माई ॥  
 हमहुँ कह्यि अब ठकुरछोदाती । नादि तमौन रहव दिनु राती ॥  
 करि कुरूप शिधि परवस कीन्हा । क्या सो छुनिअ लहिअ जो दीन्हा  
 फौड नृप होउ हमहि का हानी । चेरि छादि अब होर कि रानी ॥  
 जारै जोगु सुमाउ हमारा । अनमल देखि न जाइ तुम्हाय ॥  
 ताने कथुक बात अनुसारी । छमिअ देवि बाँड़ि चूक हमारी ॥

दो०—गड कपट प्रिय बचन सुनि तीय अधरबुधि रानि ।

सुरमाया बस बैसिनिहि सुहृद जनि पतिभानि ॥ १६ ॥

सादर पुनि पुनि पूछति ओरी । स्वरी गान मृगी बनु मोही ॥



तसि मति फिरी अहइ जसि भात्री । रहसी चेरि घात जनु फात्री ॥  
 तुम्हु पूँछहु में कहत डेराऊँ । धरेहु मोर घरफोरी नाऊँ ॥  
 सजि प्रतीति बहुविधि गढ़ि छोली । अवध साढ़साती तव बोली ॥  
 प्रिय सिय रामु कहा तुम्ह रानी । रामहि तुम्ह प्रिय सो फुरि बानी ॥  
 रहा प्रथम अब ते दिन बीते । समउ फिरें रिपु होहिं पिरीते ॥  
 भानुकमल कुल पोपनिहारा । विनु जल जारि करइ सोइ छारा  
 जरि तुम्हारि चह सवति उखारी । रूँधहु करि उपाउ बर बारी ॥  
 दो०—तुम्हहि न सोचु सोहाग बल निज बस जानहु राउ ।

मन मलीन मुह मीठ नृपु राउर सरल सुभाउ ॥ १७ ॥

चतुर गँभीर राम महतारी । ब्रीचु पाइ निज वात सँवारी ॥  
 पठए भरतु भूप ननिअउरें । राम मातु मत जानव रउरें ॥  
 सेवहिं सकल सवति मोहि नीकें । गरवित भरत मातु बल पी कें ॥  
 सालु तुम्हार कौसिलहि माई । कपट चतुर नहिं होइ जनाई ।  
 राजहि तुम्ह पर प्रेमु विसेषी । सवति सुभाउ सकइ नहिं देखी ।  
 रचि प्रपंचु भूपहि अपनाई । राम तिलक हित लगन धराई ।  
 यह कुल उचित राम कहँ टीका । सवहि सोहाइ मोहि सुठि नीका  
 आगिलि वात समुझि डरु मोही । देउ दैउ फिरि सो फल ओही ।  
 दो०—रचि पचि कोटिक कुटिलपन कीन्हैसि कपट प्रबोधु ।

कहिसि कथा सत सवति कै जेहि विधि बाढ़ विरोधु ॥ १८ ॥

भावी बस प्रतीति उर आई । पूँछ रानि पुनि सपथ देवाई ।

का पूछहु तुम्ह अयहूँ न जाना । निज हित अनहित पमु पहिचाना  
 भयउ पाखु दिन सज्जत समाजू । तुम्ह पाई सुधि मोहि सन आजू ॥  
 खाइअ पहिरिअ राज तुम्हारे । सत्य कहे नहि दोषु हमारे ॥  
 जौ असत्य कछु कह्य बनार । तौ विधि-देहि हमहि सजाई ॥  
 रामहि तिलक कालि जौ भयऊ । तुम्ह कहूँ विपात वीजु विधि बयऊ  
 देख खेंचइ कहउँ बहू भापी । भामिनि भइहु दूध कइ भाखी ॥  
 जौ सुत सहित करहु सेवकाई । तौ घर रहहु न आन उपाई ॥  
 दो०—कहँ बिनतहि दीन्ह दुसु तुम्हहि कौसिलौ देव ।

भरतु बंदिगृह सेइहहिं लखनु राम के नेव ॥ १९ ॥

कैकयसुता सुनत कटु यानी । कहिन सकइ कछु सहमि सुखानी  
 तन पसेउ कदली जिमि काँपी । कुयरी दसन जीभ तय चोपी ॥  
 कहि कहि कोटिक कपट कहानी । धीरजु धरहु प्रबोधिधि रानी ॥  
 फिरा करमु प्रिय लागि कुचाली । शकिहि सराइ मानि मराली ॥  
 मुनु मयरा बात फुरि तोरी । दाहिनि ओखि नित परकइ मोरी  
 दिन प्रति देखउँ राति कुसपने । कहउँ न तोहि मोह बस अपने ॥  
 काह करौ सखि सूध सुभाऊ । दाहिन याम न जानउँ काऊ ॥

दो०—अपने चलत न आयु छगि अनमल काहुक कीन्ह ।

वेहिं भय एअहि बार मोहि दैअ दुसइ दुसु दीन्ह ॥ २० ॥

नैर जनमु मरव बरु जाई । जिअत न करचि सवति सेवकाई  
 अरि बस दैउ जिआवत जाही । मरनु नीक तेहि जीवन चाही ॥

दीन वचन कह बहुविधि रानी । सुनि कुवरीं तियमाया ठानी ॥  
 अस कस कहहु मानि मन ऊना । मुखु सोहागु तुम्ह कहँ दिन दूना ॥  
 जेहि राउर अति अनभल ताका । सोइ पाइहि यहु फल परिपाका ॥  
 जय तें कुमत सुना मैं स्वामिनि । भूख न वासर नीद न जामिनि ॥  
 पूँछेउँ गुनिन्ह रेख तिन्ह खाँची । भरत भुआल होहि यह साँची ॥  
 भामिनि करहु त कहौं उपाऊ । है तुम्हरीं सेवा बस राऊ ॥  
 दो०—परउँ कूप तुअ वचन पर सकउँ पृत पति त्यागि ।

कहसि मोर दुखु देखि बड़ कस न करव हित लागि ॥ २१ ॥  
 कुवरीं करि कबुली कैकेई । कपट दुरी उर पाहन टेई ॥  
 लखइ न रानि निकट दुखु कैसैं । चरइ हरित तिन बलिपसु जैसैं ॥  
 सुनत वात मृदु अंत कठोरी । देति मनहुँ मधु माहुर घोरी ॥  
 कहइ चेरि सुधि अहइ कि नार्हीं । स्वामिनि कहिहु कथा मोहि पार्हीं ॥  
 दुइ वरदान भूप सन थाती । मागहु आजु जुड़ावहु छाती ॥  
 सुतहि राजु रामहि वनवास । देहु लेहु सब सवति हुलास ॥  
 भूपति राम सपथ जव करई । तव मागेहु जेहि वचनु न टरई ॥  
 होइ अकाजु आजु निसि वीतैं । वचनु मोर प्रिय मानेहु जी तैं ॥  
 दो०—बड़ कुघातु करि पातकिनि कहेसि कोपगृहँ जाहु ।

काजु सँवारेहु सजग सबु सहसा जनि पतिआहु ॥ २२ ॥  
 कुचरिहि रानि प्रानप्रिय जानी । वार वार बड़ि बुद्धि बखानी ॥  
 तोहि सम हित न मोर संसार । बहे जात कह भइसि अधारा ॥

वीं विधि पुरव मनोरथु कार्य । कर्म तोरि चन्व पुनरि आर्यी ॥  
 बहुविधि चेतिहि आदर देद । कोसभवन गवनी कैकेय ॥  
 विपनि वीजु वरणा स्तिु नेगी । पुष्ट मष्ट कुन्नेन जैहृष्ट नेगी ॥  
 पाद कपट जलु अंकुर जाया । यर दोउ दल दुग्ग फल परिनामा ॥  
 कोर सभासु मानि मनु मोद । राहु करत मित्र कुमति विगोद ॥  
 राठर नगर कोलाइलु होद । यह कुचार्चल कटु जान न कोद ॥  
 दो०-प्रसुदित पुर नर नारि सब मजहिं भुमंतःखपार ।

एक प्रविमहिं एक निर्गमहिं भीर भूप दरवार ॥ २२ ॥

याज सत्ता सुनि हियै हरगर्हा । मित्रि दम पाँच राम पहिं जाह ॥  
 प्रभु आदरहिं प्रभु पहिचानी । पुँछहिं कुमल गेम मृदु बानी ॥  
 गिहिं भवन प्रिय आयसु पाद । करत गम्भार गम बड़ाई ॥  
 को रघुवीर गरित संसार । मोलु मनेहु निवाहनिहार ॥  
 जेहिं जेहिं जोनि करम यम भ्रमही । तहै तहै ईसु देउ यह हमही ॥  
 केरक हम स्वामी स्थिनाहु । होउ नात यह ओर निवाहु ॥  
 अस अभिलाषु नगर सय काहु । कैकयमुता हृदयै अति दाहु ॥  
 को न कुसंगति पाइ नमार्ह । रहद न नीन मतें चतुराई ॥  
 दो०-मौस समय म्यानंद नृपु गयउ कैकई मोह ।

गवनु निदुरता निकट किय अनु धरि देह मनेह ॥ २४ ॥

कोसभवन मुनि मकुचेउ राऊ । मय वस अगहड़ परद न पाऊ ॥  
 सुरपति वमद चाहैकल जाके । नरपति मकुज गहाई हय ताके ॥

सो चुनि तिय रिस गयउ सुखाई । देखहु काम प्रताप बढ़ाई ॥  
 सूल कुलिस असि अँगवनिहारे । ते रतिनाथ सुमन सर मारे ॥  
 सभय नरेसु प्रिया पहिँ गयऊ । देखि दसा दुखु दारुन भयऊ ॥  
 भूमि स्यन पटु मोट पुराना । दिए डारि तन भूषन नाना ॥  
 कुमतिहि फसि कुबेपता फाबी । अनअहिवातु सूच जनु भाबी ॥  
 जाइ निकट नृपु कहू मृदु बानी । प्रानप्रिया केहि हेतु रिसानी ॥

छं०—केहि हेतु रानि रिसानि परसत पानि पविहि नेवारई ।  
 मानहुँ सरोष भुअंग भामिनि जियम भाँति निहारई ॥  
 दोड दासना रसना दसन दर सरम ठाहरु देखई ।  
 गुलसी नृपति भवतव्यता यस काम कौतुक लेखई ॥

सो०—पार बार कहू राउ सुमुखि सुलोचनि पिप्पयचनि ।

कारन मोहि सुनाउ गजगामिनि निज-छोष कर ॥२५॥

अनहित तोर प्रिया केहँ कीन्हा । केहि दुइ सिर केहि जमु चढ़ लीन्ह ॥  
 कहु कोऊ रंकहि करौ नरेसू । कहु केहि नृपहि निकासौ देखू ॥  
 सकउँ तोर अरि अमरउ मारी । काह कीट बपुरे नर नारी ॥  
 जानसि मोर सुभाउ बरोरू । मनु तव आनन चद चकोरू ॥  
 प्रिया प्रान सुत सबसु मोरें । परिजन प्रजा सकल बस तोरें ।  
 जौं कछु कहौं फपटु करि तोही । भामिनि राम सपथ सत मोही ।  
 विहसि मागु मनभावति आता । भूषन सजहि मनोहर गाता ।  
 घरी कुघरी समुझि जियै देखू । वेगि प्रिया परिहरहि कुबेषू ॥

दो०-यह सुनि मन गुनि सपथ यदि बिहसि उठी मतिमंद ।

भूपन सजति बिलोकि मृगु मनहुँ किरातिनि फंद ॥२६॥

पुनि कह राउ मुहद जिये जानी । प्रेम पुलकि मृदु मंत्रुल बानी ॥

मामिनि भयउ तोर मनमाया । घर घर नगर अनंद बधाया ॥

रामहि 'देउं कालि जुवराजू । सजहि मुल्योचनि मंगल साजू ॥

दलकि उठेउ गुनि हृदय कठोरु । जनु छुह गयउ पाक भरतोरु ॥

पेठिउ पीर बिहसि तेहि गोई । चोर नारि जिमि प्रगटि न रोई ॥

छलहि न भूप कपट चतुराई । कोटि कुटिल मनि गुरू पढ़ाई ॥

जयवि नीति निपुन नरनाहू । नारिचरित जलनिधि अवगाहू ॥

कपट सनेहु बड़ाइ बहोरी । बोली बिहसि नयन मुहु मोरी ॥

दो०-भागु भागु पै कहहु पिप कयहुँ न देहु न लेहु ।

देन कहहु बरदान दुइ तेउ पावत संदेहु ॥२७॥

जानेउँ मरमु राउ हंसि कहई । तुम्हहि कोहाव परम प्रिय अहई ॥

धाती राखि न मागिहु काऊ । बिसरि गयउ मोहि भोर सुमाऊ ॥

छठेहुँ हमहि दोषु जनि देहू । दुइ कै चारि मागि मकु लेहू ॥

खुकुल रीति सदा चलि आई । प्राण जाहुँ बरु बचनु न जाई ॥

नहि असत्य सम पातक पुंजा । गिरि सम होई कि कोटिक गुंजा ॥

सत्यमूल सब सुकृत सुहाए । वेद पुरान बिदित मनु गाए ॥

तेहि पर राम सपथ करि आई । सुकृत सनेह अबाधि रघुराई ॥

पात दड़ाइ कुमति हैसि बोली । कुमल कुबिहग कुलइ जनु खोली ॥

१०—भूप मनोरथ सुभग बनु सुख सुविहंग समाजु ।

भिहिनि जिमि छाड़न चहति बचनु भयंकरु बाजु ॥ २८ ॥

### मासपारायण, तेरहवाँ विश्राम

सुनहु प्रानप्रिय भावत जी का । देहु एक बर भरतहि टीका ॥  
 मागउँ दूसर बर कर जोरी । पुरवहु नाथ मनोरथ मोरी ॥  
 तापस बेप विसेपि उदासी । चौदह बरिस रामु बनबासी ॥  
 सुनि मृदु बचन भूप हियँ सोकू । ससि कर छुअत विकल जिमि कोकू  
 गयउ तहमि नहिँ कछु कहि आवा । जनु सचान बन झपटेउ लावा  
 बिधरन भयउ निपट नरपान् । दामिनि हनेउ मनहुँ तरु तालू ॥  
 मार्यँ हाथ मूदि दोउ लोचन । तनु धरि सोचु लाग जनु सोचन ॥  
 मोर मनोरथु सुरतरु फूला । परत करिनि जिमि हतेउ समूला ॥  
 अवध उजारि कीन्हि कैकई । दीन्हिसि अचल विपति कै नेई ॥

दो०—कवनेँ अवसर का भयउ गयउँ नारि बिस्वास ।

जोग सिद्धि फल समय जिमि जतिहि अचिछा नास ॥ २९ ॥

एहि विधि राउ मनहिँ मन झाँखा । देखि कुभाँति कुमति मन माखा  
 भरतु कि राउर पूत न होंही । आनेहु मोल बेसाहि कि मोही ॥  
 जो सुनि सरु अस लाग तुम्हारें । कहे न बोलहु बचनु सँभारें ॥  
 देहु उतरु अनु करहु कि नहिँ । सत्यसंध तुम्ह रघुकुल माहीं ॥  
 देन कहेहु अय जनि वरु देहू । तजहु सत्य जग अपजसु लेहू ॥  
 सत्य सराहि कहेहु वरु देना । जानेहु लेइहि मागि चवेना ॥





तुहँ सराहसि करसि सनेहू । अत्र सुनि मोहि भयउ संदेहू ॥  
जासु सुभाउ अरिहि अनुकूल । सो किमि करिहि मातु प्रतिकूल ॥

दो०—प्रिया हास रिस परिहरहि मागु विचारि विवेकु ।

जेहिं देखौं अव नयन भरि भरत राज अभिषेकु ॥ ३२ ॥

जिए मीन वरु वारि विहीना । मनि विनु फनिकु जिए दुख दीना  
कहउँ सुभाउ न छलु मन माहीं । जीवनु मोर राम विनु नाहीं ॥  
समुझि देखु जियँ प्रिया प्रवीना । जीवनु राम दरस आधीना ॥  
सुनि मृदु वचन कुमति अति जरई । मनहुँ अनल आहुति घृत परई  
कहइ करहु किन कोटि उपाया । इहाँ न लागिहि राउरि माया ॥  
देहु किलेहु अजसु करि नाहीं । मोहि न बहुत प्रपंच सोहाहीं ॥  
रामु साधु तुम्ह साधु सयाने । राममातु भलि सब पहिचाने ॥  
जस कौसिलौ मोर भल ताका । तस फलु उन्हहि देउँ करि साका ॥

दो०—होत प्रातु मुनिवेष धरि जौं न रामु बन जाहिं ।

मोर मरनु राउर अजसु नृप समुझिअ मन माहिं ॥ ३३ ॥

अस कहि कुटिल भई उठि ठाढ़ी । मानहुँ रोष तरंगिनि बाढ़ी  
पाप पहार प्रगट भइ सोई । भरी क्रोध जल जाइ न जोई  
दोउ वर कूल कठिन हठ धारा । भवँर कुचरी बचन प्रचारा  
ढाहत भूपरूप तरु मूला । चली विपति वारिधि अनुकूल  
लखी नरेस बात फुरि साँची । तिय मिस मीचु सीस पर नार्च  
गहि पद विनय कीन्ह बैठारी । जनि दिनकर कुल होसि कुठ



जब लगि जिऔं कहउँ कर जोरी। तब लगि जनि कछु कहसि बहोर  
फिरि पछितैहसि अंत अभागी। मारसि गाइ नहारु लागी।  
दो०-परेउ राउ कहि कोटि विधि काहे करसि निदानु ।

कपट सयानि न कहति कछु जागति मनहुँ मसानु ॥ २६ ॥

राम राम रट बिकल भुआलू। जनु विनु पंख विहंग बेहालू ॥  
हृदयँ मनाव भोरु जनि होई। रामहि जाइ कहै जनि कोई ॥  
उदउ फरहु जनि रवि रघुकुल गुर। अवध बिलोकि सूल होइहि उर  
भूप प्रीति कैकइ कठिनाई। उभय अवधि विधिरची बनाई ॥  
बिलपत नृपहि भयउ भिनुसारा। वीना बेनु संख धुनि द्वारा ॥  
गढ़हिं भाट गुन गावहिं गायक। सुनत नृपहि जनु लागहिं सायक  
मंगल सकल सोहाहिं न कैसें। सहगामिनिहि बिभूषन जैसें ॥  
तेहि निसि नीद परी नहिं काहू। राम दरस लालसा उछाहू ॥  
दो०-द्वार भीर सेवक सचिव कहहिं उदित रवि देखि ।

जागेउ अजहुँ न अवधयति कारनु कवनु बिसेषि ॥ २७ ॥

पछिले पहर भूपु नित जागा। आजु हमहि बड़ अचरजु लागा।  
जाहु सुमंत्र जगावहु जाई। कीजिअ काजु रजायसु पाई ॥  
गए सुमंत्र तब राउर माहीं। देखि भयावन जात डेराहीं ॥  
भाइ खाइ जनु जाइ न हेरा। मानहुँ विपति विप्राद बसेरा ॥  
पूछें कोउ न ऊतरु देई। गए जेहिं भवन भूप कैकेई ॥  
कहि जयजीव बैठ सिरु नाई। देखि भूप गति गयउ सुखाई ॥

सोच बिकल विवरन महि परेऊ । मानहुँ कमल मृदु गीत ॥ १ ॥  
 सचिउ समीत कहइ नहिँ पूँछी । बोली अमुप भरी गुन मूर्छी ॥  
 दो०-वरी न रात्रहि नीद निसि हेतु जान जगदीशु ।

रामु रामु राँट भोरु किय कहइ न मरसु महीशु ॥ २४ ॥

आनहु रामहि बेगि बोलै । समाचार तब पूँछहु आई ॥  
 चलेउ सुमंशु राय क्य जानी । कृती कुचालि कीन्हि फाँदु गनी ॥  
 सोच बिकल मग परइ न गाऊ । रामहि बोलि कहिहि का राऊ ॥  
 उर धरि धीरजु गरउ दुआरें । पूँछहि सकल देखि मनु गाँ ॥  
 समाधानु करि सो क्यही का । गरउ जहाँ दिनकर कुल दीका ॥  
 राम सुमंशुहि आवन देखा । आदर कीन्ह रिता सम गंगा ॥  
 निरखि यदनु कहि भूप रजाई । खुलसीगहि चलेउ ल्यारै ॥  
 रामु कुभाँति सचिउ संग जाही । देखि लोग जई नहँ बिलग्यारी ॥  
 दो०-जाइ दीन रघुसंसनि वरपति निरद कृपानु ।

सहसि परेउ छलि मिथिनिहि मनहुँ रुद मरगटु ॥ २९ ॥

सुखहि अवर जइ सबु अगू । मनहुँ दैन मननन मुभगू ॥  
 सख समीप दीखि कैकेई । मानहुँ ननु रनी मनि गेई ॥  
 फरनामय मृदु राम मुभाऊ । प्रयन दीउ दुनु दुनु न काऊ ॥  
 तदपि धीर धरि समउ विचागी । पूँछी मनु क्य ॥  
 मोहि कहु मानु तात दुख कागन । करिअ रज गेई ॥  
 मुनहु राम सबु कारनु एह । रात्रि दुख ॥

देन कहेन्हि मोहि दुइ वरदाना । मागेउ जो कछु मोहि सोहाना ॥  
 सो सुनि भयउ भूप उर सोचू । छाड़ि न सकहिं तुम्हार सँकोचू ॥  
 दो०—सुत सनेहु इत बचनु उत संकट परेउ नरेसु ।

सकहु त आयसु धरहु सिर भेटहु कठिन कलेसु ॥४०॥  
 निधरक बैठि कहइ कटु बानी । सुनत कठिनता अति अकुलानी  
 जीभ कमान बचन सर नाना । मनहुँ महिप मृदु लच्छ समाना  
 जनु कठोरपनु धरें सरीरु । सिखइ धनुषविद्या वर वीरु ॥  
 सबु प्रसंगु रघुपतिहि सुनाई । बैठि मनहुँ तनु धरि निडुराई ॥  
 मन मुसुकाइ भानुकुल भानू । रामु सहज आनंद निधानू ॥  
 बोले बचन बिगत सब दूषन । मृदु मंजुल जनु बाग विभूषन ॥  
 सुनु जननी सोइ सुनु बड़भागी । जो पितु मातु बचन अनुरागी ॥  
 तनय मातु पितु तोषनिहारा । दुर्लभ जननि सकल संसारा ॥

दो०—मुनिगन मिलनु बिसेषि बन सबहि भाँति हित मोर ।  
 तेहि महुँ पितु आयसु बहुरि संमत जननी तोर ॥४१॥

भरतु प्रानप्रिय पावहिं राजू । बिधि सब बिधि मोहि सनमुख आ  
 जौं न जाउँ बन ऐसेहु काजा । प्रथम गनिअ मोहि मूढ़ समा  
 सेवहिं अरँडु कल्पतरु त्यागी । परिहरि अमृत लेहिं त्रिषु मार्ग  
 तेउ न पाइ अस समउ चुकाहीं । देखु बिचारि मातु मन माहि  
 अंत्र एक दुखु मोहि बिसेषी । निपट विकल नरनायकु देख  
 थोरिहिं बात पितहि दुख भारी । होति प्रतीति न मोहि महता

राउ धीर गुन उदधि अगाधू। भा मोहिने कहु बड़ अपराधू ॥  
जातें मोहि न कहत कहु राऊ। मोरि सपथ नोहि कहु मतिभाऊ ॥

दो०—सहज सरल रघुवर बचन कुमति कुटिल करि जान ।

खलहू जोक बल बक्रगति जघपि सलिलु ममान ॥४२॥

रहभी रानि राम रुख पाई। सोली कपट सनेहु जनार्द ॥  
सपथ तुम्हार भरत कै आना। हेतु न दूर में कहु जाना ॥  
तुम्ह अपराध जोगु नहि ताता। जननी जनक यधु मुखदाता ॥  
राम सत्य सयु जो कहु कहहू। तुम्ह गिनु मानु बचन रत भरहू ॥  
पितहि धुसाइ कहहु बलि सोई। चौधेपन जेहि अजमु न होई ॥  
तुम्ह सम सुअन सुकृत जेहि दीन्हें। उचित न तामु निगदह कीन्हें ॥  
लागाहि कुमुख बचन सुभ कैसे। मगहें गयादिक तीरथ जैसे ॥  
रामहि मातु बचन सब भाए। जिमि मुरसरि गन सलिल मुराए ॥

दो०—गह मुरछा रामहि सुमिरि नृप फिरि करबट लोन्ह ।

सचिव राम भागमन कहि विनय समय सम कीन्ह ॥४३॥

अयनिप अकनि राम पगु धारे। धरि धीरनु तब नयन उपारे ॥  
सचिवैं सँभारि राउ बैठारे। चरन परत नृप रामु निहारि ॥  
लिए सनेह बिकल उर लाई। गै मनि मनहुं फनिक फिरि पाई ॥  
रामहि चितइ रहेउ नरनाहू। चला बिलोचन बारि प्रयाहू ॥  
छोक बिबस कहु कहै न पारा। हृदयें लगावत बारि ॥  
विधिहि मन्त्राव राउ मन मारी। जेहि रघुनाथ न

सुमिरि महेसहि कहइ निहोरी । विनती सुनहु सदासिव मोरी ॥  
आसुतोप तुम्ह अवढर दानी । आरति हरहु दीन जनु जानी ॥

दो०—तुम्ह प्रेरक सब के हृदयँ सो मति रामहि देहु ।

वचनु मोर तजि रहहिं घर परिहरि सीलु सनेहु ॥४४॥

अजसु होउ जग सुजसु नसाऊ । नरक परौं वर सुरपुर जाऊ ॥  
सब दुख दुसह सहावहु मोही । लोचन ओट रामु जनि हौंही ॥  
अस मन गुनइ राउ नहिं बोला । पीपर पात सरिस मनु डोला ॥  
रघुपति पितहि प्रेमवस जानी । पुनि कछु कहिहि मातु अनुमानी  
देस काल अवसर अनुसारी । बोले वचन विनीत बिचारी ॥  
तात कहउँ कछु करउँ ढिठाई । अनुचित छमव जानि लरिकाई ॥  
अति लघु बात लागि दुखु पावा । काहुँ न मोहि कहि प्रथम जनावा  
देखि गोसाईंहि पूँछिउँ माता । सुनि प्रसंगु भए सीतल गाता ॥  
दो०—मंगल समय सनेह बस सोच परिहरिअ तात ।

आयसु देखअ हरपि हियँ कहि पुलके प्रभु गात ॥ ४५ ॥

धन्य जनमु जगतीतल तासू । पितहि प्रमोदु चरित सुनि जासू ॥  
चारि पदारथ करतल ताकें । प्रिय पितु मातु प्रान सम जाकें ॥  
आयसु पालि जनम फलु पाई । ऐहउँ बेगिहिं होउ रजाई ॥  
विदा मातु सन आवउँ मागी । चलिहउँ वनहि बहुरि पग लागी  
अस कहि राम गवनु तत्र कीन्हा । भूप सोक बस उतह न दीन्हा ॥  
नगर व्यापि गइ बात सुतीछी । छुअत चढ़ी जनु सब तन बीछी ॥

मुनि भए विकल मकल नर नारी । बेलि बिटप जिमि देखि दवारी  
जो जहँ मुनइ धुनइ मिर मोर । बड़ बिगडु नहिं धीरजु होइ ॥

श्लोक—सुख सुखाहिं लोचन म्वहिं मोकुन हृदय समाइ ।

मनहुँ करन रम कटकई उतरी भवध बगाइ ॥४६॥

मिलेहि माझ विधि यात देगारी । जहँ तहँ देहि कैकहहि गारी ॥

एहि पाणिनिहि वृक्ष का परेऊ । छाइ भवन पर पावकु धरेऊ ॥

निज कर नयन काढ़ि चह दीखा । डारि मुधा यिपु चाहत चीखा ॥

कुटिल कठोर कुबुडि अभागी । भइ रघुवस बेनु बन आगी ॥

मालव पैठि पेहु एहि काटा । सुख महुँ सोक ठाडु धरि ठाटा ॥

सदा रामु एहि मान समाना । कारन कयन कुटिलपनु ठाना ॥

सत्य कहहि कयि नारि सुभाऊ । मय विधि अगहु अगाध दुराऊ ॥

निज प्रतिविम्बु बरकु गदि जार । जानि न जाइ नारि गति भाई ॥

श्लोक—काह न पावकु जारि सक का न समुद समाइ ।

का न करे अयल प्रबल बेहि जग कालु न खाइ ॥ ४७ ॥

का सुनाइ विधि काह सुनाया । का देखाइ चह काह देखाया ॥

एक कहहिं भल भूप न कीन्हा । बरु बिचारि नहिं कुमतिहि दीन्हा ॥

जो हठि भयठ सकल दुख माजनु । अबला बिसस ग्यानु गुनु गा न्दु ॥

एक धरम परमिति पहिचाने । नृपहि दोसु नहिं देहि सयाने ॥

सिधि दधीचि हरिचंद कहानी । एक एक सन का ॥

एक भरत कर संमत कहहीं । एक उदास गार ॥



कान मूदि कर रद गहि जीहा । एक कहहिं यह बात अलीहा ॥  
 सुकृत जाहिं अस कहत तुम्हारे । रामु भरत कहूँ प्रानपिआरे ॥

दो०—चंदु चवै बर अनल कन सुधा होइ विषतूल ।  
 सपनेहुँ कबहुँ न करहिं किछु भरतु राम प्रतिकूल ॥ ४८ ॥

एक बिधातहि दूषनु देहीं । सुधा देखाइ दीन्ह विपु जेहीं ॥  
 खरभरु नगर सोचु सब काहू । दुसह दाहु उर मिटा उछाहू ॥  
 विप्रबधू कुलमान्य जटेरी । जे प्रिय परम कैकई केरी ॥  
 लगीं देन सिख सीछु सराही । बचन बानसम लागहिं ताही ॥  
 भरतु न मोहि प्रिय राम समाना । सदा कहहु यहु सबु जगु जाना ॥  
 करहु राम पर सहज सनेहू । केहि अपराध आजु बन देहू ॥  
 क्यहुँ न कियहु सवति आरेसू । प्रीति प्रतीति जान सबु देसू ॥  
 कौसल्याँ अब काह बिगारा । तुम्ह जेहि लागि बज्र पुर पारा ॥

दो०—सीय कि पिय सँगु परिहरिहि लखनु कि रहिहहिं धाम ।  
 राजु कि भूँजब भरत पुर नृपु कि जिइहि विनु राम ॥ ४९ ॥

अस विचारि उर छाड़हु कोहू । सोक कलंक कोठि जनि होहू ॥  
 भरतहि अवसि देहु जुवराजू । कानन काह राम कर काज ॥  
 नाहिन रामु राज के भूखे । धरम धुरीन विषय रस रूप ॥  
 गुर गृह बसहुँ रामु तजि गेहू । नृप सन अस बर दूसर ले ॥  
 जौं नहिं लगिहहु कहें हमारे । नहिं लागिहि कछु हाथ तुम ॥  
 जौं परिहास कीन्हि कछु होई । तौ कहि प्रगट जनावहु ॥

राम सरिस मुन कानन जोगू । काह कहिहि मुनि तुम्ह कहूँ लोगू ॥  
उठहु बेगि सोइ करहु उपाई । जेहि बिधि सोकु कलंकु नसाई ॥

८०-जेहि भौंति सोकु कलंकु जाइ उपाय करि कुल पालही ।

हडि केरु रामहि जात बन जनि मात दूसरि चालही ॥

जिमि भानु बिनु दिनु प्रान बिनु तनु चंद बिनु जिमि जामिनी ।

तिमि अवध तुलसीदास प्रभु बिनु समुझि धौं जियेँ भामिनी ॥

सो०-सखिन्ह सिखावनु दीन्ह मुनन मपुर परिनाम हित ।

तेई कसु कान न कीन्ह कुटिल प्रबोधी कूबरी ॥ ५० ॥

उतह न देइ दुसह रिस रुखी । मृगिन्ह चितय जनु राशिनि भूखी

व्याधि असाधि जानि तिन्ह त्यागी । चलीं कहत मतिमंद अमागी

राजु करत यह दैअे बिगोई । कीन्हैसि अस जस करइ न कोई ॥

एहि बिधि बिलपहिं पुर नर नारी । देहिं कुचालिहि कोटिक गारी ॥

जरहिं बिषम जर लेहिं उसासा । कबनि राम बिनु जीवन आसा ॥

बिपुल बियोग प्रजा अकुलानी । जनु जलचर गन सूखत पानी ॥

अति बिपाद मस लोम लोगाई । गए मातु पहिं रामु गोसाई ॥

मुख प्रसन्न चित चौगुन चाऊ । मिटा सोनु जनि राखै राऊ ॥

दो०-नव गयंदु रघुबीर मनु राजु अछान समान ।

छूट जानि बन गवनु मुनि उर अनंदु अधिकान ॥ ५१ ॥

खकुलतिलक जोरि दोउ हाथा । मुदित मातु पद न

दीन्हि असीस लाइ उर लीन्है । भूपन बसन नि

बार बार मुख चुंबति माता । नयन नेह जलु पुलकित गाता ॥  
 गोद राखि पुनि हृदयँ लगाए । खवत प्रेमरस पयद सुहाए ॥  
 प्रेम प्रमोदु न कछु कहि जाई । रंक धनद पदवी जनु पाई ॥  
 सादर सुंदर बदनु निहारी । बोली मधुर बचन महतारी ॥  
 कहहु तात जननी बलिहारी । कबहिँ लगन मुद मंगलकारी ॥  
 सुकृत सील सुख सीवँ सुहाई । जनम लाभ कइ अवधि अघाई ॥

दो०—जेहि चाहत नर नारि सब अति आरत एहि भाँति ।  
 जिमि चातक चातकि तृपित वृष्टि सरद रितु स्वाति ॥ ५२ ॥  
 तात जाउँ बलि बेगि नहाहू । जो मन भाव मधुर कछु खाहू ॥  
 पितु समीप तत्र जाएहु भैया । भइ बड़ि बार जाइ बलि मैआ ॥  
 मातु बचन सुनि अति अनुकूल । जनु सनेह सुरतर के फूल ॥  
 सुख मकरंद भरे श्रियमूला । निरखि राम मनु भवँ न भूला ॥  
 धरम धुरीन धरम गति जानी । कहेउ मातु सन अति मृदु बानी ॥  
 पिताँ दीन्ह मोहि कानन राजू । जहँ सब भाँति मोर बड़ काजू ॥  
 आयसु देहि मुदित मन माता । जेहिँ मुद मंगल कानन जाता ॥  
 जनि सनेह बस डरपसि भोरें । आनँदु अंब अनुग्रह तोरें ॥

दो०—बरष चारि वस छिपिन बसि करि पितु बचन प्रमान ।  
 आह पाय पुनि देखिहउँ मनु जनि करसि मलान ॥ ५३ ॥  
 बचन विनीत मधुर रघुवर के । सर सम लगे मातु उर करके  
 सहमि सुख सुनि सीतलि बानी । जिमि जवास परें पावस पानी ॥

कहि न जाइ कथु हृदय विषाद । मनहुँ मृगी मुनि केहरि नाद ॥  
 नयन सजल तन पर पर कौंसी । माजहि खाइ मीन जनु मारी ॥  
 धरि धीरबु मुन बदन निहारी । गदगद बचन कहति महतारी ॥  
 तात नितहि तुन्द प्राननिआरे । देखि मुदित नित चरित तुन्दारे  
 राजु देन कहुँ मुन दिन साधा । कहेउ जान बन केहिँ अरसाधा ॥  
 तात मुनावहु मोरे निदान । को दिनकर कुल भयउ कृपान ॥  
 दो०—निरखि राम रूप मचिबसुत करनु कहेउ बुझाइ ।

मुनि प्रसंगु रहि मूक टिमि इत्य वरनि नहिं ऊह ॥ ५१ ॥

## \* रामचरितमानस \*

पितु बनदेव मातु बनदेवी । खग मृग चरन सरोरुह सेवी ॥  
 अंतहुँ उचित नृपहि बनवासू । बय बिलोकि हियँ होइ हराँसू ॥  
 बड़भागी बन अवध अभागी । जो रघुवंसतिलक तुम्ह त्यागी ॥  
 जौ सुत कहौ संग मोहि लेहू । तुम्हरे हृदयँ होइ संदेहू ॥  
 पूत परम प्रिय तुम्ह सबही के । प्रान प्रान के जीवन जी के ॥  
 ते तुम्ह कहहु मातु बन जाऊँ । मैं सुनि वचन बैठि पछिताऊँ ॥

दो०—यह बिचारि नहिं करउँ हठ झूठ सनेहु वढ़ाइ ।  
 मानि मातु कर नात बलि सुरति बिसरि जनि जाइ ॥ ५६ ॥  
 देव पितर सब तुम्हहि गोसाई । राखहुँ पलक नयन की नाई ॥  
 अवधि अंबु प्रिय परिजन मीना । तुम्ह करुनाकर धरम धुरीना ॥  
 मस बिचारि सोइ करहु उपाई । सबहि जिअत जेहि भेंटहु आई ॥  
 गाहु सुखेन बनहि बलि जाऊँ । करि अनाथ जन परिजन गाऊँ ॥  
 कर आजु सुकृत फल बीता । भयउ कराल कालु त्रिपरीता ॥  
 बहुबिधि बिलपि चरन लपटानी । परम अभागिनि आपुहि जानी ॥  
 दारुन दुसह दाहु उर न्यापा । बरनि न जाहि बिलाप कलापा ॥  
 राम उठाइ मातु उर लाई । कहि मृदु वचन बहुरि समुदाई ॥  
 दो०—समाझतेहि समय सुनि सीय उठी अकुलाइ ।  
 जाइ सासु पद कमल जुग बंदि बैठि सिरु नाइ ॥ ५७ ॥  
 दीन्हि असीस सासु मृदु बानी । अति सुकुमारि देखि अकुलाइ ॥  
 बैठि नमितमुख सोचति सीता । रूप रासि पति प्रेम पुनी ॥



कै तापस तिय कानन जोगू । जिन्ह तप हेतु तजा सब भोगू ॥  
 सिय बन बसिहि तात केहि भाँती । चित्रलिखित कपि देखि डेराती  
 सुरसर सुभग बनज बन चारी । डावर जोगु कि हंसकुमारी ॥  
 अस विचारि जस आयसु होई । मैं सिख देउँ जानकिहि सोई ॥  
 जौं सिय भवन रहै कह अंबा । मोहि कहँ होइ बहुत अवलंबा ॥  
 सुनि रघुवीर मातु प्रिय बानी । सील सनेह सुधाँ जनु सानी ॥  
 दो०—कहि प्रिय वचन विवेकमय कोन्हि मातु परितोष ।

लगे प्रबोधन जानकिहि प्रगटि विपिन गुन दोष ॥ ६० ॥

### मासपारायण, चौदहवाँ विश्राम

मातु समीप कहत सकुचाहीं । बोले समउ समुझि मन माहीं ॥  
 राजकुमारि सिखावनु सुनहू । आन भाँति जियँ जनि कछु गुनहू  
 आपन मोर नीक जौं चहहू । वचनु हमार मानि गृह रहहू ॥

मोर सासु सेवकाई । सब विधि भामिनि भवन भलाई  
 एहि ते अधिक धरमु नहिं दूजा । सादर सासु ससुर पद पूजा ॥  
 जव जव मातु करिहि सुधि मोरी । होइहि प्रेम विकल मति भोरी ॥  
 तव तव तुम्ह कहि कथा पुरानी । सुंदरि समुझाएहु मृदु बानी ॥  
 कहउँ सुभायँ सपथ सत मोही । सुमुखि मातु हित राखउँ तोही ॥

दो०—गुर श्रुति संमत धरम फलु पाइअ दिनहिं कलेस ।

हठ बस सब संकट सहे गालव नहुष नरेस ॥ ६१ ॥

मैं पुनि करि प्रवान पितु बानी । बेगि फिरव सुनु सुमुखि सयानी ॥

दिवस जात नहि लागिहि वार । सुंदरि सितवनु सुनहु हमारा ॥  
जौ हठ करहु प्रेम बस बामा । तौ तुम्ह दुखु पाउव परिनामा ॥  
काननु कठिन भयंकर भारी । घोर घामु हिम थारि बयारी ॥  
कुस कंटक मग काँकर नाना । चलव पयादेहि बिनु पदत्राना ॥  
चरन कमल मृदु मंजु तुम्हारे । मारग अगम भूमिधर भारे ॥  
कंदर खोह नदी नद नारे । अगम अगाध न जाहि निहारे ॥  
माछ बाघ बृक केहरि नागा । करहि नाद मुनि धीरशु भागा ॥

दो०—भूमि सयन पल्लव बसन असनु कंद फल मूल ।

ते कि सदा सब दिन मिलहिं सयुह समय अनुकूल ॥ ६२ ॥

नर अहार रजनीचर चरही । कण्ठ बेध विधि कोटिक करही ॥  
लागइ अति पहर कर पानी । विपिन विपति नहि जाइ बखानी  
ब्याल कराल बिहग बन घोरा । निसिचर निकर नारि नर चोरा ॥  
हरपहिं धीर गहन मुधि आएँ । मृगलोचनि तुम्ह भीरु सुभाएँ ॥  
हंसगयनि तुम्ह नहि बन जोगू । मुनि अपजसु मोहि देखि लोगू ॥  
मानस छलिल सुधौं प्रतिपाली । जिअइ कि लयन पयोधि मराली  
नय रसाल बन बिहरनसीला । सोइ कि कोकिल विपिन करीला  
रहहु भवन अस हृदयें बिचारी । चदवदनि दुखु कानन भारी ॥

दो०—सहज सुहृद शुर स्वामि सिर जो न करइ सिर मानि ।

सो पछिनाइ अघाइ उर अवसि होइ हित हानि ॥ ६३ ॥

मुनि मृदु बचन मनोहर पिय के । लोचन



सीतल सिख दाहक भइ कैसैं । चकइहि सरद चंद निशि जैसैं ॥  
 उतर न आव विकल वैदेही । तजन चहत सुचि स्वामि सनेही  
 बरवस रोकि विलोचन बारी । धरि धीरजु उर अवनिकुमारी ॥  
 लागि सासु पग कह कर जोरी । छमवि देवि बड़ि अविनय मोरी ॥  
 दीन्हि प्रानपति मोहि सिख सोई । जेहि विधि मोर परम हित होई ॥  
 मैं पुनि समुझि दीखि मन माहीं । पिय वियोग सम दुखु जग नाहीं  
 दो०—प्राननाथ करुनायतन सुंदर सुखद सुजान ।

तुम्ह बिनु रघुकुल कुमुद विधु सुरपुर नरक समान ॥६४॥  
 मातु पिता भगिनी प्रिय भाई । प्रिय परिवारु सुहृद समुदाई ॥  
 सासु ससुर गुर सजन सहाई । सुत सुंदर सुसील सुखदाई ॥  
 जहँ लगि नाथ नेह अरु नाते । पिय बिनु तियहि तरनिहु ते ताते  
 तनु धनु धामु धरनि पुर राजू । पति बिहीन सबु सोक समाजू ॥  
 भोग रोगसम भूषन भारू । जम जातना सरिस संतारू ॥  
 प्राननाथ तुम्ह बिनु जग माहीं । मो कहूँ सुखद कतहुँ कछु नाहीं  
 जिय बिनु देह नदी बिनु बारी । तैसिअ नाथ पुरुष बिनु नारी ॥  
 नाथ सकल सुख साथ तुम्हारें । सरद विमल विधु बदन निहारें ॥  
 दो०—खग नृग परिजन नगरु वनु बलकल विमल दुकूल ।

नाथ साथ सुरसदन सम परनसाल सुख मूल ॥६५॥  
 बनदेवीं बनदेव उदारा । करिहहिं सासु ससुर सम सारा ॥  
 कुस किसलय साधरी सुहाई । प्रभु सँग मंजु मनोज तुराई ॥

कद मूल फल अमिअ अहारू । अवध सौष सत सरिस गहारू ॥  
छिनु छिनु प्रभु पद कमल बिलोकी । रदिहउं मुदित दिवस जिमि कोकी  
वन दुख नाथ कहे बहुतेरे । भय विषाद पारताप घनेरे ॥  
प्रभु विषोग लखलेस समाना । सब मिलि होहि न कृपानिधाना  
अस जियें जानि सुजान सिरोमनि । लेइअ सग मोहि छाड़िअ जनि  
बिनती बहुत करौ का स्वामी । कदनामय उर अंतरजामी ॥

दो०—राखिअ अवध जो अवधि छगि रहत न जनिअहिं प्रान ।

दीनबंधु सुंदर सुखद सील सनेह निधान ॥ ६५ ॥

गोहि मग चलत न होइहि हारी । छिनु छिनु चरन मरोज निहारी ॥  
सगहि भौंति पिय सेवा करिही । मारग जनिन सकल भ्रम हरिही ॥  
पाय पखारि बैठि तरु छाहीं । करिहउं बाउ मुदित मनु माहीं ॥  
धम कन सहित स्याम तनु देखैं । कहैं दुख समउ प्राज्ञपति पैखैं ॥  
सम महि तून लखलख डाखी । पाय पलोइहि सब निशि दाखी ॥  
बार बार मृदु मूरति जोही । लगिहि तात ब्यारि न मोही ॥  
को प्रभु सँग मोहि चितबनिहारा । सिंधवधुहि जिमि ससक रिआरा  
सैं सुकुमारि नाथ वन जोयू । तुम्हहि उचित तप मो कहूँ भोगू

दो०—ऐमेउ बचन कछोर सुनि जौ न हृदउ बिलगान ।

सौ प्रभु विषम विषोग दुख सहिइहिं पारैर प्रान ॥ ६७ ॥

अस कहि सीय त्रिकल भद मारी । बचन विषोगु न सकी सँमारी ॥  
देखि दसा रघुगति जियें जाना । हठि राखैं नहिं राखिदि प्राना ॥

कहेउ कृपाल भानुकुलनाथा । परिहरि सोचु चलहु वन साथी ॥  
 नहिं विषाद कर अवसरु आजू । वेगि करहु वन गवन समाजू ॥  
 कहि प्रिय वचन प्रिया समुझाई । लगे मातु पद आसिष पाई ॥  
 वेगि प्रजा दुख भेटव आई । जननी निठुर विसरि जनि जाई ॥  
 फिरिहि दसा विधि बहुरि कि मोरी । देखिहउँ नयन मनोहर जोरी  
 सुदिन सुधरी तात कव होइहि । जननी जिअत वदन विधु जोइहि  
 दो०—बहुरि वच्छ कहि लालु कहि रघुपति रघुवर तात ।

कवहिं बोलाइ लगाइ हियँ हरषि निरखिहउँ गात ॥ ६८ ॥

लखि सनेह कातरि महतारी । वचनु न आव विकल भइ भारी  
 राम प्रबोधु कीन्ह विधि नाना । समउ सनेहु न जाइ बखाना ॥  
 तव जानकी सासु पग लागी । सुनिअ माय मैं परम अभागी ॥  
 सेवा समय दैअँ वनु दीन्हा । मोर मनोरथु सफल न कीन्हा ॥  
 तजव छोभु जनि छाड़िअ छोहू । करमु कठिन कछु दोसु न मोहू ॥  
 सुनि सिय वचन सासु अकुलानी । दसा कवनि विधि कहौ बखानी  
 बारहिं बार लाइ उर लीन्ही । धरि धीरजु सिख आसिष दीन्ही  
 अचल होउ अहिवातु तुम्हारा । जव लगि गंग जमुन जल धारा ॥  
 दो०—सीतहि सासु असीस सिख दीन्हि अनेक प्रकार ।

चली नाइ पद पदुम सिरु अति हित बारहिं बार ॥ ६९ ॥

समाचार जव लछिमन पाए । व्याकुल बिलख वदन उठि धाए ॥  
 कंप पुलक तनु नयन सनीरा । गहे चरन अति प्रेम अधीरा ॥

कहि न सकत कछु चितवत ठाढ़े । मीनु दीन जनु जल तें काढ़े ॥  
 सोचु हृदयें विधि का होनिहारा । सुख सुख सुकृनु सिरान हमारा ॥  
 मो कहूँ काह कहव रघुनाथा । रखिहहिं भवन कि लेहहिं साथा ॥  
 राम बिलोकि बंधु कर. जोरें । देह गेह सब सन तृनु तोरें ॥  
 बोले बचनु राम नय नागर । सील सनेह सरल सुख सागर ॥  
 तात प्रेम बस जनि कदराहू । समुझि हृदयें परिनाम उछाहू ॥

दो०—मातु पिता गुरु स्वामि सखि सिर धरि कसहिं सुभायें ।

सहेड लाभु तिन्ह जनम कर ननरु जनमु जग जायें ॥००॥

अस जियें जानि मुनहु सखि भाई । करहु मातु पितु पद सेवकाई ॥  
 भयन भरतु रिपुसूदन नारी । राठ बृद्ध मम दुखु मन मारी ॥  
 मैं बन जाउँ तुम्हहि लेद साया । होइ सगहि विधि अवध अनाया ॥  
 गुरु पितु मातु प्रजा परियारू । सब कहूँ परद दुसह दुख भारू ॥  
 रहहु करहु सब कर परितोषू । नतरु तात होइहि बह दोषू ॥  
 जामु राज प्रिय प्रजा दुखारी । सो नृपु अयसि नरक अधिकारी ॥  
 रहहु तात असि नीति बिचारी । मुनत लखनु भए न्याकुल भारी ॥  
 सिअरें बचन सुखि गए कैसें । परस्त तुहिन तामरसु जैसें ॥

दो०—उतह न भावत प्रेम बस गहे चरन अकुन्ताह ।

नाथ दासु मैं स्वामि तुम्ह तजहु त काह बसाह ॥ ०१ ॥

ईन्हि मोहि सखि नीकि गोसाई । लागि अगम अपनी कदराई ॥  
 नरवर धीर धरम धुर धारी । निगम नीति कहूँ ते अधिकारी ॥

मैं सिसु प्रभु सनेहँ प्रतिपाला । मंदरु मेरु कि लेहिं मराला ॥  
 गुर पितु मातु न जानउँ काहू । कहउँ सुभाउ नाथ पतिआहू ॥  
 जहँ लगि जगत सनेह सगाई । प्रीति प्रतीति निगम निजु गाई ॥  
 मोरें सबइ एक तुम्ह स्वामी । दीनबंधु उर अंतरजामी ॥  
 धरम नीति उपदेसिअ ताही । कीरति भूति सुगति प्रिय जाही ॥  
 मन क्रम बचन चरन रत होई । कृपासिंधु परिहरिअ कि सोई ॥  
 दो०—करुनासिंधु सुबंधु के सुनि मृदु बचन विनीत ।

समुझाए उर लाह प्रभु जानि सनेहँ सभोत ॥ ७२ ॥

मागहु विदा मातु सन जाई । आवहु बेगि चलहु वन भाई ॥  
 मुदित भए सुनि रघुवर बानी । भयउ लाभ बड़ गइ बड़ि हानी ॥  
 हरपित हृदयँ मातु पहिं आए । मनहुँ अंध फिरि लोचन पाए ॥  
 जाइ जननि पग नायउ माथा । मनु रघुनंदन जानकि साथी ॥  
 पूँछे मातु मलिन मन देखी । लखन कही सब कथा विसेषी ॥  
 गई सहमि सुनि बचन कठोरा । मृगी देखि दव जनु चहु ओरा ॥  
 लखन लखेउ भा अनरथ आजू । एहिं सनेह बस करब अकाजू ॥  
 मागत विदा सभय सकुचाहीं । जाइ संग विधि कहिहि कि नाहीं ॥

दो०—समुझि सुमित्राँ राम सिय रूपु सुसीलु सुभाउ ।

नृप सनेहु लखि धुनेउ सिरु पापिनि दीन्ह कुदाउ ॥ ७३ ॥

धीरजु धरेउ कुअवसर जानी । सहज सुहृद बोली मृदु बानी ॥  
 तात तुम्हारि मातु वैदेही । पिता रामु सब भौंति सनेही ॥

अवध तहाँ जहँ राम निवास । तहँहँ दिवसु जहँ भानु प्रकाश ॥  
 जौ पै सीय राम बन जाहीं । अवध तुम्हार काहु कहु नाहीं ॥  
 गुर पितु मातु बंधु मुर आरै । सेइ आहि सकल प्रान की नारै ॥  
 राम प्रानप्रिय जीवन जी के । स्वारथ रहित सखा सखी के ॥  
 पूजनप्रिय प्रिय परम जहाँ तैं । सब मानिआहि राम के नानैं ॥  
 अस जियैं जानि संग बन जाहू । नेहु तात जग जीवन लाहू ॥

श्लोक—पूरि भाग भाजनु भयहु मोहि समेत बलि जाई ।

जौ तुम्हरेँ मन छाडि छलु कीन्ह राम पद छारै ॥ ७४ ॥

पुत्रवती जुवती जग छोड़ । खुर्यति भगनु जासु सुनु दोरै ॥  
 नतक शोभ मलि पादि बिआनी । राम विमुरा सुत तैं हिन जानी ॥  
 तुम्हरेहि भाग राम बन जाहीं । दूसर हेनु तात कहु नाहीं ॥  
 सकल मुकृत कर चढ़ पलुण्ड । राम सीय पद सहज स्नेह ॥  
 राग रोष हरिषा मदु मोह । जनि करनेहुँ एन्ह के यस होहू ॥  
 सकल प्रकार विकार विहार । मन क्रम बचन करेहु सेवकार ॥  
 तुम्ह कहूँ बन सब भौंति सुपाय । संग पितु मातु राम सिय जाय ॥  
 जेहि न राम बन लहहि कलेय । मुत सोइ करेहु इहर उपदेय ॥

श्लोक—उपदेसु यहु जेहि तान तुम्हरे राम सिय सुख पावहीं

पितु मातु प्रिय परिकार पुर मुन्य मुरनि बन विमरावहीं ॥

सुलामी प्रभुहि सिख देह आपसु दोन्ह पुनि

रति होइ अविरल अमल सिय रघुबीर पद

सो०-मातु चरन सिरु नाइ चले तुरत संकित हृदयै ।

यागुर बिषम तोराइ मनहुँ भाग मृगु भाग बस ॥ ७५ ॥

गए लखनु जहँ जानकिनाथू । भे मन मुदित पाइ प्रिय साथू ॥  
 वंदि राम सिय चरन सुहाए । चले संग नृपमंदिर आए ॥  
 कहहिं परसपर पुर नर नारी । भलि बनाइ विधि बात विगारी ॥  
 तन कृस मन दुखु वदन मलीने । विकल मनहुँ माखी मधु छीने ॥  
 कर मीजहिं सिरु धुनि पछिताहीं । जनु विनु पंख विहग अकुलाहीं ॥  
 भइ बड़ि भीर भूप दरबारा । वरनि न जाइ बिषादु अपारा ॥  
 सचिवँ उठाइ राउ बैठारे । कहि प्रिय वचन राम पगु धारे ॥  
 सिय समेत दोउ तनय निहारी । व्याकुल भयउ भूमिपति भारी ॥

दो०-सीय सहित सुत सुभग दोउ देखि देखि अकुलाइ ।

बारहिं बार सनेह बस राउ लेइ उर लाइ ॥ ७६ ॥

सकइ न बोलि विकल नरनाहू । सोक जनित उर दारुन दाहू ॥  
 नाइ सीसु पद अति अनुरागा । उठि रघुबीर बिदा तत्र मागा ॥  
 पितु असीस आयसु मोहि दीजै । हरष समय विसमउ कत कीजै ॥  
 तात किँ प्रिय प्रेम प्रमादू । जसु जग जाइ होइ अपवादू ॥  
 सुनि सनेह बस उठि नरनाहाँ । बैठारे रघुपति गहि बाहाँ ॥  
 सुनहु तात तुम्ह कहँ मुनि कहहीं । राम चराचर नायक अहहीं ॥  
 सुभ अरु असुम करम अनुहारी । ईसु देइ फल हृदयँ विचारी ॥  
 करइ जो करम पाव फल सोई । निगम नीति असि कह सबु कोई

दो०-और करे अपराधु कोठ और पाव फल भोग ।

अति विचित्र भगवंत गति को जग जाने जोग ॥ ७७ ॥

रायँ राम राखन हित लागी । बहुत उपाय किए छलु त्यागी ॥  
 हाथी राम रख रहत न जाने । घरम धुरंधर धीर स्याने ॥  
 तब नृप सीय लाह उर लीन्ही । अति हित बहुत भौंति मिल दीन्ही  
 कहियन के दुख दुखह सुनाए । सासु समुर पितु मुख समुझाए ॥  
 मिय मनु राम चरन अनुरागा । घर न मुगमु यनु बिपमु न लागी  
 औरउ सबहिं सीय समुझाई । कहि कहि विपिन विपति अधिकारि  
 सचिव नारि गुर नारि स्यानी । सहित सनेह कहहि मृदु बानी ॥  
 तुम्ह कहँ तौ न दीन्ह बनबाहू । करहु जो कहहि मसुर गुर साहू ॥  
 दो०-सिख सीतलि हित मधुर मृदु मुनि सीतहि न सोहानि ।

सरद चंद चंदिनि लगात जनु चकई अकुलानि ॥ ७८ ॥

सीय सकुच बस उतर न देई । सो मुनि तमकि लठी कैकेई ॥  
 मुनि पट भूषन भाजन आनी । आगें धरि बोली मृदु बानी ॥  
 नृपहि प्रानप्रिय तुम्ह रघुबीरा । सील सनेह न छादिदि भीरा ॥  
 मुहुनु मुजमु परलोक नसाऊ । तुम्हहि जान बन कहिदि न काऊ  
 अस विचारि सोइ करहु जो भावा । राम जननि सिख मुनि मुख पावा  
 भूपहि बचन बानसम लागे । कहहि न प्रान प्यान अभागे ॥  
 लोग बिचल मुरुछित नरनाहू । काह करिअ कछु सूझ न काहू ॥  
 राम गुरत मुनि बेषु बनाई । चले जनक जननिहि सिह नाई ॥



दो०—सजि वन साजु समाजु सबु बनिता बंधु समेत ।

बंदि विप्र गुर चरन प्रभु चले करि सबहि अचेत ॥ ७९ ॥

निकसि बसिष्ठ द्वार भए ठाढ़े । देखे लोग विरह दव दाढ़े ॥  
 कहि प्रिय वचन सकल समुझाए । विप्र बृंद खुबरी बोलाए ॥  
 गुर सन कहि बरपासन दीन्हे । आदर दान विनय बस कीन्हे ॥  
 जाचक दान मान संतोषे । मीत पुनीत प्रेम परितोषे ॥  
 दासी दास बोलाइ बहोरी । गुरहि सौं पि बोले कर जोरी ॥  
 सब कै सार सँभार गोसाईं । करवि जनक जननी की नाई ॥  
 बारहिं बार जोरि जुग पानी । कहत रामु सब सन मृदु बानी ॥  
 सोइ सब भौंति मोर हितकारी । जेहि तैं रहै भुआल सुखारी ॥  
 दो०—मातु सकल मोरे बिरहैं जेहिं न होहिं दुख दीन ।

सोइ उपाउ तुम्ह करेहु सब पुर जन परम प्रवीन ॥ ८० ॥

एहि विधि राम सबहि समुझावा । गुर पद पदुम हरपि सिरु नावा ॥  
 गनपति गौरि गिरीसु मनाई । चले असीस पाइ खुराई ॥  
 राम चलत अति भयउ विषादू । सुनि न जाइ पुर आरत नादू ॥  
 कुसगुन लंक अवध अति सोकू । हरष विषाद विवस सुरलोकू ॥  
 गइ मुरुछा तब भूपति जागे । बोलि सुमंत्रु कहन अस लागे ॥  
 रामु चले वन प्रान न जाहीं । केहि सुख लागि रहत तन माहीं ॥  
 एहि तैं कवन व्यथा बलवाना । जो दुखु पाइ तजहिं तनु प्राना ॥  
 पुनि धरि धीर कहइ नरनाहू । लै रथु संग सखा तुम्ह जाहू ॥

दो०-सुठि सुकुमार कुमार दोउ जनकसुता सुकुमारि ।  
 रथ चढ़ाई देखराइ वनु कियेहु गएँ दिन पारि ॥ ८१ ॥  
 जौ नहिं फिरहिं पीर दोउ भारी । सत्यसथ हृदयत रघुगार ॥  
 तौ तुम्ह चिनय करेहु कर जोरी । पेरिअ प्रभु मिथिलेग कियोरी ॥  
 जब सिय कानन देखि डेरारं । कहेंहु मोरि सित अयगद पारं ॥  
 सासु समुर अस कहेंउ मँदेग । पुत्रि फिरिअ वन बहुत कलेग ॥  
 पितृग्रह कबहुँ कबहुँ समुसारी । रहेहु जहाँ रुचि होइ गुहागि ॥  
 यहि विधि करेहु उपाय कदंबा । फिरत तहोइ प्रान अयगद ॥  
 गहिं त मोर मरनु परिनामा । कहु न वगार भएँ विधि पाया ॥  
 अस कहि मुखछि परा महि राज । रामु लखनु गिय आनि देग्याऊ ॥  
 ०-पाइ रजायसु नाइ सिद्ध रघु भनि बेग बनाइ ।  
 गयउ जहाँ बाहेर नगर सीध सहित दोउ भाइ ॥ ८२ ॥  
 सुमंत्र नृप बचन सुनाए । करि बिनती रथ गायु चढ़ाए ॥  
 रथ भीष सहित दोउ भारी । चले हृदय अर्थाइ गिर नाई ॥  
 रामु लगि भवथ अनाया । रिक्कत संग मय मांगे जाया ॥  
 कहु बहुरिधि समुसारहिं । फिरहिं प्रेम वन पुनि गिरि आरहिं ॥  
 अथ मयावनि मारी । मानहुँ कायगानि ओं वधारी ॥  
 उमन दुर ना लागे । टारहिं पकड़ि एक निगारी ॥  
 न लाग्यन अनु भूष । मुनिलि मरु मरुनु मरुनु ॥  
 विरन बेग दुर्निदारी । मरु मरुनु मरुनु मरुनु ॥

दो०—हय गय कोटिन्ह केलिमृग पुरपसु चातक मोर ।

पिक रथांग सुक सारिका सारस हंस चकोर ॥ ८३ ॥

राम वियोग विकल सत्र ठाढ़े । जहँ तहँ मनहुँ चित्र लिखि काढ़े  
नगर सफल वन गहवर भारी । खग मृग विपुल सकल नर नारी  
विधि कैकई किरातिनि कीन्ही । जेहिँ दव दुसह दसहुँ दिसि दीन्ही  
सहि न सके रघुवर बिरहागी । चले लोग सत्र व्याकुल भागी ॥  
सत्रहिँ विचार कीन्ह मन माहीं । राम लखन सिय विनु सुख नाहीं  
जहाँ रामु तहँ सबुइ समाजू । विनु रघुवीर अवध नहिँ काजू ॥  
चले साथ अस मंत्रु दृढ़ाई । सुर दुर्लभ सुख सदन बिहाई ॥  
राम चरन पंकज प्रिय जिन्हही । विषय भोग बस करहिँ कि तिन्हही

दो०—बालक वृद्ध बिहाइ गृहँ लगे लोग सब साथ ।

तमसा तीर निवासु किय प्रथम दिवस रघुनाथ ॥ ८४ ॥

रघुपति प्रजा प्रेमवस देखी । सदय हृदयँ दुखु भयउ विसेयी ॥  
करुनामय रघुनाथ गोसाँई । बेगि पाइअहिँ पीर पराई ॥  
कहि सप्रेम मृदु वचन सुहाए । बहुविधि राम लोग समुझाए ॥  
किए धरम उपदेस घनेरे । लोग प्रेम बस फिरहिँ न फेरे ।  
सीछु सनेहु छाड़ि नहिँ जाई । असमंजस बस भे रघुराई ।  
लोग सोग श्रम बस गए सोई । कछुक देवमायाँ मति मोई ।  
जबहिँ जाम जुग जाभिनि वीती । राम सचिव सन कहेउ सप्रीती  
खोज मारि रघु हाँकहु ताता । आन उपायँ बनिहि नहिँ बाता

दो०-राम सखन सिध जान चदि मंभु चरन सिरु नाइ ।

सचिवै चलायउ मुरत रथु इत उन खोज दुराइ ॥ ८५ ॥

जागे सकल लोग भएँ मोरु । गे रघुनाथ भयउ अनि सोरु ॥  
रथ कर खोज कतहुँ नहिँ पावहिँ । राम राम कहि चहुँ दिशि धायहिँ ॥  
मनहुँ पारिनिधि बूझ जहानू । भयउ विकल बड़ बनिऊ समानू ॥  
एकहिँ एक देहिँ उपदेनू । तजे राम हम जानि कलेनू ॥  
निदहिँ आपु सराहहिँ सीना । धिम जोवनु रघुवीर बिदीना ॥  
जाँवै प्रिय वियोगु विधि कीन्हा । तौ कस मरनु न मागे दीन्हा ॥  
एहिँ विधि करत प्रलान कलाया । आएँ अवध भरे परिताया ॥  
रियम वियोगु न जाइ सखाना । अवधि आम सच राखहिँ प्राना ॥  
दो०-राम दरम हित नेम मन लगे करन नर नारि ।

मनहुँ कोक कोक्री कमल दीन बिहीन तमारि ॥ ८६ ॥

सीना सचिव सहित दोउ भाई । सुगवेरपुर पहुँचे जाई ॥  
उतरे राम देवघरि देखी । कीन्ह दडवत हरणु विसेयी ॥  
सखन सचिवै भियँ किए प्रनामा । सचहिँ सहित सुखु पायउ रामा ॥  
गंग सकल मुद मंगल मूला । सच सुख करनि हरनि सच गुला ॥  
कहिँ कहिँ कोंटिक कथा प्रसंगा । रामु बिलोकहिँ गंग तरंगा ॥  
सचिवहिँ अनुजहिँ प्रियहिँ सुनाई । विबुध नदी महिमा अधिकारि ॥  
मजनु कीन्ह पंथ भ्रम गयऊ । सुचि जलु पिअत मुदित मन भयऊ ॥  
मुमिरत जाहिँ भिटइ भ्रम मारु । तेहिँ भ्रम यह लौकिक न्यवहारु ॥

दो०—सुदृ सच्चिदानंदमय कंद भानुकुल केतु ।

चरित करत नर अनुहरत संसृति सागर सेतु ॥ ८७ ॥

यह सुधि गुहँ निषाद जय पाई । मुदित लिए प्रिय बंधु बोलाई ॥  
 लिए फल मूल भेंट भरि भारा । मिलन चलेउ हियँ हरषु अपारा ॥  
 करि दंड्यत मेंट धरि आगँ । प्रभुहि विलोकत अति अनुरागँ ॥  
 सहज स्नेह वियस खुराई । पूँछी कुत्तल निकट बैठाई ॥  
 नाथ कुत्तल पद पंकज देखँ । भयउँ भागभाजन जन लेखँ ॥  
 देव धरनि धनु धामु तुम्हारा । मैं जुनु नीनु सहित परिवारा ॥  
 कृपा करिअ पुर धारिअ पाऊ । थापिय जुनु सत्रु लोगु तिहाऊ ॥  
 कहेहु सत्य सत्रु सखा सुजाना । मोहि दीन्ह पितु आयसु आना ॥

१०—वरष चारिदस वासु वन मुनि व्रत बेपु अहार ।

ग्राम वासु नहिं उचित सुनि गुहहि भयउ दुस्रु भार ॥ ८८ ॥

राम लखन सिय रूप निहारी । कहहिं सप्रेम ग्राम नर नारी ॥  
 ते पितु मातु कहहु सखि कैते । जिन्ह पठए वन बालक ऐते ॥  
 एक कहहिं भल भूपति कीन्हा । लोचन लाहु हमहि विधि दीन्हा ॥  
 तव निषादपति उर अनुमाना । तर तिनुपा मनोहर जाना ॥  
 लै खुनाथहि ठाउँ देखावा । कहेउ राम स्व भौंति सुहावा ॥  
 पुरजन करि जोहार घर आए । खुबर संघ्या करन तिधाए ॥  
 गुहँ सँवारि साँथरी डचाई । कुत किसलयमय मृदुल सुहाई ॥  
 मुनि फल मूल मधुर मृदु जानी । दोना भरि भरि राखेति पानी ॥

दो०-सिय सुमंत्र आता महिन कंद मूल फल खाइ ।

सयन कीन्ह खुबंममनि पाय पलोहन भाइ ॥ ८९ ॥

उठे लखनु प्रभु सोयत जानी । कहि सचिबहि सोवन मृदु बानी ॥  
 कछुक दूरि सजि दान सरासन । जागन लगे बैठि बोरसन ॥  
 गुहँ सोलाइ पाइय प्रतीती । ठायँ ठायँ राखे अति प्रीती ॥  
 आपु लखन पहि बैठेउ जाई । कहि भायी मर चाप चढ़ाई ॥  
 सोयन प्रभुहि निहारि निपाइ । भयउ प्रेम बस हृदयँ विषाडू ॥  
 तनु पुलकिन जलु लोचन बहरँ । बचन सप्रेम लखन मन कहरँ ॥  
 भूरति भयन मुभायँ मुदाया । मुरपति मदन न पटतर पाया ॥  
 मनिमय रचित चारु चौधारे । अनु रतिरनि निज हाथ सँधारे ॥

दो०-सुवि सुविधिअ सुभोगमय सुमन सुगंध सुवास ।

पहँग मंहु मनिदीप जहँ सब विधि सकल सुपाय ॥ ९० ॥

विधि बसन उपधान तुराई । छीर केन मृदु विमद मुदाई ॥  
 तहँ सिय रामु सयन निसि करही । निज छवि रति मनोज महु हरही ॥  
 ते सिय रामु सायरी सोए । भ्रमिन बसन विनु जाहि न जोए ॥  
 मातु पिता परिजन पुरवार्मी । सत्ता सुधीन दास अरु दार्शन ॥  
 लोगवहिं जिन्हहि मान की नाहै । महि सोयन तेर राम गोसाई ॥  
 पिता जनक जग विदित प्रमाऊ । समुह सुरेस सत्ता खुगाऊ ॥  
 रामचंद्रु पति सो बैदेही । सोयन महि विधि बामन बैही ॥  
 सिय खुशीर कि कानन जोगू । करम प्रधान सत्य कह लोगू ॥

तुम्ह सन तात बहुत का कहऊँ । दिउँ उतर फिरि पातकु लहऊँ ॥

दो०—पितु पद गहि कहि कोटि नति विनय करव कर जोरि ।

चिंता कबनिहु बात कै तात करिअ जनि मोरि ॥ ९५ ॥

तुम्ह पुनि पितु सम अति हित मोरें । विनती करउँ तात कर जोरें ॥

सब विधि सोइ करतव्य तुम्हारें । दुख न पाव पितु सोच हमारें ॥

सुनि रघुनाथ सचिव संवादू । भयउ सपरिजन विकल निषादू ॥

पुनि कछु लखन कही कटु बानी । प्रभु बरजे बड़ अनुचित जानी ॥

सकुचि राम निज सपथ देवाई । लखन सँदेसु कहिअ जनि जाई ॥

कह सुमंत्रु पुनि भूप सँदेसू । सहि न सकिहि सिय विपिन कलेसू ॥

जेहि विधि अवध आव फिरि सीया । सोइ रघुबरहि तुम्हहि करनीया ॥

नतर निपट अवलंब विहीना । मैं न जिअव जिमि जल विनु मीना ॥

दो०—मइकें ससुरें सकल सुख जवहिं जहाँ मनु मान ।

तहँ तब रहिहि सुखेन सिय जब लगि विपति विहान ॥ ९६ ॥

विनती भूप कीन्ह जेहि भाँती । आरति प्रीति न सो कहि जाती ॥

पितु सँदेसु सुनि कृपानिधाना । सियहि दीन्ह सिख कोटि विधाना ॥

सासु ससुर गुर प्रिय परिवारू । फिरहु त सब कर मिटै खमारू ॥

सुनि पति वचन कहति बैदेही । सुनहु प्रानपति परम सनेही ॥

प्रभु करुनामय परम बिबेकी । तनु तजि रहति छाँह किमि छेंकी ॥

प्रभा जाइ कहँ भानु विहाई । कहँ चंद्रिका चंदु तजि जाई ॥

पतिहि प्रेममय विनय सुनाई । कहति सचिव सन गिरा सुहाई ॥

तुम्ह पिनु समुर गरिब हितकारी। उतर देउँ फिरि अनुचित भारी॥

श्लो०—आरति सम मनमुख भदूर्ते विलगु न मानव साठ ।

आरजसुत पद कमल बिनु यदि जहाँ लगि नाव ॥ ९३ ॥

पिनु वैभव विलाम मैं डीठा। नृप मनि मुकुट मिलित पद पीठा

मुखनिधान अम पिनु यह मोरें। पिय बिहीन मन भाव न भोरें ॥

समुर चक्रवर्त्त कोसलराऊ। भुवन चारिदस प्रगट प्रभाऊ ॥

आगें होर जेहि गुरपति लेई। अरध सिपासन आसनु देई ॥

समुद्र एतादस अथ निपासू। प्रिय परियाह मातु सम सासू ॥

बिनु एपति पद पदुम परागा। मोहि केउ सपनेहुँ सुखद न लागा

अगम पंथ बनभूमि पहारा। करि केहरि सर सरित अगारा ॥

कोल किरात कुरंग बिहंगा। मोहि सय सुखद प्रानपति संग्गा ॥

श्लो०—सासु समुर सन मोरि हुँति विनय करबि परि पायें ।

मोर सोचु जनि करिअ कहु मैं बन सुखी सुभायें ॥ ९४ ॥

प्राननाथ प्रिय देवर साधा। सीर धुरीन धरें धनु भाषा ॥

नहिं भग धनु अमु दुख मन मोरें। मोहि लगि सोचु करिअ जनि भोरें

मुनि मुमंशु सिय सीतलि बानी। भयउ बिकल जनु पनि मनि हानी

नयन सूख नहिं सुनइ न काना। कहि न सकइ कहु अति अकुलाना

राम प्रबोधु कीन्ह बहु भौंती। तदपि होति नहिं सीतलि छाती ॥

जतन अनेक साथ हित कीन्हे। उचित उतर एनंदन दीन्हे ॥

मेरि जाइ नहिं राम रजाई। कठिन करम गरि ॥



राम लखन सिय पद सिरु नाई । फिरेउ वनिक जिमि मूर गवाई ॥

दो०—रथु हाँकेउ हय राम तन हेरि हेरि हिहिनाहिं ।

देखि निषाद बिषादवस धुनहिं सीस पछिताहिं ॥ ९९ ॥

जासु बियोग विकल पसु ऐसैं । प्रजा मातु पितु जिइहहिं कैसैं ॥

बरवस राम सुमंत्रु पठाए । सुरसरि तीर आपु तब आए ॥

मागी नाव न केवटु आना । कहइ तुम्हार मरमु में जाना ॥

चरन कमल रज कहूँ सत्रु कहई । मानुष करनि मूरि कछु अहई ॥

छुअत सिला भइ नारि सुहाई । पाहन तैं न काठ कठिनाई ॥

तरनिउ मुनि धरिनी होइ जाई । बाट परइ मोरि नाव उड़ाई ॥

एहिं प्रतिपालउँ सत्रु परिवारू । नहिं जानउँ कछु अउर कवारू ॥

जौ प्रभु पार अवसि गा चहहू । मोहि पद पदुम पखारन कहहू ॥

छं०—पद कमल धोइ चढ़ाई नाव न नाथ उतराई चहौं ।

मोहि राम राउरि आन दसरथ सपथ सब साची कहौं ॥

बरु तीर मारहुँ लखनु पै जव लगि न पाय पखारिहौं ।

तब लगि न तुलसीदास नाथ कृपाल पारु उतारिहौं ॥

सो०—सुनि केवट के बैन प्रेम् लपेटे अटपटे ।

बिहसे करुनाएन चितइ जानकी लखन तन ॥ १०० ॥

कृपासिंधु बोले मुसुकाई । सोइ करु जेहिं तव नाव न जाई ॥

वेगि आनु जल पाय पखारू । होत बिलंबु उतारहि पारू ॥

जासु नाम सुमिरत एक बारा । उतरहिं नर भवसिंधु अपारा ॥

सोइ कृपालु केवटहि निहोरा । जेहिं जगु क्रिय तिहु पगहु ते थोरा ।  
पद नख निरखि देवसरि हरणी । मुनि प्रभु यचन मोहैं मति करणी ।  
केवट राम रजायसु पाया । पानि कटवता भरि लेइ आया ।  
अति आनंद उमगि अनुरागा । चरन सरोज पग्वारन लागा ।  
बरणि मुमन सुर मकल सिद्धानी । एहि सम पुन्यपुंज कोउ नाहीं ।

दो०—पद पत्थारि जलु पान करि आपु महित परिवार ।

वितर पारु करि प्रभुहि पुनि मुदित गयइ सेइ पार । १०१ ।

उत्तरि ठाढ़ भए सुरसरि रेता । सीय रामु गुह लखन समेता ॥  
केवट उत्तरि दंडवत फीन्हा । प्रभुहि सकुच एहि नहिं कछु दीन्हा ।  
पिय हिय की सिय जाननिहारी । मनि मुदरी मन मुदित उतारी ॥  
कहेउ कृपालु लेहि उतगई । केवट चरन गहे अकुलार्इ ॥  
नाथ आजु मैं काह न पाया । भिटे दोष दुख दारिद दाया ॥  
बहुत काल मैं कीन्हि मगरी । आजु दीन्ह विधि बनि भलि भूरी ॥  
अब कछु नाम न चाहिअ मोरें । दीनदयाल अनुमह तोरें ॥  
विरती बार मोहि जो देया । सो प्रसादु मैं सिर धरि लेया ॥

दो०—बहुत कीन्ह प्रभु लखन सियें नहिं कछु केवटु सेइ ।

पिदा कीन्ह करुनायसन भगति विमल बर देइ । १०२ ।

तब मञ्जनु करि रघुकुल्याया । पूजि पारयिच नाथउ माया ॥  
भियें सुरसरिहि कहेउ कर जोरी । मातु मनोरथ पुरउवि ॥  
पति देवर सँग कुसल बहोरी । आइ करी जेहि पूजा ॥

सुनि सिय विनय प्रेम रस सानी । भइ तव विमल बारि वर बानी ॥  
 सुनु रघुवीर प्रिया वैदेही । तव प्रभाउ जग विदित न केही ॥  
 लोकप होहि विलोकत तोरें । तोहि सेवहि सव सिधि कर जोरें ।  
 तुम्ह जो हमहि बड़ि विनय सुनाई । कृपा कीन्हि मोहि दीन्हि बड़ाई  
 तदपि देवि मैं देवि असीसा । सफल होन हित निज वागीसा ॥

दो०—प्राननाथ देवर सहित कुसल कोसला आइ ।

पूजिहि सब मनकामना सुजसु रहिहि जग छाइ ॥१०३॥

गंग बचन सुनि मंगल मूला । मुदित सीय सुरसरि अनुकूला ॥  
 तव प्रभु गुहहि कहेउ घर जाहू । सुनत सूख मुखु भा उर दाहू ॥  
 दीन बचन गुह कह कर जोरी । विनय सुनहु रघुकुलमनि मोरी ॥  
 नाथ साथ रहि पंथु देखाई । करि दिन चारि चरन सेवकाई ॥  
 जेहि वन जाइ रहव रघुराई । परनकुटी मैं करवि सुहाई ॥  
 तव मोहि कहँ जसि देव रजाई । सोइ करिहउँ रघुवीर दोहाई ॥  
 सहज सनेह राम लखि तासू । संग लीन्ह गुह हृदयँ हुलासू ॥  
 पुनिगुहँ ग्याति बोलि सब लीन्हे । करि परितोषु विदा तव कीन्हे ॥

दो०—तव गनपति सिव सुमिरि प्रभु नाइ सुरसरिहि माथ ।

सखा अनुज सिय सहित वन गवनु कीन्ह रघुनाथ ॥१०४॥

तेहि दिन भयउ विटप तर वासू । लखन सखाँ सब कीन्ह सुपासू ॥  
 प्रात प्रातकृत करि रघुराई । तीरथराजु दीख प्रभु जाई ॥  
 सन्निव सत्य श्रद्धा प्रिय नारी । माधव सरिस मीतु हितकारी ॥



भए विगतश्रम रामु सुखारे। भरद्वाज मृदु वचन उचारे॥  
 आजु सुफल तपु तीरथ त्यागू। आजु सुफल जप जोग विरागू॥  
 सकल सकल सुभ साधन साजू। राम तुम्हहि अवलोकत आजू॥  
 लाभ अवधि सुख अवधि न दूजी। तुम्हरेँ दरस आस सत्र पूजी॥  
 अत्र करि कृपा देहु वर एहू। निज पद सरसिज सहज सनेहू॥  
 दो०—करम वचन मन छाड़ि छलु जव लगि जनु न तुम्हार।

तव लगि सुखु सपनेहुँ नहीं किऐँ कोटि उपचार॥१०७॥

मुनि मुनि वचन रामु सकुचाने। भाव भगति आनंद अधाने॥  
 तव रघुवर मुनि सुजसु सुहावा। कोटि भाँति कहि सबहि सुनावा॥  
 सो बड़ सो सत्र गुन गन गेहू। जेहि मुनीस तुम्ह आदर देहू॥  
 मुनि रघुवीर परसपर नवहीं। वचन अगोचर सुखु अनुभवहीं॥  
 यह सुधि पाइ प्रयाग निवासी। बटु तापस मुनि सिद्ध उदासी॥  
 भरद्वाज आश्रम सत्र आए। देखन दसरथ सुअन सुहाए॥  
 राम प्रनाम कीन्ह सत्र काहू। मुदित भए लहि लोयन लाहू॥  
 देहिँ असीस परम सुखु पाई। फिरे सराहत सुंदरताई॥

दो०—राम कीन्ह विश्राम निसि प्रात प्रयाग नहाइ।

चले सहित सिय लखन जन मुदित मुनिहि सिरु नाइ॥१०८॥

राम सप्रेम कहेउ मुनि पाहीं। नाथ कहिअ हम केहि मग जाहीं॥  
 मुनि मन बिहसि राम सन कहहीं। सुगम सकल मग तुम्ह कहूँ अहं॥  
 साथ लागि मुनि सिष्य बोलाए। मुनि मन मुदित पचासक आए॥

सबन्हि राम पर प्रेम अपारा । सकल कहहि मगु दीख हमारा ॥  
मुनि बटु चारि संग तब दीन्हें । जिन्ह बहु जनम मुकृत सब कीन्हें  
करि प्रनामुरिधि आयमु पाई । प्रमुदित हृदयें चले स्फुराई ॥  
ग्राम निकट जव निकमहि जाई । देखहि दरमु नारि नर धाई ॥  
होहि सनाय जनम फलु पाई । फिरहि दुखित मनु संग पडाई ॥

दो०—बिदा किए बटु विनय करि किये पाई मन काम ।

उत्तरि नहाए जमुन जल जो सरीर सम स्वाम ॥ १०९ ॥

मुनत तीरवासी नर नारी । पाएनिज निज काज बिसारी ॥  
लखन राम शिष्य सुंदरताई । देखि करहि निज भाग्य बढाई ॥  
अति लालसा बसहि मन मारी । नाउँ गाउँ मूसत सकुचार्ही ॥  
जे तिन्ह महुँ ब्यगिरिध मयाने । तिन्ह करि जुगुति राहु पहिचाने  
सकल कथा तिन्ह सबहि मुनाई । बनहि चले पितु आयमु पाई ॥  
मुनि सबिषाद सकल पछितार्ही । रानी गयें कीन्ह भल नार्ही ॥  
तेहि अचर एक तापमु आया । तेजपुंज लघुबयस मुदाया ॥  
कबि अलखित गति बेषु शिरागी । मन क्रम बचन राम अनुरागी ॥

दो०—सजल नयन तन पुलकि निज हृदय पहिचानि ।

परेउ दंड जिमि धरनिवल दसा न जाइ बरसानि ॥ ११० ॥

राम सप्रेम पुलकि उर लावा । परम रंक जनु पारमु पावा ॥  
मनहुँ प्रेमु परमारधु दोऊ । मित्त धरें तन कइ स्नु कोऊ ॥  
बहुरि लखन पायन्ह सोइ लागी । लीन्ह उठाइ उमगि अनुरागी ॥

पुनि सिय चरन धूरि धरि सीसा । जननि जानि सिसु दीन्ह असीसा  
 कीन्ह निषाद दंडवत तेही । मिलेउ मुदित लखि राम सनेही  
 पिअत नयन पुट रूपु पियूषा । मुदित सुअसनु पाइ जिमि भूखा  
 ते पितु मातु कहहु सखि कैसे । जिन्ह पठए वन बालक ऐसे ॥  
 राम लखन सिय रूपु निहारी । होहिं सनेह त्रिकल नर नारी ॥

दो०—तब रघुवीर अनेक बिधि सखहि सिखावनु दीन्ह ।

राम रजायसु सीस धरि भवन गवनु तेई कीन्ह ॥१११॥

पुनि सियँ राम लखन कर जोरी । जमुनिहि कीन्ह प्रनामु बहोरी ॥  
 चले ससीय मुदित दोउ भाई । रवितनुजा कह करत बड़ाई ॥  
 पथिक अनेक मिलहिं मग जाता । कहहिं सप्रेम देखि दोउ भ्राता ॥  
 राज लखन सब अंग तुम्हारे । देखि सोचु अति हृदय हमारे ॥  
 मारग चलहु पयादेहि पाएँ । ज्योतिषु झूठ हमारे भाएँ ॥  
 अगमु पंथु गिरि कानन भारी । तेहि महुँ साथ नारि सुकुमारी ॥  
 करि केहरि वन जाइ न जोई । हम संग चलहिं जो आयसु होई ॥  
 जाव जहाँ लगि तहँ पहुँचाई । फिरव बहोरि तुम्हहि सिर नाई ॥

दो०—एहि बिधि पूछहिं प्रेम बस पुलक गात जलु नैन ।

कृपासिंधु फेरहिं तिन्हहि कहि बिनीत मृदु बेन ॥११२॥

जे पुर गाँव बसहिं मग माहीं । तिन्हहि नाग सुर नगर सिहाहीं ॥  
 केहि सुकृती केहि घरीं बसाए । धन्य पुन्यमय परम सुहाए ॥  
 जहँ जहँ राम चरन चलि जाहीं । तिन्ह समान अमरावति नाहीं ॥





२६४

\* रामचरितमानस \*

मुदित नारिनर देखहिं सोभा । रूप अनूप नयन मनु लोभा ॥  
 एकटक सब सोहहिं चहुँ ओरा । रामचंद्र मुख चंद चकोरा ॥  
 तरुन तमाल बरन तनु सोहा । देखत कोटि मदन मनु मोहा ॥  
 दामिनि बरन लखन सुठि नीके । नख सिख सुभग भावते जी के ॥  
 मुनिपट कटिन्ह कसैं तूनीरा । सोहहिं कर कमलनि धनु तीरा ॥  
 दो०—जटा मुकुट सीसनि सुभग उर भुज नयन बिसाल ।

सरद परब विधु वदन बर लसत स्वेद कन जाल ॥ ११५ ॥  
 बरनि न जाइ मनोहर जोरी । सोभा बहुत थोरि मति मोरी ॥  
 राम लखन सिय सुंदरताई । सब चित्तवहिं चित मन मति लाई  
 थके नारि नर प्रेम पिआसे । मनहुँ मृगी मृग देखि दिआ से ॥  
 सीय समीप ग्रामतिय जाहीं । पूँछत अति सनेहँ सकुचाहीं ॥  
 बार बार सब लागहिं पाएँ । कहहिं वचन मृदु सरल सुभाएँ ॥  
 राजकुमारि विनय हम करहीं । तिय सुभायँ कछु पूँछत डरहीं ॥  
 स्वामिनि अविनय छमवि हमारी । बिलगु न मानव जानि गवाई ॥  
 राजकुअँर दोउ सहज सलोने । इन्ह तें लही दुति मरकत सोने ।

दो०—स्यमल गौर किसोर बर सुंदर सुपमा ऐन ।

सरद सर्वरीनाथ मुख सरद सरोरुह नैन ॥ ११६ ॥

मासपारायण, सोलहवाँ विश्राम

नवाह्नपारायण, चौथा विश्राम



मुदित नारि नर देखहिं सोभा । रूप अनूप नयन मनु लोभा ॥  
 एकटक सब सोहहिं चहुँ ओरा । रामचंद्र मुख चंद चकोरा ॥  
 तरुन तमाल वरन तनु सोहा । देखत कोटि मदन मनु मोहा ॥  
 दामिनि वरन लखन सुठि नीके । नख सिख सुभग भावते जी के ॥  
 मुनिपट कटिन्ह कसें तूनीरा । सोहहिं कर कमलनि धनु तीरा ॥  
 दो०—जटा मुकुट सीसनि सुभग उर भुज नयन बिसाल ।

सरद परब विधु वदन वर लसत स्वेद कन जाल ॥ ११५ ॥  
 वरनि न जाइ मनोहर जोरी । सोभा बहुत थोरि मति मोरी ॥  
 तम लखन सिय सुंदरताई । सब चितवहिं चित मन मति लाई  
 के नारि नर प्रेम पिआसे । मनहुँ मृगी मृग देखि दिआ से ॥  
 गेय समीप ग्रामतिथ जाहीं । पूँछत अति सनेहँ सकुचाहीं ॥  
 बार बार सब लागहिं पाएँ । कहहिं वचन मृदु सरल सुभाएँ ॥  
 जकुमारि विनय हम करहीं । तिय सुभायँ कछु पूँछत डरहीं ॥  
 वामिनि अविनय छमवि हमारी । विलगु न मानव जानि गवाँरी ॥  
 जकुअँर दोउ सहज सलोने । इन्ह तें लही दुति मरकत सोने ॥

गे०—स्यामल गौर किसोर वर सुंदर सुषमा ऐन ।

सरद सर्वरीनाथ मुखु सरद सरोरुह नैन ॥ ११६ ॥

मासपारायण, सोलहवाँ विश्राम  
 नवाह्नपारायण, चौथा विश्राम

कोटि मनोज लज्जावनिहारे । सुमुख कहहु को आदि तुम्हारे ॥  
 मुनि सनेहमय मंजुल बानी । सकुचि सिख मन महुँ मुमुकानी ॥  
 तिन्हहि बिलोकि बिलोकति धरनी ॥ दुहुँ सकोच सकुचति वरवरनी  
 सकुचि सप्रेम बात भृगनयनी । बोली मधुर वचन पिक्वयनी ॥  
 सहज मुभाय सुभग तन गोरे । नामु लखनु लनु देयर मोरे ॥  
 यदुरि भदनु बिधु अंचल टाँकी । पिय तन चितर भौह करि बाँकी  
 खंजन मंजु तिरीछे नयननि । निज पति कहंउ तिन्हहि भियै मयननि  
 भई मुदित सब मामरधूटी । रकन्ह राय रामि जनु लूटी ॥

दो०—अति सप्रेम सिय पायँ परि बहुविधि देखिँ अमीस ।

सदा सोहागिनि होहु तुम्ह जब लगि माहि अहि सीस ॥ ११७ ॥

पारवती सम पतिप्रिय होह । देखि न हम पर छाहब छोह ॥  
 पुनि पुनि चिनय करिअ कर जोरी । जौ एहि मारग फिरिअ बहोरी  
 दरसनु दैव जानि निज दासी । लखीं सीयै सब प्रेम पिआसी ॥  
 मधुर वचन कहि कहि परितोषी । जनु कुमुदिनी कौमुदी पोषी ॥  
 तबहिँ लखन रघुवर रुख जानी । पूँछेउ मगु लोगन्हि मृदु बानी ॥  
 मुनत नारि नर भए दुखारी । पुलकित गात बिलोचन बारी ॥  
 मिटा मोदु मन भए मलीने । विधि निधि दीन्ह लेत जनु छीने  
 संमुख करम गति धोरजु कोन्हा । सोधि सुगम मगु तिन्ह कहि दीन्हा

दो०—लखन जानकी सहित सब गवनु कोन्ह रघुनाथ ।

फेरे सब प्रिय वचन कहि लिए लख मन साथ ॥ ११८ ॥

फिरत नारि नर अति पछिताहीं । दैअहि दोषु देहिं मन माहीं ॥  
 सहित विषाद परस्पर कहहों । विधि करतव उलटे सय अहहों ॥  
 निपट निरंकुत निदुर नितंबू । जेहिं तति कीन्ह सहज सकलंकू ॥  
 लख कल्पतरु सागर खारा । तेहिं पठए वन राजकुमारा ॥  
 जौं पै इन्हहि दीन्ह वनयान् । कीन्ह वादि विधि भोग विलास ॥  
 ए विचरहिं मग विनु पदचाना । रचे वादि विधि बाहन नाना ॥  
 ए महि परहिं डाति कुस पाता । सुभग सेज कत लजत विधाता ॥  
 तरवर वास इन्हहि विधि दीन्हा । धवलधाम रचि रचि श्रमु कीन्हा  
 दो०—जौं ए मुनि पट धर जटिल सुंदर सुठि सुकुमार ।

बिबिध भाँति भूषन बसन वादि किए करतार ॥११९॥

जौं ए कंद मूल फल खाहीं । वादि लुधादि असन जग माहीं ॥  
 एक कहहिं ए सहज सुहाए । आपु प्रगट भए विधि न बनाए  
 जहँ लगि वेद कही विधि करनी । श्रवन नयन मन गोचर धरनी ॥  
 देखहु खोजि भुअन दस चारी । कहँ अस पुरुष कहाँ अति नारी  
 इन्हहि देखि विधि मनु अनुरागा ॥ पटतर जोग बनावै लागा ॥  
 कीन्ह बहुत श्रम ऐक न आए । तेहिं इरिपा वन आनि दुराए ॥  
 एक कहहिं हम बहुत न जानहिं । आपुहि परम धन्य करि मानहिं ॥  
 ते पुनि पुन्यपुंज हम लेखे । जे देखहिं देखिहहिं जिन्ह देखे ॥  
 दो०—एहि बिधि कहि कहि वचन प्रिय लेहिं नयन भरि नीर ।

किमि चलिहहिं मारग अगम सुठि सुकुमार सरीर ॥१२०॥

नारि सनेह विकल बस होहीं । चकई सौं स समय जनु सोहीं ॥  
 मृदु पद कमल कठिन मगु जानी । गहवरि हृदयें कहहिं बर बानी ॥  
 परसत मृदुल चरन अवनारे । सकुचति मदि जिमि हृदय हमारे  
 जौं जगदीस इन्हदि बनु दीन्हा । कस न सुमनमय मारगु कीन्हा ॥  
 जौं मागा पाइअ विधि पाहीं । ए रखिअहिं सखि आँखिन्ह माहीं  
 जे नर नारि न अवसर आए । तिन्ह मिय रामु न देखन पाए ॥  
 मुनि मुरूपु बूझहिं अकुलाई । अब लगि गए कहाँ लगि भाई  
 समरथ धाइ बिलोकहिं जाई । प्रमुदित फिरहिं जनमफलु पाई  
 दो०—अबला बालक बृद्ध जन कर मीजहिं पछिताहिं ।

होहिं प्रेमबन लोग इमि रामु महौं भई जाहिं ॥१२१॥

गावैं गावैं अस होइ अनंदू । देखि भानुकुल कैरय चंदू ॥  
 जे कछु समाचार मुनि पावहिं । ते नृप रानिदि दोनु लगावहिं ॥  
 कहहिं एक अति भल नरनाहू । दीन्ह हमदि जोइ लोचन लाहू ॥  
 कहहिं परसरर लोग लोगार्ह । बातें सरल सनेह मुहारह ॥  
 ते पितु मातु धन्य जिन्ह आए । धन्य सो नगर जहाँ तैं आए ॥  
 धन्य सो देसु सैलु बन गाऊँ । जहँ जहँ जाहिं धन्य सोइ ठाऊँ ॥  
 मुखु पायउ विरंचि रचि तेही । ए जेहि के सब भौंति सनेही ॥  
 राम लखन पयि कया मुहारह । रही सकल मग कानन छारह ॥

दो०—जुहि बिधि रघुकुल कमल रवि मग लोगन्ह मुख नैत ।

जाहिं चले देखत बिपिन सिय सौमित्रि सरे.

आगें रामु लखनु बने पाछें । तापस बेप विराजत काछें ॥  
 उभय बीच सिय सोहति कैसैं । ब्रह्म जीव बिच माया जैसैं ॥  
 बहुरि कहउँ छवि जसि मन बसई । जनु मधु मदन मध्य रति लसई ॥  
 उपमा बहुरि कहउँ जियँ जोही । जनु बुध बिधु बिच रोहिनि सोही ॥  
 प्रभु पद रेख बीच बिच सीता । धरति चरन मग चलति समीता ॥  
 सीय राम पद अंक बराएँ । लखन चलहिं मगु दाहिन लाएँ ॥  
 राम लखन सिय प्रीति सुहाई । बचन अगोचर किमि कहि जाई ॥  
 खग मृग मगन देखि छवि होहीं । लिए चोरि चित राम बटोहीं ॥  
 दो०—जिन्ह जिन्ह देखे पथिक प्रिय सिय समेत दोउ भाइ ।

भव मगु अगमु अनंदु तेइ बिनु श्रम रहे सिराइ ॥ १२३ ॥

अजहुँ जासु उर सपनेहुँ काऊ । बसहुँ लखनु सिय रामु बटाऊ ॥  
 राम धाम पथ पाइहि सोई । जो पथ पाव क्यहुँ मुनि कोई ॥  
 तब रघुबीर श्रमित सिय जानी । देखि निकट बटु सीतल पानी ॥  
 तहँ बसि कंद मूल फल खाई । प्रात नहाइ चले रघुराई ॥  
 देखत बन सर सैल सुहाए । बालमीकि आश्रम प्रभु आए ॥  
 राम दीख मुनि त्रासु सुहावन । सुंदर गिरि काननु जलु पावन ॥  
 सरनि सरोज बिटेप बन फूले । गुंजत मंजु मधुप रस भूले ॥  
 खग मृग बिपुल कोलाहल करहीं । विरहित बैर मुदित मन चरहीं ॥

दो०—सुचि सुंदर आश्रमु निरखि हरषे राजिवनेन ।

मुनि रघुवर आगमनु मुनि आगें आयउ लेन ॥ १२४ ॥

मुनि कहँ राम दंडवत कीन्हा । आनन्ददाटु बिस्वर दीन्हा ॥  
 देखि राम छवि नयन चुड़ाने । करि स्नानानु आश्रमहि आने ॥  
 मुनिवर अतिथि प्रानप्रिय पाए । कंद मूल फल मधुर मगाए ॥  
 शिष्य सौमित्रि राम फल खाए । तब मुनि आश्रम दिए मुहाए ॥  
 बालमीके मन आनँदु मारी । मंगल मृगनि नयन निहारी ॥  
 तब कर कमल जोरि गधुगदं । बोले बचन श्रवण मुखदारी ॥  
 तुम्ह प्रिकाल दरभी मुनिनाथा । बिम्ब वदर त्रिमि तुम्हरे हाथा ॥  
 अम यदि प्रभु सब कथा बत्तानी । जेहि जेहि मौनि दीन्ह वनु गनी ॥

दो०-तात बचन मुनि मानुहिम भाइ भरत अम राट ।

मो कहँ दरम तुम्हार प्रभु मनु मम पुन्य प्रभाउ ॥ १२५ ॥

देखि पाय मुनिराय तुम्हारे । भए मुकृत मय मुफल हमारे ॥  
 अब जहँ राठर आयसु होई । मुनि उदवेगु न पावै कोई ॥  
 मुनि तापम जिन्ह ते दुखु लहहीं । ते नरेम विनु पायक दहहीं ॥  
 मंगल मूल विप्र परितोषू । दहर कौटि कुल भूसुर रोषू ॥  
 अम जिये जानि कहिअ सोइ ठाऊँ । शिष्य सौमित्रि सहित जहँ जाऊँ ॥  
 तेई रचि रुचिर परन नून सान्ना । बासु करी कलु काल कृपाला ॥  
 सहज सरल मुनि खुबर बानी । गाधु साधु बोले मुनि ग्यानी ॥  
 कम न कहहु अम खुकुल सेनू । तुम्ह पालक संतत श्रुति सेनू ॥

छं०-मुनि मनु पालक राम तुम्ह जगदीस माया जानकी ।

जो मूर्तनि जगु पालनि हरनि हरि पाइ कृपानिधान की ॥



जो सहससीसु अहीसु महिधरु लखनु सचराचर धनी ।  
सुर काज धरि नरराज तनु चले दलन खल निसिचर अनी ॥

सो०—राम सरूप तुम्हार बचन अगोचर बुद्धिपर ।

अविगत अकथ अपार नेति नेति नित निगम कह ॥१२६॥

जगु पेखन तुम्ह देखनिहारे । बिधि हरि संभु नचावनिहारे ॥  
तेउ न जानहिं मरमु तुम्हारा । और तुम्हहि को जाननिहारा ॥  
सोइ जानइ जेहि देहु जनाई । जानत तुम्हहि तुम्हइ होइ जाई ॥  
तुम्हरिहि कृपाँ तुम्हहि रघुनंदन । जानहिं भगत भगत उर चंदन ॥  
चिदानंदमय देह तुम्हारी । विगत विकार जान अधिकारी ॥  
नर तनु धरेहु संत सुर काजा । कहहु करहु जस प्राकृत राजा ॥  
राम देखि सुनि चरित तुम्हारे । जड़ मोहहिं बुध होहिं सुखारे ॥  
जो कहहु करहु सनु साँचा । जस काछिअ तस चाहिअ नाचा ॥

०—पूँछेहु मोहि कि रहौं कहँ मैं पूँछत सकुचाउँ ।

जहँ न होहु तहँ देहु कहि तुम्हहि देखावौं ठाउँ ॥१२७॥

सुनि मुनि बचन प्रेम रस साने । सकुचि राम मन महुँ मुसुकाने ॥  
बालमीकि हँसि कहहिं बहोरी । वानी मधुर अमिअ रस बोरी ॥  
सुनहु राम अब कहउँ निकेता । जहाँ बसहु सिय लखन समेता ॥  
जिन्ह के श्रवन समुद्र समाना । कथा तुम्हारि सुभग सरि नाना ॥  
भरहिं निरंतर होहिं न पूरे । तिन्ह के हिय तुम्ह कहँ गृह रूरे ॥  
लोचन चातक जिन्ह करि राखे । रहहिं दरस जलधर अभिलाषे ॥



जो सहससीसु अहीसु महिधरु लखनु सचराचर धनी ।  
सुर काज धरि नरराज तनु चले दलन खल निसिचर अनी ॥

सो०—राम सरूप तुम्हार बचन अगोचर बुद्धिपर ।

अबिगत अकथ अपार नेति नेति नित निगम कह ॥ १२६ ॥

जगु पेखन तुम्ह देखनिहारे । विधि हरि संभु नचावनिहारे ॥  
तेउ न जानहिं मरसु तुम्हारा । और तुम्हहि को जाननिहारा ॥  
सोइ जानइ जेहि देहु जनाई । जानत तुम्हहि तुम्हइ होइ जाई ॥  
तुम्हरिहि कृपाँ तुम्हहि रघुनंदन । जानहिं भगत भगत उर चंदन ॥  
चिदानंदमय देह तुम्हारी । विगत विकार जान अधिकारी ॥  
नर तनु धरेहु संत सुर काजा । कहहु करहु जस प्राकृत राजा ॥  
राम देखि सुनि चरित तुम्हारे । जड़ मोहहिं बुध होहिं सुखारे ॥  
जो कहहु करहु सबु साँचा । जस काछिअ तस चाहिअ नाचा ॥

०—पूँछेहु मोहि कि रहौं कहँ मैं पूँछत सकुचाउँ ।

जहँ न होहु तहँ देहु कहि तुम्हहि देखावौं ठाउँ ॥ १२७ ॥

सुनि सुनि बचन प्रेम रस साने । सकुचि राम मन महुँ मुसुकाने ॥  
बालमीकि हँसि कहहिं बहोरी । बानी मधुर अमिअ रस बोरी ॥  
सुनहु राम अत्र कहउँ निकेता । जहाँ बसहु सिय लखन समेता ॥  
जिन्ह के श्रवन समुद्र समाना । कथा तुम्हारि सुभग सरि नाना ॥  
भरहिं निरंतर होहिं न पूरे । तिन्ह के हिय तुम्ह कहूँ गृह रूरे ॥  
लोचन चातक जिन्ह करि राखे । रहहिं दरस जलधर अभिलाषे ॥

निदरहिं सरित सिंधु सर भारी । रूप बिंदु जल होहिं सुखारी ॥  
तिन्ह के हृदय सदन सुखदायक । बसहु बंधु सिय सह रघुनायक ॥

दो०—अमु तुम्हार मानस बिमल हंमिनि जीहा जामु ।

मुकनाहल गुन गन चुनइ राम बसहु हिये ठामु ॥१२८॥

प्रभु प्रसाद मुचि मुभग सुवास । सादर जामु लहइ नित नासा ॥  
तुम्हहि निवेदित भोजन करहीं । प्रभु प्रसाद पट भूपन धरहीं ॥  
सौस नयहिं मुर गुरु दिज देखी । प्रीति सहित करि बिनय पिसेयी ॥  
कर नित करहिं राम पद पूजा । राम भरोस हृदयें नहिं दूजा ॥  
चरन राम तीरथ चलि जाहीं । राम बसहु तिन्ह के मन माहीं ॥  
मंत्रराजु नित अयहिं तुम्हारा । पूजहिं तुम्हहि सहित परिवारा ॥  
तरपन होम करहिं विधि नाना । बिप्र जेवाँइ देहिं बहु दाना ॥  
तुम्ह तें अधिक गुरहिं जियें जानी । सकल भायें सेवहिं सनमानी ॥

दो०—सबु करि मागहिं एक फलु राम चरन रति होउ ।

तिन्ह के मन मंदिर बसहु सिय रघुनंदन दोउ ॥१२९॥

काम कोद मद मान न मोहा । लोभन छेम न राग न द्रोहा ॥  
जिन्ह के कपट दंभ नहिं माया । तिन्ह के हृदय बसहु रघुराया ॥  
सब के प्रिय सब के हितकारी । दुख सुख सरिस प्रसंसा गारी ॥  
कहहिं सत्य प्रिय बचन बिचारी । जागत सोवन सन तुम्हारी ॥  
तुम्हहि छादि गति दूसरि नारी । राम बसहु तिन्ह के मन माहीं ॥  
जननी सम जानाहिं परनारी । धनु पराय निय तें निय भारी ॥

आवत देखि मुदित मुनिवृन्दा । कीन्ह दंडवत रघुकुल चंदा ॥  
 मुनि रघुवरहि लाइ उर लेहीं । सुफल होन हित आसिष देहीं ॥  
 सिय सौमित्रि राम छवि देखहिं । साधन सकल सफल करि लेखहिं ॥

दो०—जथाजोग सनमानि प्रभु बिदा किए मुनिवृन्द ।

करहिं जोग जप जाग तप निज आश्रमन्हि सुछंद ॥१३४॥

यह सुधि कोल किरातन्ह पाई । हरये जनु नव निधि घर आई ॥  
 कंद मूल फल भरि भरि दोना । चले रंक जनु लूटन सोना ॥  
 तिन्ह महुँ जिन्ह देखे दोउ भ्राता । अपर तिन्हहि पूँछहिं मगु जाता ॥  
 कहत सुनत रघुवीर निकाई । आइ सबन्हि देखे रघुराई ॥  
 करहिं जोहारु भेंट धरि आगे । प्रभुहि बिलोकहिं अति अनुरागे ॥  
 चित्र लिखे जनु जहँ तहँ ठाढ़े । पुलक सरीर नयन जल बाढ़े ॥  
 राम सनेह मगन सब जाने । कहि प्रिय वचन सकल सनमाने ॥  
 प्रभुहि जोहारि बहोरि बहोरी । वचन बिनीत कहहिं कर जोरी ॥  
 दो०—अब हम नाथ सनाथ सब भए देखि प्रभु पाय ।

भाग हमारै आगमनु राउर कोसलराय ॥१३५॥

धन्य भूमि वन पंथ पहारा । जहँ जहँ नाथ पाउ तुम्ह धारा ॥  
 धन्य विहग मृग काननचारी । सफल जनम भए तुम्हहि निहारी ॥  
 हम सब धन्य सहित परिवारा । दीख दरसु भरि नयन तुम्हारा ॥  
 कीन्ह वासु भल ठाउँ विचारी । इहाँ सकल रितु रह्य सुखारी ॥  
 हम सब भाँति करव सेवकाई । करि केहरि अहि बाघ बराई ॥

वन बेहड़ गिरि कंदर खोहा । सब हमार प्रभु पग पग जोहा ॥  
तहँ तहँ तुम्हहि अहेर खेलाउब । सर निरखार जलठाउँ देखाउब ॥  
हम सेवक परिवार समेता । नाथन मकुचब आयमु देता ॥

दो०—बेद बचन मुनि मन अगम ते प्रभु करुना ऐन ।

बचन किरातन्ह के सुनत जिमि पितु बालक बैन ॥१२६॥

रामहि केवल प्रेमु पिआरा । जानि लेउ जो जाननिहारा ॥  
राम सकल वनचर तब तोरे । कहि मृदु बचन प्रेम परिपोये ॥  
बिदा किए सिर नाह मिथाए । प्रभु गुन कहत सुनत सर आए ॥  
एहि विधि सिप समेत दोउ भारी । बसहि विपिन मुर मुनि सुखदाई ॥  
जब तैं आए रहे खुनायकु । तब तैं भयउ वनु मंगलदायकु ॥  
पूछहि कलहि बिटप विधि नाना । मजु बलित सर बेलि बिताना ॥  
मुक्तक सरिग सुभायें मुहाए । मनहुँ विबुध वन परिहरि आए ॥  
गुंज मंजुतर मधुकर भेनी । विविध बयारि बहइ सुख देनी ॥

दो०—नीलकंठ कलकंठ सुक खातक चक्र चकोर ।

भौंनि भौंनि बोलहि बिहग भवन सुखद चिन खोर ॥१२७॥

हरि केहरि कपि कोल कुरंगा । विगतचैर विचरहि मय संगी ॥  
फिरत अहेर राम छवि देखी । होरि मुदित नृगबृद बिसेयी ॥  
विबुध विपिन जहँ लगि जग माहीं । देखि राम वनु मकल मिहाई ॥  
मुरमरि सरसद दिनकर कन्या । मेकलमुता गोदाबनि धन्या ॥  
सब सर सिंधु नदी नद नाना । मंदाकिनि कर करहि बलाना ॥

उदय अस्त गिरि अरु कैलासू । मंदर मेरु सकल सुरवासू ॥  
 सैल हिमाचल आदिक जेते । चित्रकूट जसु गावहिं तेते ॥  
 विधि मुदित मन सुखु न समाई । श्रम विनु विपुल बढ़ाई पाई ॥  
 दो०—चित्रकूट के बिहग मृग बेलि बिटप तृन जाति ।

पुन्य पुंज सब धन्य अस कहहिं देव दिन राति ॥१२८॥

नयनवंत रघुवरहि बिलोकी । पाइ जनम फल होहिं विसोकी ॥  
 परति चरन रज अचर सुखारी । भए परम पद के अधिकारी ॥  
 सो वनु सैलु सुभायँ सुहावन । मंगलमय अति पावन पावन ॥  
 महिमा कहिअ कवनि विधि तासू । सुखसागर जहँ कीन्ह निवासू ॥  
 पय पयोधि तजि अवध बिहाई । जहँ सिय लखनु रामु रहे आई ॥  
 कहि न सकहिं सुगमा जसि कानन । जौं सत सहस होहिं सहसानन ॥  
 सो मैं बरनि कहौं विधि केहीं । डायर कमठ कि मंदर लेहीं ॥  
 सेवहिं लखनु करम मन बानी । जाइ न सीलु सनेहु बखानी ॥

दो०—छिनु छिनु लखि सिय राम पद जानि आपु पर नेहु ।

करत न सपनेहुँ लखनु चितु बंधु मातु पितु नेहु ॥१३९॥

राम संग सिय रहति सुखारी । पुर परिजन गृह सुरति विसारी ॥  
 छिनु छिनु प्रिय विधु बदनु निहारी । प्रमुदित मनहुँ चकोरकुमारी ॥  
 नाह नेहु नित बढ़त बिलोकी । हरपित रहति दिवस जिमि कोकी ॥  
 सिय मनु राम चरन अनुरागा । अवध सहस सम वनु प्रिय लगा ॥  
 परनकुटी प्रिय प्रियतम संगी । प्रिय परिवारु कुरंग बिहंगा ॥

सामु समुद्र सम मुनितिय मुनिवर । असनु अमिअ सम कद मूल पर  
नाथ साथ सौंधरी सुहाई । मयन सयन स्य सम सुखदाई ॥  
लोक्य होहि बिलोक्य जासू । तेहि कि मोहि मक बिषय बिलासू  
दो०-मुमिरत रामहि तजहि जन नून सम बिषय बिलासु ।

रामप्रिया जग जननि सिय कछु न भाचरनु तासु ॥१४०॥

सीय लखन जेहि बिधि मुखु लहई । सोइ रघुनाथ करहि सोइ कहई  
कहई पुरातन कथा कहानी । मुनहि लखनु मिय अति मुखु मानी  
जइ जय रामु अवध मुधि करहीं । तब तब थारि बिलोचन भरहीं ॥  
मुमिरि मातु पितु परिजन भाई । भरत सनेहु सीखु सेवकाई ॥  
कृपासिंधु प्रभु होहि दुखारी । धीरखु धरहि कुसमट बिचारी ॥  
लखिसियलखनु भिकल होइ जाई । जिमि पुरुषहि अनुमर परिछाहीं  
प्रिया बंधु गति लखि रघुनंदनु । धीर कृपाल भगत उर चदनु ॥  
लगे कहन कछु कथा पुनीता । सुनि मुखु लहहि लखनु अरु सीता  
दो०-रामु लखन सीता सहित सोइत परन निवेत ।

जिमि वामव बस अमरपुर सची जयंत समेत ॥१४१॥

जोगबहि प्रभु सिय लखनहि कैसे । पलक बिलोचन गोलक जैसे ॥  
सेवाई लखनु सीय रघुवीरहि । जिमि अबिबेकी पुरुष सरीरहि ॥  
एहि बिधि प्रभु बन बगहि सुखारी । खग मृग सुर तापस हितकारी ॥  
कहेउँ राम बन गवनु सुहावा । मुनहु मुमंत्र अवध जिमि आवा  
धियेउ निपाहु प्रभुहि पहुँचाई । सचिव गदित रय देलेसि आई ॥



मंत्री बिकल बिलोकि निषादू । कहि न जाइ जस भयउ विषादू ॥  
 राम राम सिध लखन पुकारी । परेउ धरनितल ब्याकुल भारी ॥  
 देखि दखिन दिसि हय हिहिनार्हीं । जनु बिनु पंख विहग अकुलार्हीं  
 दो०—नहिं तृन चरहिं न पिअहिं जलु मोचहिं लोचन बारि ।

ब्याकुल भए निषाद सब रघुवर बाजि निहारि ॥१४२॥

धरि धीरजु तब कहइ निषादू । अब सुमंत्र परिहरहु विषादू ॥  
 तुम्ह पंडित परमारथ ग्याता । धरहु धीर लखि विमुख विधाता  
 विविधि कथा कहि कहि मृदु बानी । रथ बैठारेउ बरवस आनी ॥  
 सोक सिथिल रथु सकइ न हाँकी । रघुवर बिरह पीर उर बाँकी ॥  
 चरफराहिं मग चलहिं न घोरे । बन मृग मनहुँ आनि रथ जोरे ॥  
 अदुकि परहिं फिरि हेरहिं पीछें । राम वियोगि बिकल दुख तीछें ॥  
 १ कह रामु लखनु बैदेही । हिकरि हिकरि हित हेरहिं तेही ॥  
 १ जि विरह गति कहि किमि जाती । बिनु मनि फनिक बिकल जेहि भाँती

दो०—भयउ निषादु विषादबस देखत सचिव तुरंग ।

बोलि सुसेवक चारि तब दिए सारथी संग ॥१४३॥

गुह सारथिहि फिरेउ पहुँचाई । बिरहु विषादु बरनि नहिं जाई ॥  
 बले अवध लेइ रथहि निषादा । होहिं छनहिं छन मगन विषादा ॥  
 ओच सुमंत्र बिकल दुख दीना । धिग जीवन रघुवीर बिहीना ॥  
 हिहि न अंतहुँ अधम सरीरु । जसु न लहेउ बिछुरत रघुवीरु ॥  
 गएँ अजस अघ भाजन प्राना । कवन हेतु नहिं करत पयाना ॥

अहह मंद मनु अवसर चूका । अजहुँ न हृदय होन दुइ टूका ॥  
मीजि हाथ सिर धुनि पछिनार्द । मनहुँ रूपन धन गाँसि गयोई ॥  
धिरिद शौधि बर बौर कदाई । चन्नेउ समर जनु सुभट पराई ॥

दो०—विप्र विवेकी वेदविट संमत साधु सुजाति ।

जिमि धोमै मद् पान कर पांचित्र सोच तेहि भौनि ॥१४४॥

जिमि कुलीन तिय साधु सगनी । पनिदेयता कर्म मन बानी ॥  
रहै करम दम पगहरि नाह । सचिय हृदयै निमि दाह्न दाह ॥  
लोचन सजल डीठि भइ धोरी । मुनइ न भयन विकल्प मति भोरी ॥  
सूखहि अधर लागि मुहँ लाठी । जितु न जाइ उर अवधि कपाठी ॥  
वियरन भयउ न जाइ निहारी । मारंमि मनहुँ पिता महतारी ॥  
हानि गलानि विषुल मन व्यापी । जमपुर पंथ सोच जिमि पापी ॥  
यवनु न आव हृदयै पछिनार्द । अवध काह मैं देख्य जाई ॥  
राम रहित रथ देखिहि जोई । गकुचिहि मोहि बिलंकित सोई ॥  
दो०—धाइ पूँछिहहिं मोहि जब विकल नगर नर नारि ।

उतर देव मैं सबहि सब हृदयै बन्धु बैठारि ॥१४५॥

पूँछिहहिं दीन दुखित सब माना । कह्य काह मैं तिन्हहि बिधाता ॥  
पूँछिहि जबहिं लखन महतारी । करिदउँ कवन सैदेम मुखारी ॥  
राम जननि जब आइहि धाई । मुमिरि बन्धु जिमि धेनु लवाई ॥  
पूँछत उतर देव मैं तेही । गो वनु राम लखनु वैदेही ॥  
जोर पूँछिहि तेहि उतर देवा । जाइ अवध अब शत्रु मुख लेवा ॥

पूँछिहि जवहिं राउ दुख दीना । जिवनु जासु रघुनाथ अधीना ॥  
 देहउँ उतरु कौनु मुहु लाई । आयउँ कुसल कुअँर पहुँचाई ॥  
 सुनत लखन सिय राम सँदेसू । तृन जिमि तनु परिहरिहि नरेसू ॥

दो०—हृदउ न बिदरेउ पंक जिमि बिछुरत प्रीतमु नीरु ।

जानत हौं मोहि दीन्ह बिधि यहु जातना सरीरु ॥१४६॥

एहि बिधि करत पंथ पछितावा । तमसा तीर तुरत रथु आवा ॥  
 बिदा किए करि विनय निषादा । फिरे पायँ परि बिकल बिषादा ॥  
 पैठत नगर सचिव सकुचाई । जनु मारेसि गुर बाँभन गाई ॥  
 बैठि ब्रिटप तर दिवसु गवाँवा । साँझ समय तत्र अवसरु पावा ॥  
 अवध प्रबेसु कीन्ह आँधिआरें । पैठ भवन रथु राखि दुआरें ॥  
 जिन्ह जिन्ह समाचार सुनि पाए । भूप द्वार रथु देखन आए ॥  
 रथु पहिचानि बिकल लखि घोरे । गरहिं गात जिमि आतप ओरे ॥  
 नगर नारि नर व्याकुल कैसैं । निघटत नीर मीनगन जैसैं ॥

दो०—सचिव आगमनु सुनत सबु बिकल भयउ रनिवासु ।

भवनु भयंकरु लाग तेहि मानहुँ प्रेत निवासु ॥१४७॥

अति आरति सब पूँछहिं रानी । उतरु न आव बिकल भइ बानी ॥  
 सुनइ न श्रवन नयन नहिं सूझा । कहहु कहाँ नृपु तेहि तेहि बूझा ॥  
 दासिन्ह दीख सचिव बिकलाई । कौसल्या गृहँ गई लवाई ॥  
 जाइ सुमंत्र दीख कस राजा । अमिअ रहित जनु चंदु बिराजा ॥  
 आसन सयन बिभूषन हीना । परेउ भूमितल निपट मलीना ॥

देह उमासु सोच एहि भोती । सुरपुर में जनु सँसेउ जजाती ॥  
हेत सोच मरि छिनु छिनु छाती । जनु जरि पंख पयेउ सपाती ॥  
राम राम कह राम मनेही । पुनि कह राम लगन बैदेही ॥

दो०-रेमि मंचिउँ जय जीव कहि कीन्हैउ दंड प्रनामु ।

मुनत उदेउ स्याकुल नृपनि कहु मुमंत्र कहैं राम ॥१४८॥

भूप मुमंत्रु लीन्ह उर लार्द । बृद्धत कछु अंधार जनु पार्द ॥  
सहित स्नेह निष्ठ बैठारी । पूँछत राउ नयन भरि बारी ॥  
राम कुसल कहु मत्ता स्नेरी । कहैं रघुनाथु लगन बैदेही ॥  
आने गेरि कि बनिहि मिथाए । मुनत मंचिब लौचन जल छाए ॥  
भोक रिक्छ पुनि पूँछ नंगम् । कहु मिय राम लगन सँदेम् ॥  
राम रूप गुन सील सुभाऊ । मुमिरि मुमिरि उर सौचत राऊ ॥  
राउ सुनाइ दीन्ह बनयाम् । सुनि मन भयउ न हरणु हरौम् ॥  
मो मुन दिगुरत गए न प्राना । को पापी बड़ मोहि ममाना ॥

दो०-मत्ता रामु मिय लगन जहैं तहाँ मोहि पहुँचाउ ।

नाहि न चाहत चलन अब शान कहैं मनिभाउ ॥१४९॥

पुनि पुनि पूँछत मंचिहि राऊ । प्रियतम सुधन सँदेस सुनाऊ ॥  
कपड़ि सत्ता सोर बेगि उभाऊ । रामु लगन मिय नयन देखाऊ ॥  
मंचिब धार धारि कह मृदु बानी । महाराज तुम्ह पंडित म्यानी ॥  
शेर सुधीर धुरंधर देवा । साबु समाबु सदा तुम्ह सेवा ॥  
जनम मरन सब दुख सुख मोगा । दानि लामु प्रिय मिल्य निरोगा ॥

काल करय बस होहिं गोसाईं । बरबस राति दिवस की नाई ॥  
 सुख हरषहिं जड़ दुख बिलखाहीं । दोउ सम धीर धरहिं मन माहीं ॥  
 धीरज धरहु विवेकु विचारी । छाड़िअ सोच सकल हितकारी ॥

दो०—प्रथम बासु तमसा भयउ दूसर सुरसरि तीर ।

न्हाइ रहे जलपानु करि सिय समेत दोउ बीर ॥१५०॥

केवट कीन्हि बहुत सेवकाई । सो जामिनि सिंगरौर गवाँई ॥  
 होत प्रात बट छीरु मगावा । जटा मुकुट निज सीस बनावा ॥  
 राम सखाँ तब नाव मगाई । प्रिया चढ़ाइ चढ़े रघुराई ॥  
 लखन बान धनु धरे बनाई । आपु चढ़े प्रभु आयसु पाई ॥  
 बिकल बिलोकि मोहि रघुवीरा । बोले मधुर बचन धरि धीरा ॥  
 तात प्रनामु तात सन कहेहू । बार बार पद पंकज गहेहू ॥  
 करबि पायँ परि विनय बहोरी । तात करिअ जनि चिंता मोरी ॥  
 गुन मग मंगल कुसल हमारें । कृपा अनुग्रह पुन्य तुम्हारें ॥

१०—तुम्हरें अनुग्रह तात कानन जात सब सुख पाइहौं ।

प्रतिपालि आयसु कुसल देखन पाय पुनि फिरि आइहौं ॥  
 जननीं सकल परितोषि परि परि पायँ करि बिनती धनी ।  
 तुलसी करेहु सोइ जतनु जेहिं कुसली रहाहिं कोसल धनी ॥

श्लो०—गुर सन कहव सँदेसु बार बार पद पदुम गहि ।

करव सोइ उपदेसु जेहिं न सोच मोहि अवधपति ॥१५१॥

गुरजन परिजन सकल निहोरी । तात सुनाएहु बिनती मोरी ॥



हृदयँ सोचु बड़ कछु न सोहाई । अस जानहिं जियँ जाउँ उड़ाई ॥  
 एक निमेष बरष सम जाई । एहि बिधि भरत नगर निअराई  
 असगुन होहिं नगर पैठारा । रटहिं कुभाँति कुखेत करारा ॥  
 खर सिआर बोलहिं प्रतिकूल । सुनि सुनि होइ भरत मन सूला ॥  
 श्रीहत सर सरिता बन बागा । नगरु विसेषि भयावनु लगा ॥  
 खग मृग हय गय जाहिं न जोए । राम वियोग कुरोग बिगोए ॥  
 नगर नारि नर निपट दुखारी । मनहुँ सबन्हि सब संपति हारी ॥  
 दो०—पुरजन मिलहिं न कहहिं कछु गवँहिं जोहारहिं जाहिं ।

भरत कुसल पूँछि न सकहिं भय बिषाद मन माहिं ॥१५८॥

हाट बाट नहिं जाइ निहारी । जनु पुर दहँ दिसि लागि दवारी  
 आवत सुत सुनि कैकयनंदिनि । हरषी रबिकुल जलरुह चंदिनि  
 सजि आरती मुदित उठि धाई । द्वारेहिं भेंटि भवन लेइ आई ॥  
 भरत दुखित परिवारु निहारा । मानहुँ तुहिन बनज बनु मारा ॥  
 कैकेई हरषित एहि भाँती । मनहुँ मुदित दव लाइ किराती ॥  
 सुतहि ससोच देखि मनु मारें । पूँछति नैहर कुसल हमारें ॥  
 सकल कुसल कहि भरत सुनाई । पूँछी निज कुल कुसल भलाई ॥  
 कहु कहँ तात कहाँ सब माता । कहँ सिय राम लखन प्रिय भ्राता  
 दो०—सुनि सुत वचन सनेहमय कपट नीर भरि नैन ।

भरत श्रवन मन सूल सम पापिनि बोली बैन ॥१५९॥

तात बात मैं सकल सँवारी । भै मंथरा सहाय विचारी ॥

कधुक काज रिधि बीच बिगारेउ । भूयति सुखनि पुर पगु धारैउ ॥  
 सुनत भरतु भए बिबम बिगारा । जनु सदमेउ करि कंदरि नादा ॥  
 तात तात हा तात पुकारी । परं भूमितल व्याकुल भारी ॥  
 चलत न देखन पायउँ तोही । तात न रामहि मीपेहु मोही ॥  
 बहुरि धोर धरि उठे सँभारी । कहु गितु मरन हेतु महतागे ॥  
 मुनि मुत वचन कहति कैकेई । मरमु पाँछि जनु माहुर देई ॥  
 आदिहु तैं सव आयनि करनी । कुटिल कठोर मुदित मन धरनी  
 दो०—भरतहि बिसरेउ पितु मरन सुनन राम बन गाँधु ।

हेतु अपनपउ अग्नि जिये यकिन रहे धरि मानु ॥१६०॥

बिकल बिलोकि सुनहि समुसावति । मनहुँ जं पर गंगु लगायति ॥  
 तात राउ नहि सोचै जोगू । बिदह सुकृत जमु कीन्देउ भोगू ॥  
 जीयत सकल जनम पल पाए । अंत अमरपति सदन मिपाए ॥  
 अस अनुमानि सोच परिहरहु । सहित समात्र राज पुर करहु ॥  
 मुनि मुठि सदमेउ राजकुमारु । पाकैं छत जनु लग अँगारु ॥  
 धीरज धरि भरि लेहि उगमा । पाषिनि सखहि भौति कुल नागा  
 जौ पै कुरुचि रही अति तोही । जनमत काहे न मारे मोही ॥  
 पेह काटि तैं पालउ सींचा । मीन जिअन निति बारि उगीचा  
 दो०—इंसबंसु दमरधु जनकु राम लखन मे भाइ ।

जननी हूँ जननी भई बिधि मन कहु न बसाइ ॥१६१॥

जब तैं कुमति कुमत जिये ठयऊ । गंड सँड होइ दहय न गरऊ



हृदयँ सोचु बड़ कछु न सोहाई । अस जानहिँ जियँ जाउँ उड़ाई ॥  
 एक निमेष बरष सम जाई । एहि बिधि भरत नगर निअराई ॥  
 असगुन होहिँ नगर पैठारा । रटहिँ कुभाँति कुखेत करारा ॥  
 खर सिआर बोलहिँ प्रतिकूला । सुनि सुनि होइ भरत मन सूला ॥  
 श्रीहत सर सरिता बन बागा । नगर बिसेषि भयावनु लागा ॥  
 खग मृग हय गय जाहिँ न जोए । राम वियोग कुरोग बिगोए ॥  
 नगर नारि नर निपट दुखारी । मनहुँ सब्रन्हि सब्र संपति हारी ॥  
 दो०—पुरजन मिलहिँ न कहहिँ कछु गवँहिँ जोहारहिँ जाहिँ ।

भरत कुसल पूँछि न सकहिँ भय बिषाद मन माहिँ ॥१५८॥

हाट बाट नहिँ जाइ निहारी । जनु पुर दहँ दिसि लागि दवारी  
 आवत सुत सुनि कैकयनंदिनि । हरषी रबिकुल जलरुह चंदिनि  
 सजि आरती मुदित उठि धाई । द्वारेहिँ भेंटि भवन लेइ आई ॥  
 भरत दुखित परिवार निहारा । मानहुँ तुहिन बनज बनु मारा ॥  
 कैकेई हरषित एहि भाँती । मनहुँ मुदित दव लाइ किराती ॥  
 सुतहिँ ससोच देखि मनु मारें । पूँछति नैहर कुसल हमारें ॥  
 सकल कुसल कहि भरत सुनाई । पूँछी निज कुल कुसल भलाई ॥  
 कहु कहँ तात कहाँ सब्र माता । कहँ सिय राम लखन प्रिय भ्राता  
 दो०—सुनि सुत बचन सनेहमय कपट नीर भरि नैन ।

भरत श्रवन मन सूल सम पापिनि बोली ब्रैन ॥१५९॥

तात बात मैं सकल सँवारी । भै मंथरा सहाय बिचारी ॥

कछुक काज विधि बीच बिगारेउ। भूपति मुरपति पुर पगु धरैउ ॥  
 मुनत भरनु भए विवस विषादा । जनु सहमेउ करि केहरि नादा ॥  
 तात तात हा तात पुकारी । परे भूमितल व्याकुल भारी ॥  
 चलत न देखन पायउँ तोही । तात न रामहि मँपेटु मोही ॥  
 बहुरि धीर धरि उठे सँपारी । कहु गिनु मरन हेतु मदतागी ॥  
 मुनि मुत वचन कहति कैकेई । मरमु पाँछि जनु माहुर देई ॥  
 आदिहु तँ सब आशनि करनी । कुटिल कठोर मुदित मन बरनी  
 दो०—भरतहि बिसरेउ पितु मरन मुनन राम बन गौधु ।

हेतु अपनपड जानि जियै थकिन रहे धरि माँनु ॥१६०॥

बिकल बिलोकि मुतहि समुझायति । मनहुँ जे पर ग्येनु लगायति ॥  
 तात राउ नहिँ सोचै जोगू । बिदइ मुकृत जसु कान्देठ भोगू ॥  
 जीपत सकल जनम फल पाए । अंत अमरपति सदन सिधाए ॥  
 अछ अनुमानि सोच परिहरहू । सहित सम्पाज राज पुर करहू ॥  
 मुनि मुठि सहमेउ राजकुमार । पाकै छत जनु लग अँगारु ॥  
 धीरज धरि भरि लेहिँ उषासा । पापिनि सबहिँ भौँति कुल नागा  
 जौँ पै कुरुचि रही अति तोही । जनमत काहे न मारे मोही ॥  
 पेद काटि तँ पालउ सीचा । मीन जिअन निति यारि उलीचा  
 दो०—इंसबंसु दमरधु जनकु राम सम्बन मे भाइ ।

जननी तँ जननी भाई विधि सन कछु न बसाइ ॥१६१॥

जब तँ कुमति कुमत जियै ठयऊ । खंड खंड होइ हृदउ न गयऊ

हृदयँ सोचु बड़ कछु न सोहाई । अस जानहिं जियँ जाउँ उड़ाई ॥  
 एक निमेष वरष सम जाई । एहि विधि भरत नगर निअराई  
 असगुन होहिं नगर पैठारा । रटहिं कुभाँति कुखेत करारा ॥  
 खर सिआर बोलहिं प्रतिकूला । सुनि सुनि होइ भरत मन सूला ॥  
 श्रीहत सर सरिता बन बागा । नगर बिसेषि भयावनु लागा ॥  
 खग मृग हय गय जाहिं न जोए । राम बियोग कुरोग बिगोए ॥  
 नगर नारि नर निपट दुखारी । मनहुँ सबन्हि सब संपति हारी ॥  
 दो०—पुरजन मिलहिं न कहहिं कछु गवँहिं जोहारहिं जाहिं ।

भरत कुसल पूँछि न सकहिं भय बिषाद मन माहिं ॥१५८॥

हाट बाट नहिं जाइ निहारी । जनु पुर दहँ दिसि लागि दवारी  
 आवत सुत सुनि कैकयनंदिनि । हरषी रबिकुल जलरुह चंदिनि  
 सजि आरती मुदित उठि धाई । द्वारेहिं भेंटि भवन लेइ आई ॥  
 भरत दुखित परिवार निहारा । मानहुँ तुहिन बनज बनु मारा ॥  
 कैकेई हरषित एहि भाँती । मनहुँ मुदित दव लाइ किराती ॥  
 सुतहि ससोच देखि मनु मारें । पूँछति नैहर कुसल हमारें ॥  
 सकल कुसल कहि भरत सुनाई । पूँछी निज कुल कुसल भलाई ॥  
 कहु कहँ तात कहाँ सब माता । कहँ सिय राम लखन प्रिय भ्राता

दो०—सुनि सुत बचन सनेहमय कपट नीर भरि नैन ।

भरत श्रवन मन सूल सम पापिनि बोली बैन ॥१५९॥

तात बात मैं सकल सँवारी । भै मंथरा सहाय विचारी ॥

कछुक काज बिधि बीन बिगारेउ । भूपति मुरपति पुर पगु धारेउ ॥  
 सुनत भरतु भए बिचस बिगारा । जनु सदमेउ करि केहरि नादा ॥  
 तात तात हा तात पुकारी । परे भूमितल व्याकुल भारी ॥  
 चलत न देखन पायउँ तोही । तात न रामहि भाँपेहु मोही ॥  
 बहुरि धीर धरि उठे सैभारी । कहु पितु मरन हेतु मदतागी ॥  
 सुनि सुत बचन कहति केकेई । मरमु पाँछि जनु माहुर देई ॥  
 आदिहु तैं सब आपनि करनी । कुटिल कठोर मुदित मन बरनी

दो०—भरतहि बिसरेउ पितु मरन सुनत राम बन गाँनु ।

हेतु भयनपड जानि जियै थकिन रहे धरि मानु ॥१६०॥

बिकल बिलोकि सुतहि समुझायति । मनहुँ जे पर ग्योनु सगायति ॥  
 तात राउ नहि सोनै जोगू । यिदह मुकृत जमु र्बान्देउ भोगू ॥  
 जीवन सकल जनम फल पाए । अंत अमरपति मदन मिधाए ॥  
 अस अनुमानि सोच परिहरहू । सहित समाज राज पुर करहू ॥  
 सुनि सुठि सदमेउ राजकुमारु । पाकैं छन जनु लाग अँगारु ॥  
 धीरज धरि भरि लेहि उखासा । पापिनि सवाहि भाँति कुल नागा ॥  
 जी वे कुरुचि रही अति तोही । जनमत काहे न मारे मोही ॥  
 पेइ काटि तैं पालउ सीँचा । मीन जिअन निति शरि उलीचा

दो०—ईसबंसु दमरपु जनकु राम लखन मे भाइ ।

जननी तू जननी भई बिधि सन कछु न बमाइ ॥१६१॥

जय तैं कुमति कुमत जियै ठयऊ । म्वंड खंड दोइ छदउ न गयऊ

वर मागत मन भइ नहिं पीरा । गरि न जीह मुहँ परेउ न कीरा  
 भूपँ प्रतीति तोरि किमि कीन्ही । मरन काल विधि मति हरि लीन्ही  
 विधिहुँ न नारि हृदय गति जानी । सकल कपट अघ अवगुन खानी  
 सरल सुसील धरम रत राऊ । सो किमि जानै तीय सुभाऊ ॥  
 अस को जीव जंतु जग माहीं । जेहि रघुनाथ प्रानप्रिय नाहीं ॥  
 भे अति अहित रामु तेउ तोही । कोतू अहसि सत्य कहु मोही ॥  
 जो हसि सो हसि मुहँ मसि लाई । आँखि ओट उठि बैठहि जाई ॥

दो०—राम बिरोधी हृदय तें प्रगट कीन्ह विधि मोहि ।

मो समान को पातकी वादि कहउँ कछु तोहि ॥१६२॥

सुनि सत्रुघुन मातु कुटिलाई । जरहिं गात रिस कछु न बसाई ॥  
 तेहि अवसर कुवरी तहँ आई । वसन विभूषन विविध बनाई ॥  
 लखि रिस भरेउ लखन लघु भाई । वरत अनल घृत आहुति पाई ॥  
 हुमगि लात तकि कूबर मारा । परि मुह भर महि करत पुकारा  
 कूबर दूटेउ फूट कपारु । दलित दसन मुख रुधिर प्रचारु ॥  
 आह दइअ मैं काह नसावा । करत नीक फलु अनइस पावा ॥  
 सुनि रिपुहन लखि नख सिख खोटी । लगे घसीटन धरि धरि शौंटी  
 भरत दयानिधि दीन्ह छड़ाई । कौसल्या पहिं गे दोउ भाई ॥

दो०—मलिन वसन विवरन बिकल कृस सरीर दुख भार ।

कनक कल्प वर बेलि बन मानहुँ हनी तुसार ॥१६३॥

भरतहि देखि मातु उठि धाई । मुरुछित अवनि परी झई आई ।

देखत भरतु बिकल मए भारी । परे चरन तन दसा बिसारी ॥  
मातु तात कहैं देहि देखार्द । कहैं सिय रामु लखनु दोउ भाई  
कैकई कत जनमी जग माझा । जी जनमित भइ काहे न बौझा  
कुल कलंकु जेहि जनमेउ मोही । आऊस पाऊन प्रियजन द्रोही ॥  
को तिमुरन मोहि सरिस अमागी । गति अति तोरि मातु जेहि लागी  
पितु सुरपुर बन रघुर केनू । मैं केवल सब अनरण हेनू ॥  
धिग मोहि भयउँ बेनु बन आगी ॥ दुसई दाइ दुरा दूपन भागी ॥  
दो०—मातु भरत के बचन मूढु मुनि पुनि उठी सँभारि ।

लिष्ट उठाइ लगाइ उर लोचन मोक्षति बारि ॥ १६४ ॥

छल सुमाय मायें दियें लाए । अति दित मनहुँ राम फिरि आए  
भँटेउ बहुरि लखन लपु भाई । सोकु सनेहु न हृदयें समार्द ॥  
देखि सुमाउ कहत सबु कोरं । राम मानु अस काहे न होई ॥  
मातौ भरतु गोद बैठारे । आँसु पौंछि मूढु बचन उचारे ॥  
अजहुँ बच्छ यलि धीरज धरहू । कुसमउ समुझि लोक परिहरहू ॥  
अनि मानहु दियें हानि गलानी । काल करम गति अपटित जानी ॥  
माहुहि दोमु देहु जनि ताता । मा मोहि सब विधि नाम विधाता ॥  
जो एतेहुँ दुरा मोहि जिआवा । अजहुँ को जानइ का तेहि भाया ॥

श्लो०—पितु आपस भूपन बसन तात तत्रे रघुबीर ।

विसमउ हरषु न हृदयें कसु पहिरे बलकल चीर ॥ १६५ ॥

गुर प्रमद मन रंग न रोनु । सर कर सब विधि करि प

चले त्रिपिन सुनि सिय सँग लागी। रहइ न राम चरन अनुरागी ॥  
 सुनतहिं लखनु चले उठि साथी। रहहिं न जतन किए रखुनाथी ॥  
 तब रखुपति सबही सिरु नाई। चले संग सिय अरु लघु भाई ॥  
 रामु लखनु सिय वनहि सिधाए। गइउँ न संग न प्रान पठाए ॥  
 यहु सबु भा इन्ह आँखिन्ह आगें। तउ न तजा तनु जीव अभागें ॥  
 मोहि न लाज निज नेहु निहारी। राम सरिस सुत मैं महतारी ॥  
 जिए मरै भल भूपति जाना। मोर हृदय सत कुलिस समाना ॥

दो०—कौसल्या के बचन सुनि भरत सहित रनिवासु ।

व्याकुल विलपत राजगृह मानहुँ सोक नेवासु ॥ १६६ ॥

विलपहिं विकल भरत दोउ भाई। कौसल्याँ लिए हृदयँ लगाई ॥  
 भाँति अनेक भरतु समुझाए। कहि विवेकमय वचन सुनाए ॥  
 भरतहुँ मातु सकल समुझाई। कहि पुरान श्रुति कथा सुहाई ॥  
 छल विहीन सुचि सरल सुबानी। बोले भरत जोरि जुग पानी ॥  
 जे अघ मातु पिता सुत मारें। गाइ गोठ महिसुर पुर जारें ॥  
 जे अघ तिय बालक बध कीन्हें। मीत महीपति माहुर दीन्हें ॥  
 जे पातक उपपातक अहहीं। करम वचन मन भव कवि कहहीं ॥  
 ते पातक मोहि होहुँ विधाता। जौं यहु होइ मोर मत माता ॥

दो०—जे परिहरि हरि हर चरन भजहिं भूतगन घोर ।

तेहि कइ गति मोहि देउ बिधि जौं जननी मत मोर ॥ १६७ ॥

वेचहिं वेदु धरमु दुहि लेहीं। पिसुन पराय पाप कहि देहीं ॥

फगटी कुटिल कलहप्रिय कोची । वेद विदूषक विश्व विरोधी ।  
लोभी लंपट लोडुपचारा । जे ताकहिं परधनु परदारा ।  
पार्वी में तिन्ह कै गति घोरा । जी जननी यहु संमन मोरा ।  
जे नहिं साधुसंग अनुसारे । परमारथ पथ विमुख अभामे ।  
जे न भजहिं हरि नरतनु पारि । जिन्हदि न हरि हर मुजमु सोहाई ।  
तजि धुतिपंथु वाम पथ चलहीं । बंचक विरचि बेर जगु छलहीं ।  
तिन्ह कै गति मोहि संकर देऊ । जननी जीं यहु जाना भेऊ ॥

दो०—मातु भारत के बचन मुनि सोंचे सरल सुभायें ।

कहनि राम प्रिय तात तुम्ह सदा बचन मन कार्ये ॥ १८० ॥

राम प्रानहु तैं प्रान तुम्हारे । तुम्ह खुपतिहि प्रानहु तैं प्यारे ॥  
विधु विष चवै सवै हिम आगी । होइ वारिचर वारि विरागी ॥  
मएँ ग्यानु बह मिटे न मोह । तुम्ह रामहि प्रतिकूल न होह ॥  
मत तुम्हार यहु जो जग कहहीं । मो सरनेहुँ सुर सुगति न रहहीं ॥  
अस कहि मातु भएलु दिवैं लाए । बन पथ खयहि नयन जल लाए ॥  
करत बिलाप बहुत यदि भौंती । बैठेहिं बीति राई सय राती ॥  
वामदेउ बसिउ तब आए । सचिव महाजन सकल बोलाए ॥  
मुनि बहु भौंति भरत उरदेसे । कहि परमारथ बचन मुदेसे ॥

दो०—तात हृदयें धीरगु घरहु करहु जो भवसर भातु ।

उठे भारत गुर बचन मुनि करन कहेउ महु सातु ॥ १९१ ॥

नृपतनु वेद विदित अन्धबाका । परम विचित्र ॥



गहि पद भरत मातु सब राखी । रहीं रानि दरसन अभिलाषी ॥  
 चंदन अगर भार बहु आए । अमित अनेक सुगंध सुहाए ॥  
 सरजु तीर रचि चिता बनाई । जनु सुरपुर सोपान सुहाई ॥  
 एहि विधि दाह क्रिया सब कीन्ही । विधिवत न्हाइ तिलांजुलि दीन्ह  
 सोधि सुमृति सब वेद पुराना । कीन्ह भरत दसगात विधाना ॥  
 जहँ जस मुनिवर आयसु दीन्हा । तहँ तस सहस भाँति सबु कीन्हा ।  
 भए बिसुद्ध दिए सब दाना । धेनु वाजि गज बाहन नाना ॥

दो०—सिंघासन भूषन बसन अन्न धरनि धन धाम ।

दिए भरत लहि भूमिसुर भे परिपूरन काम ॥१७०॥

पितु हित भरत कीन्हि जसि करनी । सो मुख लाख जाइ नहिं बरन  
 सुदिनु सोधि मुनिवर तत्र आए । सचिव महाजन सकल बोलाए ।  
 बैठे राजसभाँ सब जाई । पठए बोलि भरत दोउ भाई ॥  
 भरतु वसिष्ठ निकट बैठारे । नीति धरममय वचन उचारे ॥  
 प्रथम कथा सब मुनिवर बरनी । कैकइ कुटिल कीन्हि जसि करनी  
 भूप धरमव्रतु सत्य सराहा । जेहिं तनु परिहरि प्रेमु निवाहा ॥  
 कहत राम गुन सील सुभाऊ । सजल नयन पुलकेउ मुनिराऊ ॥  
 बहुरि लखन सिय प्रीति बखानी । सोक सनेह मगन मुनि ग्यानी ॥

दो०—सुनहु भरत भावी प्रबल बिलखि कहेउ मुनिनाथ ।

हानि लाभु जीवनु मरनु जसु अपजसु विधि हाथ ॥१७१॥

अस विचारि केहि देइअ दोसू । ब्यरथ काहि पर कीजिअ रोसू ॥

सात विचार करहु मन माहीं । सोन जोगु दसरथ नृपु नाहीं ॥  
 सोचिअ विप्र जो वेद विहीना । तजि निज घरमु विषय लयलीना  
 सोचिअ नृपति जो नीति न जाना । जेदिन प्रजा प्रिय प्रान समाना  
 सोचिअ ययसु कृपन धनवान् । जो न अतिथि सिव भगति मुजान्  
 सोचिअ सुदु विप्र अयमानी । मुखर मानप्रिय ग्यान गुमानी ॥  
 सोचिअ पुनि पति पंचक नारी । कुटिल कलहप्रिय इच्छाचारी ॥  
 सोचिअ बहु निज मनु परिहरई । जो नहिं गुर आयमु अनुसरई ॥

दो०—सोचिअ गृही जो मोह बम करहु करम पय त्याग ।

सोचिअ जसी प्रपंच रत विगत विवेक विराग ॥१०२॥

बैखानस सोइ सोचे जोगू । तपु पिदाइ जेहि भावइ भोगू ॥  
 सोचिअ पिमुन अकारन कोपी । जननि जनक गुर बंधु विरोधी ॥  
 सब विधि सोचिअ पर अनकारी । निज तनु पोषक निरदय भारी ॥  
 सोचनीय सबही विधि सोई । जो न छादि छलु हरि जन होई ॥  
 सोचनीय नहिं कोसलराऊ । भुवन चारिदस प्रगट प्रभाऊ ॥  
 मयड न अहइ न अब होनिदारा । भूप भरत जस पिता तुम्हारा ॥  
 विधि हरि हूँ मुरपति दिखिनाया । बरनहिं सब दसरथ गुन गाथा ॥

दो०—कहहु सात बेदि भौंसि कोउ करिहि बदाई ठामु ।

राम लखन तुम्ह सनुइन सरिस मुअन मुचि आमु ॥१०३॥

सब प्रकार भूपति बहमागी । वादि विषादु करिअ तेंदि ॥  
 यहु मुनि समुझि सोनु परिहरहु । खिर धरि राज रजायम ॥

रायँ राजपदु तुम्ह कहँ दीन्हा । पिता वचनु फुर चाहिअ कीन्हा ॥  
 तजे रामु जेहिं वचनहि लागी । तनु परिहरेउ राम विरहागी ॥  
 नृपहि वचन प्रिय नहिं प्रिय प्राना । करहु तात पितु वचन प्रवाना ॥  
 करहु सीस धरि भूप रजाई । हइ तुम्ह कहँ सब भाँति भलाई ॥  
 परसुराम पितु अग्या राखी । मारी मातु लोक सब साखी ॥  
 तनय जजातिहि जौवनु दयऊ । पितु अग्याँ अघ अजसु न भयउ  
 दो०—अनुचित उचित बिचारु तजि जे पालहिं पितु बैन ।

ते भाजन सुख सुजस के बसहिं अमरपति ऐन ॥१७४॥

अवसि नरेस वचन फुर करहु । पालहु प्रजा सोकु परिहरहु ।  
 सुरपुर नृपु पाइहि परितोषू । तुम्ह कहँ सुकृतु सुजसु नहिं  
 वेद विदित संमत सबही का । जेहि पितु देइ सो पावइ टीका ।  
 करहु राजु परिहरहु गलानी । मानहु मोर वचन हित जानी ।  
 सुनि सुखु लहव राम बैदेहीं । अनुचित कहव न पंडित केहीं ।  
 कौसल्यादि सकल महतारीं । तेउ प्रजा सुख होहिं सुखारीं ।  
 परम तुम्हार राम कर जानिहि । सो सब विधि तुम्ह सन भल ।  
 सौपेहु राजु राम के आएँ । सेवा करहु सनेह सुहाएँ ।  
 दो०—कीजिअ गुर आयसु अवसि कहहिं सचिव कर जोरि ।

रघुपति आएँ उचित जस तस तब करव बहोरि ॥१७५॥

कौसल्या धरि धीरजु कहई । पूत पथ्य गुर आयसु अहई  
 सो आदरिअ करिअ हित मानी । तजिअ विषादु काल गति ज ।

येन रघुरति मुरपति नरनाहू । तुम्ह यदि मोंति तात कदराहू ॥  
 परिजन प्रजा सचिव सब अंश । तुम्हही मुन सब कहैं अवलंश ॥  
 अलि विधि याम कालु कठिनाई । धीरनु धरहु मातु बलि जाई ॥  
 धीर धरि गुर आयमु अनुमरहु । प्रजा पालि परिजन दुखु दरहु ॥  
 गुर के वचन सचिव अभिनंदनु । मुने भरत दिय दित अनु चंदनु ॥  
 मुनी यशोरि मातु मृदु बानी । सील स्नेह सरल रस मानी ॥

ॐ०—सानी सरल रस मातु बानी मुनि भानु व्याकुल भण ।  
 लोचन सरोरुह सबत सींचत विरह उर अंकुर मण ॥  
 सो दत्ता देखल समय तेहि बिसरी सबहि मुधि देह की ।  
 तुलसी सराहत सकल साधर सीर्य सहज स्नेह की ॥

श्लो०—भरतु कमल कर जोरि धीर पुरंधर धीर धरि ।  
 वचन अभिज्ञ अनु कोरि देत उचित उत्तर सबहि ॥ १७६ ॥

भासपारायण, अठारहवाँ विभाम

मोहि उपदेसु दीन्ह गुर नीका । प्रजा सचिव संमत राखी का ॥  
 मातु उचित धरि आयमु दीन्हा । अवशि सीम धरि चाहउँ कीन्हा ॥  
 गुर पितु मातु स्वामि दित बानी । मुनि मन मुदित करि भ मति जान ॥  
 उचित कि अनुचित किए विचार । परमु जाइ मिर पातक भार ॥  
 तुम्ह तो देहु सरल सिख सोई । जो आचरत मोर मत होई ॥  
 अथपि यह समुझत हउं जीकें । तदपि होत परितोषु न जीकें ॥  
 अब तुम्ह विनय मोरि मुनि लेहू । मोहि अनुहरत सिखावन ॥

ऊतर देऊँ छमव अपराधू । दुखित दोष गुन गनहिं न साधू ॥

दो०—पितु सुरपुर सिय रामु बन करन कहहु मोहि राजु ।

एहि तैं जानहु मोर हित कै आपन बड़ काजु ॥१७७॥

हित हमार सियपति सेवकाई । सो हरि लीन्ह मातु कुटिलाई ॥  
मैं अनुमानि दीख मन माहीं । आन उपायँ मोर हित नाहीं ॥  
सोक समाजु राजु केहि लेखें । लखन राम सिय बिनु पद देखें ॥  
बादि बसन बिनु भूपन भारू । बादि बिरति बिनु ब्रह्मबिचारू ॥  
सरजु सरीर बादि बहु भोगा । बिनु हरिभगति जायँ जप जोगा ॥  
जायँ जीव बिनु देह सुहाई । बादि मोर सनु बिनु खुराई ॥  
जाऊँ राम पहिं आयसु देहू । एकहिं आँक मोर हित एहू ॥  
मोहि नृप करि भल आपन चहहू । सोउ सनेह जड़ता बस कहहू ॥

दो०—कैकेई सुभ कुटिलमति राम बिमुख गतलाज ।

तुम्ह चाहत सुखु मोहबस मोहि से अधम कै राज ॥१७८॥

कहउँ साँचु सब सुनि पतिआहू । चाहिअ धरमसील नरनाहू ॥  
मोहि राजु हठि देखहु जवहीं । रसा रसातल जाइहि तवहीं ॥  
मोहि समान को पाप निवासू । जेहि लागि सीय राम बनबासू ॥  
रायँ राम कहूँ काननु दीन्हा । बिछुरत गमनु अमरपुर कीन्हा ॥  
मैं सहु सब अनरथ कर हेतू । बैठ बात सब सुनउँ सचेतू ॥  
बिनु खुबीर बिलोकि अबासू । रहे प्रान सहि जग उपहासू ॥  
राम पुनीत विषय रस रूखे । लोलुप भूमि भोग के भूखे ॥

कहैं लगि कहीं हृदय कटिनारि । निदरि कुलिमु जेहि लही बहारि ॥

दो०—कारन तें कारजु कठिन होइ दोमु नहिं मोर ।

कुलिस कस्थि तें उपल तें लोह कराल कठोर ॥१०९॥

कैकई भव तनु अनुरागे । पावैंर प्राण अघाह अमागे ॥

जौ प्रिय बिरहैं प्राण प्रिय लागे । देखब मुनब बहुत अब आगे ॥

लखन राम बिय कहूँ बनु दीन्हा । पठइ अमरपुर पति हित कीन्हा ॥

लीन्ह बिषयन अरजमु आपू । दीन्हेउ प्रजाहि सोकु संतापू ॥

मोहि दीन्ह सुखु सुजमु सुराजू । कीन्ह कैकई सब कर कामू ॥

एहि तैं मोर काह अब नीका । तेहि पर देन कहहु तुम्ह टीका ॥

कैकइ जठर जनमि जग माहीं । यह मोहि कहैं कछु अनुचित नाहीं ॥

मोरि बात सब बिधिहिं बनाई । प्रजा पाँच कत करहु सदाई ॥

दो०—ग्रह ग्रहीत पुनि बात बस तेहि पुनि बीछी मार ।

तेहि विभाहम कारनी कहहु काह उपचार ॥१८०॥

कैकइ सुअन जोगु जग जोई । चतुरबिरंचि दीन्ह मोहि सोई ॥

दसरथ तनय राम लघु भाई । दीन्ह मोहि बिधि बादि बदाई ॥

तुम्ह सब कहहु कदाचन टीका । राय रजायमु सब कहैं नीका ॥

उतर देउं केहि बिधि केहि केही । कहहु मुखेन जया रुचि जेही ॥

मोहि कुमातु समेत बिदाई । कहहु कहिहि के कीन्ह भलाई ॥

मो बिनु को सचराचर माहीं । जेहि सिय रामु मानमिय नाहीं ॥

परम हानि खू कहैं बड़ लाह । अदिनु मोर नहिं दूयन काह ।

संसय सील प्रेम बस अहहू । सबुइ उचित सब जो कहू कहू ॥

दो०-राम मातु सुठि सरलचित मो पर प्रेसु बिसेषि ।

कहह सुभाय सनेह बस मोरि दीनता देखि ॥१८१॥

गुर बिबेक सागर जगु जाना । जिन्हहि विस्व कर बदर समाना ।  
मो कहँ तिलक साज सज सोऊ । भएँ बिधि विमुख विमुख सबु के  
परिहरि रामु सीय जग माहीं । कोउ न कहिहि मोर मत नाहीं  
सो मैं सुनव सहव सुखु मानी । अंतहुँ कीच तहाँ जहँ पानी  
डरु न मोहि जग कहिहि कि पोचू । परलोकहु कर नाहिन सोचू  
एकइ उर बस दुसह दवारी । मोहि लागि भे सिय रामु दुखा  
जीवन लाहु लखन भल पावा । सबु तजि राम चरन मनु लावा ।  
मोर जनम रघुवर बन लागी । झूठ काह पछिताउँ अभागी ।

दो०-आपनि दारुन दीनता कहउँ सबहि सिरु नाइ ।

देखें विनु रघुनाथ पद जिय कै जरनि न जाइ ॥१८२॥

आन उपाउ मोहि नहिँ सूझा । को जिय कै रघुवर विनु वूझा  
एकहिँ आँक इहइ मन माहीं । प्रातकाल चलिहउँ प्रभु पाहीं  
जद्यपि मैं अनभल अपराधी । भै मोहि कारन सकल उपार्थ  
तदपि सरन सनमुख मोहि देखी । छमि सब करिहहिँ कृपा बिसे  
सील सकुच सुठि सरल सुभाऊ । कृपा सनेह सदन रघुरा  
अरिहुक अनभल कीन्ह न रामा । मैं सिसु सेवक जद्यपि वा  
तुम्ह पै पाँच मोर भल मानी । आयसु आसिय देहु सुवा





दो०—जरउ सो संपति सदन सुख सुहृद मातु पितु भाइ ।

सनमुख होत जो राम पद करै न सहस सहाइ ॥१८५॥

घर घर साजहिं वाहन नाना । हरषु हृदयँ परभात पयाना ॥  
भरत जाइ घर कीन्ह विचारू । नगर वाजि गज भवन भँडारू  
संपति सब रघुपति कै आही । जौं विनु जतन चलौं तजि ताही  
तौ परिनाम न मोरि भलाई । पाप सिरोमनि साइँ दोहाई ॥  
करइ स्वामि हित सेवकु सोई । दूषन कोटि देइ किन कोई ॥  
अस विचारि सुचि सेवक बोले । जे सपनेहुँ निज धरम न डोले ॥  
कहि सबु मरमु धरमु भल भाषा । जो जेहि लायक सो तेहिं राखा ॥  
करि सबु जतनु राखि रखवारे । राम मातु पहिं भरतु सिधारे ॥

दो०—आरत जननी जानि सब भरत सनेह सुजान ।

कहेउ बनावन पालकीं सजन सुखासन जान ॥१८६॥

चक्र चक्रि जिमि पुर नर नारी । चहत प्रात उर आरत भारी ॥  
जागत सब निसि भयउ बिहाना । भरत बोलाए सचिव सुजाना ॥  
कहेउ लेहु सबु तिलक समाजू । बनहिं देव मुनि रामहिराजू ।  
बेगि चलहु सुनि सचिव जोहारे । तुरत तुरग रथ नाग सँवारे ।  
अरुंधती अरु अगिनि समाऊ । रथ चढ़ि चले प्रथम मुनिराऊ ।  
विप्र बृंद चढ़ि वाहन नाना । चले सकल तप तेज निधाना ।  
नगर लोग सब सजि सजि जाना । चित्रकूट कहँ कीन्ह पयाना  
सिविका सुभग न जाहिं बखानी । चढ़ि चढ़ि चलत भई सब रा



दो०—अस बिचारि गुहँ ग्याति सन कहेउ सजग सब होहु ।

हथवाँसहु बोरहु तरनि कीजिअ घाटारोहु ॥१८९॥

होहु सँजोइल रोकहु घाटा । ठाटहु सकल मरै के ठाटा ॥

सनमुख लोह भरत सन लेऊँ । जिअत न सुरसरि उतरन देऊँ ॥

समर मरनु पुनि सुरसरि तीरा । राम काजु छनभंगु सरीरा ॥

भरत भाइ नृपु मैं जन नीचू । बड़ें भाग असि पाइअ मोचू ॥

स्वामि काज करिहउँ रन रारी । जस धवलिहउँ भुवन दस चारी ॥

तजउँ प्रान रघुनाथ निहोरें । दुहूँ हाथ मुद मोदक मोरें ॥

साधु समाज न जाकर लेखा । राम भगत महुँ जासु नरेखा ॥

जायँ जिअत जग सो महि भारू । जननी जौवन विटप कुठारू ॥

दो०—विगत विषाद निषादपति सबहि बड़ाइ उछाहु ।

सुमिरि राम मागेउ तुरत तरकस धनुष सनाहु ॥१९०॥

भाइहु सजहु सँजोऊ । सुनि रजाइ कदराइ न कोऊ ॥

भलेहिं नाथ सय कहहिं सहरपा । एकहिं एक बढ़ावइ करपा ॥

चले निषाद जोहारि जोहारी । सूर सकल रन रूचइ रारी ॥

सुमिरि राम पद पंकज पनहीं । भार्यी बाँधि चढ़ाइन्हि धनहीं ॥

अँगरी पहिरि कूँड़ि सिर धरहीं । फरसा वाँस सेल सम करहीं ॥

एक कुसल अति ओड़न खाँड़े । कूदहिं गगन मनहुँ छिति छाँड़े ॥

निज निज साजु समाजु बनाई । गुह राउतहि जोहारे जाई ॥

देखि सुभट सब लायक जाने । लै लै नाम सकल सनमाने ॥

दो०-भाइहु खावहु घोख जनि भयहु काज बह मोहि ।

मुनि सरोष बोले सुमट थीर अधीर न होहि ॥१९१॥

राम प्रताप नाथ बल तोरे । करहि कटकु रिनु भट रिनु घेरे  
जीवत पाउ न पाछे धरही । दंड मुंढमय मेदिनि करही ॥  
दीख निगादनाथ भल दोन्ह । कहेउ बजाउ पुसाऊ दोन्ह ॥  
एतना कहत छीक भइ बाँए । कहेउ सगुनिअन्ह खेत मुहाए ॥  
बूढ़ एक कह सगुन बिचारी । भरतहि मिलिअ न होइहि रारी ॥  
रामहि भए मनावन जाही । सगुन कहइ अस विप्रहु नारी ॥  
सुनि गुह कहइ नीक कह बूढ़ा । सहसा करि पछितारि बिमूढ़ा ॥  
भरत सुभाउ सीलु रिनु बूझें । यदि हित हानि जानि रिनु जूझें ॥

दो०-गहहु घाट भट समिति सब लेउँ मरम मिलि जाइ ।

बूझि मित्र भरि मन्थ गति तस सब करिहउँ भाइ ॥१९२॥

लखब सनेहु सुभायें मुहायें । बैस प्रीति नहि दुरैं दुरायें ॥  
अस कहि भेंट सँजोवन लागे । कंद मूल फल खग मृग मागे ॥  
मीन पीन पाठीन पुराने । भरि भरि भार कदान्ह आने ॥  
मिलन साजु राजि मिलन सिषाए । मंगल मूल सगुन सुम पाए ॥  
देखि दूरि तें कदि निज नामू । कीन्ह मुनीसदि दंड प्रनामू ॥  
जानि रामप्रिय दीन्हि असीसा । भरतहि बहेउ बुझाइ मुनीसा ॥  
राम सखा सुनि दंडनु त्यागा । चले उत्तरे उमगत अनुरागा ॥  
गाउँ जाति गुह नाउँ मुनारि । कीन्ह जोहाइ माय महि लारि ॥

दो०-करत दंडवत देखि तेहि भरत लीन्ह उर लाइ ।

मनहुँ लखन सन भेंट भइ प्रेमु न हृदयँ समाइ ॥१९३॥

भेंटत भरतु ताहि अति प्रीती । लोग सिहारि प्रेम कै रीती ॥

धन्य धन्य धुनि मंगल मूला । सुर सराहि तेहि वरिसहि फूला ॥

लोक वेद सब भाँतिहि नीचा । जासु छाँह छुइ लेइअ सींचा ॥

तेहि भरि अंक राम लघु भ्राता । मिलत पुलक परिपूरित गाता ॥

राम राम कहि जे जमुहार्ही । तिन्हहि न पाप पुंज समुहार्ही ॥

यह तौ राम लाइ उर लीन्हा । कुल समेत जगु पावन कीन्हा ॥

करमनास जलु सुरसरि परई । तेहि को कहहु सीस नहिं धरई ॥

उलटा नामु जपत जगु जाना । बालमीकि भए ब्रह्म समाना ॥

दो०-स्वपच सबर खस जमन जड़ पावँर कोल किरात ।

रामु कहत पावन परम होत भुवन विख्यात ॥१९४॥

नहिं अचिरिजु जुग जुग चलि आई । केहि न दीन्हि रघुवीर बड़ाई

राम नाम महिमा सुर कहहीं । सुनि सुनि अवधलोग सुखु लहहीं

रामसखहि मिलि भरत सप्रेमा । पूँछी कुसल सुमंगल खेमा ॥

देखि भरत कर सीलु सनेहु । भा निपाद तेहि समय विदेहु ॥

सकुच सनेहु मोदु मन वाढ़ा । भरतहि चितवत एकटक ठाढ़ा ॥

धरि धीरजु पद बंदि बहोरी । विनय सप्रेम करत कर जोरी ॥

कुसल मूल पद पंकज पेखी । मैं तिहुँ काल कुसल निज लेखी ॥

अब प्रभु परम अनुग्रह तोरें । सहित कोटि कुल मंगल मोरें ॥

दो०—समुझि मोरि करतूति कुन्नु प्रभु महिमा त्रिये जोइ ।

जो न भजइ रघुबीर पद जग विधि बंचित सोइ ॥ १९५ ॥

कपटी कायर कुमति कुजाती । लोक बेद बाहेर सब भौंती ॥  
 राम कीन्ह आपन जबही तैं । भयउँ मुचन भूपन तबही तैं ॥  
 देखि प्रीति मुनि चिनय मुहाई । मिलेउ बहोरि भरत लघु भाई ॥  
 कहि निषाद निज नाम मुगानी । सादर सकल जोहारी रानी ॥  
 जानि लखन सम देखि असीसा । त्रिभट्ट मुरी सय लाख बरीसा ॥  
 निराल निषादु नगर नर नारी । भए मुखी जनु लखनु निहारी ॥  
 कहहि लदेउ एहि जीवन ताहु । भँटेउ रामभद्र भरि बाहु ॥  
 मुनि निषादु निज भाग बड़ाई । प्रमुदित मन लइ चलेउ लेयाई ॥

दो०—सनकारे सेवक सकल चले स्वामि स्त्रव पाइ ।

घर तह तर सर बाग बन वास बनाएन्हि जाइ ॥ १९६ ॥

सुंगरेपुर भरत दील जब । भे सनेहैं सब अग सिधिल नव ॥  
 सोहत दिऐं निषादाहि लागू । जनु तनु धरें चिनय अनुरागू ॥  
 एहि विधि भरत सेनु सनु संगी । दीग्वि जाइ जग पावनि गंगा ॥  
 रामघाट कहैं कीन्ह प्रनामू । भा मनु समनु भिन्ने जनु रानू ॥  
 करहि प्रनाम नगर नर नारी । मुदित नक्षमय चारि निहारी ॥  
 करि मज्जनु मागहि कर जोरी । रामचंद्र पद प्रीति न थोरी ॥  
 भरत कहेउ मुरसरि तब रेनु । सकल मुखाद सेनक मुरथेनु ॥  
 जोरि पानि बर मागउँ एहु । सोय राम पद सह

दो०—एहि बिधि मज्जनु भरतु करि गुर अनुसासन पाइ ।

मातु नहानीं जानि सब डेरा चले लवाइ ॥१९७॥

जहँ तहँ लोगन्ह डेरा कीन्हा । भरत सोधु सर्वही कर लीन्हा ॥  
 सुर सेवा करि आयसु पाई । राम मातु पहिं गे दोउ भाई ॥  
 चरन चाँपि कहि कहि मृदु बानी । जननीं सकल भरत सनमानी ॥  
 भाइहि सौं पि मातु सेवकाई । आपु निषादहि लीन्ह बोलाई ॥  
 चले सखा कर सौं कर जोरें । सिथिल सरीरु सनेहन थोरें ॥  
 पूँछत सखहि सो ठाउँ देखाऊ । नेकु नयन मन जरनि जुड़ाऊ ॥  
 जहँ सिय रामु लखनु निसि सोए । कहत भरे जल लोचन कोए ॥  
 भरत बचन सुनि भयउ बिषादू । तुरत तहाँ लइ गयउ निषादू ॥

दो०—जहँ सिंसुपा पुनीत तर रघुबर किय बिश्रामु ।

अति सनेहँ सादर भरत कीन्हेउ दंड प्रनामु ॥१९८॥

कुस साँथरी निहारि सुहाई । कीन्ह प्रनामु प्रदच्छिन्न जाई ॥  
 चरन रेख रज आँखिन्ह लाई । बनइ न कहत प्रीति अधिकाई ॥  
 कनक बिंदु दुइ चारिक देखे । राखे सीस सीय सम लेखे ॥  
 सजल बिलोचन हृदयँ गलानी । कहत सखा सन बचन सुबानी ॥  
 श्रीहत सीय बिरहँ दुतिहीना । जया अवधनर नारि बिलीना ॥  
 पिता जनक देउँ पटतर केही । करतल भोगु जोगु जग जेही ॥  
 ससुर भानुकुल भानु भुआलू । जेहि सिहात अमरावतिपालू ॥  
 प्राननाथु रघुनाथ गोसाई । जो बड़ होत सो राम बड़ाई ॥





छं०-विधि वाम की करनी कठिन जेहिं मातु कीन्ही बावरी ।  
 तेहि राति पुनि पुनि करहिं प्रभु सादर सरहना रावरी ॥  
 तुलसी न तुम्ह सो राम प्रीतमु कहतु हौं सौंहें किएँ ।  
 परिनाम मंगल जानि अपने आनिए धीरजु हिएँ ॥

सो०-अंतरजामी रामु सकुच सप्रेम कृपायतन ।  
 चलिअ करिअ विभ्रामु यह विचारि दृढ़ आनि मन ॥२०१॥  
 सखा वचन सुनि उर धरि धीरा । वास चले सुमिरत रघुवीरा ॥  
 यह सुधि पाइ नगर नर नारी । चले बिलोकन आरत भारी ॥  
 परदखिना करि करहिं प्रनामा । देहिं कैकइहि खोरि निकामा ॥  
 भरि भरि बारि बिलोचन लेहीं । वाम विधातहि दूपन देहीं ॥  
 एक सराहहिं भरत सनेहू । कोउ कह नृपति निग्राहेउ नेहू ॥  
 आपु सराहि निषादहि । को कहि सकइ विमोह विषादहि ॥  
 एहि विधि राति लोगु सबु जागा । भा भिनुसार गुदारा लागा ॥  
 गुरहि सुनावैं चढ़ाइ सुहाई । नई नाव सब मातु चढ़ाई ॥  
 दंड चारि महँ भा सबु पारा । उत्तरि भरत तब सबहि सँभारा ॥

दो०-प्रातक्रिया करि मातु पद बंदि गुरहि सिरु नाइ ।  
 आगें किए निषाद गन दीन्हेउ कटकु चलाइ ॥२०२॥  
 कियउ निषादनाथु अगुआई । मातु पालकीं सकल चलाई ॥  
 साथ बोलाइ भाइ लघु दीन्हा । विप्रन्ह सहित गवनु गुर कीन्हा ॥  
 आपु सुरसरिहि कीन्ह प्रनामू । सुमिरे लखन संहित सिय रामू ॥



चातकु रटनि घटें घटि जाई। बढे प्रेमु सब भाँति भलाई ॥  
 कनकहिं बान चढ़इ जिमि दाहें। तिमि प्रियतम पद नेम निवाहें ॥  
 भरत बचन सुनि माझ त्रिवेनी। भइ मृदु बानि सुमंगल देनी ॥  
 तात भरत तुम्ह सब विधि साधू। राम चरन अनुराग अगाधू ॥  
 बादि गलानि करहु मन माहीं। तुम्ह सम रामहि कोउ प्रिय नाहीं ॥

दो०—तनु पुलकेउ हियँ हरषु सुनि बेनि बचन अनुकूल।

भरत धन्य कहि धन्य सुर हरषित बरषहिं फूल ॥२०५॥

प्रमुदित तीरथराज निवासी। वैखानस बटु गृही उदासी ॥  
 कहहिं परसपर मिलि दस पाँचा। भरत सनेहु सीलु सुचि साँचा ॥  
 सुनत राम गुन ग्राम सुहाए। भरद्वाज मुनिवर पहिं आए ॥  
 दंड प्रनामु करत मुनि देखे। मूरतिमंत भाग्य निज लेखे ॥  
 उठाइ लाइ उर लीन्हे। दीन्हि असीस कृतारथ कीन्हे ॥

दीन्ह नाइ सिरु बैठे। चहत सकुच गृहँ जनु भजि पैठे ॥  
 मुनि पूँछ्य कछु यह बड़ सोचू। गोले रिषि लखि सीलु सँकोचू ॥  
 सुनहु भरत हम सब सुधि पाई। विधि करतव पर किछु न बसाई ॥

दो०—तुम्ह गलानि जियँ जनि करहु समुझि मातु करतूति।

तात कैकइहि दोसु नहिं गई गिरा मति धृति ॥२०६॥

यहउ कहत भल कहिहि न कोऊ। लोकु वेदु बुध संमत दोऊ ॥  
 तात तुम्हार बिमल जसु गाई। पाइहि लोकउ वेदु बड़ाई ॥  
 लोक वेद संमत सबु कहई। जेहि पितु देइ राजु सो लहई ॥



निसि दिन सुखद सदा सब काहू । ग्रसिहि न कैकह करतबु राहू ॥  
 पूरन राम सुपेम पियूषा । गुर अवमान दोष नहिं दूषा ॥  
 राम भगत अब अमिअँ अघाहूँ । कीन्हहु सुलभ सुधा बसुधाहूँ ॥  
 भूप भगीरथ सुरसरि आनी । सुमिरत सकल सुमंगल खानी ॥  
 दसरथ गुन गन बरनि न जाहीं । अधिकु कहा जेहि सम जग नाहीं ॥

दो०—जासु सनेह सकोच बस राम प्रगट भए आइ ।

जे हर हिय नयननि कबहुँ निरखे नहीं अघाइ ॥२०९॥

कीरति बिधु तुम्ह कीन्ह अनूपा । जहँ बस राम पेम मृगरूपा ॥  
 तात गलानि करहु जियँ जाएँ । डरहु दरिद्रहि पारसु पाएँ ॥  
 सुनहु भरत हम झूठ न कहहीं । उदासीन तापस बन रहहीं ॥  
 सब साधन कर सुफल सुहावा । लखन राम सिय दरसनु पावा ॥

तेहि फल कर फलु दरस तुम्हारा । सहित पयाग सुभाग हमारा ॥

धन्य तुम्ह जसु जगु जयऊ । कहि अस पेम मगन मुनि भयऊ

सुनि मुनि बचन सभासद हरषे । साधु सराहि सुमन सुर वरषे ॥

धन्य धन्य धुनि गगन पयागा । सुनि सुनि भरतु मगन अनुरागा ॥

दो०—पुलक गात हियँ रामु सिय सजल सरोरुह नैन ।

करि प्रनामु मुनि मंडलिहि बोले गदगद बैन ॥२१०॥

मुनि समाजु अरु तीरथराजू । साँचिहुँ सपथ अघाइ अकाजू ॥

एहि थल जौं किछु कहिअ बनाई । एहि सम अधिक न अघ अधमाई

तुम्ह सर्वग्य कहउँ सतिभाऊ । उर अंतरजामी रघुराऊ ॥

मोहि न मातु करतव कर सोचू । नहिं दुखु जियें जगु जानिहि पोचू ॥  
 नाहि न डरु विगारिहि परलोक् । पितहु मरन कर मोहि न सोक् ॥  
 सुकृत सुजस भरि भुअन सुहाए । लछिमन राम सरिस सुत पाए ॥  
 राम बिरहैं तजि तनु छनभंगू । भूष सोच कर कवन प्रसंगू ॥  
 राम लखन सिय चिनु पग पनहीं । करि मुनि बेग फिरहिं थन बनहीं ॥  
 दो०—अजिन बसन फल असन महि सयन दासि कुस पात ।

बसि तरु तर नित सहत हिम आतप बरपा बात ॥२११॥

एहि दुख दाहैं दहर दिन छाती । भूख न बासर नीद न राती ॥  
 एहि कुरोग कर औषधु नाहीं । सोधेउँ सकल बिस्व मन माहीं ॥  
 मातु कुमत बदाहैं अघ मूला । तेहिं हमार हित कीन्ह बैसूला ॥  
 कलि कुकाठ कर कीन्ह कुजंत्रू । गाड़ि अवधि पढ़ि कठिन कुमंत्रू ॥  
 मोहि लगि यहु कुठाटु तेहिं ठाटा । घालेसि सब जगु बारह्वाटा ॥  
 मिटइ कुजोगु राम फिरि आएँ । बसइ अवध नहिं आन उपाएँ ॥  
 भरत बचन सुनि मुनि मुखु पाहैं । सगहिं कीन्हि यहु भाँति बदाहैं  
 तात करहु जनि सोचु बिलेशी । सब दुखु मिटिहि राम पग देखी ॥  
 दो०—करि प्रबोधु मुनिवर कहेउ अतिथि पेमाप्रिय होहु ।

कंद मूल फल फूल हम देहिं लेहु करि छोहु ॥२१२॥

मुनि मुनि बचन भरत हियें सोचू । भयउ कुअवसर कठिन सँकोचू  
 जानि गहइ गुर गिरा बहोरी । चरन बँदि बोले कर जोरी ॥  
 किरघरि आयसु करिअ तुम्हारा । परम धरम यहु नाथ हमारा ॥

भरत बचन मुनिवर मन भाए । सुचि सेवक सिध निकट बोलाए  
 चाहिअ कीन्हि भरत पहुनाई । कंद मूल फल आनहु जाई ॥  
 भलेहि नाथ कहि तिन्ह सिर नाए । प्रमुदित निज निज काज सिधाए  
 मुनिहि सोच पाहुन बड़ नेवता । तसि पूजा चाहिअ जस देवता ॥  
 सुनि रिधि सिधि अनिमादिक आई । आयसु होइ सो करहि गोसाई  
 दो०—राम विरह व्याकुल भरतु सानुज सहित समाज ।

पहुनाई करि हरहु श्रम कहा मुदित मुनिराज ॥२१३॥  
 रिधि सिधि सिर धरि मुनिवर बानी । बड़ भागिनि आपुहि अनुमानी  
 कहहि परसपर सिधि समुदाई । अतुलित अतिथि राम लघु भाई  
 मुनि पद बंदि करिअ सोइ आजू । होइ सुखी सब राज समाजू ॥  
 अस कहि रचेउ रुचिर गृह नाना । जेहि बिलोकि बिलखाहि बिमाना  
 बिभूति भूरि भरि राखे । देखत जिन्हहि अमर अभिलाषे  
 दास साजु सब लीन्हें । जोगवत रहहि मनहि मनु दीन्हें ॥  
 सब समाजु सजि सिधि पल माहीं । जे सुख सुरपुर सपनेहुं नाहीं  
 प्रथमाहि बास दिए सब केही । सुंदर सुखद जया रुचि जेही ॥

दो०—बहुरि सपरिजन भरत कहूँ रिधि अस आयसु दीन्ह ।

विधि बिसमय दायकु विभव मुनिवर तपबल कीन्ह २१४  
 मुनि प्रभाउ जब भरत बिलोका । सब लघु लगे लोकपति लोका ॥  
 सुख समाजु नहि जाइ बखानी । देखत विरति बिसारहि ग्यानी ॥  
 आसन सयन सुबसन बिताना । बन बाटिका बिहग मृग नाना ॥

मुरभि फूल फल अमिअ समाना । विमल जल्यसय विविध विधाना  
असन पान मुचि अमिअ अमी से । देखि लोग सकुचात जमी से ॥  
सुर मुरभी मुरतरु खही कैं । लखि अभिलापु सुरेस सची कैं ॥  
रिनु बसंत यह विविध बयारी । सब कहैं सुलभ पदारथ चारी ॥  
सक चंदन यनितादिक भोगा । देखि हरप विममय बस लोगा ॥  
दो०—संपत्ति चकई भरतु चक मुनि आयस खेलवार ।

तेहि निसि आश्रम पिंजरीं राखे भा भिनुसार ॥२१५॥

**मासपारायण, उर्ध्वासर्वा विधाम**

कीन्ह निमज्जनु तीरथराजा । नाइ मुनिहि सिद्ध सहित समाजा ॥  
रिपि आयमु असीस भिर राखी । करि दंडवत विनय बहु भापी ॥  
पथ गति कुसल साथ सब लीन्हें । चले चित्रकूटहि चितु दीन्हें ॥  
रामसखा कर दीन्हें लागू । चलत देह धरिजनु अनुरागू ॥  
नहि पद प्रान सीस नहि छाया । पेमु नेमु ब्रतु धरमु अमाया ॥  
लखन राम सिय पंथ कहानी । पूँछत सखहि कहत मृदु बानी ॥  
राम बास मल बिटप बिलोकैं । उर अनुराग रहत नहि रोक्कैं ॥  
देखि दसा सुर बरिसहिं फूला । मह मृदु महि मगु मंगल मूला ॥

दो०—किण् छाहिं छाया जलद सुखद बहइ बर बात ।

तस मगु भयउ न राम कहैं जस भा भरतहि जात ॥२१६॥

जइ चेतन मग जीव धनेरे । जे चितए प्रभु जिन्ह प्रभु देखे ॥  
ते सब भए परम पद जोगू । भरत दरस मेढा भव/



यह ऋद्धि बात भरत कह नहीं । सुमिरत जिनहि रामु मन माहीं ॥  
 वारक राम कहत जग जेऊ । होत तरन तारन नर तेऊ ॥  
 भरतु राम प्रिय पुनि लघु भ्राता । कस न होइ मगु मंगलदाता ॥  
 सिद्ध साधु मुनिवर अस कहहीं । भरतहि निरखि हरषु हियँ लहहीं  
 देखि प्रभाउ सुरेसहि सोचू । जगु भल भलेहि पोच कहूँ पोचू  
 गुर सन कहेउ करिअ प्रभु सोई । रामहि भरतहि भेट न होई ॥  
 दो०—रामु सँकोची प्रेम बस भरत सपेम पयोधि ।

बनी बात बेगरन चहति करिअ जतनु छलु सोधि २१७

बचन सुनत सुरगुरु मुसुकाने । सहसनयन बिनु लोचन जाने ॥  
 मायापति सेवक सन माया । करइ त उलटि परइ सुरराया ॥  
 तब किछु कीन्ह राम रुख जानी । अब कुचालि करि होइहि हानी  
 सुनु सुरेस रघुनाथ सुभाऊ । निज अपराध रिसाहिँ न काऊ ॥  
 जो अपराधु भगत कर करई । राम रोष पावक सो जरई ।  
 लोकहुँ वेद विदित इतिहासा । यह महिमा जानहिँ दुरवासा ।  
 भरत सरिस को राम सनेही । जगु जप राम रामु जप जेही ।  
 दो०—मनहुँ न आनिअ अमरपति रघुवर भगत अकाजु ।

अजसु लोक परलोक दुख दिन दिन सोक समाजु ॥ २१८

सुनु सुरेस उपदेसु हमारा । रामहि सेवकु परम पिआरा  
 मानत सुखु सेवक सेवकाई । सेवक बैर बैर अधिकाई  
 जद्यपि सम नहिँ राग न रोषू । गहहिँ न पाप पूनु गुन दोषू

करम प्रधान विस्व करि राखा । जो अस करइ सो तस फलु चाखा ॥  
तदपि करहिं सम विषम बिहारा । भगत अभगत हृदय अनुमारा ॥  
अगुन अलेख अमान एकरस । राम सगुन भए भगत पेम रस ॥  
राम सदा सेवक रुचि राखी । वेद पुरान साधु मुर साखी ॥  
अस जियै जानि तजहु कुटिलार्इ । करहु भरत पद प्रीति मुहार्इ ॥

दो०-राम भगत परहिच निरत पर दुख दुखी दयाल ।

भगत सिरोमनि भरत तेँ जनि दरपहु सुरपाल ॥२१९॥

सत्यबंध प्रभु मुर हितकारी । भरत राम आयस अनुमारी ॥  
स्वारथ बियस बिकल तुम्ह होहू । भरत दोसु नहिं राउर मोहू ॥  
मुनि सुरपर मुरगुर चर बानी । भा प्रमोदु मन मिटी गलानी ॥  
चरपि प्रसून हरपि मुरराऊ । लगे सराहन भरत मुभाऊ ॥  
एहि बिधि भरत चले मग जाहीं । दसा देखि मुनि सिद्ध सिद्धान्हीं ॥  
जबहिं रामु कहि लेहिं उछासा । उमगत पेमु मनहुँ चहु पासा ॥  
द्वयहिं बचन मुनि कुलिस प्याना । पुरजन पेमु न जाइ बराना ॥  
बीच बास करि जमुनहिं आए । निरखि नीरु लोचन जल छाप ॥

दो०-रघुबर बरन बिलोकि बर बारि समेत समाज ।

होत मगन बारिधि बिरह चढ़े बिबेक जहाज ॥२२०॥

जमुन तीर तोहि दिन करि बास । भयउ समय सम सबहि सुबास ॥  
रातिहिं घाट घाट की तरनी । आई अगनित जाहिं न बरनी ॥  
प्रात पार भए एकहि खेवाँ । तोये रामसखा की सेवाँ ॥

चले नहाइ नदिहि सिर नाई । साथ निषादनाथ दोउ भाई ॥  
 आगे मुनिवर बाहन आछें । राजसमाज जाइ सबु पाछें ॥  
 तेहि पाछें दोउ बंधु पयादें । भूषन बसन वेष सुठि सादें ॥  
 सेवक सुहृद सचिवसुत साथी । सुमिरत लखनु सीय रघुनाथा ॥  
 जहँ जहँ राम वास विश्रामा । तहँ तहँ करहि सप्रेम प्रनामा ॥  
 दो०—मगवासी नर नारि सुनि धाम काम तजि धाइ ।

देखि सरूप सनेह सब मुदित जनम फलु पाइ ॥२२१॥  
 कहहि सपेम एक एक पार्हीं । रामु लखनु सखि होहि कि नार्हीं  
 वय वपु बरन रूपु सोइ आली । सीलु सनेहु सरिस सम चाली ॥  
 बेषु न सो सखि सीय न संगी । आगे अनी चली चतुरंगा ॥  
 नहि प्रसन्न मुख मानस खेदा । सखि संदेहु होइ एहि भेदा ॥  
 तासु तरक तियगन मन मानी । कहहि सकल तेहि सम न स्यानी  
 तेहि सराहि बानी फुरि पूजी । बौली मधुर बचन तिय दूजी ॥  
 कहि सपेम सब कथाप्रसंगू । जेहि विधि राम राज रस भंगू ॥  
 भरतहि बहुरि सराहन लागी । सील सनेह सुभाय सुभागी ॥  
 दो०—चलत पयादें खात फल पिता दीन्ह तजि राजु ।

जात मनावन रघुबरहि भरत सरिस को आजु ॥२२२॥  
 भायप भगति भरत आचरनू । कहत सुनत दुख दूषन हरनू ॥  
 जो किछु कहब थोर सखि सोई । राम बंधु अस काहे न होई ॥  
 हम सब सानुज भरतहि देखें । भइन्ह धन्य जुवती जन लेखें ॥

मुनि गुन देखि दसा पछिताही । कैकद जननि जोगु मुनु नही ॥  
 कोउ कद दूगनु रानिहि नाहिन । विधि सबु कीन्ह हमहि जो दाहिन  
 कहैं हम लोक वेद विधि हीनी । लघु तिय कुट करतूति मलीनी ॥  
 यहाँ कुदेस कुगाँव कुयामा । कहैं यह दरसु पुन्य परिनामा ॥  
 अस अनंदु अचिरिजु प्रति ग्रामा । जनु मरुभूमि कल्पतरु जामा ॥

दो०—भरत दरसु देखत सुलेउ मग लोगन्ह कर भागु ।

जनु सिंगलबासिन्ह मयउ विधि बस सुलभ प्रयागु ॥ २२३ ॥

निज गुन सहित राम गुन गाथा । सुनत जाहिं सुमिरत रघुनाथा ॥  
 तीरय मुनि आश्रम सुरधामा । निरखि निमजहिं करहि प्रनामा ॥  
 मनही मन मागहिं बर एहू । सीय राम पद पदुम सनेहू ॥  
 मिलहिं किरात कोल बनबासी । बैलानस बटु जती उदासी ॥  
 करि प्रनाम पुँछहिं जेहि तेही । केहि बन लखनु रामु बैदेही ॥  
 ते प्रभु समाचार सब कहहीं । भरतहि देखि जनम कलु तहहीं ॥  
 ते जन कहहिं कुसल हम देखे । ते प्रिय राम लखन सम लैखे ॥  
 यहि विधि यूस्तत सयहि मुयानी । सुनत राम बनवास कहानी ॥

दो०—तेहि बामर बसि प्रातहीं चले सुमिरि रघुनाथ ।

राम दरस की छालसा भरत सरिस सब साथ ॥ २२४ ॥

बंगल सगुन होहिं सब कहू । फरकाहिं मुखद बिलोचन बाहू ॥  
 भरतहि सहित समाज उछाहू । मिलिहिं रामु मिटिहि दुख व्याहू  
 भरत मनोरथ जस जियै जाके । जाहिं सनेह सुराँ सब ॥

सहसन्नाहु सुरनाथु त्रिसंकू । केहि न राजमद दीन्ह कलंकू ॥  
 भरत कीन्ह यह उचित उपाऊ । रिपु रिन रंचन राखब काऊ ॥  
 एक कीन्हि नहिं भरत भलाई । निदरे रामु जानि असहाई ॥  
 समुझि परिहि सोउ आजु बिसेषी । समर सरोष राम मुखु पेखी ॥  
 एतना कहत नीति रस भूला । रन रस बिटपु पुलक मिस फूला ॥  
 प्रभु पद बंदि सीस रज राखी । बोले सत्य सहज बलु भाषी ॥  
 अनुचित नाथ न मानब मोरा । भरत हमहि उपचार न थोरा ॥  
 कहँ लगि सहिअ रहिअ मनु मारें । नाथ साथ धनु हाथ हमारें ॥

दो०—छत्रि जाति रघुकुल जनमु राम अनुग जगु जान ।

लातहुँ मारें चढ़ति सिर नोच को धूरि समान ॥२२९॥

उठि कर जोरि रजायसु मागा । मनहुँ बीर रस सोवत जागा ॥  
 बाँधि जटा सिर कसि कटि भाया । साजि सरासनु सायकु हाया ॥  
 आजु राम सेवक जसु लेऊँ । भरतहि समर सिखावन देऊँ ॥  
 राम निरादर कर फलु पाई । सोवहुँ समर सेज दोउ भाई ॥  
 आइ बना भल सकल समाजू । प्रगट करउँ रिस पाछिल आजू ॥  
 जिमि करि निकर दलइ मृगराजू । लेइ लपेटि लवा जिमि बाजू ॥  
 तैसेहिं भरतहि सेन समेता । सानुज निदरि निपातउँ खेता ॥  
 जौँ सहाय कर संकर आई । तौ मारउँ रन राम दोहाई ॥

दो०—अति सरोष माखे लखनु लखि सुनि सपथ प्रवान ।

समय लोक सब लोकपति चाहत भंभरि भगान ॥२३०॥

जगु भय मगन गगन भई बानी । लखन बाहुबल विपुल बखानी  
तात प्रताप प्रभाउ तुम्हारा । को कहि सकइ को जाननिहारा ॥  
अनुचित उचित काजु किलु होऊ । समुझि करिअ मल कह सपु कोऊ  
सहसा करि पाछें पछिताही । कहहि वेद बुध ते बुध नाही ॥  
सुनि सुर वचन लखन सकुचाने । राम सीयें सादर सममाने ॥  
कही तात तुम्ह नीति सुहाई । सब तैं कठिन राजमदु भाई ॥  
जो अचयेंत नृप मातहिं तेई । नाहिन साधुसभा जेहिं तेई ॥  
सुनहु लखन मल भरत सरीछा । विधि प्रपंच मई सुना न दीछा ॥

दो०—भरतहि होइ न राजमदु विधि हरि हर पद पाइ ।

कबहुँ कि कौंजी सीकरनि छीरसिंधु बिनसाइ ॥२३१॥

तेमिह तदन तरनिहि मकु गिलई । गगनु मगन मकु मेघहिं मिलई  
गोपद जल बूझहिं घटजोनी । सहज छमा यद छादै छोनी ॥  
मसक फूँक मकु मेह उड़ाई । होइ न नृपमदु भरतहि भाई ॥  
लखन तुम्हार सपय पितु आना । सुचि सुबंधु नहिं भरत सम्माना ॥  
सुनु सीरु अवगुन जनु ताता । मिलइ रचइ परपंचु विधाता ॥  
भरतु हंस रविबंस तड़ागा । जनमि कीन्ह गुन दोष विभागा ॥  
नाहि गुन पय तजि अकगुन बारी । निज अस जगत कीन्हि उजिआरी  
कहत भरत गुन सीलु सुभाऊ । पेम पयोधि मगन सुर ॥

दो०—सुनि रघुबर बानी विबुध देखि भरत पर हे

सकल सहाइत राम सो प्रभु को कृपानिधि ॥

जौं न होत जग जनम भरत को । सकल धरम धुर धरनि धरत को  
 कवि कुल अगम भरत गुन गाथा । को जानइ तुम्ह बिनु रघुनाथा  
 लखन राम सियँ सुनि सुर बानी । अति सुख लहेउ न जाइ बखानी  
 इहाँ भरतु सब सहित सहाए । मंदाकिनीं पुनीत नहाए ॥  
 सरित समीप राखि सब लोगा । मागि मातु गुर सचिव नियोगा ॥  
 चले भरतु जहँ सिय रघुराई । साथ निषादनाथु लघु भाई ॥  
 समुझि मातु करतब सकुचाहीं । करत कुतरक कोटि मन माहीं ॥  
 रामु लखनु सिय सुनि मम नाऊँ । उठि जनि अनत जाहिं तजि ठाऊँ  
 दो०—मातु मते महुँ मानि मोहि जो कछु करहिं सो थोर ।

अघ अवगुन छमि आदरहिं समुझि आपनी ओर ॥२३३॥

जौं परिहरहिं मलिन मनु जानी । जौं सनमानहिं सेवकु मानी ॥  
 मोरें सरन रामहि की पनही । राम सुस्वामि दोसु सब जनही ॥  
 जग जस भाजन चातक मीना । नेम पेसं निज निपुन नवीना ॥  
 अस मन गुनत चले मग जाता । सकुच सनेहँ सिथिल सब गाता ॥  
 फेरति मनहुँ मातु कृत खोरी । चलत भगति बल धीरज धोरी ॥  
 जव समुझत रघुनाथ सुभाऊ । तब पथ परत उताइल पाऊ ॥  
 भरत दसा तेहि अवसर कैसी । जल प्रवाहँ जल अलि गति जैसी  
 देखि भरत कर सोचु सनेहू । भा निषाद तेहि समयँ विदेहू ॥  
 दो०—लगे होन मंगल सगुन सुनि गुनि कहत निषादु ।

मिटिहि सोचु होइहि हरषु पुनि परिनाम बिषादु ॥२३४॥

सेवक बचन सत्य सब जाने । आश्रम निकट जाइ निअराने ॥

भरत दीख बन सैल समाज । मुदित धुधिन जनु पाइ मुनाज ॥  
 इति भीति जनु प्रजा दुखारी । त्रिविध ताप पीड़ित ग्रह मारी ॥  
 जाइ मुराज मुदेस मुखारी । दोहि भरत गति तेहि अनुहारी ॥  
 राम वास बन संवति भ्राजा । सुखी प्रजा जनु पाइ सुराजा ॥  
 सचिव विरागु विषेकु नरेश । विधिन मुहायन पायन देखू ॥  
 भट जम नियम सैल रजधानी । साति मुमति मुचि सुंदर रानी ॥  
 सकल अंग संपन्न मुराऊ । राम चरन आभित चित चाऊ ॥  
 दो०-जीति मोह महिपालु दल सहित विषेक भुगालु ।

करत भकंटक रागु पुरै मुन्न संपदा सुखालु ॥२१५॥  
 बन प्रदेस मुनि वास घनेरे । जनु पुरनगर गाउँ गन तेरे ॥  
 विपुल विचित्र विहग मृग नाना । प्रजा समाजु न जाइ बखाना ॥  
 लगदा करि हरि वाष बरादा । देखि महिय कृप सागु सराहा ॥  
 पयक विहाइ चरहि एक संग । जहँ तहँ मनहुँ सेन चतुरंगा ॥  
 झरना झरहि मत्त गज गाजहि । मनहुँ निशान विविधि विधि बाजहि ॥  
 चक्र चकोर चातक मुक पिक गन । कुजत मंजु मराल मुदित मन ॥  
 अलिगन गायत नाचत मोरा । जनु मुराज मंगल चहु ओरा ॥  
 खेलि बिट्ठप तून सकल सपूजा । सब समाजु मुद मंगल मूला ॥  
 दो०-राम सैल सोभा निरखि भरत हृदयँ अति वेसु ।

तापस तप कजु पाइ जिमि सुखी सिराने नेसु ॥२१६॥

मासपारायण, वीसयाँ विश्राम  
 नवाक्षपारायण, पाँचयाँ विश्राम



तब केवटे ऊँचें चढ़ि धाई । कहेउ भरत सन भुजा उठाई ॥  
 नाथ देखिअहिं ब्रिटप बिसाला । पाकरि जंबु रसाल तमाला ॥  
 जिन्ह तरुवरन्ह मध्य बटु सोहा । मंजु बिसाल देखि मनु मोहा ॥  
 नील सघन पल्लव फल लाला । अविरल छाँह सुखद सव काला ॥  
 मानहुँ तिमिर अरुनमय रासी । बिरची बिधि सँकेलि सुषमा सी ॥  
 ए तरु सरित समीप गोसाँई । रघुवर परनकुटी जहँ छाई ॥  
 तुलसी तरुवर बिबिध सुहाए । कहूँ कहूँ सियँ कहूँ लखन लगाए ॥  
 बट छायाँ बैदिका बनाई । सियँ निज पानि सरोज सुहाई ॥  
 दो०—जहाँ बैठि मुनिगन सहित नित सिय रामु सुजान ।

सुनहिं कथा इतिहास सब आगम निगम पुरान ॥२३०॥

सखा बचन सुनि ब्रिटप निहारी । उमगे भरत विलोचन बारी  
 करत प्रनाम चले दोउ भाई । कहत प्रीति सारद सकुचाई  
 हरषहिं निरखि राम पद अंका । मानहुँ पारसु पायउ रंका  
 रज सिर धरि हियँ नयनन्हि लावहिं । रघुवर मिलन सरिस सुख पाव  
 देखि भरत गति अकथ अतीवा । प्रेम मगन मृग खग जड़ जीवा  
 सखहि सनेह बिबस मग भूला । कहि सुपंथ सुरवरषहिं फूल  
 निरखि सिद्ध साधक अनुरागे । सहज सनेहु सराहन लागे  
 होत न भूतल भाउ भरत को । अचर सचर चर अचर करत  
 दो०—पेम अमिअ मंदरु बिरहु भरतु पयोधि गँभीर ।

मथि प्रगटेउ सुर साधु हित कृपासिंधु रघुबीर ॥२३१॥

सखा समेत मनोहर जोटा । लखेउ न लखन सधन धन ओटा  
भरत दीख प्रभु आश्रमु पावन । सकल सुर्मंगल सदन सुहावन ॥  
करत प्रवेश मिटे दुख दावा । जनु जोगी परमारु पावा ॥  
देखे भरत लखन प्रभु आगे । पूछे वचन कहत अनुरागे ॥  
सीस जटा कटि मुनि पट बाँधे । तन कसे कर सह धनु बाँधे ॥  
बेदी पर मुनि साधु समाज । सीय सहित राजत रघुराज ॥  
बलकल बसन झटिल तनु स्यामा । जनु मुनिवेष कीन्ह रति कामा ॥  
कर कमलनि धनु सायकु फेरत । जिय की जरनि हरत हँसि हेरत ॥

दो०—लसत मंजु मुनि मंडली मध्य सीय रघुचंदु ।

ग्याम सभौ जनु तनु धरें भगति सबिदानंदु ॥२२९॥

सानुज सखा समेत मगन मन । बिसरे हरष सोक सुख दुख गन ॥  
पाहि नाथ कहि पाहि गोसाई । भूतल परे लकुट की नाई ॥  
वचन सपेस लखन पहिचाने । करत प्रनामु भरत जियें जाने ॥  
बंधु सनेह सरस एहि ओरा । उत साहिब सेवा बस जोरा ॥  
मिलि न जाइ नहि गुदरत बनई । सुकवि लखन मन की गति मनई  
रहे राखि सेवा पर भारू । चढ़ी चंग जनु खँच खेलाऊ ॥  
कहत सप्रेम नाइ भहि माथा । भरत प्रनाम करत रघुनाथा ॥  
उठे रामु मुनि पेम अधीरा । कहूँ पट कहूँ निरंग धनु तीरा ॥

दो०—बरवस लिष्ट उठाइ डर लाए कृपानिधान ।

भरत राम की मिलनि लखि बिसरे सबहि अपान ॥२४०॥

मिलनि प्रीति किमि जाइ बखानी। कविकुल अगम करम मन बानी  
 परम पेम पूरन दोउ भाई। मन बुधि चित अहमिति विसराई  
 कहहु सुपेम प्रगट को करई। केहि छाया कवि मति अनुसरई॥  
 कविहि अरथ आखर बलु साँचा। अनुहरि ताल गतिहि नटु नाचा  
 अगम सनेह भरत रघुवर को। जहँ न जाइ मनु त्रिधि हरि हर को  
 सो मैं कुमति कहौं केहि भाँती। बाज सुराग कि गाँडर ताँती॥  
 मिलनि बिलोकि भरत रघुवर की। सुरगन सभय धकधकी धरकी॥  
 समुझाए सुरगुरु जड़ जागे। वरषि प्रसून प्रसंसन लागे।  
 दो०-मिलि सपेम रिपुसूदनहि केवटु भेंटैउ राम ।

भूरि भायँ भेंटै भरत लछिमन करत प्रनाम ॥२४१॥

भेंटैउ लखन ललकि लघु भाई। बहुरि निषादु लीन्ह उर लाई।  
 पुनि मुनिगन दुहुँ भाइन्ह बंदे। अभिमत आसिप पाइ अनंदे॥  
 सानुज भरत उमगि अनुरागा। धरि सिर सिय पद पदुम परागा॥  
 पुनि पुनि करत प्रनाम उठाए। सिर कर कमल परसि बैठाए॥  
 सीयँ असीस दीन्हि मन माहीं। मगन सनेहँ देह सुधि नार्हीं॥  
 सब त्रिधि सानुकूल लखि सीता। मे निसोच उर अपडर बीता॥  
 कोउ किछु कहइ न कोउ किछु पूँछा। प्रेम भरा मन निज गति छूँछा  
 तेहि अवसर केवटु धीरजु धरि। जोरि पानि विनवत प्रनामु करि॥

दो०-नाथ साथ मुनिनाथ के मातु सकल पुर लोग ।

सेवक सेनप सचिव सब आए बिकल वियोग ॥२४२॥



गुरतिय पद बंदे दुहु भाई । सहित त्रिप्रतिय जे सँग आई ॥  
 गंग गौरि सम सब सनमानों । देहिं असीस मुदित मृदु बानीं ॥  
 गहि पद लगे सुमित्रा अंका । जनु भेंटी संपति अति रंका ॥  
 पुनि जननी चरननि दोउ भ्राता । परे पेम व्याकुल सब गाता ॥  
 अति अनुराग अंग उर लाए । नयन सनेह सलिल अन्हवाए ॥  
 तेहि अवसर कर हरष त्रिषादू । किमि कबि कहै मूक जिमि स्वादू ॥  
 मिलि जननिहि सानुज रघुराऊ । गुर सन कहेउ कि धारिअ पाऊ ॥  
 पुरजन पाइ मुनीस नियोगू । जल थल तकि तकि उतरेउ लोगू ॥  
 दो०—महिसुर मंत्री मातु गुर गने लोग लिए साथ ।

पावन आश्रम गवनु किय भरत लखन रघुनाथ ॥२४५॥

सीय आई मुनिवर पग लागी । उचित असीस लही मन मागी ॥  
 गुरपतिनिहि मुनितियन्ह समेता । मिली पेसु कहि जाइ न जेता ॥  
 बंदि बंदि पग सिय सबही के । आसिरबचन लहे प्रिय जी के ॥  
 सासु सकल जब सीयँ निहारीं । मूदे नयन सहमि सुकुमारीं ॥  
 परीं बधिक बस मनहुँ मरालीं । काह कीन्ह करतार कुचालीं ॥  
 तिन्ह सिय निरखि निपट दुखु पावा । सो सबु सहिअ जो दैउ सहावा ॥  
 जनकसुता तब उर धरि धीरा । नील नलिन लोयन भरि नीरा ॥  
 मिली सकल सासुन्ह सिय जाई । तेहि अवसर कवना महि छाई ॥

दो०—लागि लागि पग सबनि सिय भेंटति अति अनुराग ।

हृदयँ असीसहिं पेस यस रहिअहु भरी सोहाग ॥२४६॥



राम बचन सुनि सभय समाजू। जनु जलनिधि महुँ विकल जहाजू  
 सुनि गुर गिरा सुमंगल मूला। भयउ मनहुँ मारुत अनुकूला॥  
 पावन पयँ तिहुँ काल नहाहीं। जो बिलोकि अघ ओघ नसाहीं॥  
 मंगलमूरति लोचन भरि भरि। निरखहिं हरषि दंडवत करि करि  
 राम सैल बन देखन जाहीं। जहँ सुख सकल सकल दुख नाहीं  
 झरना झरहिं सुधासम बारी। त्रिविध तापहर त्रिविध बयारी॥  
 बिटप बेलि तृन अगनित जाती। फल प्रसून पल्लव बहु भाँती॥  
 सुंदर सिला सुखद तरु छाहीं। जाइ वरनि बन छवि केहि पाहीं  
 दो०—सरनि सरोरुह जल बिहग कूजत गुंजत भृंग।

वैर बिगत बिहरत बिपिन मृग बिहंग बहुरंग॥२४६॥

कोल किरात भिह्य बनवासी। मधुसुचि सुंदर स्वादु सुधा सी॥  
 भरि भरि परन पुटीं रचि रूरी। कंद मूल फल अंकुर जूरी॥  
 सबहिं देहिं करि बिनय प्रनामा। कहि कहि स्वाद भेद गुन नामा॥  
 देहिं लोग बहु मोल न लेहीं। फेरत राम दोहाई देहीं॥  
 कहहिं सनेह भगन मृदु बानी। मानत साधु पेम पहिचानी॥  
 तुम्ह सुकृती हम नीच निपादा। पावा दरसन राम प्रसादा॥  
 हमहि अगम अति दरसु तुम्हारा। जस मरु धरनि देवधुनि धारा॥  
 राम कृपाल निपाद नेवाजा। परिजन प्रजउ चहिअ जस राजा  
 दो०—यह जियँ जानि सँकोचु तजि करिअ छोहु लखि नेहु।

हमहि कृतारथ करन लागि फल तृन अंकुर लेहु॥२५०॥

तुम्ह प्रिय पाहुने बन पगु धारे । सेवा जोगु न भाग हमारे ॥  
 देव काह हम तुम्हाहि गोसाईं । ईधनु पात किरात मिनाईं ॥  
 यह हमारि अति यदि सेवकाईं । लेहि न बामन बसन चोराईं ॥  
 हम जइ जीय जीय मन पाती । कुटिल कुचाली कुमति बुजाती ॥  
 पाप करत निशि बामर जाई । नहिं पट कटि नहिं पेट अघाई ॥  
 सयनेहुँ धरम बुद्धि कस काऊ । यह रघुनंदन दग्ग प्रभाऊ ॥  
 जय तैं प्रभु पद पदुम निहारे । मिटे दुम्ह दुख दोष हमारे ॥  
 बचन मुनत पुरजन अनुरागे । निन्द के भाग भगहन लागे ॥

छं०—लागे मराहन भाग सब अनुराग बचन मुनावही ।  
 बोलनि मिलनि मिय राम चरन मनेहु ल्यनि मुसु पावही ॥  
 नर नारि निदर्शहिं नेहु निज मुनि कोल भिल्लनि की गिरा ।  
 मुल्मी कृपा रघुचंममनि की लोह लै लोका निरा ॥

सो०—बिहरहिं बन चहु ओर प्रति दिन प्रभुदिन लोग सब ।

जल ज्यों दादुर मोर भय पीन पावम प्रथम ॥२५१॥

पुर जन नारि मगन अति प्रीती । बामर जाहि पलक सब धीनी ॥  
 सीय सामु प्रति बेष बनाई । सादर करइ गरिम भंवराई ॥  
 लला न मरमु राम बिनु काहूँ । माया सब मिय माया माहूँ ॥  
 सीयें सामु सेवा बस कीन्हीं । तिन्ह लहि मुख सिर आमिय दीन्हीं ॥  
 लखि सिय सहित सरल दोउ भाई । कुटिल रानि पछितानि अघाई ॥  
 अपनि जमहि जाचति कैकेई । महिन बीचु विधि मीचु न देखी ॥





अहिष महिष जहैं स्रगि प्रभुतारै । जोग सिद्धि निगमागम गारै ॥  
करि बिचार जियै देखहु नीकैं । राम रजाइ सीस स्वही कैं ॥

दो०—रासैं राम रजाइ रखइ हम सब कर हित होइ ।

समुझि सपाने करहु अब सब मिलि संमत सोइ ॥२५४॥

सब कहूँ सुखद राम बधिरेकू । मंगल मोद मूल मग एकू ॥  
केदि बिधि अवध चलहिं रघुराऊ । कहहु समुझि सोइ करिअ उपाऊ  
सब सादर सुनि मुनिवर बानी । नय परमारय स्वारय सानी ॥  
उतर न आय लोग भए मोरे । तब सिद्ध नाइ भरत कर जोरे ॥  
मानुबंस भए भूष घनेरे । अधिक एक तैं एक बदेरे ॥  
जनम हेतु सब कहैं पितु माता । करम सुभासुम देख विधाता ॥  
दलि दुख सजइ सकल कल्याना । अस असीस राउरि जगु जाना ॥  
सो गोसाइँ बिधि गति जेदि छेंकी । सकइ को टारि टेक जो टेकी ॥

दो०—बूझिअ मोहि उपाउ अब सो सब मोर अभागु ।

सुनि सनेहमय बचन गुर उर उमगा अनुरागु ॥२५५॥

तात बात फुरि राम कृपाहीं । राम विमुख सिधि सपनेहुँ नाहीं ॥  
सकुचउँ तात कहत एक बात । अरध तजहिं बुध सरबस जाता ॥  
तुम्ह कानन गवनहु दोउ मारै । फेरिअहिं लखन सीय रघुराई ॥  
सुनि सुबचन हरपे दोउ भ्राता । भे प्रमोद परिपूरन गाता ॥  
मन प्रसन्न तन तेजु विराजा । जनु जिय राउ राम मर राजा ॥  
बहुत लाम लोचन लघु हानी । सम दुख सुख स

कहहिं भरतु मुनि कहा सो कीन्हे । फलु जग जीवन्ह अभिमत दीन्हे  
कानन करउँ जनम भरि बासू । एहि तैं अधिक न मोर सुपासू ॥

दो०—अंतरजामी रामु सिय तुम्ह सरबग्य सुजान ।

जौं फुर कहहु त नाथ निज कीजिअ बचनु प्रवान ॥२५६॥

भरत बचन सुनि देखि सनेहू । सभा सहित मुनि भए विदेहू ॥

भरत महा महिमा जलरासी । मुनि मति ठाढ़ि तीर अवला सी ॥

गा चह पार जतनु हियँ हेरा । पावति नाच न बोहितु बेरा ॥

औरु करिहि को भरत बड़ाई । सरसी सीपि कि सिंधु समाई ॥

भरतु मुनिहि मन भीतर भाए । सहित समाज राम पहिं आए ॥

रामु प्रनामु करि दीन्ह सुआसनु । बैठे सब सुनि मुनि अनुसासनु ॥

गोले मुनिबरु बचन विचारी । देस काल अवसर अनुहारी ॥

मिहु राम सरबग्य सुजाना । धरम नीति गुन ग्यान निधाना ॥

दो०—सब के उर अंतर बसहु जानहु भाउ कुभाउ ।

पुरजन जननी भरत हित होइ सो कहिअ उपाउ ॥२५७॥

भरत कहहिं विचारि न काऊ । सूझ जुआरिहि आपन दाऊ ॥

नि मुनि बचन कहत रघुराऊ । नाथ तुम्हारेहि हाथ उपाऊ ॥

व कर हित रुख राउरि राखें । आयसु किँ मुदित फुर भाषें ॥

धम जो आयसु मो कहूँ होई । मार्यें मानि करौं सिख सोई ॥

नि जेहि कहँ जस कहव गोसाई । सो सब भाँति घटिहि सेवकाई ॥

इ मुनि राम सत्य तुम्ह भाषा । भरत सनेहँ विचारु न राखा ॥

तेहि तैं कहउँ यहोरि यहोरी । भरत भगति बस भए मति मोरी ॥  
मोरें जान भरत रुचि राखी । जो कीजिअ सो सुम स्थिर ताखी ॥

दो०—भरत दिनय सादर मुनिअ करिअ विचार बहोरि ।

करब साधुमत लोकमत नृपनय निगम निचोरि ॥२५८॥

गुर अनुरागु भरत पर देखी । राम हृदयें आनंदु चिंतेरी ॥  
भरतहि धरम धुरंधर जानी । निज सेयक तन मानस बानी ॥  
बोले गुर आपस अनुकूल । बचन मंडु मृदु मगलमूल ॥  
नाथ लयथ शिषु चरन दोहारें । भयउ न भुभन भरत सम भारें ॥  
जे गुर पद अंबुज अनुरागी । ते लोरुहुं वेदहुं बहमागी ॥  
राउर जा पर अस अनुरागु । को कहि सकइ भरत कर भागु ॥  
लखि लघु बंधु बुद्धि सकुचारें । करत बदन पर भरत पदारें ॥  
भरत कहहि सोइ किएँ भलाई । अस कहि राम रहे अरगारें ॥

दो०—तब मुनि बोलैं भरत सन सब सँछोषु तजि तात ।

कृपासिंधु प्रिय बंधु सन कहहु हृदय कै बात ॥२५९॥

मुनि मुनि बचन राम रुख पारें । गुरु सादर अनुकूल अपारें ॥  
लखि अग्नें तिर सबु छरु मारु । कहि न सकहि कछु करहि विचारु ॥  
पुलकि मरीर सभों भए ठाढ़े । नीरज नयन नेह जल बाढ़े ॥  
कहव मोर मुनिनाथ निवाहा । एहि तैं अधिक कहाँ मैं काहा ॥  
मैं जानउँ निज नाथ सुभाऊ । अपराधिहु पर कोह न काऊ ॥  
मो पर कृपा सनेहु बिसेयी । खेलत खुनिस न क्यहुं देखी ॥

सिसुपन तें परिहरेउँ न संगू । क्यहुँ न कीन्ह मोर मन भंगू ॥  
 मैं प्रभु कृपा रीति जियँ जोही । हारेहुँ खेल जितावहिँ मोही ॥

दो०—महुँ सनेह सकोच बस सनमुख कही न बैन ।

दरसन तृपित न आजु लगि पेम पिआसे नैन ॥२६०॥

विधि न सकेउ सहि मोर दुलारा । नीच बीचु जननी मिस पारा ॥  
 यहउ कहत मोहि आजु न सोभा । अपनी समुझि साधु सुचि को भा ॥  
 मातु मंदि मैं साधु सुचाली । उर अस आनत कोटि कुचाली ॥  
 फरह कि कोदव बालि सुसाली । मुकता प्रसव कि संबुक काली ॥  
 सपनेहुँ दोसक लेसु न काहू । मोर अभाग उदधि अवगाहू ॥  
 बिनु समुझें निज अघ परिपाकू । जारिउँ जायँ जननि कहि काकू ॥  
 हृदयँ हेरि हारेउँ सब ओरा । एकहि भाँति भलेहिँ भल मोरा ॥  
 गुर गोसाँइ साहिब सिय रामू । लागत मोहि नीक परिनामू ॥

दो०—साधु सभाँ गुर प्रभु निकट कहउँ सुधल सति भाठ ।

प्रेम प्रपचु कि छूठ फुर जानहिँ मुनि रघुराठ ॥२६१॥

भूपति मरन पेम पनु राखी । जननी कुमति जगतु स्खु साखी ॥  
 देखि न जाहिँ बिकल महतारीं । जरहिँ दुसह जर पुर नर नारीं ॥  
 महीं सकल अनरथ कर मूला । सो मुनि समुझि सहिउँ सब सुला ॥  
 सुनि दन गवनु कीन्ह रघुनाथा । करि मुनि बेष लखन सिय साय ॥  
 बिनु पानहिन्ह पयादेहि पाएँ । संकर साखि रहेउँ एहि घाएँ ॥  
 बहुरि निहारि निषाद सनेहू । कुलिस कठिन उर भयउ न बेहू ॥

अब छु आँखिन्ह देखैउँ आई । जियत जोन जइ स्वर स्वरै ।  
जिन्हहि निरखि मग साँपनि बोली । तबहिं विचन बिनु लखन गेह  
हो०—तेइ रघुनंदनु लखनु सिष अनहित लग्यो हरे ।

वासु सनय तबि दुसह दुसहैउँ सरासर कहे ॥१११॥

मुनि अति चिन्त भरत बर शानी । आपति प्रीति विनय मय हानी  
सोक मगन भव मर्माँ स्वभारु । मनहुँ कलज बन नरेउ दुखद ।  
कहि अनेक विधिकथा पुरानी । मरत प्ररोधु कँठ नुनै हानी  
बोले उचित बचन रघुनंद । दिनकर कुठ कैर बन बंदू ।  
तात जायँ जियँ करहु गलानी । रंस अर्धन बँर गरी हानी ।  
तीनि काल तिम्रअन मत मोरै । पुन्यलोक भूत ल लोहै ।  
उर आनत तुम्ह पर कुटिलारै । जाइ सोइ नानेइ नरै ।  
दोसु देहिं अननिहि जइ तेई । जिन्ह गुरगुरु कन नरे हरे ।  
हो०—मिटिहहिं पाप प्रपंच सब अस्तित्व जनंल हरे ।

लोक मुअमु परलोक मुमु मुनिरउ ननु दुखद ॥११॥

कहउँ मुभाउ सत्य सिव सखी । मरत भूमि द रदं रदं ।  
तात कुतरक करहु जनि जाएँ । बैर देन नहि दुख दुखरे ।  
मुनि गन निकट बिहग मृग जाहीं । बायक रविह रिजेंद नरै ।  
दित अनहित पसु पच्छित अन्यायनुद तनु दुख नरै ।  
तात तुम्हहि मै जानउँ नीकै । करौ काद अमंगल हरे ।  
रखैउँ धर्यँ सत्य मोहि त्यागी । तनु फँसोइ ल ल हरे ।

तासु वचन भेटत मन सोचू । तेहि तैं अधिक तुम्हार सँकोचू ॥  
 ता पर गुर मोहि आयसु दीन्हा । अवसि जो कहहु चहउँ सोइ कीन्हा  
 दो०—मनु प्रसन्न करि सकुच तजि कहहु करौँ सोइ आजु ।

सत्यसंध रघुवर वचन सुनि भा सुखी समाजु ॥२६४॥

सुर गन सहित सभय सुरराजू । सोचहिँ चाहत होन अकाजू ॥  
 बनत उपाउ करत कछु नहिँ । राम सरन सब गे मन माहिँ ॥  
 बहुरि विचारि परस्पर कहहिँ । रघुपति भगत भगति बस अहहिँ  
 सुधि करि अंबरीष दुरवासा । भे सुर सुरपति निपट निरासा ॥  
 सहे सुरन्ह बहु काल विपादा । नरहरि किए प्रगट प्रह्लादा ॥  
 लगि लगि कान कहहिँ धुनि माथा । अब सुर काज भरत के हाथा  
 आन उपाउ न देखिअ देवा । मानत राम सुसेवक सेवा ॥  
 हियँ सपेम सुमिरहु सब भरतहि । निज गुन सील राम बस करतहि  
 दो०—सुनि सुर मत सुरगुर कहेउ भल तुम्हार बड़ भागु ।

सकल सुमंगल मूल जग भरत चरन अनुरागु ॥२६५॥

सीतापति सेवक सेवकाई । कामधेनु सय सरिस सुहाई ॥  
 भरत भगति तुम्हरेँ मन आई । तजहु सोचु विधि बात बनाई ॥  
 देखु देवपति भरत प्रभाऊ । सहज सुभायँ त्रिवसर घुराऊ ॥  
 मन धिर करहु देव डरु नहिँ । भरतहि जानि राम परिछाहिँ ॥  
 सुनि सुरगुर सुर संमत सोचू । अंतरजामी प्रभुहि सकोचू ॥  
 निज सिर भार भरत जियँ जाना । करत कोटि विधि उर अनुमाना





देव एक विनती सुनि मोरी । उचित होइ तस करब बहोरी ॥  
 तिलक समाजु साजि सबु आना । करिअ सुफल प्रभु जौं मनु माना  
 दो०—सानुज पठइअ मोहि बन कीजिअ सबहि सनाथ ।

नतर फेरिअहिं यंधु दोउ नाथ चलौं मैं साथ ॥२६८॥

नतर जाहिं बन तीनिउ भाई । बहुरिअ सीय सहित रघुआई ॥  
 जेहि विधि प्रभु प्रसन्न मन होई । करना सागर कीजिअ सोई ॥  
 देव दीन्ह सबु मोहि अमारू । मोरें नीति न धरम बिचारू ॥  
 कहउँ बचन सब स्वारथ हेतू । रहत न आरत कै चित चेतू ॥  
 उतर देइ सुनि स्वामि रजाई । सो सेवकु लखि लाज लजाई ॥  
 अस मैं अवगुन उदधि अगाधू । स्वामि सनेहँ सराहत साधू ॥  
 अब कृपाल मोहि सो मत भावा । सकुच स्वामि मन जाई न पावा ॥  
 प्रभु पद सपथ कहउँ सति भाऊ । जग मंगल हित एक उपाऊ ॥

दो०—प्रभु प्रसन्न मन सकुच तजि जो जेहि आयसु देब ।

सो सिर धरि धरि करिहि सबु मिटिहि गनट अवरेब ॥२६९॥

भरत बचन सुनि सुनि सुर हरषे । साधु सराहि सुमन सुर बरषे ॥  
 असमंजस बस अवध नेवासी । प्रमुदित मन तापस बनवासी ॥  
 चुपहिं रहे रघुनाथ सँकोची । प्रभु गति देखि सभो सब सोची ॥  
 जनक दूत तेहि अवसर आए । मुनि बसिष्ठ सुनि बेगि बोलाए ॥  
 करि प्रनाम तिन्ह रामु निहारे । वेषु देखि भए निपट दुखारे ॥  
 दूतन्ह मुनिवर बूझी बाता । कहहु विदेह भूप कुसलाता ॥

मुनि सकुचार नाइ मदि माथा । बोले चर बर जोरें हाथा ॥  
 बूसव राउर सादर सार्दे । कुसल हेतु सो भयउ गीमार्दे ॥

दो०—नाहिं त कोसल नाथ के साथ कुसल मद् नाथ ।

मिथिल्य अवध बिसेय सैं जगु सब भयउ अनाथ ॥२७०॥

कोसल्यति गति मुनि जनकौरा । भे सब लोक लोक यस बीरा ॥  
 जेहि देखे तेहि समय बिदेह । नामु सत्य अग लाग न केहू ॥  
 रानि कुचालि सुनत नरपालाहि । मूस न कछु जस मनि बिनु म्यान्हि  
 भरत राज खुबर बनवास । भा मिथिलेसहि हृदयें हराँसू ॥  
 नृप बूझे बुध सचिव समाज । कहहु बिचारि उचिन फा भाज  
 समुझि अवध असमंजस दोऊ । चलिअ कि रविअ न कह कछु कोऊ  
 नृपहिं धीर धरि हृदयें बिचारी । पठए अवध चतुर चर चारी ॥  
 बूझि भरत छति भाउ कुमाऊ । आएहु बेगि न होइ लखाऊ ॥

दो०—नाथ अवध चर भरत गति बूमि देखि करतूति ।

चले चित्रभूयहि भरतु चार चले तेरहुनि ॥२७१॥

दूतन्ह आइ भरत कह करनी । जनक समाज अथामति परनी ॥  
 मुनि गुर परिजन सचिव मदीपति । भे सब सोच सनेहैं बिकल अति  
 धरि धीरजु करि भरत बड़ाई । लिए सुमट साहनी बोलार्दे ॥  
 घर पुर देस राखि रखवारे । हय गय रथ बहु जान सँवारे ॥  
 दुधरी साधि चले ततकाला । किए बिधामु न मग महिपाला ॥  
 मोरहिं आबु नहाइ प्रयागा । चले जमुन उतरन छु लागे ॥

खबरि लेन हम पठए नाथा । तिन्ह कहि अस महि नायउ माथा  
साथ किरात छ सातक दीन्है । मुनिवर तुरत बिदा चर कीन्है ॥

दो०—सुनत जनक आगवनु सबु हरषेउ अवध समाजु ।

रघुनंदनहि सकोचु बड़ सोच विवस सुरराजु ॥२७२॥

गरइ गलानि कुटिल कैकेई । काहि कहै केहि दूषनु देई ॥

असमन आनि मुदित नर नारी । भयउ बहोरि रहव दिन चारी ॥

एहि प्रकार गत बासर सोऊ । प्रात नहान लाग सबु कोऊ ॥

करि मजनु पूजहिं नर नारी । गनप गौरि तिपुरारि तमारी ॥

रमा रमन पद बंदि बहोरी । बिनवहिं अंजुलि अंचल जोरी ॥

राजा रामु जानकी रानी । आनँद अवधि अवधरजधानी

सुबस बसउ फिरि सहित समाजा । भरतहि रामु करहुँ जुवराजा ॥

सुख सुधाँ सींचि सब काहू । देव देहु जग जीवन लाहू ॥

०—गुर समाज भाइन्ह सहित राम राजु पुर होउ ।

अछत राम राजा अवध मरिअ माग सबु कोउ ॥२७३॥

सुनि सनेहमय पुरजन बानी । निंदहिं जोग बिरति मुनि ग्यानी

एहि त्रिधि नित्यकरम करि पुरजन । रामहिं करहिं प्रनाम पुलकि तन

ऊँच नीच मध्यम नर नारी । लहहिं दरसु निज निज अनुहारी

सावधान सबही सनमानहिं । सकल सराहत कृपानिधानहिं ॥

लरिकाइहि तैं रघुवर बानी । पालत नीति प्रीति पहिचानी ॥

सील सकोच सिंधु रघुराज । सुमुख सुलोचन सरल सुभाज ॥

कहत राम मुन मन अनुरागे । तब निव भाग स्त्राइन लागे ॥

हम सम पुन्य पुंज जग घेरे । जिन्हहि राम जानन करि मोरे ॥

दो०-प्रेम मगन तेहि समय सब मुनि आवत मिथिलेसु ।

सहित सभा संभ्रम उठेउ रविकुल कमल दिनेसु ॥२०४॥

भाइ सचिव गुर पुरजन साधा । आगे गवनु कीन्ह रघुनाथा ॥

गिरिवर दीख जनकगति अवदी । करि प्रनामु रय त्यागेउ तबदी ॥

राम दरम लालसा उछाहू । पथ भ्रम लेसु कलेसु न काहू ॥

मन तहैं जहैं रघुवर बैदेही । विनु मन तन दुख मुग्य सुधि पेदी ॥

आपन जनकु चले एहि भांती । सहित समाज प्रेम मति माती ॥

आए निकट देखि अनुरागे । सादर मिलन परसर लागे ॥

लगे जनक मुनिजन पद बंदन । रिखिन्ह प्रनामु कीन्ह रघुनंदन ॥

भाइन्ह सहित रामु मिलि राजहि । चले लयाइ समेत समाजहि ॥

दो०-आश्रम सागर सांत रम पूरन पावन पाधु ।

मेन मनहुँ करुना सरित लिपैं जाहिं रघुनाथु ॥२०५॥

बोरति ग्यान गिराग करारे । बचन समोक मिलत नद नारें ॥

सोन उभास समीर तरंगा । धीरज तट तहचर पर भंगा ॥

विषम विषाद तोरावति धारा । भय भ्रम भयैर अवन अघारा ॥

केवट बुध विद्या बड़ि नाथा । मकरि न गेइ ऐक नहि आरा ॥

वनचर फौल किरात विचारे । यके विलोकि पायकु दियैं हारे ॥

आश्रम उदधि मिली जव जाई । मनहुँ उठेउ अंबुधि अमृत्युआई ॥

सोक विकल दोउ राज समाजा । रहा न ग्यानु न धीरजु लाजा ॥  
भूप रूप गुन सील सराही । रोवहिं सोक सिंधु अवगाही ॥

छं०—अवगाहि सोक समुद्र सोचहिं नारि नर व्याकुल महा ।

द्वै दोष सकल सरोष दोलहिं वाम बिधि कीन्हो कहा ॥

सुर सिद्ध तापस जोगिजन मुनि देखि दसा बिदेह की ।

तुलसी न समरथु कोउ जो तरि सकै सरित सनेह की ॥

सो०—किण अमित उपदेस जहँ तहँ लोगन्ह मुनिबरन्ह ।

धीरजु धरिअ नरेस कहेउ बसिष्ठ बिदेह सन ॥२७६॥

जासु ग्यानु रवि भव निसि नासा । बचन किरन मुनि कमल बिकासा

तेहि कि मोह ममता निअराई । यह सिय राम सनेह बढ़ाई ॥

विषई साधक सिद्ध सयाने । त्रिविध जीव जग वेद बखाने ॥

सनेह सरस मन जासू । साधु सभाँ बड़ आदर तासू ॥

न राम पेम बिनु ग्यानू । करनधार बिनुजिमि जलजानू ॥

मुनि बहुविधि बिदेहु समुझाए । राम घाट स्त्र लोग नहाए ॥

सकल सोक संकुल नर नारी । सो बासरु बीतेउ बिनुबारी ॥

पसु खग मृगन्ह न कीन्ह अहारू । प्रिय परिजन कर कौन बिचारू

दो०—दोउ समाज निमिराजु रघुराजु नहाने प्रात ।

वैठे सब बट बिटप तर मन मलीन कृस गात ॥२७७॥

जे महिसुर दसरथ पुर बासी । जे मिथिलापति नगर निवासी ॥

हंस बंस गुर जनक पुरोध । जिन्ह जग मगु परमारथु सोधा ॥

लगे कहन उपदेस अनेका । सहित धरम नय विरति विवेका ॥  
 कौसिक कहि कहि कथा पुरानी । समुझाई सब सभा सुरानी ॥  
 तब रघुनाथ कौसिकहि कहेऊ । नाथ कालि जल विनु सबु रहेऊ  
 मुनि कह उचित कहत रघुराई । गयउ बीति दिन पहर अदाई ॥  
 रिधि रुस्त लखि कह तेरहुतिराजू । इहाँ उचित नहि असन अनाजू  
 कहा भूप भल स्वहि सोहाना । पाइ रजायसु चले नहाना ॥  
 दो०—तेहि भवसर फल फूल दल मूल अनेक प्रकार ।

लह भाए बनघर बिपुल भरि भरि कौवरि भार ॥२०८॥  
 कामद भे गिरि राम प्रसादा । अयलोकत अपहरत विशादा ॥  
 सर सरिता बन भूमि विभागा । जनु उमगत आनंद अनुजगा  
 बेलि पिटप सब सफल सफूला । बोलत खग मृग अलि अनुकूला  
 तेहि अक्सर बन अधिक उछाहू । विविध समीर सुखद सब काहू  
 जाइ न बरनि मनोहरताई । जनु मदि करति जनक पदुनई  
 तब सब लोग नहाइ नहाई । राम जनक मुनि अन्तु पारै ॥  
 देखि देखि तरुवर अनुरागे । जहँ तहँ पुरजन उदरन लागे ॥  
 दल फल मूल फंद विधि नाना । पावन सुंदर सुधा स्तना ॥  
 दो०—सादर सब कहँ रामगुर पठए भरि भरि भार ।

पूजि पितर सुर अतिथि गुर लगे करन करार ॥२०९॥  
 एहि विधि वासर बीते चारी । रामु निजलि नर नारि सुखारी ॥  
 दुहु समाज असि रुचि मन मारी । विनु स्निह राम छिरन मल नारी ॥

सीता राम संग बनबासू। कोटि अमरपुर सरिस सुपासू॥  
 परिहरि लखन रामु ब्रैदेही। जेहि घर भाव नाम विधि तेही॥  
 दाहिन दइउ होइ जब सत्रही। राम समीप बसिअ बन तत्रही॥  
 मंदाकिनि मञ्जनु तिहु काल। राम दरसु मुद मंगल माल॥  
 अटनु राम गिरि बन तापस थल। असनु अमिअ सम कंद मूल फल  
 मुख समेत संबत दुइ साता। पल सम होहिं न जनिअहिं जाता  
 दो०—एहि सुख जोग न लोग सब कहहिं कहाँ अस भागु।

सहज सुभायँ समाज दुहु राम चरन अनुरागु ॥२८०॥

एहि विधि सकल मनोरथ करहीं। बचन सप्रेम सुनत मन हरहीं॥  
 गीय मातु तेहि समय पठाई। दासी देखि सुअवसर आई॥  
 आवकास सुनि सत्र सिय सासू। आयउ जनकराज रनिवासू॥  
 सत्य सादर सनमानी। आसन दिए समय सम आनी॥  
 १७ सनेहु सकल दुहु ओरा। द्रवहिं देखि सुनि कुलिस कठोरा  
 लक सिधिल तन बारि बिलोचन। महि नख लिखन लगीं सब सोचन  
 व सिय राम प्रीति कि सि मूरति। जनु करुना बहु बेध बिसूरति॥  
 य मातु कह विधि बुधि बाँकी। जो पय फेनु फोर पवि टाँकी॥

०—सुनिअ सुधा देखिअहिं गरल सब करतूति कराल।

जहँ तहँ काक उल्लूक बक मानस सकृत मराल ॥२८१॥

ने ससोच कह देवि सुमित्रा। विधि गति बड़ि विपरीत विचित्रा॥  
 सृजि पालइ हरइ बहोरी। बाल केलि सम विधि मति भोरी॥

कौसल्या कह दोनु त कहू । करम बिबस दुख मुख छति लाहू  
कठिन करम राति जान बिधाता । जो सुभ असुभ सकल पल दाता  
इस रजाइ सोस सखी कैं । उत्तगति यितिल्य शिगहु अमी कैं  
देखि मोह यस सोचिअ बादी । बिधि प्रपंचु अम अचल अनादी  
भूपति जिअव मरव उर आनी । सोचिअ सखि लखि निज दित हानी  
सीय मातु कह सत्य सुबानी । मुकृन्ती अवधि अवधरति रानी ॥

दो०—लखनु रामु सिय जाहुँ बन भल परिनाम न पोनु ।

गहबरि हियँ कह कौसिला मोहि भरत कर सोनु ॥२८२॥

इस प्रसाद असीम तुम्हारी । मुन मुतरधू देयमरि बारी ॥  
राम सख्य मैं कीन्हि न काऊ । सो करि कहउँ सररी सति भाऊ ॥  
भरत सील गुन विनय बढ़ाई । भाषा भगति भरोस मलाई ॥  
कहत सारदहु कर मति हीचे । सागर सीर कि जाहिँ उलीचे ॥  
जानउँ सदा भरत कुलदीपा । बार बार मोहि कहेउ महीग ॥  
कसैं फनकु मनि पारिलि पाएँ । पुरुष परिस्तिअहिँ ममयें सुमाएँ ॥  
अनुचित आजु कहव अस मोग । लोक छनेहैं सयानव योग ॥  
मुनि सुरमरि सम पावनि बानी । मई सनेह विकल सब रानी ॥

दो०—कौसल्या कह धीर धरि सुनहु देखि सिधिलेसि ।

को बिदेकनिधि बहुभरि तुम्हहि सकह उपदेसि ॥२८३॥

रानि राय सन अक्सरु पाई । अपनी माँति कह्य समुझाई ॥  
रखिअहिँ लखनु भरतु गवनहिँ बना । जौ यह मत मानै महीप मन ॥



तौ भल जतनु करब सुविचारी । मोरें सोचु भरत कर भारी ॥  
 गूढ़ सनेह भरत मन माहीं । रहें नीक मोहि लागत नाहीं ॥  
 लखि सुभाउ सुनि सरल सुबानी । सब भइ मगन करन रस रांनी ॥  
 नभ प्रसून झरि धन्य धन्य धुनि । सिथिल सनेहँ सिद्ध जोगी मुनि ॥  
 सब रनिवासु बियकि लखि रहेऊ । तब धरि धीर सुभित्राँ कहेऊ ॥  
 देवि दंड जुग जामिनि बीती । राम मातु सुनि उठी सप्रीती ॥  
 दो०—येगि पाउ धारिअ थलहि कह सनेहँ सतिभाय ।

हमरें तौ अब ईस गति कै मिथिलेस सहाय ॥२८४॥

लखि सनेह सुनि वचन बिनीता । जनकप्रिया गह पाय पुनीता ॥  
 देवि उचित असि बिनय तुम्हारी । दसरथ धरिनि राम महतारी ॥  
 प्रभु अपने नीचहु आदरहीं । अग्नि धूम गिरि सिर तिनु धरहीं ॥  
 सेवकु राउ करम मन बानी । सदा सहाय महेसु भवानी ॥  
 रउरे अंग जोगु जग को है । दीप सहाय कि दिनकर सोहै ॥  
 रामु जाइ वनु करि सुर काजू । अचल अवधपुर करिहहिं राजू ॥  
 अमर नाग नर राम बाहुबल । सुख बसिहहिं अपने अपने थल ॥  
 यह सब जागवलिक कहि राखा । देवि न होइ मुघा मुनि भाषा ॥  
 दो०—अस कहि पग परि पेस अति सिय हित बिनय सुनाइ ।

सिय समेत सियमातु तब चली सुआयसु पाइ ॥२८५॥

प्रिय परिजनहि मिली बैदेही । जो जेहि जोगु भाँति तेहि तेही ॥  
 तापस वेष जानकी देखी । भा सबु बिकल बिषाद बिसेयी ॥



रामहि रायँ कहेउ बन जाना । कीन्ह आपु प्रिय प्रेम प्रवाना ॥  
 हम अय बन तैं बनहि पठाई । प्रमुदित फिरव त्रिवेक बड़ाई ॥  
 तापस मुनि महिसुर सुनि देखी । भए प्रेम बस त्रिकल त्रिसेषी ॥  
 समउ समुझि धरि धीरजु राजा । चले भरत पहिँ सहित समाजा ॥  
 भरत आइ आगें भइ लीन्हे । अवसर सरिस सुआसन दीन्हे ॥  
 तात भरत कह तेरहुति राज । तुम्हहि विदित रघुवीर सुभाऊ ॥

दो०—राम सत्यव्रत धरम रत सब कर सीलु सनेहु ।

संकट सहत सकोच बस कहिअ जो आयसु देहु ॥२९२॥

सुनि तन पुलकि नयन भरि वारी । बोले भरतु धीर धरि भारी ॥  
 प्रभु प्रिय पूज्य पिता सम आपू । कुलगुरु सम हित माय न बापू ॥  
 कौसिकादि मुनि सचिव समाजू । ग्यान अंबुनिधि आपुनु आजू ॥  
 सिसु सेवकु आयसु अनुगामी । जानि मोहि सिख देइअ स्वामी ॥  
 एहिँ समाज थल बूझव राउर । मौन मलिन मैं बोलव बाउर ॥  
 छोटे बदन कहउँ बड़ि बाता । छमव तात लखि वाम त्रिधाता ॥  
 आगम निगम प्रसिद्ध पुराना । सेवाधरमु कठिन जगु जाना ॥  
 स्वामि धरम स्वारथहि विरोधू । नैरु अंध प्रेमहि न प्रबोध ॥

दो०—राखि राम रुख धरमु ब्रतु पराधीन मोहि जानि ।

सब कैं संमत सर्व हित करिअ पेसु पहिचानि ॥२९३॥

भरत वचन सुनि देखि सुभाऊ । सहित समाज सराहत राजा ॥  
 सुगम अगम मृदु मंजु कठोरे । अरथु अमित अति आखर ॥



समय समाज धरम अविरोधा । बोले तव रघुवंस पुरोधा ॥  
 जनक भरत संवादु सुनाई । भरत कहाउति कही सुहाई ॥  
 तात राम जस आयसु देहू । सो सबु करै मोर मत एहू ॥  
 सुनि रघुनाथ जोरि जुग पानी । बोले सत्य सरल मृदु बानी ॥  
 विद्यमान आपुनि मिथिलेसू । मोर कहव सब भाँति भदेसू ॥  
 राउर राय रजायसु होई । राउरि सपथ सही सिर सोई ॥

दो०—राम सपथ सुनि मुनि जनकु सकुचे सभा समेत ।

सकल विलोकत भरत मुखु बनह न ऊतरु देत ॥२९६॥

सभा सकुच बस भरत निहारी । रामबंधु धरि धीरजु भारी ॥  
 देखि सनेहु सँभारा । बढ़त विधि जिमि घटज निवारा ॥  
 सोक कनकलोचन मति छोनी । हरी विमल गुन गन जगजोनी ॥  
 भरत विवेक बराहँ बिसाला । अनायास उधरी तेहि काला ॥  
 करि प्रनामु सब कहँ कर जोरे । रामु राउ गुर साधु निहोरे ॥  
 छमव आजु अति अनुचित मोरा । कहउँ बदन मृदु वचन कठोरा ॥  
 हियँ सुमिरी सारदा सुहाई । मानस तँ मुख पंकज आई ॥  
 विमल विवेक धरम नय साली । भरत भारती मंजु मराली ॥

दो०—निरखि विवेक विलोचनन्हि सिथिल सनेहँ समाजु ।

करि प्रनामु बोले भरतु सुमिरि सीय रघुराजु ॥२९७॥

प्रभु पितु मातु सुहृद गुर स्वामी । पूज्य परम हित अंतरजामी ॥  
 सरल सुसाहिबु सील निधानू । प्रनतपाल सर्वग्य सुजानू ॥

स्मरय सरनागत हितकारी । गुनगाइकु अवगुन अघ हारी ॥  
 स्वामि गोसाँइहि सरिस गोसाईं । मोहि स्मान में साईं दोहाई ॥  
 प्रभु पितु बचन मोह बस पेत्ती । आयउँ इहाँ समाजु सकेली ॥  
 जग मल पोच ऊँच अरु नीचू । अमिअ अमरपद माहुह भीचू ॥  
 राम रजाइ भेट मन माहीं । देखा मुना कतहुँ कोउ नाहीं ॥  
 सो मैं सब सिधि कीन्हि दिठाई । प्रभु मानी सनेह सेवकाई ॥  
 दो०—कृपाँ भलाई आपनी माय कीन्ह भल मोर ।

दूषन भै भूषन सरिस मुजमु चाह चहु ओर ॥२९८॥  
 शउरि सीति सुवानि बढाई । जगत बिदित निगमागम गाई  
 कूर कुटिल खल कुमति कलंकी । नीच निसील निरीस निसंकी ॥  
 तेउ मुनि सरन समुहैं आए । सकृत् प्रनामु किहैं अपनाए ॥  
 देखि दोष क्यहुँ न उर आने । मुनि गुन साधु समाज बलाने ॥  
 को साहिब सेवकहि नेबाजी । आपु समाज साज सब साजी ॥  
 निज करतूति न समुझिअ छपने । सेवक सकुच सोचु उर अपनै ॥  
 सो गोसाईं नहि दूसर कोपी । भुजा उठाइ कहउँ पन रोपी ॥  
 प्रभु नाचत मुफ पाठ प्रवीना । गुन गति नट पाठक आधीना  
 दो०—यों सुधारि सनमानि जन किए साधु सिरमोर ।

को कृपाल बिनु पालिहै बिरिदाबलि बरजोर ॥२९९॥  
 सोक सनेहैं कि बाल सुभाएँ । आवउँ लाइ रजायमु चाएँ ॥  
 तबहुँ कृपाल हेरि निज ओरा । सबहिँ भाँति भल मानेउ मोरा ॥

## \* ब्रह्मचरिनीमानस \*

ॐ नमः सुखमस्तु मया । जानेऊँ स्वामी भद्रज अनन्तकाल ॥  
 समाज विच्छेदकेँ भाग्य । खड़ी भूक मादित्य अनुसम ॥  
 म अनुसम जेँ अपाई । कीन्हि भुगानिधिस्य अविभाई ॥  
 या मोर दुःखार मोमाई । अपने भीक सुमायें भलाई ॥  
 ॥ निपट भै कीन्हि दिदाई । स्वामि समाज कनोय बिदाई ॥  
 भविनय विनय अभ्यासवि जानी । रक्षामहि देलु अनि आरति जानी ॥  
 ॐ नमः सुखमस्तु समाज सुखादिवहि बाहुन बाहुन भदि सोरि ।  
 आपसु मिदुषा भुव बाध खसद शुभारी सोरि ॥ १०० ॥  
 भय पद पतुम परमा ओदाई । भय सुखमस्तु गीन सुदाई ॥  
 ॐ नमः देवि, अपने भी । कवि जागत गोपत अपने की ॥  
 ॐ नमः स्वामि भवनमाई । स्वामि छल पल पारि बिदाई ॥  
 ॐ नमः न सुमादित्य सेवा । गो प्रसादु जन पाये देना ॥  
 जग कदि प्रेम विनय भाष, भारी । पुलक गरीर बिलोचन भारी ॥  
 प्रभु पद भगवत भेद अकुलाई । समझ सनेहु न सो कहि जाई ॥  
 भुगानिधु भगवानि सुवानी । बैठाय, समीप गदि पानी ॥  
 भक्त विनय मुनि देवि भुगज । मिथिल सनेहँ रमा रघुराज ॥  
 ॐ नमः रघुराज मिथिल सनेहँ साधु समाज मुनि मिथिल धनी ।  
 भग गहँ पराहत भरत भाग्य भगति की सहिमा धनी ॥  
 भरतदि प्रसंगत विष्णु भरपत सुमन मानस मलिन से ।  
 पुलसी भिक्क सय लोग मुनि सकुचे निसागम नलिन से ।

सो०-देखि दुखारी दीन दुहु समात्र नर नारि सब ।

मधवा महा मलीन मुए मारि मंगल चहुत ॥३०१॥

कपट कुचालि सीयै सुरराजू । पर अकाब्र प्रिय आपन काजू ॥

काफ समान पाकरिषु सीती । छली मलीन कतहुँ न प्रतीती ॥

प्रथम कुमत करि कपटु सँकेला । सो उचाटु सब कै शिर मेला ॥

सुरमायौ सब लोग विमोहे । राम प्रेम अतिसय न बिछोहे ॥

भय उचाट बस मन यिर नाहीं । छन बन रुचि छन सदन सोदाहीं ॥

दुषिष मनोगति प्रजा दुखारी । सरित सिंधु संगम जनु धारी ॥

दुनित कतहुँ परितोषु न लहहीं । एक एक सन मरमु न कहहीं ॥

लखि दिवैं हँसि कह कृपानिधानू । सरिस स्वान मधवान जुषानू ॥

दो०-भरतु जनकु मुनिजन सचिव साधु सचेत बिहाइ ।

छागि देषमाया सबहि जधानोगु जनु पाइ ॥३०२॥

कृपासिंधु लखि लोग दुखारे । निज सनेहँ सुरपति छल मारे ॥

सभा राउ गुर महिसुर मंत्री । भरत भगति सब कै मति जंघी ॥

रामहि चितवत चित्र लिखे से । सकुचत बोलत बचन सिले से ॥

भरत प्रीति नति भिनय बढ़ाई । सुनत सुखद बरनत कठिनाई ॥

जासु बिलोकि भगति लखलेसु । प्रेम भगन मुनिगन मिथिलेसु ॥

महिमा तासु कहै किमि तुलसी । भगति सुभायै सुमति दिवैं हुलस ॥

आपु छोटि महिमा बढ़ि जानी । कबिकुल कानि मानि सकुचानी ॥

कहि न सकति गुन रुचि अधिकार । मति गति बाल बचन की नाई ॥



दो०-भरत विमल जसु विमल विधु सुमति चकोरकुमारि ।

उदित विमल जन हृदय नभ एकटक गही निहारि ॥३०३॥

भरत सुभाउ न सुगम निगमहूँ । लघु मति चापलता कवि छमहूँ ॥  
 कहत सुनत सति भाउ भरत को । सीयराम पद होइ न रत को ॥  
 सुमिरत भरतहि प्रेमु राम को । जेहि न सुलभु तेहि सरिस बाम को  
 देखि दयाल दसा सबही की । राम सुजान जानि जन जी की ॥  
 धरम धुरीन धीर नय नागर । सत्य सनेह सील सुख सागर ॥  
 देसु कालु लखि समउ समाजू । नीति प्रीति पालक रघुराजू ॥  
 बोले बचन बानि सरबसु से । हितपरिनाम सुनत ससि रसु से  
 तात भरत तुम्ह धरम धुरीना । लोक वेद विद प्रेम प्रवीना  
 दो०-करम बचन मानस विमल तुम्ह समान तुम्ह तात ।

गुर समाज लघु बंधु गुन कुसमयँ किमि कहि जात ॥३०४॥

जानहु तात तरनि कुल रीती । सत्यसंध पितु कीरति प्रीती ॥  
 समउ समाजु लाज गुरजन की । उदासीन हित अनहित मन की ॥  
 तुम्हहि विदित सबही कर करमू । आपन मोर परम हित धरमू ॥  
 मोहि सब भाँति भरोस तुम्हारा । तदपि कहउँ अवसर अनुसारा ॥  
 तात तात विनु बात हमारी । केवल गुरकुल कृपाँ सँभारी ॥  
 नतर प्रजा परिजन परिवारु । हमहि सहित सबु होत खुआरु ॥  
 जाँ विनु अवसर अथवँ दिनेसू । जग केहि कहहु न होइ कलेसू ॥  
 तस उतपातु तात विधि कीन्हा । मुनि मिथिलेस राखि सबु लीन्हा ॥



दो०-देव देव अभिषेक हित गुर अनुसासनु पाइ ।

आनेढँ सब तीरथ सलिलु तेहि कहँ काह रजाइ ॥३०७॥

एकु मनोरथु बड़ मन माहीं । समयँ सकोच जात कहि नाहीं ॥

कहहु तात प्रभु आयसु पाई । बोले वानि सनेह सुहाई ॥

चित्रकूट सुचि थल तीरथ बन । खग मृग सर सरि निर्झर गिरिगन

प्रभु पद अंकित अवनि बिसेपी । आयसु होइ त आवौं देखी ॥

अवसि अत्रि आयसु सिर धरहू । तात त्रिगतभय कानन चरहू ॥

मुनि प्रसाद बनु मंगल दाता । पावन परम सुहावन भ्राता ॥

रिपिनायकु जहँ आयसु देहीं । राखेहु तीरथ जलु थल तेहीं ॥

मुनि प्रभु वचन भरत सुखु पावा । मुनि पद कमल मुदित सिर नावा

१०-भरत राम संवादु मुनि सकल सुमंगल मूल ।

सुर स्वारथी सराहि कुल बरषत सुरतरु फूल ॥३०८॥

भरत जय राम गोसाई । कहत देव हरषत बरिआई ॥

मुनि मिथिलेस सभाँ सब काहू । भरत वचन मुनि भयउ उछाहू ॥

भरत राम गुन ग्राम सनेहू । पुलकि प्रसंसत राउ विदेहू ॥

सेवक स्वामि सुभाउ सुहावन । नेमु पेमु अति पावन पावन ॥

मति अनुसार सराहन लागे । सचिव सभासद सब अनुरागे ॥

मुनि मुनि राम भरत संवादू । दुहु समाज हियँ हरपु विषादू ॥

राम मातु दुखु सुखु सम जानी । कहि गुन राम प्रबोधी रानी ॥

एक कहहि रघुवीर बड़ाई । एक सराहत भरत भलाई ॥

दो०—अथि कहैउ दब भरत सन सैल समीप सुदूष ।

राखिअ तीरथ सोय तहै पावन अमिअ अनूप ॥३०९॥

भरत अथि अनुसासन पाई । जल भाजन सब दिए चलाई ॥

सानुज आपु अथि मुनि साधू । सहित गए जहै कूप अगाधू ॥

पावन पाप पुन्ययल राखा । प्रमुदित प्रेम अथि अस भाया ॥

सात अनादि सिद्ध यल एह । लोपेउ काल विदित नहिं केहू ॥

तब सेवकन्ह सरस यल देखा । कीन्ह मुजल हित कूप बिसेया ॥

विधि बस मयउ बिस्व उपकारू । मुगम अगम अति धरम बिचारू ॥

भरतकूप अब कहिहहिं लोगा । अति पावन तीरथ जल जोगा ॥

प्रेम सनेम निमज्जत प्राणी । होइहहिं बिमल करम मन बानी ॥

दो०—कहत कूप महिमा सकल गए जहाँ रघुराउ ।

अथि सुनायउ रघुवरहि तीरथ पुन्य प्रभाउ ॥३१०॥

एत धरम इतिहास स्पीती । मयउ मोरु निशि सो सुल सीती ॥

नेल निबाहि भरत दोउ भाई । राम अथि गुर आपसु पाई ॥

झीत समाज साज सब सादें । चले राम बन अटन पयादें ॥

कोनउ चरन चलत बिनु पनहीं । भइ मृदु भूमि सकुचि मन मनहीं ॥

कुच बंटक कौकरी कुराहें । कटुक कठोर कुबसु दुराहें ॥

मई मंडुउ मृदु मारग कीन्दे । सहत स्मीरि सीन्हे ॥

हुन बरि सुख घन करि छाहीं । बिटप पूदि

गगनिजोकि लग बोलि सुबानी । सेबहिं क

दो०—सुलभ सिद्धि सब प्राकृतहु राम कहत जमुहात ।

राम प्रान प्रिय भरत कहँ यह न होइ बड़ि बात ॥३११॥  
 एहि विधि भरतु फिरत बन माहीं । नेमु प्रेमु लखि मुनि सकुचार्हीं ॥  
 पुन्य जलाश्रय भूमि विभागा । खग मृग तरु तृन गिरि बन वागा ॥  
 चारु विचित्र पवित्र बिसेषी । बूझत भरतु दिव्य सब देखी ॥  
 सुनि मन मुदित कहत रिपिराज । हेतु नाम गुन पुन्य प्रभाज ॥  
 कतहुँ निमजन कतहुँ प्रनामा । कतहुँ विलोकत मन अभिरामा ॥  
 कतहुँ बैठि मुनि आयसु पाई । सुमिरत सीय सहित दोउ भाई ॥  
 देखि सुभाउ सनेहु सुसेवा । देखि असीस मुदित बनदेवा ॥  
 फिरहि गएँ दिनु पहर अढ़ाई । प्रभु पद कमल त्रिलोकहि आई ॥

दो०—देखे थल तीरथ सकल भरत पाँच दिन माझ ।

कहत सुनत हरि हर सुजसु गयउ दिवसु भइ साँझ ॥३१२॥  
 भोर न्हाइ सबु जुरा समाजू । भरत भूमिसुर तेरहुति राजू ॥  
 भल दिन आजु जानि मन माहीं । रामु कृपाल कहत सकुचार्हीं ॥  
 गुर नृप भरत सभा अवलोकी । सकुचि राम फिरि अवनि विलोकी ॥  
 सील सराहि सभा सब सोची । कहँ न राम सम स्वामि सँकोची ॥  
 भरत सुजान राम रुख देखी । उठि सप्रेम धरि धीर बिसेषी ॥  
 करि दंडवत कहत कर जोरी । राखीं नाथ सकल रुचि मोरी ॥  
 मोहि लगि सहेउ सबहि संतापू । बहुत भाँति दुखु पावा आपू ॥  
 अब गोसाईं मोहि देउ रजाई । सेवौं अवध अवधि भरि जाई ॥

दो०—जेहिं उपाय पुनि पाय जनु देखै दीनदयाल ।

सो सिख देखै अवधि हरि कोसलपाल कृपाल ॥३१३॥

पुरजन परिजन प्रजा गोसाईं । सब मुचि सरस सनेह सगई ॥  
राउर यदि मल भव दुख दाह । प्रभु पितु बादि परम पद लाह ॥  
स्वामि मुजानु जानि सब ही की । रुचि छालमा रहनि जन जी की ॥  
प्रनतगालु पालिहि सब काह । देउ दुहू दिसि ओर निशाह ॥  
अस मोहि सब विधि भूरि भरोसो । किहँ बिचार न सोनु खरो सो ॥  
आरति मोर नाथ कर छोह । दुहँ मिलि कीन्ह दीनु दृढि मोह ॥  
यह यह दोष दूरि करि स्वामी । तजि सकोच सिखइअ अनुगामी ॥  
भरत पिनय मुनि स्याहि प्रसंखी । स्त्रीर नीर विवरन गति हंखी ॥

दो०—दीनबंधु मुनि बंधु के बचन दीन छलहीन ।

देस काल अवसर सरिस बोले रामु प्रवीन ॥३१४॥

सात तुम्हारि मोरि परिजन की । चिंता गुरहि नृपहि पर बन की ॥  
माथे पर गुर मुनि मिथिलेख । हमदि तुम्हारि सनेहें न कलेख ॥  
मोर तुम्हार परम पुखारथु । स्वारथु मुजसु धरमु परमारथु ॥  
पितु आपसु पालिहि दुहु भाई । लोक बेद मल भूप भलाई ॥  
गुर पितु मातु स्वामि सिख पालें । चलेहुं कुमग पग परहि न खालें ॥  
अस बिचारि सब सोच बिहाई । पालहु अवध अवधि मरि जाई ॥  
देसु कोसु परिजन परिवारु । गुर पद रजहि लाग छदभारु ॥  
तुम्ह मुनि मातु सचिव सिख मानी । पालेहु पुहुमि प्रजा रजधानी ॥

दो०-मुखिआ मुखु सो चाहिए खान पान कहूँ एक ।

पालइ पोषइ सकल अँग तुलसी सहित विवेक ॥३१५॥

राजधरम सरबसु एतनोई । जिमि मन माहँ मनोरथ गोई ॥

बंधु प्रबोधु कीन्ह बहु भाँती । त्रिनु अधार मन तोषु न साँती ॥

भरत सील गुर सचिव समाजू । सकुच सनेह त्रिवस रघुराजू ॥

प्रभु करि कृपा पाँवरि दीन्हों । सादर भरत सीस धरि लीन्हों ॥

चरनपीठ करुनानिधान के । जनु जुग जामिक प्रजा प्रान के ॥

संपुट भरत सनेह रतन के । आखर जुग जनु जीव जतन के ॥

कुल कपाट कर कुसल करम के । विमल नयन सेवा सुधरम के ॥

भरत मुदित अवलंब लहे तैं । अस सुख जस सिय रामु रहे तैं ॥

०-मागेउ बिदा प्रनामु करि राम लिए उर लाइ ।

लोग उचाटे अमरपति कुटिल कुअवसरु पाइ ॥३१६॥

स कुचालि सब कहँ भइ नीकी । अवधि आस सम जीवनि जी की ॥

नतरु लखन सिय राम बियोगा । हहरि मरत सब लोग कुरोगा ॥

रामकृपाँ अवरेय सुधारी । त्रिवुध धारि भइ गुनद गोहारी ॥

भेंटत भुज भरि भाइ भरत सो । राम प्रेम रसु कहि न परत सो ॥

तन मन बचन उमग अनुरागा । धीर धुरंधर धीरजु त्यागा ॥

वारिज लोचन मोचत बारी । देखि दसा सुर सभा दुखारी ॥

मुनिगन गुर धुर धीर जनक से । ग्यान अनल मन कसैं कनक से ॥

जे बिरंचि निरलेप उपाए । पदुम पत्र जिमि जग जल जाए ॥

दो०—सेठ बिलोकि रघुवर भरन प्रीति अनूप अपार ।

भय मगन मन सन बचन सहित विराम बिचार ॥११०॥

जहाँ जनक गुर गति मति मोरी । प्राकृत प्रीति कहत बदि खोरी ॥

बरनत रघुवर भरत बियोगू । मुनि कठोर कवि जानिहि लोगू ॥

छो सकोच रस अकथ सुचानी । समउ सनेहु सुमिरि सुबुचानी ॥

भेंटि भरतु रघुवर समुझाए । पुनि रिपुदधनु हरिषि दिये लाए ॥

सेवक सचिव भरत रुख पाई । निज निज काज लगे सब जाई ॥

मुनि दावन दुख दुहूँ समाजा । लगे चलन के सजन साजा ॥

प्रभु पद पदुम बंदि दोउ मारि । चले सीस धरि राम रजाई ॥

मुनि तापठ बनदेव निहोरी । सब सनमानि बहोरि बहोरी ॥

दो०—छलनहि भेंटि प्रनामु करि सिर धरि सिध पद धरि ।

चले समेस असीस मुनि सकल सुमंगल मूरि ॥१११॥

छानुज राम नृपहि सिर नाई । कीन्हि बहुत विधि विनय बढाई ॥

देव दया बस बड़ दुख पापठ । सहित समाज काननहि आयठ ॥

पुर पशु धारिअ देह असीस । कीन्ह धीर धरि गयनु महीस ॥

मुनि महिदेव साधु सनमाने । बिदा किए हरि हर सम जाने ॥

सामु समीप गए दोउ मारि । सिरे बंदि पाग आशिष पाई ॥

कोसिक नामदेव जागली । पुरजन परिजन सचिव सुचाही ॥

जया जोगु करि विनय प्रनामा । बिदा किए सब छानुज रामा ॥

नारि पुरुष लघु मध्य बहरे । सब सनमानि कृपानिधि वेरे ॥



दो०—भरत मातु पद बंदि प्रभु सुचि सनेहँ मिलि भेंटि ।

विदा कीन्ह सजि पालकी सकुच सोच सब मेटि ॥३१९॥  
 परिजन मातु पिताहि मिलि सीता । फिरी प्रानप्रिय प्रेम पुनीता ॥  
 करि प्रनामु भेंटों सब सासू । प्रीति कहत कवि हियँ न हुलासू ॥  
 सुनि सिख अभिमत आसिप्र पाई । रही सीय दुहु प्रीति समाई ॥  
 रघुपति पटु पालकी मगाई । करि प्रबोधु सब मातु चढ़ाई ॥  
 बार बार हिलि मिलि दुहु भाई । सम सनेहँ जननीं पहुँचाई ॥  
 साजि बाजि गज बाहन नाना । भरत भूप दल कीन्ह पयाना ॥  
 हृदयँ रामु सिय लखन समेता । चले जाहिँ सब लोग अचेता ॥  
 बसह बाजि गज पसु हियँ हारें । चले जाहिँ परबस मन मारें ॥

दो०—गुर गुरतिय पद बंदि प्रभु सीता लखन समेत ।

फिरे हरष विसमय सहित आए परन निकेत ॥३२०॥  
 विदा कीन्ह सनमानि निषादू । चलेउ हृदयँ बड़ विरह बिषादू ॥  
 कोल किरात भिल्ल बनचारी । फेरे फिरे जोहारि जोहारी ॥  
 प्रभु सिय लखन बैठि बट छाहीं । प्रिय परिजन वियोग बिलखाहीं ॥  
 भरत सनेह सुभाउ सुवानी । प्रिया अनुज सन कहत बखानी ॥  
 प्रीति प्रतीति वचन मन करनी । श्रीमुख राम प्रेम बस बरनी ॥  
 तेहि अवसर खग मृग जल मीना । चित्रकूट चर अचर मलीना ॥  
 विबुध बिलोकि दसा रघुबर की । वरषि सुमन कहि गति घर घर की ॥  
 प्रभु प्रनामु करि दीन्ह भरोसो । चले मुदित मन डर न खरो सो ॥

१०-सानुज सीय समेत प्रभु रात्रि परन कुटीर ।

भगति ग्यानु बैराग्य अनु मोहन धरै मरीर ॥२२१॥

मुनि महिसुर गुर भरत मुआइ । राम निरै म्हु मातु रिहाइ ॥

मु गुन प्रान गनन मत्र माई । क्य पुनकाउ नने मग जहाँ ॥

मुना नतरि पार म्हु भयऊ । सो रामद सिनु मोहन मरऊ ॥

उतरि देखरि दूमर राम । रामकर्म सय ईन्ह सुगम ॥

छई उतरि गोमती नहाए । चौथे दिपस अन्धपुर अर ॥

जनकु रहे पुर बासर चारी । रात्र काउ मर म्हु सैजारी ॥

सौनि सचिय गुर मरनहि राम । तेरहुनि चने म्हु सहाइ ॥

नगरनारिनर गुर मित मानी । यथे सुनेन राम गजदानी ॥

१०-राम दाम हगि लोग मर करन नेन उपकाम ।

सत्रि सत्रि भूषन भोग मुन त्रिप्रल अर्द्धि ॥ अयोध्या ॥ २२४

सचिय सुनेनक मरन प्रबोधे । निन नित्र काउ पार म्हु अने

पुनि सिख दीन्हि सोनि लघु माई । सौनी मरऊ मातु संपदाई ॥

भूसुर बोलि भरत कर जोरे । करि प्रनाम क्य सिन स निदेरे ॥

ऊँच नीच कारजु मल पोचू । आयनु देव न कर सैहोचू ॥

परिजन पुरजन प्रजा बोलाए । समाधानु करि मुदस दगाइ ॥

सानुज मे गुर गेहैं बहोरी । करि दंडन करन नर जेरी ॥

आपनु होर त राई छेमा । बोले मुनि तन पुनकि छेमा ॥

सुसुत्र कर करन दुग्न जोरें । घरम छह जग होइहि छेरें ॥

दो०—सुनि सिख पाइ असीस बड़ि गनक बोलि दिनु साधि ।

सिंघासन प्रभु पादुका बैठारे निरुपाधि ॥३२३॥

राम मातु गुर पद सिख नाई । प्रभु पद पीठ रजायसु पाई ॥  
 नंदिगावँ करि परन कुटीरा । कीन्ह निवासु धरम धुर धीरा ॥  
 जटाजूट सिर मुनिपट धारी । महि खनि कुस साँथरी सँवारी ॥  
 असन बसन बासन व्रत नेमा । करत कठिन रिपिधरम सप्रेमा ॥  
 भूषन बसन भोग सुख भूरी । मन तन बचन तजे तिन तूरी ॥  
 अवध राजु सुर राजु सिहाई । दसरथ धनु सुनि धनदु लजाई ॥  
 तेहिँ पुर बसत भरत बिनु रागा । चंचरीक जिमि चंपक बागा ॥  
 रमा बिलासु राम अनुरागी । तजत बमन जिमि जन बड़भागी ॥

दो०—राम पेम भाजन भरतु बड़े न एहिं करतूति ।

जातक हंस सराहिअत टैंक बिबेक बिभूति ॥३२४॥

देह दिनहुँ दिन दूबरि होई । घटइ तेजु बलु मुखछबि सोई ॥  
 नित नव राम प्रेम पनु पीना । बढ़त धरम दलु मनु न मलीना ॥  
 जिमि जलु निघटत सरद प्रकासे । बिलसत बेतस बनज बिकासे ॥  
 सम दम संजम नियम उपासा । नखत भरत हिय बिमल अकासा ॥  
 ध्रुव बिस्वासु अवधि राका सी । स्वामि सुरति सुरबीथि बिकासी ॥  
 राम पेम बिधु अचल अदोषा । सहित समाज सोह नित चोखा ॥  
 भरत रहनि समुझनि करतूती । भगति विरति गुन बिमल बिभूती ॥  
 बरनत सकल सुकबि सकुचाहीं । सेस गनेस गिरा गमु नाहीं ॥

रो०-नित पूजन प्रभु पाँवरी प्रीति न इदं ममानि ।

मागि मागि आयमु करत रात्र करत बहु भोगि ॥१२५॥  
 पुष्क गात द्विं शिष्य खुबीरु । जीद नामु जग लोचन नीम् ॥  
 लक्ष्म राम सिव काजनन यक्षी । परतु मयन बसि तर तनु कषी ॥  
 दोउ दिशि अनुसि करत अनु लोग् । स्व विधि भरत सपहन जोग् ॥  
 मुनि व्रतनेम साधु सकुचारी । देनि दमा मुनिराज यज्ञारी ॥  
 परम पुनीत भरत आचग्न । मधुर मंजु मुद मंगल करन ॥  
 हरन कठिन कलि कटुय कलेग् । महामोद निशि दस्त दिनेग् ॥  
 पार पुंज कुंजर मृगराज । समन सद्य संताप समाज ॥  
 जन रंजन मंजन भव भारु । राम सनेह मुधाकर शम् ॥

छं०-मिय राम प्रेम विषूष पूरन होत जनमु न भरत को ।

मुनि मन भगम जम नियम सम दम विषम मन आचरत को  
 दुल दाह दारिद दम दूपन मुक्रम मिम अपहरत को ।  
 कलिछल तुलसी से सद्यनि हृदि राम सनमुन करन को ॥

सौ०-भरत चरित करि नेमु तुलसी ओ सादर मुनहिं ।

सीय राम षड वेमु अवसि होइ भव रम विरति ॥१२६॥

मासपारायण, शक्तीसर्वा विधाम  
 इति भीमद्रामचरितमानभे सकलकण्डिकदुयविष्यंमने  
 द्वितीयः संगानः समाप्तः ।

( अयोध्याकाण्ड समाप्त )

## सुतीक्ष्णजी रामके ध्यानमें



अतिसय प्रीति देखि खुबीरा ।

प्रगटे हृदयँ हरन भव भीरा ॥

श्रीगणेशाय नमः

भोजनकौबह्दभो विजयते

# श्रीरामचरितमानस

१०८५१०८५

## तृतीय सोपान

( अरण्यकाण्ड )

—०—०—०—

श्लोक

मूलं धर्मनरोर्विवेकजलधेः पूर्णेन्दुमानन्ददं  
वैराग्याम्बुजभास्करं ह्यधधनध्वान्तापहं तापहम् ।  
मोहाग्भोदरपूगपाटनविधौ स्वःसम्भवं पाङ्कजं  
वन्दे मङ्गकुलं कलङ्कशमनं श्रीरामभूषमिषम् ॥ १ ॥  
सान्द्रानन्दपयोदसौमगतनुं पीताम्बरं मुन्दरं  
पाणौ बागशरासनं कटिलमत्तूणोरभारं वरम् ।  
राज्जीवायतलोचनं धृतजटागूटेन संतोभितं  
सीतालक्ष्मणसंपुतं पयिगर्तं रामाभिरामं ॥ २ ॥

सो०-उमा राम गुन गूढ़ पंडित मुनि पावहिं बिरति ।

पावहिं मोह विमूढ़ जे हरि विमुख न धर्म रति ॥

पुर नर भरत प्रीति मैं गाई । मति अनुरूप अनूप सुहाई ॥  
अब प्रभु चरित सुनहु अति पावन । करत जे वन सुर नर मुनि भावन  
एक बार चुनि कुसुम सुहाए । निज कर भूषन राम बनाए ॥  
सीताहि पहिराए प्रभु सादर । बैठे फटिक सिला पर सुंदर ॥  
सुरपति सुत धरि बायस बेपा । सठ चाहत रघुपति बल देखा ॥  
जिमि पिपीलिका सागर थाहा । महा मंदमति पावन चाहा ॥  
सीता चरन चौंच हति भागा । मूढ़ मंदमति कारन कागा ॥  
चला रुधिर रघुनायक जाना । सीक धनुष सायक संधाना ॥

दो०-भति कृपाल रघुनायक सदा दीन पर नेह ।

ता सन आइ कीन्ह छलु मूरख अवगुन रोह ॥ १ ॥

प्रेरित मंत्र ब्रह्मसर धावा । चला भाजि बायस भय पावा ॥  
धरि निज रूप गयउ पितु पाहीं । राम विमुख राखा तेहि नाहीं ॥  
भा निरास उपजी मन त्रासा । जथा चक्र भय रिषि दुर्बासा ॥  
ब्रह्मधाम सिवपुर सब लोका । फिरा श्रमित व्याकुल भय सोका  
काहूँ बैठन कहा न ओही । राखि को सकइ राम कर द्रोही ॥  
मातु मृत्यु पितु समन समाना । सुधा होइ बिष सुनु हरिजाना ॥  
मित्र करइ सत रिपु कै करनी । ता कहँ त्रिवुधनदी बैतरनी ॥  
सब जगु ताहि अनलहु ते ताता । जो रघुवीर विमुख सुनु आता ॥

मारद देला विकल जयंता । लागि दया कोमल चित संता ॥  
 पड्या तुरत राम परि ताही । बहेनि पुकारि प्रनन हित पारी ॥  
 आतुर समय गहेसि पद जाई । प्राहि प्राहि दयाल रघुपारं ॥  
 अतुलित बल अतुलित प्रमुताई । मैं मानमद जानि नहि पारं ॥  
 निज कृत कर्म जनित फल पावउँ । अब प्रभु पाहि मग्न तकि आपडैं ॥  
 सुनि कृपाल अति आरत बानी । एकनयन करि तज्जा भवानी ॥  
 सो०-कीन्ह मोह कम मोह जघपि तेहि कर बध उचिन ।

प्रभु छाईत करि छोह को कृपाल रघुबीर मम ॥ २ ॥

एगवि चित्रकूट बसि नाना । चरित किए भुति मुधा ममाना ॥  
 बहुरि राम अस मन अनुमाना । होईहि भरि मरिहि मोहि जाना ॥  
 कल मुनिन्ह सन बिदा करार । सीता छवि चले हो भाई ॥  
 नशि के आभम जब प्रभु गयऊ । मुनत महा मुनि हरित भयऊ ॥  
 लिखत गात अत्रि उठि धाए । देखि राम आतुर चलि आए ॥  
 व्रत दंडवत मुनि उर लाए । प्रेम शरि हो जन अन्हपाए ॥  
 छवि राम छवि नयन सुदाने । सादर निज आभम तर भाने ॥  
 छरि पूजा कहि वचन मुझाए । दिए मूल फल प्रभु मन भाए ॥  
 सो०-प्रभु आसन आसीन भरि छेचन मोभा निरगि ।

मुनिवर परम प्रचीन जोरि पानि भस्तुति करत ॥ ३ ॥

छं०-नमामि भक्त बसलं । कृपालु शील कोमलं ॥  
 ममामि ते पद्मपुष्पं । भक्तमिना स्वधामदं ॥



निकाम श्याम सुंदरं । भवाम्बुनाथ मंदरं ॥  
 प्रफुल्ल कंज लोचनं । मदादि दोष मोचनं ॥  
 प्रलंब बाहु विक्रमं । प्रभोऽप्रमेय वैभवं ॥  
 निषंग चाप सायकं । धरं त्रिलोक नायकं ॥  
 दिनेश वंश मंडनं । महेश चाप खंडनं ॥  
 मुनींद्र संत रंजनं । सुरारि वृंद भंजनं ॥  
 मनोज वैरि वंदितं । अजादि देव सेवितं ॥  
 विशुद्ध बोध विग्रहं । समस्त दूषणापहं ॥  
 नमामि इंदिरा पतिं । सुखाकरं सतां गतिं ॥  
 भजे सशक्ति सानुजं । शची पति प्रियानुजं ॥  
 त्वदंग्रि मूल ये नराः । भजंति हीन मत्सराः ॥  
 पतंति नो भवार्णवे । वितर्क वीचि संकुले ॥  
 विविक्त वासिनः सदा । भजंति मुक्तये मुदा ॥  
 निरस्य इंद्रियादिकं । प्रयांति ते गतिं स्वकं ॥  
 तमेकमद्भुतं प्रभुं । निरीहमीश्वरं विभुं ॥  
 जगद्गुरुं च शाश्वतं । तुरीयमेव केवलं ॥  
 भजामि भाव बलभं । कुयोगिनां सुदुर्लभं ॥  
 स्वभक्त कल्प पादपं । समं सुसेव्यमन्वहं ॥  
 अनूप रूप भूपतिं । नतोऽहमुर्विजा पतिं ॥  
 प्रसीद मे नमामि ते । पदाब्ज भक्ति देहि मे ॥

पटंति ये सर्वं हृदं । नरादरेण ते पदं ॥

प्रज्जति नाथ संसयं । स्वदीप भन्ति संयुताः ॥

दो०—बिनती करि मुनि नाइ मिर कह कर जोरि बहोरि ।

चरन सरोरु नाथ जनि कबहुँ मज्ज मनि मोरि ॥ ४ ॥

अनुसुया के पद गहि सीता । मिन्दी बहोरि मुनीन्दि निर्मिता ॥  
 रिगतिनी मन मुग्न अधिकारि । आगि देह निकट पैठाई ॥  
 दिव्य वसन भूषन पहिगाए । जे निग नूनन अमल मुहाए ॥  
 कह रिगिबधू सरस मृदु बानी । नागधर्म कटु व्याज बगानी ॥  
 मातु रिता भ्राता हितकारी । मिनप्रद सब सुनु गजकुमारी ॥  
 अमित दानि भतां बयदेही । अधम मो नारि जो सेव न तेही ॥  
 धीरज धर्म मित्र अरु नागी । आरुद कान्त परिखिअहि चारी ॥  
 रुद रोगपस जइ धनहीना । अंध बधिर मोर्खी अनि दीना ॥  
 ऐसेहु पति कर किएँ अश्वमाना । नारि पाव जमपुर दुख नाना ॥  
 एकर धर्म एक व्रत नेमा । कायें बचन मन पति पद प्रेमा ॥  
 जग पतिव्रता चारि सिधि अहरी । वेद पुरान संत सब कहरी ॥  
 उत्तम के अस बस मन माही । मननेहुँ आन पुरुष जग नाही ॥  
 मध्यम परपति देखद कैमें । भ्राता रिता पुत्र निज जेमें ॥  
 धर्म विचारि समुझि कुल रहई । मो निजिष्ट त्रिय भुनि अस कहई ॥  
 बिनु अवसर मय तैं रह जोई । जानेहुँ अधम नारि जग सोई ॥  
 पति बंचक परपति रति करई । रोख नरक कल्प सत परई ॥

छन सुख लागि जनम सत कोटी । दुख न समुझ तेहि सम को खोटी ।  
 त्रिनु श्रम नारि परम गति लहई । पतिव्रत धर्म छाड़ि छल गहई ॥  
 पति प्रतिकूल जनम जहँ जाई । विधवा होइ पाइ तरनाई ॥

सो०—सहज अपावनि नारि पति सेवत सुभ गति लहइ ।

जसु गावत श्रुति चारि अजहुँ तुलसिका हरिहि प्रिय ॥५(क)॥

सुनु सीता तव नाम सुमिरि नारि पतिव्रत करहिं ।

तोहि प्रानप्रिय राम कहिउँ कया संसार हित ॥५(ख)॥

सुनि जानकी परम सुख पावा । सादर तासु चरन सिर नावा ॥

तव मुनि सन कह कृपानिधाना । आयसु होइ जाउँ वन आना ॥

संतत मो पर कृपा करेहु । सेवक जानि तजेहु जनि नेहु ॥

धर्म धुरंधर प्रभु कै बानी । सुनि सप्रेम बोले मुनि ग्यानी ॥

जासु कृपा अज सिव सनकादी । चहत सकल परमारथ बादी ॥

ते तुम्ह राम अकाम पिआरे । दीन बंधु मृदु वचन उचारे ॥

अब जानी मैं श्री चतुराई । भजी तुम्हहि सव देव बिहाई ॥

जेहि समान अतिसय नहिं कोई । ता कर सील कस न अस होई ॥

केहि विधि कहाँ जाहु अब स्वामी । कहहु नाथ तुम्ह अंतरजामी ॥

अस कहि प्रभु विलोकि मुनि धीरा । लोचन जल बह पुलक सरीरा ॥

छं०—तन पुलक निर्भर प्रेम पूरन नयन मुख पंकज दिए ।

मन ग्यान गुन गोतीत प्रभु मैं दीख जप तप का किए ॥

जब जोग धर्म समूह में नर भगति अनुपम पावई ।

रघुबीर चरित पुनीत निसि दिन दाय गुल्मी गायई ॥

दो०—कलिमल समन दमन मन राम मुज्य मुनमूल ।

सादर मुनहिं जे तिन्ह पर राम रहहिं अनुकूल ॥१(क)॥

सो०—कठिन काल मल कोस धर्म न ग्यान न जोग जग ।

परिहरि सकल भरोस रामहि भगईं से चतुर नर ॥१(ख)॥

मुनि पद कमल नाह करि सीता । चले वनहिं मुर नर मुनि ईला ॥

आगे राम अनुज पुनि पाछें । मुनि घर देव बने अति पाछें ॥

उभय बीच भी सोइइ बैसी । जग जीव विच माया बैसी ॥

छरिता धन गिरि अवपट पाटा । पति पहिचानि देहिं बर काटा ॥

जहें जहें जाहिं देव रघुराया । क्यहिं मेरु तहें तहें नम छाया ॥

मिला असुर विराध मग जाता । आवतही रघुबीर निगठा ॥

तुरतहिं रुचिर रूप तेहिं पाया । देखि दुर्ता निब धाम पठाया ॥

पुनि आए जहें मुनि सरभंगा । सुंदर अनुज जानकी संगी ॥

दो०—देखि राम मुख पंकज मुनिघर लोचन भृंग ।

सादर पान करत अति धन्य जन्म सरभंग ॥ ० ॥

कह मुनि तुनु रघुबीर कृपाल । संकर मानस राखनपाल ॥

जात रहेउँ विरंचि के धामा । सुनेउँ भजन बन पेइहिं रामा ॥

चितवत पंथ रहेउँ दिन राती । अब प्रभु देखि बुझानी छाती ॥

नाथ सकल साधन मैं दीना । कीन्ही कृपा जानि जन दीना ॥

सो कछु देव न मोहि निहोरा । निज पन राखेउ जन मन चोरा॥  
 तब लगि रहहु दीन हित लागी । जव लगि मिलौं तुम्हहि तनु त्यागी  
 जोग जग्य जप तप व्रत कीन्हा । प्रभु कहँ देइ भगति बर लीन्हा  
 एहि विधि सर रचि मुनि सरभंगा । बैठे हृदयँ छाड़ि सब संगी ॥

दो०—सीता अनुज समेत प्रभु नील जलद तनु स्याम ।

मम हियँ बसहु निरंतर सगुनरूप श्रीराम ॥ ८ ॥

अस कहि जोग अगिनि तनु जारा । राम कृपाँ बैकुंठ सिधारा ॥  
 ताते मुनि हरि लीन न भयऊ । प्रथमहिं भेद भगति बर लयऊ  
 रिषि निकाय मुनिवर गति देखी । सुखी भए निज हृदयँ बिसेषी ॥  
 अस्तुति करहिं सकल मुनि वृन्दा । जयति प्रनत हित करुना कंदा  
 पुनि रघुनाथ चले बन आगे । मुनिवर वृन्द विपुल संग लागे ॥  
 अस्थि समूह देखि रघुराया । पूछी मुनिन्ह लागि अति दाया  
 जानतहूँ पूछिअ कस स्वामी । सबदरसी तुम्ह अंतरजामी ॥  
 निसिचर निकर सकल मुनि खाए । सुनि रघुवीर नयन जल छाए ॥

दो०—निसिचर हीन करउँ महि भुज उठाइ पन कीन्ह ।

सकल मुनिन्ह के आश्रमन्हि जाइ जाइ सुख दीन्ह ॥ ९ ॥

मुनि अगस्ति कर सिष्य सुजाना । नाम सुतीछन रति भगवाना ॥  
 मन क्रम वचन राम पद सेवक । सपनेहुँ आन भरोस न देवक ॥  
 प्रभु आगवनु श्रवन सुनि पावा । करत मनोरथ आतुर धावा ॥  
 हे विधि दीनबंधु रघुराया । मो सेसठ पर करिहहिं दाया ॥

सहित अनुज मोहि राम गोसाई । मिलिहहि निज सेवक की नारै ॥  
 मोरे जियें भरोष हट नाहीं । भगति विरति न ग्यान मन माहीं ॥  
 नहि सतसंग जोग जय जागा । नहि दृढ चरन कमल अनुरागा ॥  
 एक पानि करनानिधान की । सो प्रिय जाकें गति न आन की ॥  
 होइहैं सुफल आनु मम लोचन । देखि बदन पंकज भय मोचन ॥  
 निर्भर प्रेम मगन मुनि ग्यानी । कहि न जाइ सो दख भयानी ॥  
 दिसि अरु विदिसि पंथ नहि सूझा । को मैं चलेउँ कहाँ नहि पूझा ॥  
 कबहुँक फिरि पाछें पुनि जाई । कबहुँक नृत्य करइ गुन गाई ॥  
 अचिरल प्रेम भगति मुनि पारै । प्रभु देखैं तब ओट सुकारै ॥  
 अलिख्य प्रीति देखि खुसीरा । प्रगटे हृदयें हरन मय भीरा ॥  
 मुनि मग माझ अचल होइ बैसा । पुलक सरीर पनस फल जैसा ॥  
 तब खुनाय निकट चलि आए । देखि दख निज जन मन भाए ॥  
 मुनिहि राम बहु भौंति जगाया । जाग न ध्यानजनित सुख पाया ॥  
 भूय रूप तब राम दुराधा । हृदयें चतुर्भुज रूप देखाया ॥  
 मुनि अकुलाह उठा तब कैसैं । बिकल हीन मनि कनियर जैसैं ॥  
 आगें देखि राम तन स्यामा । सीता अनुज सहित मुख धामा ॥  
 पेउ लकुट इव चरनन्हि लागी । प्रेम मगन मुनिवर बढमागी ॥  
 भुज विशाल गदि लिए उठाई । परम प्रीति राखे उर लाई ॥  
 मुनिहि मिलत अरु सोह कृपाला । कनक तरुहि जनु मेंट तमाला ॥  
 राम बदन पिलोक मुनि ठाढ़ा । मानहुँ चित्र माझ लिपि काढ़ा ॥

दो०—तब मुनि हृदयँ धीर धरि गहि पद बारहिं बार ।

निज आश्रम प्रभु आनि करि पूजा बिविध प्रकार ॥ १० ॥

कह मुनि प्रभु सुनु विनती मोरी । अस्तुति करौं कवन विधि तोरी  
महिमा अमित मोरि मति थोरी । रवि सन्मुख खद्योत अँजोरी ॥  
श्याम तामरस दाम शरीरं । जटा मुकुट परिधन मुनिचीरं ॥  
पाणि चाप शर कटि तूणीरं । नौमि निरंतर श्रीरघुवीरं ॥  
मोह विपिन धन दहन कृशानुः । संत सरोरुह कानन भानुः ॥  
निशिचर करि वरूथ मृगराजः । त्रातु सदा नो भव खग बाजः ॥  
अरुण नयन राजीव सुवेशं । सीता नयन चकोर निशेशं ॥  
हर हृदि मानस बाल मरालं । नौमि राम उर बाहु विशालं ॥  
संशय सर्प असन उरगादः । शमन सुकर्कश तर्क विपादः ॥  
भव भंजन रंजन सुर यूथः । त्रातु सदा नो कृपा वरूथः ॥  
निर्गुण सगुण विषम सम रूपं । ज्ञान गिरा गोतीतमनूपं ॥  
अमलमखिलमनवद्यमपारं । नौमिराम भंजन महिभारं ॥  
भक्त कल्पपादप आरामः । तर्जन क्रोध लोभ मद कामः ॥  
अति नागर भव सागर सेतुः । त्रातु सदा दिनकर कुल केतुः ॥  
अतुलित भुज प्रताप बल धामः । कलि मल विपुल विभंजन नामः  
धर्म वर्म नर्मद गुण ग्रामः । संतत शं तनोतु मम रामः ॥  
जदपि विरज व्यापक अविनासी । सब के हृदयँ निरंतर वासी ॥  
तदपि अनुज श्री सहित खरारी । बसतु मनसि मम काननचारी ॥  
जे जानहिं ते जानहुँ स्वामी । सगुन अगुन उर अंतरजामी ॥

जो कोसल पति राजिव नयना । करउ सो राम हृदय मम अना  
 अस अभिमान जाइ जनि मोरे । मैं सेवक खुशति पति मोरे ॥  
 मुनि मुनि बचन राम मन भाए । बहुरि हरपि मुनिवर उर लाए ॥  
 परम प्रसन्न जानु मुनि मोही । जोवर मागहु देउँ सो तोही ॥  
 मुनि कह मैं बर कबहुँ न जाचा । समुझि न परइ झूठ का साचा ॥  
 तुम्हहि नीक लागै खुशार्ह । सो मोहि देहु दास मुखदार ॥  
 अखिरल भगति विरति विग्याना । होहु सकल गुन ग्यान निधाना  
 प्रभु जो दीन्ह सो यह मैं पाया । अब सो देहु मोहि जो भाया ॥

दो०—अनुज जनकी सहित प्रभु चाप धान धर राम ।

मम हिय गगन इंदु इव बसहु सदा निहकाम ॥ ११ ॥

एयमस्तु करि रमानिवासा । हरपि चले कुंभज रिपि पासा ॥  
 बहुत दिवस गुर दरसनु पाएँ । भए मोहि एहि आश्रम आएँ ॥  
 अब प्रभु संग जाउँ गुर पार्हीं । तुम्ह कहैं नाथ निहोरा नार्हीं ॥  
 देखि कृपानिधि मुनि चतुर्धर । लिए संग बिष्टे दौ भार ॥  
 वंद्य कहत निज भगति अनूषा । मुनि आश्रम पहुँचे सुरभूषा ॥  
 तुरत सुतीलन गुर पार्हि गयऊ । करि दंडवत कइत अस मयऊ ॥  
 नाथ कोसलाधीस कुमारा । आए मिलन जगत आधारा ॥  
 राम अनुज समेत बैदेही । निशि दिनु देव जपत इहु जेही ॥  
 सुनत अगसि तुरत उठि धाए । हरि बिलोकि लोचन जल छाए  
 मुनि पद कमल परे दौ भार ॥ रिपि अति प्रीति लिए उर लार ॥



सादर कुसल पूछि मुनि ग्यानी । आसन बर बैठारे आनी ॥  
 पुनि करि बहु प्रकार प्रभु पूजा । मोहि सम भाग्यवंत नहिं दूजा  
 जहँ लगि रहे अपर मुनि वृंदा । हरषे सत्र विलोकि सुखकंदा ॥

दो०—मुनि समूह महँ बैठे सन्मुख सब की ओर ।

सरद इंदु तन चितवत मानहुँ निकर चकोर ॥ १२ ॥

तव रघुवीर कहा मुनि पाहीं । तुम्हसन प्रभु दुराव कछु नाहीं  
 तुम्ह जानहु जेहि कारन आयउँ । ताते तात न कहि समुझायउँ  
 अब सो मंत्र देहु प्रभु मोही । जेहि प्रकार मारौं मुनिद्रोही ॥  
 मुनि मुसुकाने सुनि प्रभु वानी । पूछेहु नाथ मोहि का जानी ॥  
 तुम्हरेई भजन प्रभाव अघारी । जानउँ महिमा कछुक तुम्हारी  
 ऊमरि तर बिसाल तव माया । फल ब्रह्मांड अनेक निकाया ॥  
 जीव चराचर जंतु समाना । भीतर बसहिं न जानहिं आना ॥  
 ते फल भच्छक कठिन कराला । तव भयँ डरत सदा सोउ काला  
 ते तुम्ह सकल लोकपति साई । पूँछेहु मोहि मनुज की नाई ॥  
 यह बर मागउँ कृपानिकेता । बसहु हृदयँ श्री अनुज समेता ॥  
 अबिरल भगति विरति सतसंगा । चरन सरोरुह प्रीति अभंगा ॥  
 जद्यपि ब्रह्म अखंड अनंता । अनुभव गम्य भजहिं जेहि संता  
 अस तव रूप बखानउँ जानउँ । फिरि फिरि सगुन ब्रह्म रति मानउँ  
 संतत दासन्ह देहु बड़ाई । तातें मोहि पूँछेहु रघुराई ॥  
 है प्रभु परम मनोहर ठाऊँ । पावन पंचवटी तेहि नाऊँ ॥

दंडक वन पुनीत प्रभु करहु । उग्र साप मुनिवर कर हरहु ॥  
वास करहु तहैं रघुकुल राया । कीजे सकल मुनिन्ह पर दाया ॥  
चले राम मुनि आयमु पाई । तुरतहि पंचवटी निभगई ॥  
श्लो०—गीधराज सैं भेंट भइ बहु विधि प्रीति बढ़ाइ ।

गोदावरी निकट प्रभु रहे परन गृह छाइ ॥ १३ ॥

जब ते राम कीन्ह तहैं वासा । सुखी भए मुनि बीती प्रासा ॥  
गिरि वन नदी ताल छवि छाए । दिन दिन प्रति अति होहि मुहाए  
खग मृग बृंद अनंदित रहरी । मधुप मधुर गुंजत छवि लहरी ॥  
सो वन वरनि न सक अदिराजा । जहाँ प्रगट रघुवीर विराजा ॥  
एक बार प्रभु सुख आसीना । लछिमन बचन कहे छलहीना ॥  
सुर नर मुनि सचराचर साई । मैं पूछउँ निज प्रभु की नाई ॥  
मोहि समुझाइ कहहु सोइ देया । सब तजि करौ चरन रज मेवा ॥  
कहहु ग्यान विराग अरु माया । कहहु सो भगति करहु जेहि दाया  
श्लो०—ईस्वर जीव भेद प्रभु सकल कहौ समुझाइ ।

जातैं होइ चरन रति सौं मोह भ्रम जाइ ॥ १४ ॥

गोरेदिमहैं सब कहउँ बुझाई । मुनहु तात मति मन चित लाई  
मैं अरु मोर तोर तैं माया । जेहि बस कीन्हे जीव निपाया ॥  
गो गोचर जहैं लगि मन जाई । सो सब माया जानेहु भाई ॥  
तेहि कर भेद सुनहु तुम्ह सोऊ । विद्या अगर अविद्या दोऊ ॥  
एक दुष्ट अतिसय दुखरूपा । जा बस जीव परा भयकृपा ॥

एक रचइ जग गुन बस जाकैं । प्रभु प्रेरित नहिं निज बल ताकैं ॥  
 ग्यान मान जहँ एकउ नाहीं । देख ब्रह्म समान सब माहीं ॥  
 कहिअ तात सो परम विरागी । तृन सम सिद्धि तीनि गुन त्यागी  
 दो०—माया ईस न आपु कहूँ जान कहिअ सो जीव ।

बंध मोच्छ प्रद सर्वपर माया प्रेरक सीव ॥ १५ ॥

धर्म तें बिरति जोग तें ग्याना । ग्यान मोच्छप्रद बेद बखाना ॥  
 जातें बेगि द्रवउँ मैं भाई । सो मम भगति भगत सुखदाई ॥  
 सो सुतंत्र अवलंब न आना । तेहि आधीन ग्यान विग्याना ॥  
 भगति तात अनुपम मुखमूला । मिलइ जो संत होई अनुकूला ॥  
 भगति कि साधन कहउँ बखानी । सुगम पंथ मोहि पावहिं प्रानी ॥  
 प्रथमहिं विप्र चरन अति प्रीती । निज निज कर्म निरत श्रुति रीती  
 एहि कर फल पुनि विषय विरागा । तब मम धर्म उपज अनुरागा ।  
 श्रवणादिक नय भक्ति दृढ़ाहीं । मम लीला रति अति मन माहीं ।  
 संत चरन पंकज अति प्रेमा । मन क्रम बचन भजन दृढ़ नेम  
 गुरु पितु मातु बंधु पति देवा । सब मोहि कहँ जानै दृढ़ सेवा  
 मम गुन गावत पुलक सरीरा । गदगद गिरा नयन बह नीरा  
 काम आदि मद दंभ न जाकैं । तात निरंतर बस मैं ताकैं  
 दो०—बचन कर्म मन मोरि गति भजनु करहिं निःकाम ।

तिन्ह के हृदय कमल महुँ करउँ सदा बिश्राम ॥ १६ ॥

भगति जोग सुनि अति सुख पावा । लछिमन प्रभु चरनन्हि सिर



नाक कान बिनु भइ विकरारा । जनु खव सैल गेरु कै धारा ॥  
 खर दूषन पहिं गइ बिलपाता । धिग धिग तव पौरुष बल भ्राता ॥  
 तेहिं पूछा सब कहेसि बुझाई । जातुधान सुनि सेन बनाई ॥  
 धाए निसिचर निकर बरूथा । जनु सपच्छ कजल गिरि जूथा ॥  
 नाना बाहन नानाकारा । नानायुध धर धोर अपारा ॥  
 सूपनखा आगें करि लीनी । असुभ रूप श्रुति नासा हीनी ॥  
 असगुन अमित होहिं भयकारी । गनहिं न मृत्यु बिबस सब शारी ॥  
 गर्जहिं तर्जहिं गगन उड़ाहीं । देखि कटकु भट अति हरषाहीं ॥  
 कोउ कह जिअत धरहु द्वौ भाई । धरि मारहु तिय लेहु छड़ाई ॥  
 धूरि पूरि नभ मंडल रहा । राम बोलाइ अनुज सन कहा ॥  
 लै जानकिहि जाहु गिरि कंदर । आवा निसिचर कटकु भयंकर ॥  
 रहेहु सजग सुनि प्रभु कै बानी । चले सहित श्री सर धनु पानी ॥  
 देखि राम रिपुदल चलि आवा । बिहसि कठिन कोदंड चढ़ावा ॥

छं०—कोदंड कठिन चढ़ाइ सिर जट जूट बाँधत सोह क्यों ।  
 मरकत सयल पर लरत दामिनि कोटि सों जुग भुजग ज्यों ॥  
 कटि कसि निपंग बिसाल भुज गहि चाप बिसिख सुधारि कै ।  
 चितवत मनहुँ मृगराज प्रभु गजराज घटा निहारि कै ॥

सो०—आहू गए बगमेल धरहु धरहु धावत सुभट ।

जथा बिलोकि अकेल बाल रबिहि घेरत दनुज ॥ १८ ॥

प्रभु बिलोकि सर सकहिं न डारी । यकित भई रजनीचर धारी ॥

सचिव बोलि बोले सर दूधन । यह कोउ नृपचालक नर भूषन ॥  
 नाग असुर सुर नर मुनि जेते । देखे जिते हते हम केते ॥  
 हम मरि जन्म सुनहु सर माई । देखी नहि अति सुंदरताई ॥  
 जयपि भगिनी कीन्हि कुरूपा । बध लायक नहि पुरुष अनूपा ॥  
 देहु तुरत निज नारि दुराई । जीअत भवन जाहु द्रौ माई ॥  
 मोर कहा तुम्ह ताहि सुनावहु । तामु बचन सुनि आतुर आवहु ॥  
 दूतन्ह कहा राम सन जाई । मुनत राम बोले मुमुकाई ॥  
 हम छत्री मृगया बन करहीं । तुम्ह से खल मृग खोजत फिरहीं ॥  
 रिपु बलबंत देखि नहि डरहीं । एक बार कालहु सन लरहीं ॥  
 जयपि मनुज दनुज कुल घालक । मुनि पालक खल सालक बालक ॥  
 जी न होइ बल घर फिरि जाहु । समर विमुख मैं हतउँ न काहु ॥  
 रन चदि करिअ कण्ठ चतुराई । रिपु पर कृपा परम कदराई ॥  
 दूतन्ह जाइ तुरत सब कहेऊ । मुनि सर दूधन उर अति दहेऊ ॥  
 छं०-उर दहेउ कहेउ कि धरहु धाए बिकट भट रजनीधरा ।  
 सर चाप सोमर सक्ति सूल कृपान परिष परसु धरा ॥  
 प्रभु कीन्हि धनुष टकोर प्रथम कठोर घोर भयावहा ।  
 भए बधिर न्याकुल जातुघान न ग्यान तेहि अवसर रहा ॥

दो०-सावधान होइ धाए जानि सबल आराति ।

लागे धरपन राम पर भज सख बहुभाँ २(क) ॥

तिन्ह के आयुध तिल सम करि काटे रघुवीर ।

तानि सरासन श्रवन लगि पुनि छाँड़े निज तीर ॥ १९ (ख) ॥

छं०—तब चले वान कराल । फुंकरत जनु बहु ब्याल ॥  
कोपेउ समर श्रीराम । चले विसिख निसित निकाम ॥  
अवलोकि खरतर तीर । मुरि चले निसिचर वीर ॥  
भए क्रुद्ध तीनिउ भाइ । जो भागि रन ते जाइ ॥  
तेहि बधव हम निज पानि । फिरे मरन मन महुँ ठानि ॥  
आयुध अनेक प्रकार । सनमुख ते करहिं प्रहार ॥  
रिपु परम कोपे जानि । प्रभु धनुष सर संधानि ॥  
छाँड़े विपुल नाराच । लगे कटन विकट पिसाच ॥  
उर सीस भुज कर चरन । जहँ तहँ लगे महि परन ॥  
चिह्नरत लागत वान । धर परत कुंवर समान ॥  
भट कटत तन सत खंड । पुनि उठत करि पाषंड ॥  
नभ उड़त बहु भुज मुंड । विनु मौलिं धावत रुंड ॥  
खग कंक काक सृगाल । कटकटहिं कठिन कराल ॥

छं०—कटकटहिं जंबुक भूत प्रेत पिसाच खर्पर संचहीं ।  
बेताल वीर कपाल ताल बजाइ जोगिनि नंचहीं ॥  
रघुवीर वान प्रचंड खंडहिं भटन्ह के उर भुज सिरा ।  
जहँ तहँ परहिं उठि लरहिं धर धरु धरु करहिं भयकर गिरा ॥





धुआँ देखि खरदूपन केरा । जाइ सुपनखाँ रावन प्रेरा ॥  
 बोली बचन क्रोध करि भारी । देस कोस कै सुरति बिसारी ॥  
 करसि पान सोवसि दिनु राती । सुधि नहिँ तव सिर पर आराती ॥  
 राज नीति बिनु धन बिनु धर्मा । हरिहि समर्थे बिनु सतकर्मा ॥  
 बिद्या बिनु विवेक उपजाएँ । श्रम फल पढ़ें किएँ अरु पाएँ ॥  
 संग तैं जती कुमंत्र ते राजा । मान ते ग्यान पान तैं लाजा ॥  
 प्रीति प्रनय बिनु मद ते गुनी । नासहिँ वेगि नीति अस सुनी ॥

सो०—रिपु रुज पावक पाप प्रभु अहि गनिअ न छोट करि ।

अस कहि विविध बिलाप करि लागी रोदन करन ॥२१(क)॥

दो०—सभा माझ परि व्याकुल बहु प्रकार कह रोइ ।

तोहि जिअत दसकंधर मोरि कि असि गति होइ ॥२१(ख)॥

सुनत सभासद उठे अकुलाई । समुझाई गहि बाँह उठाई ॥  
 कह लंकेस कहसि निज वाता । केइँ तव नासा कान निपाता ॥  
 अवध नृपति दसरथ के जाए । पुरुष सिंघ बन खेलन आए ॥  
 समुझि परी मोहि उन्ह कै करनी । रहित निसाचर करिहहिँ धरनी ॥  
 जिन्ह कर भुजबल पाइ दसानन । अभय भए विचरत मुनि कानन  
 देखत बालक काल समाना । परम धीर धन्वी गुन नाना ॥  
 अतुलित बल प्रताप द्वौ भ्राता । खल बध रत सुर मुनि सुखदाता  
 सोभा धाम राम अस नामा । तिन्ह के संग नारि एक स्यामा ॥  
 रूप रासि विधि नारि सँवारी । रति सत कोटि तासु बलिहारी ॥



दसमुख गयउ जहाँ मारीचा । नाइ माथ स्वारथ रत नीचा ॥  
 नवनि नीच कै अति दुखदाई । जिमि अंकुस धनु उरग बिलाई ॥  
 भयदायक खेल कै प्रिय बानी । जिमि अकाल के कुसुम भवानी ॥

दो०—करि पूजा मारीच तब सादर पूछी बात ।

कवन हेतु मन व्यग्र अति अकसर आयहु तात ॥ २४ ॥

दसमुख सकल कथा तेहि आगें । कही सहित अभिमान अभागें ॥  
 होहु कपट मृग तुम्ह छलकारी । जेहि विधि हरि आनों नृपनारी ॥  
 तेहिं पुनि कहा सुनहु दससीसा । ते नररूप चराचर ईसा ॥  
 तासों तात बयर नहिं कीजै । मारें मरिअ जिआएँ जीजै ॥  
 मुनि मख राखन गयउ कुमारा । विनु फर सर रघुपति मोहि मारा ॥  
 जोजन आयउँ छन माहीं । तिन्ह सन बयर किएँ भल नाहीं ॥  
 मम कीट भृंग की नाई । जहँ तहँ मैं देखउँ दोउ भाई ॥  
 जौं नर तात तदपि अति सूरा । तिन्हहि विरोधि न आइहि पूरा ॥

दो०—जेहिं ताड़का सुबाहु हति खंडेउ हर कोदंड ।

खर दूपन तिसिरा बधेउ मनुज कि अस बरिबंड ॥ २५ ॥

जाहु भवन कुल कुसल बिचारी । सुनत जरा दीन्हिसि बहु गारी ॥  
 गुरु जिमि मूढ़ करसि मम बोधा । कहु जग मोहि समान को जोधा ॥  
 तब मारीच हृदयँ अनुमाना । नवहि विरोधे नहिं कल्याना ॥  
 सखी मर्मी प्रभु सठ धनी । वैद बंदि कवि भानस गुनी ॥  
 उभय भाँति देखा निज मरना । तब ताकिसि रघुनायक सरना ॥

उतर देत मोहि बधव अभागै । कस न मरौ रघुपति सर लागै ॥  
अस जियँ जानि दसानन संगी । चला राम पद प्रेम अभंगी ॥  
मन अति हरप जनाव न तेही । आजु देखिहउँ परम सनेही ॥

छंद०—निज परम प्रीतम देखि लोचन सुफल करि सुख पाइहौ ।  
धी सहित भुज समेत कृपानिकेत पद मन लाइहौ ॥  
निर्बान दायक क्रोध ज कर भगति भवसहि बसकरी ।  
निज पानि सर मंधानि सो मोहि बधिहि सुखसागर हरी ॥

दो०—मम पाउँ धर धावत धरै सरासन बान ।

फिरि फिरि प्रभुहि बिलोकिहउँ धन्य न मो सम भान ॥ २६ ॥

तेहि पन निकट दसानन गयऊ । तब मारीच कण्ठमृग भयऊ ॥  
अति विचित्र कछु बरनि न जाई । कनक देह मनि रचित बनाई ॥  
सीता परम रुचिर मृग देखी । अंग अंग सुमनोहर बेसी ॥  
मुनहु देव खुबीर कृपाला । एहि मृग कर अति सुंदर छाला ॥  
सत्यसंध प्रभु बधि करि एही । आनहु चर्म कहति बैदेही ॥  
तब रघुपति जानत सब कारन । उठे हरषि सुर काजु सँवारन ॥  
मृग बिलोकि कटि परिकर बंधा । करतल चाप रुचिर सर साँधा ॥  
प्रभु लछिमनाहि कहा समुझाई । फिरत विपिन निशिचर बहु भाई ॥  
सीता केरि करेहु रखवारी । बुधि विवेक बल समय बिचारी ॥  
प्रभुहि बिलोकि चला मृग भाजी । घाए रामु सरास्य साजी ॥  
निगम नेति सिव ध्यान न पावा । मायामृग प ॥

कबहुँ निकट पुनि दूरि पराई । कबहुँक प्रगटइ कबहुँ छपाई ॥  
 प्रगटत दुरत करत छल भूरी । एहि विधि प्रभुहि गयउ लै दूरी ॥  
 तब तकि राम कठिन सर मारा । धरनि परेउ करि घोर पुकारा ॥  
 लछिमन कर प्रथमहि लै नामा । पाछें सुमिरेसि मन महुँ रामा ॥  
 प्रान तजत प्रगटेसि निज देहा । सुमिरेसि रामु समेत सनेहा ॥  
 अंतर प्रेम तासु पहिचाना । मुनि दुर्लभ गति दीन्हि सुजाना ।

दो०—विपुल सुमन सुर वरषहिं गावहिं प्रभु गुन गाथ ।

निज पद दीन्ह असुर कहुँ दीनबंधु रघुनाथ ॥२७॥

खल बधि तुरत फिरे रघुवीरा । सोह चाप कर कटि तूनीरा ॥  
 आरत गिरा सुनी जब सीता । कह लछिमन सन परम सभीता ।  
 दु वेगि संकट अति भ्राता । लछिमन बिहसि कहा सुनु माता  
 भृकुटि बिलास सृष्टि लय होई । सपनेहुँ संकट परइ कि सोई ।  
 मरम बचन जब सीता बोला । हरि प्रेरित लछिमन मन डोला ।  
 बन दिसि देव सौंपि सब काहू । चले जहाँ रावन ससि राहू ।  
 सून बीच दसकंधर देखा । आवा निकट जती कें वेषा  
 जाकें डर सुर असुर डेराहीं । निसि न नीद दिन अन्न न खा  
 सो दससीस खान की नाई । इत उत चितइ चला भड़िहाई  
 इमि कुपंथ पग देत खगेसा । रहन तेज तन बुधि बल लेसा  
 नाना विधि करि कथा सुहाई । राजनीति भय प्रीति देखाई  
 कह सीता सुनु जती गोसाई । बोलेहु बचन दुष्ट की नाई

नव रावन निज रूप देखाया । मई सभय जब नाम सुनाया ॥  
 कह सीता धरि धीरजु गाढ़ा । आइ गयउ प्रभु रहु खल ठाढ़ा ॥  
 जिमि हरिबधुहि छुब्र सम चाढ़ा । भएसि कालवस निमिनर नाढ़ा ॥  
 सुनत बचन दम्भास रिसाना । मन भट्टै चरन बंदि मुख माना ॥  
 दो०-क्रोधवन्त तब रावन लीन्हिमि रथ बैठाइ ।

चला गगनपथ आनुर भयै रथ हौंकि न जाइ ॥ २८ ॥

हा जग एक वीर रघुराया । केहिं अपराध बिभारेहु दाया ॥  
 आरति हरन सरन सुखदायक । हा रघुकुल सरोज दिननायक ॥  
 हा लछिमन तुम्हार नहिं दोषा । मो फलु पायउँ कीन्हैउँ रोमा ॥  
 बिबिध बिलाप करति बैदेही । भूरि कृपा प्रभु दूरि सनेही ॥  
 विपति मोरि को प्रभुहि मुनावा । पुरोडास चढ़ रामभ लाया ॥  
 सीता कै बिलाप मुनि भारी । भए चराचर जाँव दुखारी ॥  
 गीधराज मुनि आरत शानी । रघुकुलतिलक नारि पहिचानी ॥  
 अधम निताचर लीन्है जाई । जिमि मलेछ यस कपिला गाई ॥  
 सीते पुत्रि करसि जनि प्रामा । करिदउँ जातुधान कर नासा ॥  
 धाया क्रोधवन्त खग कैसे । छूटइ पवि परबत कहँ जैसे ॥  
 रे रे दुष्ट ठाढ़ किन होही । निर्भय चलेसिन जानेहि मोही ॥  
 आवत देखि कृतांत समाना । फिरि दमकंधर कर अनुमाना ॥  
 की मैनाक कि खगपति होई । मम बल जान माँहत पति सोई ॥  
 जाना जरठ जटापू एहा । मम कर तीरथ ॥ २९ ॥

नत गीध क्रोधातुर धावा । कह सुनु रावन मोर सिखावा ॥  
 जि जानकिहि कुसल गृह जाहू । नाहिं त अस होइहि बहुबाहू ॥  
 म रोप पावक अति घोरा । होइहि सकल सलभ कुल तोरा ॥  
 तरु न देत दसानन जोधा । तबहिं गीध धावा करि क्रोधा ॥  
 रिकच विरथ कीन्ह महि गिरा । सीतहि राखि गीध पुनि फिरा ॥  
 वोचन्ह मारि बिदारेसि देही । दंड एक भइ मुरुछा तेही ॥  
 तब सक्रोध निसिचर खिसिआना । काढ़ेसि परम कराल कृपाना ॥  
 काटेसि पंख परा खग धरनी । सुमिरि राम करि अदभुत करनी ॥  
 सीतहि जान चढ़ाइ बहोरी । चला उताइल त्रास न थोरी ॥  
 करति विलाप जाति नभ सीता । व्याध बिचस जुनु मृगी सभीता ॥  
 गिरि पर बैठे कपिन्ह निहारी । कहि हरि नाम दीन्ह पट डारी ॥  
 एहि बिधि सीतहि सो लै गयऊ । वन असोक महुँ राखत भयऊ ॥

दो०—हारि परा खल बहु विधि भय अरु प्रीति देखाइ ।

तब असोक पादप तर राखिसि जतन कराइ ॥२९(क)॥

नवाह्नपारायण, छठा विश्राम

जेहि विधि कपट कुरंग सँग धाइ चले श्रीराम ।

सो छवि सीता राखि उर रटति रहति हरिनाम ॥२९(ख)॥

रघुपति अनुजहि आवत देखी । बाहिज चिंता कीन्हि बिसेषी ॥

जनकसुता परिहरिहु अकेली । आयहु तात बचन मम पेली ॥

निसिचर निकर फिरहि वन माहीं । मम मन सीता आश्रम नाहीं ॥





दरस लागि प्रभु राखेउँ प्राना । चलन चहत अब कृपा निधाना  
 राम कहा तनु राखहु ताता । मुख मुसुकाइ कही तेहिं वाता ॥  
 जा कर नाम मरत मुख आवा । अधमउ मुकुत होइ श्रुति गावा  
 सो मम लोचन गोचर आगें । राखौं देह नाथ केहि खाँगें ॥  
 जल भरि नयन कहहिं रघुराई । तात कर्म निज तैं गति पाई ॥  
 परहित वस जिन्ह के मन माहीं । तिन्ह कहूँ जग दुर्लभ कछु नाहीं  
 तनु तजि तात जाहु मम धामा । देउँ काह तुम्ह पूरनकामा ॥

दो०—सीता हरन तात जनि कहहु पिता सन जाइ ।

जौं मैं राम त कुल सहित कहिहि दसानन आइ ॥ ३१ ॥

गीध देह तजि धरि हरि रूपा । भूषन बहु पट पीत अनूपा ॥  
 स्याम गात बिसाल भुज चारी । अस्तुति करत नयन भरि वारी

॥०—जय राम रूप अनूप निर्गुन सगुन गुन प्रेरक सही ।

दससीस बाहु प्रचंड खंडन चंड सर मंडन मही ॥

पाथोद गात सरोज मुख राजीव आयत लोचन ।

नित नौमि रामु कृपाल बाहु बिसाल भव भय मोचन ॥१॥

बलभप्रमेयमनादिमजमव्यक्तमेकमगोचर ।

गोबिंद गोपर द्वंद्वहर बिग्यानघन धरनीधर ॥

जे राम मंत्र जपंत संत अनंत जन मन रंजन ।

नित नौमि राम अकाम प्रिय कामादि खल दल गंजन ॥२॥



सापत ताड़त पक्ष कहैत। त्रिप पूज्य अस गावहि संत ॥  
 पूजिअ त्रिप सील गुन हीन। सुद न गुन भन भान प्रवीन ॥  
 कहि निज धर्म ताहि समुझावा। निज पर प्रीति देखि मन भावा  
 रखपति चरन कमल सिख नाई। गपउ भान अपनि गति पाई ॥  
 ताहि देखै गति राम उदरा। सगरी के आश्रम पगु धारा ॥  
 सगरी देखि राम गइ आए। मुनि के बचन समुझि जियु भाए  
 सरसिज लोचन गाई विमला। जटा मुकुट सिर उर बनमाला ॥  
 त्याग गौर सुंदर दीउ भाई। सगरी परी चरन लपटाई ॥  
 प्रेम भगन मुख बचन न आवा। पुनि पुनि पर सरोज सिर नावा  
 सादर जल लै चरन पखारे। पुनि सुंदर आसन बैठारे ॥  
 श्री-कंद मूल फल सुरस अति दिष्ट राम कहूँ अति ।

प्रेम सखित प्रभु आपु बारबार बखानि ॥ ३४ ॥

पानि जोरि आगे भई ठाढ़ी। प्रभुहि त्रिलोक प्रीति अति बारी  
 कहि विधि अखति करौ गुहारी। अथम जाति मैं जड़मति भारी  
 अथम ते अथम अथम अति नारी। तिनहे मई मैं मतिमंद अघारी ॥  
 कहै रखपति सुनु भागिनि गावा। मानउ एक भगति कर नावा ॥  
 जाति पाति कुल धर्म बड़ाई। धन बल परजिन गुन चतुराई ॥  
 भगति हीन नर सोइह कैसा। निजु जल गारिद देखिअ जैसा  
 नवधा भगति कहैतुं तोहि पाहौ। सावधान सुनु धर मन भाहौ ॥  
 प्रथम भगति संतन्ह कर संगा। दुसरि रति मम कथा प्रसंगा ॥



टी०-पुरेति खन ओट जल जोग न पाइअ मय ।

मायाजल न देखिऐ जैसे निर्गुन प्रथ ॥३९(क)॥

सुखी भीन सब एकदस अति आगव जल माहि ।

अथा धर्मसीलन्ह के दिन सुख संजत जाहि ॥३९(ख)॥

विकस सरसिज नाना रंगा । मयूर मुखर गुंजत नहुं भंगा ॥

गोलत जलकुवकुट कलहंसा । प्रभु विलोकि जनु करत प्रसंगा ॥

नकवाक नक खग समुदाई । देखत ननइ गरनि नाई जाई ॥

सुंदर नगा गन निग सुहाई । जल पथिक जनु जेत बोलै ॥

गल मभीप मुनिन्ह गृह छाए । चहुं दिशि कानन विटप सुहाए ॥

नयक वकुल कदंब तमाल । पाटल पनस परस रसाल ॥

नय पण्डव कुसुमिमत तन नाना । वंचरीक पटली कर गाना ॥

सीतल मंद सुगंध सुभाक । संतत बहइ मनोहर बाक ॥

कहै कहै कौकिल धुनि कराहै । सुनि रव सरस स्थान मुनि टराहै ॥

टी०-फल भारन नमि विटप सब रहे भूमि निभराइ ।

पर उपकारी पुख विधि नवाहि सुसंपति पाइ ॥ ४० ॥

देखि राम अति वीर तजवा । मजनु कीन्ह परम सुख पावा ॥

देखी सुंदर तकरार जया । बौठ अज सहेत खुराया ॥

तहुं पुनि सकल देव मुनि आए । अखिति करि निज धाम सिधाए ॥

बौठ परम प्रसन्न कपाल । कहत अजुन सन कथा रसाल ॥

निरखवत भगवतहि देखी । नारद मन भा सोन विसेयी ॥

तत्र नारद मन हरष आनि प्रभु पदं नारद नार ॥ ४२ (ख) ॥  
 पंचमस्तु मुनि मन कहेव केषा भिषु रविनाथ ।

अपर नाम उज्जान विमल वसई भगत हर ज्योति ॥ ४२ (क) ॥  
 शं०-श्रीका रानी भगति तत्र राम नाम सोई सोम ।

राम सकल नामदे ते अधिका । होइ नारय अत्र खग मन योगका  
 ज्योति प्रभु के नाम अनेका । भूति कहे अधिका एक नै एका ॥  
 तत्र नारद बोले देखाई । अस पर मागई कहे विटाई ॥  
 जन कहै कह्यु अदेय नाई मोरे । अस विस्वास तजई जनि मोरे ॥  
 कवन गव्यु आनि प्रिय मोई जगती । जो मुनिपर न सकहे जेह मागती  
 जानई मुनि जेह मोरे सुभाज । जन मन कयई कि करुई देवाक  
 देई एक पर मागई स्वामी । ज्योति जानन अंतरजामी ॥  
 सुनिह उदार सहेव रविनाथक । सुंदर आस भोग पर दायक ॥  
 नारद बोले बचन तत्र जोरि सराहे पानि ॥ ४१ ॥

शं०-नाग विष विनती करि प्रभु प्रसन्न भियु जनि ।  
 स्वगत पूछि निकट बैठे । लछिमन सादर चरन पखारे ॥  
 करत दंडवत लिप उठाई । बोले बहिन नार उर लाई ॥  
 गावत राम चरित मई जानी । प्रेम सहित बई भूति बखानी ॥  
 पर विचारि नारद कर बीना । गए जहाँ प्रभु सुख आनिना ॥  
 ऐसे प्रभुहि बिलोक्य जाई । पुनि न जानिहै अस अवसर आई  
 मोरे सग करि अंगीकार । सहेव राम नामा देख भोग ॥

अति प्रसन्न खूनायहि जानी। पुनि नारद जोले महुं गानी ॥  
 राम जगहि प्रेउ निज माया। मोहिहुं मीहि सुनहुं खुरपाया ॥  
 तब बिगहि मैं चाहउँ कान्हो। प्रभु कहि करन कौ न दीन्हो ॥  
 सुन सुनि गीहि कहउँ सहरोषा। भजहि जे मोहि तनि सकल भरोष  
 करउँ सदा निन्द कै रखवारी। जिमि गालक राखइ महतारी ॥  
 गहि सिखि गच्छ अनल अहि धाई। तहुं राखइ जननी अगगाई ॥  
 प्रहँ भएँ तेहि सुत पर माता। प्रीति करइ नहि पाछिलि गता ॥  
 मोरै प्रहँ तनय सम ग्यानी। गालक सुत सम दास अमानी ॥  
 जगहि मोर गल निज गल गही। दुहुं कहै काम कोष रिपु अही ॥  
 यह बिचारि पंडित मोहि भजही। पाएहुं ग्यान भगति नहि तजही ॥  
 दौ०-काम कोष लोभादि मरु प्रबल मोह कै धरि ।  
 निन्द महँ अति दास दुखद मायाकपी नारि ॥ ४६ ॥  
 सुन सुनि कहै पुरान अति संता। मोह बिपिन कहँ नारि बसंत ॥  
 जग तप नेम जलअय झारी। होइ शीघ्रम सोषइ सब नारी ॥  
 काम कोष मरु मत्सर भेका। इन्हहि हरगपद गरषा एका ॥  
 दुर्वासना कुंभट कहै सदा सदा सुखदाई ॥  
 धर्म सकल सरसीकहे बंदा। होइ हिम तिन्हहि दहइ सुख मंदा  
 पुनि ममता जवास बहूदाई। पछइइ नारि सिधिस रिउ पाई ॥  
 एग उलक निकर सुखकारी। नारि निविड रजनी अधिअरी ॥  
 बुधि गल सील सत्य सब मीना। गनसी सम विष कहहि प्रवीना ॥

१०-अथान्मूलं मूलं मूलं प्रमदां सर्वं द्रव्यं जानि ।

तां क्रीडन्ति निवारणं मुनिं मयि यद्वा जानि ॥ ४४ ॥

नि रक्षयति के वचनं सुहाय । मुनिं तन पुलक नयन मयि आए

कृद्वै कवन प्रभु कै आसि सीती । सेवक पर ममता अक प्रीती ॥

न भजिहै अस प्रभु भम त्यागी । ग्यान रंक नर भद्र अभागी ॥

नि सादर बोले मुनि नारद । सुनहु राम विनयान विचारद ॥

तन के लच्छन खोजीर । कहहु नाथ भव भजन भोरी ॥

मुनि मुनि संगद के गुन कहूँ । जिनहे ते मै उन्द के बस रहूँ ॥

तद्विकार जित अनव अकामा । अवल आर्कचन मुनि सुखधामा

अमृतबोध अनीह मिताभोगी । सत्यसार कवि कोविद जोगी ॥

अवधान मानद भद्रहीना । धीर धर्म गति परम प्रवीना ॥

श्लो०-गुनागार संसार दुख रहित विगत संदेह ।

तजि मम चरन सरोज प्रिय निन्द कहूँ देह न रोह ॥ ४५ ॥

निज गुन श्रवन सुनत सकुचाही । पर गुन सुनत अधिक हारवाही

मम सीतल नहि त्यागहि नीती । सरल सुमात्र सवाहै सन प्रीती ॥

जग तप शत दम संजम नेमा । गुरु गोविंद प्रिय पर प्रेमा ॥

श्रद्धा छमा मयवी दया । सुदित मम पर प्रीति अभाया ॥

विरति निवेक निनय विनयाना । बोध जगदमय वेद पुराना ॥

दंभ मान मद कारहि न काज । भूलि न देखि कुमारा पाज ॥

यागहि सुनहि सदा मम लीला । हेतु रहित परहित रत सीला ॥





(अनुपकाण्ड समाप्त)

तृतीयः सर्गः समाप्तः ।

इति श्रीमद्रामचरितमानसं सकलकलिकल्पविषयं

मासपरायण, यद्वैसर्वा विश्राम

अत्र हि राम तत्र काम मदं करहि सर्वा सततं ॥ ४६ (ख) ॥

दीप सिखा सम ज्वलि तत्र मन जनि होसि पतंग ।

राम भगति दृष्ट पावहिं विजु विराम जप जोग ॥ ४६ (क) ॥

दी०-रावणारि जसु पावन गावहिं सुगहिं जे जोग ।

जे धन्य कुलसीदास आस निहाइ जे हरि दूत दूत ॥

सिद्ध नाइ वारहिं वार चरनहिं अक्षय नारद गुरु ।

अस दीनबधु कपाल अपने भगत गुन निज सुख कहे ॥

छं०-कहि संक न सारद सेष नारद सुनत परं पंकज गहे ।

भुनि सुनु साधुद के गुन जेते । कहि न सकहि सारद भुनि जेते ॥

\* रामचरितमानस \*

४१०



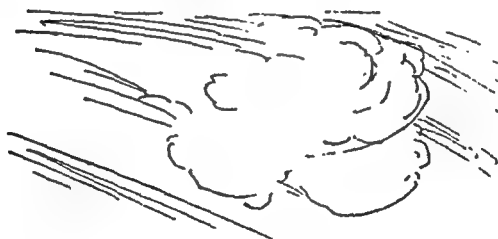
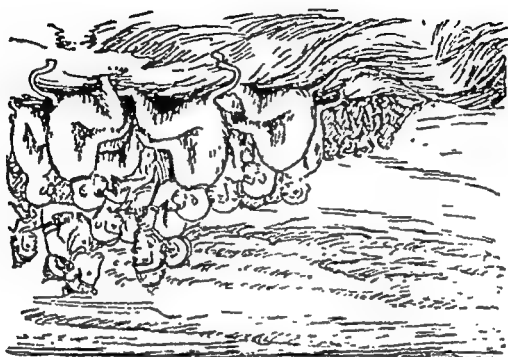
श्रीवेंकटेश्वर

श्रीवेंकटेश्वर

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ डोसक हरे एके भक्त रहे  
 है कवि सग रंगु डसई ॥

अस कवि लवनिषु तज जाई ।  
 डोसक रंग विमानल डोक मर



समुद्रतटपर—(सीताजी खोज)

श्रीमच्छास्त्रसिद्धिर्द्वयैः सर्वत्र ।  
 प्रमाणान्तरसिद्धिर्द्वयैः कालमलम्बवत्तु चान्यत्र ।  
 सीतान्वेषणतत्परा पथिगता भक्तिपदा तै हि नः ॥ १ ॥  
 सायामात्रपक्षिणां श्रवणं सर्वत्र हि ।  
 श्रीमच्छास्त्रं वरपतिवत् श्रीवत्तु तैः श्रवणपदादिभिः ।  
 श्रीमच्छास्त्रं वरपतिवत् श्रीवत्तु तैः श्रवणपदादिभिः ।

श्रीक

( श्रीकृष्णार्कः )

वत्तु श्रीकृष्ण

—\*—

श्रीमच्छास्त्रसिद्धिर्द्वयैः

श्रीवत्तु श्रीकृष्णार्कः वत्तु

श्रीवत्तु श्रीकृष्णार्कः वत्तु

संसारामयभवनं सुखकरं श्रीजानकीजीवनं

धन्यास्ते कतिनः पितृनि सततं श्रीरामनामास्तमम् ॥ २ ॥

सौ-मुक्ति जन्म माहे जानि ज्ञान खानि अद्य होनिकर ।

जहै बस संसु भवनि सो कासी सेइअ कस न ॥

जगत सकल सुरहुंद बिषम गरज जेहि पान किय ।

तेहि न भजिस मन मंद को कृपाल संकर सिरिस ॥

आगे चले बहिरि रघुराया । रिष्यमूक पर्वत निअराया ॥  
तहूँ रहै सचिव सहित सुयोग । आवत देखि अतुल बल सीमा ॥  
अति सधीत कहसुनि हनुमान । पुरुष जगल बल रूप निधाना ॥  
धरि बहूँ रूप देखि तैं जाई । कहैसु जानि जिय सयन बुझाई ॥  
धरि रूप धरि कपि तहूँ गयक । माय नाइ पूछत अस भयक ॥  
को तुम्ह स्यामल गौर सरीरा । छत्रा रूप फिरहुँ बन वीरा ॥  
कठिन भूमि कोमल पद गामी । कवन हेतु निचरहुँ बन खामी ॥  
सुहृल मनीहरे सुंदर गाता । सहत हुंसह बन आतप जाता ॥  
को तुम्ह दीनि देव सहूँ कोक । नर नारायण की तुम्ह दीक ॥

दो-जग कारन वारन भव भजन धरणी भार ।

को तुम्ह आखिल भुवन पति लीन्ह मज्ज अवतार ॥ १ ॥

कोसलेस दसरथ के जाए । हेम पितृ वचन मानि जन आए ॥

नाम राम लछिमन दोउ भाई । संग नारि सुकुमारि सुहाई ॥

दीपि पगजित पति अजुक्ता । इत्यु द्यौ गीती सज सुता ॥

ॐ शेषक सवराज कथ साहि भावत ॥ ३ ॥  
दी०-सो अनन्य भाऊ आसि मात न दहइ कुसुम ।

समदरसी मोहि कहइ सय कोऊ । शेषक प्रिय अनन्यानि सोक ॥

सुनु कवि विषु भानवि जनि कला । तें सम प्रिय लखिमान वेंदुना ॥

तय सुगति उठार उर लजा । निज लीजन सब सीनि बुझना ॥

अस कहि परउ नरन अकुलहि । निज ननु प्रगटि प्रीति उर छारि ॥

शेषक सुत पति मातु भयो । दहइ अनेन नरन प्रभु पाल ॥

ता नर ॐ सुवीर दीहइ । जानउ नहि कहइ भजन उपहि ॥

नाम जेन तय माया मोह । सो निजतर वुंदाहि छेदा ॥

उदरि नाथ नहि अग्रज मोहि । शेषक प्रगटि परे जनि मोहि ॥

पुनि प्रभु मोहि विचारत दीन भयु भगवान ॥ २ ॥

दी०-एऊ ॐ मंद मोहयस कटिल इत्यन अग्रज ।

तय माया ननु निजुं भुलना । ता वें ॐ मोहि प्रभु पडिना ॥

भोर न्याउ ॐ पूछा भइ । वुंदा पूछइ कस नर की नहि ॥

पुनि श्रीगुरु पर अखित कीनही । इत्य इत्य निज नाथहि चोरी ॥

पुलकित तन भुज आन न गजना । देवत किर नरु के रजना ॥

प्रभु पडिनानि परउ मोहि नरना । नो भुज उभा जाइ मोहि भरना ॥

अग्रज चोत कदा देस गहि । कहइ प्रिय निज कथा बुझाहि ॥

इही द्यौ विनिज नहि । प्रिय पडहि देस लोअत वही ॥

४१५ \* चिकित्साशास्त्र \*

नाथ सैल पर कपिपति रहै। सो सुग्रीव दास तब अहै  
 तेहि सन नाथ मयजी कीजे। दीन जानि तेहि अमय करीजे  
 सो सीता कर खोज करइहि। जहँ तहँ मरकट कोटि पठाइहि  
 एहि विधि सकल कथा समझाई। लिपि दृष्टौ जन पीठ चढ़ाई  
 जय सुग्रीव राम कहूँ देखा। अतिस्वयं जन्म धन्य करि लेखा  
 सादर मिलेउ नइ पद माया। भेटेउ अजुज सहित खिनाया  
 कपि कर मन विचार एहि सीता। करिइहि विधि सो सन ए प्रीति।  
 द्रो-तब हनुमंत उभय दिशि की सब कथा सुनाइ।

पावक साखी देइ करि जोसी प्रीति दृढ़ाई ॥ ४ ॥  
 कीन्ह प्रीति कछु बीच न राखा। लछिमन राम चरित सब भाष  
 कहै सुग्रीव नयन भरी। मिलिहि नाथ मिथिलसकुमासी।  
 भोजन्ह सहित डहाँ एक बारा। बैठ रहै सँ करत विचारा।  
 गगन पंथ देखी सँ जाग। परबस परी बहृत बिछपला।  
 राम राम हो राम पुकारी। हमहि देखि दीन्हैउ पट डारी॥  
 मागा राम व्रत तेहि दीन्हा। पट उर लाइ सोच अति कीन्हा॥  
 कहै सुग्रीव सुनइ खिबीरा। तजइ सोच मन आनइ धीरा॥  
 सब प्रकार करिइहूँ सेवकाई। जेहि विधि मिलिहि जानकी आई  
 द्रो-सखा वचन सुनि हरषे कृपासिधु बलसीव।  
 कारन कवन बसइ वन मोहि कहइ सुग्रीव ॥ ५ ॥  
 नाथ बलि अफ सँ हो भाई। प्रीति रही कछु नरनि न जाई॥

देव देव मन सक न पद । यत् अनुमान सदा हित करे ॥  
 कुप्य निवारि सुपय यत्नाना । गुन प्राप्ते अकृतिनिहृतिना ॥  
 निन्द कं अर्थ नति सदेव न आर्ह । ते सदा कर देति कल निगदे  
 निज देव निदि यम यत्न करि जाग । निजक देव यत्न सभाना  
 ते न निज देव देहि देवनि । निन्दे निन्दकन पाक भानि ॥

मम दद सभानात यत् न उपाधि मान ॥ ३ ॥

श्री०-सुख सुधास माहिदेव आदिहि पदार्थ मान ।

पुनि वेक देव दीनदयाला । पदार्थ उदा दे मुजा विजाला ॥  
 देव सदा यत्न आगत नदी । तदति सभान पद मन माही ॥  
 लक मय यत्नानि कृतात् । सकल भुवन में निन्दे विजाला ॥  
 रिपु यम मोहि नानिध आनि नानि । देवि लोकोवि सदेव अर नानि  
 पाली लोहि माहि यत्न आग । दीव मोहि निव नद यत्नाना ॥  
 मोहिदेव पुर देवा निव सदा । दीनदेव मोहि यत्न यत्नाना ॥  
 मोहि देव मोहि मोहि मोहि आर्ह । विजाल देव लो मोहिदेव पद ॥  
 मोहि विजाल लो देव देव । निजदी नदिम पार लो मोहि ॥  
 पारिदेव मोहि एक पदयत्न । मोहि आर्हा यत्न मोहिदेव मोहि ॥  
 निजिय मुदी देव मोहि । यत्न मोहि मोहि कदा मुदाहि ॥  
 यत्न मोहि मोहि मोहि मोहि । मोहि मोहि यत्न यत्नाना ॥  
 यत्न मोहि पुर मोहि पुर । यत्न मोहि मोहि यत्न यत्नाना ॥  
 यत्न मोहि मोहि मोहि मोहि । यत्न मोहि मोहि यत्न यत्नाना ॥



विपति काल कर सतगुन नेहा । श्रुति कह संत मित्र गुन एहा ॥  
 आग कह मूर्ख बचन बनावै । पाछे अनहित मन कुटिलहै ॥  
 जा कर चित आहै गति सम भाई । अस कृमिब परिहरेहै भलहै ॥  
 सेवक सठ दूष कपन केनारी । कपटी मित्र सँल सम चारी ॥  
 सखा सोच लगानहै बल मोर । सब विधि घट्य काज सँ तोर ॥  
 कह सुग्रीव सुनहै रघुबीरा । गालि महेबल अति रनधोरा ॥  
 दुईद्विग अस्त्रि बाल देखराए । विनु प्रयास रघुनाथ ठहराए ॥  
 देखि अभित बल बाढ़ी प्रीति । गालि बधव डेन्ह भइ परतीति ॥  
 बार बार नावइ पद सीसा । प्रभुहि जानि मन हरय कपीसा ॥  
 उज्जवा त्याग बचन तय गेला । नाथ क्यौ मन भयउ अलोल ॥  
 सुख संपति परिवार बड़ाई । सब परिहरि करिहउ सेवकाई ॥  
 ए सब राम भगति के बाधक । कहहै संत तब पद अवराधक ॥  
 सब भिन्न सुख दुख जग माहौ । माया केत परमारथ नाहौ ॥  
 बालि परम हित जासु प्रसादा । मिलेहु राम वृन्द समन विषादा ॥  
 सपन जेहि मन होइ लराई । जाग समुझत मन सकुचाई ॥  
 अथ प्रभु कृपा करहु एहि भौती । सब तजि भजन करौ दिन राती ॥  
 सुनि विरामा संजित कपिबानी । बोलि विहँसि राम धनुषानी ॥  
 जो कह्यु कहैहै सत्य सब सोई । सखा बचन सम सुषा न होई ॥  
 नट मरकट देव सगहै नचावत । राम खोसि बेट अस गावत ॥  
 लै सुग्रीव संग रघुनाथा । चले चाप बाधक गहि होथा ॥  
 तब रघुपति सुग्रीव पठाया । गजोसि जाइ निकट बल पाया ॥

১১৪

मैं बैसी सुग्रीव प्रियारा । अवगुन कवन नाथ मोहि मार ॥  
 अजगदर्थ भगिनी सुतनारी । सुत सठ कन्या सम ए चारी ॥  
 इन्हहि कुटहि बिलोकइ जोई । ताहि वधे कछु पण न होई ॥  
 मूर्ख तोहि अतिसय अपिममाना । नारि सिखावन करसि न काना  
 सम भुज बल आशित होइ जानी । मार चढेसि अवम अपिममानी ॥  
 द्रो०-सुनई राम स्वामी सन बल न चाहि सी मोरि ।  
 प्रभु अजहूँ मैं पापी अब काल गति तोरि ॥ ९ ॥  
 सुनत राम अति कोमल गानी । गालि सीस परसेउ निज पानी ॥  
 अचल करौ तनु राखई प्राना । गालि कहा सुत कृपानिधाना ॥  
 जनम जनम मुनि जतनु कराही । अब राम कहि आवत नहि ॥  
 जासु नाम बल सँकर कासी । देत सबहि सम गति अविनासी ॥  
 सम लोचन गोचर सोइ आवा । बहुरि कि प्रभु अस बनिहि जनना  
 छं-सी नयन गोचर जासु गुन निव बेति कहि भूति गावही ।  
 जति पवन मन गो निरस करि गुनि द्यान कबहुँक पावही ॥  
 मोहि जानि अति अपिममान बस प्रभु कहेउ राखि सरीरही ।  
 अस कवन सठ हेरि काटि सुरत बारी करिहि वधरही ॥ १॥  
 अब नाथ करि कल्या बिलोकइ हेई जो वर मागऊ ।  
 ओहि जौनि जन्मौ कसु बस वहुँ राम पद अविरोगाऊ ॥  
 यह तनय सम सम विनय बल कल्यानप्रद प्रभु लीजिये ।  
 गहि बौह सुर वर चाह आपन दास अंगद कीजिये ॥ २॥



मैं कैसी सुग्रीव प्रिया। अव्युन कवन नाय मोहि मार।  
 अनुजगदुर्ध मरिनी। सुन सठ कन्या सम ए चारी॥  
 इन्हहि कुट्टहि बिलोकइ जोई। ताहि बधुं कछु पाप न होई॥  
 मूर्छं ताहि अतिसय अपिममान। नारि सिखावन करसि न काना  
 सम मुन बल आश्रित होहि जानी। मार चहैसि अवम अपिमानी॥  
 दौ०-सुनहुँ राम स्वामी सन बल न चावैसी मोरि ।

प्रभु अजहूँ मैं पापी अंत काल गति होरि ॥ ९ ॥  
 सुनत राम अति कोमल बानी। बोलि सीस परसेउ निज पानी॥  
 अचल करौ तनु सोखहु प्रान। बोलि कहे सुन कृपानिधान॥  
 जन्म जन्म मुनि जतनु कराहै। अंत राम कहि आपत नहौ॥  
 जासु नाम बल संकर कासी। देत सबहि सम गति अविनासी॥  
 सम लेवन गोचर सोइ आवा। बहुरि कि प्रभु अस बनिहै नाना  
 छं-सो नयन गोचर जासु गुन निव बेनि कहि श्रुति गावहौ ।  
 जित पवन मन गो निरस करि गुनि ध्यान कबहुँक पावहौ ॥  
 मोहि जानि अति अपिममान बस प्रभु कहेउ राखु सरीरहौ ।  
 अस कवन सठ हठि काटि सुरत बारि करिहै बरवहौ ॥ १॥  
 अब नाय करि कहेना बिलोकहुँ देहुँ जो बर मागहुँ ।  
 जोहि जानि जन्मौ कर्म बस वहुँ राम पद अचरणाहुँ ॥  
 यह नयन सम सम विनय बल कल्याणमद प्रभु लीजिहै ।  
 गहि बूहै सुर नर गहै आपन दास अंगद कीजिहै ॥ २॥

पुनि सुधीवहि लीन्ह बोलाई। यह प्रक  
 जानतहैं अस प्रभु परिहरै। कहै न विपति ज  
 सोइ सुधीव कीन्ह कथिरक। अति कथाल स्वामी सुभक्त ॥  
 बालि बास व्यकुल दिन राती। तन यह प्रन चित्तु जर छाती ॥  
 सुर नर मुनि सब कै यह रीती। स्वरय लीनि करहि सब प्रीती ॥  
 उभा राम सम हित जग माहीं। गुरपितु मातु बंधु प्रभु माहीं ॥  
 राज दीन्ह सुधीव कहैं भगव कहैं जगदाज ॥ ११ ॥

टी०-लखिमन गुरत बोलाए प्रजन विष समाज ।  
 स्वर्णपति चरन नाइ करि माया। चले सकल प्रसित रघुनाथा ॥  
 राम कहे अजुगहि समझाई। राज देह सुधीवहि जाई ॥  
 तब सुधीवहि आपस दीन्ह। मृतक कर्म विधिवत सब कीन्ह ॥  
 उभा दास जोपित की नाई। सगहि नचावत राम गोसाई ॥  
 उपजा ग्यान चरन तब लगनी। लीन्हैसि परम भगति जर मागी ॥  
 प्रगट सो तब तब आग। सोव। जीव नित्य कहि लीनि वृन्द रोवा ॥  
 छिति जल पवक गगन समीरा। पंच रचित अति अधम सरिरी ॥  
 तारा विकल देखि रघुराया। दीन्ह ग्यान हरि लीन्है माया ॥  
 नाना विधि विजय कर तारा। छुटै कैस न देह सुभारा ॥  
 राम बालि निज धाम पठावा। नगर लीग सब व्यकुल धावा ॥  
 सुमन माल जामि कंठे निरत न जानई नाग ॥ १० ॥

टी०-राम चरन दृढ़ प्रीति करि बालि कीन्ह तब गंगा ।

कहे प्रभु सुनु सुधीन दरीस। पुर न जाउँ दस चारि बरीस।।  
 गत श्रीपद जग्या रिनु आहैं। सहितहुँ निकट सैल पर छाहैं॥  
 अंगद सहित करहुँ तुम्ह राज्ञ। संतत हृदय धरहुँ मम काज॥  
 जग सुधीन भवन फिरि आए। राम प्रवरगन गिरि पर छाए॥  
 टी०-प्रथमहिं देवन्ह गिरि गृहे। राजेव रक्षित बनह ।

राम कृपानिधि कछु दिन बास करहिं मे आह ॥ १२ ॥  
 सुंदर मन कुसुमित आनि सोभा। गुंजत मधुप निकर मधु जोभा॥  
 कंद मूल फल पत्र सुहाए। मए चहुँत जग ते प्रभु आए॥  
 देखि मनोहर सैल अनूप। रहे तहुँ अनुज सहित सुरभूष॥  
 मधुकर जग मृग तनु धरि देवा। करहिं सिद्ध मुनि प्रभु कै सेवा॥  
 मंगलरूप भयउ मन नय ते। कीन्ह निवास समापति जग ते॥  
 फटिक सिल आनि सुभ सुहाहैं। सुख आसीन तहाँ दौ भाहैं॥  
 कहेत अनुज मन कथा अनेका। भगति विरति प्रपनीति निवेका॥  
 बरपा काल भेष नय छाए। गरजत जगत् परम सुहाए॥  
 टी०-लछिमन देखि सोर गन नाचत आनिद पेलि ।

गृही विरति पर हरेष जस विजुभात कहूँ देखि ॥ १३ ॥  
 धन धमद नय गरजत धोरा। प्रिया हैन हरपत मन सोरा॥  
 दामिनि दमक रहे न जन माहीं। खल कै प्रीति जया फिर नाहीं॥  
 बरपाहिं जलद भूमि निअसाए। जया नवाहिं बुध विद्या पाए॥  
 बूढ़ अघात सहहिं गिरि कैसै। खल के वचन सुन सह बैसै॥

छुद नदी मरि चली तीराई । जस योरेई धन खल इतराई ॥  
 भूमि परत भा टगर पानी । जनु जीवहि माया लपटानी ॥  
 समिटि समिटि जल मरहि तलावा । जामि सदगुन सजन पाई आवा  
 सरिता जल जलानिधि मरू जाई । होइ अचल जामि जिव होरि पाई  
 शो-होरि भूमि तेन सकल समुझि परहि नहि पंथ ।

जामि पावड बाद ते गुप्त होहि सद्रंभ ॥ १४ ॥

दाहुर धुनि चहुँ दिसा सुहाई । बेट पठहि जनु बट समुदाई ॥  
 नव पण्डव भए बिटप अनेका । साधक मन जस मिले बिबेका ॥  
 अर्क जवास पात विनु मयक । जस सुरज खल उद्यम गयक ॥  
 खोजत कतहुँ मिलइ नहि धुरी । करइ कोष जामि धरमहि दुरी ॥

ससि संपन्न सोह माहे कसी । उपकारी कै संपति बौसी ॥

निसि तम धन खद्योत विराजा । जनु दंभन कर मिळा समाजा ॥

महाब्रह्मि चलि फेटि किआरी । जामि सुतंभ भए निगरहि नारी ॥

कृपी निरावहि चतुर लिसंगी । जामि बुध तजहि मोह मद माना ॥

देविअत चक्रवाक खग नारी । कलिहि पाइ जामि धर्म पराई ॥

अगर भयपड तेन नहि जाभा । जामि हरिजन हिम उषन न कामा ॥

विविध जंतु सकल माहे आजा । प्रजा गार्ह जामि पाइ सुरजा ॥

जाई तहँ रहे पथिक थकि नाना । जामि इंदिय गन उपजै नाना ॥

शो-कबहुँ प्रवाल बह माहेस जाई तहँ मेघ बिजहि ।

जामि कपल के उपजै केल सदा ॥



कथहुँ दिवस महुँ निविहं वस कवहुँक प्रगट पवंग ।

बिनसहुँ उपजहुँ ग्यान जिस पाहुँ केषंग सुसंग ॥ १५ (ख) ॥

अरुग निगत सरद रिनु आहुँ । लखिमन देखहुँ परम सुहृदहुँ ॥

फूलै कास सकल महिँ छाहुँ । जनु बरपाँ कृत प्रगट उठहुँ ॥

उदित अगसि पंथ जल सोपा । जिस लोमहिँ सोषहुँ सर्वेपा ॥

सरिता सर निमूल जल सोहा । संत हृदय जस गत मर मोहा ॥

रस रस सुख सरित सर पानी । ममता त्याग करिहुँ जिस ग्यानी ॥

जानि सरद रिनु खंजन आए । पाहुँ समग्र जिस सुकेत सुहाए ॥

एक न रेनु सोहो असि धरनी । नीति निपुन जेप कै जसि करनी ॥

जल संकोच निकल महुँ मीना । अखिष कुटुंबी जिस धनहीना ॥

निपु धन निमूल सोहो अकासा । हरिजन जेव परिहरि सब आसा ॥

कहुँ कहुँ बृहि सारदी थरी । कोउ एक पव भगति जिस मरी ॥

दो०-चले हरहि बलि नगर जेप लपस वनिक निखारि ।

जिसि हरि भगति पाहुँ भ्रम बजाहुँ आशमी चारि ॥ १६ ।

सुखी मीन जे नीर अगाथा । जिसि हरि सरन न एकउ गथा ।  
 फूलै कमल सोहो सर कैसा । निगुन ब्रह्म सगुन भए वैसा ।  
 गुंजत मधुकर मुखर अनर्पा । सुंदर खग ख गाना क्या ।  
 चक्रवाक मन दुख निशि पेली । जिसि दुर्जन पर संपति देखी ।  
 चातक रत जेपा अति ओही । जिसि सुख लहेइ न संकाइही ।  
 सरदाज निशि सोसि अपहरहुँ । संत दरस जिसि पावक दरहुँ ।

तव हेतुमत बोलाए दूता। सब कर करि सममान बहता ॥  
 कहै पाख महुँ आवन जोई। मोरे कर ताकर नव होई ॥  
 अगु माखतसुत दूत समूह। पठवहुँ जहँ तहँ गानर जहँ ॥  
 सुनि सुगौं परम मय माना। विषयुँ मोरे हरि लीनेउ ग्याना ॥  
 निकट जाइ चरनहि सिख नावा। चारिहँ निधि तेहि कहि समुझावा ॥  
 इहौ पवनसुत इंदयुँ निचारा। राम काज सुगौं विचारा ॥  
 मय देखाइ ले आवहुँ ताल सखा सुगौं ॥ १८ ॥

दो०-तव अगुजहि समुझावा खपति करेना सीव ।

लछिमन कोषवत प्रभु जाना। धनुष चढ़ाइ गहे कर गाना ॥  
 जानहि यह चरित्र सुनि ग्यानी। जिनहँ खीर चरन रति मानी ॥  
 जाहि कपूँ छुटहि मर मोहा। ता कहूँ उमा कि सपनेहुँ कोहा ॥  
 जहि सायक मारा मैं बाली। तेहि सर दूतौ भुं कहे काली ॥  
 सुगौं सुधि मोरि विचारा। एवा राज कोष पुर नारी ॥  
 कतहुँ रहउ जाँ जीवति होई। ताल जतन करि आनउ सोई ॥  
 एक बार कैसेहुँ सुधि जानौ। कालहुँ जातिनिमिष महुँ आनौ ॥  
 बरपा ताल निमल रिउ आइ। सुधि न ताल सीता कै पाइ ॥  
 सदगुर मिल आहि जामि संसय अस समुदाइ ॥ १० ॥

दो०-भूमि जीव संकुल रहे गण सरद रिउ पाइ ।

मसक दंस बीते हिम जासा। जामि दिज द्रोह किछु कुल नासा ॥  
 देखि इंदु चकोर समुदाइ। चितवहि जामि हरिजन हरि पाइ ॥

\* किफायतकाण्ड \*

कज्जू दिवस महुँ निबिड तम कवडूँक प्रगट पतंग ।

बिनसइ उपजइ यान जिमि पाइ कुसंग सुखंग ॥ १५ (ख) ॥

अरग निगत सरद रिउ आइ । लछिमन देखइ परम सुहाइ ॥

फुलै कास सकल महि छाई । जनु अरघाँ केत प्रगट जुहाई ॥

उदित अगस्ति पंथ जल सोपा । जिमि लोमहि सोपइ सुतोपा ॥

सरिता सर निर्मल जल सोहा । संत हृदय जस गत मद मोहा ॥

रसरस सख सति सर पानी । समता त्याग करहि जिमि यानी ॥

जानि सरद रिउ खंजन आप । पाइ समय जिमि सुकेत सुहाए ॥

एक न रेनु सोह असि धरनी । नीति निपुन नृप कै बसि करनी ॥

जल संकाच निकल महुँ मीना । अविष कुटुंबी जिमि धनहीना ॥

विनु वन निर्मल सोह अकास । हरिजन देव परिहरि सय आस ॥

कहुँ कहुँ बहि सरदी थरी । कोउ एक पाव मगति जिमि मारी ॥

दो०—चले हरि तनि नगर नृप तापस बनि क भिखारि ।

जिमि हरि मगति पाइ अम तजाइ आशमी चारि ॥ १६ ॥

सुखी मीन जे नीर अगाधा । जिमि हरि सरन न एकउ बाधा ॥

फुलै कमल सोह सर कैसा । निर्गुन ब्रह्म समन महुँ जैसा ॥

गुंजत मधुकर मुखर अनृपा । सुंदर लग राव नाना रूपा ॥

चक्रवाक मन दुख निषि पेखी । जिमि दुर्जन पर सपति देखी ॥

चातक रटत गेया अति ओही । जिमि सुख लहइ न संकटोही ॥

सरदातप निषि ससि अपहरइ । संत दरस जिमि पातक टरइ ॥

देहि इह चकोर समुदाह । शिवहि जिय हरिजन हरि पाई ॥  
मरक देस गीते हिम गंगा । जिय द्विज द्रोह किए कुल नाश ॥

सदगुर मिल जाई जिय संसय अस समुदाह ॥ १० ॥

यस्या गत निर्मल रिउ आई । सुधि न ताल सीता कै पाई ॥  
एक बार कैसेहुँ सुधि जानी । कालहुँ जीति निमिष महुँ आनी ॥  
कतहुँ रदउ जाँ जायति होई । ताल जलन करि आनउ सोई ॥  
सुधावहुँ सुधि मोरि विभारी । पाया राज कोष पुर गारी ॥  
जोहि बापक मारा मैं गाली । तेहि सर हरीं मूढ कहै काली ॥  
जाहु कपूँ दूटहि मर मोहा । ता कहूँ उमा कि सपनहुँ कोहा ॥  
जानहि यह चरित्र सुनि यानी । जिनह खेचीर चरन रति मानी ॥

लहिमन कोषवत प्रभु जाना । धन्य चढ़ाइ गेहे कर याना ॥

दो०-तब अजुगहि समुझावा रघुपति कहेना संघ ।

अस देखाइ है आवहुँ ताल सखा सुधाव ॥ १८ ॥

इहौ पवनमुख इंदयुँ विचारा । राम काज सुधीव विचारा ॥  
निकट जाइ चरननिहै छिह नाया । चारिहुँ निधि तेहि कहि समुझावा  
सुनि सुधीव परम भय माना । विषयुँ मोर हरि लीन्हैउ याना ॥  
अन भावतखत हूँ समुदाह । पठवहुँ जहूँ तहै जानर जहूँ ॥  
कहहुँ पाव महुँ आवन जोई । मोर कर ताकर भय होई ॥  
तब हनुमत बोलाए हूँ । सब कर करि समान बहोता ॥

कवहुँ दिवस महुँ निविड तम कबहुँक प्रगट पवंग ।

बिनसइ उपजइ म्मान जिस पाइ कुसंग सुसंग ॥ १५ (ख) ॥  
 बरषा निगत सरद रिउ अहं । लजिमान देखइ परम सुहइ ॥  
 फुलै कास सकल महि छाई । जनु वरषा केत प्रगट बुढ़इ ॥  
 उदित अगसि पंथ जल सोपा । जिमि लेमहि सोपइ संतोषा ॥  
 सरिता सर निर्मल जल सोहा । संत हृदय जस गत मद मोहा ॥  
 रस रस सुख सरित सर पानी । ममता त्याग करइ जिमि म्मानी ॥  
 जानि सरद रिउ खंजन आए । पाइ समय जिमि सुकृत सुहाए ॥  
 एक न रेनु सोहै आस धरनी । नीति निपुन नृप कै जसि करनी ॥  
 जल संकोच निक्कल महुँ मीना । अयुध कुटंगी जिमि धनहीना ॥  
 विनु वन निर्मल सोहै अकासा । हरिजन देव परिहरि सब आसा ॥  
 कहूँ कहूँ बहिर सरदी धोरी । कोउ एक पव भगति जिमि मोरी ॥

दो०—बड़े हरषि तजि नगर नृप तापस धनिक मिछारि ।

जिमि हरि भगति पाइ भम तजहि आभसी चारि ॥ १६ ॥  
 सुखी मीन जे नीर अगाधा । जिमि हरि सरन न एकउ थाथा ॥  
 फुलै कमल सोहै सर कैसा । निर्गुन ब्रह्म सगुन भए जैसा ॥  
 गुंजत मधुकर मुखर अनूपा । सुंदर खग रत्न नाना रूपा ॥  
 चक्रवाक मन दुख निधि पेली । जिमि दुर्जन पर संपति देखी ॥  
 चातक रतन पेषा अति ओही । जिमि सुख लहइ न संकराही ॥  
 सरदातप निशि सति अपहरइ । संत दरस जिमि पातक टरइ ॥

तब हनुमत बोलाए दूता । सब कर करि सममान बहता ॥  
 कहै पाव महुँ आवन जाई । मोर कर ताकर यध होई ॥  
 अम् मावतसुत दूत समूह । पठवहु जहँ तहँ जानर जहँ ॥  
 सुनि सुधीव परम भय माना । विषय मोर हरि लीन्है उभाना ॥  
 निकट जाइ चरनहि सिख नावा । चारिहु सिध तेहि कहि समुझावा ॥  
 इहौ पवनसुत हँदयुँ विचारा । राम काज सुधीव विचारा ॥  
 भय देखाइ ले आवहु तात सखा सुधीव ॥ १८ ॥

टी०-तब अजुजहि समुझावा खपति करेना सीव ।

लछिमन कोषवत प्रभु जाना । धनुष चढ़ाइ गहे कर जाना ॥  
 जानहि यह चरित्र सुनि यानी । जन्ह खबीर चरन राति मानी ॥  
 जाहि कपू छूटहि मर मोहा । ता कहूँ उमा कि सपनहुँ कोहा ॥  
 जाहि सायक मारा मैं बाली । तेहि सर हतौँ मूँ कहूँ काली ॥  
 सुधीवहुँ सुधि मोरि विचारी । पावा राज कोस पुर नारी ॥  
 कतहुँ रहउ जाँ जीवति होई । तात जतन करि आनउ सोई ॥  
 एक बार कैसेहुँ सुधि जानौ । कालहुँ जीति निमिष महुँ आनौ ॥  
 बरषा गत निर्मल रिउ आई । सुधि न तात सीता कै पाई ॥  
 सदगुर मिले जाहिं जिमि संख्य अस समुदाई ॥ १९ ॥

टी०-भूमि जीव संकुल रहे गए सरद रिउ पाई ।

मसक दंस गीते हिम जासा । जिमि द्विज द्रोह किछु कुल नासा ॥  
 देखि इंदु चकोर समुदाई । निववाहिं जिमि हरिजन हरि पाई ॥

\* किशिकायाकाण्ड \*

पुनः अक प्राति नीति देख्योई । चले सकल चरनहि सिर नाई ॥  
हि अवसर लछिमन पुर आए । कोष देखि जई तई कपि धाप ॥

१०-यमुष चढ़ाई कहे तब जाहि करतु पुर छार ।  
व्याकुल नगर देखि तब आयउ बालिकुमार ॥ १९ ॥

चरन नाई सिर निनली कीन्दी । लछिमन अपय गूँह तेहि दीन्दी ॥  
कोषवत लछिमन सुनि काना । कहे कपीस अति मय अकुलाना ॥  
सुनु हनुमंत संग है तास । करि निनली समुझाउ कुमार ॥  
सुनु हनुमंत संग है तास । चरन गूँह प्रभु मुजस बखाना ॥  
तास सहित जाई हनुमाना । चरन गूँह प्रभु मुजस बखाना ॥  
करि निनली मंदिर है आए । चरन पवारि पल्ला बैठए ॥  
तब कपीस चरनहि सिर नागा । गहि भुज लछिमन कंठ लगावा ॥  
नाथ निपय सम मद कछु नाहीं । सुनि मन मोह करइ छन भाहीं ॥  
सुनत निनील बचन सुख पावा । लछिमन तेहि बहू निधि समुझावा ॥  
पवनतनय सब कथा सुनाई । जैहि निधि गए दूत समुदाई ॥  
२०-देखि चले सुमीव तब अंगदादि कपि साथ ।  
रामाजि आन कपि आए जई देखनाथ ॥ २० ॥  
नाई चरन सिर कहे कर जोरी । नाथ मोहि कछु नाहिन खोरी  
अतिसय प्रबल देव तब माया । छूटइ राम करई जो दया  
निपय बस्य सुर नर मुनि खामा । मू पावैर पसु कपि अति कामा  
नारि नयन सर जाहिन लगाना । घोर कोष तम निधि जो जाना  
जोय पाव जैहि गर न बुधाया । सो नर उग्रह समान खरपा

तजि माया सेइअ परलोका । मिटहि सकल भवसंभव सोका ॥  
 मागु पाति सेइअ उर आगी । खासिहि सब माग छल त्यागी ॥  
 मन कम भवन सो जतन निचरिहू । रामचंद्र कर काख सुवारिहू ॥  
 सकल सुमट मिळि दृष्टि न जाई । सीता सुधि पूछिहू सब कारिहू ॥  
 सुनहु नील अंगद हेनुमान । जामवंत मतिवीर सुजाना ॥  
 तब सुग्रीव बोल्यो अंगद नल हेनुमत ॥ २२ ॥  
 दो०-वचन सुनत सब वानर जाई तहू चले पुरंत ।

अर्थाथ मति जो निज सुधि पाए । आवइ बनिहि सो मोहि मराए ॥  
 जनकसुता कहूँ खोजि जाई । मास दिवस महुँ आएहुँ माई ॥  
 राम काख अक मोर निहोरा । वानर जंघ जाई चहुँ ओरा ॥  
 ठाई तहूँ तहूँ आयसुँ पाई । कह सुग्रीव सबहि समझाई ॥  
 यह कह्यो नहि प्रस कइ अधिकारि । निस्वरूप व्यापक खरिगारि ॥  
 अस कपि एक न सेना माही । राम कुसल जेहि पूछी नारी ॥  
 आइ राम पद नावहि माया । निरखि यदुन सब होहि सनाया ॥  
 वानर कटक उमा भैं देखी । सो मूरख जो करन चह देखी ॥  
 नाना वरन सकल दिशि देखिअ कोस वरुथ ॥ २१ ॥

दो०-एहि विधि होत वतकही आपु वानर जंघ ।  
 अथ सोइ जतनु करहुँ मन लाई । जेहि विधि सीता कै सुधि पाई ॥  
 तब खपति बोल मुसुकाई । पुनह प्रिय मोहि मरत जियि माई ॥  
 यह गुन साधन ते नहि होई । पुनही क्यूँ पाव कोइ कोई ॥





अस कहि लवनिधि तट जाई। वैठे कपि सग मरु डसई ॥  
 हम सीता कै सुधि लीन्हें विना। नहि जैहैं बुझाज प्रीति ॥  
 उन एक सोच मान होइ रहे। पुनि अस नवन करत सग भए ॥  
 अंगद नवन सुनत कपि गोरा। बोलि न सकहि नयन बह नीरा ॥  
 पुनि पुनि अंगद कह सग पाहौ। मरन भयउ कछु संसय नाहौ ॥  
 पिता बध पर मारत मोक्षी। राखा राम निहोर न ओक्षी ॥  
 इहौ न सुधि सीता कै पाहौ। उहौ गाए मारिहि कपिराहौ ॥  
 कह अंगद लोचन भरी बारी। दुहौ प्रकार भइ मृत्यु हमारी ॥  
 सब मिलि कहहि परस्पर बाला। विनु सुधि लए करन का आला ॥  
 इहौ विचारिहि कपि मन माहौ। बीली अवधि काज कछु नाहौ ॥  
 उर धरि राम चरन जुग जे दंदत अज हैस ॥ २५ ॥

दो०—यदवीवन कहुँ सो गइ प्रभु अया धरि सीस ।

नाना भाँति विनय बहै कीन्है। अनपायनी भगति प्रभु दीन्है ॥  
 सो पुनि गइ जहौं खिनाया। जाइ कमल पर नाएषि माया ॥  
 नयन मूँद पुनि देखहि बौरा। ठहैं सकल सिंधु कै तीरा ॥  
 मूँदहुँ नयन निबर तनि जाई। पैरुह सीताहि जानि पछिताई ॥  
 बहै सब आपनि कथा सुनाई। सैं अज जाव जहौं खुराई ॥  
 मजनु कीन्हें मयूर फल खाए। तासु निकट पुनि सब चलि आए ॥  
 बहै तब कहाँ करहुँ जल पाना। खाई सुरस सुंदर फल नाना ॥  
 दूरे ते ताहि सगहि देखि नाया। पूछे निज वचन सुनाया ॥

# \* रामचरितमानस \*

अंगद दुख देखी। कहीं कथा उपदेश विसेयी ॥  
 म कहूँ नर जान मानहु। निर्गुन ब्रह्म अजित अज जानहु ॥  
 न सेवक आति बड़ भागी। संतत समुन ब्रह्म अजुतानी ॥

नैन डेख्यौ मनु अवतरहु सुर माहि गो द्विज आनि।  
 समुन उपासक संग तहूँ रहहि मोल्य सब ल्यानि ॥ २६ ॥

हे विधि कथा कहीहु बहूँ भाँती। गिरि कंदराँ सुनी संपाती ॥  
 अंगद उपासक संग तहूँ रहहि मोल्य सब ल्यानि ॥ २६ ॥

कहै अंगद विचारि मन. माहो। धन्य जटायु सम कोउ नाहो ॥  
 कवि सज उठे गीत कहै देखी। जामवंत मन सेव विसेयी ॥

सुनि खग देस्य सोक जुत गानी। आवा निनकट कोण्ह भय मान ॥

तिन्हहि अभय करि पूछिष जाहूँ। कथा सकल तिन्हहि ताहि सुना ॥

सुनि संगाति बंधु कै करनी। रघुपति माहिमा बहूँ विधि पर ॥

दो-मोहि है जाहु सिंघुत देहु विजंजलि ताहि।

वचन सहै करवि मँ पैहड़ खोजहु जाहि ॥ २७ ॥

अनुज क्रिया करि अंगर तीरा। कहै निज कथा सुनहु को ॥

हम दो बंधु प्रथम तरेनाहूँ। गगन गए रवि निकट उर ॥



( B L H H S o l k l e - 4 3 / 4 )

॥ : धिहह : धिहह : हृष्ट

உறுப்பினர்களுக்காக உபயோகப்படுத்தப்படும் புகை

ମାସପ୍ରାୟ, ମାସପ୍ରାୟ

(५) ॥ सुनिभ वसि गुन ग्राम जाति नाम अथ खग बधिक ॥ ३० ॥

1. ಕರ್ನಾಟಕ ರಾಜ್ಯದ ಸರ್ಕಾರದ ಸಚಿವರು - 01

॥ (क)० ३॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

। एतत्पुत्रं मे भवति विद्वान्महामातृकः ।



श्रवण सुखं सुनि आवुत्तं प्रभु भवनं भवनीम् ।  
आहि आहि आगति देन सन सुखं खिनीम् ॥

श्रीरामायण विमर्शना

सद्यं वदामि च भवानिच्छित्तान्नरोत्तम ।

तस्या स्पष्टा रघुपते दृढयुस्मदीये

बन्धेऽहं कल्याणकरं रघुवरं भूपाखर्वडामासि ॥ १ ॥

रामाख्यं जगदीश्वरं सुर्युक्तं मायामय्यं हरिं

ब्रह्माद्याभ्युपगम्योद्वेगव्यमनिदां वेदान्तवेद्यं विभुम् ।

दानं दामाश्रयमभयमननं निर्वणिशान्तिमदं

श्लोक



( सुन्दरकाण्ड )

पञ्चम सर्गः



श्रीरामचरितमानस

श्रीजानकीवल्लभा विजयते

श्रीगणेशाय नमः

भक्तिं प्रपन्नं रघुपुङ्गव निभूय मे

कामार्तिदोषराहितं

कुरु मानस च ॥ २ ॥

अवलितवलयमाम् हेमश्रीजामदेहं

द्वजवक्त्रकेशाब्जं

शोनिममग्रगण्यम् ।

सकलगुणानिधानं वानराणामधीशं

रघुपतिप्रियमक्तं वातजालं तमामि ॥ ३ ॥

जामवंत के बचन सुहाए । सुनि हनुमंत हृदय अति भा

तव लज्जा मोहि परिलेहै तुम्हें भाई । सहै दुख कंद मूल फल खा

वन लज्जा आवाँ सीताहि देखी । होइहि काजु मोहि हरष विशेष

यह कहि नाइ सगलन्है कहूँ माथा । चलेउ हरषि हिउँ धरि रघुनाथ

सिधु तीर एक भूधर सुंदर । कौतुक कैंद चहैउ ता ऊपर

भार भार रघुवीर सुभाषी । तरकैउ पवनतनय बल भाषी

जहि गिरि चरन देइ हनुमंता । चलेउ सो गा पाताल वरंता

जिमि अमोघ रघुपति कर वाना । एही भाँति चलेउ हनुमाना

जलनिधि रघुपति दूँत निचाषी । तँ भौनाक होहि अमहाशी

दो०—हनुमान होहि पररा कर पुनि कीन्ह प्रनाम ।

राम काजु कीन्है विधि मोहि कहौ विश्राम ॥ १ ॥

जात पवनसुत देवन्ह देखी । जानै कहूँ बल बुद्धि विशेष

सुररा नाम अहिंन कै माता । पठइन्हि आई कही होहि वाता ॥

आजु सुन्है मोहि दीन्ह अहारा । सुगत वचन कहे पवनकेशरा ॥

तम काञ्च करि फिरि मैं आवौ । सीता कहि सुधि प्रभुहि सुजावौ ॥  
 तब तब यदन पैठिहै ऊँ । सत्य कहैतुँ मोहि जान दे माई ॥  
 कवनहुँ जवन देइ नहि जाना । असहि न मोहि कहैतु हनुमाना ॥  
 बोजन भरी तेहि यदनु पसरत । कपि वनु कौन्ह दृगुन विभारत ॥  
 भरेह बोजन मुख तेहि टगक । तुरत पवनसुत बचिस भयक ॥  
 जस तस सुरसा यदनु यदंवा । तसु दैन कपि रूप देखवा ॥  
 सब बोजन तेहि आनन कीन्हो । आत लग्य रूप पवनसुत लीन्हो ॥  
 यदन पड़ैठि पुनि यदरे आवा । मागा विदा ताहि भिक नवा ॥  
 मोहि सुरन्ह जोहि लगी पठवा । बुधि बल मासु तोरु स पवा ॥

टी०-राम काञ्च सब करिहै गुरु बल बुद्धि निधान ।

आसिष देइ माई सो हरिष चलेउ हनुमान ॥ २ ॥  
 निविचरि एक सिधु माई रहै । करि मागः ननु के खग माई ॥  
 जीव जनु जे गगन उड़हो । जल तिलोकि तिनहै के परिछहो ॥  
 माईहै छहै सक सो न उड़है । एहि विधि सदा गगन नर माई ॥  
 सोहै छल हनुमान कहै कीन्हो । तसु कपट करि तुरतहि चोन्हो ॥  
 ताहि मारि माकतसुत योग । गोरिष पर गपउ मतिबोस ॥  
 तहौ जाइ देखी वन सोमा । गुंजत चंचरीक मयु लोमा ॥  
 नाना तब फल फूल सुहाए । खग मुग बुद्ध देखि मन माए ॥  
 छैल विषाल देखि एक आग । ता पर पाइ चहैउ भय लाग ॥  
 उमान कह्यु कपि कै अधिकार । मयु गतप जो कालहि छाई ॥



गिरि पर चढ़ि लंका देखी । कहि न जाइ आनि दुर्ग विसेयी ॥  
 आनि उतंग जलनिधि चहुँ पला । कनक कोट कर परम प्रकाश ॥  
 छं-कनक कोट विविध मनि केव सुंदरपवनना धना ।  
 चउदह दह सुवद दीयाँ चार पुर वहुँ विधि बना ॥  
 राज बालि खचार निकर पदचर रथ वस्त्रयनि को मानै ।  
 बहुरूप निसिचर ज्यै आतिवज सेन बरनत नहिँ वनै ॥ १ ॥  
 बन बना उपवन बाटिका सर कप बाणों सोहैं ॥  
 नर नाग सुर गंधर्व कन्या रूप मुनि मन मोहैं ॥  
 कहुँ माल देह विमाल सैल समान आतिवज मानैं ॥  
 नाना अखारेन्ह भिगहिँ वहुँ विधि एक एकन्है लज्जैं ॥ २ ॥  
 करि जनन भट कोटिन्ह विकट जन नगर चहुँ दिसि रज्जैं ।  
 कहुँ माहेष मानुष धनु खर अज खल निसाचर भज्जैं ॥  
 पहुँ जालि गुलसीदास इन्ह को कथा कह्य एकहुँ कहैं ।  
 रघुवीर सर वीरथ सरीरिन्ह ज्वाल गति पहुँहिँ सहै ॥ ३ ॥  
 टी०-पुर रखवारे देखि बहूँ कपि मन कीन्ह विचार ।  
 आनि ज्यै रूप धरौँ निसि नगर करौँ पहेँसार ॥ ३ ॥  
 मयक समान रूप कपि धरी । लंकाहिँ चलेउ सुगिरि नरदरी ॥  
 नाम लंकिनी एक निसिचरी । सो कह चलेसि मोहिँ निंदरी ॥  
 जानैन्ह नहौँ मरु सठ मोरा । मोर अहेर जहौँ जनि चोरा ॥  
 मुठिका एक महा कपि हनी । कथिअ वमत धरनी दनमनी ॥



येन नम धरि बचन सुनाए । सुगत विभीषन उठि रहै आए  
 करि प्रनाम पूछी कुलछाड़ै । निप्र कहै निज कथा बुझाड़ै ॥  
 की वृन्है हरिदासन्ह सहे कोइ । मोरु हृदय प्रीति आवि होइ ॥  
 की वृन्है राउ दीन अग्रगणी । आपहु मोहि करन बड़भाणी ॥  
 दी०-वध हनुमंत कही सब राम कथा निज नाम ।

सुगत जगल जन पुलक मन मान सुमिरि गुन प्राम ॥ ३ ॥  
 सुनहि पवनसुत रहनि हमारी । निमिदवनन्हि भूँछी जीम विचारी  
 जात कबहुँ मोहि जानि अनाया । करिहहि कथा भागुकुल जाया ॥  
 नामर तनु कहुँ लापन नाहो । प्रीति न परु लोचन मन नाहो ॥  
 अथ मोहि या भयो हनुमंत । विप्रु हरे कथा मिलहि मोहि वंता  
 " सुवर्ष अग्रुह कीन्ह । लौ वृन्है मोहि हरि हरि दीन्ह ॥  
 विभीषन प्रभु कै रोति । कयहिं सदा वेधक पर प्रीति ॥  
 कहै कवन सँ परम कुलाना । कपि बचल लवहो विधि होना ॥  
 मात लेइ जो नाम हमारा । रोहि दिन राति न मिलि अहोरा ॥  
 दी०-अस सँ अपस सखा सुख मोह पर रचवोर ।

कीन्हो कथा सुमिरि गुन भरे बिलोचन नीर ॥ ८ ॥  
 जानवहुँ अरु खानि बिलारी । फिरिहो व काहे न होहि दुखारी ॥  
 एहि विधि कहत राम गुन प्रामा । एवा अनिवार्य विआमा ॥  
 पुनि वध कथा विभीषन कही । जोहि विधि जनकसुता रहै रही ॥  
 वध हनुमंत कही उठु आवा । देखी बहै जनकी माता ॥

युति विधीयन् सकल सुगहं । चलेत् प्रवन्धन विदा कन्दं ॥  
 रि वेहं त्वगगज पुनि गह्वरं । यन् अनेक दीपा हं अह्वरं ॥  
 विध मगहं मङ्गं कान्दं प्रनामा । वेहं विधि जाति निधि गोमा ॥  
 स त्व दीप यदा एकं वेनी । जगति देवैर्युधिपति पुन अनी ॥

१०-निज परं नयन विपुं मन राम परं कमल लीन ।

परम दुर्लभा परवन्धन वेह विधि जानकी दीप ॥ ८ ॥

१८ परम मङ्गं देहा लुकाहं । कन्दं विचार कर्त्तुं का मङ्गं ॥  
 वेह अथवर रागु वेहं आया । संग नाति गहं किपुं प्रनाया ॥  
 मङ्गं विधि वल दीपाहं मङ्गलाया । राम रान मन मङ्गं देवाया ॥  
 कन्द रागु सुत सुमुखि मयानी । नन्दरी आहं नय रानी ॥  
 त्व अनुचरी कर्त्तुं प्र मया । एक बार विच्छेद मन अनी ॥  
 यन् धरि ओट कहेति वेहदी । मुनिपर अथयति प्रम सवेदी ॥  
 सुत देवमुख खद्योत प्रकाश । कर्त्तुं कि नालनी कन्दं विकाश ॥  
 अथ मन समुद्र कहेति जानकी । वल सुवि नहिं विचार यान की ॥  
 सठ धर्म देरि आनेहं मोही । अथम निजज लज नहिं दीही ॥

दी०-आगुहि सुनि खद्योत मन रामहिं मातु समान ।

परम प्रवन्धन सुनि कान्दं अमि बोला अति विविधमान ॥ ९ ॥

सीता तें मन कल अपमाना । कन्ददेह वेरि कान्द न कथाना  
 नाहं र स्यादं मनु मन गानी । सुमुखि होति न र जोवन दीनी ॥  
 स्वाम खोल राम राम सुंदर । प्रभु प्रेज करि कर लम देवकंधार ॥

सो भुज कंठ किं तव आसि धीरा । सुनु सठ अस प्रवान पन मोरा ॥  
 चंद्रहास हरे मम परिताप । रखपति निरहे अनल संजात ॥  
 सीतल निमित्त बहसि भर धारा । कहे सीता हरे मम दुख भारा ॥  
 सुनत वचन पुनि मारन धावा । मयतनया कहि नीति बुझावा ॥  
 कहेसि सकल निमिचरिन्ह जोलाई । सीताहि बहूँ श्रिषि जोसहु जाई ॥  
 मास दिवस महुँ कहा न माना । तौ मैं मारनि काहिं कृपाना ॥  
 द्रो०-भवन गगन दसकंधर हरे। पिसाचिनि हरे ।

सीताहि आस देखावहिं धरहिं रूप बहूँ भद्र ॥ १० ॥  
 विजटा नाम राजछोटी एका । राम चरन रति निपुन विवेका ॥  
 सज्जनी बोलि सुनएसि सपना । सीताहि सेइ करहु हित अपना ॥  
 सपनं गनर लंका जगि । जागियान सेना सब मारी ॥  
 खर आकलं नामन दसवीसा । मुंडित सिर खंडित भुज बीसा ॥  
 एहिं विधि सो दखिजन दिसि जाई । लंका मनहुँ विभीषन पाई ॥  
 नगर पिसी खगीर दोहाई । तब प्रभु सीता बोलि पठाई ॥  
 यह सपना मैं कहैउ पुकारी । होइहि सत्य गए दिन चारी ॥  
 तासु वचन सुनि ते सब डरी । जनकसुता के चरनहि परी ॥  
 द्रो०-जहूँ तहूँ गहूँ सकल तब सीता कर मन सोच ।

मास दिवस वीर मोहि माहि माहि निमिचर पोच ॥ ११ ॥  
 विजटा सन जोली कर जोरी । मातु विपति संनिनि तैं मोरी ॥  
 तजौ देह कर बेगि उपाई । दुखह निरहुँ अत्र नहिं सहिं जाई ॥



राम दूत मैं मातु जानकी। सत्य सपथ ककना निधान की॥  
 यह सुद्रिका मातु मैं आनी। दीन्ह राम तुम्ह कहै सहिदानी॥  
 नर जानयहि संग कहै कैसे। कही कथा यह संगति जैसे॥  
 टी०—कवि के बचन सद्यो सुनि उपजा मन विस्वास ।

जाना मन कम बचन यह कथासिंधु कर दास ॥ १३ ४

होजन जानि प्रीति आति गाढ़ी। सजल नयन पुलकावलि बाढ़ी॥  
 बूझत फिरह जलधि हेतुमाना। भयहूँ तब भी कहूँ जलजाना॥  
 अथ कहूँ कुसल जाऊँ बलिदारी। अजब सहित मुख भयन खरारी॥  
 कोमलचित्त कपाल खरार्है। कवि कहि हेतु धरी निदुरार्है॥  
 सहेज गानि सेवक मुख दायक। कबहूँक सुरति करत खिनायक॥  
 नयन मम सीतल ताला। होइहोइहि निरखि स्वाम मरुँ गाला॥  
 बचन न आव नयन भरे गरी। अहह नोय हौँ निपट बिभारी॥  
 देखि परम फिरहोकुल सीता। बोल कवि मरुँ बचन चिनीता॥  
 मातु कुसल प्रभु अजब समेता। तब देख दृष्टी सुकपा निकेता॥  
 जानि जननी मानहुँ जियूँ कना। तुम्ह ते प्रभु राम कै दूता॥  
 टी०—खिपति कर सहेसु अब सुनि जननी धरि धीर ।

अस कहि कवि गाढ़गाढ़ भयउ भरे बिजोचन नीर ॥ १४ ॥  
 कहेउ राम विप्रोपा तब सीता। भी कहूँ सकल भए बिपरीता॥  
 नव तब किंसल्य मनहुँ कसना। कालनिषा सम निषि ससिभान॥  
 कुशल्य विपिन कुंत मन सरिसा। गारिद तपत तेल जनु बरिसा॥

न हित रहे करत तेइ पीरा । उरग स्वस सम त्रिविध समीरा  
 कहैं तैं कह्यु दुख धरि होई । कहि कहैं यह जान न कोई ॥  
 तब प्रेम कर मम अक तोरा । जानत प्रिया एक मनु मोरा ॥  
 सो मनु सदा रहत तोहि पाहै । जान प्रीति रस एतनेहि माहै ॥  
 प्रभु सदैसु सुनत ब्रैदेही । मान प्रेम तन सुधि नहि तेही ॥  
 कहै कवि हृदयुं धीर धर माता । सुमिर राम सेवक सुखदाता ॥  
 उर आनहु खपति प्रभुताहैं । सुनि मम बचन तजहु कदराहैं ॥

श्लोक-निखिचर निकर पतंग सम खपति जान केमाव ।

जाननी हृदयुं धीर धर के जरे निखाचर जाव ॥ १५ ॥

जौ खपार होति सुधि पाहै । करत नहि विछेख खराहै ॥

राम जान रहि उरुं जानकी । तम बरुष नहिं जाविधान की ॥

अवाहै मातु मैं जाउ लवाहै । प्रभु आपसु नहिं राम दोहाहै ॥

कहुँक दिवस जननी धर धीरा । कपिनह सहित अहहहैं खपिरीरा ॥

निखिचर मारि तोहि लै जैहैं । तिरुँ पुर नारदादि जसु भौहैं ॥

हैं सुत कवि सग गुनहैं समाना । जाविधान अति भट बलवाना ॥

मारुं हृदय परम सदेही । सुनि कवि प्रभाट कीन्ह निज देही ॥

कनक भूषणकार सरीरा । समर भयंकर अतिबल गीरा ॥

सोता मन भरोस तज भयक । पुनि लख रूप पवनसुत लयक ॥

श्लोक-सुख माता साधसंगा नहिं बल बुद्धि विमल ।

प्रभु प्रताप तैं गच्छेहि खाहै परम लख ज्वाल ॥ १६ ॥



कछु पुनि जाइ पुकारे प्रभु सकट बल भूनि ॥ १८ ॥

टी०—कछु मारोसि कछु मरूंसि कछु निजपुंसि धरि धरि ।

आगत देखि निरुप गहि तज्जा । ताहि निपाति महाधुनि राज्जा ॥  
पुनि पठयउ होहि अञ्जकुमार । चला संग है सुमत अपरा ॥  
सब राजनीचर कपि सवार । गए पुकारत कछु अपमारे ॥  
सुनि रावन पठए मत नागा । तिन्हहि देखि राजउ हेनुमाना ॥  
बाएसि फल अरु निरुप उगरे । रञ्जक मरि मरि माहि डरे ॥  
नाथ एक आवा कपि मारी । होहि असोक बाटिका उजारी ॥  
रहे तहाँ बहू मत रखवारे । कछु मारोसि कछु जाइ पुकारे ॥  
चलेउ नाइ सिर पैठेउ बागा । फल बाएसि तब तौरै लग्गा ॥  
रघुपति चरन हेतुं धरि ताल मधुर फल खाइ ॥ १७ ॥

टी०—देखि बुझि बल निपुन कपि कहेउ जानकाँ जाइ ।

तिन्ह कर भय माता मोहि नहो । जाँ गुनह सुख मानहु मन माहो ॥  
सुनु सुत करहि विधिपन रखवारी । परम सुमत राजनीचर मारी ॥  
सुनहु माहु मोहि आतिथ्य भूखा । लग्गा देखि सुंदर फल रुखा ॥  
अथ कैतकल्य मयउं मैं माता । आसिष तब अमोघ प्रियमाता ॥  
बार बार नाएसि पद सीसा । बोल बचन जोरि कर कीसा ॥  
करहुँ कैप प्रभु अस सुनि काना । निर्भर प्रेम भगन हेनुमाना ॥  
अजर अमर युगनिधि सुत होइ । करहुँ बहूत रघुनाथक छोइ ॥  
आसिष दीन्ह रामप्रिय जाना । होइ ताल बल सील निधाना ॥  
मन संतोष सुनत कपि बानी । भगति प्रताप तेज बल सानी ॥

सुत बध सुरति कीन्ह प्रीन उपजा हृदय विषाद ॥ २० ॥

दो०-कपड़ि बिजोकि दसानन बिहसा कहि दुबोद ।

देखि प्रताप न कपि मन सका । जामि अहिमान महुँ गकड़ असव  
कर जेरुँ सुर दिशिप बिनीता । मरुटि बिजोकर सकल समीता  
दसमुख समा दीखि कपि जाई । कहि न जाइ कछु अति प्रसताई  
कपि बंधन सुनि निशिचर धाप । कौतिक लागि समा सब आप ॥  
तासु दूत कि बंध तक आवा । प्रभु कारज लागि कपड़ि बंधावा  
जासु नाम जापि सुनहुँ मयानी । भव बंधन काटहि नर यानी ॥  
तेहि देखी कपि मुकछित मयक । नामपास बाँधसि लै गयक ॥  
ब्रह्मदान कपि कहूँ तेहि माया । परतिहुँ बार कटक संघारा ॥  
जौ न ब्रह्मसर मानहुँ महिमा मिटइ अपार ॥ १९ ॥

दो०-ब्रह्म अख सेहि साँधा कपि मन कीन्ह विचार ।

उठि बहोरि कीन्हसि बहूँ माया । जीति न जाइ प्रभजन जाया ॥  
मुठिका मारि चढ़ा तक जाई । ताहि एक छन मुकछा आई ॥  
तिन्हहि निपाति ताहि सन बाजा । निरु जुगल मानहुँ गजरजा ॥  
रहे महरमत ताके संगी । गहि गहि कपि मरुइ निज अंगी  
आति बिमल तक एक उपारा । बिरथ कीन्ह लंकेस कुमारा ॥  
कपि देखी दाहन मत आवा । कटकटाइ गजी अरु धावा ॥  
चला इंद्रजित अगुलित जोधा । बंधु निधन सुनि उपजा कोधा ॥  
मारसि जानि सुत बाँधसु ताही । देखिअ कपड़ि कहौ कर आही ॥  
सुनि सुत बध लंकेस रिखाना । पउएसि मेघनाद बलवाना ॥

\* सुन्दरकाण्ड \*

कह लंकेस कवन हँ कीसा। कहि कै बल धालिहि नन खीसा॥  
 की धौँ श्रवन सुनेहि नहि मोही। देखउँ आनि असंक मठ तोही॥  
 मारे निधिवर कहि अपराधा। कहँ सर तोहि न प्रान कहँ बाधा  
 सुनु रावन प्रह्लाड निकषा। पाइ जासु बल निरचति माया॥  
 जाकै बल निरंजि हरि हैसा। पालत सुजत हरत दसवीसा॥  
 जा बल सीस धरत सहस्रानन। अंडकोष समेत गिरि कानन॥  
 धरइ जो विविध देह सुर आता। तुम्ह से सठन्ह सिखावतु दाता॥  
 हर कोदंड कठिन जहि भंजा। तेहि समेत नृप दल मद भंजा॥  
 हर दूधन विधिया अक बाली। बध सकल अवलित बलसाली॥

दो०—जाके बल लवलेस तँ जितेहुँ चराचर झारि ।  
 तसु देव मैं आ करि हेरि आनेहुँ प्रिय नारि ॥ २१ ॥

जानउँ मैं तुम्हारि प्रभुताइँ। सहस्रबाहुँ सन परी लराइँ॥  
 समर बालि सन करि जसु पावा। सुनि कपि बचन बिहसि बिहसवा  
 लपयउँ फल प्रभु लगानी भूखा। कपि सुभाव ते तोरेउँ लखा॥  
 सब कै देह परम प्रिय स्वामी। मारहि मोहि कुमारग गामी॥  
 जिनहँ मोहि मारा ते मैं मारे। तेहि पर बांधेउँ तनय तुम्हारे॥  
 मोहि न कह्यु बाधे कहँ लखा। कीन्ह चहैउँ निज प्रभु कर काजा  
 विनती करउँ जोरि कर रावन। सुनहुँ मान तजि मोर सिखावन॥  
 देखहुँ तुम्ह निज कुलहि विचारि। भ्रम तजि मजहँ भगत भयहारी॥  
 जाकै हर आनि काल हेराइँ। जो सुर असुर चराचर खाइँ॥

नाइ सोस करि विनय अर्हता । नीति विरोध न मारिअ दूता ॥  
 सुगत निराचर मारन धाए । सचिवन्ह सहित विभीषन आए ॥  
 सुनि कपि अवन अर्हत विरसिआना । बेनि न दरहु मूढ कर प्राना ॥  
 उलटा दोइहि कहे हेनुमान । मतिअस तोर प्रगट सै जाना ॥  
 मर्यु निकट आई खल दोही । लगेसि अयम सिखवन मोही ॥  
 बोलि विदेसि महे अभिमानी । मिलइ हमहि कपि गुर बड् यानी ॥  
 जदपि कही कपि अति हित जानी । मगति विवेक विरति नय सानी ॥  
 भजहु राम रघुनाथक कृपा सिंधु भगवान ॥ २३ ॥

दो०—मोहमूल बड् मूल प्रद त्यागहु तम अभिमान ।

संकर सहस विष्णु अज तोही । सकहि न राखि राम कर दोही ॥  
 मुजु दसकंठ कहेऊ एन रोपी । विमुख राम जाना नहि कोपी ॥  
 सजल मूल जिन्ह सतिन्ह नही । मरिष गहुँ पुनि तबहि सुखाही ॥  
 राम विमुख संपति प्रभुताइ । जाइ रही पाई विनु पाई ॥  
 बसन हीन नहि सोह सुररी । सब भूषन भूषित नर नाही ॥  
 राम नाम विनु गिरा न सोहा । देखि विचारि त्यागि मद मोहा ॥  
 विधि पुलकि जसु विमल मयका । तोहि सोसि महुँ जानि होइ कलंका ॥  
 राम चरन पंकज उर धरहु । लंका अचल राज गुनह करहु ॥  
 गहुँ सरन प्रभु राखिहैं तब अपराध विचारि ॥ २४ ॥

दो०—प्रगतपाल रघुनाथक कृपा सिंधु खराति ।

राखी अथक कजहुँ नहि कीजै । मोरे कहे जानकी दीजै ।

आन दंड कछु करिअ गोसाईं । सज्जी कहे मंत्र मल भाई ॥  
 सुनत विदेसि गेला दसकंधर । अंग भांग करि पठइअ वंदर ॥

टी०—कपि के समान पूँछ पर सवाहि कहतु समुझाई ।

तेज बोरि पट बाँधि पुनि पावक देई जगाई ॥ २४ ॥

पूँछहीन गानर तहैं जाइहे । तब सठ निज नाथहि लड़े आइहे  
 जिन्ह के कीन्हिहेसि गह्वर गढ़ाई । देखतु मैं लिन्ह के प्रभुताई ॥  
 गवन सुनत कपि मन मुसुकाना । भई सहस्र भारद मैं जाना ॥  
 जाविधान सुनि रावन गचना । जगो रचैं भूँद सोइ रचना ॥  
 रहा न गानर गवन भैत लेला । बाढ़ी पूँछ कीन्ह कपि खेला ॥  
 कौतिक कहै आए पुराणसी । मारहि चरन करहि गहूँ दोसी ॥  
 बाजहि होल देहि सत्र तारी । गानर फेरि पुनि पूँछ प्रजारी ॥  
 एक जगत देविह हनुमता । मयउ परम लखरूप तुरता ॥  
 निबुकि चहैउ कपि कनक अटारी । भई समीत निसावर नारी ॥

टी०—हरि प्रीति देहि अवसर चले मरत उतवास ।

अदहस करि गजा कपि बाँधि जग अकास ॥ २५ ॥  
 देहे विखल परम देरआई । मंदिर तैं मंदिर चढ़ भाई ॥  
 जग नगर भा लोभ विहोला । झपट लपट गहूँ कोटि कराला ॥  
 ताल मातु हा सुनिअ पुकारा । एहि अवसर की हमहि उबार ॥  
 हम जो कहे यह कपि नहि होई । गानर रूप धरें सुर कोई ॥  
 सावि अवस्था कर फछ ऐसा । जग नगर अनाथ कर जैसा ॥

मया नगर निमिष एक माहो । एक निमीषन कर गृहे नहो ॥  
 कर दूत अनल जेहि सिखाजा । जग न सो तेहि कारन निरिजा ॥  
 ललटि पलटि लंका सब जगो । कौटि परा पुनि सिधु मझगो ॥

॥ १०-पूछे बुझाई खोइ अम धरि लख रूप बहोरे ।

जनकसुता कौं आगो ठाढ़ भयव कर जोरे ॥ २६ ॥

माहि माहि दीजे कछु चीन्हा । जैसै खगनायक माहि दीन्हा ॥

बुझासनि उतारि तब दयक । हरष समत पवनसुत लयक ॥

कहेई तात अस मोर प्रनामा । सब प्रकार प्रभु पूरेनकामा ॥

निन दयाल बिचिरे संभारी । हरहु नाथ मम संकट भारी ॥

तात सकसित कथा सुनाएई । जान प्रताप प्रभुहि समझाएई ॥

मास दिवस महुँ नाथु न आवा । तौ पुनि माहि जिअत नहि पावा ॥

कहुँ कपि केहि बिधि राखौ प्राना । गुनहरे तात कहेत अज जाना ॥

माहि देखि सीतलि भइ छाती । पुनि मो कहुँ सोइ दिनु सो राती ॥

॥ १०-जनकसुतहि समझाई करि बहई बिधि धीरज दीन्हा ।

वरन कमल सिरे नाइ कपि गवज राम पहि कोन्हा ॥ २७ ॥

मलत महाधुनि गर्जोस भारी । गामुं खवहि सुनि निमिचर नारी ॥

माधि सिधु एहि पगहि आवा । सबद किंलि किला कपिन्ह सुनावा ॥

परे सब बिजोकि दनुमाना । रतेन जन्म कपिन्ह तज जाना ॥

पुख प्रसन्न तन तेज निराजा । कीन्हैसि रामचंद्र कर काजा ॥

मले सकल अति भए सुखारी । तलफत मीन पाव जिमि बारी ॥

चले हरषि खनियक पास। पूँछल कहत नवल इतिहास ॥  
 तब मयुवन भीतर सब आए। अंगद समत मयु फल खाए ॥  
 रावणारे जग भरजन लगे। मुहि प्रहर हनत सब भोगे ॥

दो०—जाइ पुरादे ते सब बन उजार जुवराज ।

सुनि सुधीव हरष कपि आए प्रभु काज ॥ २८ ॥

जौ न होति सीता सुधि पाई। मयुवन के फल सकाहे कि खोई

एहि त्रिष मन त्रिचार कर राजा। आइ गए कपि सहित समाजा ॥

आइ सगनि नारा पद सोसा। मिलेउ सगनि अति प्रेम कपोसा

पूँछी कुसल कुसल पद देखी। राम कपू भा काजु त्रिसेषा ॥

नाथ काजु कीन्हैउ हनुमान। राखे सकल कपिन्ह के प्राना ॥

सुनि सुधीव बहुरि तेहि मिलेऊ। कपिन्ह सहित खण्डित एहि चलेउ

राम कपिन्ह जग आवत देखी। किपू काजु मन हरष त्रिसेषा ॥

फटिक सिखा बौरे हो मारि। परे सकल कपि चरननिह जाइ ॥

दो०—भीति सहित सब भेटे खण्डित करन पुंज ।

पूँछी कुसल नाथ अब कुसल देखि पद कंज ॥ २९ ॥

जामवंत कह सुन खियाया। जा पर नाथ करहु पुंन्ह दया ॥

ताहि सदा सुम कुसल निरंतर। सुर नर मुनि प्रसन्न ता ऊपर ॥

सोह बिजई बिजई गुन समार। तासु सुजसु बौलेक उजागर ॥

प्रभु की कृपा भयउ सब काजु। जन्म हेमार सुफल भा आज ॥

नाथ पवनसुत कीन्हि जो करनी। सबसहुँ मुख न जाइ सो बरनी ॥

कैलिक यात प्रभु जागृवान की । रिपुहि जीति आनिगी जानकी  
 कहे देवमंत विपति प्रभु सोई । जय तव सुमिरन भजन न होई  
 बचन कयू मन मम गति जाही । सपनेहुँ ब्रह्मिअ विपति कि ताही  
 सुनि सीता दुख प्रभु सुख अयन । भरी आए जल राजिव नयन ॥  
 धी चलिअ प्रभु आनिअ भुज बल खल दल जीति ॥ ३९ ॥

श्लोक-निमिष निमिष करेनानिध जाहिँ कलप सम धीति ।

सीता कै अति विपति विषाज । विनहिँ कहे भलि दीनदयाज ॥  
 नयन खवाहे जछु निज हित लगि । जूँ न पाव देह बिरहगि ॥  
 विरह अगिनि तज दूँल समीर । खास जरइ छन माहिँ सीर ॥  
 नाथ सो नयनहिँ को अपराधा । निसरत प्रान करहिँ होठ बाधा ॥  
 अवगुन एक मोर मैं माना । विछुरत प्रान न कीन्ह पयाना ॥  
 मन कम बचन चरन अगुरगि । कहिँ अपराध नाथ होँ लगि ॥  
 अनुज समेत गहैहुँ प्रभु चरना । दीन बंधु प्रानतरति हरना ॥  
 नाथ जगल लोचन भरी वारी । बचन कहे कछु जनककुमारी ॥  
 बलत मोहिँ चूँडाभान दीन्हो । खिपति दृढ़दूँ लइ सोइ लीन्हो  
 लोचन निज पद जंजित जाहिँ प्रान केहिँ बाट ॥ ३० ॥

श्लोक-नाम पादके दिवस निमिष ध्यान पुनहार कपाट ।

कहैहुँ तात केहि भूति जानकी । रहति करति रच्छा स्वयान की  
 सुनत कपानिधि मन अति भाए । पुनि हेनुमान हरषि हियूँ लाए ॥  
 पवनतनय के चरित सुहाए । जामवंत खिपतिहिँ सुभाए ॥



सुख कपि तोहि समान उपकारी । नहिं कोउ सुर नर मुनि वज्रधारी  
 प्रति उपकार करौ का तोरा । सममुख होइ न सकत मन मोरा  
 सुख सुख तोहि उरिन मैं नाहीं । देखेउ कोरि निचर मन माहीं ॥  
 पुनि पुनि कपिहि चितव सुरजाता । लोचन नीर पुलक आनि गाता  
 दो०-सुनि प्रभु वचन बिजलिक मुख गाल हरषि हेनुमंत ।

चरन परेउ प्रभाकल गाहि गाहि भावत ॥ ३२ ॥  
 बार बार प्रभु चहै उठवा । प्रेम मान तेहि उठव न भावा ॥  
 प्रभु कर पंकज कपि के सीसा । सुमिरि सो दसा मान गौरिसा ॥  
 सावधान मन करि पुनि संकर । लगे कहेन कथा आनि सुंदर ॥  
 कपि उठाइ प्रभु डेढ़ू लगवा । कर गाहि परम निकट बैठवा ॥  
 कहु कपि रावन पालित लंका । केहि बिधि दहै दूरा आनि बंका  
 प्रभु प्रसन्न जाना हेनुमाना । बोल बचन बिगार अपिमाना ॥  
 साक्षात्प्रा कैं गहिं मनुसहै । साखा ते साखा पर जाहै ॥  
 नाथि सिंधु हाटकपुर जारा । निचिचर गन गधि बिपिन उजारा  
 सो सब तब प्रताप खियाई । नाथ न कछु मोरि प्रसुताहै ॥  
 दो०-ता कहुँ प्रभु कहुँ अगम नाहिं जा पर वरह अवकल ।  
 तब प्रभात बडवानलहिं जाहि सकइ खल्लि खल्लि ॥ ३३ ॥

नाथ भगलि आनि सुखदायी । देह कपा करि अनपयनी ॥  
 सुनि प्रभु परम सरल कपि यानी । एवमखि तब कहेउ भवानी ॥  
 उभासाम सुभात जेहिं जाना । ताहिं भजव गति भाव न आना ॥



कटकटहिं मकूट निकट भट बटू कोटि कोटिन्ह धावहीं ।  
 जय राम प्रबल प्रताप कोसलनाथ गुन गन गावहीं ॥ ११ ॥  
 सहि सक न भार उदार अहिपति वार वारहिं सोहैं ।  
 गह दंसन पुलि पुलि कमठ पट कठोर सो किमि सोहैं ॥  
 रघुवीर दीश्वर प्रमान प्रस्थिति जानि परम सुहेवनी ।  
 जनु कमठ खपूर सपुंगज सो लिखत अविचल पावनी ॥ १२ ॥  
 दौ०-एहि विधि आई केषानिधि उतर सगार तीर ।

जहूँ बहूँ लगे खान फल भालि विपुल कपि वीर ॥ ३५ ॥

उहाँ निसाचर रहैं ससंका । जय हो जाहि गगन कपि लंका ॥  
 निज निज गहूँ सब करहिं विचारा । नहिं निसिचर कुल कर उचारा  
 जामु दूत बल भरनि न जाहैं । बेहि आएँ पुर कवन भलाहैं ॥  
 रूतिन्ह सन सुनि पुरजन वाणी । मंदोदरी अधिक अकुलानी ॥  
 रहसि जोरि कर पति पग लगानी । बोली बचन नीति रस पावनी ॥  
 कंन करम हरि सन परिहरैं । मार कष्ट आनि हित हिंस्र धरैं ॥  
 समझत जासु दूत कइ करनी । खवाहैं गम रचनीचर धरनी ॥  
 रासु नारि निज सचिव बोलहैं । पठवहूँ कंत जो चहैं भलाहैं ॥  
 तब कुल कमल निपुन दुखदाहैं । सीता सीत निसा सम आहैं ॥  
 सुनहूँ नाथ सीता बिनु दौन्हैं । हित न उपहार सुं अज कीन्हैं ॥  
 दौ०-राम गान अहि गान सविष निकर निसाचर भेक ।

जय लगी प्रसव न तब लगी जलनु करहूँ बलि डेक ॥ ३६ ॥

अवन सुनी सठ ता करि बानी । बिहसा जात बिदित अभिमानी  
 समय सुमाउ नारि कर साचा । माल महुँ मय मन अति काचा ॥  
 जौ आवइ मकट कटकाई । बिअहि बिचारे निषिचर खाई ॥  
 कंषाई लोक्य जाकी भासा । तासु नारि समीत बडि हासा ॥  
 अस कहि बिहसि ताहि उर लाई । चलेउ समुँ समता अधिकाई ॥  
 मंदोदरी दूदयुँ कर चिता । मयउ कंत पर बिधि विपरीता ॥  
 बडेउ समुँ खचरि अरि पाई । सिंधु पार सेना सय आई ॥  
 बुझैसि संचिव उचिचत मत कहई । ते सय हूँ सय करि रहई ॥  
 जितहुँ सुरासुर तय अम नाहौ । नर नारि कहि लेखे मारौ ॥

२१०-सचिव बैद गुर बीनि जौ प्रिय बोळहि मय आस ।

राज धर्म तन बीनि कर होइ बेगारौ नास ॥ ३० ॥  
 सोइ रावन कहूँ बनी सहराई । अत्युति करहि सुनाइ सुनाई ॥  
 अवसर जानि निमीषयु आवा । आता चरन धीसु रोहि नया ॥  
 पुनि सिर नाइ बैठ निज आसन । बोल बचन पाइ अनुचसन ॥  
 जौ कपाल पूछिहुँ मोहि याता । मति अनुज कहेउ दिन ताता ॥  
 जौ आपन चाहै कल्याणा । सुजसु सुमति सुन गति सुख नाना  
 सो परनारि लिखार गोसाई । तबउ बउसि के बउडि नाई ॥  
 चौदह भवन एक पति होई । भूतदोह विदइ ॥  
 गुन सगर नागर नर जोक । अजय लेख नइ

टी०-काम कोय मरुं लोभ सब नाथ नरक के पथ ।

सब परिहरि खूबीरहि मजहूँ मजहूँ जेहि संत ॥ ३८ ॥  
 तब राम गहि नर भूषण । सुवनेसर कालहुँ कर काल ॥  
 ब्रह्म अनमय अज भावता । व्यापक अजित अनदि अनंत ॥  
 गो द्विज धनु देव हितकारी । कृपा सिंधु मान्य तनुधारी ॥  
 जन रंजन भजन खल भाला । बंद धर्म रच्छक सुनु आता ॥  
 गहि नयक लज नाइअ माया । प्रनतरति भजन खनुनाथा ॥  
 देहु नाथ प्रभु कहूँ ब्रह्मदेही । मजहूँ राम विनु हेतु सनेही ॥  
 सरन गहूँ प्रभु गहि न त्यागा । निख द्रोह केत अप जेहि लगा ॥  
 जासु नाम नथ तप नसावन । सीह प्रभु प्रगट समुष्टि निधु रावन  
 टी०-बार बार पद लगाउ विनय करउ दससीस ।  
 परिहरि मान मोह मरुं मजहूँ कोसलाधीस ॥ ३९ (क) ॥  
 मुनि पुलस्तिक निज सिष्य सन कहि पठई यह बात ।  
 पुरत सो भू प्रभु सन कहौ पाहूँ सुअवसर तात ॥ ३९ (ख) ॥  
 मात्सवंत अति सचिव स्याता । तसि नचन सुनि अति सुख माना  
 तात अनुज तब नीतिभूषण । सो उर धरहुँ जो कहत निमीषण ॥  
 रिपु उत्तराय कहत सठ दोक । दूरि न करहुँ डहौं डह कोक ॥  
 मात्सवंत यह गणउ बहोरी । कहइ निमीषण पुनि कर जोरी ॥  
 सुमति कुमति सब कैं उर रहौ । नाथ पुरान निगम अस कहौ ॥  
 जहौं सुमति तहैं संपति नागा । जहौं कुमति तहैं विपति निदागा ॥

तत्र उर ऊर्मसि वसी निपरीता । हित अनहित मानहुँ रिपु प्रीता ॥  
कालराति निरिचर कुल करी । तेहि सीता पर प्रीति धनेरी ॥

श्री०-रात चरन गहि मानहुँ गलहुँ मोर दुखार ।

सीता देहुँ राम कहूँ अहित न होइ दुखार ॥ ४० ॥

बुध पुरान श्रुति संमत जानी । कही विभीषन नीति बखानी ॥  
सुनत दसनन उठाँ रिसाई । खल तोहि निकट मृत्यु अब आई ॥  
जिअसि सदा सठ मोर जिआवा । रिपु कर पच्छ मूढ़ तोहि भावा ॥  
कहसि न खल अस को जग माहीं । भुज बल जाहि जिता मैं नाहीं ॥  
मम पुर बसि तपसिन्ह पर प्रीती । सठ मिछु जाइ तिन्हहि कहूँ नीती ॥  
अस कहि कीन्हसि चरन प्रदोरा । अनेज गइ पद गराहि गरा ॥  
उमा संत कहूँ दइइ गइइ । मंद करत जो करइ भलाइ ॥  
तुह पिपु सरिस भलेहि मोहि भारा । राम भजै हित नाथ गुहारा ॥  
सचिव संग लै नय पथ गयक । सवाहि सुनइ कहैत अस भयक ॥  
श्री०-राम सत्यसंकल्प प्रभु समा कालवस सोरि ।

मैं रघुवीर सरन अब जाहुँ देहुँ अनि सोरि ॥ ४१ ॥  
अस कहि चला विभीषन जगहीं । आगुहीन भए सब तजहीं ॥  
साधु अवग्या तुल भवानी । कर कल्याण अखिल कै दानी ॥  
रावन जगहि विभीषन त्यागा । भयउ विभव विनु तजहि अभाग ॥  
चलेउ देरहि खिनगक पाहीं । करत मनोरथ गइ मन भाहीं ॥  
देहिबहुँ जाइ चरन जलजाला । अवन महुँल सेवक सुखदाता ॥

जे पद परसि तयी रिपिनरी । दंडक कानन पावनकारी ॥  
 जे पद जनकसुता उर लाए । कपट कुरंग संग धर धाए ॥  
 हेर उर सर सर सरोज पद जेई । अही मग्य मैं देखिबहुँ जेई ॥

टी०-जिनह पायन्ह के पादुकिन्ह भरि रहे मन लाई ।

जे पद आजु बिजोकिहूँ ईन्ह नयननिह अव जाई ॥ ४२ ॥

एहि बिधि करत सप्रम विचारा । आयउ सपदि सिधु एहि परा ॥  
 कपन्ह रिमपिपुन आवत देखी । जाना कोउ रिपु दूत बिसेषा ॥

ताहि राखि कपीस एहि आए । समाचार सब ताहि सुनाए ॥  
 कह सुग्रीव सुनई खुराई । आवा मिलन दसनन भई ॥

कह प्रभु सखा ब्रह्मिणे काश । कहइ कपीस सुनई नरनाश ॥  
 जानि न जाई निराचर भया । कामरूप कहि करन आया ॥

भेद हेमार लेन सठ आवा । राखिअ ब्रह्मिणे मोहि अस भया ॥  
 सखा नीति दुइ नीतिक विचारी । मम पन सरनागत भयहारी ॥

सुनि प्रभु नचन देख देवमाना । सरनागत बखल भगवाना ॥  
 टी०-सरनागत कहूँ जे तजहिं निज अवहित अनुमानि ।

जे नर पावैर पापमय निन्हहि बिजोकर होनि ॥ ४३ ॥

कोटि त्रिष यथ लगहि जाई । आएँ सरन तजऊ नहि जाई ॥  
 सनमुख होइ जीव मोहि जगदी । जन्म कोटि अव नासहि तजौ ॥

पापगत कर सहज सुभाऊ । भजनु मीर तेहि भवन काऊ ॥  
 जौ पै दुष्टदय सोइ होई । मीर सनमुख आव कि सोई ॥

निर्मल मन जन से मोहि पावा । मोहि कपट छल छिद्र न भावा ॥  
 भद्र तेन पठवा दसवीसा । तबहुँ न कह्युं भय होनि कपुषा ॥  
 जग महुँ सखा निषाचर जेते । लछिमन हनइ निमिष महुँ तेते ॥  
 जो समित आवा सरनहुँ । राखहुँ ताहि प्रान की नहि ॥  
 द्रो०-उभय भाँति तेहि आनहुँ हूँसि कह कृपानिकेत ।

जय कृपाल कहि कोष चले आगद हनै समेत ॥ ४४ ॥  
 सादर तेहि आगँ करि यानर । चले जहाँ खपति ककनाकर ॥  
 दूँहि ते देखे हो आता । नयनानंद दान के दाना ॥  
 बहुरि राम छवि धाम बिलोकी । रहेउ ठट्ठिक एकटक पल रोकी  
 भुज प्रलंब कंजान लोचन । स्नामल गात प्रनत भय मोचन  
 सिंध कंध आयत उर सोढा । आनन आसित मदन मन मोढा ॥  
 नयन नीर पुलकित अति गाता । मन धरि धोरि कही महुँ गाता ॥  
 नाथ दसनन कर मैं आता । निषिचर बंस जनम सुरजाता ॥  
 सहज पापपिय तामस देहा । जया उल्लेकहि तम पर नेहा ॥

द्रो०-शवन सुजसु सुनि आयहुँ प्रसु भजन भव भीर ।

आहि आहि आरति हरन सरन सुखदं दधिबीर ॥ ४५ ॥  
 अस कहि करत दंडवत देखा । तुलत उठे प्रसु हेरष बिसेषा ॥  
 दीन बचन सुनि प्रसु मन भावा । भुज बिसाल गहि हँदय लभावा  
 अनुज सहित मिलि लिय बौधसी । बोले बचन भगात भयहोसी ॥  
 कहि लंकेस साहेत परिवाया । कुसल कुठहर वास गुहारा ॥





य के समान लगे गये। मम पद मनहि गौष गरि जेनी ॥  
 ममदरसी डेखी कहु नहि। हेरष सोक मय नहि मन मारो ॥  
 मम सजन मम उर अब कैसु। जेभी हृदयु अवड धनु जैसु ॥  
 ममहि सारिख संत प्रिय मरे। परउ देह नहि आन निहरे ॥  
 दो०—सगुन उपासक परहित निरत नीति दुह नैम ।

ते नर प्रान समान मम जिन्ह के द्विज पद प्रेम ॥ ४८ ॥  
 सुनु लंकेश सकल गुन तोरे। तारे गुनह आसिष्य प्रिय मोरे ॥  
 राम गचन सुनि गानर जंघा। सकल कहै जय केषा गरुया ॥  
 सुनत विभीषण प्रभु कै गानी। नहि अवात अवनामृत जानी ॥  
 पद अंजलि गहि गरहि गारा। हृदयु समान न प्रभु अपारा ॥  
 सुनई देव सत्पात्र स्वामी। प्रनतपाल उर अंतरजामी ॥  
 उर कहु प्रथम वासना रही। प्रभु पद प्रीति सरित सो गही ॥  
 अब कपाल निज भगति पावनी। देह सदा सिव मन भावनी ॥  
 एवमस्तु कहि प्रभु रनधारी। मागा वरत सिंधु कर नोरी ॥  
 जदपि सखा तब डेखी नहि। मोर दरसु असोष जग मारो ॥  
 अस कहि राम तिलक वेदि सारा। सुमन वीरि नम भई अपारा ॥

दो०—रावन कोय अनल निज स्वाम समीर प्रचंड ।

जगत विभीषणु राखेउ दीन्हैउ राज अखंड ॥ ४९ (क) ॥  
 जो संपति सिव रावनहि दीन्हि दिनु दंस माय ।

सोइ संपदा विभीषणहि सकुचि दीन्हि रखिनाथ ॥ ४९ (ख) ॥

प्रभु गुन हृदय सगहहि सरनागत पर नरे ॥ ५१ ॥

१०-सकल चरित निन्दे देवे धरे कपट कपि देहे ।

वर्षाहि विभीषण प्रभु पहि आए । पाछे रावन दूत पठाए ॥  
 प्रथम प्रनाम कौनहि सिर नहि । नहि पुनि तट दम उवाह ॥  
 मरकटि प्रभु अजहहि समझाई । सिंधु समीप गए खुराई ॥  
 मरत निहृति गले खुरीग । ऐसहि कर धरि मन धारी ॥  
 कपट मन कहूँ एक अघात । देव देव आलसी पुकारा ॥  
 मध्य देव कर कवन भरोसा । सीपिअ सिंधु करिअ मन रोसा ॥  
 न परे लज्जित मन भोग । राम बचन सुनि आति दुख पावा ॥  
 भला कहौ गुन नौक उपाई । करिअ देव जौ होइ सहाई ॥  
 विनु प्रयास सागर तरिहि सकल भाळ कपि धारि ॥ ५० ॥

१०-प्रभु गुह्यर कुलगुर जलधि कहिहि उपाय विचारि ।

बधापि तटपि नौति आसि गार्डे । विनय करिअ सागर मन जार्डे ॥  
 कहै लंकेश सुनहु खनयक । कोटि सिंधु सीपक तव सपक ॥  
 कुल मकर उरग झप जाती । आनि अगाध दुस्तर सब भौती ॥  
 मरु कपीस लंकापति भोग । कहि विधि तरिअ जलधि मंगी ॥  
 गले बचन नौति प्रतिपालक । कारन मनुज दनुज कुल बालक ॥  
 मनि सवैय सवै उर बासी । सबैय सब रहित उदासी ॥  
 नज जन जानि ताहि अपनावा । प्रभु सुभाव कपि कुल मन भावा ॥  
 अथ प्रभु जाहि भजाहि न आना । ते नर पसु विनु पूँछ विधाना ॥

कहेसि न रिपु दंज लेज बल बहै वीर चरित विर तोर ॥ ५३ ॥  
 दो०-की भई भूट कि फिरि गए अवत सुजसु सिनि मोर ।

कहै तपसिन्ह कै बात बहैसी । जिन्ह के हृदयु भास अति मोरी ।  
 जिन्ह के जीवन कर रखगार । भयउ महुँल चित सिधु विचार ।  
 पुनि कहै भलि कौस कटकहै । कठिन काल प्रेरित चलि आई ।  
 करत राज लंका सठ लग्यो । होइहि जव कर कीट अभाग्यो ।  
 पुनि कहै खरि विभीषन को । जाहि मर्यु आई अति नेरी ॥  
 विहसि दसानन पूछी बात । कहेसि न सुक आपनि कुसलता ॥  
 कहेत राम जसु लंका आए । रावन चरन सोस लिन्ह नाए ॥  
 वरत नाइ लछिमन पद माया । चले दूँत वरनत गुन गाथा ॥  
 सीता देइ मिलइ न त आवा कलि तुम्हार ॥ ५२ ॥

दो०-कहेइ मुखार मूँद सन मम सदेसु उदार ।

रावन कर दीजइ यह पाती । लछिमन बचन गावु कुलधारी ॥  
 सुनि लछिमन सन निकट बोलए । दया लागि हैसि वरत छोड़िए ॥  
 जो हेमार हर नासा काना । तेहि कौसलधास कै आना ॥  
 बहै प्रकार मारन कपि जगै । दीन पुकारत तदपि न लगै ॥  
 सुनि सुग्रीव बचन कपि धाए । बौध कटक चहै पास फिरिए ॥  
 कहे सुग्रीव सुनइ सन जानर । अंग भाग करि पठवहै निरिचर ॥  
 रिपु के दूँत कपिन्ह लग जाने । सकल बौध कपीस पहिँ आने ॥  
 प्रगट बखानहि राम सुभाऊ । आति सप्रेम गा विरसि दुराऊ ॥

\* सिन्दूरकाण्ड \*

नाथ कथा करि पूछहु जैसे । मानहु कहा कोष तजि जैसे ॥  
 मित्र जाइ जय अजुज गुह्यरा । जातहि राम तिलक तेहि सारा ॥  
 रावन दूत हमहि सुनि काना । कपिनूद गौषि दीन्है दुख नाना ॥  
 अवन गौषिका काटै लगे । राम सपथ दीन्है हम लगे ॥  
 पूछिहु नाथ राम कटकहूँ । बदन कोटि सत बरनि न जाहुँ ॥  
 नाना बदन माछि कपि धारी । विकटानन विमल भयकारी ॥  
 जैसे पुर दहेउ इतैउ सुत गोरा । सकल कपिनूद महुँ तेहि बलि थोरा ॥  
 अमित नाम भट कठिन कराला । अमित नामा बल विपुल विमला ॥  
 द्रो०-द्विविद मयद नील बल अंगद । गद विकटाक्षि ।  
 दक्षिमुख केहि निमठ संठ जामवंत बलराक्षि ॥ ५४ ॥  
 ए कपि सब सुग्रीव समाना । इन सम कोटिन्ह मानइ को नाना ॥  
 राम कथा अवलित बल तिन्है । पुन समान बोलै कहि जानै ॥  
 अस म सुना अवन दसकंधर । पदम अठारह जंघा बंदर ॥  
 नाथ कटक महुँ सो कपि गहौ । जो न गुहहि जाँत रन माँहौ ॥  
 परम कोष मीजाहि सब दया । आयसु पै न देहि खगया ॥  
 सोषहि सिंधु सहित क्षय व्याला । पुरहि न त भरि ऊपर विमला ॥  
 महुँ गद मित्रवाहि दससीसा । ऐसेइ बजन कहहि सब कीसा ॥  
 गजहि गजहि सहेज असका । मानहुँ असन चहेत रहि लंका ॥  
 द्रो०-सहेज सुर कपि माछि सब पुनि निर पर प्रभु राम ।  
 रावन काल कोटि कहूँ जीव सकहि संग्राम ॥ ५५ ॥

मम तेज बल ब्रुवि विपुलाई। सग सदैव सत संकटि न गइ ॥

एक सर एक सोपि सत सगर। तब आताई पूँजेउ नय नगर ॥

सुखि बचन सुनि सगर पाइ। मागत पंथ केषा मन भाइ ॥

मनन बचन विदेसा दससीसा। जाँओस मति सदैव केत कीसा ॥

सहेज भुँढ कर बचन दहंई। सगर सन ठानी मचलाई ॥

पूँई मया का करसि बड़ाई। रिपु बल ब्रुवि गइ मं पाई ॥

सन्निव सगीत विभीषन जाके। विजय विभूति कटौ जग ताके ॥

सुनि बल बचन दूँत रिम गार्छी। सम्य विचारि पत्रिका कार्छी ॥

सामान्य दौन्दी गइ पावी। नाथ बचाई बुझावई छावी ॥

विदेसि राम कर लीन्दी। रावन। सन्निव गोलि सठ अग बचन ॥

दो०-बातन्ह मनहि रिझाई सठ जनि घालसि कुल जोस ।

राम विरोध न उबरासि सरन विरु अज डैस ॥५६(क)॥

की तनि मान अजुन डैव प्रभु परं पक न स्या ।

दोहि कि राम सरानल खल कुल सहित परंग ॥५६(ख)॥

सुनत सम्य मन सुख सुसुकाई। कहेत दसानन सगहि सुनाई ॥

भूमि परा कर गइत अकासा। लउ रापस कर गग विजसा ॥

कहे सुक नाथ सत्य सय गानी। समझाई छाई प्रकृत अभिमानी ॥

सुनई बचन मम परिहरि कोधा। नाथ राम सन तजई विरोधा ॥

आनि कोमल रघीर सुभाऊ। जयहि आखिल लोक कर पाऊ ॥

मिलत केषा पुनर पर प्रभु करिही। उर अपराध न एकउ धरिही ॥

जनकसुता रघुनाथहि दीजे। एतना कहौ मरे प्रभु कीजे॥  
 जय तैहि कहौ देन ब्रह्मदेही। चरन प्रहर कीन्ह सठ तैही॥  
 नाइ चरन सिक चला सो तहौ। कथा सिंधु रघुनाथक जहौ॥  
 करि प्रनाम निज कथा सुनाई। राम कैयौ आपनि गति पाई॥  
 रिपि अगस्ति की साध भवानी। राखस मयउ रहौ मुनि ग्यानी॥  
 ब्रह्म राम पद गारहि बारा। मुनिनिज आश्रम कहूँ पगु धारा॥

टी०-विनय न मानत जलधि जइ गणु नीनि दिन कीति ।

बोले राम सकौप तब भय बिनु होइ न प्रीति ॥५७॥

लछिमन गान सरासन आन। सोगौ गारिधि बिसिख कसान्॥

सठ सन विनय कुटिल सन प्रीती। सहज केपन सन सुंदर नीती॥

ममता रत सन ग्यान कहेनी। अति लोभी सन निरति बखानी॥

कोधिहि सम कामहि दैरि कथा। ऊसर गीत बहूँ फल जया॥

अस कहि रघुपति चाप चढ़ावा। यहै मत लछिमन के मन भावा॥

संधानेउ प्रभु बिसिख करावा। उठी उदधि उर अंतर ज्वाला॥

मकर उरग झग गान अकुलाने। जराव जइ जलनिधि जय जाने॥

कनक धार भरी मीने गान गाना। विष रूप आपउ तलि माना॥

टी०-काटेहि पइ कदरी फरइ कीटि जवन कोउ सोच ।

विनय न मान खोस सिउ जटैहि पइ नव नीच ॥५८॥

समय सिंधु गहि पद प्रभु केरे। छेमहु नाथ सन अवगुन मेरे॥

गगन समीर अनल जल धरनी। इन्है कहै नाथ सहज जइ करनी॥

तव प्रेरित मायाँ उपजाए। सहि हेतु सब ग्रंथनि गाए ॥  
 प्रथु आपसु जेहि कहूँ जस अहई। सो तेहि माँति रहै सुख लहई ॥  
 प्रथु भल कीन्ह मोहि सिख दीन्है। मरजादा पुनि गुहरी कीन्है ॥  
 दील गवूर सँद प्रसु नारी। सकल ताड़ना के अधिकारी ॥  
 प्रथु प्रताप मैं जान सुखाई। उतारिहि कटक न मोरि बड़ाई ॥  
 प्रथु अया अपुल श्रुति गाई। करौ सो बेगि जो गुहरी सोहाई ॥

टी०—सुनत बिनीत बचन अलि कह कृपाल सुसुकाई ।

जेहि बिधि उत्तरै कपि कटक वात सो कहहुँ उपाई ॥५९॥

नाथ नील नल कपि हूँ माई। लरिकहाँ रिगि आसिष पाई ॥  
 तिनहँ के परस किछु निरि भारे। तारिहँ जलधि प्रताप गुहरे ॥  
 मैं पुनि उर धरि प्रभु प्रभुताई। करिहँ बल अनुमान सहाई ॥  
 एहिहिधि नाथ प्रयोगि ब्रूधाईअ। जेहि यहै सुजसु लोक तिहँ गाईअ  
 एहिँ सर मम उत्तर तट बारी। हेतहुँ नाथ खल नर अथ रासी ॥  
 सुनि कृपाल सगार मन पीरा। गुतराई हेरी राम रनधीरा ॥  
 देखि राम बल पौकप भारी। हेरिष प्रयोगिनिध भयउ सुखारी ॥  
 सकल चरित कहि प्रभुहि सुनवा। चरन बंदि पाथीष सिधवा ॥

छं०—निज भवन गवनेउ सिंधु श्रीरघुपतिहि यहै मत मायक ।

यह चरित कलि मलहर जगामति दांस गुजसी मायक ॥

सुख भवन संसय समन दंडन विषाद रघुपति गुन गना ।

तजि सकल आस भरोस गावहि सिगहि संतत सह भगा ॥





( मन्दकाण्ड समाप्त )

पञ्चमः सर्गः समाप्तः ।

इति श्रीमद्रामचरितमानसे सकलकलिकल्पविषये

माधवायन, चौबीसवाँ विभाग

सादर सुनिहिं हे वरहिं भव सिधु बिना जलजान ॥ ६० ॥

दो-सकल सुमाल दायक रघुनाथक गुन गान ।

\* रामचरितमानस \*

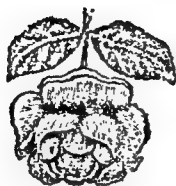
४७०



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

श्रीगुरुदेव्यो नमः

॥ श्रीगुरुदेव्यो नमः ॥



( सुन्दरकाण्ड समाप्त )

पञ्चमः सर्गः समाप्तः ।

इति श्रीमद्रामचरितमानसं सकलकलिकलविषयं

माखण्डाय, चैतन्याय, विष्णवे

सादरं नमः । तस्मै नमः । तस्मै नमः । तस्मै नमः ॥ ६० ॥

श्री-सकल सुखाय नमः । तस्मै नमः । तस्मै नमः । तस्मै नमः ।

\* रामचरितमानस \*

४७०



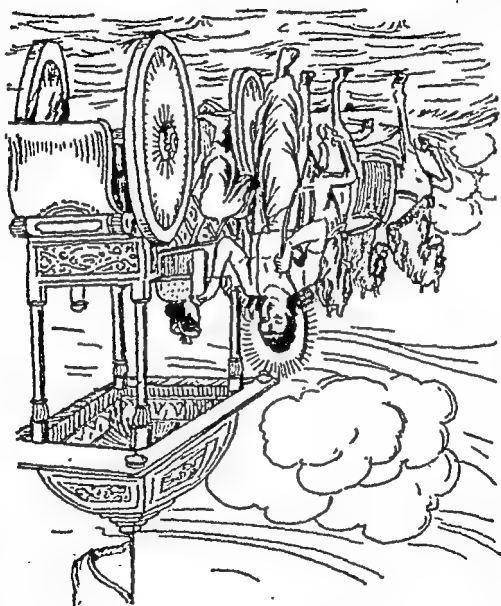
સાંકળીયા

સાંકળીયા

॥ શ્રીમદ્ વેદ ॥

॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥

। ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥



राधा के लिये देव-राज



काशीं कलिकल्पपाषाणं कल्याणकल्पद्वि-  
 नौमीज्यं निरिजपतिं गुणनिधिं कन्दर्पहं शङ्करम् ॥२॥  
 यो दंष्ट्राति सर्वां शम्भुः कैवल्यमापि दुर्लभम् ।  
 खलानां दण्डकेद्योऽसौ शङ्करः शं तनोति मे ॥ ३ ॥

टी०—एव निमेष परमात्रे जगत्तरु कल्प सरं चर ।

भजति न मन वेहि राम को काळि जासु कोदंड ॥

सी०—सिंधु बचन सुनि राम सविब बोलि प्रभु अस कहैव ।

अब बिजुव कहि काम करहु सेव उतरे कटके ॥

सुनहु भावु कुल केव जामवत कर जोरि कह ।

नाथ नाम तव सेव नर चरि भव सागर तरहि ॥

० लखु जलधि तरत कति गरा । अस सुनि पुनि कहै पवनकुमार  
 नि अति उर्कति पवनसुत को । हेरत को खपति तन हेर ।  
 जामवत बोले दोउ भाई । नल नीलहि सब कथा सुनाई ॥  
 म प्रताप सुभारि मन माही । करहु सेव प्रयास कहु नाही ॥  
 लि लिह को निकर बहोरी । सकल सुनहु विनती कहु मोरी ।  
 म चरन पंकज उर धरहु । कौतुक एक भाळ कोष करहु ।  
 वहु मकुट विकट वरुधा । आनहु विटप निरिन्ह के उधा ।  
 नि कपि भाळ चले करि हँहा । जय खपीर प्रताप सम्है ।





महिमा यह न जलधि कहे भरनी। पावन गुन न कोपन्ह कहे करनी।  
 दो०—श्री रघुवीर प्रताप ते सिंधु तेरे पाषाण ।

ते मतिमंद जे राम वलि भजहि जाई प्रभु आन ॥ ३ ॥

गूँघि सेव अति सुदर बनावा। देखि कृपानिधि के मन भावा।  
 चली सेन कछु गरनि न जाई। गजहिं सकट भट समुदाई।  
 सेवुंय विग चहिं रख्यो। चितव कृपाल सिंधु बह्यो।  
 देखन कहुँ प्रभु करना कदा। प्राट भए सय जलचर बूढ़ा।

मकर नक नागा झग व्याज। सब जोजन तन परम विभाल।

अइखंड एक तिनहिं जे छाहिं। एकन्ह के डर रोष हेराही।

प्रभुहिं जिलोकहिं तरहिं न टरे। मन हरिषत सय भए सुखारे।

तिन्ह की ओट न देखिअ गरी। मान भए हेरि रूप निहारी।

चला कटक प्रभु आयस पाई। की कहि सक कपि दल विपुलाई।

दो०—सेवुंय भई मोर अति कपि नम पंथ उड़ाई ।

अपर जलचरन्ह ऊपर चहिं चहिं पारहिं जाई ॥ ४ ॥

अस कौतिक तिलोकि द्वी भाई। निहंसि चले कृपाल रख्यो।

सेन सहित उतरे रख्यो। कहि न जाई कपि बंधु भरी।

सिंधु पार प्रभु हेरा कीन्ह। सकल कोपन्ह कहुँ आयस दीन्ह।

छाई जाई फल फूल सुहाए। सुनत भाल कपि जाई तरे पाए ॥

सय तरे फरे राम हित जगती। विर अरु कृपित काल गति जगती ॥

छाहिं मयूर फल विरय देलवाही। लंका समुख सिखर चलवाही ॥

सुव कहै आसि नीति दसानन । चौधपन जाइहै यय कानन ॥  
 चाहेअ करन सो सब करि गीते । पुनह सुर असुर चराचर जीते ॥  
 नाथ दीन दयाल खिराई । बाधउ सममुख गहूँ न छाई ॥  
 सुव कहूँ राज समधि बन जाई मजिअ रघुनाथ ॥ ६ ॥

टी०—रासाहि सौंनि जानकी नाई कमल पद माथ ।

तासु विरोध न कीजिअ नाथा । काल करम निव जाकै दया ॥  
 जाई गलि गौंनि सहसमुख माया । सोई अवतरेउ हरन महि माया ॥  
 आनिअल मयु कैटम जाई मारे । महेवीर दिनिमुत संधारे ॥  
 पुनहहि खपतिहि अंतर कैसा । खलु खद्योत दिनकरहि जैसा ॥  
 नाथ ग्यर कीजे ताही सौं । बुधबल सकिअ जीति जाही सौं ॥  
 बरन नाई सिक्क अंचल रोपा । सुनहु बचन प्रिय परहरि कोपा ॥  
 कर गहि पतिहि भवन निज अनी । बोली परम मनोहर गानी ॥  
 मंदोदरी सुन्यो प्रभु आयो । कौतुकहो पायोनि ब्रह्मयो ॥  
 निज विकलता विचारि बहोसी । विह्वसि गपउ गइ करि भय मोरी ॥  
 सत्य तोयनिवि कंपति उदधि पयोनि बहोस ॥ ५ ॥

टी०—ब्रह्मयो बचननिधि नीरनिधि जलधि सिंधु आरोस ।

सुनत भवन गतिवि बंधाना । दस मुख गोलि उठा अकुलाना ॥  
 जिनह कर नासा कान निपाता । तिनह रावनाह कही सब गता ॥  
 दसननिह काटि नासिका काना । कहि प्रभु सुजसु देहि तय जाना ॥  
 जहूँ कहूँ फिरत निराचर पचाई । धरि सकल गहुँ नान्न नचावाई ॥

तासु भजतु कीजिय तहै भरी । जो कर्ता पालक संहरी ॥  
 सोइ रखीर प्रनत अजुरानी । भजई नाथ समता सब रानी ॥  
 मुनिप्र जतनु करहि जोहि लगनी । भूप राज राज होहि विरानी ॥  
 सोइ कोसलधारी रखिया । आपउ करन तोहि पर दया ॥  
 जो पिय मानई मोर सिखावन । सुजसु होइ तिरुँ पुर आति पावन ॥  
 द्रो०—अस कहि नयन नीर मरि गहि पद कंषित गात ।

नाथ भजई रखियाहि अचल होइ अहिवाल ॥ ७ ॥

तज रावन मयसिता उठई । कहै लग खल निज प्रभुवाइ ॥  
 सुनु तै प्रिया वृथा मय माना । जग जोधा को मोहि समाना ॥  
 यवन कुँवर पवन जम काला । भुज बल जितै सकल दिगपाला  
 देव दनुज नर सब बस मोर । कवन हेतु उषा भय तोर ॥  
 नाना विधि बेहि कहेसि बुझाई । सम्रा बहोरि बैठ सो जाई ॥  
 मंदोदरी हेतु अस जाना । काल बस्य उषा अभिमाना ॥  
 सम्रा आइ मंजुह वैहि बूझा । कवन कवन विधि विपु से बूझा ॥  
 कहहि सचिव सुनु निरिखर नादा । बार बार भय पूछई काहा ॥  
 कहई कवन भय करिअ विचारा । नर कपि भलि अहर हेमारा ॥  
 द्रो०—सब के वचन श्रवन सुनि कह प्रहस कर जोरि ।

नीति विरोध न करिअ भय मंजुह मति अति थोरि ॥ ८ ॥

कहहि सचिव सठ ठकरसाइती । नाथ न पर आव एहि भूती ॥  
 थारिथि नाथि एक कपि आया । तासु चरित मन महुँ सख गाया ॥

ब्रह्महि ताल पल्लवज जीना । तय करहि अपछरा प्र  
 बैठ जाइ तेहि मंदिर रावन । लगे किनर गुन गन गानन ॥  
 लंका सिखर उपर आगारा । अति विचित्र तहै होइ अखारा ॥  
 संख्या समय जानि दससीसा । भवन चलेउ निरखत भुज बीसा  
 हित मत रोहि न लगत कैस । काल विवस कहूँ भयज जैस ॥  
 सुनि भिनु गिरा पक्ष अति धीरा । चला भवन कहि भवन कठोरा ॥  
 अवहो ते उर संसय होई । वेनुमूल सुत भयहूँ भयोई ॥  
 सुत सन कह दसकंठ रिसाई । आस मति सठ कहि रोहि सिखाई  
 यह मत जौ मानहुँ प्रभु भोरा । उभय प्रकार सुजसु जग रोरा ॥  
 बहिं वससुख समर माहि ताल करिअ इति माहि ॥ ९ ॥  
 द्रो०-गारि पाइ किहि जाहिँ जौ ते न बझाइअ गारि ।  
 प्रथम बसीठ पठउ सुत नीती । सीता देखै करहुँ पुनि पीती ॥  
 भवन परस हित सुनत कठोर । सुनहिँ जे कहहिँ ते न प्रभु भोरे  
 प्रिय बानी जे सुनहिँ जे कहहो । ऐसे नर निकाम जग अहो ॥  
 ताल भवन मम सुतु अति आदर । जानि मन गुनहुँ माहि करि कार  
 सो भवु मनुज खल हम माहुँ । भवन कहहिँ सब गाल फलहुँ ॥  
 जहिँ वरीस ब्रह्मपुत्र होला । उतरेउ सेन समेत सुबोला ॥  
 सुनत नीक आगोँ दुख पावा । सचिवन अस मत प्रभुहिँ सुनाव  
 छुधा न रही गुनहो तेन कहूँ । जारत नग कस न धरि लाहूँ ॥

रासु भजतु कीजिय तहूँ भरी । जो कर्ता पालक सहेता ॥  
 सोहै रघुवीर प्रनत अजुगामी । भजई नाथ समता सब त्यागी ॥  
 मुनिवर जतनु करहि जोहि लगनी । भूप राज राज होहि विरगनी ॥  
 सोहै कोसलधोस रघुराया । आपउ करन तोहि पर दया ॥  
 जो पिय मानई मोर सिखावन । सुजसु होहै तिहुँ पुर अति पवन ॥  
 दौ०—अस कहि नयन नीर भरि गाहि पद कंथित गात ।

नाथ भजई रघुनाथहि अचल होइ अहिबात ॥ ७ ॥  
 तब रावन मयसुता उठाई । कहै लग लख निज प्रभुताई ॥  
 सुनु तै प्रिया वृथा भय माना । जग जोया की मोहि समाना ॥  
 यवन केवर पवन जम काला । भुज बल जितेउ सकल दिगपाला ॥  
 देव दनुज नर सब बस मोर । कवन हैतु उपजा भय तोर ॥  
 नागा विधि तेहि कहैसि बुझाई । सम्राँ बहोरि बैठ सो जाई ॥  
 मंदोदरी हृदय अस जाना । काल बस उपजा अभिमाना ॥  
 सम्राँ आहै मंजुन्ह तेहि बूझा । करन कवन विधि सिपु से बूझा ॥  
 कहैसि सचिव सुनु निमिचर नाहा । गर गर भय पूछै काहा ॥  
 कहै कवन भय करिअ निचाया । नर कपि भाछ अहार हेमाया ॥  
 दौ०—सब के वचन श्रवन सुनि कहै प्रहस कर जोरि ।

नीति विरोध न करिअ भयु मंजुन्ह मति अति थोरि ॥ ८ ॥  
 कहैसि सचिव सठ ठकुरसोहाती । नाथ न पर आव एहि माती ॥  
 गारिधि नाथि एक कपि आवा । रासु चरित मन भई सर

छुधा न रही गुह्य है तब कहूँ । जारत नगर कस न धरि जाहूँ ॥  
 सुनत दीक आगुँ दूख पावा । सचिवन अस मत प्रभुहि सुनवा  
 जहि वारीस वृथापउ हैला । उतरउ सेन समेत सुखेला ॥  
 सो भनु मनुज खाय हम माहूँ । बचन कहहि सज गाल फलहूँ ॥  
 तब बचन मम सुनु अति आदर । जानि मन गुनहूँ मोहि करि काद  
 प्रिय बानी जे सुनाहि जे कहहूँ । ऐसे नर निकाय जाग अहहूँ ॥  
 बचन परम हित सुनत कठोर । सुनाहि जे कहहि ते नर प्रभु भोरे  
 प्रथम बसीठ पठउ सुनु नीती । सीता देख करहुँ पुनि प्रीती ।  
 दी०-चारि पाहूँ फिरि जाहिँ जाँ तो न बड़ाइअ गोरि ।  
 नहिँ न सन्मुख समर माहि तब करिअ हठि माहि ॥ ९ ॥  
 गह मत जाँ मानहुँ प्रभु मोरा । उमय प्रकार सुजसु जाग तोरा ॥  
 उत मन कह दसकंठ रिसाहूँ । अति मति सठ कहिँ तोहिँ सिखाहूँ ॥  
 अजहोँ ते उर संसय रहूँ । बेनुमूल सुत भयहूँ यमाहूँ ॥  
 सुनि पियु गिरा परम अति धोरा । चला भवन कहिँ बचन कठोरा ॥  
 हित मत तोहिँ न लगत कैस । काल बिबस कहूँ भयज जैसे ॥  
 संख्या समय जानि दससीसा । भवन चलेउ निरखत भुज बीसा ॥  
 लंका सिखर उपर आगारा । अति विचित्र तहूँ होइ अखारा ॥  
 बैठ जाइ तेहिँ मंदिर रावन । जगो किनर गुन गन गावन ॥  
 जाहिँ ताल पखोउज बीना । दल्य करहिँ अपछरा प्रवीना ॥



धा न रही तुम्हारे तब कहूँ । जारत नगर कस न धरि खारूँ ॥  
 नत नीक आगो दुख पावा । सचिवन अस मत प्रभुहि सुनावा  
 हि वारीस बंधुपुत्र हेल । उल्लेख सेन समेत सुबेला ॥  
 मनु मनुज खग देस भाई । बचन कहहि सब गाल फलाई ॥  
 त बचन मम सुनु आति आदर । जनि मन गुनहु मोहि करि कादर  
 प्रय वानी जे सुनहि जे कहहि । ऐसे नर निकप जग अहरो ॥  
 चन परम हित सुनत कठोर । सुनहि जे कहहि ते नर प्रभु भरो ॥  
 मम वसीठ पठउ सुनु नीती । सीता देख करहु पुनि प्रीती ॥  
 १०-नारि पाई किहि जाहि जाँ दो न बधाइअ दारि ।  
 बहिं वसन्मुख समर माहि तार करिअ हठि मारि ॥ ९ ॥  
 मर मत जाँ मानहु प्रभु मोरा । उमय प्रकार सुजसु जग तोरा ॥  
 सुत सन कह दसकंठ रिसाई । आसि मति सठ केहि तोहि सिखाई  
 अथही ते उर संसय होई । वैजुमल सुत भयहु घमोई ॥  
 सुनि भिनु गिरा पक्ष अति धोरा । बला भवन कहि बचन कठोरा ॥  
 हित मत तोहि न लयात कैस । काल बिगस कहूँ भयज जैसे ॥  
 संध्या समय जानि दससीसा । भवन चलेउ निरखत भुज बीसा ॥  
 लंका सिखर उपर आगाया । अति विचित्र तहूँ होइ अखारा ॥  
 बैठ जाइ तेहि मंदिर रावन । लगे किनर गुन गन गावन ॥  
 बाहिं ताल पखोउ वीना । दस्य करहि अपछरा प्रवीना ॥



वासि भजतु कीजिअ तहैं भरी। जो कर्ता पालक संहरी ॥  
 सोहै रघुवीर प्रगत अनुरगी। भजहै नाथ समता सब त्यागी ॥  
 मुनिवर जतन करहि जोहि लग्य। भूप राज तजि होहि बिरग्यी ॥  
 सोहै कोसलधोस खरग्या। आयउ करन तोहि पर दया ॥  
 जो प्रिय मानहु मोर सिखावन। सुजसु होइ तिरुँ पुर आनि पवन ॥  
 द्रो०-अस कहि नयन नीर भरि गहि पद कंषित गाव ।

नाथ भजहु रघुनाथहि अचल होइ अहिबाव ॥ ७ ॥  
 तब रावन मयसुता उठहैं। कहै लग्य खल निज प्रभुताहैं ॥  
 सुनु तैं प्रिया वृथा भय माना। जग जोधा को मोहि समाना ॥  
 भवन कुँवर पवन जग काल। भुज बल जितेउ सकल दियपाल ॥  
 देव दनुज नर सब बस मोर। कवन हेतु उपजा भय तोर ॥  
 नागा विधि तोहि कहिसि बुझाई। सभा बहोरि बैठ सो जाई ॥  
 मंदोदरी हेतुँ अस जाना। काल बल्य उपजा अभिमाना ॥  
 सभा आइ भोजन्ह तोहि बुझा। करन कवन विधि विपु सै जझा ॥  
 कहहि सचिव सुनु निरिचर नाइ। बार बार प्रभु पूछेहि काइ ॥  
 कहहु कवन भय करिअ निचारा। नर कपि भाउ अहार हेमारा ॥  
 द्रो०-सब के बचन शवन सुनि कह प्रहस कर जोर ।  
 नीति विरोध न करिअ प्रभु मंजन्ह मति अति थोरि ॥ ८ ॥  
 गारिधि नाथि एक कपि आवा। वासि चरित मन महुँ सखि गावा ॥

धा न रही तुम्हारे तब कहूँ । जगत नगर कस न धरि खरूँ ॥  
 नर वीर आगे हूँ पाला । सन्निवन अस मत प्रभुहि सुनवा  
 है वीरस ब्रह्मपुत्र हैला । उत्तर सेन समेत सुवेला ॥  
 मैं भयु मनुज खाय हम भाई । वचन कहै सब गाल फलाई ॥  
 तब वचन सम सुनु आनि आदर । जान मन गुनहु मोहि करि कादर  
 प्रय गानी जे सुनहि जे कहै । ऐसे नर निकाम जा अहं ॥  
 वचन परम हित सुनत कठोर । सुनहि जे कहै ते नर प्रभु भरे ॥  
 प्रथम बसीठ पठउ सुनु नीती । सीता देखै करहु पुनि प्रीती ॥  
 १०-गारि पाई फिरि जाई जाँ तो न ब्रह्मदेव गारि ।  
 नहिं वसन्तुल समर महि तब करिअ हठि मारि ॥ ९ ॥  
 यह मत जाँ मानहु प्रभु मोरा । उभय प्रकार सुजसु जा वीरा ॥  
 सुत सन कहै दसकंठ रिसाई । आसि मति सठ कहै वीहि सिखाई  
 अवहो ते उर संसय देखै । वेनुमूल सुत भयहु बसाई ॥  
 सुनि पितु निरा पक्ष अति धोरा । बला भवन कहि वचन कठोरा ॥  
 हित मत वीहि न लगत कैसै । काल बिपस कहूँ भयज जैसे ॥  
 संख्या सम्य जनि दससीसा । भवन चलेउ निरखत भुज वीसा ॥  
 लंका सिखर उपर आगा । अति विचित्र तहूँ देखै अखरा ॥  
 बूठ जाइ वेहि मंदिर रावन । जगै किनर गुन मन गावन ॥  
 राजाहि ताल पखज वीना । नृत्य करहि अपजरा प्रवीना ॥

अस कौतुक करि राम सर प्रविसेव आई निपंग ।

रावन सभा सभक सब देखि मही रस भंग ॥ १३ (ख)

कंप न भूमि न मरत निसेण । अख सख कछु नयन न देखी  
 सोचहि सब निज हेरय मझारि । असगुन भयउ भयंकर भरी  
 दसमुख देखि सभा भय पाई । बिदेसि बचन कहै जुगिति जन  
 सिरउ गिरै सतत सुभ जाही । मुकेट परे कस असगुन जाही  
 समन करहि निज निज गइ जाई । गवने भवन सकल सिर नाई  
 मंदोदरी सोच उर बसेऊ । जग ते भवनपरु महि खसेऊ  
 सजल नयन कहै जुग कर जोरी । सुनहु प्रानपति विनवी मारी  
 कंत राम गिरौष पतिहरहु । जानि मनुज जानि हेठ मन धर

दो०-विस्मय रघुवंसमान करहु बचन विस्वास ।

लोक कल्पना बंद कर भंग भंग भंग जासु ॥ १४ ॥

पद पाताल सीस अज धामा । अपर लोक भूग भूग विभामा  
 भुक्ति बिलास भयंकर काल । नयन दिवाकर कच घन माल  
 जासु धान आसिनीकुमार । निधिस अरु दिवस निमेष अपार  
 भवन दिक्षा दस वेद बखानी । माकल खास निगम निज यान  
 अपर लोक जम दसन कराल । माया होस गहू दिगपाल  
 आनन आनल अंजुपति जोइ । उतपति पालन प्रलय समीह  
 राम गति अष्टादश भरा । अस्मि सुल सतिता नस जरा  
 उदर उदरि अथवा । जगमय प्रसु को बहू कल्पना ॥

टी०—अहंकार निव बुद्धि अज मन ससि चित्त महेन ।

मनुज बास सचराचर रूप राम भगवान् ॥१५॥ (क)

अस विचारि सुख प्राप्तपति प्रभु सन बधक विहाई ।

प्राप्त करई रघुवीर पद मम अहिबात न जाई ॥१५॥ (ख)

विहैसा नारि बचन सुनि काना । अहो मोह महिमा बलवाना ॥

नारि सुभाउ सत्य सग कहैही । अवगुन आठ सदा उर रहैही ॥

साहेस अवत चपलता माया । मय आबिबेक असौच अदाया ॥

रिपु कर रूप सकल तै गावा । आति बिसाल मय मोहि सुनावा ॥

सो सग प्रिया सहज बस मोरे । समुझि परा प्रसाद अब तोरे ॥

जानिऊ प्रिया तोरि चहुराई । एहि बिधि कहई मोरि प्रभुवाई ॥

तब अतकही राई मयालोचनि । समुझत सुखद सुनत मय मोचनि ॥

मंदोदरि मन महुँ अस उयक । पियाई काल बस मतिअम मयउ ॥

टी०—एहि बिधि करत विनोद बहू प्रात प्रात दसकंध ।

सहेज असंकलंकपति समी गयउ मंद अंध ॥१६॥ (क)

सी०—फूलई फरई न बेत जदपि सुधा बरषहि जलद ।

भूखेह ददूँ न बेत जाँ गुर मिलहि बिरोचि सम ॥१६॥ (ख)

इहौ प्रात जाने खुराई । पूछा मत सय सचिब बोलई ॥

कहई बेगि का करिअ उपाई । जामवंत कहे पर सिर नहि ॥

सुख सयूय सकल उर बासी । बुधिबल बेज धर्म गुन रासी ॥

भजन कहेउ निज मति अजुषरा । दूत पठाइअ बालिकमारा ॥

नौक मंज सज के मन माना । अंगद सन कहे कृपानिधान ॥  
 आलिनय बुधि बल गुन धामा । लंका जाई तात मम कामा ॥  
 बहल बुझाई गुनहि का कहैऊँ । परम चरु मैं जानत अहैऊँ ॥  
 काजु हमार तासु हित होई । रिपु सन करै जतकही सोई ॥  
 सो०-प्रभु अग्या धरि सीस चरन बंदि अंगद उठेउ ।  
 सोई गुन सागर हैस राम कृपा जा पर करई ॥ १७ (क) ॥  
 स्वयं सिद्ध सब काल नाथ मोहि आदर दिखउ ।  
 अस विचारि जुवागन मन पुलकित हरषित दिखउ ॥ १७ (ख) ॥

बंदि चरन उर धरि प्रभुताई । अंगद बलैउ सगहि सिर नाई ॥  
 प्रभु प्रताप उर सहैज असंका । रन गाँऊँ आलिसुत बंका ॥  
 पुर पैठत रावन कर बेटा । खिलत रहो सो होइ गे भेटा ॥  
 आताई गाल करप गहि आई । जुगल अवल बल पुनि तबनाई ॥  
 बंदि अंगद कहूँ लाल उठई । गहि पद पदकेउ भूमि भयाई ॥  
 निमिचर निकर देखि भट भरी । जहँ तहँ चले न सकहि पुकारि ॥  
 एक एक सन मरसु न कहैही । समुझि तासु गंध चुप करि रहैही ॥  
 भयउ कोलाहल नगर मझारी । आवा कपि लंका जहि गरी ॥  
 अत्र धौ कटा कटिहि करतारा । आनि समीत सज करहि निचारा ॥  
 निजु पछै मगु देखि दिखई । जहि बिलोक सोइ जाइ मुखहि ॥

सो०-गणउ समा दरबार तब सुनिारि राम पद कंज ।  
 सिंह उबनि होत उत चितव धीर धीर बल पुंज ॥ १८ ॥



रे कपि पौत बोलि संभारी। मूढ न जानैहि मोहि सुगरी॥  
 कहूँ निज नाम जनक कर माई। केहि नारै मानिए मिताई॥  
 अंगद नाम बोलि कर बैठा। तसौ करहुँ मई हो भेटा॥  
 अंगद बचन सुनत सकुचाना। रहा बोलि बानर सँ जाना॥  
 अंगद तहँ बोलि कर बालक। उपजै बंस अनल कुल बालक॥  
 गार्ग्य न गार्ग्य अर्थ गुह्य जायहु। निज मुख तापस दूत कहायहु॥  
 अब कहूँ कुसल बालि कहूँ अहँ। जिहँसि बचन तब अंगद कहँहु॥  
 दिन दस गढ़ बोलि पाई जाई। बूझै कुसल सखा उर लाई॥  
 राम विरोध कुसल जासि होई। सो सय रोहि सुनाइहि सोई॥  
 सुनु सठ भेट होइ मन ताकै। श्रीरघुबीर हृदय नहि जाकै॥

श्लोक-हंसकुल बालक सख गुह्य कुल पालक दूतसीस।

अथ वधिर न अस कहहि नयन कान तब बीस॥ २१ ॥

सिध विरंचि सुर मुनि समुदाई। चाहत आसु चरन सेवकाई॥  
 तासु दूत होइ हंस कुल योग। अइसैहि मात उर बिहर न रोस॥  
 सुनि कठोर बानी कपि कैसी। कहत दखान नयन रोसी॥  
 खल तब कठिन बचन सय सहैऊँ। नीति धर्म सँ जानत अहँऊँ॥  
 कह कपि धमसीलता रोसी। हमहुँ सुनी कृत पर विष चोरी॥  
 देखी नयन दूत रखवासी। बूझि न मारहुँ धर्म बत धारी॥  
 कान नाक विनु भगिनि निहारी। छमा कीन्हि गुह्य धर्म निचारी॥  
 धमसीलता तब जग जानी। पावा दरसु हमहुँ बड़भानी॥

॥ १ ॥ श्री भगवति वष भद्रकान्ति भल कि कहेई कोउ ताहि ॥ २३ ॥  
 श्रीति विरोध समान सन करिअ नीति अस्ति आहि ।  
 कोउ न हेमारे कटक अस तो सन जराव जो सोई ॥ २३ ॥ (ख)  
 सत्य कहेहि दसकं सव मोहि न सुनि कछु कोइ ।  
 फिरि न गयउ सुगोव पाहिं तेहिं भय रहा जुकाइ ॥ २३ ॥ (क)  
 दौं-सत्य नगर कपि जारेउ विउ प्रभु आयस पाइ ।  
 चलइ बहिन सो भीर न होइ । पठवा खगरी लेन हम सोई ॥  
 जो अति सुमट सराहेई रावन । सो सुगोव केर लख धावन ॥  
 रावन नगर अत्य कपि दहई । सुनि अस वचन सत्य को कहेई  
 सत्य वचन कहि निषिचर नाहो । साँचेई कीस कीन्ह पुर दाहो ॥  
 आवा प्रथम नगर जेहि जाय । सुनत वचन कह बालिक मार ॥  
 सिद्धि कर्म जानाहि नल नीला । है कपि एक महा बलसीला ॥  
 जामवंत मंत्री अति बूढ़ । सो कि होइ अब समराकंठ ॥  
 होइ सुगोव कौलद्वम दोक । अजुज हमार भीर अति सोक ॥  
 तब प्रभु नारि भिरहै बलहीना । अजुज तासु दुख दुखी मलीना ॥  
 होइ कटक माझ सुत अंगार । सो सन भिरहि कवन जोधा बट  
 सोमत भयउ मराल इव संभु सहित कैलास ॥ २२ ॥ (ख)  
 पुनि नम सर मम कर निकर कमलान्ति पर करि बास ।  
 लोकपाल बल विपुल ससि प्रसन हेतु सब राई ॥ २२ ॥ (क)  
 दौं-शनि जलपति जहं जंनु कपि सठ विलोकि मम बाई ।



जगति ज्येष्ठा राम कहूँ तोहि वधु बध दोष ।

वदति कठिन दसकंठ सुनि हन जाति कर रोष ॥२३(घ)॥

वक्र उक्ति धनु वचन सर हृदय दूहेउ रिपु कीस ।

प्रतिउत्तर सङ्क्षिप्त-ह मनुहुँ काजत भट दसवीस ॥२३(ङ)॥

हूँसि बोलैउ दसमौलि तब कपि कर वध गुन एक ।

जो प्रतिपालइ वासु हित करइ उपाय अनेक ॥२३(च)॥

धन्य कीस जो निज प्रभु काज । जहूँ तहूँ नाचइ परिहरि आज ॥

नाचि कूँटि करि लीग रिझाई । पात हित करइ धर्म निपुनहूँ ॥

अंगद स्वामिमक्त तब जाती । प्रभु गुन कस न कहसि एहि मूर्खी

मैं गुन गाहक परम सुजान । तब कहइ रटनि करत नहिँ काना

कहै कपि तब गुन गाहकवाहूँ । सत्य पवनसुत मोहि सुनाहूँ ॥

वन निधंषि सुत बधि पुर जार । तदपि न तोहिँ कहूँ कुल अपकार

सोइ निचरि तब प्रकटि सुहाहूँ । दसकंधर मैं कीन्हि दिठहूँ ॥

देखैउ आइ जो कहूँ कपि माया । तुम्हरेँ आज न रोष न माया ॥

जो अघि मति प्रिय खाए कीसा । कहि अस नचन हूँसा दसवीसा ॥

पितहिँ खाइ खातेउ पुनि रोही । अगहौँ समुझि परा कहूँ मोही ॥

बालि प्रियल जस भाजन जानी । हवतु न तोहिँ अवस अगिमानी

कहूँ रावन रावन जग कैले । मैं निज श्रवण सुने सुन जेले ॥

बलिहिँ जिन एक गणउ पवाला । राखैउ बौधि सिमुन हवसाला

खेलाहूँ बालक मारहूँ जाहूँ । दया लीग बलि दीन्ह छेड़ाहूँ ॥

पसु सुधेनु कल्पवक कला। अथ दान अरु पुर्या।  
 राम मन्त्र कस रे सर वंगा। धन्यी काम नदी पुनि गंगा॥  
 लसु गनु जेहि देखत मगा। सो नर क्यो दससोस अमगा॥  
 जसु पसु समर खर धारा। ब्रह्म नय अमानित ब्रह्म गारा॥  
 सहस्रगर्ह भुज गहन अपारा। दहन अनल सम जसु केठारा॥  
 सुनि अंगद सकोप कहे गानी। बोजि सुमति अवस अपिमानी॥  
 रे कवि बहुर खलु खलु अव जाना तव न्यान ॥ २५ ॥

टी०—जेहि रावन कहुँ लखु कहसि नर कर करसि बखान ।  
 सोइ रावन जग विदित प्रतापी। सुनिहे न अवन अलीक प्रतापी।  
 जसु चलत जालि इति धरनी। चढत मच गज जसि लख तरनी॥  
 जिनहे के दसन कराल न फेटे। उर लागत मूलक इव देटे॥  
 जानहि दिग्गज उर कठिनार्ह। जग जग भिरु जेहि वीरिआर्ह॥  
 भुज विक्रम जानहि दिग्गजाल। सठ अजहूँ जिनहे के उर साला॥  
 सिर सरज निज करिहे उतारी। पूजेउ आभित बार विपुतारी॥  
 जान उमापति जसु सुगर्ह। पूजेउ जेहि सिर सुमन चढाई॥  
 सुनु सर सोइ रावन बलसीला। दुरागि जान जसु भुजलाला॥  
 इन्ह महुँ रावन पै कवन सख बढहि तजि माख ॥ २४ ॥

टी०—एक कहत मोहि सकुच आवि रहा वालि को काख ।  
 कौकिल लालि भवन है आवा। सो पुछसि सुनि जाइ छोडावा॥  
 एक बहोरि सहस भुज देखा। धाई धरा जसि जेहि विसेषा॥

बैनतेय खा अहि सहेसानन । चित्तमानि पुनि उपल दसानन ॥  
 सुनु मतिमद लोक कैकुट । ताम कि खपति भगति अकुट ।  
 द्रो०-सेन सहित तव मान माथ बन उजारी पुर जारि ।

कस रे सठ हेनुमान कपि गण्ड जो तव सुत माहि ॥२६॥  
 सुनु रावन पारिहरि चवुराई । भजसि न कृपा सिधु खुराई ॥  
 जाँ खल भएसि राम कर दोही । दस कर सक राखि न दोही ॥  
 मूँद दया जानि मारसि गाला । राम बपर अस होइहि डाला ॥  
 तव सिर निकर कपिन्ह के अग । पारिहोहि धरनि राम सर लग ॥  
 ते तव सिर कटुक सम गाना । खलिहोहि भाल कौस चौमाना ॥  
 जयहि समर कोपहि खिनायक । छुटिहोहि अति कराल बह सायक  
 तब कि चलिहि अस गाल तुहार । अस निचारि भुज राम उदार  
 सुनत बचन रावन परजरा । जगत महेनल जनु धृत परा ॥  
 द्रो०-कुंभकरन अस बंधु मम सुत मासिद सकारि ।  
 मोर पराक्रम नहि सुनेहि जितेऊ बगवत माहि ॥२७॥

सठ साजामा जोरि सहाई । बाधा सिधु इहेइ प्रभुताई ॥  
 नापाहि खा अनेक वारीसा । सर न होहि ते सुनु सब कौसा ॥  
 मम भुज सारवत जल पूरा । जहै बहै बहै सर न सरा ॥  
 मोस पयोधि अगाध अपरा । को अस वीर जो पाइहि परा ॥  
 दिगपालन्ह में नीर मरावा । भूप सुजस खल मोहि बुनावा ॥  
 जाँ पै समर सुमट तव नाथा । पुनि पुनि कहसि जाहि गुन गाथा ॥

मन महुँ समुझि बचन प्रभु कैसे । सहैऊ कठोर बचन सठ जेरे ॥  
 बार बार अस कहै । कहै कपाल । नहिं गजगिरि जसु बधुँ सुकाल ॥  
 दसमुख सैं न बसीठी आपु । अस विचारि खीन पठायु ॥  
 अब जानि गतगदग खल करही । सुन सम बचन मान परिहरही ॥  
 ते नहिं सूर कहै बहिं समुझि देखु मतिमंद ॥ २९ ॥

दो०-जरहिं पनाग मोह बस भार बहहिं खर बुंद ।  
 इंद्रजालि कहूँ कहिअ न बीरा । काटइ निज कर सकल सीरा ॥  
 सुन मतिमंद देखि अब पूरा । काटै सीस कि होइअ सूर ॥  
 सो सुजवल राखेई उर घाली । जीतेई सहसबाहु बलि बाली ॥  
 सिर अक सैल कथा चित रही । ताते बार बीस तैं कही ॥  
 लजवत तव सहज सुभाक । निज मुख निज गुन कहैसि न काज ॥  
 कहै अंगार सलज जग माही । रावन तोहि समान कोउ नाही ॥  
 आन बीर बल सठ सम आग । पुनि पुनि कहैसि लज पात त्याग ॥  
 सोउ मन समुझि बास नहिं मोरे । लिखा बिरचि जरठ मति मोरे ॥  
 नर कै कर आपन बध बाँची । हसेऊ जानि बिधि निरा असूँची ॥  
 जगत बिलोकैऊ जगहिं कपाल । बिधि के लिखे अंक निज भाल ॥  
 हुनै अनल अति हरष बहू बार साखि गौरीस ॥ २८ ॥

दो०-सूर कवन रावन सरिस स्वकर काटि जेहिं सीस ।  
 देरगिरि मथन निरखु मम बाहु । पुनि सठ कपि निज प्रभुहि सराहु ॥  
 तौ बसीठ पठवत कहि काजा । रिपु सन प्रीति करत नहिं लजा ॥

नाहि त करि मुख मंजन तोरा । लै जातेउ सीताहि परजोरा ॥  
 जानेउ तव बल अघम सुरसी । सने हेरि आनिहि परनसी ॥  
 ते निखिचर पति गर्व बहैता । से खण्डि सेवक कर दूता ॥  
 जाँ न राम अपमानहि डरक । तोहि देखत अस कौतुक करक ॥

टी०—तोहि पटक महि सेन होत चौपट करि तव गाउँ ।

तव जुबान्ह सभत सठ जनकसुताहि लै जाउँ ॥ ३० ॥

जाँ अस करौ तदपि न बडहि । सुएहि बधु नहि कछु मजबुहि ॥  
 कौल कामगस कपिन विमूर्ता । आति दखि अजसी आति बूढ़ा ॥  
 सदा योग्यस संगत कोधी । विच्य विमुख श्रुति संत विरोधी ॥  
 पोषक निदक अवधानी । जीवत सब सम चौदह प्रानी ॥  
 अस विचारि खल बधु न तोही । अत्र जानि सिस उपजावसि मोही ॥  
 सुनि सकाप कह निखिचर नाथा । अपर दसन दासि मोजत होथा ॥  
 रे कपि अघम मरन अत्र चहैसी । छोटि बदन यात बडि कहेसी ॥  
 कह्य जलपिस जड कपि बल जाके । बल प्रताप बुधि तेज न ताके ॥

टी०—अगुन अमान जानि तेहि टीन्ह पिता बनवास ।

सो दुख अह जुबानी बिरह पुनि निखि दिन मम आस ॥ ३१ (क) ॥

लिनह के बल कर गर्व तोहि अइसे मजुन अनेक ।

खाहि निखाचर दिवस निखि भूँ समुझ वसि टेक ॥ ३१ (ख) ॥

जब तेहि कीन्ह राम कै निदा । कोषवत तब मयउ करिदा ॥

हरि हर निदा सुनइ जो काना । होइ एप गोपाल समाना ॥

रास मन्त्र बोलत अछि बानी । तिरहि न तव रसना अभिमानी ॥  
 याको फल पावहिगो आगो । बानर भए चोटिहि लग्नो ॥  
 सत्यपात जल्पसि दुर्बादो । भएसि कालजस खल मन्त्रजादो ॥  
 रे त्रिप चोर के मारग गामी । खल मल रासि मंदमति कामी ॥  
 मक गार काटि निजज कुलधारी । बल बिलोकि बिहरति नहि छाती ॥  
 पुनि सकोप बोलेउ बुझराजा । गाल बजावत बोहि न लजा ॥  
 मकुटहीन कारुहि माहि जाई । जिअत धरुहै तपस हो माहि ॥  
 एहि विधि योगि सुभट सब धावहु । खरुहि भए कपि जहूँ जहूँ पावहु ॥  
 धरुहि कपिहि धरि मारुहि सुनि अंगद मुखकाइ ॥ ३२ (ख) ॥

उहाँ सकोप दसानन सब सन कहत तिसाई ।

कौतिक देखहि भए कपि दिनकर सरिस प्रकास ॥ ३२ (क) ॥

हो-तरोकि पवनसुत कर गहै आनि धरे प्रभु पास ।

ए किरीट दसकंधर केरे । आवत बालिनय के प्रे ॥  
 कह प्रभु होसि जानि हृदय हेराई । एक न अखनि केव नहि राई ॥  
 की रावन करि कोप चलाए । कुलिस चारि आवत अति धाए ॥  
 आवत मुकुट देखि कपि भगो । दिनदोँ एक परन बिधि लगो ॥  
 कछु रोहि है निज सिरिन्ह सुचार । कछु अंगद प्रभु पास पचार ॥  
 निरत सुभारि उठा दसकंधर । भूतल पर मुकुट आति सुंदर ॥  
 डोलत धरनि समसद खस । चले भोजि भय माकत भसे ॥  
 कटकटान कपिकुंजर भरी । दुई मुजदह तमकि माहि मारी ॥

\* लंकाकाण्ड \*

गिरिदेहि रसना संख्य गार्ही । सिरिन्हे समेत समर माहि माही ॥  
 सो-सो नर क्यो दसकंध वालि बरयो जेहि एक सर ।

बीसहुँ लोचन अंध धिया तव जन्म कुंजगति जइ ॥ ३३ (क) ॥  
 तव सोनित की प्यास दीधित राम सायक निकर ।

वज्रुं तोहि जेहि आस कहुँ जलपक निविचर अधम ॥ ३३ (ख)  
 मैं तव दसन तोरिबे लपक । आपसु मोहि न दीन्ह रह्योपक ॥  
 आस रिस होति दसउ मुख तोरौ । लंका गहि समुद्र महुँ बोरौ ॥  
 गालरि फल समान तव लंका । बसहुँ मध्य गुह जनु अलंका ॥  
 मैं गानर फल खात न बाग । आपसु दीन्ह न राम उदार ॥  
 ज्युति सुनत रावन मुसकाइ । मूढ़ सिखिहि कहै बहूत झुठाइ ॥  
 बालि न कबहुँ गाल अस मार । मिलि लपसहुँ वै भएसि ल्यार ॥  
 साँचेहुँ मैं ल्यार भुजगीहो । जौ न उपरिउ तव दस जीहो ॥  
 समुद्रि राम प्रताप कपि कोप । सम भाझ पन करि पद रोप ॥  
 जौ मम चरन सकसि सठ टारी । पिरहि राम सीता मैं हारी ॥  
 सुनहुँ सुमत सब कह दससीसा । पद गहि परनि पछारहुँ कीसा ॥  
 इंद्रजीत आदि क बलवान । हरि उठे जहूँ तहूँ मत नाना ॥  
 क्षपटहि करि बल विपुल उपाइ । पद न टरइ जैठहि सिंध नहि ॥  
 पुनि उठि क्षपटहि सुर आराती । टरइ न कीस चरन एहि मारी ॥  
 पुरुष कुंजोनी जिमि उरगारौ । मोह बिटप नहि सकहि उपासौ ॥





सुख जानि दसकंधर भवन गयउ विजयाई ।

मंदोदरी रावनहि बहुरि कहा समुझाई ॥ ३५ (ख)

कंत समुझि मन तजई कुमतिही । सोह न समर गुहाहि खपतिही ।  
 रामानुज लखु रेख खचाई । सोउ नाहि नाबेई आसि मनुष्य ।  
 प्रिय गुनह ताहि जितव संगामा । जाके दूत कर यह कामा ॥  
 कौतिक सिंधु नाथि तव लंका । आयउ कपि केहरी अंका ॥  
 रखवारे दूति विपिन उजारा । देखत ताहि अञ्छ तेहि मारा ॥  
 जारि सकल पुर कीन्हैसि छारा । कहा रहा तव गुहाया ॥  
 अग एति मया गाल जानि मारई । मार कहा कछु दूदयु निचारई ।  
 एति खपतिहि दूतलि जानि मानई । अग जग नाथ अगुलवल जानई ॥  
 दान प्रताप जान मारीचा । तसु कहा नाहि मानहि नीचा ॥  
 जनक समू अमानित भूपाळा । रहे गुनहउ तव अगुल निषाळा ॥  
 भंजि धनुष जानकी विआही । तव संगामा जितई किन ताही ॥  
 सुरपति सुत जानइ तव थोरा । रोखा जितव आसि गहि कोरा ॥

दो-वाध विराध खर दूषनहि लीला देखो कवच ।

बालि एक सर सर मारयो तेहि जानइ दसकंध

तेहि जलनाथ दूषायउ हेला । उतरे प्रभु दल सहित

कान्हाक दिनकर कुल कैल । दूत पठायउ त

समा माधु जेहि तव तल मया । करि यकथ मद्र



परम चतुरता शवन सुनि बिहसै राम उदर ।

समाचार पुनि सब कहे गढ़ के बालिकुमार ॥३८८॥

रिपु के समाचार जब पाए । राम सचिव सब निकट बोलि ॥

लंका बाँके चारि दुआरा । केहि बिधि लामिअ करहु निचार ॥

तब कपीस रिज्यैस विभीषन । सुमिरि हृदय दिनकर कुल भूषन ॥

करि निचार तिनहे मंत्र दंडावा । चारि अनी कपि कटकु बनवा ॥

जयजोया सेनापति कोनहे । जयप सकल बोलि तब लीनहे ॥

प्रभु प्रताप कहि सब समझाए । सुनि कपि सिधनाद करि धाए ॥

हरिषत राम चरन सिर नावहि । गहि गिरि सिखर भीर सब धावहि ॥

जाहि तजहि माछ कपीसा । जय खिरीर कोसलाधीसा ॥

जानत परम दुर्ग अति लंका । प्रभु प्रताप कपि चले अवका ॥

घटायेप करि चहुँ दिशि धेरी । भुवहि निवान बजावहि भेरी ॥

दो-जयति राम जय जय लडिमान जय कपीस सुधीव ।

गजहि सिधनाद कपि माछ महे बल सौव ॥३९॥

लंका भयउ कोलाहल भरी । सुना दसानन अति अहंकारी ॥

देखहु बनरहे करि दिडाई । बिहसि निभाचर सेन बोलि ॥

आए कौस काल के भेरे । छुवावत सब निषिचर भेरे ॥

अस कहि अटहसि सठ कीन्दा । गढ़ बैठे अहर निषि दीन्दा ॥

सुभट सकल चारिहुँ दिशि जाई । धरि धरि माछ कौस सब खाई ॥

उमा रावनहि अस अपिमाना । जिमि टिडिम खाए सेन उजाना ॥

चले निषाचर आधसु मागी । गहि कर भिडिपाल जे सांगी ॥  
 तीमार सुदर परसु प्रचंड । सुल कपान पारिष निरिखंड ॥  
 जिमि अकनोपल निकर निहारी । धावाहैं सठ खग मांस अहारी ॥  
 चोच भंग दुख तिन्हहि न सुझा । विमि धाए मनुजाद अर्द्धजा ॥

टी०-मानाशुभ सर चाप धर जाविमान बल धीर ।

कोट कूर्मरोहि चलि गए कोटि कोटि रनधीर ॥ ४० ॥

कोट कूर्मरोहि सोहहि कैसे । मेरु के सुंगनि जनु धन वैसे ॥

गजहि टोल निमान बुझाऊ । सुनि बुनि होइ मटहि मन चाऊ

गजहि मेरि नकीरि अगार । सुनि कादर उर जाहि दरार ॥

देखिन्ह जाइ कपिन्ह के ठड । आनि निषाल तनु भाछ सुमझ

धावाहैं गानहि न अवधट घटा । पर्वत कीरि कसहि गहि घटा ॥

कटकटाहि कोटिन्ह मट गजहि । दसन ओठ काटहि आनि तजहि

उत रावन डल राम दोहहि । जयति जयति जय परी लरहि ॥

निषाचर सिधर सम्है ठहोवाहि । कौटि धरहि कपि कीरि चलावाहि

छं-धरि कुधर खंड प्रचंड मकट भाछि गहं पर डारहि ।

अपटहि चरन गहि पटकि माहि भनि चलात बहुरि पचारहि ॥

अति तरल तरन प्रताप तरावाहि तमकि गहं चलि चलि गए ।

कपि भाछि चलि मंदिन्ह जहूँ तहूँ राम जसु गावत भए ॥

टी०-एक एक निषाचर गहि पुनि कपि चले पराहैं ।

ऊपर आठु हैठ भट निगहि धरनि पर आहैं ॥ ४ ॥

राम प्रताप प्रजल कपिजया । मर्दहि निरिचर सुमट बरया ॥  
 चहै दुर्ग पुनि जहै तहै बानर । जय खीर प्रताप दिवाकर ॥  
 चले निराचर निकर पराई । प्रजलपवन बिमिषन समुदाई ॥  
 होहाकार भयउ पुर भासी । रोवहि बालक आठर नासी ॥  
 सब मित्रि देहि रावनाहि गारी । राज करत एहि मनु हैकारी ॥  
 निज दल बिचल सुनी वेहि काना । करि सुमट लंकेस रिसाना ॥  
 जो रन विमुख सुना सैं काना । सो सैं देवब कराल कपाना ॥  
 सबुसि छाई भोग करि नाना । समर भूमि मए अछम प्राना ॥  
 उग्र बचन सुनि सकल डेराने । चले कोष करि सुमट लजाने ॥  
 समुख मरन थीर कै सोभा । तज निन्ह लजा प्रान कर लेभा ॥

६ आयुष धर सुमट सब भिसहि पचारि पचारि ।

व्याकुल किए माछि कपि परिय बिसलन्हि मारि ॥ ४२ ॥  
 मय आठर कपि भगान लगे । जयाप उभा जीतिहहि आगे ॥  
 कोउ कहे कहे अंगद हेनुभावा । कहै नल नौल दुखिद बलवता ॥  
 निज दल निकल सुना हेनुमाना । पल्लिम दूर रहा बलवाना ॥  
 मेघनाद तहै करइ लयाई । दूट न दूर परम कठिनई ॥  
 पवनतनय मन भा अति कोषा । गर्जउ प्रजल काल सम जोषा ॥  
 कौटिलक गहं ऊपर आवा । गहि गिरि मेघनाद कह्यै धावा ॥  
 भजेउ रघु सारथी निपाता । गहि दूदय महुँ मारीव लावा ॥  
 दुसरै सब निकल वेहि जाना । स्पंदन धालि वरत यह आना ॥

पि०-अंगद सुना पवनसुत गहं पर गयउ अकेल ।

रन वृक्षग बालिसुत तरुकि चहैउ कपि खल ॥ ४३ ॥

कुछ बिबद्ध फेड़ दौ बंदर । राम प्रताप सुमिरि उर अंतर ॥

पवन भवन चहै दौ धाई । कन्हि कोसलधौस दोहोई ॥

कलस सहित गहि भवन ठहोवा । देखि निराचरपति मय पावा ॥

गहि बंद कर पीटहि छली । अब दूइ कपि आए उत्तपाली ॥

कापलीला करि तिन्हहि डेरावाहैं । रामचंद्र कर सुजसु सुनवाहैं ॥

पुनि कर गहि कंचन के खंभा । कहेन्हि करिअ उत्तपाल अरंभा ॥

गलि पर रिपु कटक मझगि । जगो मरै भुज बल भारी ॥

काहहि जग चोपटन्हि केहै । भजहु न रामहि सो फल लेहै ॥

दो०-एक एक सौ मरुहैं तोरि चलावाहैं मुंड ।

रावन आगि परहिं ते जगु फेटहिं दंधि कुंड ॥ ४४ ॥

महा महा मुखिया जे पवाहैं । ते पर गहि प्रभु पास चलावाहैं ॥

कहेइ विभीषणु तिन्ह के नामा । देहिं राम तिन्हहैं निज धामा ॥

खल भुजगद हिजाभिष भोगी । पवाहैं गति जो जाचत जोगी ॥

उमा राम मरुचिब ककनाकर । जग भग सुभिरत मोहि निसिचर ॥

देहिं परम गति सो जिअ जानी । अस ऊपल को कहहु भवानी ॥

अस प्रभु सुनि न भजहिं अस त्यागी । नर मतिमंद ते परम अमगी ॥

अंगद अरु हनुमान प्रवेश । कीन्ह दूग अस कहे अवधेस ॥

लंका दौ कपि सोहहिं कैस । मथहिं सिंधु दूइ मंदर जैस ॥

दो०-मुन बल रिपु दल दलमलि देखि विवस कर अत ।

कैं जगल बिगत भम आए जहँ भगवंत ॥ ४५ ॥

प्रभु पर कमल सीस तिन्ह नाए । देखि सुभट खण्डि मन भाए ॥  
राम कैय करि जगल निहार । भए बिगतभम परम सुहार ॥  
गाए जानि अंगद हनुमाना । फिरे भाछ मकूट भट नाना ॥  
जखियन प्रदोष बल पाई । धाए करि देखीस दोहौ ॥  
निखिचर अनी देखि कपि फिरे । जहँ तहँ कटकटह भट फिरे ॥  
दो दल प्रबल पचारि पचारी । लरत सुभट नहिँ मानहिँ हारी ॥  
महोगीर निखिचर सब करे । नाना बरन बलीमुख भारे ॥  
सबल जगल दल समजल जाया । कौतिक करत लरत करि कोषा ॥  
पण्डित सरद पयोद धरे । लरत मनहुँ माकत के भरे ॥  
अनिप अकंपन अरु अतिक्रिया । निचलत सेन कीन्हि इन्ह माया ॥  
भयउ निमिष महुँ अति आविअग । बहिर होइ बधिरोपल छाया ॥

दो०-देखि निबिड तम दसहुँ दिंसि कपि दल भयउ खमार ।

एकहिँ एक न देखई जहँ तहँ करहिँ पुकार ॥ ४६ ॥

सकल मरु खण्डनायक जाना । छिए बोलि अंगद हनुमाना ॥  
समाचार सब कहि समझाए । सुनत कोपि कपिकुंजर धाए ॥

पुनि कैयल देखि चाप चढ़ावा । एवक सायक सपदि चलावा ॥

भयउ प्रकास कतहुँ तम नाहो । म्यान उदयुँ विमि संसय जाहो ॥

भाछ बलीमुख पाइ प्रकास । धाए देख्य बिगत भम जास ॥

तोकें बचन बान सम लगे । करिआ मुह करि जाहि अमाने  
 परिरि बयक देई बदेही । भजई कृपानिधि परम सनेही ॥  
 सिव विरंचि जेहि सेवहिं तसो कवन विरोध ॥ ४८ (ख) ॥  
 कालरूप खल बन दहन गुनागार घनबोध ।

### मासपारपण पचोसवा विंशम

जेहिं मारे सोई अवतरेउ कृपा सिंधु भगवान ॥ ४८ (क) ॥  
 दो०-हिरण्यक आता सहित मधु कैटभ बलवान ।  
 वेद पुरान जासु जसु गायो । राम विमुख काहुं न मुख पायो ॥  
 जब ते गुन्ह सीता हरि आनी । असगुन होहिं न जाहिं बखानी ।  
 बोला बचन नीति अति पावन । सुनई तात कछु मोर सिखावन  
 मात्सवंत अति जठ निखावर । रावन मातु पिता संगी बर ॥  
 आधा कटक कपिल संघारा । कहेई बेनी का करिअ विचार  
 उहो दसानन सचिव हैकरे । सज सन कहेसि सुमट जे मारे ॥  
 राम कृपा करि चितवा सजही । भए पितातअम वानर तजही ।  
 निरा जानि कोप चारिउ अनी । आए जहो कोसलाधनी ।  
 गजहिं भलि बलीमुख विरु दल बल विचलाई ॥ ४९ ॥  
 दो०-कछु मारे कछु बायल कछु गहं चरै पराई ।

गहि पद डारहिं सगर माही । मकर उरग झप धरि धरि खाई  
 भगत भट पटकाहिं धरि धरनी । करहिं भलि कपि अमृत करनी  
 हनुमान अंगद रन गाजे । हूँक सुनत रजनीचर भाजे ॥



ब्रह्म मण्डि न त मरतेऊँ रोही । अब जानि नयन देखवसि मोही ॥  
 तेहि अपन मन अस अनुमान । जखी चहत एहि कथानिधान ॥  
 सो उठि गयउ कहेत दुर्वादा । तब सकीष बोलिउ धननादा ॥  
 कौतिक प्राप्त देखिअहि मोरा । करिहउँ बहूँ कहौं का थोरा ॥  
 सुनि सुत वचन मरोषा आवा । प्रीति समेत अंक बैठवा ॥  
 करत बिचार मयउ भिनुसारा । लगे कसि पुनि चहुँहुँ अरा ॥  
 कोपि कपिन्ह दृष्ट गहूँ धरा । नगर कोलाहल मयउ धोरा ॥  
 विविधायुध धर निरिचर धार । गहूँ ते पर्वत सिखर दहोए ॥  
 छं-छाहे महीधर सिखर कोटिन्ह विविध विधि गोला चले ।  
 धरयात निमि पविपाल राजत जनु प्रलय के बाढ़ले ॥  
 मकट विकट भट जुटत कटत न लटत तन जरीर मय ।  
 गहि सैल सेहि गहूँ पर चलावहि जाहूँ सो तहुँ निरिचर हए ॥  
 धं-मधनद सुनि धवन अस गहूँ पुनि छका आइ ।

उतरयो धीर दुर्ग ते समुख चलाय बजाइ ॥ ४९ ॥  
 कहे कोसलाधीस हौ आता । धन्यी सकल लोक विख्याता ॥  
 कहे नल नील दुविद सुयोग । अंगार देवमंत बल सीवा ॥  
 कहे विभीषण आताही । आजु सगहि हठि मारउ ओही ॥  
 अस कहि कठिन वान संधाने । अतिसय कोष धवन लजि लाने  
 सर समूह सो छाई लगाना । जनु सप्तज पावहि बहूँ नाना ॥  
 जाहूँ तहुँ परत देखिअहि वानर । समुख होइ न सके रोहि अवसर

कौविक देखि राम मुसिकाने । भए समीप सकल कपि जाने ॥  
 कपि अकुलाने माया देखे । सब कर मान बनाएहि लेखे ॥  
 वरिधौ कौनैहि अविधायी । सँझ न आपन होय पसारी ॥  
 निहा पँथ कधिर कच होई । बरषइ कनहुँ उपलवहुँ होई ॥  
 नाना भूति पिपाच पिपाची । माक कटि धनि बोलहि नानी ॥  
 नम चरि बरष विपुल अंगार । महि ते प्रगट होई जलधार ॥  
 ताहि दिखवहुँ निखरनिज माया मति खोट ॥ ५१ ॥

टी०—जासु प्रबल माया बस निव विरंचि बढ छोट ।  
 जिमि कोउ करै गहई सँ जेला । डरपावै गहि स्वल्प सपेला ॥  
 देखि प्रताप भूँट विविधमाना । करै जग माया विधि नाना ॥  
 अख सब आयुष सब डारे । कौविकही प्रभु कटि निवारे ॥  
 रघुपति निकट गयउ धननादा । नाना भूति करैसि दुबादा ॥  
 वार वार पचार हेतुमाना । निकट न आव मरसु सो जाना ॥  
 आवत देखि गयउ नम सोई । रघु सारथी जेरा सब खोई ॥  
 महासैल एक जेरा उपाय । अतिरिस भेषनाद पर डारा ॥  
 देखि पवनसुत कटक बिहोला । कोषवंत जनु धायउ काला ॥  
 सिंहनाद करि गार्ड भेषनाद बल धीरे ॥ ५० ॥

टी०—दस दस सर सब मारिस परे भूमि कपि वीरे ।  
 सो कपि भाउ न रन महुँ देखा । कौनैहि जेहि न प्रान अवसेपा ॥  
 जाई तहुँ भागि चले कपि रीछ । निखरी सगहि जुद्ध कै होछ ॥



श्रीधरानि छाड़ि सँग। तेज पुंज लछिमन उर लगि ॥  
मुकला भई सकि के लग। तब चलि गयउ निकट भय त्याग

श्री-सैवनां सम कोटि सब जोधा रहे उठाई ।

जादाधार सेष किमि उठि चले विविसाइ ॥ ५४ ॥

सुनु गिरिजा कोधानल जासु। जगई भुवन चारिदस आसु ॥

सक संगम जीति को ताही। सेवहि सुर नर अग जग जाही ॥

यह कैवल्य जानई सोई। जा पर कृपा राम कै होई ॥

संख्या भई फिरी द्वी गहनी। लगै सुमान निज निज अनी ॥

अपक प्रसन्न अजित भुवनेश्वर। लछिमन कहौ ब्रह्म कर्नाकर

तब लगी है आपउ हेनुमान। अगुज देखि प्रभु अति दुख माना

जामवंत कहै ब्रह्म सुवेना। लंका रहई को पठई लेना ॥

धरि लख रूप गयउ हेनुमान। आनंद भवन समेत वृता ॥

श्री-राम परारविंद सिर गायत्र आइ सुवेन ।

कहो नाम गिरि आषधी जाइ पवनसुत लेन ॥ ५५ ॥

राम चरन सरसिज उर राखी। चला प्रभुजनसुत बल भाषी ॥

उठाई त एक भयम जनावा। राघव कालनेमि गइ आवा ॥

दसमुख कहो भयम तेहि सुना। पुनि पुनि कालनेमि सिक धुना ॥

देखत वृन्दहि नाक जेहि जाया। राघु पृथ को रोकेन पाया ॥

भलि खपति कह हित आपना। छाड़ि नाथ भया जयना ॥

नील कंज तज सुंदर स्वामा। हृदय राखि लेचनामिसामा ॥

एक जान काटी सय माया । जिस दिनकर हर विभर निकषा  
 कपाटहि कपि भाखि बिजोक । भए प्रबल रन रहि न रोके ॥  
 द्रो०—आयसु मागि राम पहिं अंगदाहि कपि साथ ।

लछिमन चले केवु होइ वान सगसन होय ॥ ५२ ॥

छतज नयन उर गार्ह विषाल ॥ हिमगिरि निम रज कछु एक लाला  
 इहौ दसनन सुमट पठाए । नाना अख सख गहि धाए ॥  
 भूधर नख विटपायुध धारी । धाए कपि जय राम पुकारी ॥  
 निरे सकल जोरिहि सन जोरी । इत उत जय इच्छा नहि थोरी ॥  
 मुठिकन्ह लगन्ह दातन्ह काटहि । कपि जयसील भारि पुनि डाटहि  
 मारु मारु धरु धरु मारु । सीस तोरि गहि भुजा उपारु ॥  
 आसि रज पुरि रही नव खंज । धावहि जहूँ तहें बंड प्रबंड ॥  
 देवाहि कौतुक नम सुर वंदा । कनक कृति ससम कनक अनंदा ॥

द्रो०—सुधर गाइं भरी भरी जग्यो ऊपर धूरि उड़ाइ ।

जय अंगार गोलिन्ह पर सुतक धूम रसो छह ॥ ५३ ॥

धायल गौर विराजहि कैसे । कुसुमिमत किमुक के तब जैसे ॥  
 लछिमन भवनार हो जाया । निमहि परसपर करि अति कोया  
 एकहि एक सफइ नहि जीती । निमिचर छल बल करइ अनोती  
 कोधवंत तय भयउ अनंता । भंजेउ रथ सारथी तुरता ॥  
 नाना विधि प्रहर कर सेवा । राज्छस भयउ मान अवसेषा ॥  
 राजनसुत निज मन अजमाना । संकठ भयउ देखिहि मम प्राना ॥

नील कंज तनु सुंदर स्नामा । हृदय राखु लोचनामिरामा ॥  
 मणि खपति कर हित आपना । छाड़ि नाथ मुग जलना ॥  
 देखत पहरि नगर जहि जाय । राखु पंथ को रोकन पार ॥  
 दसमुख कहे मरु वेहि सुना । पुनि पुनि कालनेमि सिद्ध हुना ॥  
 उहाँ दूत एक मरु जनावा । राखु कालनेमि यह आव ॥  
 राम चरन सरसिज उर राखी । चला प्रमंजनसुत बल भाषी ॥  
 कहे नाम निरि औषधी जाइ पवनसुत लेन ॥ ५५ ॥

दो-राम पदारविंद निर नाथ आइ सुधेन ।

धरि लख रूप गायत हनुमंता । आनेउ भवन समेत पुरंता ॥  
 जामवंत कहे ब्रह्म सुधेना । लंका रहै को पठई लेना ॥  
 तब लगी है आयत हनुमाना । अनुज देखि प्रभु अति दुख माना ॥  
 व्यापक ब्रह्म अजित भुवनेसर । लछिमन कहे ब्रह्म ककनाकर ॥  
 संझा भई निरि दौ बाहनी । लोसुभारन निज निज अनी ॥  
 यह कौतूहल जानइ सोई । जा पर कृपा राम कै होई ॥  
 सक संशय जाती को ताही । खवाह सुर नर अग जग जाही ॥  
 सुनु निरिजा कीधानल जासु । जाइ भुवन चारिदस आसु ॥  
 जगदाधार सेष किम उठि चले विविधआइ ॥ ५४ ॥

दो-सुवनाद सम कोटि सर जोधा रहे उठाइ ।

मुकजा भई सकि के लग्यो । तब चलि गायत निकट भय लग्यो ॥  
 धीरपातिनी जाहिंसि साँगी । तेज पुंज लछिमन उर लग्यो ॥

\* लंकाकाण्ड \*

मैं है मोर भूँला लग्य। महा मोह निशि सुत जाग्य ॥  
काल ब्याज कर भञ्जक जोई। सपनहुँ समर कि जीतिअ सोई ॥

दो०—सुनि दसकंठ विमान अति वेहिं मन कीन्ह विचार ।

राम दूत कर मरौ बरु यह खल रत मल भार ॥५६॥

अस कहि खल रतिचिस मग माया। सर भंडिर बर गगन बनाया ॥

माकतसुत देखा सुम आश्रम। मुनिहि बूझि जल पिप्यौ जाइ श्रम

राजस कपट बेष तहैं सोहा। मायापति दूतहि चहै मोहा ॥

जाइ पवनसुत नायउ माया। लग्य सो कहै राम गुन गाथा ॥

होत महा रन रावन रामहि। जितिहैहि राम न संसय या मरि ॥

इहौ भयुँ मैं देखुँ माई। प्यानदहि बल मोहि अपिबकाई ॥

मागा जल वेहिं दीन्ह कमंडल। कहे कपि नहि अघाउ थोरै जल ॥

सर मजन करि आवुर आवहु। दिच्छा देखुँ प्यान जेहि पावहु ॥

दो०—सर पैंठत कपि पद गाहा सकीं तब अकुलान ।

मायी सो धरि दिव्य वनु चली गगन चरि जान ॥५७॥

कपि तब दरस भइऊ निष्पाप। मिटा तार मुनिवर कर साया ॥

मुनि न होइ यह निमिचर धोरा। मानहुँ सत्य बचन कपि मोरा ॥

अस कहि माई अपछरा जगही। निमिचर निकट गयउ कपि तजही

कहे कपि मुनि गुरदछिना लेहै। पाछे हमहि भंज पुनह देखै ॥

सिर लंगूर लपेटि पछरा। निज वनु ग्राहहि मरती गरा ॥

राम राम कहि छाईसि गगना। सुनि मन देखी चलेउ हनुमाना

चहँ मम सायक सैल समेत । पठवौं तोहि जहँ कृपानिकेत ॥  
 ताल गहक होइ होहि जात । कछु नसाइ होत प्रभात ॥  
 जानि कुअसर मन धरि धरि । पुनि कपि सन गोले बल्योरा ॥  
 अहँ देव मैं कत जग जग्यु । प्रभु के एकहु काल न आयु ॥  
 कपि सन चरित समास बखाने । भए दुखी मन महुँ पछिताने ॥  
 ताल कुसल कहूँ सुखनिधान की । सहित अनुज अरु मातु जानकी ॥  
 प्रीति न हँदु ममाइ सुनिमारे राम रखिकल तिलक ॥ ५९ ॥

सो—जाने कपिहि उर लाइ पुलकित तब लोचन समल ।  
 सुगत बचन उठि बौड कपीसा । कहि जग जगति कोमलप्रीसा ॥  
 तौ कपि होउ विगत भ्रम सुख । जौ मो पर खिपति अनुकूल ॥  
 जौ मोरे मन बच अरु कया । प्रीति राम पद कमल अमया ॥  
 जौहि विविध राम विमुख मोहि कीन्हो । तोहि पुनि यह दारन दुख दोहा ॥  
 मुख मलीन मन भए दुखारी । कहै बचन भरी लोचन गरी ॥  
 विकल बिलोकि कीस उर जगा । जगत नहि बहूँ भौति जगावा ॥  
 सुनि प्रिय बचन भरत तब धाए । कपि समीप अति आनुर आए ॥  
 परे मुकछि मोहि जगत सायक । सुमिरत राम राम रखिनायक ॥  
 विषु कर सायक मारेउ चाप अवन जगि तानि ॥ ६० ॥

दो—देखो भरत बिसाल अति निमिचर मन अनुमानि ।  
 गाहे निरि निमि नम धावत मयक । अवधपुरी ऊपर कपि गयक ॥  
 देखो सैल न औषध चीन्हा । सहसा कपि उगारि निरि लीन्हा ॥



सुनि कपि मन उपजा अभिमाना । मोरें भार चलिहि किमि जाना ॥  
 राम प्रभाष निचारि बहोरी । बंदि चरन कह कपि कर जोरी ॥  
 टी०—तब प्रताप उर राखि प्रभु जैहूँ नाथ तुरंत ।

अस कहि आयसु पाइ पद बंदि चलेउ हेतुमंत ॥६० (क) ॥  
 भरत बाहु बल सील गुन प्रभु पद प्रीति अपार ।

मन माँ जात सराहत पुलि पुलि पवनकुमार ॥६० (ख) ॥

उहाँ राम लछिमनहि निहोरी । बोले बचन मनुज अनुसारी ॥  
 अर्ध राति गइ कहि कपि नहि आपउ । राम उठइ अजुज उर लपउ  
 सकहु न दृष्टिगत देखि माहि काक । बंधु सदा तब सहल सुभाक ॥  
 ॥ ॥ हित जाना तेहइ प्रियु माता । सहइ विप्रिन हिम आतप जाता

सो अनुसारा कहाँ अथ माई । उठहु न सुनि मम नच निकलइ  
 जौ जनतेउ बन बंधु बिछोई । पिता बचन मनतेउ नहि ओई ॥

सुत ब्रित नारि भवन परिवारा । होई जाहि जाग जाहि बारा ॥  
 अस निचारि जियु जगहु ताता । मिलइ न जात सहोदर जाता ॥

जया पंख बिजु खग अति दीना । मनि बिनु फनि करिअर कर होना  
 अस मम जिवन बंधु बिनु तोही । जौ जइ दैव जियावै मोही ॥

जैहूँ अवध कौन मुहु जइ । नारि हेतु प्रिय माइ माँवाइ ॥  
 वर अपजस सहतेउ जा माही । नारि होनि विषय छति नोही ॥

अन अपलोक सोकु सुत तोरा । सहिहि निहुर कठोर उर मोरा ॥  
 निज जानी के एक कुमारा । तात राखु उर मान अघारा ॥

जादूबा हरे आनि अब सठ चाहेत कल्याण ॥ २

दो-सुनि दसकंधर वचन सब कुंभकरन विख्यान ।

अपर महेदर आदिक बीरा । परे समर महि सब रजवीरा ॥  
 दुमुख सुरिपु मनुज अहेरी । मर आतिकाय अकपन मारी ॥  
 तात कपिन्ह सब निमिचर मारे । महे महे जोधा संघारे ॥  
 कथा कही सब तेहि अपिसानी । जेहि प्रकार सीता हरे आनी ॥  
 कुंभकरन वंझा कहु महु । काहे तब मुख रहे सुखाई ॥  
 जागा निमिचर देखिअ कैसा । मानहु काछ देहे धरि बैसा ॥  
 व्याकुल कुंभकरन पाहे आवा । विविध जतन करि ताहि जगावा ॥  
 यह वंजाल दसानन सुनेऊ । अति विषाद पुनि पुनि फिर धुनेऊ ॥  
 कपि पुनि भूद तहौ पहुँचावा । जेहि विविध तयहि ताहि लड़े आवा ॥  
 हरेयू लड़े प्रभु भूदेउ भाला । हरेय सकल मालि कपिआला ॥  
 वरत भूद तब कीन्ह उपाई । उठि भूदे लजिमन हरेबाई ॥  
 हरेय राम भूदेउ हनुमान । अति कृतम्यप्रभु परम सुजाना ॥  
 आइ गायड हनुमान जामि कहेना महु बीर राम ॥ ३१ ॥

सो-प्रभु प्रलाप सुनि कानविकल भए बानर निकर ।

उमा एक अखंड खुराई । नर गालि भाल कपाल देखेबाई ॥  
 यह विविध सोचत सोच विमोचन । खबर सलिल रोजिब दल लोचन ॥  
 उतक काह हैदेऊ तेहि जाई । उठि किन मोहि सिखावहु माई ॥  
 सौपसि मोहि वृहदहि गहि पानी । सब विविध सुखद परम हित जानी ॥

मल न कीन्ह तै निश्चर नाह। अब मोहि आइ जगएहि काह।  
 अजहूँ तात त्यागि अभिमाना। भजहुँ राम होइहि कल्याणा॥  
 हूँ दसवीस मनुज खिनयक। जाके हेतुमान से पायक॥  
 अहेइ बंधु तै कीन्हि खोटाई। प्रथमहि मोहि न सुनाएहि आई  
 कीन्हहुँ प्रभु निरोध तैहि देवक। सिव निरंजि सुख जाके सेवक॥  
 नारद मुनि मोहि ग्यान जो कहे। कहतेउँ तैहि समय निरवहा॥  
 अब भरि अंक भूँट मोहि भाई। लोचन सुफल करौ मैं जाई॥  
 त्याग गात सरसीकहे लोचन। देखौ जाइ ताप नय मोचन॥

दो०-राम रूप गुन सुमिरत मान भयउ छन एक।  
 रावन मातउ कोटि घट मट अरु मोहिष अनेक॥ ६३॥

महिष खडि करि मारि पाणा। गजौ ब्रजधात समाना॥  
 कुंभकरन दुर्भट रन रंगा। बला दुराँ बलि सेन न संगी॥  
 देखि विभीषण आगो आवउ। परउ चरन निज नाम सुनायउ॥  
 अजुज उठाइ दृढ़युँ तैहि लया। खपति भक्त जानि मन मायो॥  
 तात जल रावन मोहि मारा। कहत परम हित मंत्रविचारा॥  
 तैहि गजानि खपति पहि आयउ। देखि दीन प्रभु के मन आयउ॥  
 सुन सुन भयउ कालवस रावन। सो कि मान अब परम सिखावन  
 धन्य धन्य तै धन्य विभीषन। भयहुँ तात निश्चर कुल भूषन  
 बंधु बंधु तै कीन्ह उजागर। भजहुँ राम सोभा सुख सागर॥

दो०-बचन कर्म मन कपट बलि भजहुँ राम रक्षार।  
 जाहुँ न निज पर सख मोहि भयउ कालवस बौर॥ ६४॥

पुनि आपउ प्रभु पहि बलवाना । जयति जयति जय केपनिधाना ॥  
 गहेउ सरन गहि भूमि पछारा । अति लाघव उठि पुनि तेहि मारा  
 काटहि दसन नासिका काना । गरीज अकास चलेउ तेहि जाना  
 सुग्रीवहि कै मुकछा बीली । निबुकि गायउ तेहि सतक प्रतीली  
 मुकछा गइ माकतसित जगगा । सुग्रीवहि तब खोजन लगगा ॥  
 जग पावनि कीरति निस्तनिहहि । गाइ गाइ भवनिनिध नर तारिहहि  
 अर्कटि भुग जो कालहि खाई । ताहि कि सोहइ ऐसि लराई ॥  
 उमा करत खिपति नरलीला । खेलत गकइ जिमि अहिशन मोला

काँख दाहि कपिराज कहूँ चला आमत बल सौव ॥ ६५ ॥

दा०-अंदादाहि कपि मुहलित करि समेत सुग्रीव ।

चली बलीमुख सेन पराई । अति भय बसित न कोउ समुहहि ॥  
 पुनि नल नीलहि अवनि पछारिस । जहै तहै पटकि पटकि भट बहोरिस  
 पुनि उठि तेहि मारेउ दनुमता । जियुमत भूतल परेउ वुरता ॥  
 तब माकतसित मुठिका हेल्यो । परयो परनि व्याकुलसिर बुन्यो  
 सुर्यो न मनु तनु टरयो न टरयो । जिमि गज अकंकलनि को मारयो  
 कोटि कोटि तिरि सिखर प्रहरा । करहि भलि कपि एक एक गारा  
 लिपे उठाइ विटप अक भूधर । कटकटाइ डरहि ता ऊपर ॥  
 एतना कपिन्ह सुना जय काना । किलकिजहि धाए बलवाना ॥  
 नाथ भूधराकार सरार । कुंभकरन आवत रनधीरा ॥  
 बहु बचन सुनि चला विभीषन । आपउ जहै बैलेक विभूषन ॥

\* लंकाकाण्ड \*



राम सेन निज पाछे धाली। चले सकीप महे बलसाली ॥  
 सकसेन वचन सुनत भगवाना। चले सुधारि सरासन गाना ॥  
 कृपा आदिधर राम खरारी। पाहि पाहि प्रनतगति हारी ॥  
 यह निविचर दुकाल सम अहरे। कपिकुल देस परन अज चहरे ॥  
 चले भोगि कपि भालि भवानी। विकल प्रकारत आरत गानी ॥  
 भोगि भालि बलीमुख जोगा। बुरे बिलोकि जिय भोग बरुथा ॥  
 माहि पटकई राजराज इव सपथ करई दससीस ॥ ६९ ॥

दो०—महेनाद करि राजा कोटि कोटि गहि कीस ।

विकल बिलोकि भालि कपि धाए। बहरेसा जगहि निकट कपि आए।  
 सोनित खवल सोह तन करे। जनु कजाल बिचि रोके पनारे ॥  
 तनु महुँ प्रविधि निचरि सर जाही। जिय दामिनि धन माझ समाही ॥  
 पुनि धनु तानि कोपि खनयक। छुई आति कसल यह सयक ॥  
 आवत देखि सैल प्रभु मार। सरहि काटि राज सम करि डार ॥  
 कोपि महीधर लेई उपासी। डारइ जहूँ मकट भट मारी ॥  
 भा अति क्रुद्ध महेबल बौरा। कियो मुगनायक नाद गौरा ॥  
 कुंभकरन मन दीख निचारी। होत छन माझ निखावर धारी ॥  
 पुनि रघुवीर निषाग महुँ प्रविसे सब नाराच ॥ ६८ ॥

दो०—छन महुँ प्रभु के सायकान्ह काटि निकट प्रिसाच ।

कंड प्रचंड मुंड निज धावहि। धर धर मार मार धुनि गावहि ॥  
 लगत वान जलद जिय गजहि। बहृतक देखि कठिन सर भज ॥

# \* रामचरितमानस \*

माक कान काटे जियु जानी । फिर कोष करि भई मन लजनी ॥  
सहेज भीम पुनि विजु अति नासा । देखत कपि दल उपजी नासा ॥  
दो-जय जय जय खड्गसमनि धार कपि है हूँ ।

एकहि बार तासु पर छावैन्हि निरि तर जूँ ॥ ६३ ॥

कुंभकरन रन रंग विकटा । समुख चला काल जनु कुटा ॥  
कोटि कोटि कपि धरि खाई । जनु टीढ़ी निरि गुहौ समाई ॥  
कोटिन्ह गहि सरि सन मदी । कोटिन्ह मीजि मिलव मदि मदी ॥

मुख नासा अवनहि की गाटा । निसरि पराहि भाउ कपि ठाटा ॥  
रन मर मर निरावर दया । निख ग्रासहि जनु एहि विधि अपा ॥  
मुरे सुमट सब फिरि न करे । सूँझ न नयन सुनाहि नहि रेरे ॥

कुंभकरन कपि फौज विहारी । सुनि धाई रजनीचर धारी ॥  
देवी राम विकल कटकाई । रिपु अनीक नाना विधि आई ॥

दो-सुख सुधीव विभीषन अजुन समोहै सेन ।

मैं देखूँ खल बल दंढहि बोलै गोजिवन ॥ ६० ॥

कर सारंग साज कटि भाषा । अरि दल दलन चले खनाया ॥  
प्रथम कीन्ह प्रभु धनुष टूकोरा । रिपु दल वधि मयउ सुनि सेरा ॥  
सयसंघ छाँहै सर लज्जा । कालसपु जनु चले सपज्जा ॥  
जहँ तहँ चले विपुल नाराचा । लो कटन मट विकट पिखाचा ॥  
कटहि चरन उर सिर भुजदंडा । बहूतक और होहि सब खंडा ॥  
बुझि बुझि बायल मदि परही । उठि संभारि सुमट पुनि लखही ॥

ॐ-संश्राम भूमि विराज रघुपति अगुल बल कोसल धनी ।  
अम विंदु मुख राजीव लोचन अनेन वन सोनिव कनी ॥  
सुख जगल करत सर सरासन भाजु कपि चहुं दिक्षि बने ।  
कहे दास गुलसी कहि न सक जनि सेष बेहि आनन घने ॥

दो-निखिचर अथम मलकर ताहि दीन्ह निज धाम ।

मिरिजा ते नर मंदमतिजे न भजहि श्रीराम ॥ ७९ ॥

दिन के अंत किरी दोउ अनी । समर मई सुमटन्ह अस घनी ॥

राम कपू कपि दल बल गाढ़ । जामि तेन पाइ लगि अति डहं ॥

छाजाहि निखिचर दिनु अक राती । निज मुख कहै सुकेत जेहि भूती

मई बिलप दसकंधर करई । बंधु सीस पुनि पुनि उर धरई ॥

नेवहि नारि हृदय होति पानी । तासु तेज बल विपुल बखानी ॥

मथनाद तेहि अवसर आयउ । कहि बहू कथा पिता समुझायउ ॥

देखैहु कालि मारि मनुसाई । अबाहि बहूत का करौ बड़ाई ॥

देखैव सै बल रथ पायउ । सो बल तात न तोहि दे जगयउ ॥

पहि विधि जलत मयउ विहंगी । चहुं दुआर लगी कपि नानी ॥

नि कपि भाजु काल सम बीरा । उत रजनीचर अति रनधीरा ॥

अरहि सुमट निज निज जय हेतु । भरनि न जाइ समर खराकेतु ॥

दो-मथनाद मायामय रथ चहि गयउ अकास ।

गजउ अट्टहास करि मई कपि कटकहि आस ॥ ७२ ॥

अकि सूल तरवारि कपानी । अख सख किलिखयुध नानी ॥



डारइ परस परस पाषाण। जगोज बूझि कै बूझ गाना ॥  
 दस दिखि रहे गान नम छुई। मानहुँ मया मेघ झरि लई ॥  
 धक धक माक सुनिअ धुनि काना। जो मारइ तेहि कोउ न जाना ॥  
 गहि गिरि तरु अकास कपि धावहि। देखहि तेहि न दुखित फिरि आवहि ॥  
 अवधट घाट घाट गिरि कंदर। माया बल कीन्हैस सर पंजर ॥  
 जाहि कहौ व्याकुल भए बंदर। सुरपति बंदि परे जनु मंदर ॥  
 माकलसुत अंगद नल बोल। कीन्हैसि निषकल सकल बलसौल ॥  
 पुनि लछिमन सुग्रीव निभावन। सरनि मारि कीन्हैसि जंजर तन ॥  
 पुनि खपति सैं बूझै जग। सर छुईइ होइ लगहि नग ॥  
 ब्याल पास पास भए खरापी। स्वयस अनंत एक अधिकारी ॥  
 नट डेव कपट चरित कर नाना। सदा स्वतंत्र एक भगवाना ॥  
 रन सोभा लीग प्रभुहि बूधायो। नागपास देवन्ह भय पायो ॥  
 द्रो-गिरिजा आसु नाम अपि सुनि कटहि भव पास।  
 सो कि बंध वर आवइ व्यापक बिस्व निवास ॥ ७३ ॥  
 चरित राम के समुन भगानी। तर्कि न जाहि बुद्धि बल गानी ॥  
 अस निचारि जे लय निरग। रामहि भजहि तर्क सब त्यागी ॥  
 व्याकुल कटक कीन्ह धननाथ। पुनि मा प्रगट कहइ दुयोथ ॥  
 जामवंत कह खल रहि ठाढ़। सुनि करि ताहि कोष अपि याढ़ ॥  
 बूझै जानि सट छुईउ तोढ़ी। लगहि अपय पचारि मोढ़ी ॥  
 अस कहि तरल निधूल चलायो। जामवंत कर गहि सोइ पायो ॥

मय प्रताप उर धरि स्तवीय। बोलि जन देव निग गीये ॥  
 जग खरीर दीन्ह अजसल। कटि निषंग कसि साजि ससल  
 जामवंत सुग्रीव निमीषन। सेन समेत रहेहु लीनउ जन ॥  
 मरिहू रोहि जल डूबि उगई। बहि छीज निषिक्क सुन मरिहू ॥  
 गुन लछिमन मरिहू रन ओही। देखि समग्र सुर द्रव्य अति मोही ॥  
 लछिमन संग जाहु सब मरिहू। करहु विषस जग कर जाहु ॥  
 सुनि सुगति आनख सुख माना। बोलि अंगदाहि कपि नाना ॥  
 जी मय सिद्ध होइ सो पाइहि। नाथ बेनि पुनि जीनि न जाइहि ॥  
 मेघनाद मख करइ अपावन। जल मायावी देव सतजन ॥  
 इहौ निमीषन मंत्र विचारा। सुनहु नाथ जल अजल उदारा ॥  
 गुन गायत निरिधर कंदरा। कसौ अजय मख अस मन धरा ॥  
 मेघनाद कै भुलजा जग। पिरहि बिलोकि लज अति लगनी ॥  
 बले लमीचर विकलतर गां पर चरै पराई ॥ ७४ ॥ (ब)

गाहि निरि पादप उपल नख धारु कोस सिखाइ ।

माया विगत मय सब देखे जानर ज्ये ॥ ७५ ॥ (क)

दी०-जागपति सब धरि लाग माया नाग बह्य ।

इहौ देवनिष गावड़ पठायो। राम समीप सगदि सो आयो ।  
 पर प्रसाद सो मरइ न मारा। तब गाहि पद लंका पर डारा ।  
 पुनि रिखन गाहि चरन पिययो। मरि पछारि निज जल देखरायो ।  
 मारि मेघनाद कै छाती। परा भूमि वृषिंत सुरवाती ।

दो०-रघुपति चरन नाहं सिद्ध चलेउ वरुन अनंत ।

अंगद नील मयंद नल संग सुमट हनुमंत ॥ ७५ ॥

जाइ कपिनह सी देखा बैसा । आहुति देत वीर अरु भूषा ॥

कीन्ह कपिनह सब जग्य विषंसा । जय न उठइ तब करहि प्रसंसा ॥

तदपि न उठइ धरिह कच जाई । लालन्ह देति हलि चले पराई ॥

है निखल धाया कपि भगो । आय जहै रामानुज आगे ॥

आवा परम कोष कर मारा । गर्ज धोर रघु बगरहि बारा ॥

कोपि मकरसुत अंगद धाप । हलि निखल उर धरनि विराट ॥

प्रभु कहै छुड़ौषि सूल प्रचंड । सर हलि केत अनंत जग खंडा ॥

उठि गहोरि माकलि जुराजा । हठाई कोपि तेहि धाउ न राजा ॥

फिरे वीर रिपु मरइ न मारा । तब धावा करि धोर चिकारा ॥

आगत देखि भुंइ जग काल । लछिमन छाई विविध कराला ॥

देखेसि आवत पति सम जाना । वुरत मयउ खल अंतरधाना ॥

विविध वैष धरि करइ लराई । कबहुँक प्रगट कबहुँ दुरि जाई ॥

देखि अजय रिपु हरये कीसा । परम कृद तब मयउ अहीसा ॥

लछिमन मन अस मंत्र दंडावा । एहि पापिहि मंत्र दंडत खेलावा ॥

सुमिरि कोसलाधीस प्रताप । सर संधान कीन्ह करि दाप ॥

छाई जान माझ उर लया । परती मार कपट सब त्यागा ॥

१०-यामात्र कहे राम कहे अस कहे जेहेसि प्रान ।

धन्य धन्य तव जननी कहे आमां हेवसान ॥ ७६ ॥

जु प्रयास हेनुमान उठायो । लंका दारराखि पुनि आयो ॥  
सि मरन सुनि सुर रांघवा । चरिं निमान आए नम सर्वा ॥  
रखि सुमन दुहुमां राजावहि । श्रीरघुनाथ निमल जस गावहि ॥

प्र अनांत जय जगदाधरा । तुम्ह प्रभु सब देवनि निसारा ॥  
मखलि करि सुर सिद्ध सिधाए । लछिमान कपासिधु पहि आए ॥  
रत वध सुना दसानन जगदी । मुखलिन मयउ परउ महि तबही ॥  
मदीरी कदन कर मारी । उर ताडन बहू मालि पुकारी ॥  
मार लोम सब व्याकुल सीचा । सकल कहहि दसकंधर पोचा ॥

१०-तब दसकंठ विविध विविध समुझाई सब नारि ।

नखर रूप जगत सब देखई देखू विचारि ॥ ७७ ॥

तेन्हहि स्थान उपदेसा रावन । आपुन मद कथा सुम पावन ॥  
पर उपदेस कुसल बहुरे । जे आचारहि ते नर न धनरे ॥  
निषा सिरानि मयउ मिमसारा । लो माछ कपि चारिहु दारा ॥  
सुमट बोलाइ दसानन बोला । रन समुख जा कर मन डोला ॥

षी अजहो नर जाउ पराई । सज्जग निमुख मरु न मजहई ॥  
निज मुज बल सँ बंधक बंधावा । देहू उतर जो रिपु चरिं आवा ॥  
अस कहि मरत दोम राध साजा । बाजे सकल उद्दामा राजा ॥  
चले वीर सब अखिलत गली । जन कजल कै आधी चली ॥

असुनि अमित होहि तेहि काल। गनइ न मुज बल गनु बिबाज।।  
 छं—अलि गव गनइ न सुनि असुनि सबहि आयुष होय ते ।  
 भट निरत रय ते बाजि गज चिकरत आजाहि सय ते ॥  
 गोमाय गीष कराल खर खर खान बोजहि अलि धन ।  
 जनु कालदस उलक बोजहि बचन परम भयावन ॥  
 द्रो—बाहि कि संपति सुनि सुम सपनहु मन बिश्राम ।  
 भूष होइ रत मोहवस राम विमुख रति काम ॥ ७८ ॥

बलेउ निखार कटक अपरा। चतुरंगिनी अनी बह धारा ॥  
 विविध भालि बहिन रय जाना। विपुल वरन पलाक खज नाना ॥  
 चले मत्त गज जूय धनै। प्राविट जलद मकत जनु धेरे ॥  
 वरन वरन विरदैत निकाया। समर सर जानहि बह माया ॥  
 अलि विचित्र बाहिनी विराजा। वीर बसत सेन जनु सजा ॥  
 बलत कटक दिगसिधुर जगहो। छुमिअ पयोधि कुपर जगमाहो ॥  
 उठी रेनु रीच गयउ छपाइ। मकत थाकित वसुधा अकुलहि ॥  
 पनव निखान धोर ख बोजहि। प्रलय समय के धन जनु गाजाहि ॥  
 भेरि नफीरि राज सहनहि। मारु राग सुभट सुखदाइ ॥  
 केहरिनाद वीर सब करहो। निज निज बल पौष उचरहो ॥  
 कहरइ दसानन सुनइ। सुमझा। मरुइ भाउ कपिल के ठडा ॥  
 हो माहिहउ भूष हो। अस कहि समुल पौन रोगाइ ॥  
 परइ सुनि सकल कपिल जग पाइ। पाए करि रघुवीर दोहाइ ॥

४०-धार् विमल कराल मकट भाति काल समान ते ।

मानहुँ सफच्छ उज्जहिँ भूधर बुढ़ नाग बान ते ॥

नल दंसन सैल महाहिमायुध सबल सक न मानहुँ ।

जय राम रावन मत्त गज संगाराज सुजसु ब्रह्मवर्ही ॥

४१-हुँहुँ विंसि जय जयकार करि निज निज जोरी जानि ।

मिरे बीर डोल रामहि उत रावनहि ब्रह्मनि ॥७१॥

रावज रथी विरथ खीरीग । देखि विभीषन भयउ अधीर ।

अधिक प्रीति मन भा सदेह । बंदि चरन कहे सहित सनेह ।

नाथ न रथ नहिँ तन पद गाना । केहि बिधि जितब बीर बलवान

सुनहुँ सखा कहे कथानिधाना । जहिँ जय होइ सो स्थदन आन

सौख्य धीरज तेहि रथ चाका । सत्य सील दह ध्वजा पताका ।

बल विवेक दम परहित धीरे । छमा कपा समता रजु जोरे ।

हुँस भजज सरथी सुजाना । विरति चम संगीष कथाना ।

दान परसु बुधि सकि प्रबडा । गर विद्यान कठिन कोदडा ।

अमल अचल मन ज्ञान समाना । सम जस नियम सिलीमुख नान

कवच ओम्बद विप्र गुर पूजा । एहि सम विजय उपाय न दूजा ।

सखा धूममय अस रथ जाके । जाँतन कहूँ न कतहुँ रिपु ताके ।

४२-महा अजय संसार रिपु जीति सकइ सो बीर ।

जाके अस रथ होइ दह सुनहुँ सखा मातिधीर ॥७०॥

सुनि प्रभु बचन विभीषन हरिष गहे पद कंज ।

एहि मित्र मोहि उपदेसहुँ राम कपा सुख पुंज ॥७०॥

उत पचन वृषकधर इव अगद इवमान ।

उतर निराचर भुजि कपि निज निज प्रभु आन ॥ ८० (ग) ॥

सुर प्रजादि सिद्ध मुनि गाना । देखत रन नय चहै विमाना ॥  
 हेमई उमा रहे रोहिं सभा । देखत राम चरित रन रंगा ॥  
 सुमट समर रस दुहुँ दिशि माते । कपि जयसील राम बल ताते ॥  
 एक एक सन भिरहि पचारहि । एकन्ह एक मरि मरि पारहि ॥  
 मारहि काटहि धरहि पछारहि । सीस तोरि सीसन्ह सन मारहि ॥  
 उतर बिदारहि भुजा उपारहि । गहि पद अगनि पटक मट जारहि ॥  
 मट मरि गारहि भाइ । ऊपर ठारि देखि मरि मरि वार ॥  
 धीर बलीमुख जुद्ध बिकट । देखिअत विपुल काल जनु कैट

७०-कैट कृतान्त समान कपि रन खवत सोनित राजहो ।

मरिहि निराचर कटक मट बलवत धन जिमि गजहो ॥

मारहि चपटन्ह डारि दातन्ह काटि जातन्ह मीजहो ।

बिकरहि मकट भुजि छल बल करहि बेहिं खल छीजहो ॥ १ ॥

धरि गाल फारहि उर बिदारहि गाल अवाचारि मोलहो ।

प्रह्लादपति जनु विविध वज्र धरि समर आगन खलहो ॥

धरु मारु काटि पछार धीर गिरा गान मरि मरि रही ।

जय राम जो रन ते कुलिस कर कुलिस ते कर रन सहो ॥ २ ॥

दो-निज दल विचलत देखिषी बीस भुजा दस बाण ।

रथ धरि चलेउ दसमान फिरि फिरि करि दण ॥ ८१ ॥

सब सब सर सार दस भाला । गिरि संगह जनु प्रविष्टहि ज्वाला ।  
 पुनि निजवान्है कीन्ह प्रहरा । स्यंदनु भोजि सरयी मारा ।  
 कीन्ह आयुष रावन डरे । तिल प्रवान करि काटि निवारि ।  
 अस कहि छाड़िसि वान प्रचंडा । लछिमन किए सकल सब खंडा ।  
 खोज रहै तोहि सुतवासी । आबु निपाति जुड़वउ छाती ।  
 दे खल का मरिसि कपि भाले । मोहि बिलोकु तेर मैं काखे ।  
 लछिमन चले कैद होइ नाइ राम पर माय ॥ ८२ ॥

दो०-निज दल निकल देखि कटि कांसि निपग वनु दाय ।  
 रघुवीर करन सिंधु आगत वधु जन रच्छक होइ ।  
 भयो अति कोलाहल विकल कपि दल भाले बोलहि आनंद ।  
 रहे पुर सर धरनी गगन दिसि बिदिसि कहै कपि भगदौ ।  
 छ०-संधानि धनु सर निकर छाड़िसि उरग जामि उडि लगदौ ।  
 वेहि देखे कपि सकल पराने । दसहुँ चाप-सायक संधाने ॥  
 पाहि पाहि रघुवीर गोसाई । यह खल खाइ काल की नाई ॥  
 चले पराई भाले कपि नाना । जाहि जाहि अंगद हेनुमाना ॥  
 डोल उत झपटि दपटि कपि जोधा । मरै लग मयउ अति कोधा ॥  
 चला न अवल रहा रघु रोपी । रन दुमद रावन अति कोपी ॥  
 लगहि सैल वज्र तन तास । खंड खंड होइ फुटहि आस ॥  
 गहि कर पादप उपल पहरा । जगिन्ह ता पर एकाहि चारा ॥  
 धावउ परम कैद दसकंधर । समुख चले हरे दे बंदर ॥



पुनि सत सर मारा उर माहीं । परेउ परनि तल सुधि कछु नाहीं ॥  
 उठा प्रबल पुनि मुकछा जगि । जहिंसि ब्रह्म दीन्हि जो सौगी ॥  
 छं-सौ ब्रह्म दंत प्रचंड सत्कि अनंत उर जगि सही ।  
 परगो वीर बिकल उठाव दंसमुख अजल बल महीमा रही ॥  
 ब्रह्मांड भवन विराज आकें एक सिर जिमि राज कनी ।  
 ब्रह्मि बह उठावन मूर्छ रावन जान नहिं विमुअन धनी ॥  
 द्रो-देखि पवनसुत धायउ बोलत बचन कठोर ।

आवन कपूहि हन्यो ब्रह्मि मुनि प्रहार प्रघोर ॥८३॥

देकि कपि भूमि न गिरा । उठा सूमारि बहूत विष मरा ॥  
 एक ताहि कपि मारा । परेउ सैल जगु ब्रह्म प्रहारा ॥  
 मुकछा गे बहोरि सो जगि । कपि बल विपुल सराहन जगि ॥  
 विरा विरा मम पौकिय विरा माही । जाँ तैं विअत रहसि सुरद्रोही ॥  
 अस कहि लछिमन कहूँ कपि त्यागो । देखि दसानन विषमय पायो  
 कहि रघुवीर समुझि जिय आता । पुन्हि कर्तात मञ्जुक सुर जाला ॥  
 सुनत बचन उठि बैठ कपाळा । माई गगन सो सकति कराला ॥  
 पुनि कोदंड गान गहि धाए । रिपु समुख अति आतिर आए

छं-आतिर बहोरि विभंजि स्पंदन सुत हति व्याकुल किया ।  
 गिरायो परनि दंसकंधर बिकलतर गान सत बेधयो हियो ॥  
 सारथी दंसर धालि रथ ब्रह्मि जुरल लंका ले गया ।  
 रघुवीर बहु प्रताप पुंज बहोरि मय चरनहि नयो ॥

१०-उहो दसानन जाति करि कै जग जग ।

राम विरोध विजय चहै सठ हठ बस अति अय ॥८४॥

हो विभीषन सब सुधि पाई । सपदि जाइ रघुपतिहि सुनाई ॥

य करइ रावन एक जग । सिद्ध मरू नहि मरिहि असग ॥

ठवहि नाथ बेगि मट बंदर । करहि विधंस आव दसकंधर ॥

त होत प्रभु सुमट पठाए । दनुमदादि अंगद सब धाए ॥

वैविक कैंदि चहै कपि लंका । पैं रावन भवन असंका ॥

प्राय करत जगहो सो देखा । सकल कपिन्ह मा कोष बिसेपा ॥

न ते निजज भाजि गइ आवा । इहो आइ वकस्यान लगावा ॥

प्रस कहि अंगद मारा जग । चितवन सठ खरथ मन राता ॥

१०-नहिं चितव जव करि कपि गहि दसन लावन मारहो

धरि कैस नारि निकारि बाहेर बेतिदोन पुकारहो ॥

तब उठउ कृष्ण कंवत सम गहि चरन बानर डारहो ।

एहि बीच कपिन्ह विधंस कृत मख देवि मन मरू डारहो ॥

१०-जग विधंसि कुसल कपि आए रघुपति पास ।

चलेउ निराचर कृष्ण होइ त्यागि जिवन कै आस ॥८५॥

चलत होहि अति असुम भयंकर । बौठहि गीध उड़इ सिरह पर ॥

भयउ कालवस काहु न माना । कहेसि राजावहु बुद्ध निमाना ॥

बली तभीचर अनी अपारा । गहु राज रथ पदाति असवारा ॥

प्रभु सन्मुख धाए खल कैस । सलम समूह अनल कहै बिस ॥

वानर निषाचर निकर मर्दहिं राम बल दंष्ट्रिं अरु ।  
संग्राम अंगन सुभट सोवहिं राम सर निकरनिहं हारु ॥

दो०-रावन हृदय विचारा भा निषाचर संघार ।

सं अकेल कपि भाछि बहू माया करौ अपार ॥ ८८ ॥

देवद प्रभुहि प्याहं देवा । उज्जवा उर अति छेप निषेग ॥  
सुरपति निज रथ उरत पठावा । हेरथ सहित मातलि लै आवा ॥

तेज पुंज रथ दिव्य अर्जुण । हेरथ चहं कोसलपुर भूषण ॥  
बचल वृरा मानहेर चारी । अजर अमर मन सम गतिकारी ॥

रथारूढ रथनाथहि देवा । धार कपि ब्रह्म पाहै निषेग ॥  
सही न जाह कपिन्ह कै मारी । तब रावन माया निक्षारी ॥

सो माया रथवीरहि गौची । लछिमन कपिन्ह सो मानी सौची ॥  
देवा कपिन्ह निषाचर अनी । अनुज सहित बहू कोसलधनी ॥

छं-बहू राम लछिमन देवि मकूट भाछि मन अति अपहरे ।  
जय विजय लिखित समेत लछिमन जाहू सो बहू चितवहिं सरे ॥

निज सेन चकित विजोकि हूँसि सर बाण सजि कोसल धनी ।  
माया हरी हरे निमिष महुँ हेरपी सकल मकूट अनी ॥

दो०-बहुति राम सब तन चितह बोलै बचन गौरी ।

हृदयहृद देवद सकल अभित अरु अति वीर ॥ ८९ ॥

धम कहि रथ रथनाथ चलावा । निम सरन पंकज सिद्ध नाला ॥  
तब लंकेश कोष उर छावा । गजत रजत समुल धाला ॥

शिष्टे जे भट संजग माहीं। सुनु तापस मै पितृ सम नाहीं ॥  
 जवन नाम जगत जस जाना। लोकप जाके बंदीखाना ॥  
 वर दूषन विराध ठुम्ह मारा। बंधेहुँ व्याध डेव गालि निचारा ॥  
 नसिचर निकर सुभट संघारेहुँ। कुंभकरन धननादहि मारेहुँ ॥  
 आबु अयक सब जेऊँ निबाही। जाँन भूष माजि नाहि जाही ॥  
 आबु करतूँ खलु काल देवाले। परेहुँ कठिन रावन के पाले ॥  
 सुनि दुर्वचन काल अस जाना। बिहूँसि बचन कहे कृपा निधाना ॥  
 सत्य सत्य सब तब प्रभुताई। जल्पसि जानि देखत मनुसाई ॥  
 ४०-जनि जल्पना करि सुजसु नासहि नीति सुनाहि करहि छमा।  
 संसार महुँ पूरेष विविध पाटल रसाळ पनस समा ॥  
 एक सुमनप्रद एक सुमन फल एक फलइ केवल जागही।  
 एक कहहि कहहि करहि अपर एक करहि कहत न बागही ॥  
 ४०-रास बचन सुनि बिहूँसा मोहि सिखावत यान।

बयस करत नाहि तब डरे अब जगो प्रिय प्रान ॥ ४० ॥  
 काहे दुर्वचन कहुँ दसकंधर। कुलिस समा न जग छुई सर ॥  
 नानाकार सिलीमुख धाप। दिसि अक। धरिसि गगन माहि छापा  
 पावक सर छुईउ खजीरा। छन महुँ जरे निसाचर वीरा ॥  
 छाडिसि वीर सति विरसिआई। यान संग प्रभु फेरि चलाई ॥  
 चक निसल प्यारै। बिनु प्रयास प्रभु काटि निवारै ॥  
 निफल होहि रावन सर कैसै। खल के सकल मनोरथ जैसै ॥

तत्र सत यान सारथी मारुति । परोक्ष भूमि जय राम पुकारिषि ।  
 राम कृपा करि सुल उठवा । तब प्रभु परम कीध कहूँ पण ।  
 ६०-भए कौन्त्र जुद्ध विरुद्ध रघुपति गोन सायक कसमसे ।  
 कोदंड धनि अति चंड सुनि मज्जित सब मारत प्रसे ॥  
 मंदोदरी उर कंफ कण्ठि कमठ भूँ भूँ पर प्रसे ।  
 निरुद्धि दिग्गज दंसन गहि माहि देखि कौतुक सुरहसे ॥  
 द्यौ-वादीच चाप शवन जगि छुई विविध कराल ।

राम मारगन गन चले लहेलहेल जनु द्याल ॥ ९१ ॥  
 चले गोन सपच्छ जनु उरगा । प्रथमहि देवेउ सारथी दुरगा ॥  
 २५ विभंजि देति केतु पताका । गजार् अति अंतर बल याका ॥  
 दुरत आन रथ चारि विविध आना । अख सब छुईसि विधि नाना  
 विफल होहि सब उद्यम ताके । जिन परद्रोह निरत मनसा के ॥  
 तब रावन दस सुल चलावा । गजि चारि माहि मारि निरावा  
 दुरगा उठाइ कोपि रघुनाथक । खैचि सरसन छुई सायक ॥  
 रावन सिर सरोज बनचारी । चलि रघुनाथ सिलीमुख धारी ॥  
 दस दस गन माल दस मारे । निरसि गए चले कंधार पनारे ॥  
 खवल कंधार धायउ बलवाना । प्रभु पुनि केत धनु सर संधाना ॥  
 तीस तीस रघुनाथ पनारे । मुजनिह समेत सीध माहि पारे ॥  
 काटवहौ पुनि भए नवीने । राम बहोरि मुज निर छीने ॥  
 प्रभु बहूँ बार बहूँ सिर हए । कटत क्षिति पुनि नैन भए ॥

पुनि पुनि प्रभु काटत भुज सीसा । आनि कैवली कोमलधासा ॥  
 रहे छाड़े नय सिर अक गार्ह । मानहुँ आभत कुतु अक राहुँ ॥  
 छं-जनु राहुँ कुतु अनेक नय पय सवत सोनिन यावहीं ।  
 रघुवीर तीर पचंड जगहिँ भूमि निरन न पावहीं ॥  
 एक एक सर सिर निकर डैरे नय उज्जव डंसि सोहहीं ।  
 जनु कोपि दिनकर कर निकर जहूँ तहुँ विजुंजुं पावहीं ॥  
 द्यो-जिमि जिमि प्रभु हर वासु सिर जिमि जिमि होहिँ अपार ।  
 सेवत विषय विषय जिमि निव निव नूनन मार ॥ १२ ॥  
 दसमुख देखि सिरन्ह कै गार्ह । निरसा मरन मई रिम गार्ह ॥  
 गजेंद्र मई मही अपिमानी । जगज दसह सगरन तानी ॥  
 सम भूमि दसकंधर कोन्यो । गरुड गान रघुपति रग रोच्यो ॥  
 दंड एक रग देखि न परेऊ । जनु निहार महुँ दिनकर हरेऊ ॥  
 दंडाकार सुरन्ह जग कोन्यो । तन प्रभु कोपि करमुख लीन्यो ॥  
 सर निवारि रिपु कै सिर काटे । ते दिवि विटलि गगन महि पाटे  
 काटे सिर नय मारग पावहिँ । जग जग धुनि करि मय उपजवहिँ  
 कहूँ ललिमन सुगौल कपोसा । कहूँ रघुवीर कोमलधासा ॥  
 छं-कहूँ रासु कहि सिर निकर पाए देखि मकंद भनि चले ।  
 संधानि धनु रघुवंसनि हंसि सरनिह सिर बेधे मले ॥  
 सिर माळिका कर काळिका गहि डंड डंडन्हि वहुँ सिधो ।  
 करि संधार संधि मजनु मगहुँ संधाम वट पूजन चली ॥

दी०-पुनि दसकं ऋद्धं होइ छाँडी सकि प्रबद्ध ।

बली विभीषण समुख मनहुँ काल कर दंड ॥९३॥

आगत देखि सकि आनि धोरा । प्रनगरनि भंजन एन मोरा ॥

पुरत विभीषण पाछे भेला । समुख राम सहैउ सोइ सेला ॥

जगि सकि मुखला कछु भई । प्रभु कैल खेळ सुरह विकलई ॥

देखि विभीषण प्रभु भ्रम पायो । गहि कर भाटा कुद्ध होइ पायो ॥

रे कृपाव्य सठ भद्र कुबुद्ध । तँ सुर नर मुनि नग निबद्ध ॥

सादर सिव कहूँ सोस चढ़ाए । एक एक के कोटिन्ह पाए ॥

बेहि कारन खल अब लजि गौच्या । अब तव काछि सोस पर गौच्या ॥

राम विमुख सठ चढ़सि संपदा । अस कहि होइसि माझ उर गादा ॥

छं०-उर माझ गादा प्रहार धोर कठोर जगल माहि परयो ।

दस वदन सोनिन खबर पुनि संभारि धाया विस भयो ॥

हो भिरे अतिवत्त मखजुद्ध बिबद्ध । एऊ एकहि होइ ॥

रघुबीर बल दंपति विभीषणु धालि बहिँ वा कहूँ गनै ॥

दी०-उमा विभीषणु रावनहि समुख चितव कि काउ ।

सो अब भिरव काल जग्य श्रीरघुबीर प्रभाउ ॥ ९४ ॥

देखा अतिव विभीषणु भयो । धाएउ दनुमान गिरि धायो ॥

रथ पुरंग सारथी निपाता । दुर्योध माझ होइ मरोसि जता ॥

ठाढ़ रदा अति कंठित गाता । मथउ विभीषणु जहै जनगाता ॥

पुनि रावण कपि द्रोउ पचायो । चलेउ रागन कपि पूछ पचायो ॥

ॐ-जाना प्रताप ते रहे निभय कपिल रहि माने फरे ।  
 सबे विचलि सकट माछि सकल कृपाल पाहि मयावरे ॥  
 रहे विरंचि संसु मुनि यानी । विनह विनह प्रभु महेमा कह्यु जाने  
 सब सुर जिते एक दसकंधर । अब बह्यु गए तकरु निरि कंदर  
 जे सकल सुर चले पराई । जय कै आस तजहु अब मरि ॥  
 दहूँ दिखि धावहि कोटिन्ह रावन । राजाई धोर कठोर मयावन ॥  
 मगि जानर धरहि न धीरा । जाहि जाहि लजिमन खड्गारा ॥  
 देवे कपिलह अमित दसवीसा । जहूँ तहूँ मजे माछि अक कोसा ॥  
 खपति कटक माछि कपि जेते । जहूँ तहूँ प्रगट दसानन तेते ॥  
 अंतरधान मयउ जन एका । पुनि प्रगटे खल रूप अनेका ॥  
 कपि बल प्रबल देखि तेहिं कीन्ह प्रगट पावहु ॥ १५ ॥  
 १०-तव रघुवीर पचारि धार कोस प्रचंड ।  
 रन मन रावन सकल सिधत प्रचंड भुज बल दलमले ॥  
 हनुमंत सकट देखि सकट माछि कोषावर चले ।  
 माहे परत पुनि उठि लख दैवन्ह जुगल कहूँ जय जय मन्या ॥  
 ॐ-समाधि श्रीरघुवीर धीर पचारि कपि रावहु दन्या ।  
 बुधि बल निरिधर परई न पारयो । तब साकतसुत प्रभु संभारयो ॥  
 सोहहि नम उल नल बह्यु करहो । कज्जलगिरि सुमेरु जनु लहरौ ॥  
 लख अकास जुगल सम जोषा । एकहि पक्षे हेतव करि कोषा ॥  
 गहिहि पूछ कपि साहेव उड़ना । पुनि फिरि भिरेउ प्रबल हनुमान ॥



हनुमंत अंगद नील नल आविबल लल रन बाँक्ये ।  
मर्हि दसानन कोटि कोटिन्ह कपट भू भट अंक्ये ॥

दो०—सुर वानर देखे बिकल हँस्यो कोखलाधीस ।

सजि सारंग एक सर हवे सकल दसवीस ॥ १६ ॥

प्रभु जनमहुँ मया सब काटी । जिमि रीते उएँ जाहि तम फाटी ।

रावन एक देखि सुर हस्ये । फरे सुमन बहु प्रभु पर बरस्ये ॥

भुज उठह रह्यपति कपि फरे । फरे एक एकन्ह तन दरे ।

प्रभु बल पाइ भाछि कपि धाए । तरल तमकि संजुग महि आए ॥

अखलि करत देवगन्ह देखे । मयउँ एक सँ इन्ह केलेवे ॥

सठह सदा वरह मोर मरगल । अस कहि कोपि गगन पर धायल ।

होहोकार करत सुर भगो । खलहुँ जाहुँ कहूँ मोरुँ आगे ॥

देखि बिकल सुर अंगद धायो । कौटि चरन गहि भूमि निरायो ॥

छो—गहि भूमि पारगो लल मारगो बालिसुत प्रभु पहि गयो ।

संभारि उठि दसकंठ धोर कठोर, रव गजव भयो ॥

करि दंग चाप चढ़ाई दस संधानि सर बहूँ बरपढ़े ।

किपु सकल भट धायल भयाकुल देखि निज बल हारपढ़े ॥

दो०—तब रघुपति रावन के सीस भुजा सर चाप ।

काट बहूँत बहूँ पुनि जिमि तीरथ कर पाप ॥ १७ ॥

सिर भुज बाहि देखि रिपु कपी । भाछि कपिन्ह रिस महुँ धनोपी ॥

मारन महुँ कटेहूँ भुज सीसा । धाए कोपि भाछि भट कीसा ॥

निधिवर सकल रावणहि वेरि रहे अलि आय ॥१८॥

दो०-सुखटा निगत भाछि कपि सख अप्र प्रसु पय ।

निधि जाति स्वयं न पालि वेहि तय सूर जलज करत भयो ॥

सुखित विजयि वहीरि पद रहि भाछि पति प्रसु पति भयो ।

गहि भाछि वीर्य कर मनहुँ कमलनिह बसे निधि मुखकर ॥

छ०-उर जल घात प्रचंड जगत विकल रथ ते महि पया ।

देखि भाछि पति निज दल घाला । कोपि माझ उर मारि सलाला ॥

भयउ कैंद रावन बलवाना । गहि पद महि पदकइ भट नाना ॥

सग भाछि भयउ तब धारी । मान लो पचारि पचारि ॥

सुखित देखि सकल कोप गौर । जामवंत धायउ रनधौर ॥

हेतुमदहि सुखित करि बंदर । पाइ प्रदोष हेतु दसकंधर ॥

पुनि सकोप दस धनु कर लीन्है । सरिन्है मारि धायल कोप कीन्है ॥

कोपि कोटि दौ धरिस बहोरि । महि पदकत भजे भुजा मरोरि ॥

गहै न जाहि करिन्है पर पिरहौ । जन जुग मधुप कमल जन चरहौ ॥

कथि देखि विषाद उर भयो । तिन्है धरन कहूँ भुजा पसरि ॥

तब नल नील सिरिन्है चरिं गयक । नखनिन्है लिखर विदारत भयउ ॥

एक नखनिन्है रिपु वधुष विदारि । भागि चलिन्है एक ललन्है मारि ॥

प्रिय महीधर करहि प्रदोष । सोइ निरि तब गहि कोपन्है सो मार ॥

गालितन्य मारति नल नीला । गनरसज दुविद बलसीला ॥

तेही निधि सीता पाई जाई । बिजटा कहि सब कथा सुनाई ॥  
 सिर मुज गाहि सुनत रिपु कैरी । सीता उर मई ग्रास धरौ ॥  
 मुख मलीन उपजी मन चिंता । बिजटा सन बोली तब सीता ॥  
 होइहि कहा कहसि किन माता । कहि त्राधि मरिहि तिस दूखदाता ॥  
 रघुपति सर सिर कटि न मरई । त्राधि त्रिपरीत चरित सब करई ॥  
 मोर अमान्य जियावत ओही । जहि हो हरि पर कमल बिछोही ॥  
 जहि कुल कपट कनक मृग झूठा । अजहँ सो देव मोहि पर लठा ॥  
 जहि त्राधि मोहि दुख दुसह सहए । लछिमन कहूँ कहुँ बचन कहए ॥  
 रघुपति बिरह सत्रिष सर मारी । तकि तकि मार मार गहूँ मारी ॥  
 ऐसहुँ दुख जो राख मम प्राना । सोइ त्राधि ताहि जियाव न आना ॥  
 गहूँ त्राधि कर बिलाप जानकी । करि करि सुरति कथानिधान की ॥  
 कह बिजटा सुन राजकुमारी । उर सर लगात मरई सुरी ॥  
 प्रभु ताते उर हठाई न तेही । एहि के हृदय बसति बैदेही ॥

४०-एहि के हृदय बस जानकी जानकी उर मम बास है ।  
 मम उदर मुअन अनेक लगात बात सब कर नास है ॥  
 सुनि बचन हरष विषाद मन आत देखि पुनि बिजटा कहा ।  
 अब मरिहि रिपु एहि त्राधि सुनहि सुंदरि तजहि संसय मटा ॥

४०-काटत सिर होइहि बिकल छुटि जाइहि तब ध्यान ।

तब रावनहि हृदय मरूँ मरिहहि राघु सुजान ॥ ४१ ॥  
 अस कहि बहृत भाति समझाई । पुनि बिजटा निज भवन सिधाई

राम सुमात्र सुमित्रि वैदेही । उपजातिरह विद्या अति वेदी ॥  
निषिद्धि सखिह निंदति बहू भूमी । जुगुप्सु मर्दु सिरति न रानी  
स्युन विचारि धरी मन धीरा । अब मिलिहहि कपाल रघुवीरा  
इहौ अधुनिनिष राधु जागा । निज सरयि सन वीक्षन लभा  
सठ रनभूमि छंडाडि मोही । धिया धिया अधम मंदमति वेही  
वेहि पद गाहि बहू विधि समझावा । मोरि मूर्ख चहि पुनि धावा  
सुनि आगवतु दसनन केरा । कपिल छरामर मयउ धनैरा  
जहूँ तहूँ भूधर बिटप उपारी । धाए कटकटह मट भारी ॥

छं-धाय जो मकट बिकट भालु कराळ कर भूधर धरा ।  
अति कोप करहि प्रहार मारत भलि चले रजनीचरा ॥  
बिचलाइ दल बलवत कीसन्ह धीरे पुनि रावतु लिखो ।  
बहूँ दिक्षि चपेटन्ह मारि नखन्ह बिटारि नव व्याकुल किया

छं-देखि महा मकट प्रबल रावन कीन्ह विचार ।

अंतरहित होइ निमेष महुँ कृत माया बिचार ॥ १०० ॥

छं-जब कीन्ह वेहि पावड । मरु मगट जंतु प्रचंड ॥

बेताल भूत प्रियान्न । कर धरु धरु नाराच ॥

जोगिनि गहै करवाळ । एक होय मनुज कपाल ॥

कारि सब सोनिव पान । नाचहि करहि ॥

धरु मारु बोजहि धर । राहि पूरि धुनि चहुँ ओर ॥ ३  
 मुख बाई पावहि खान । तब जग कोस परान ॥ ४  
 जहुँ जाहिँ मकूट भानि । तहुँ वरत देखहिँ आनि ॥ ५  
 भए विकल बानर भानि । पुलि जग बरषै बाजि ॥ ६  
 जहुँ तहुँ भक्ति करि कोस । गजउ बहुरि दसवीस ॥ ७  
 लडिमान कपीस समीव । भए सकल वीर अवीर ॥ ८  
 हा राम हा रघुनाथ । कहि सुभट सी जाहिँ होथ ॥ ९  
 एहि विषि सकल बल लीर । बौहि कौन्ह कपट बहोरि ॥ १०  
 प्रगटहि विपुल हनुमान । धारु गहै पावान ॥ ११  
 निन्ह राम धरे जाइ । चहुँ दिखि बरुथ बनहि ॥ १२  
 मारहुँ धरहुँ जान जाइ । कटकटाहिँ पूछ उठाइ ॥ १३  
 दहुँ दिखि जूगै विराज । बौहि मध्य कोसलराज ॥ १४  
 ७०-बौहि मध्य कोसलराज सुंदर राम तन सोभा लहै ।  
 जनु दंडधनुष अनेक की बर बाहि जुग लसाइ ॥  
 प्रभु देखि हरष विषाद उर सुर बंदव जय जय करी ।  
 रघुवीर एकहिँ वीर कोनि निमेष भहुँ माया हरी ॥ १५  
 माया विगत कलि भानि हरष विषय निरि गहिँ सब निरे ।  
 सर निकर जाइ राम रावन बाहुँ निर पुलि गहिँ निरे ॥  
 श्रीराम रावन समर चरित अनेक कल्प ओ गावहौ ।  
 सब सेष सारइ निगम कहि वेउ वरुण पार न पावहौ ॥ १६

श्री-लोक गुन गन कछु कहै जइमलि तुलसीदास ।

लिम निज बल अनुस्मरे ते माछी उडई अकास ॥ १०१ (क) ॥

काटेसिरे सुज बार वहै मरत न भट लंकैस ।

प्रभु कीवत सुर सिद्ध मुनि व्याकुल देखि कलैस ॥ १०१ (ख) ॥

कात वरुहै सीस समुद्रहुँ । लिम प्रति जाम जेम अधिकहुँ

मरई न सिरे अम मयउ विसेषा । राम विमोहन तन तव देखी ॥

उमा काल मर जाकी डूँछी । सो प्रभु जन कर प्राति परीछी ॥

सुत सरयय चराचर नायक । प्रनयल सुर मुनि सुखदायक

नामिकुंड प्रियुष बस याकू । नाथ जिअत रावत गल ताकू ॥

मुनत विमोहन अचन केपला । हरिय गहै कर वान कराला ॥

असुम होन जगो तव नागा । रोवहै खर सुकाल वहु खाना

बोलहै जग जग अंगरित हैरे । प्राट मए नम जहूँ तहूँ कैरे ॥

दस दिशि दाह होन अति जगा । मयउ परव विजु रीष उपरगा

महोदरि उर कंपति भारी । प्रतिमा खगहै नयन मग वारी ॥

श्री-प्रतिमा कहुँहै पविपात नम अति बात बहै डोलति मही ।

बराहहै बलाहक सेधुर कच रज असुम अति सक को कही ॥

उतपात अमित विलोकि नम सुर निकल बोलहै जग जग ।

सुर समय जानि केपल रघुपति चाप सर जोरत मए ॥

श्री-सुवि सरसन अवन जगि जहै सर एकवीस ।

सुनयक सयक चले मानहुँ काल फनीस ॥ १०२ ॥

सपक एक नाथ सर सीष। अपर लो भुज निर करि रोष॥  
 है निर गढ़ चले नाना। निर भुज हीन कंड माहे नाचा॥  
 गजैत मरत धीर ख मारी। कहौ राम रन हेतौ पचासी॥  
 डोली भूमि निरल दकधर। छुनिमव सिधु सरि दिगज भूपर  
 धरनि परेउ ही खंड गढ़ाई। चाप भाँज सकट समुदाई॥  
 मंदोदरि आगो भुज सीषा। धरि सर चले जहौ जगदीषा॥  
 प्रविसे सब निरगम महुँ जाई। देखि सुगढ़ दुहुनीं जगई॥  
 तसु तेज समान प्रभु आनन। हेरये दीखि समु चवतानन॥  
 जय जय धुनि पूरी प्रसङ्ग। जय खगौर प्रवल भुजदंडा॥  
 गरषाहि सुमन देव मुनि बंदा। जय कैपाल जय जयनि मुकुंदा॥  
 छं-जय कैपा कंद मुकुंद दंड दंडन सरन सुखप्रद प्रभा।  
 खल दंड विदारन परम कारन कारनीक सदा विभा॥  
 सर सुमन वरषाहि हेरय सकल बाज दुहुनि गहगाही।  
 संगम आनन राम अंग अनां बहू सोभा लही॥१॥  
 निर जटा मुकुट प्रसन निच निच आनि मनोहर गजहो।  
 जय नील निरि पर लहित पटल समेत उडगन आलहि॥  
 भुजदंड सर कोदंड फेरत रथीर कन वन अलि बने।  
 जय राघमुनीं तमाज पर बूझी विपुल सुख आपने॥२॥

भाँज कीस सब हेरये जय सुख धाम मुकुंद॥१०३॥

टी०-कैपालहि करि बूझि प्रभु अमय निर सुंद बूझै।

एति सिर देखत मंदोदरी । मुखलिख निकल धरति धरिपरी ॥  
 जुयति वंद रोवत उठि धाई । तेहि उठइ रागत एहि आई ॥  
 एति गति देखि ते कहि पुकारा । छूटै कच गहि अगुप सुगारा ॥  
 उर ताड़ना कहि ब्रिषि नाना । रोवत कहि प्रताप अछारा ॥  
 तब बल नाथ डोलिनि धरनी । तेजहोन एवक धरि तरनी ॥  
 सेष कमठ सहि सकहि न भारा । सो तब भूमि परेउ धरि छारा ॥  
 बरन कुबेर सुरेस समीरा । रनसमुल धरि कहि न धीरा ॥  
 भुज बल जितेहु काल जम सारु । आबु परेहु अनाथ की गारु ॥  
 जात बिदित वृंदादि प्रभुतई । सुत परितन बल भरति न गारु ॥  
 राम विभुव अस डोल वृंदास । रक्ष न कोउ रोक रोचिहार ॥  
 तब बस विधि प्रपंच सब नाथा । सम्य दिगिधरिनि गजपति भाथा ॥  
 अथ तब सिर भुज जंक छाडौ । राम विभुव यह अचिन्ति गारौ ॥  
 काल विवस एति कही न माना । आग जग नाथु मज्जि कहि गारा ॥  
 छं-आन्या मयज कही दंडुज कानन दंडन पावक धरि करु ॥  
 जहि नमन सिव ब्रह्मादि सुरपिय मंदेह गौड़ करुनामय ॥  
 आजन्म ते परदेहि रत पापविषय तब भवु आय ॥  
 वृमहू दिवो निज धाम राम नमामि अह निगमय ॥

टी०-अहरे नाथ दंडुनाथ सम ऊपा विचरु गौड़ आय ।

गोवि वृंद दंडुस गति गौड़ि दीनि पावत ॥ १०२ ॥

मंदोदरी बचन सुनि काना । सु सुनि निज मंदोदरी सुनि मना ॥



अज महेस नारद सनकादी । जे मुनिनर परमप्रयत्नादी ॥  
 भूरि लोचन खण्डिताहि निहारी । प्रेम मगन सब भए सुखारी ॥  
 कदन करत देखी सब नारी । गयउ विभीषण मन दुख भारी ॥  
 बंधु दसा बिलोकि दुख कीन्दी । तब प्रभु अजुजहि आपसु दीन्दी  
 लछिमन बेहि बहू बिधि समझायो । बहूँरि विभीषन प्रभु पहि आयो  
 कथा दहि प्रभु ताहि बिलोका । करहुँ किया पारिहरेरि सब सोका ॥  
 कीन्ह किया प्रभु आपसु मानी । बिधिवत देस काल बिष जानी ॥  
 दो०-मंदोदरी आदि सब देइ लिखिजलि बहि ।

भवन गहूँ खण्डित गुन गन बरनत मन साहि ॥ १०५ ॥  
 आइ विभीषन पुनि सिक नायो । कथासिंधु तब अजुज बोलायो ।  
 गुह कपीस अंगद नल नीला । जामवंत माकति नयबीला ।  
 सब मिलि जाहुँ विभीषन साया । सारहुँ लिख कहेउ रचिनाया ।  
 पिता बचन मैं नगर न आवउँ । आपु सरिस कपि अजुज पठावूँ ।  
 पुनत चले कपि सुनि प्रभु बचना । कीन्दी जाइ लिख क की रचना  
 सादर सिंहासन बैठारी । लिखक सारि अखलि अजुजारी  
 जोरि पानि सवही सिर नाए । सहित विभीषन प्रभु पहि आए  
 तब खगौर गोलि कपि लीन्हे । कहि प्रिय बचन सुखी सब कीन्हे  
 छ०-किए सुखी कहि बानी सुधा सम बल गुहरीरि प्रियु दियो  
 पायो विभीषन राज लिहूँ पुर जस गुहरीरि निज नयो



अज महेस नारद सनकादी । जे मुनिनर परमपरमदायी ॥  
 भरी लोचन खपतिहि निहारी । प्रेम मगन सब भए सुखारी ॥  
 कदन करत देखी सब नारी । गणउ विभीषण मन दुख मारी ॥  
 बंधु दत्ता त्रिलोकि दुख कीन्दी । तब प्रभु अजुजहि आयसु दीन्दी  
 लछिमन बेहि गहुँ त्रिषु समझायो । बहुरि विभीषन प्रभु पहिँ आयो  
 कैपा दहि प्रभु तारी त्रिलोका । करहुँ किया परितेहि सब सोका ॥  
 कीन्ह किया प्रभु आयसु मानी । त्रिषुवत देस काल जियु जानी ॥  
 दो०—मंदोदरी आदि सब देइ तिलजालि सारि ।  
 भवन गहूँ खपति गुन गन बरनत मन सारि ॥ १०५ ॥  
 आइ विभीषन पुनि सिद्ध नयो । कृपासिंधु तब अनुज बोलयो ॥  
 तुम्ह कपीस अंगद नल नीला । आभवंत माकति नयनीला ॥  
 सब मिलि जाहुँ विभीषन साया । सारहुँ तिलक कहैउ खिनाया ॥  
 पिता वचन मै नगर न आवउँ । आयु सरेस कपि अनुज पठावउँ  
 पुरत चले कपि सुनि प्रभु वचना । कीन्दी जाइ तिलक की रचना ॥  
 सादर सिंहासन बैठरी । तिलक सारि अखति अनुसारी ॥  
 जोरि पानि सज्जही सिर नार । सहित विभीषन प्रभु पहिँ आए ॥  
 तब खचिगिर गोलि कपि लीन्है । कहि प्रिय वचन सुली सब कीन्है ॥  
 छ०—किपु सुली कहि बानी सुधा सम बल तुम्हरे त्रिषु दयो ।  
 पायो विभीषन राज तिहुँ पुर असु तुम्हरो निर नयो ॥

॥ १० ॥  
 तत्र देवमान राम पतिं जाह्नु । जनकसुता कै कुसल सुजाह्नु ॥  
 अत्र सीतं जनक कर्तुं प्रहृष्टा । देवौ नयन स्वाम मूर्ध गता ॥  
 सावित्रेण कोसलपतिं रक्षतुं समेत अनंत ॥ १० ॥  
 टी०—सुत सुत सद्युग सकल तव देव्यु वसतुं हवन्त ।  
 रत्न जीति त्रिपु दंत शत्रु जित पश्यामि राममनामय ॥  
 सुत मातु मं पाया अखिल जग रात्रि अत्र न संभव ।  
 का देव्यु वीहिं हैलिक मूर्ध कपि किमपि नहिं बानी समा ॥  
 छं—अति हरेष मन तन पुत्रक जेवन सजल कह पुनि पुनि रमा  
 अविचल रात्रि निमीषन पाया । सुनि कपि बचन हरेष उर उवाया ॥  
 सत्र विविध कुसल कोसलधीसा । मातु समर जीयो दसवीसा ॥  
 कहतुं ताल प्रभु कपा निकता । कुसल अजल कपि सेन समेत ॥  
 दूहिहिं ते प्रनाम कपि कीन्हा । रघुपति दंत जानकी चीन्हा ॥  
 यह प्रकार तिनह पुंजा कीन्ही । जनकसुता देवाह पुनि दूहिहिं ॥  
 तत्र देवमंत नगर मूर्ध आए । सुनि निमिचरी निमिचर धाए ॥  
 समाचार जानकिहिं सुनावह । तसि कुसल लै प्रहृष्ट चलि आवह ॥  
 पुनि प्रभु वीलि लिखत देवमाना । लंका जाह्नु कहेउ भगवाना ॥  
 बार बार सिर नावाहिं गहहिं सकल पद कंज ॥ १० ॥  
 टी०—प्रभु के वचन श्रवण सुनि नहिं अवाहिं कपि पुंज ।  
 संसार सिंधु अपार पार प्रयास विनु नर पाहै ॥  
 मोहि सहित सुख कीरति कुम्हारी परम प्रीति जो गाहै ॥  
 \* लंकाकाण्ड \*  
 ५४५

सुनि सदेसु माजुकेलभूषन । बोलि लिपु जुराज बिभीषन ॥  
 मावतसुत के संग सिधावहु । सादर जनकसुतहि लै आवहु ॥  
 पुराहि सकल गए जहु सीता । सपदि वन निवस्यो विनीता ॥  
 बेगि बिभीषन लिखिहि सिखायो । लिखिहु बिधि भजन करवायो ॥  
 बहू प्रकार भूषन पहिराए । लिखिका बलिचर बलि पुनि ल्याए ॥  
 ता पर हरि चरी बैसेही । सुनिार राम बुज धाम सनेही ॥  
 वेतपाणि रज्जुक चहुँ पासा । चले सकल मन परम हुलासा ॥  
 देवन माछ कोस सन आए । रज्जुक कोष निवारन धाए ॥  
 कह रघुवीर कहा सम मानहु । सीताहि सखा प्यादु आनहु ॥  
 देखहुँ कोष जननी की नहुँ । विहरि कहा रघुनाथ गोसाहुँ ॥  
 सुनि प्रभु बचन माछ कोष हर्यो । नम है मन बहू वर्यो ॥  
 सीता प्रथम अनल महुँ राखी । प्रभा ॥

जौ मन बच कम मम उर माहीं । तब खीर आन गति नही ॥  
 तौ कसतु सब कै गति जाना । सो कहूँ होउ श्रीखंड समाना ॥  
 ३०-श्रीखंड सम पावक प्रवेश किया सुमिर प्रभु मैथली ।  
 जय कोसलेस महेस बंदिन चरन रति आनि निमंली ॥  
 प्रातिविव अरु लौकिक कलंक प्रचंड पावक महुँ जरे ।  
 प्रभु चरित काहुँ न लखे नम सुर सिद्ध सुनि देखहि खरे ॥ १ ॥  
 धरि रूप पावक पानि गाहि श्री सत्य श्रित जाग विदित जो ।  
 निमि डीरसागर डेहिये रासाहि समर्पि आनि सो ॥  
 सो राम राम विमान राजति खिचरे आनि सोमा भली ।  
 नव नील नीरज निकट मानहुँ कनक पंकज की कली ॥ २ ॥  
 ४०-वरपाहिँ सुमन हरौष सुर राजहिँ गगन निमान ।  
 गावहिँ किंनर सुरवधूँ नचहिँ चर्छी विमान ॥ १०९ (क) ॥  
 जनकसुता समेत प्रभु सोमा आनि अपार ।  
 देहिँ भाळु कपि हरये जय खपति सुख सार ॥ १०९ (ख) ॥  
 तब खपति अनुसासन पाई । मातलि चलेउ चरन निरक नाई ॥  
 आए देव सदा खरयो । बचन कहहिँ जनु परमारयो ॥  
 दीन बंधु दयाल खिया । देव कीन्हिँ देवन्ह पर दया ॥  
 निख द्रोह रत यह खल कामी । निज अव गपउ केमारगामी ॥  
 सुन्ह समक्ष प्रह अजिनासी । सदा एकरस सहज उदासी ॥  
 एकल अगुन अज अनव अनामय । अजित अमोघसक्ति कर नाम

मीन कमठ सूकर नरहरी। बामन परसुराम वृष धरी ॥  
जब जब नाथ सुरह दृष्ट पायो। नागा तज धरि गुहहूँ नसयो ॥  
यह खल मालिन सदा सुरद्रोही। काम लोभ मद रत अति कोही ॥  
अधम सिरामनि तब पद पावा। यह हेमूँ मन निषमय आवा ॥  
हेम देवता परम अधिकारी। स्वरथ रत प्रभु भगति निषारी ॥  
भव प्रवाहूँ संतत हेम परे। अब प्रभु पाहिँ सरन अनुसरे ॥  
दो०—करि विनती सुर सिद्ध सब रहे जाहूँ तहूँ कर जोरि।

अति सप्रम तन पुलकि विविध अस्त्रवित करत बहोरि ॥ १० ॥  
छं—जय राम सदा सुखयाम हरे। रथिनाथक सायक चाप धरे ॥  
बारन दारन सिंह प्रभो। गुन सगर नागर नाथ बिभो ॥  
ना. काम अनेक अनूप छवी। गुन गावत सिद्ध मुनींद्र कवी ॥  
जसु पावन रावन नाग महे। खगनाथ जया करि कोप राही ॥  
जन रंजन भंजन लोक भय। गालकोष सदा प्रभु बोधमय ॥  
अवतार उदार अपार गुन। माहिँ भार बिभंजन ग्यानधन ॥  
अल व्यापकमकमनादि सदा। कफनाकर राम नमामि मुदा ॥  
रखिवस विमूर्धन दूषन हो। ऊँठ भूष बिभीषन दोन हो ॥  
गुन ग्यान निधान अमान अज। नित राम नमामि विभुं विरज ॥  
मुजदंड प्रबह प्रताप बल। खल बंद निकट महा कुसल ॥  
विबु कारन दोन दयालु हित। इति राम नमामि रमा सहित ॥  
अव तारन कारन काज पर। मन संभव दान दोष हरे ॥  
सर चाप मनीहर जीन धरे। जलजालेन लोचन भूषवरे ॥

सुख मंदिर सुंदर श्रीरामन । मंद मार सुधा समान समन ॥  
 अनवर अखंड न गोचर गो । सखरूप सदा सब होइ न गो ॥  
 इति श्रेष्ठ वर्तति न दंतकथा । रीति आतप भिन्नमभिन्न जथा ॥  
 कृतकैय विधौ सब वानर प । निरखति तवानन सारं प ॥  
 दिग जीवन देव सरीर होइ । तब भक्ति विना भव भूलि परे ॥  
 अब दीनदयाल दया करि । मति मोरि निभेदकरी हरि ॥  
 जाहि ते विपरीत विद्या करि । दुख सो सुख मानि सुखी चारि ॥  
 खल खंडन मंडन रम्य जमा । पद पंकज सेवित समु उमा ॥  
 नृप नायक हे वरदात्मिभ । चरनाब्ज भुंजि सदा सुखद ॥

श्लो०-विनय कीन्हि चरितानन भ्रम पुलक अति गत ।

सोमसिंधु विजोक्त लोचन नही अघात ॥ ११ ॥

तेहि अगसर दसरथ तहूँ आए । तनय विजोक्त नयन जल जाए ॥  
 अनुज सहित प्रभु वंदन कीन्ह । आसिरवाद पिता तब दीन्ह ॥  
 गत सकल तब पुन्य प्रभाऊ । जीया अजय निवासर राज ॥  
 सुनि सुत वचन प्रीति अति वाढ़ी । नयन सलिल रोमावलि ठाढ़ी ॥  
 खपति प्रथम भ्रम अनुमान । चितवहि पितरि दीन्ह उदं यान ॥  
 गत उमा मोच्छ नहि पायो । दसरथ भेद भगति मन जयो ॥  
 समुजोगसक मोच्छ न लेहो । निन्द कहूँ राम भगति निज देहो ॥  
 बार बार करि प्रभुहि प्रनामा । दसरथ हरि गए सुरधामा ॥

श्लो०-अनुज जानकी सहित प्रभु कसल कोसलाश्रय ॥

सोमा होखि हरि मन अखिल कर सुर



छं-अथ राम सीमा धाम । दण्डक प्रतप विशाम ॥  
 एत शीत वर सर चाप । मुजदंढ प्रवळ प्रताप ॥ १ ॥  
 जय दूषणारि खरारि । मर्दन निखावर धारि ॥  
 यह दंड मारिउ नाथ । अप दैव सकल सनाथ ॥ २ ॥  
 जय हेरन धरनी धार । माहिमा उदार अपार ॥  
 जय रावणारि कपाळ । किणु जातिघन विह्वल ॥ ३ ॥  
 लंकेश आनि बल गावु । किणु बल सुर गावु ॥  
 मुनि सिद्ध गरुडा नाग । हठि पंथ सब कूळग ॥ ४ ॥  
 परदंडे रत आनि दंड । पायो सो फळि पापि ॥  
 अब सुनहु दीन दयाळ । राजीव नयन विखल ॥ ५ ॥  
 माहि रहा आनि अभिमान । नहि कोउ माहि समान ॥  
 अब दंडिख प्रभु पद कंज । राव मान प्रद दंडपुंज ॥ ६ ॥  
 कोउ ब्रह्म निगुन ध्याव । अथक जेहि श्रुति गाव ॥  
 माहि भाव कोसल भूप । श्रीराम सगुन सख ॥ ७ ॥  
 दंडेहि अबुज समेत । मम हेतु करहु निकेत ॥  
 माहि जानि नित दास । दै भक्ति रमानिवास ॥ ८ ॥  
 छं-दै भक्ति रमानिवास । भास हेरन सरन सुखदायक ॥  
 सुख धाम राम नमामि काम अनेक छवि खगपक ॥  
 सुर दंड रंजन दंड भंजन मयिज ववु अवलिखल ॥  
 ब्रह्महि संकर सैन्य राम नमामि करेना कोमल ॥



विषय मनोरथ पुंज कंज वन । प्रबल विपार उदार पार मन ॥  
 भव गारिषि मंदर परम दूर । वारय लारय संसृति दुस्तर ॥ ३ ॥  
 काम गाल गोजीव बिजोवन । दीन बंधु प्रनवारि सोचन ॥  
 अमृत आनकी सहित निरंतर । बसई राम चंप सम उर अंतर ॥ ४ ॥  
 सुनि रंजन माहि मंडल मंडन । तुलसिदास प्रभु नाम बिबुधन ॥ ५ ॥

टी०—बाध जबहि कोसलपुत्री होइहि तिलक तुम्हार ।

कृपासिंधु मैं आउव देखन चरित उदार ॥ १५ ॥

करि विनती जय संघु सिधाए । तब प्रभु निकट प्रीतिपत्र आए

नाइ चरन सिद्ध कह मुहु गानी । विनय सुनहु प्रभु सारंगगानी ॥

सकुल सदल प्रभु रावन मारयो । एवन जय प्रियवन बिकारयो

दीन मंडीन दीन मति जाती । मो पर कृपा कीन्ह बहू माती ॥

अव जन गृह पुनीत प्रभु कीजे । मज्जन करिअ समर भ्रम छोड़े ॥

देखि कोस मंदिर संपदा । देहु कृपाल कपिन्ह कहूँ मुदा ॥

सब विधि नाथ माहि अपनइअ । पुनि माहि सहित अवधपुर जाइअ

सुनत वचन मुहु दीनदयाल । सबल भए दौ नयन बिसाल ॥

टी०—तीर कोस गृह मोर सब सत्य वचन सुन आत ।

भरत दूसा सुमिरत माहि निमिष कल्प सम आत ॥ १६ (क) ॥

राघव शेष गाल कंस जपत जपत निरंतर माहि ।

देखीं बेगि सो जगज कर सखा निहोरि बौहि ॥ १६ (ख) ॥

वीरौ अवधि जाडू जौ निअत न पावडू वीर ।

(ग) सुमिरत अजुज पीति प्रभु पुलि पुलक सरीर ॥ १९६ (ग)

करुई कल्प भनि राजु वृद्ध मोहि सुमिरुई मन माहि ।

(घ) पुलि सम धाम पाइइहुँ जहाँ सब सब जाहिं ॥ १९६ (घ)

मत विभीषन बचन राम के । हरपि गहै पद कृपाधाम के ॥

नर भाउ सकल हरधाने । गहि प्रभु पद गुन निमल बखाने

हूरि विभीषन भवन सिधायो । मनि यान बसन विमान भरयो ॥

पुष्पक प्रभु आगै राखो । हूँसि करि कृपासिंधु तब भाषो ॥

हिं विमान सुनु सखा विभीषन । गगन जाइ भरपहुँ पट भूषन ॥

म पर जाइ विभीषन तज्यो । बरषि दिए मनि अंगर सज्यो ॥

इ जेइ मन भावइ सोइ जेइ । मनि मुख मोलि जारि करि देहो

व राम श्री अजुज समेत । परम कौटुकी कृपा निकेत ॥

०-सुनि जेहि ध्यान न पावहिं वेति वेति कह वेद ।

(क) कृपासिंधु सोइ कपिन्ह सब करत अनेक बिनोद ॥ १९७ (क)

उमा जोग जप दान तप नाना मख जन नेम ।

(ख) राम कृपा नाहिं करहिं बसि बसि निष्कवल प्रेम ॥ १९७ (ख)

छ कपिन्ह पट भूषन पाए । पहिरि पहिरि खपति पाहिं आए ॥

ना जिनस देखि सब कोषा । पुलि पुलि हूँसत कोसलधीसा ॥

तइ सगहिं पर कौटुकी दायो । बोले महुँ बचन खुरायो ॥

करै बल सै रावजु मारयो । तिलक विभीषन कहै पुलि मारयो

निज निज गृह अब गृह सब जाई । सुनिगृह गौहि डरपटु जनि कहै  
 सुनत वचन प्रभाकल वानर । जोहि पानि बोले सब सादर ॥  
 प्रभु जोइ कहइ गृहहि सब सोइ । हमरु होत वचन सुनि मोइ ॥  
 दीन जानि कपि किए समाया । गृह कहै कैलोक ईस खिनाया ॥  
 सुनि प्रभु वचन लज हम मारौ । मसक कहूँ खगपति हित कारौ ॥  
 देखि राम कख वानर पीछ । प्रेम मान गहि गृह कै ईछ ॥  
 टी०-प्रभु श्रुति कपि आछि सब राम रूप उर राखि ।

(क) हरष विषाद सहित चले विनय विविध विधि माधि ॥ ११८८ (क)  
 कपिपति नील दीप्यति आगद नल हनुमान ।  
 सहित विनीषण आपर जे ब्रूयप कपि बलवान ॥ ११८८ (ख)  
 कहि न सकहि कह्यु प्रेम वस माधि सति लोचन धारि ।

सन्मुख चितवहि राम जन नयन निमेष निवारि ॥ ११८८ (ग)  
 आसिष्य प्रीति देखि खुराई । लीन्है सकल विमान चढ़ाई ॥  
 मन महुँ विप्र चरन विर नया । उत्तर दिशिहि विमान चलया ॥  
 चलत विमान कोलाहल होई । जय ख्यौर कहइ सब कोई ॥  
 सिंहासन आति उच्च मनोहर । श्री समेत प्रभु बैठे ता पर ॥  
 राजत राम सहित माहिनी । मेक संग जय घन दामिनी ॥  
 कतिर विमान चलेउ आति आवर । कीन्है सुमन घोड़ि हरष खुर ॥  
 परम सुखद चलि विविध बयाय । सागर सर सति निर्मल वारि ॥  
 सगुन होहि सुंदर चहुँ पाखा । मन प्रसन्न निर्मल नम आखा ॥

कपिन्ह सहित विग्रह कहुँ दंग विविध विधि दीन्ह ॥ १२० (ख) ।  
 पुनि प्रभु आइ निवेनी हरिषत मज्जु कीन्ह ।

सजल नयन तन पुलकित पुनि पुनि हरिषत राम ॥ १२० (क) ॥  
 दो०-सीता सहित अवध कहुँ कीन्ह केपाल प्रनाम ।

पुनि देखे अवधपुरी आति पावनि । विविध तप भव रोग नसवनि  
 देखे परम पावनि पुनि वेनी । हरिनि सोक हरि लोक निसेनी ॥  
 तीरथपाति पुनि देखे प्रयागा । निरखत जन्म कोटि अव भयागा ॥  
 पुनि देखी सुरसी पुनीता । राम कष्ट प्रनाम कर सीता ॥  
 बहुरि राम जानिकहि देखाइ । जमुना कलि मल हरनि सुहाइ ॥  
 तहुँ करि मुनिन्ह कर संतोषा । चला विमान तहौ ते चोखा ॥  
 सकल विधिन्ह सन पाइ असीसा । निचकूट आए जगदीसा ॥  
 कुंभजादि मुनिनाथक नाग । गए राम सब कैं अस्थाना ॥  
 तुरत विमान तहौ चलि आवा । दंडक वन जहँ परम सुहावा ॥  
 सकल देखाए जानिकहि कहै सबनिह के नाम ॥ ११९ (ख) ॥

जहँ जहँ केपासिंखु वन कीन्ह वास विश्राम ।  
 सीता सहित केपानाथ समुहि कीन्ह प्रनाम ॥ ११९ (क) ॥

दो०-इहौ सेतु बूझ्यो अरे थापेहुँ सिव मुख धाम ।  
 कुंभकरन रावन हो भाई । इहौ हवे सुर मुनि दुखदाई ॥  
 हनुमान अंगद के मारे । रन माहि परे निराचर मारे ॥  
 कहे खिचोर देखे रन सीता । लछिमान इहौ हयो इंदजीता ॥

प्रभु हेमन्तहि कहा बुझाई। धारि बट रूप अवधपुर जाई ॥  
 भरतहि कुसल हेमनि सुनाएई। समानचार लै उपर चलि आएई ॥  
 उरत पवनसित रावनत भयक। तब प्रभु भरदाज पही गयक ॥  
 नाना विधि सुनि पूजा कीन्हो। अस्थिति करि पुनि आशिष दीन्हो  
 सुनि पद बंदि ज्वाल कर जोरी। चढ़ि विमान प्रभु चले बहोरी ॥  
 इहो निषाद सुना प्रभु आए। नाव नाव कहूँ लोग बोलए ॥  
 कुरसि नाथि जान तब आयो। उतरै तट प्रभु आयसि पायो ॥  
 तब सीता पूजा सुरसरी। बहूँ प्रकार पुनि चरनहि पयो ॥  
 १० असीस हरणि मन गागा। सुंदरि तब आहिवाल अभंगा ॥  
 सुनत गृहा धावउ प्रभाकुल। आयउ निकट परम सुख संकुल  
 प्रभुहि सहित बिलोकि बहोई। परउ अवाति तन सुधि नहि बहोई  
 प्रीति परम बिलोकि खुराई। हरणि उठइ लियो उर लाई ॥  
 छं-लियो हेतुं लाई कृपा निधान सुजान रायू रमापती ।  
 ब्रह्मादि परम समीप ब्रह्मी कुसल सो कर वीनती ॥  
 अब कुसल पद, पंकज बिलोकि विरंचि संकर सेव्य है ।  
 सुख धाम परनकाम राम नमामि राम नमामि है ॥ ११ ॥  
 सब भाँति अवध निषाद सो हरि भरत ज्यो उर लाईयो ।  
 मलिनदं तुलसीदास सो प्रभु मोहि बस बिसराइयो ॥  
 यह रावनादि चारिज पावन राम पद रतिप्रद सदा ।  
 कामादिहर विद्यानकर सुर सिद्ध सुनि गानहि सुदा ॥ १२ ॥



( लंकाकाण्ड समाप्त )

षष्ठः सर्गः समाप्तः ।

इति श्रीमद्रामचरितमानसे सकलकविकण्ठविश्वंसेने

मासपरायण, सत्सद्सर्व विभाम

श्रीरघुनाथ नाम तत्र नाहिन आन अथार ॥ १२९ (ख) ॥

यह कलिकाल मलयवन मन करि देखि विचार ।

विजय विवेक विभूति निव निन्दहि देखि भगवान् ॥ १२९ (क) ॥

श्री०-समर विजय रघुवीर के चरित जे सुनिहि सुजान ।

\* लंकाकाण्ड \*



॥ जयजोगे मिले सदा कपाल ॥

अंगिरस रूप प्रादे देहि काल ।



गुफा प्रवेश

केकीकान्तमनीलं सुरवरावलसादृशपादांजलिचिह्नं  
 शोभाय पीतवक्षः सरसिजनयनं सर्वदा सुप्रसन्नम् ।  
 पण्डितं नारायणं कपित्थकस्युतं बन्धुना सेव्यमानं  
 नौमीकुं जानकीदां रघुवत्समिदां पुष्पकादरोमम् ॥ १  
 कोसलेन्द्रपदकञ्जमञ्जुलीं कोमलवज्रमहेदां वन्दितौ ।  
 जानकीकरसरोजालिनीं चित्तकस्य मनमङ्गसङ्गिनीं ॥ २

श्लोक

( उत्तरकाण्ड )

सप्तम सर्ग

—॥॥॥॥॥॥॥—

श्रीमद्विष्णुसहस्रनाम

श्रीजानकीवल्लभा विजयते

श्रीगणेशाय नमः



ॐ-निज दास ज्यो खिबसभवन कबहुँ मम सुमिरन करयो ।  
 सुनि भवन बचन विनीत अति कोप पुलकि वन चरनहि परयो ॥  
 कहुँ कोप कबहुँ कपल गोसाई । सुमिराई मोहि दास की नाई ॥  
 तन हेतुमत नाई पद माया । कहे सकल खिपति गुन गाथा ॥  
 नाहिन तात उरिन मैं तोही । अब प्रभु चरित सुनावहु मोही ॥  
 एहि सदेस सरिस जग माही । करि निचार देखेउ कहुँ नाही ॥  
 बार बार बूझी कुसलाता । तो कहूँ देखुँ काह सुन आता ॥  
 कपितव दरस सकल दुख बीजे । मिले आज्ञा मोहि राम पिये ॥  
 मिलत प्रेम नाई हृदय समान । नयन खवल जल पुलकित गात ॥  
 दीन बंधु खिपति कर किकर । सुनत भवन मंदिर उठि सादर ॥  
 मागत सुत मैं कपि हेतुमान । नाम मोर सुन कृपा निधान ॥  
 कोवुनह तात कहौ ते आए । मोहि परम प्रिय बचन सुनाए ॥  
 सुनत बचन निबसे सब दुख । वेपारत जिमि पाई प्रियुषा ॥  
 प्रियु रन जीति सुजस सुर गावत । सीता सहित अजुन प्रभु आवत ॥  
 खिकल तिलक सुजन सुखदाता । आपउ कुसल देख मुनि जाता ॥  
 जासु निरहूँ सोचहुँ दिन राती । रटहुँ निरंतर गुन गन पाती ॥  
 मन माहूँ बहृत माँति सुख मानी । बोलैउ अवन सुधा सम गानी ॥  
 देखत हेतुमान अति हरेषेउ । पुलक गात लोचन जल बरषेउ ॥  
 राम राम खिपति जगत खवल नयन जळजळ ॥ १ (ख) ॥  
 वैठे देखि कुलासन जटा मुकुट कंस गात ।

रघुवीरनिज मुख जासु पुन गन कहव अगजग नाथ जो  
काहे न होइ बिनीत परम पुनीत सर्वगत सिंधु सो

दो०—गामग्राम प्रिय नाथ तुम्ह सत्य बचन मम तन ।

पुनि पुनि मित्र भएत सनि हेरष न हेर्यु समात ॥२॥ (क)

सो०—भरत चरन निरु नाइ प्रिय गयउ कोष राम पति ।

कही कसल सब जाइ हेरष चलेउ प्रभु जान चरि ॥२॥ (ख)

हेरष भएत कोसलपुर आए । समाचार सब गुरहि सुनाए ।

पुनि भदिर मूढ बात जानइ । आवत नगर कोसल खराइ ।

सुनत सकल जननी उठि धाई । कहि प्रभु कसल भरत समझाई ।

समाचार पुरवाहिन्ह आए । नर अक नाहि हेरष सब धाए ॥

दक्षि दुर्गा रोचन फल फेला । नव तुलसीदल मंगल भेला ॥

भरि भरि हेम थार भूमिनी । गावत चलि सिंधुगामिनी ॥

जे जैसहि तैसहि उठि धावाहि । बाल बूढ़ कहै संग न लवाहि ॥

एक एकन्ह कहै बँझाहि माई । तुम्ह देखे दयाल खराइ ॥

अवधपुरी प्रभु आवत जानी । मई सकल सोमा कै खानी ॥

बहइ सुहेवन त्रिविध समीप । मई सरजू अति निर्मल नीप ॥

दो०—हेरषत गुर पतिजन अजुन भूसुर बँद समेत ।

बले भरत मन प्रेम अति समुख कृपानिकेत ॥३॥ (क)

बहुतक चर्छा अटारिन्ह निरखहि गगन विमान ।

दंति मयुर सुर हेरषत करहि सुमंगल मान ॥३॥ (ख)

राका सति रघुपति पुर सिंधु देखि हरेषान ।

बध्या कोलाहल करत जगु नारि तरंग समान ॥ ३ (ग) ॥

हो भगुकेल कमल दिवाकर । कपिन देखवत नगर मनोहर ॥

मृग कपीस अंगद लंकेसा । पावन पुरी कचिर यह देसा ॥

ब्याध सब बैकुंठ बखाना । बेद पुरान बिदित जगु जाना ॥

अवधपुरी सम प्रिय नाहि सोऊ । यह प्रसा जानइ कोऊ ॥

अमरमणि मम पुरी सुदेवान । उत्तर दिशि बह सरज पावनि ॥

आ मजन हे विनहि प्रयासा । मम समीप नर पावहि बासा ॥

अति प्रिय मोहि इहो के बासी । मम धामदा पुरी सुख रासी ॥

यह सब कपि सुनि प्रभु बानी । धन्य अवध जो राम बखानी ॥

श्लोक-आवत देखि जोग सब कथा सिंधु भगवान ।

नगर निकट प्रभु प्रवेउ उत्तरेउ भूमि विमान ॥ ४ (क) ॥

उतारि कहेउ प्रभु पुष्पकहि गुह कबेर पहि जाइ ।

प्रतिग राम चलेउ सो दरेषु विरह अति ताइ ॥ ४ (ख) ॥

आए भरत संग सब लोग । कस रत श्रीरघुवीर वियोग ॥

वामदेव बसिष्ठ मुनिनायक । देखे प्रभु मोहि धरि धनु सायक ॥

बाइ धरे गुर चरन सरोकर । अमृत सहित अति पुलक तनोकर ॥

मोहि केसल बंधी मुनिराया । हमरे केसल गुनहोहि दया ॥

सकल हिजन मिलि नगउ माया । धनु धरेषर खिकलनाया ॥

बाहे भरत पुनि प्रभु पद पंकज । नमत जिनहहि सुर मुनि संकर अज ॥

एहि विधि सगहि सुखी करि राम । आगे चले सीत गुन धाम ॥  
 छन माहि सगहि मिले भगवान । उमा मरम यह कहूँ न जान ॥  
 कृपा दहि खीरि बिलोकी । किए सकल नर नारि बिलोकी ॥  
 आसन रूप प्राटे वेहि काल । जयाजोग मिले सगहि कपाल ॥  
 प्रभावर सव लोग निहरी । कौतुक कौन कहै कपाल खरी ॥  
 प्रभु बिलोकि देखे पुरवासी । जानि विषम विपति सव नारी ॥  
 सीता चरन भरो सिर नावा । अगुज समेत परम सुख प्रावा ॥  
 भरोगुज लहि मन पुनि भूटे । दुख है बिरह संभव दुख भूटे ॥  
 लहि मन भरो मिले तब परम प्रेम दोख भाई ॥ ५ ॥

टी०-पुनि प्रभु हरि सज्जन भूटे हेतुं लगाई ।

वृंढ विरह वारीस कृपानिधान मोहि कर गहि लियो ॥ २  
 अब कुसल कौसलनाथ आरत जानि जन दरसन दियो ।  
 सुख सिवा सो सुख बचन मन वे निमिष जान जो पावई ॥  
 वृंढ कृपानिधि कुसल भरोहि बचन बेनि न आवई ।  
 जनु प्रेम अक सिंगार तनु धरि मिले बर सुपमा लही ॥ ३  
 प्रभु मिलत अजुगहि सोह मो पहिं जानि नहि उपमा कही ॥  
 अति प्रेम हेतुं लगाई अजुगहि मिले प्रभु निमिषन धनी ॥  
 छं०-राजीव लोचन खवत जल तन ललित पुलकावलि बनी ।  
 स्वामल गाल रोम भए ठहैं । नवराजीव नयन जल गहैं ॥  
 परे भूमि नहि उठत उठए । नर करि कृपासिंधु उर लए ॥





पूर सोमा संपति कल्याण। निगम सेष सारदा प्रवर्णना।  
 करहि आरती आरतिहर के। रघुकुल कमल विपिन दिनकर।  
 कंचन धार आरती नाना। ज्वरी सज करहि सुम गाना।  
 जहै तहै नारि निछावरि करही। देखि असीस हरष उर भरही॥  
 नाना भौति सुभास सजे। हरष नार निमान नहै नजे॥  
 बीधी सकल सुभाष सिचाई। गजमनि रनि नहै चौक पुराई॥  
 बंदनवार पलाका केत। सजनिह बनए संगल हेत॥  
 कंचन कलस विचित्र सवार। सजहि धरे सजि निज निज द्वार॥  
 चरि अटनिह देखहि नार नारि नर बंद॥ ८(ख)॥  
 सुमान बौहि नम सकल भवन चले सुखकंद॥

आसिष दीन्है हरषि पुनह प्रिय मम जिमि रघुनाथ ॥ ८(क)॥  
 द्रो-कौसल्या के चरननिह पुनि निन्ह नाथ मथ॥

सुनि प्रभु बचन मगन सभ भए। निमिष निमिष उपजत सुख नए॥  
 मम हिल लागि जन्म डन्है हरे। भरतहु ते मोहि अधिक प्रियारे॥  
 ए सव सखा सुनहि सुनि मेरे। भए समर सगर कहै भेरे॥  
 गुर बसिष्ठ कुल पूज्य हेमारे। डन्है की कृपा दनुज रन मारे॥  
 पुनि रघुपति सब सखा बोलए। सुनि पद लगहि सकल सिखाए॥  
 देखि नगरवासिन्ह के रोती। सकल सराहहि प्रभु पद प्रीती॥  
 भरत सनेह सौल बल नेमा। सादर सब चरनहि अति प्रेमा॥  
 हेतुमदादि सब गानर बीया। धरे मनोहर मनुज सरी॥



राम कहे। सेवकन्ह बुलाई। प्रथम सखन्ह अन्हवावहु जाई॥  
 सुनत गचन जाई तहुँ जन धाए। सुग्रीवादि वरत अन्हवाए॥  
 पुनि करननिधि भरत हूँकरे। निज कर राम जय निरुआरे॥  
 अन्हवाए प्रभु तौनिउ माई। भगत बछल कपाल खुराई॥  
 भरत भग्य प्रभु कोमलताई। सेप कोटि सत सकहि न गाई॥  
 पुनि निज जय राम विजराए। गुर अजससन माणि नहाए॥  
 करि मजन प्रभु भूषन साजे। अंग अंग देवि सत लाजे॥  
 दौ०-ससुन्ह सादर जानिकहि मजन वरत कराई।

द्विष्ट बसन वर भूषन अंग आंग सेजे बनई ॥ ११(क) ॥  
 राम राम द्विष्ट सोभाति रमा रूप गन जानि ।

देवि मातु सब हरपां जन्म सुफल निज जानि ॥ ११(ख) ॥

सुनु खोस वेहि अवसर ब्रह्मा निव मुनि बुद्ध ।

चरि विमान आए सब सिर देखन सुखकंद ॥ ११(ग) ॥

प्रभु विबोकि मुनि मन अजरागा। वरत दिव्य विधासन मगा ॥

रात्रि सम तेज सो गरुनि न जाई। बौठ राम दिजन्ह सिव नाई ॥

जनकमुता समेत खुराई। पविष प्रदेख मुनि समुदाई ॥

वेद मंत्र तब दिजन्ह उचारे। नमस्तु मुनि जय जयति पुकारे ॥

प्रथम तिलक बसिष्ट मुनि कीन्ह। पुनि सब विप्रन्ह आयसु दीन्ह ॥

सुत विबोकि हरपां महेतारी। वार वार आरती उतारी ॥

विप्रन्ह दान विविधि विधि दीन्ह। जाचक सकल अजाचक कीन्ह ॥



तव विषम माया बल सुरासुर नाग नर आ जग हरे ।  
 भव पश्य भगव आभित दिवस नित्य काळ कर्म गुननि भरे ॥  
 ते नाथ करि कलना बिजके बिबिध दुख ते निबहे ।  
 भव खेद छेदन दख हम कहूँ दख राम नमामहे ॥ २१ ॥  
 जे पान मान बिमल तव भव हेरनि भक्ति न आये ।  
 ते पाइ सुर दुर्लभ पदादपि परत हम देखत हरी ॥  
 बिबिध करि सब आस पतिहेरि दास तव जे होइ रहे ।  
 जहि नाम तव बिबु भगवरी भव नाथ सो समरामहे ॥ २३ ॥  
 जे वरन निव भज पूज्य राज सुभ परसि मुनिपतिनी नरी ।  
 तव निर्गुण मुनि बंदिता कैलोक पावन सुररी ॥  
 दख कलिस अंकुस कंज जुव वन फिरत कटक किन छे ।  
 पद कंज इंद मुकुंद राम रमेश नित्य भजामहे ॥ २४ ॥  
 अथ कर्मलमगहि तरे खर चारि निगमाग भरी ।  
 पद कंज सावा पंच बीस अनेक पर्न सुमन घरी ॥  
 फल जुगल बिबि कट मयूर बेलि अकेलि बेहि आशित रहे ।  
 पछित फूल नवल निव संसार विटप नमामहे ॥ २५ ॥  
 जे ब्रह्म अजमई वसुधामय मनपर व्यावही ।  
 ते कहूँ जानहुँ नाथ हम तव सगुन अस निव गावही ॥  
 कलनापान भुष सद्योनाकर देव यह वर मागही ।  
 मन पवन कर्म बिकार वीज तव चरन हम अचरामही ॥ २६ ॥

टी०—सब के देखत देखन्ह बिनी कीन्ह उदार ।

अवधान भए पुनि गए ब्रह्म आगार ॥१३॥ (क)

बैनतेय सुख संसु तब आए जहँ रखीर ।

बिनय करत गढ़गढ़ गिरा पुरित पुलक सरीर ॥१३॥ (ख)

छं—अप राम रामरामनं समनं । भव ताप अथाकुल पाहि जनं ॥

अवधेस सुरेस रामेस बिभो । सरनागत मागत पाहि प्रभो ॥

दसदस बिबासन बीस भुजा । कृत दूरि महा महि भूरि कजा ॥

रानीचर ब्रह्म पदंग रहै । सर पावक तेज प्रचंड दहै ॥

महिमंडल मंडन चाकर । धर सायक चाप निधंग बरै ॥

महं मोहि महा समता रानी । तम पुंज दिवाकर तेज अनी ॥

मनजाल किराल निपात किर । मंग लोका कुमोरा सरन हिण ॥

हलि ताय अनायास पाहि हरे । बिषया बन पावुर भूलि परै ॥

बहु रोग विद्यागिन्ह लोका हए । भवदंडि निरादर के फल ए ॥

भव सिंधु आगाव परे नरे । पर पंकज प्रेम न वे करे ॥

अति दीन मलीन दुखी निवहौ । जिन्ह के पर पंकज प्रीति नहौ ॥

अवलंब भवत कथा जिन्ह के । प्रिय संत अनंत सरा जिन्ह के ॥

नाहै राम न लोभ न मान मदा । जिन्ह के सम वैभव वा बिपदा ॥

एहि ते तब सेवक होत मुदा । मुनि ख्यात जोग भरोस सदा ॥

करि प्रेम निरंतर बेम लिहूँ । पर पंकज सेवत सुख दिहूँ ॥

सम मानि निरादर आदरही । सब संत सुखी विचरति मही ॥

मुनि मानस पंकज भृंग भजे । रघुवीर महा रत्नवीर अज ॥  
 तब नाम जपामि नमामि हरे । अब योग महानंद मान अरी ॥  
 गुन सोल केषा परमायवन । प्रनमामि निरंतर श्रीराम ॥  
 रघुनंद निकंदय दंडधन । सहिपाल बिलोक्य दीन जन ॥  
 द्रो-बार बार बार मागवुं हरेषि देहु श्रीरंग ।

पद सरोज अनपायनी भगति सदा सतसंग ॥ १४ (क) ॥  
 बरनि उमापति राम गुन हरेषि गए कैलास ।

तब प्रभु कपिनंद दिवाए सब बिधि सुखप्रद बास ॥ १४ (ख) ॥

सुनु खगपति यह कथा पावनी । विविध ताप भव भय दाननी ॥  
 महाराज कर सुभ अभिषेका । सुनत लहै नर विरति बिषेका ॥  
 जे सकाम नर सुनै जे गावह । सुख संपति नाना विधि पावह ॥  
 सुरदुर्लभ सुख करि जग माहो । अंतकाल खपति पुर जाहो ॥  
 सुनहैं विभुक्त विरत अरु विषह । लहैहें भगति गति संपति नह ॥  
 खगपति राम कथा सै बरनी । स्वमति बिलस जास दुख हरेनी ॥  
 विरति बिषेक भगति हट करनी । मोह नदी कहुं सुंदर तरनी ॥  
 निर नय भाल कौसलपुरी । हरिधर रहै जोग सब कुरी ॥  
 निर नह प्रीति राम पद पंकज । सब कैलासहि नमत सिव मुनि अज

दो-ब्रह्मनंद मान कपि सब क प्रभु पद प्रीति ।  
 जात न जाने दिवस लिखे गए भास पद श्रीति ॥ १५ ॥

धरै यह सपनेई सुधि नाहीं। जिनि पदोह संत मन माहीं॥  
 त रघुपति सन सखा बोलिए। आइ सबहि सादर सिख नाए॥  
 राम प्रीति समीप बैठारै। भगत मुखद मई बचन उचारे  
 मई अति कीन्ह मोरि सेवकाई। मुख पर कोहि बिधि करी बज्जई  
 ताते मोहि तुम्ह अति प्रिय लगै। सम हित लागि भवन मुख लगै  
 अज राज संपति बैदेही। देह गेह परिवार सनेही॥  
 त सम प्रिय नाहै तुम्हहि समान। मेषा न कहउँ मोर यह जाना॥  
 त कैं प्रिय सेवक यह नीती। मोरै अधिक दास पर प्रीती॥

श्लोक-अब गूढ जाहूँ सखा सब भजेहूँ मोहि दूढ़ नेम ।

सदा सर्वगत सर्वहित जाति करेहूँ अति प्रेम ॥ १६ ॥

मुनि प्रभु बचन मान सब भए। को हम कहौ बिबरि तन गए॥

एकटक रहे जोरि कर आगे। सकाहे न कह्यु कहि अति अनुरागे

राम प्रेम तिनह कर प्रभु देखा। कहौ बिबिध बिधि यान बिबेधा

प्रभु समुख कछु कहन न पारहि। पुनि पुनि चरन सरोज निहारहि

त प्रभु भूषन बसन मगाए। नागा रंग अनूप सुहाए॥

सुधीगहि प्रथमहि पहिराए। बसन भरत निज होय बनार॥

प्रभु प्रीति लछिमन पहिराए। लंकपति रघुपति मन मार॥

अंगार बैठ रहा नाहै डोला। प्रीति देखि प्रभु ताहि न बोला॥

श्लोक-आमंत्र नीलादि सब पहिराए रघुनाथ ।

हिंदू धरि राम रूप सब चले नाहै पद माथ ॥ १७ (क) ॥



# \* रामचरितमानस \*

तव अंगद उठि गइ सिरे सजल नयन कर जोरि ॥ १७० (ख) ॥  
 अति विनीत बोलै वचन मनहुँ प्रेमस बोरि ॥ १७० (ख) ॥  
 मुहुँ सर्वस्य कथा सुख सिंधो । दीन दयाकर आरत बंधो ॥  
 मरती बर नाथ मोहि बाली । मयउ गुहरिहि कौछे बाली ॥  
 असन सन निरहुँ संभारी । मोहि जनि तजहुँ भगत हितकारी ॥  
 मोरि तुम्ह प्रभु गुर पिबु माता । जाउ कहौ तजि पद जलजाता ॥  
 तुम्हहि विचारि कहहुँ नरनादा । प्रभु तजि भवन कज मम कादा ॥  
 बालक म्यान बुद्धि बल होना । राखहुँ सन नाथ जन दीना ॥  
 नौचि टहल गइ कै सज करिहुँ । पद पंकज बिलोकि भव तरिहुँ ॥  
 अस कहि चरन पौउ प्रभु पाही । अज जनि नाथ कहहुँ गइ जाही ॥  
 दौ०—अंगद वचन विनीत सुनि रघुपति कहेना सीव ।  
 प्रभु उठाइ उर लापव सजल नयन सोजीव ॥ १७० (क) ॥  
 निज उर माल वसन मनि बालितनय पहि साइ ।  
 विद्या कीन्हि भगवान तब बहूँ प्रकार समुझाइ ॥ १७० (ख) ॥  
 भरत अजुज सौमित्र समता । पठवन चले भगत कृत चैता ॥  
 अंगद हृदय प्रेम नहि भोग । फिरि फिरि चितव राम की ओ ॥  
 बार बार कर दंड प्रतापा । मन अस रदन कहहि मोहि रा ॥  
 राम बिलोकनि बोलनि चलनी । सुमिरि सुमिरि सोचत हौस मि ॥  
 प्रभु कव देखि विनय बहूँ भाषी । चलेउ हृदय पद पंकज राख ॥  
 अति आदर सज कीप पहुँचाए । माइन्ह सहित भरत पुनि अ

तत्र सुधीव चरन गहि गाना । माँति विनय कीन्है हनुमाना ॥  
 दिन दस करि खण्डित पद सेवा । पुनि तब चरन देखिबहुँ देवा ॥  
 पुन्य पुंज गुह्य पवनकुमार । सेवहुँ जाइ कथा आगास ॥  
 अस कहि कपि सब चले वृंता । अंगद कहै सुनहुँ हनुमान ॥  
 श्री० कहैहुँ दंडवत प्रभु सै गुह्यहि कहै कर जोरि ।

बार बार खगवकहि सुराति करायहुँ मोरि ॥ १९(क) ॥  
 अस कहि चलेउ वालिमुख फिरि आयउ हनुमान ।  
 वासि प्रीति प्रभु सब कही मगन भए भावत ॥ १९(ख) ॥  
 कलिसहुँ चाहि कठोर आनि कामल कुसुमहुँ चाहि ।

चित खगोस राम कर समुझि परहुँ कहि ॥ १९(ग) ॥  
 पुनि केषल लिप्यो गोलि निषादा । दीन्है भूषन वसन प्रसादा ॥  
 जाइ भवन मम सुमिरन कोहै । मन कम बचन धमूअनुसरेहुँ ॥  
 गुह्य मम सखा भरोत सम भाला । सदा रहेहुँ पुर आवत जाला ॥  
 बचन सुनत उपजा सुख भरी । परउ चरन भरी लोचन धरी ॥  
 चरन नलिन उर धरि गृह आवा । प्रभु सुभाउ परिजननिह सुभावा  
 खण्डित चरित देखि पुरवासी । पुनि पुनि कहै धन्य सुखरासी  
 राम राज कैरौ बोलैका । देखिबत भए गए सब सोका ॥  
 भयक न कर कहै सन कोहै । राम प्रताप विषमता खोहै ॥

श्री०-चरनाश्रम निज निज धरम निरत वेद पथ जोग ।

चलेहि सदा पावहि सुखहि नहि भय सोक न रोग ॥ २० ॥

उमा राम प्रह्लादि ब्रह्मिणी । जगद्गा संतमनिदिता ॥

टी०-आसि केषा कटाक्ष्य सुर चाहव चितव न सोइ ।

राम पराशरिंद रति करति सुभावहि जोइ ॥ २४ ॥

सेवाहि सानकूल सब भाई । राम चरन रति आति आधिकारि

प्रभु मुख कमल बिभोकात रहै । कबहुँ केषाल हमहि कछु कहै

राम करहि आनंद पर प्रीति । नाना भाँति सिखावहि नीति ॥

देखियत रहै नगर के लोग । करहि सकल सुर दुर्लभ भोग ॥

अहनिमि निषिद्धि मनगल रहै । शिरयुगीर चरन रति चढ़ै ॥

हुइ सुत सुंदर सीता जाए । लवकुश बेट पुरानन्ह जाए ॥

दोउ बिजई निनई गुन भंडिर । देखि प्रलंबिष मनहुँ आति सुंदर

हुइ हुइ सुत सब आनन्ह को । भए रूप गुन सील धनो ॥

टी०-पान निरा गोपीत अज माया मत गुन पर ।

सोइ सविधानंद वन कर नर चरित उदार ॥ २५ ॥

प्रातकाल सरक करि मजन । बेटहि समा संग दिज सजन ॥

बेट पुरान गीसठ बखानहि । सुनहि राम जगधि सब जानहि

अनुजन्ह संजत भोजन करै । देखि सकल जननी मुख मरै

भरत सज्जन दीनउ भाई । सहित पवनसुत उपवन जाई ॥

बैसाहि वैठि राम गुन गाव । कहइ जगमान सुमति अगगाव ॥

सुनत विमल गुन आति मुख पावहि । बहुरि बहुरि करि विनय कहावहि ॥

सब के यह यह होहि पुरान । राम चरित पवन विधि गान ॥

नर अरु नाहि राम गुन गानहि । कहहि दिवस नहि जात न जानहि

दो०—अवधपुरीवासिन्ह कर सुख संपदा समाज ।

सहस्र सेष नहि कहि सकहि जहूँ नृप राम विराज ॥ २६ ॥

नारदादि सनकादि मुनीषा । दरसन लागि कोसलधौषा ॥

दिन प्रति सकल अज्ञाध्या आवाहि । देखि नगर विरागि विषयवाहि ॥

जात रूप मनि रचित अटारी । नाना रंग कंचिद गच ठारी ॥

पुर चहुँ पास फोट अति सुंदर । रच कूर्पूरा रंग रंग बर ॥

नव ग्रह निकर अनीक बनहि । जगु धेरी असरवाति आहि ॥

महि बहूँ रंग रचित गच कूर्पा । जो बिलोकि मुनिवर मन नाचा ॥

धवल धाम ऊपर नम चुंबत । कलस मनहुँ रति ससि दूति निंदत

बहुँ मनि रचित झरोखा आवाहि । ग्रह ग्रह प्रति मनि दीप विराजहि

छं०—मनि दीप राजहि भवन आवाहि देहरी बिहस रची ।

मनि खंभ मति विरंचि विरची कनक मनि मरकत खची ॥

सुंदर मनोहर मंदिरागल अजर दीवर फटिक रचे ।

प्रति द्वार द्वार कपाट पुरट बनाइ बहूँ बजनि खचे ॥

दो०—चार विजसाला ग्रह ग्रह प्रति लिखे बनाइ ।

रामचरित जे निरख मुनि ते मन लेहि चोराइ ॥ २७ ॥

सुमन बाटिका सबहि जगाहि । विविध मति करि जनन बनाइ ॥

लला ललित बहूँ जाति सुहाइ । फूलहि सदा यवत कि नाइ ॥

गुंजात मधुकर मुखर मनोहर । मारत विविध सदा बहूँ सुंदर ॥

उमा राम प्रह्लादि ब्रह्मिनी । जगदंश संततमनिदिता ॥

श्री०-जासु कैपा कटाख्य सुर चाहत चितव न सोइ ।

राम पदार्थद रति करति सुभावहि सोइ ॥ २४ ॥

सेवहि सानकैल सग भाई । राम चरन रति अति अधिकहि

प्रभु मुख कमल चिलोकत रहै । कबहुँ केषल हमहि कह्यु कहै

राम कहि आनंद पर प्रीती । नाना भाति सिखावहि नीती ॥

देखित रहै नगर के लोग । कह्यु सकल सुर दुर्लभ योग ॥

अहेनसि विधिहि मानवत रहै । श्रीखिन्न चरन रति चहै ॥

हुइ सुत सुंदर सीता जाए । लव कुस भैर प्रयानत जाए ॥

दोउ विजई विनई गुन भंदिर । हरि प्रतिनिध मनहुँ अति सुंदर

हुइ हुइ सुत सग आनंद करे । भए रूप गुन सील धरे ॥

श्री०-मान निरा गोपीत अज साया मन गुन पार ।

सोइ सच्चिदानंद धन कर नर चरित उदार ॥ २५ ॥

प्रातकाल सरक करि मजन । बैठहि सभा संग दिज सजन ॥

भैर प्रयान वसिष्ठ बखानहि । सुनहि राम जगहि सग जानहि

अनुजन्ह सुगत भोजन करै । देखि सकल जननी मुख भारै

भरत सज्जन दोनउ भाई । सहित पवनसुत उपवन जाई ॥

ब्रह्महि बैठ राम गुन गाइ । कहै हरिमान सुमति अवाइ ॥

सुगत विमल गुन अति सुख पावहि । बहुरि बहुरि करि विनय कथावहि ॥

सग के गइ गइ होहि प्रयान । राम चरित पावन निधि जान ॥



नामा खा गालकन्हि लिआए । बोलत मधुर उड़ात सुहाए ॥  
 मोर हंस सारस पारवत । भवननि पर सोभा अति पावत ॥  
 जहूँ तहूँ देखहि निज परिछाहीं । बहूँ निधि कूँजहि दल्य कराहीं ॥  
 सुक सारिका पढ़ावहि बालक । कहहुँ राम खूपति जनपालक ॥  
 राज दुआए सकल निधि चार । बीयाँ चौहट कंचि नजार ॥  
 छं-बाजार खंचर न बनइ बरनत वरतु बिबु गय पाहुँ ॥  
 जहूँ भूप रमानिवास तहूँ की संपदा किमि गाहुँ ॥  
 बहूँ बज्जल सरोफ बनि क अनेक मनहुँ ऊँचेर है ।  
 सब सुखी सब सच्चरित सुंदर नारि नर सिद्धि जरठ है ॥

दो-उत्तर दिस सरजू बह निमल जल गंभीर ।

बाँधे घाट मनोहर स्वल्प पंक बहिं तीर ॥ २८

दूरि फराक कंचि सो घाटा । जहूँ जल पिआहि गोजि राज ठा  
 पनिघट परम मनोहर नाना । तहूँ न पुरुष करहि अजाना  
 राजघाट सब निधि सुंदर बर । मज्जाहि तहूँ बरन चारिउ नर  
 तीर तीर देखह के मंदिर । नहुँ दिक्षि दिन्ह के उपवन सु  
 कहूँ कहूँ सारिवा तीर उदासी । बसहि आन रत मुनि संन्यासी  
 तीर तीर तुलसिका सुहाई । बंद बंद बहूँ मुनिन्ह लग्य  
 पुर सोभा कहूँ गरुनि न जाई । बाहेर नगर परम कंचि  
 देखत पुरी आखिल अप भागा । अन उपवन बापिका तड़ा





जिनहेहि सोक ते कहउँ बखानी । प्रथम आबिआ निषा नसनी ॥  
अथ उल्लेख जहँ लहौ छकाने । काम कोष करै सकुचने ॥  
विनिषकर्म गुन काल सुभाऊ । एचकोर सुख लहेहि न काऊ ॥  
मत्सर मान मोह मर मोह चोरा । इन्है करहु न कबनिहुँ ओरा ॥  
धरम लड़ाग ग्यान विद्याना । ए पंकज निकसे विधि नाना ॥  
सुख संतोष विराग निवेका । निगत सोक ए कोक अनेका ॥

दो०—यह प्रताप रवि जाकेँ उर जब करहु प्रकास ।

पछिले बाजहिँ प्रथम जे कहै ते पावहिँ नास ॥ ३९ ॥

आनन्ह सहित राम एक बारा । संग परम प्रिय पवनकुमारा ॥  
सुंदर उपगता देखन गए । सब तक कुसुमित पण्डव गए ॥  
जानि समय सनकादिक आए । तेज पुंज गुन सील सुहाए ॥  
प्रधानंद सदा लयलीना । देखत बालक गहकालीना ॥  
रूप धरै जगु चारिउ बेदा । समदरसी सुनि विगत निमोदा ॥  
आसा बसन व्यसन यह तिन्हैही । खणित चरित होइ तहँ सुनही ॥  
तहाँ रहे सनकादि भवानी । जहँ धरसंभव मुनिवर ग्यानी ॥  
राम कथा सुनिगर गहुँ गरनी । ग्यान जौनि पावक निमि अरनी ॥  
दो०—देहि राम सुनि आवत हेरहि दंडवत कीन्ह ।  
स्वागत पूछि पीत पद प्रभु बैसन कहँ दीन्ह ॥ ३२ ॥  
सुनि खणित छवि अवल बिछोकी । भए मान मन सके न रोकी ॥

ममल गाल सरोकह लोचन । सुंदरता भंडिर भव मोचन ॥  
कटक रहे निमेष न लगवहि । प्रभु कर जोरौ सीस नवावहि ॥  
नन्द कै दसा देखि रघुवीरा । खवत नयन जल पुलक सरीरा ॥  
र गहि प्रभु मुनिवर बैठार । परम मनोहर बचन उचार ॥  
गजु वन्य भैं सुनहु सुनीसा । छुट्टै दरस जाहि अथ लोसा ॥  
हुँ भग पाइव सतसंगा । बिनहि प्रयास होहि भव भंगा ॥

टी०—संत संग अपवर्ग कर कामी भव कर पथ ।

कहहि संत कवि कोविद श्रुति पुरान सद्ग्रंथ ॥ ३३ ॥

नि प्रभु बचन हरषि भुनि चारी । पुलकित तन अखलि अनुसारी ॥  
भय भगवत अनंत अनामय । अनय अनेक एक ककनमय ॥  
भय निगुन जय जय गुन सगर । सुख भंडिर सुंदर अति नगर ॥  
भय इंदिरा रसन जय भंडर । अनुपम अज अनादि सोभाकर ॥  
भान निधान अमान अमान मानप्रद । पावन सुजस पुरान वेद वद ॥  
भय केवल अथवा भजन । नाम अनेक अनाम निरंजन ॥  
भवं सत्तात सर्व उरालय । बससि सदा हम कहुँ परिपालय ॥  
दंद विपति भव फंद विमंजय । इंदि बसि राम काम भद गंजय ॥

टी०—परमानंद कृपावतन मन परिपूर्ण काम ।

प्रम भगति अनपायनी देहु हेमहि श्रीराम ॥ ३४ ॥

हे भगति रघुपति अति पवनि । विविधि ताप भव दाय नसवनि ॥  
मनर काम सुरवीर कलपवक । होइ प्रसन्न दीजे प्रभु यह वक ॥

मय गारुडि कुंभज खिनायक। सेवत सुखम सकल सुख दायक ॥  
 मन संभव दान दूख दारय। दीनबंधु समता निस्कारय ॥  
 आस आस हरिषादि निवारक। विनय विवेक विरति निस्कारक ॥  
 भूप मौलि मनि मंडन धरनी। देहि भाति संसृति सर तरनी ॥  
 मुनि मन मानस हंस निरंतर। चरन कमल बांदि अज संकर ॥  
 खकुल केतु सेतु अति रच्छक। काल करम सुमात्र गुन भच्छक ॥  
 तारन तरन हरेन सब दूषन। तुलसिदास प्रभु विभूषन भूषन ॥  
 द्रो-वार-वार अखिति करि प्रेम सहित सिरे नाह ।

ब्रह्म भवन सनकादि ते आति अभीष्ट बर पाहे ॥ ३५ ॥

सनकादिक विवि लोका सिधाए। आनंद राम चरन सिरे नाए ॥  
 पूछत प्रभुहि सकल सकुवाही। चितवहि सब मावतसुत पाही ॥  
 सुनी चहहि प्रभु मुख कै गानी। जो सुनि होइ सकल भ्रम हानी ॥  
 अंतरजामी प्रभु सम जाना। ब्रह्मत कहहु काहे हेतुमाना ॥  
 अंतरजामी प्रभु सम जाना। ब्रह्मत कहहु काहे हेतुमाना ॥  
 जोरि पानि कह तज हेतुमाता। सुनहु दीनदयाल भावाता ॥  
 नाथ भगत कहूँ पूछन चहही। प्रसन्न करत मन सकुचत अहही ॥  
 तुम्ह जानहु कधि मोर सुभाऊ। भगवहि मोहि कहूँ अंतर काऊ ॥  
 सुनि प्रभु भवन भगत गहै चरना। सुनहु नाथ प्रनतारति हरना ॥

द्रो-नाथ न मोहि संहरे कहूँ सपनेहुँ सोक न मोह ।

केवल कथा तुम्हारेहि कथानंद संधरे ॥ ३६ ॥

करहुँ कथानिधि एक दिठहि। मैं सेवक तुम्ह जन सुखदाहि ॥

सुनहु असंतह केर सुभाऊ । भुलैँ संगति करिय न काऊ ॥  
 ते सजन सम प्रानधिग गुन माँदर सुख पुन ॥ ३८ ॥  
 दो०-निंदो अखिति उभय सम समता सम पद कंज ।

सम दम नियम नीति नहिँ डोळहिँ । एकष वचन कयहँ नहिँ बोलहिँ  
 ए सज लखन वसहिँ जासु उर । जानहुँ तात सत संतत कर ॥  
 सीतलता सरलता मयगी । दिज पद प्रीति धर्म जनयगी ॥  
 विगत काम सम नाम परायन । सीति विरति विनती मुदितायन ॥  
 सवहिँ मानपद आपु अमानी । भरत प्रान सम सम ते प्रानी ॥  
 कोमलचित दीनन्ह पर दायी । मन बच कम सम भगति अमायी ॥  
 सम अमूर्तरिपु विमद विरगी । लोभामारुष हरेप भय लगी ॥  
 विषय अलंपट सील गुनाकर । पर दुख दुख सुख सुख देखे पर ॥  
 अनल दाहिँ पीटत वनहिँ परसु वंदन यह दंड ॥ ३९ ॥

दो०-वाले सुर सीसन्ह चंदत जाग बखस श्रीखंड ।  
 काटइ परसु मलय सुन माँह । निज गुन देइ सुभाष वसाँह ॥  
 संत असंतहिँ कै अंस करनी । जिमि ऊँठर चंदन आचरनी ॥  
 संतन्ह के लखन सुन आता । अमानित अति पुरान निख्याता ॥  
 संत असंत भेद विख्याहँ । प्रनतपाल माँह कहहुँ बुझाहँ ॥  
 गुना चहुँ प्रभु तिनहेँ कर लखन । कृपासिंधु गुन ध्यान निचखन  
 श्रीमुख पुनह पुनि कीन्ह बड़ाहँ । तिनहेँ पर प्रभुहिँ प्रीति अधिकहँ  
 तिनहेँ कै महिमा खुराहँ । बहूँ विधि वेद पुरानन्ह गाँहँ ॥

निन्द कर संग सदा दुखदाई । विमि कपलहि धाउइ हरदाई ।  
 खलन्ह दैदय अति तप बिसर्ग । जरहि सदा पर संपति देखी ।  
 जहूँ कहूँ निदा सुनहि पराई । हरपहि मनहुँ परी निधि पाई ।  
 काम कोष मर लोभ परापन । निर्दय कपटी कुटिल मलयन ।  
 ययक अकारन सब कहूँ सो । जो कर हित अनहित ताहूँ सो ।  
 झूठइ लेना झूठइ देना । झूठइ मोजन झूठ चवना ।  
 जोलहि मयुर यचन विमि मोरा । खाइ मरु आहि दैदय कठोरा ।  
 दो०-पर द्रोही पर दार रत पर धन पर अपवाद ।

ते नर पावर पापमय देह धरु मज्जाइ ॥ ३९ ॥  
 लोभइ ओदन लोभइ दान । सिखोदर पर जमपुरवास न ।  
 काहूँ की जाँ सुनहि बड़ाई । खास लेहि जनु जूझी आइ ॥  
 जन काहूँ कै देखहि विपती । सुखी मए मानहुँ जग चपती ॥  
 खारय रत परिचार बिराधी । लपट काम लोभ अति कोधी ॥  
 माछ पिता गुर विष न मानहि । आपु गए अक वालहि आनहि ॥  
 करहि मोह अस द्रोह परावा । संत संग दूरि कथा न भावा ॥  
 अवगुन सिधु मंदमति कामी । वेद विद्वेषक परधन स्वामी ॥  
 विष द्रोह पर द्रोह बिसेष । दंभ कपट निधु धरु सुवेपा ॥  
 दो०-ऐसे अधम मज्ज खल कुतजग जेनाँ नाहि ।  
 दापर कछुक बुंद बहूँ होइहहि कलिजग माहि ॥ ४० ॥  
 पर हित सारस धर्म नाहि मरु । पर पीडा सम नाहि अपमाइ ॥

निर्गुण सकल पुराण वेद कर । कहेउँ तब जानहि कोविद नर ॥  
 नर सगुन धरि जे पर पीरा । करहि ते सहेहि मही भव भीरा ॥  
 करहि मोह बस नर अव नाना । खरथ रत फलोक नसाना ॥  
 कालख्य तिनहे कहूँ मैं आता । सुम अक असुम कर्म फल दाता ॥  
 अस विचारि जे परम स्याने । भजहि मोहि संसल दुख जाने ॥  
 आगाहि कर्म सुभासुम दायक । भजहि मोहि सुर नर मुनि नायक ॥  
 तब असंतन के गुन भाषे । ते न परहि भव जिनहे लखि राखे ॥

टी०—सुनहुँ तब माया केल गुन अह दोष अनेक ।

गुन यह उभय न देखिअहि देखिअ सो अधिक ॥ ४१ ॥

भीमुख बचन सुनत सब भाई । देखे प्रेम न हेदय समझै ॥  
 परहि विनय अति वारहि वारा । हेनमान हिय देख अपरा ॥  
 र्गुनि खपति निज मंदिर गए । एहि विधि चरित करत निर नए ॥  
 नर नर चरित देखि मुनि जाही । ब्रह्मलोक सब कथा कहेही ॥  
 गुनि विरंचि आतिसय मुख मानहि । पुनि पुनि तब कहहुँ गुनगानहि ॥  
 नकादिक नारदहि सरदहि । जगपि ब्रह्म निरत मुनि आदहि ॥  
 गुनि गुन मान समधि विवारी । सादर सुनहि परम अधिकारी ॥

टी०—जीवनमुक्त अक्षर चरित सुनहिं तबि क्यान ।

जे हरिकथा न करहिं रति तिनहे के हिय पाषाण ॥ ४२ ॥

एक बार खनाय जोलाए । गुर द्विज पुरवासी सब आए ॥

भूँछे गुर मुनि अछ दिज सजन । बोलि बचन भगत भव भजन ॥  
 सुनहु सकल पुरजन मम बानी । कहैतु न कह्यु ममता उर आनी  
 नहि अनति नहि कह्यु ममुताई । सुनहु करहु जो गुनहहि सोहै ॥  
 सोइ सेवक प्रियतम मम सोई । मम अनुसामन मानै जोई ॥  
 जो अनति कह्यु मायाँ माई । तौ मोहि परजहु मय विषमरुई ॥  
 बड़ भग मजुग तनु पावा । सुइ दुलैय सब ग्रंथनिह गावा ॥  
 सपथन धाम मोच्छ कर दारा । पाइ न जोहि परलोक सुवारा ॥  
 टी०-सौ परब दुख पावइ सिर धुनि धुनि पछिताइ ।

कालहि कमाहि ईस्वरहि मिथ्या दोस लगाइ ॥ ४३ ॥

एहि तेन कर कल विषय न माई । स्वर्गउ स्वल्प अंत दुखदाई ॥  
 नर तनु पाइ विषय मन देई । पलटि सुधा ते सठ विष लेई ॥  
 ताहि कगहुँ भल कहइ न कोई । गुंजा ग्रहइ परस मनि खोई ॥  
 आकर चारि लच्छि चौरासी । जोनि भमत ग्रह विष अविनासी  
 फिरत सदा मया कर प्रेय । काल कर्म सुभाव गुन प्रेय ॥  
 कयहुँक करि कबना नरदेही । देव ईस विजु हेतु सनदेही ॥  
 नर तनु भव गारिधि कह्यु प्रेय । सन्मुख मकल अनुग्रह प्रेय ॥  
 करनधार सदगुर दंड नावा । दुलैय साज सुलभ करि पावा ॥

टी०-जो न तरे भव सागर नर समाज अस पाइ ।

सो केव निंदक मंदमति आत्माहेन गति जाइ ॥ ४४ ॥

जो परलोक इंदौ सुख चहै । सुनि मम बचन इंदु दंड गाहै





मामन्त्रलोक्य पंक्त लोचन । केषां निजलोकनि सोच विमोचन ॥  
 नील ताम्रस स्याम काम अरि । हृदय कंज मकरंद मधुप हरि ।  
 जातिधान वरुध बल भजन । मुनि सज्जन रंजन अथ भजन ।  
 भूँसुर ससि नव बंद बलहक । असुरन सरन दीन जन ग्राहक ।  
 भुज बल विपुल भार महि खंडित । खर दूषन विराध वध पंडित ॥  
 रावनादि सुबलरूप भूषण । जय दसरथ कैल कुमुद सुधाकार ॥  
 सुजस पुरान विदित निगमगाम । गावत सुर मुनि संत समगाम ॥  
 काननौक व्यलीक मद खंडन । सय विधि कुसल कोसला भंडन ॥  
 कलि मल मथन नाम ममताहेन । तुलिसदास प्रभु पाहि प्रनत जन ॥

दो०—प्रम सहित मुनि नारद वरनि राम गुन प्राप्त ।

सोभासिंघु हृदय धरि गए जहाँ विधि प्राप्त ॥ ५९ ॥

तिरिजा सुनई बिसद यह कथा । मैं सय कही मोरि मति जथा ॥  
 राम चरित सत कोटि अपारा । श्रुति सारदा न भरनै परा ॥  
 राम अनंत अनंत गुनानी । जन्म कर्म अनंत नामानी ॥  
 जल सीकर माहे रज गनि जाही । खिपति चरित न भरनि सिराही ॥  
 विमल कथा हरि पर दासनी । भगति होइ मुनि अनपायनी ॥  
 उमा कहिउ सय कथा सुहाई । जो भुसुहि खगपातिहै सुनाई ॥  
 कछुकराम गुन कहेउ बखानी । अथ का कहौ सो कहै भवानी ॥  
 सुनि सुम कथा उमा हरषानी । बोलौ अति विनीत महु बानी ॥  
 धन्य धन्य मैं धन्य पुरी । सुनेउ राम गुन भव भय दारी ॥

१०-पुनर्देही कृपा कृपापवन अथ कृतकृत्य न भवे ।

जानेउ राम प्रताप प्रभु विद्यार्थ सहेदे ॥ ५२ (क) ॥

नाथ तवानन सखि खबर कथा सुभा रघुवीर ।

अवन पुनर्देही मन पान करि नहि अवात भाँखीर ॥ ५२ (ख) ॥

राम चरित जे सुनत अयाहो । रस विशेष जाना निन्दे नाहीं ॥

जीवनमुक्त महासुनि जेऊ । हरि गुन सुनहि निरंतर बेऊ ॥

प्रथ सागर चहे पार जो पावा । राम कथा ता कहूँ हँ नावा ॥

विषदेन्द कहूँ पुनि हरि गुन ग्रामा । अवन सुखद अरु मन अभिरामा ॥

अवनवत अस को जग माहो । जाहि न रघुपति चरित सोहोही ॥

ते जई जीव निजगरमक वाती । जिन्हदेहि न रघुपति कथा सोहोही ॥

हरिचरित्रमानस दुन्दे गावा । सुनि सँ नाथ अमलि सुख पावा ॥

दुन्दे जो कही पडे कथा सुहाई । कामागसुहि गणई प्रति गाई ॥

१०-विदेति ग्यान विग्यान हँ राम चरन अलि नहे ।

बायस तन रघुपति भगलि मोहि परम सहेदे ॥ ५३ ॥

नर सहेस महुँ सुनहुँ पुरारी । कोउ एक होइ धर्म प्रतापारी ॥

धर्मसौल कोटिक महुँ कोइ । विषय विमुख विराम रा होइ ॥

कोटि विरक्त मध्य श्रुति कहैहै । सम्यक ग्यान सकत कोउ होइहै ॥

ग्यानवं कोटिक महुँ कोऊ । जीवनमुक्त सकत जग ॥

निन्दे सहेस महुँ सब सुख जानी । दुल्लभ अखलीन ॥

धर्मसौल विरक्त अरु ग्यानी । जीवनमुक्त अखलीन ॥

सब ते सो दुलैम सुरैया। राम भगति रत गत भद माया॥  
 सो हरिभगति काग किमि पाई। निखनैय मोहि कहै बुझाई॥  
 टी०-राम परायण ज्ञान रत गुनगार भति धीर ।

नाथ कहै कहि कारन पायउ काक सरीर ॥ ५४ ॥

पह प्रभु चरित पवित्र सुहावा। कहै ऊँपाळ कामा कहै पावा॥  
 गुनै कहि भौति सुग मदनारी। कहै मोहि अति कौतुक भारी  
 गणई महारथानी गुन रासी। हरि सेवक अति निकट निवासी  
 तेहि कहि हेतु कामा सन जाई। सुनी कथा सुनि निकर बिहाई॥  
 कहै कवन निधि भा संवादा। दोउ हरिभगत कामा उरवादा॥  
 गौरि गिरा सुनि सरल सुहाई। बोलै सिव सादर सुख पाई॥  
 धन्य सती पावन भति वीरी। रघुपति चरन पाति नहि धोरी॥  
 सुनई परम पुनीत इतिहासा। जो सुनि सकल लोक भ्रम नासा  
 उपजई राम चरन निखासा। भगनिधि तर नर विनहि प्रयासा

टी०-पुष्टिअ प्रस बिहंगपति कान्हि कामा सन जाई ।

सो सब सादर कहिहै सुनई उमा मन जाई ॥ ५५ ॥

मू विमि कथा सुनी भव मोचनि। सो प्रसंग सुन सुसुख सुखेचनि  
 प्रथम देख्य गइ तव अवतारा। सती नाम तव रहा गुनैरा॥  
 देख्य जग्य तव भा अपमाना। गुनै अति कोष तजे तव प्राना॥  
 मम अनुचरै कान्हि मख भंगा। जानई गुनै सो सकल प्रसंगा॥  
 तव अति सोच भयउ मन मोरे। दुखी भयउ निधोना प्रिय वारे॥

सुंदर जन गिरि धरित तड़गा। कौतुक देखत फिरतु बेरगा ॥  
 गिरि सुभर उत्तर दिशि दूरी। नील सैल एक सुंदर भूमी ॥  
 वासु कनकमय सिंहर सुहाए। चारि चार भरे मन भाए ॥  
 तिनह पर एक एक धिप विखाल। बर पीपर पाकरी रसाल ॥  
 सैलपरि सर सुंदर सोहा। मन सोपान देखि मन मोहा ॥

श्री०—सीतल अमल मधुर जल जलन विपुल बहुरंग ।

कलल कलल बहस गन गुंजत मंजुल अंग ॥ ५६ ॥

तेहि गिरि वनिय बसइ खग सोई। तासु नास कल्यांत न होई ॥  
 माया कृत गुन दोष अनेका। मोह मनोज आदि अविबेका ॥

रहे व्यापि समस्त जग माहीं। तेहि गिरि निकट कबहुं नहि जाहीं

तहुं बसि हेरिहि भजइ जामि कामा। सो सुनु उमा सहित अनुरगा ॥

पीपर तब तर व्यान सो धरई। जग जग्य पाकरी तर करई ॥

आय छूई कर मानस पूजा। तजि हरि भजन काजु नहि दूजा ॥

बर तर कह हरि कथा प्रसंगा। आवहि सुनहि अनेक विहंगा ॥

राम चरित विविध विधि जाना। प्रेम सहित कर सादर गाना ॥

सुनहि सकल मति विमल मराल। बसहि निरंतर जे तेहि काल ॥

जब मैं जाइ सो कौतुक देख। उर उमजा आनंद विसेष ॥

श्री०—तब कछु काल मराल तब धरि तहुं कीन्ह निवास ।

सादर सुनि रखपति गुन पुनि अपरु कैलास ॥ ५७ ॥

गिरिजा कहेतु सो सब इतिहास। मैं जेहि समय गपतु खग पास ॥

अब सो कथा सुनई जैहै है। गयउ कामा पहि खग कुल के  
 जब खगनाथ कीन्है रन कीड़ा। समुझत चरित होति मोहि बीड़ा  
 इंद्रजीत कर आपु ब्रूषायो। तब नारद मुनि गहड़ पठायो  
 बंधन काटि गयो उरगादा। उपजा हृदय प्रचंड विषादा ॥  
 बंधन काटि गयो उरगादा। करत विचार उरग आराती ॥  
 प्रभु बंधन समुझत बहू भूती। करत विचार उरग आराती ॥  
 आपक प्रह्व निरज गंगीसा। माया मोह पर परमीसा ॥  
 सो अवतर सुनेऊ जग माहीं। देखेऊ सो प्रभव कहू नहि ॥

टी०—भव बंधन है इंद्रहिं नर जधि जा कर नाम ।

बहु निमिषर बाँधेउ नागपास सोइ राम ॥ १८ ॥

नाम भूति मनहि समुझाया। प्रगट न गान हृदय अस छया  
 खेद विषय मन लक बड़ाई। गयउ मोहबस गुह्रहिं नहि ॥  
 आकुल गयउ देवरिषि पाहीं। कहेसि जो संसय निज मन माहीं  
 सुनि नारदहिं लगी अति दया। सुनु खग प्रबल राम कै मया ॥  
 जो गगनिन्ह कर चित अपहरई। गरिआई विमोह मन करई ॥  
 जैहै बहू बार नचावा मोही। सोइ ज्योषी निहंगपति बोही ॥  
 मटामोह उपजा उर रोरे। मिटहि नयनि कहै खग मोरे ॥  
 चतुरानन पहि जाहू खोसा। सोइ करेह जैहै होइ निदेसा ॥

टी०—अस कहि चले देवरिषि करत राम गुन गान ।

हरि माया बल बरनत पुनि पुनि परम सुजान ॥ ५९ ॥

तब खगपति निरिषि पहि गयऊ। निज संदेह सुनावत भयऊ ॥

नि निरन्त्रि रामहि चिह्न नवा । समुद्रि प्रताप प्रेम अति छावा ॥  
न महुँ करइ विचार विधाता । मया यस कवि कोटिद म्याता ॥  
रि मया कर अमिति प्रमया । विपुल वार जेहि मोहि नचावा ॥  
मग जगमग जग मम उपराजा । नहि आचरज मोह जगराजा ॥  
व बोले विधि निरा सुहाई । जान महेस राम प्रभुवाहूँ ॥  
ननेय संकर पाई जाई । तात अनत पूछइ जानि काहूँ ॥  
हूँ होइहि तव संसय होनी । चलेउ विहंग सुनत विधि यानी ॥

श्लोक-परमादिर विहंगपति आपउ तव मो पास ।

जात रहैउ कुबेर गुह रहिहु उमा कैलास ॥६०॥

बहिँ मम पद सादर चिह्न नावा । पुनि आपन संदेह सुनवा ॥  
सुनि ता करि चिनती महुँ यानी । प्रेम सहित मै कहैउ भवानी ॥  
मिलेहु गकडं मारग महुँ मोही । कवन भाँति समुझावौ तोही ॥  
तवाहूँ होइ सव संसय भंगा । जग गहुँ काल करिअ सतसंगा ॥  
सुनिअ तहाँ हरि कथा सुहाई । नाना भाँति सुनिन्ह जो गार्ह ॥  
जेहि महुँ आदि मध्य अवसाना । प्रभु प्रतिपाद्य राम भगवाना ॥  
निज हरि कथा होत जाई भाई । पठवउ तहाँ सुनहुँ उग्रह जाई ॥  
जाइहि सुनत सकल सदेहा । राम चरन होइहि अति नेहा ॥

श्लोक-विभु सतसंग न हरि कथा तेहि विभु मोह न भगा ।

मोह गहुँ विभु राम पद होइ न दह अवराग ॥६१॥

मिलहि न खपति विभु अवराग । किहुँ जोग तम म्यान विराग ॥

उत्तर दिशि सुंदर निरि नीला । तहँ रह काकसुमुहि सुखीला ॥  
 राम भगति पथ परम प्रवीणा । श्यानी गुन गह बहु कालीना ॥  
 राम कथा सो कहइ निरंतर । सादर सुनहिं निजिष निहंनार ॥  
 जाइ सुनहु तहँ हरि गुन भूरी । होइहि मोह जनिव दुख दूरी ॥  
 मैं जन तेहि सग कहा बुझाई । चलेउ हरषि मम पद सिर नहिं ॥  
 ताते उमा न मैं समझावा । रखिपति कथा मरु मैं पावा ॥  
 होइहि कीन्ह कनहुँ अभिमाना । सो खोवै चह कृपानिधाना ॥  
 कहु तेहि ते पुनि मैं नहिं राखा । समझइ खग खगही कै भग्या ॥  
 ५५ भग्या नलवंत भगनी । जाहि न मोह कवन अस श्यानी ॥  
 दो०-श्यानी भगत सिरोमनि त्रिभुवनपति कर जान ।

तहि मोह भग्या नर पावुर करहि गुमान ॥६२(क)॥  
 मासपरायण, अर्द्धाईसवाँ विश्राम

निव निरंवि कहुँ मोहइ को है वपुश आन ।

अस निवू जानि भजहिं मुनि माया पाति भगवान ॥६२(ख)॥

रागउ गहइ जहँ गसइ मुमुडा । मति अकुंठ हरि भगति अवंडा  
 देखि सैल प्रसन्न मन भयऊ । भग्या मोह सोच सग भयऊ ॥  
 करि तर्जना मञ्जन जलपाना । गट तर गयउ हँदयुँ हरपाना ॥  
 बुद्ध बुद्ध निहंन तहँ आए । सुनै राम के चरित सुहाए ॥  
 कथा अरंभ करै सोइ चाहै । तेही समय गयउ खगाना ॥  
 आगत देखि सकल खगारजा । हरषेउ गायष सहित समजा ॥

विपिन गगन केवट अजगामा । सुरसरि उत्तरी निवास प्रथमा ॥  
 पुरवासिन्ह कर निरह विषादा । कहैसि राम लज्जित संजादा ॥  
 बहिरि राम अभिषेक प्रथमा । पुनि नृप वचन राज रस मंगा ॥  
 निषि आगवन कहैसि पुनि श्रीरघुवीर विवाह ॥ ६४ ॥

दो०-बालचरित कहि विविध विध मन महुँ परम उछाह ।  
 प्रभु अवतार कथा पुनि गाई । तब सिमुचरित कहैसि मन लाई ॥  
 पुनि नारद कर मोह अपरा । कहैसि बहिरि रावन अवतार ॥  
 प्रथमहि अति अजगाम भवानी । रामचरित सर कहैसि बखानी ॥  
 मयउ तासु मन परम उछाह । जग कहै रघुपति गुन गाह ॥  
 सुनत गकड़ कै निरा बिनीता । सरल सुगुन सुखद सुपुनीता ॥  
 सादर तब सुनवहूँ मोही । बार बार विनवहूँ प्रभु दोही ॥  
 अब श्रीराम कथा अति पावनि । सदा सुखद दूख पुंज नसवनि ॥  
 देखि परम पावन तब आश्रम । मयउ मोह संसय नाना भ्रम ॥  
 सुनहूँ तब जेहि कारन आयऊँ । सो सब मयउ दरस तब पायऊँ ॥  
 जेहि कै अरुति सादर निज मुख कोहिहूँ महिस ॥ ६३ (ख) ॥  
 सदा केतारथ रूप गुह्य कह महुँ बचन खगाम ।

आयसु देहूँ सो करौ अब प्रभु आयहूँ केहि काज ॥ ६३ (क) ॥

दो०-नाथ केतारथ मयउ मूँ तब दरसन खगाम ।  
 करि पूजा समेत अजगामा । मयुर वचन तब बोलेउ कागा ॥  
 अति आदर खगपति कर कीन्हा । खगाम पुंछि सुआसन दीन्हा ॥



बालमीक प्रभु मिलन भवना । चित्रकूट जामि नसे भगवान् ॥  
 सचिवाभवन नगर नृप भवना । भरताभवन प्रेम नई भवना ॥  
 करि नृप क्रिया संग पुरवासी । भरत गए जहाँ प्रभु सुख रासी ॥  
 पुनि खपति नई विधि समझाए । लै पार्इका अवधपुर आए ॥  
 भरत रहति सुरपति सुत करनी । प्रभु अक अनि भूट पुनि वरनी ॥  
 द्रो०—कहि विराय नय कहि बिधि देहै लज्जी सरभंग ।

वरनि सुतीजन प्रीति पुनि प्रभु आगसि सतसंग ॥ ६५ ॥  
 कहि दंडक नन पावनलाई । गीध मइजी पुनि लेहै गार्इ ॥  
 पुनि प्रभु पंचवटी केल वासा । भंजी सकल मुनिह की वासा ॥  
 पुनि लछिमन उपदेस अनंण । संपनखा जामि कीन्है कुल्पा ॥  
 खर वैषन नय नहुरि भवना । जामि सब मरसु दसनन जाना ॥  
 दसकंधर मारीच भतकही । कहि विधि मई सो सब लेहै कही ॥  
 पुनि माया सीता कर हरना । श्रीरघुवीर फिरह कहुँ वरना ॥  
 पुनि प्रभु गीध क्रिया जामि कीन्है । नृपि कबंध सगहिह गति दीन्है ॥  
 नहुरि फिरह वरनत खजीरा । कहि विधि गए सुरेजर वीरा ॥

द्रो०—प्रभु नारद संवाद कहि माखति मिलन प्रभंग ।  
 पुनि सुभाव भिलाई बालि मान कर भंग ॥ ६६ (क) ॥  
 कपहि लिजक कर्म प्रभु केल सैल प्रवरपन वास ।  
 वरनन बंधी सरद अक राम दोष कपि वास ॥ ६६ (ख) ॥  
 जेहि विधि कपिपति कीस पठाए । सीता खोज सकल दिशि धाए ॥

त्रिवर प्रवेश कीन्ह जैहि माँती । कपिन्ह बहोरि भिन्न संपाती ॥  
 सुनि सब कथा समीरकुमार । नाथत भयउ पयोधि अपार ॥  
 लंकौ कपि प्रवेश जिय कीन्ह । पुनि सीताहि धीरजु जिय दीन्ह  
 बन उजारि रावनहि प्रयोधी । पुर दहि नाथउ बहुरि पयोधी ॥  
 आए कपि सब जहँ रघुमाँहि । बौदेही की कुसल सुनहि ॥  
 सेन समति जथा रघुबीरा । उर जहँ बारिनिधि तीरा ॥  
 भिन्न विभीषण जैहि विधि आई । सागर निगह कथा सुनहि ॥  
 द्रो०-सेतु बूँधि कपि सेन जिय उतरी सागर पार ।

गयउ वसीठी वीरवर जैहि विधि बालिकुमार ॥ ६७ (क) ॥  
 निसिचर कीस लराई बरनिधि विविधि प्रकार ।  
 कुंभकरन वननाद कर बल पौरेष संघार ॥ ६७ (ख) ॥

निसिचर निकर मरन विधि नाना । रघुपति रावन समर ब्रजना ॥  
 रावन बध मंदोरि सोका । राज विभीषण देव असोका ॥  
 सीता रघुपति भिन्न बहोरि । सुरन्ह कीन्ह अस्ति कइ जेरी  
 पुनि पुष्पक चढ़ि कपिन्ह समता । अवध चले प्रभु कैप निक्ता ॥  
 जैहि विधि रास नगर निज आए । बायस बिसद चरित सब गाए ॥  
 कहसि बहोरि रास अभिषेका । पुर भरनत दपनीति अनेका ॥  
 कथा समस्त सुंख ब्रजानी । जो भूँ ब्रह्म सन कहे भवानी ॥  
 सुनि सब रास कथा खगनाह । कहत बचन मन परम उछाह ॥

सो-गयउ मोर सदेह सुनेउ सकल खपति चरित ।

अयउ राम पद नेह तव प्रसाद बाधस तिलक ॥६८(क)॥  
 मोहि अयउ अति मोह प्रभु बंधन रन महुँ निरखि ।

चिदांबर सदेह राम बिकल कारन कवन ॥६८(ख)॥

देखि चरित अति नर अनुसारी । मयउ हृदय मम संसय मारी ॥

सोह भ्रम अग्र दित करि भ्रम माना । कीन्ह अनुग्रह कृपानिधाना ॥

जो अति आतप व्याकुल होई । तब छाया सुख जानइ सोई ॥

जौ नाहि होत मोह अति मोही । मिलतेउ तब कवन बिधि जोही ॥

सुनतेउ किमि होरे कथा सुहाई । अति विचित्र बहूँ बिधि गुनइ गाई ॥

निगमानम पुरान मत एही । कहेहि सिद्ध मुनि नाहि सदेह ॥

संतविमुक्त मिलहि परि वेही । चितवहि राम कृपा करि जेही ॥

राम कृपा तब दरसन भयऊ । तब प्रसाद सब संसय भयऊ ॥

दो-सुनि बिहंगपति बानी सहित विनय अनुसारा ।

पुलक गाव लोचन सजल मन हेरयेउ अति कला ॥६९(क)॥

ओता सुमति सुसील सुवि कथा रासिक हरिदास ।

पाइ उमा अति गोप्यमहि सजन करहि प्रकास ॥६९(ख)॥

बोलेउ काकमसुंद बहोरी । नमगनाथ पर प्रीति न प्रीति ॥

सब बिधि नाथ पूज्य गुनइ भरे । कृपापात्र खनयक करे ॥

गुनइहि न संसय मोह न भया । मो पर नाथ कीन्ह गुनइ दया ॥

पठइ मोह भिष खगपति जोही । खपति दीन्ह बहूँ मोही ॥

उन्हें निज मोह कही खग साईं । सो नहिं कछु आचरज गोसाईं  
नारद भव विरंचि सनकादी । जे मुनिगणक आतमगोदी  
मोह न अंध कीन्ह कहि कही । को जग काम नचन न जेही  
देखा कहि न कीन्ह बौगहा । कहि कर दृढय कोष नहिं दाहा ।  
दी०-यानी तापस सूर कवि कोविद गुन आगार ।

कैहि कै लोभ विडवना कीन्ह न पहुँचि संसार ॥७०॥ (क)

श्री मद् वक्र न कीन्ह कैहि प्रभुता बधिर न काहि ।

भृगुलोचन के नैन सर को अस जग न जाहि ॥७०॥ (ख)

गुन केत सत्यपाल नहिं कही । कोउ न मान मद तेजउ निबेही ॥  
जोवन ज्वर कहि नहिं बलकावा । समता कहि कर जस न नखावा ॥  
मच्छर काहि कलंक न लावा । काहि न सोक समीर डोलवा ॥  
चिंता साँपनि को नहिं खपा । को जग जाहि न व्यापी माया ॥  
कीट मनोरथ दाह सरीरा । जहि न लगानुन को अस धीरा ॥  
सुत बिल लोक ईषना दीनी । कहि कै मति इन्ह केत न मलीनी ॥  
मह सब माया कर परिवारा । प्रबल अप्रति को घरनै पारा ॥  
सिध चतुरानन जाहि डेरही । अपर जीव कहि लेखे माही ॥

दी०-ज्यापि रहैउ संसार महुँ माया कटक प्रचंड ।

सेनापति कामादि भट बंध कपट पावड ॥७१॥ (क)

सो दासी रघुवीर के समुझि मिथ्या सोधि ।

कूट न राम कीया बिनु नाथ कहेउ पर रोधि ॥७१॥ (ख)

जो मया सब जाहि नचावा । जासु चरित लखि कहूँ न पावा  
 सोइ प्रभु भूँ विजय खराजा । नाच पटी इव सहित समजा ॥  
 सोइ सच्चिदानंद धन रामा । अब विद्यान रूप बल धामा ॥  
 व्यापक व्याप्य अवड अनंत । अखिल अमोघवर्षि मगवत ॥  
 अगुन अदभु निग गीतीत । सबदसी अनवर अजीत ॥  
 निभुम निरकार निरमोह । नित्य निरंजन मुख सदाह ॥  
 प्रकटि पार प्रभु सब उर गसी । ब्रह्म निरीह निरज अनिनासी ॥  
 दूहौं मोह कर कारन नाहौ । रति समुख तम कबहुँ कि जाहौ ॥

०-भगत हेतु भगवान प्रभु राम धरेउ तबु भूँ ॥

किं चरित पावन परम प्राकृत नर अनुत्तम ॥७२(क)॥  
 जया अनेक वेध धरि नये करइ नट कोइ ।  
 सोइ सोइ भाव देखावइ आहुन होइ न सोइ ॥७२(ख)॥

असि रघुपति लीला उदगारी । दनुज विमोहिन जन मुखकारी ॥  
 जे मति मलिन विषयस कामी । प्रभु पर मोह धरहि इमि खापी ॥  
 नयन दीप जा कहूँ जग होइ । पीत वसन ससि कहूँ करि सोइ ॥  
 जग जेहि दिदिषु भ्रम होइ खगोख । सो कह पच्छिम उपउ दिनेख ॥  
 नौकाखंड चलत जग देखा । अचल मोह बस आपुहि लेखा ॥  
 बालक भ्रमहि न भ्रमहि गृहादी । कहहि परस्पर मिथ्यावादी ॥  
 हेरि विषदक अस मोह बिहंगा । सपनहुँ नहिँ अथान प्रवंगा ॥  
 मायावस मतिमंद अमागी । दृढबुँ जमानका बहिनधि लगि ॥

सठ दठ तस संसय करहीं। निज अग्रान राम पर धरहीं॥

१०-काम कोष मढ़ लोभ रत गृहोत्सक दुखरूप ।

(क) वे किसि जानहिं रघुपतिहि मूढ़ पर तस कूप ॥७३॥

निगुन रूप सुलभ अलि सगुन जान नहिं कोई ।

(ख) सुगम आगम नाना चरित सुनि सुनि मन अम होई ॥७३॥

मृत खोस रघुपति प्रभुताई। कहेऊ जयमानि कथा सुहाई॥

हाई विधि मोह मयउ प्रभु मोहो। सोउ सब कथा सुनावउ तोहो॥

राम कथा भाजन कुह लाल। हरि गुन प्रीति मोहि सुखदाल॥

माले नहिं कछु गुहाई हरिगवतु। परम रहस्य मनोहर गावतु॥

मनई राम कर सहज सुभाऊ। जन अभिमान न राखहिं काऊ॥

सुख मूल सुखद नाना। सकल सोक दायक अभिमाना॥

माले कयहिं कृपानिधि दूरी। सेवक पर ममता अलि भूरी॥

जामि सिख तन अन होइ गोसाई। माति निराव कठिन की नहिं॥

१०-जदपि प्रथम दुख पावई रोवई बाल अधीर ।

(क) ब्याधि नास हित जननी गाना न सो सिखि पोर ॥७४॥

विमि रघुपति निज दास करे दरीं मान हित जानि ।

(ख) पुलिदास ऐसे प्रभुहि कस न मजई अम त्यागि ॥७४॥

राम कथा आपनि जइताई। कहेऊ खोस सुनई मन लई॥

जब जब राम मनुज तज धरहीं। मक हैव लीला नई करहीं॥

तब तब अवधपुटी में जाऊँ। बालचरित बिबेकि दूषाऊँ॥

जन्म महोत्सव देखूँ जाई। अरु पाँच ठहूँ देखूँ जोगाई ॥  
 दृष्टदेव मम बालक राम। सोभा अरु कौटिल्य कामा ॥  
 निज प्रभु अदन निहारि निहोरी। लोचन सुफल करूँ उरगारी ॥  
 लख अणुस अणु धरि हरि संगी। देखूँ बालचरित यहूँ रंगी ॥  
 टी०-लोकार्थ जाहूँ जाहूँ फिरि जाहूँ जाहूँ फिरि जाहूँ जाहूँ जाहूँ ॥

जठरनि परहूँ अजिर महुँ सो उजाहूँ करि खाहूँ ॥ ७५ (क)  
 एक बार अतिशय सब चरित किए देखीर ।  
 सुमिरत प्रभु लीला सोहूँ पुलकित भयउ सरीर ॥ ७५ (ख)

७२ भुंछ भुंछि खमानायक। रामचरित सेवक सुखदायक ॥  
 वृषभर्षि सुंदर सब भाँती। खचित कनक मणि नाना जाती ॥  
 मरि न जाहूँ कचिर अंगनाहूँ। जाहूँ खलहूँ नित चरित महुँ ॥  
 बालबनोद करत खुराहूँ। विचरत अजिर जननि सुखदाहूँ ॥  
 मरकत महुँल कलेवर स्यामा। अंग अंग प्रति छवि यहूँ कामा ॥  
 नव राजीव अवन महुँ चरना। पदज कचिर नख खलि हरि हरना ॥  
 ललित अंक कलिसादिक चारी। नूपुर चार मधुर रवकारी ॥  
 चार पुरट मणि रचित गनाहूँ। कटि किंकित कल मुखर सुहृहूँ ॥  
 टी०-देखा अम सुंदर उदर गामी कचिर मारी ॥

उर आयत आगत विविध बाल विभूषन चौर ॥ ७६ ॥  
 अवन पणि नख करज मनोहर। गहूँ निखल विभूषन सुंदर ॥  
 कंध बाल केहरि दूर गीवा। चार चित्रक आनन छवि सीवा ॥

॥ या मेद जगति कत मया । विमुदेति जह न कोटि उपाया ॥  
 ॥ रयस जीव स्वयस मयावता । जीव अनेक एक श्रीकंता ॥  
 ॥ मया वस जीव अपिमानी । देस वस मया गुनखानी ॥  
 ॥ जी सव के दे म्यान एकरस । देसर जीवहि मेद कहै कस ॥  
 ॥ म्यान अवत एक सीतावर । मया वस जीव सवरावर ॥  
 ॥ नाथ इहो कह्य कारन आना । मुनइ सो सावधान देरिजाना ॥  
 ॥ सो मया न दुखद मोहि काहो । आन जीव देव संखत नाहो ॥  
 ॥ एतना मन आनत खमाराया । रघुपति प्रेति आपी मया ॥  
 ॥ कवन चरित करत प्रभु विद्वानंद सदाह ॥७७॥ (ख) ॥

प्राकृत सिद्ध देव लीला देवि भवत मोहि मोह ।

जाउ समीप गहन पद किहि किहि चितह पयाहि ॥७७॥ (क) ॥

दो०-आवत निकट हैसाहि प्रभु आजत रुदन करहि ।

निकलकत मोहि वरन जय पावहि । बलउ माला वय प्रप देवजाहि  
 मोहि सन करहि विविध विविध कीडा । वरनत मोहि होति अति दीडा  
 रूप रासि नय अजिर बिहारी । नाचाहि निज प्रतिविम बिहारी  
 पाव श्रीनि श्रुती वन सोही । निकलकनि चितवनि भगवति मोही  
 निकट भुंकेटि सम भवन सुंदर । कुंचित कच मेचक छवि छर  
 नील कंज लेचन भव मोचन । आजत माल तिलक गोरचन  
 ललित कपोल मनोहर नास । सकल सुखद भुंति कर सम होस ॥  
 कलवल वचन अथर अकनर । दुई दुई दसन विषद भर गरी ॥



नम महीस्रव देवउ जाई। अय पाँच ठेँ रहउ लोभाई ॥  
 छदेव मम बालक राम। सोमा अयुष कोटि सत कामा ॥  
 नज प्रभु अदन निहारि निहारी। लोचन मुफल करउ उरगारी ॥  
 अयु अयस अय धरि हरि संग। देखउ बालचरित यह रंग ॥

श्री०-लरिकाई जाई जाई फिरि जाई तहै तहै संग उड़ावै ।

अँठनि परहँ अजिर महुँ सो उठाइ करि खाँउ ॥७५॥ (क)

एक बार अतिसय सब चरित किणु रखीर ।

सुमिरत प्रभु लीला सोइ पुलकित भयउ सरीर ॥७५॥ (ख)

कहइ मसुहँ सुनहुँ लगानायक। रामचरित सेवक सुखदायक ॥

हर सुंदर सब भाँती। खचित कनक मनि माना जाती

न जाइ कचिर अमानाई। जहँ खेळहि नित चारिउ भाई ॥

बालबिनाद करत खरिदाई। निचरत अजिर जननि सुखदाई

मरकत महुँल कलेवर स्वामा। अंग अंग प्रति छवि यह कामा

नव राजीव अवन महुँ चरना। पदज कचिर नख ससि दृति हरना

अलित अंक कुलिसादिक चारी। नैपुण चार मधुर रवकारी ॥

बार पुरट मनि रचित अनाई। कटि किंकनि कल मुखर सुहाई

श्री०-हेला अय सुंदर उंदर चाभी कचिर भाँरी ।

उर आयत आगत विविधि बाल विमेषन चौर ॥ ७६ ॥

अवन पानि नख करज मनोहर। बाहुँ विषाल विमेषन सुंदर ॥  
 कथ बाल केहरि दूर भाँया। चार चिचिक अंगन छवि सौया

कलत्रल वचन अपर अकनर । दुई दुई दसन विषद पर गरी ॥  
 अलित कपोल मनोहर नासा । सकल सुखद ससि कर सम दसा ॥  
 मील कंज लोचन भव मोचन । अजल माल तिलक गोरोचन  
 एकट अकटि सम अवन सुहाए । कुंचित कच मेचक छत्रि छाए  
 तिल झीनि झगुली वन सोही । किलकनि चितवनि भगवति मोही  
 रूप रासि नय अजिर विहारी । नाचाहें निज प्रतिपन्न निहारी  
 मोहि सन करहि विविध विविध क्रीडा । वरनत मोहि होति अति प्रीडा  
 कलकल मोहि वरन जय धावाहें । चलउँ मागि वन पूर देखवाहें

॥१०-आवत निकट हैसहिं प्रभु भाजत रुदन करहिं ।

जाउँ समीप गहन पद फिरि फिरि चितवै पराहिं ॥७७(क)॥

प्राकृत सिंसु डेव लीला देखि भयव मोहि मोह ।

कवन चरित्र करत प्रभु चित्रानंद सहेह ॥७७(ख)॥

रतना मन आनत खमाराया । रघुपति प्रेतिन आपी मया ॥

मो मया न दुखद मोहि काही । आन जीव हव संसत नाही ॥

मय डहौं कछु कारन आना । सुनहु सो सावधान हेरिजाना ॥

आन अवत एक सीतावर । मया वस्य जीव सचराचर ॥

मो सब के रह आन एकरस । ईसर जीवाहें भेद कहहु क

मया वस्य जीव अभिमानी । ईस वस्य मया पुनख

परस जीव स्वयस भगवता । जीव अनेक एक श्रीकंठ

मुखा भेद जद्यपि केत मया । विनु हेरि जाइ न कोहि ॥७८॥

दो०-रामचंद्र के भजन बिनु जो चह पद निर्बान ।

रथानवंत अपि सो नर पसु बिनु पूछ बिषयन ॥७८(क)॥

राकापति धौंस उआई तायान ससुदाई ।

सकल निरिन्ह दंव छाहैअ बिनु राबि न जाई ॥७८(ख)॥

ऐसेहि हरि विनु भजन खोसा । मिटई न जीवन्ह केर कलेसा ॥

हरि सेवकहि न व्याप आविया । प्रभु प्रीति व्यापइ तेहि बिद्या ॥

ताते नास न होइ दास कर । भद भगति यादइ बिहंगार ॥

भ्रम ते चकित राम मोहि देखा । बिहैसो सो सुनु चरित बिसेषा ॥

तेहि कौतुक कर मरसु न काहूँ । जाना अजुन न भावु पितरूँ ॥

जानु पानि धाप मोहि धरना । स्वामल गाल अवन कर चरना ॥

तब मैं भगिा चलेऊँ उरगारी । राम गहन कहूँ भुजा पवारी ॥

जिमि जिमि हरि उदाँउ अकासा । तहूँ भुज हरि देखैउ निज पास ॥

दो०-ब्रह्मलोक जनि गयउँ मैं चितयउँ पाछ उदाँत ।

जुग अंगुल कर बीच सब राम भुजहि मोहि तात ॥७९(क)॥

समाधरन भद करि जहाँ जहाँ गति मोहि ।

गयउँ तहाँ प्रभु भुज निरखि व्याकल भयउँ बहोरि ॥७९(ख)॥

मूँदेऊँ नयन बसित जग भयऊँ । पुनि चितवत कोसलपुर गयऊँ

मोहि बिलीक राम भुसुकाहौँ । बिहैसत उरत गयऊँ मुख माहौँ ॥

उदर माझ सुनु अंजल रागा । देखैऊँ बहूँ ब्रह्मंड निकाया ॥

अति निश्चय तहूँ लोक अनेका । रचना अधिक एक ते एका ॥

मुवन मुवन देखत फिरतुँ प्रीत मोह समीर ॥८१॥ (ख) ॥  
सोह सिधुपन सोह सोभा सोह कपाल रखीर ।

अमानित-मुवन फिरतुँ प्रीत रास न देखेँ आन ॥८२॥ (क) ॥  
दो०-मिथ मिथ मैं दीख सब अति विचित्र हेरिआन ।

पति प्रसाद रास अवतार । देखतुँ बालिनोद अपार ॥  
दसरथ कौसल्या सुत ताता । विविध रूप मरतिदिक आता ॥  
अवधपुरी पति मुवन निनारी । सरज मिथ मिथ नर नारी ॥  
अंडकोष पति पति निज रूप । देखेँ जिनस अनेक अनूप ॥  
महि सरि समार सर निरि नाग । सब प्रपंच तहँ आनहँ आन ॥  
देव दनुज राग नाग जाती । सकल जीव तहँ आनहि माँती ॥  
नर रांघव भूत बेताल । किंनर निधिवर पसु खग व्याल ॥  
लोक लोक पति मिथ विधाता । मिथ विधु विधु मनु दिखिजाता ॥  
एहि विविध देखत फिरतुँ मैं अंड कटाह अनेक ॥८०॥ (ख) ॥  
एक एक प्रसाद महुँ रहतुँ वरष सत एक ।

सो सब अर्जुन देखेँ वरनि कवनि विधि जाह ॥८०॥ (क) ॥  
दो०-जो नहिँ देखा नहिँ सुना जो मनहूँ न समह ।

सुर मुनि सिद्ध नाग नर किनर । चारि प्रकार जीव सचराचर ॥  
समार सरि सर विधिन अपार । नाग माँति सुहि विखार ॥  
अमानित लोकपाल जग काल । अमानित भूधर भूमि विखाल ॥  
कोटिन्ह चतुरानन गौरीष । अमानित उज्जैन रीति रजनीष ॥

अमल मोहि ब्रह्मांड अनेका। बोलि मनहुँ कल्प सत एका ॥  
 फिरत फिरत निज आश्रम आयउ। तहुँ पुनि रहि कछु काल गाथाउ  
 निज प्रभु जन्म अवध सुनि पायउ। निभूर प्रेम हरिष उठि पायउ ॥  
 देखउ जन्म महेत्सव जाई। जेहि निषि प्रथम कहाँ भू जाई ॥  
 राम उदर देखेउ जग गंगा। देखत जनई न जाई गजाना ॥  
 तहुँ पुनि देखेउ राम सुजाना। माया पाति कैपाल भगवाना ॥  
 करउ निचार बहोरि बहोरि। मोह कलिल व्यापित मति मारि ॥  
 उभय घरी महुँ भूँ सय देखी। मयउ अभिमत मन मोह निसेषी ॥

श्लो०—हेलि कैपाल विकल मोहि बिहूँसे तब रखीर ।

बिहूँसतही मुख बाहेर आयउ सुव सावित्री ॥८२(क)॥

साहें लरिकारुँ मो सन करन लगे पुलि राम ।

कोटि भाँति समुझावउ मय न लहइ विधाम ॥८२(ख)॥

देखि चरित यह सो प्रगुटाई। समुझत देह दसा निखटाई ॥  
 धरनि परउ मुख आव न जाता। जाहि जाहि आरत जन जाता ॥

प्रमाकिल प्रभु मोहि बिलोकी। निज माया प्रभुता तब रोकी ॥

कर सरोज प्रभु मम भिर धरेऊ। दीनदयाल सकल दुख दरेऊ ॥

कीन्ह राम मोहि भिगत निमोहा। सेवक सुखद कृपा सुंदरिहा ॥

प्रभुता प्रथम निचारि निचारी। मन महुँ होइ हरष आति मारी ॥

भात बल्लता प्रभु कै देखी। उषा मम उर प्रीति निसेषी ॥  
 सजल नयन पुलकित कर जोरी। कीन्हैउ यह निषि विनय बहोरि

जो मुनि कोटि जगन मोहि लहेही । जे जग जोग अनल तन रच्यो ।  
 सब सुख खानि भगति है भगनी । मोहि जग कोउ मोहि सब बड़ भगनी ।  
 सुन जायस है सबज भगना । काहे न भगति अस बरदाना ।  
 परमसु कहि खिकलनायक । बोले बचन परम सुखदायक ।  
 सोइ निज भगति मोहि प्रभु देई दया करि राम ॥८४॥ (ख)

भगत कल्पतरु भगत हित कैय सिंधु सुख धाम ।  
 जोहि खोजव जोगीस मुनि प्रभु प्रसाद कोउ पाव ॥८४॥ (क)

दो०-अधिराज भगति बिमुख तब भूति प्रदान जो गाव ।  
 मन भगत बर मागु खामी । तब उदार उर अंतरजामी ।  
 जो प्रभु होइ प्रसन्न बर देई । मो पर करहु कैय अरु नै ।  
 भजन हीन सुख कवने काजा । अस बिचारि बोलै खगारजा ।  
 भगति हीन गुन सब सुख ऐसे । लवन बिना बड़ बिजन जैसे ।  
 प्रभु कहै देन सकल सुख सही । भगति आपनी देन न कही ।  
 मुनि प्रभु बचन अधिक अजगोउ । मन अनुमान करन तब लगे ।  
 आजु देऊ सब संसय नाही । मागु जो मोहि भग्न मन माही ।  
 श्याम बिबेक विरति विद्याना । मुनि दुलभ गुन जे जगना ।  
 अनिमित्तिक सिंधि अपर सिंधि मोख सकल सुख खानि ॥८३॥ (ख)

काकमसुहि मागु बर अति प्रसन्न मोहि जानि ।  
 बचन सुखद गंधीर सुई बोले रमानवास ॥८३॥ (क)

दो०-मुनि सनेह मम बानी देखि हीन निज दास ।  
 \* उत्तरकाण्ड \*

दो०—माया संभव अस सब अव न व्यापिहहिं तोहि ।

जानेसु ब्रह्म अनादि अज अगुन गुनाकर मोहि ॥८५(क)॥

मोहि भगत प्रिय संतत अस विचारि सुख काम ।

कल्य वचन मन मन पर कसे अचल अचरान ॥८५(ख)॥

अब सुख परम निमल मन बानी । सत्य सुगम निगमादि बखानी ॥

निज सिद्धांत सुनावउँ तोही । सुख मन धरु सख तजि भजु मोही ॥

सुख माया संभव संसार । जीव चराचर विविधि प्रकार ॥

सब मन प्रिय सब मन उपजाए । सब ते अधिक मनुज मोहि भाए ॥

तिन्ह महुँ दिज दिज महुँ श्रुतिपाटी । तिन्ह महुँ निगम धरम अनुसारी ॥

तिन्ह महुँ प्रिय प्रिय प्रिय पुनि ग्यानी । ग्यानिह ते अति प्रिय प्रियानी ॥

तिन्ह ते पुनि मोहि प्रिय निज दासा । जोहि गति मोरि न दूखि आसा ॥

पुनि पुनि सत्य कहउँ तोहि पाही । मोहि सेवक सम प्रिय कोउ नाही ॥

भगति दीन निरिच किन दोई । सब जीवहु सम प्रिय मोहि सोई ॥

भगतिवंत अति नीचउ प्रानी । मोहि प्रानप्रिय अति सम बानी ॥

दो०—सुखि सुखील सेवक सुमति प्रिय कह कहि न जग ।

श्रुति पुरान कह नीति अति सावधान सुख काम ॥८६॥

एक पिता के विपुल कुमारा। होहि प्रथक गुन सील अचारा ॥  
 कोउ पंडित कोउ तापस याता। कोउ धनवंत सूर कोउ दाता ॥  
 कोउ सगुन धर्मवत कोई। सब पर प्रवर्ति प्रीति सम होई ॥  
 कोउ प्रिय भगत वचन मन कर्मा। सपनैहू जान न दूर धर्मा ॥  
 को सुत प्रिय प्रिय प्रान समाना। जगपि सो सब भौति अमाना ॥  
 रहि विधि जीव चराचर जेत। विजग देव नर असुर समेत ॥  
 अखिल विश्व यह मोर उपाया। सब पर मोहि बराबरी दया ॥  
 तेनै महुँ जो परिहरि मर माया। भजै मोहि मन बच अरु काया ॥

श्लो०-पुरुष नपुंसक नारि वा जीव चराचर कोई ।

सब भाव भज कपट तज मोहि परम प्रिय सोई ॥८७(क)॥

श्लो०-सत्य कहूँ जग तोहि सुवि सेवक सम प्रानप्रिय ।

अस विचारि भज मोहि परिहरि आस भरोस सब ॥८७(ख)॥

कनैहू काल न व्यापहि तोही। सुमिरै भजेस निरंतर मोही ॥  
 प्रभु वचन भूत सुनि न अधाऊँ। तजु पुरुषिक मन अति दुराऊँ ॥  
 सो सुख जानई मन अरु काना। नहि रसना पहि जाई वखाना ॥

प्रभु सोभा सुख जानहि नयना। कहि किमि सकहि तिनैहू नहि वयन  
 कहि विधि मोहि प्रबोधि सुख देई। जग करन विषु कौचि न देई ॥

सजल नयन कछु मुख करि कखा। चितई भाव जगती अति भूखा  
 देखि भाव आनर उठि धाई। कहि मरु वचन लिप उर जहाँ  
 मोर राखि करव पय पाना। रघुपति चरित ललित कर गाना ॥



सो०-बैरि सुख लागि पुरारि असुख बेष करि सिख सुखद ।

अवधपुटी नर नारि बैरि सुख महुँ संवत मान ॥८८(क)॥

सोई सुख लवलेख निन्दे नारक सपनोई लहेव ।

ते नहिं नानहिं खोस ममसुखहिं सजान सुमति ॥८८(ख)॥

मैं पुनि अवध रहेऊँ कछु काल । देखेऊँ बालनिनोद रसाल ॥

राम प्रसाद भगति नर पावउँ । प्रभु पद वंदि निजाश्रम आपवउँ

नव ते मोहि न व्यथी माया । जय ते रघुनायक अपनया ॥

पह सख गुप्त चरित मैं गावा । हरि मायाँ जिमि मोहि नचावा

निज अनुभव अव कहउँ खोसा । निज हरि भजन न जाहिं कलेसा

राम कथा निज सुनु खगारुई । जानि न जाइ राम प्रभुतारुई ॥

बिनु न होइ परतीती । बिनु परतीति होइ नहिं प्रीती ॥

बिना नहिं भगति दिट्ठारुई । जिमि खगपति जल कै चिकनारुई

सो०-बिनु गुर होइ कि य्यान यान कि होइ बिद्या बिनु ।

गावहिं बैर पुरान सुख कि लहेख हरि भगति बिनु ॥८९(क)॥

कोउ बिश्राम कि पाव ताव सहेज संतोष बिनु ।

चलै कि जल बिनु नाव कोटि जतन पवि पवि मरिअ ॥८९(ख)॥

बिनु संतोष न काम नखाही । काम अछत सुख सपनोई नारुई ॥

राम भजन बिनु भिट्ठारुई कि कामा । यल बिहीन तर कनहुँ कि जामा

बिनु विद्यान कि समता आवइ । कोउ अवकास कि नम बिनु पावइ

अन्ता बिना धर्म नहिं होई । बिनु मरि गंध कि पावइ कोई ॥

तु तप तेज कि कर विस्तार । जल विनुरस कि होइ संसार ॥  
 तल कि मल विनुर बुध सेवकाई । जलमि विनुर तेज न रूप गोसाई ॥  
 तेज सुख विनुर मन होइ कि थीरा । परस कि होइ विहीन समीरा ॥  
 यनिउ सिद्ध कि विनुर विस्तारा । विनुर होइ भजन न भव भय नारा ॥

१०-विनुर विस्तार भगति नाहिं तेहि विनुर द्रवहिं न रास ।

रास केषा विनुर सपनेहुँ जीव न लहै विभ्राम ॥१००(क)॥

१०-अस विचारि मतिधीर तजि कुतकै संसय सकल ।

भगई राम रघुवीर कलनाकर सुंदर सुखद ॥१००(ख)॥

तेज मति सरिस नाथ सैं गार्इ । प्रभु प्रताप महिमा खगारइ ॥

कहै न कछु करि ज्युति बिसेयी । यह सब सैं निज नयनहिं देखी ॥

महिमा नाम रूप गुन गाथा । सकल अमित अनंत रचिनाथा ॥

तेज निज मति मुनि होइ गुन गावहिं । निगम सेष सिव पार न पावहिं ॥

महहिं आदि खग मसक प्रजता । नम उद्गाहिं नहिं पावहिं अंता ॥

तेमि रघुपति महिमा अवगाहो । तात कबहुँ कोउ पाव कि याहो ॥

रास काम सर कोटि सुभा वन । दुर्गा कोटि अमित अरि मदन ॥

भक्त कोटि सर सरिस निजसा । नम सर कोटि अमित अवकासा ॥

१०-मरत कोटि सर विपुल बल रोख सर कोटि प्रकास ।

सरिस सर कोटि सुसीतल समन सकल भव नास ॥१०१(क)॥

काल कोटि सर सरिस अति दुस्तर दुर्ग दुर्त ।

धूमकेतु सर कोटि सम दुर्गाधरष भावत ॥१०१(ख)॥

प्रभु अगाध सब कोटि पताल । समन कोटि सब ससि कराल ॥  
 तीरथ अमित कोटि सम पवन । नाम अखिल अव पूजा नखान ॥  
 हिमशिखर कोटि अचल खीरा । सिंधु कोटि सब सम गंगीरा ॥  
 कामधेनु सब कोटि समान । सकल काम दायक भगवान् ॥  
 सारद कोटि अमित चतुर्द्व । शिथिल सब कोटि सुहि निपुनार्द्व ॥  
 शिब कोटि सम पालन कर्ता । कद्र कोटि सब सम चंद्रार्त्ता ॥  
 धनद कोटि सब सम धनवान् । माया कोटि प्रपंच निधाना ॥  
 भार धरन सब कोटि अहोसा । निरवधि निरुपम प्रभु जगदीश ॥  
 छं०-निरुपम न उपमा आन राम समान रामु निगम कहै ।  
 लिखि कोटि सब खद्योत सम रंग कहत अति लघुता लहै ॥  
 पृष्टि भूति निज निज मति बिजल मृगीस देखि बखानहै ।  
 प्रभु भाव ग्राहक अति कृपाल सप्रम सुनि सुख मानहै ॥  
 टी०-रामु अमित गुन सागर याह कि पावह कहै ।  
 सतह सब जस किछु सुनेहु गुह्यहै सुनायहु सोहै ॥९२(क)॥  
 सो०-भाव वस्य भगवान् सुख निधान करेना भवन ।  
 तनि समता मद् मान भोजन सदा सीतारवन ॥९२(ख)॥  
 सुनि सुसुष्टि के बचन सुहाए । देखिब खगपति पंख फलाए ॥  
 नयन नीर मन अति हरषाना । श्रीखिपति प्रताप उर आना ॥  
 पाछिल मोह समुझि पाछिलाना । ब्रह्म अनादि मनुज करि माना ॥  
 पुनि पुनि काम चरन छिह नाना । जनि राम सम प्रेम ब्रह्मा ॥

पुरे निज भवनिधि तरङ्ग न कोई। जौ निरन्ध्र संकर सम होई ॥  
 संसृष्ट स्रष्ट प्रवेउ मोहि ताता। दुखद लहरि कुतर्क बहू आता ॥  
 तव सकल गाकड़ि खुनायक। मोहि जिआपउ जन सुखद पाव ॥  
 तव प्रसाद मम मोह नशाना। राम रहस्य अनूपम जाना ॥  
 टी०-ताहि प्रससि विविधि विधि सीस नाइ कर जोरि ।

बचन विनीत सप्रम मरु बोलेउ गच्छ बहोरि ॥९३(क)॥  
 प्रभु अपने अविवेक ते ब्रह्मरूप स्वामी जोहि ।

कृपासिंधु सादर कहई जानि दास निज मोहि ॥९३(ख)॥

तुम्हें सर्वप्रथम तब्य तम पाया। सुमति सुखील सरल आचारा ॥  
 यथान्ध्रि विरति विद्यान निवास। खुनायक के तुम्हें प्रिय दास ॥  
 कारन कवन देह यह पाई। तात सकल मोहि कहई बुझाई ॥

राम चरित सर सुंदर स्वामी। पायई कहा कहई नमनामी ॥

नाथ सुना मैं अब सिव पावै। महा प्रलयई नास तव नावै ॥

मुखा बचन नहि ईसर कहई। सीउ मोर मन संसृष्ट अहई ॥

अग जग जीव नाम नर देवा। नाथ सकल जग काल कलेवा ॥

अब कटह आसत लय कारी। काहु सदा हरिकम मारी ॥

सी०-तुम्हें न व्यापत काल अलि कराल कारन कवन ।

मोहि सी कहई कृपाल यथान प्रभाव कि जोग बल ॥९४(क)॥

टी०-प्रभु तव आश्रम आरु मोर मोह अस भाग ।

कारन कवन सी नाथ सब कहई साहेव अविनाश ॥९४(ख)॥

गकई गिरा सुनि देखैउ काग। बोलैउ उभा परम अनुरगा ॥  
 धन्य धन्य तब मति उरगारी। प्रख गुहारि मोहि अति प्यारी ॥  
 सुनि तब प्रख सप्रेम सुहाई। गह्वर जनम कै सुधि मोहि आई ॥  
 सब निज कथा कहूँ मैं गार्हूँ। ताल सुनई सादर मन लार्हूँ ॥  
 जग तप मख सम दम दाना। निरति निबेक जोग विधाना ॥  
 सब कर फल खुपति पद प्रभा। तेहि बिनु कोउ न पावई छेमा ॥  
 एहि तन राम भगति मैं पढ़ै। ताले मोहि ममता अधिकाई ॥  
 जेहि तैं कहूँ निज स्वरूप होई। तेहि पर ममता कर सब कोई ॥

सो-पञ्चागारि अखि नीति श्रुति संमत सजान कहै ॥

अति नीचई सम प्रीति करिअ जानि निज परम हित ॥१५५(क)॥

पाट कोट तैं होई तेहि तैं पाटबर खीर ।

कृषि पालई सब कोई परम अपावन प्रान सम ॥१५५(ख)॥

स्वल्प सौच जीव कहुँ एहा। मन कम बचन राम पद नेहा ॥

सोई पावन सोई सुभा। सीरा। जो तज पाई भविअ खीरीरा ॥

राम विमुख जेहि विधि सम देखै। कति कोनद न प्रसवहि तेहै ॥

राम भगति एहि तन उर जामी। ताले मोहि परम प्रिय स्वामी ॥

तजउ न तन निज इच्छा मरना। तन बिनु वेद भजन नहि बरना ॥

प्रथम मोहै मोहि गह्वर निगोवा। राम विमुख सुख क्यहुँ न सोवा ॥

नाना जनम कम पुनि नाना। किए जोग जग तप मख दाना ॥

कवन जोनि जनमेउ जहै गार्है। मैं खोसि अमि अमि जग मारै ॥

दिव श्रीत वैचक भूय प्रजापत । कोउ नहि मान निगम अगुवास  
 वन धनु नहि आशम घापी । श्रीत विरोध रत सब नर नापी  
 सुख हितजान यान निधि कहेतु कहुक कलिधनु ॥१७७॥ (ख)  
 भय जोग सब मोहबस जोग भये सुख कर्म ।  
 दंभिनहि निज मति कलि कपि प्रगट किणु बहू पंथ ॥१७८॥ (क)  
 द्रो०-कलि मल भये धनु सब जिय भय सदांभय ।  
 सो कलिकाल कठिन उरगारी । पाप परापन सब नर नापी ॥  
 अवध प्रभाव जान तब प्रानी । जब उर बसहि राम धनुषानी ॥  
 कवनहुँ जन्म अवध बस जाई । राम परापन सो पारि होई ॥  
 अब जाना मी अवध प्रभाव । निगमागम पुरान अब गावा ॥  
 जदपि रहैतु खपति खपानी । तदपि न कहुँ मोहिमा तब जानी ॥  
 धन मर मर परम बाचाल । उग्रबुद्धि उर दंभ विखाल ॥  
 सिव सेवक मन कम अक गानी । आन देव निदक अभिमानी ॥  
 तैहि कलिज्या कोसलपुर जाई । जगल भयतु सुद तनु पाई ॥  
 नर अक नाहि अवध रत सकल निगम प्रतिकूल ॥१७९॥ (ख)  
 पदम कल्प एक प्रभु जग कलिज्या मल मूल ।  
 सुनि प्रभु पद गीत उपजइ आत मिटहि कलस ॥१८०॥ (क)  
 द्रो०-प्रभु जन्म के चरित अब कहेतु सुनहुँ विहोस ।  
 सुख मोहि नय जन्म बहू कैरी । सिव प्रसाद मति मोह न घेरी ॥  
 देखैतु कपि सब करम गोसाई । सुखी न भयतु अवहि की नाई ॥



सुत मागहिं मातु पिता तब लो। अबलानन दौख नहीं जव लो  
 कुलवाँत निकारहिं नारि सती। गुहे आगहिं चोरि निबोरि गती  
 तपसी धनवंत दंडिद गही। कलि कौतिक तात न जात कही  
 छं-बहु दाम सुवारहिं धाम जती। विषया हरि लोनि न रहि बिर

बोहिं न चळहिं नर मोह वस कल्पहिं पंथ अवेक ॥१००॥ (ख)  
 श्रुति संमत हरि भक्ति पथ संजत विरति विवेक।

करहिं पाप पावहिं दुख भय रोग सोक विद्याग ॥१००॥ (क)  
 दो-भए वरन संकर कलि निवासतु सब लोग।

सब नर कलिपत करहिं अचारा। जाइ न भयनि अनीति अपरा  
 सुद करहिं जप तप दाना। बौठ बरासन कहहिं पुराना।  
 विष निरञ्जर लोछिप कामी। निराचार सठ दण्डी स्वामी।  
 ते विप्रन्ह सन आपु पुजावहिं। उभय लोक निज दाय नसावहिं।  
 नारि मुई गृह संपति नासी। मुई मुईह होहिं संन्यासी।  
 जे वरनाथम तेलि कुम्हार। स्वपच कियत कोल कलवारा।  
 कल्प कल्प भए एक एक नरका। परहिं जे दूषहिं श्रुति करि तरका  
 आपु गए अरु तिनहूँ धालहिं। जे कहूँ सत मारग प्रतिपालहिं।  
 तेह अमोदवादी भ्यानी नर। देखो मै चरित्र कलिज्या कर।  
 पर विष लंपट कपट समाने। मोह दोह समता लपटाने।  
 जानह ब्रह्म सो विषवर आँखि देखवहिं जाहि ॥१०१॥ (ख)

बादहिं सुद दिनन्ह सन हम पुन्ह ते कछु घाटि।



समुगारि पिआरि जगि जवत । रिपुखण कटव मरु तव त्रै ॥  
 मरु पाप परायन धरु नही । करि दंड विडंब प्रजा निवही ॥  
 धनवंत कुलीन मलीन अपी । द्विज चिन्ह जनेउ उवार तपी ॥  
 नहि मान पुरान न वेदहि जो । हरि सेवक सब सही कलि सो ॥  
 कलि बुंद उदार दुनी न सुनी । गुन दूषक जात न कोपि गुनी ॥  
 कलि आरहि बार दुकाल पूरे । विनु अब दुखी सब जोग मरे ॥  
 दौ०—सुख खोस कलि कपट हेउ दंभ द्वेष पावड ।  
 मान मोहि मारादि मरु व्यापि रहै बहोड ॥ १०१ (क) ॥  
 रामस धरु करहि नर जप तप ब्रत सब दान ।  
 देव न वरषहि धरनी वरु न जामहि धान ॥ १०१ (ख) ॥

छं०—अवला कच भूषन भूरि दुःख । धनहीन दुखी समता बडुया  
 सुख चाहेहि मूर्ख न धरु रता । मति थोरि कछोरि न कोमलता ॥ ११ ॥  
 नर पीडित रोग न भोग कही । अभिमान विरोध अकारनही ॥  
 लख जीवन सबहु पंच दंषा । कलपांत न नास गुमावु असा ॥ १२ ॥  
 कलिकाल विह्वल किए मनुजा । नहि मानत को अजुजा तनुजा ॥  
 नहि रोष विचार न सीतलता । सब जाति कुआलि मरु मगत ॥ १३ ॥  
 देविषा पदपाच्छर लीछिपता । मरि पुरि रहै समता बिगता ॥  
 सब जोग विपुला विपुल हेरु । वरनाशम धरु अचार मरु ॥ १४ ॥  
 दंभ दान दया नहि जानपी । जडता परबचनतलि धनी ॥

तव पौषक जाहि नरा सार । परनिंदक जे जग मो धार ॥ १५ ॥

—सुविधाकारि काल कलि मल अवगुन आगार ।

गुनउ वहुत कलिजग कर विनु प्रयास निखार ॥१०२(क)॥

कृतजुग जेवाँ दीपर पूजा मख अरु जोग ।

जो गति होई सो कलि होई नाम ते पावहि जोग ॥१०२(ख)॥

जुग सब जोगी विद्यानी । करि होरे ध्यान तरहि भव प्रानी

नीतिविष जग नर करहो । प्रसुहि समधि कर्म भव तरहो ॥

पर करि रखपति पद पूजा । नर भव तरहि उपपन्न वृजा ॥

लिजग केवल होरे गुन गाहा । गावत नर पावहि भव याहा ॥

लिजग जोग न जग्य न यगना । एक अथार राम गुन गाना ॥

भयरोस तजि जो भज रामहि । प्रेम समेत गाव गुन प्रामहि ॥

हो भव तर कछु संसय नाहो । नाम प्रताप प्रगट कलि माहो ॥

लि कर एक पुनीत प्रताप । मानस पुन्य होहि नहि पाप ॥

१०—कलिजग सम जुग आन नाहि जौ नर कर लिखस ।

गाह राम गुन राम विमल भव तर विनहि प्रयास ॥१०३(क)॥

प्रगट चारि पद धर्म के कलि महुँ एक प्रधान ।

जन केन विधि दीन्है दान करह कल्याण ॥१०३(ख)॥

गत जुग धर्म होहि सब को । होतूँ राम माया के प्रे ॥

हो सब समता विद्याना । केन प्रभाव प्रसन्न मन जोग ॥

ल गहुँ रज कछु रति कर्मा । सब विधि सुख जोग करहि ॥

हो रज स्वल्प सब कछु लामस । दीपर धर्म होरे भव मानस ॥

रामस बहूत खोजुन योय । कलि प्रभव विरोध चहुँ ओय ॥  
 बुध जुग धर्म जानि मन माहौ । तजि अवधुँ रति धर्म कराहौ ॥  
 काल धर्म नहिँ व्यापहिँ ताहौ । खपति चरन प्रीति अति जाहौ ॥  
 नट कैत विकट कपट खारग्या । नट सेवकहिँ न ब्यापइ माया ॥  
 द्रो०—हरि माया कैत दोष गुन विनु हरि भजन न जाहिँ ।

भविष्य राम तजि काम सब अस विचारि मन माहिँ ॥ १०४ (क) ॥  
 बेहिँ कलिकाल वरष बहूँ बसेहुँ अवध बिहरोस ।

परैत दुकाल विपति बस वव मै गपहुँ विदेस ॥ १०४ (ख) ॥

गपहुँ उजेनी सुन उरगारी । दीन मलीन दरिद्र दुखारी ।  
 गाएँ काल कछुँ संपति पाई । तहँ पुनि करहुँ संसु सेवकाई ॥

विप्र एक वैदिक सिव पूजा । करइ सदा बेहिँ काजु न दूजा ॥

परम साधु परमारथ बिंदक । संसु उपसक नहिँ हरि निंदक ॥

बेहिँ सेवहुँ मै कपट समेता । दिज दयाल अति नीति निकेता ॥

बाहिज नम देविष मोहिँ साहूँ । विप्र पदव पुत्र की नहूँ ॥

संसु मंत्र मोहिँ दिजगर दीनहौ । सुम उपदेस विविध विविध कीन्हौ ॥

जपहुँ मंत्र सिव मंदिर जाई । हृदय दंभ अहंमति अधिकाई ॥

द्रो०—सँखल मल संकुल मति नीच जाति बस मोह ।

हरि जन दिज देखै जारहुँ करहुँ बिजु कर दोह ॥ १०५ (क) ॥

सो०—गुर निज मोहिँ प्रबोध बुखित देखि आवरन मम ।

मोहिँ उपजइ अति कोष धंभमहिँ नीति कि भावइ ॥ १०५ (ख) ॥

एक वार गुर लीन्ह बोलन्ह । मोहि नीति बहू भाँति सिखाइ ॥  
 खैव सेवा कर फल सुत सोई । अतिरल भगति राम पद होई ॥  
 रामहि भजहि तब सिव धारा । नर पावै कै कौतिक याता ॥  
 आसु चरन अज सिव अनुरागी । तासु द्रोह सुख चढैसि अमानी ॥  
 हर कहुँ हरि सेवक गुर कहैऊ । सुनि लगानाय दृढय मम दहैऊ  
 अधम जाति मैं बिद्या पाएँ । मयउँ जया अहि दूष पिआएँ ॥  
 मानी कटिल कुमाराय कुजातो । गुर कर द्रोह करउँ दिनु रातो ॥  
 अति दयाल गुर स्वल्प न कोषा । पुनि पुनि मोहि सिखाव सुयोधा  
 जाहि ते नीच बड्ढाई पावा । सो प्रथमहि दूति ताहि नखावा ॥  
 धूम अनल संभव सुनु भाई । तेहि बुझाव धन पदवी पाई ॥  
 राज माग पटी निरादर रहै । सब कर पद प्रहार नित सहै ॥  
 सकत उद्धार प्रथम तेहि भएई । पुनि देव नयन किरीटनि रहै ॥  
 सुनु लगपति अस समुझि प्रसंगा । बुध नाहि करहि अधम कर संगी ॥  
 कवि कोविद गावहि अरि नीती । खल सन कलह न भल नाहि प्रीति  
 उदासीन नित रहैअ गोसाई । खल परिहरिय स्थान की नाई ॥  
 मैं खल दृढय कपट कीटलाई । गुर हित कहै न मोहि सोहाई ॥

श्री०-एक वार हर मंदिर जगत रहैउ सिव नाम ।

गुर आपउ आनिमान ते जति नाहि कोन्ह प्रनाम ॥ १०६ (क) ॥  
 सो दयाल नाहि कहैउ कछे उर न रोष लवलेस ।

अति अथ गुर अग्रमाना मोहि मोहि मोहि मोहि ॥ १०६ (ख) ॥

मंदिर माझ भई नमस्ती । रे हरेमन्य अम्य अभिमानी ॥  
जगपि तव गुर कें नाहि कोषा । अति कृपाल चित सम्यक बोधा ॥  
तदपि साप सठ दैहकें गोही । नीति विरोध सोहोइ न मोही ॥  
जो नाहि दंड करौ खल तोरा । अष्ट होइ अतिभारग मोरा ॥  
जे सठ गुर सन इरिया करहौ । रौरव नरक कोटि जुग परहौ ॥  
विजग जोनि पुनि धरहिं सरिया । अजुव जन्म भरि पवहिं पौरा ॥  
बैठ रहसि अजगर इव पापी । सर्व होहि खल मल मति व्यापी ॥  
महा विदप कोटर माहू जाहू । रहू अथमाधम अधगति पाहू ॥

दो०-हाहाकार कीन्ह गुर दंरुन सुनि सिव साप ।

पित मोहि बिछोकि अति उर उपजा पवितरा ॥ १०७ (क) ॥  
करि दंडवत सप्रम द्विज सिव सन्मुख कर जोरि ।

बिनय करत गद्गद स्वर समुझि धोर गति मोरि ॥ १०७ (ख) ॥  
नमामीशामीशान निर्वोकरुष । विभु व्यापक बहु वेदस्वरुष ॥  
निज निगुनि निर्विकल्प निरीह । चिदाकाशमाकाशवास भजेह ॥  
निराकारमाकारमूल तुरीय । गिरा ज्ञान गोतीतमीश निरीश ॥  
कराल महाकाल काल कृपाल । गुणगार संसारपार नरोह ॥  
पुणरादि संकाश गौर गभीर । मनोभूत कोटि प्रभा श्री शरीर ।  
रुक्मन्मूलि कछोलिनी चारु भागा । लसदासबालेन्ह कंठ सुजागा ॥  
बलकंडल भू सुनेत्र विद्याल । प्रसजानन नीलकंठ दयाल ॥  
सुगामीशोचमांशवर मुण्डमाल । प्रिय शंकर सर्वनाथ भजामि ॥

पचदं प्रकटं प्रगल्भं परोक्षं । अखडं अजं भविकोटिप्रकाशं ॥  
 अयः शूलं निर्मुक्तं शूलपाणिं । भवेऽहं भवानीपतिं भावगन्धं ॥  
 कलातीव कल्याण कल्पान्तकम् । सदा सज्जनानन्ददाता पुनरी  
 विदानन्दसन्दोहं मोहपट्टेरी । प्रसीदं प्रसीदं प्रभो मन्मथप्रीति ॥  
 न यावद् उमानाथ पादोदरविन्दं । भजतीह लोके परे वा नरोत्तम ॥  
 न तावत्सुखं शान्तिं सन्तापनाशं । प्रसीदं प्रभो सर्वभूतविधासं ॥  
 न जानामि योगं जपं नैव पूजां । ततोऽहं सदा सर्वदा शोभं विसृजं ॥  
 जगन्महोदधौ खलौघ तावत्प्रमानं । प्रभो पाहि आपन्नसमीक्षो शोभो

श्लोक-रङ्गादिकमिदं श्लोकं विप्रो विप्रो हरेत्तपोयै ।

यं पठन्ति नरा भक्त्या तेषां शोभ्यः प्रसीदति ॥ ९ ॥

दो-सुनि विनयी सर्वथा सिव देवि विप्र अचरन्ति ।

पुनि मंदिरं नमज्जानी अहं द्विजवर वरं माय ॥ १०८ (क) ॥

जौ प्रसन्न भूय मो पर नय दीन पर वेंद ।

निज पदं भाति देहं प्रभु पुनि वेंसर वर देह ॥ १०८ (ख) ॥

तव माया बस जीव जडं सतत फिरइ सुखल ।

देहि पर कोष न करिअ प्रभु कृपा सिंधु भगवान ॥ १०८ (ग) ॥

संकर दीनदयाल अत्र एहि पर देहइ कृपाल ।

साप अचुप्रह देह देहि नय भो देहो काल ॥ १०८ (घ) ॥

एहि कर देह परम कल्याण । सोइ करइ अत्र कृपानिधान ॥

विप्रगिरा सुनि परहित धानी । एवमस्तु देहि अहं नमज्जानी ॥

जदपि कीन्ह एहि दान पाप । सँ पुनि दीन्ह कोप करि साप ॥  
 तदपि तुम्हारि साधता देखी । करिहउँ एहि पर कृपा निसेवी ॥  
 छमासील जे पर उपकारी । तेहिज मोहि प्रिय जया खराती  
 मोर आप दिज व्यर्थ न जाइहि । जन्म सहस अवस्य यह पाइहि ॥  
 जनमत मरत दुखह दुख होई । एहि खलपउ नहि व्यापिहि सोई  
 कवनहुँ जन्म मिटिहि नहि याना । सुनाहि सुद मम बचन प्रवाना ॥  
 खिपति-पुटी जन्म तव मयक । पुनि तँ मम सेवौ मन दयक ॥  
 पुटी प्रभाव अनुग्रह मोर । राम भगति उपजहि उरवोर ॥  
 सुत मम बचन सत्य अब भाई । हरिवोधन प्रत दिज सेवकाई ॥  
 अब जनि करहि प्रिय अपमाना । जानैसु संत अनंत समाना ॥  
 इदं कलिस मम मूल विमला । कालदंड हरि चक कराळा ॥  
 जो इन्ह कर मारा नहि मरई । विप्रद्रोह पावक सो जरई ॥  
 अस विवेक राखै मन माहीं । गुनह कहै जग दुल्लभ कछु नहि ॥  
 औरउ एक आशिषा मोरी । अपतिहेत गति होइहि तोरी ॥

टी०—सुनि निब बचन हेरावि गुर पवमसु इति भाषि ।

मोहि प्रयोधि गयउ गृह संसु चरन उर गति ॥ १०९ (क) ॥

भरित काल विधिनिहि जाइ मयउ सँ व्याल ।

पुनि प्रयास विजु सो तव तेजहुँ गाँऊँ कछु काल ॥ १०९ (ख) ॥

जोइ तव धरहुँ तजहुँ पुनि अनायास हेरिजान ।

निमि नवन एउ पाहिहई नम पाहिहई प्रयान ॥ १०९ (ग) ॥

सिद्ध राखी श्रुति नीति अहं नहिं पावा कैसे ।

एहि विधि धरेहु विविधि तनु त्याग न गयउ खोस ॥ १०९ (घ)

विजग देव नर जोइ तनु धरु ॥ तहै तहै राम भजन अनुसरु ॥  
एक सूल मोहि बिबर न काज ॥ गुर कर कोमल सोल सुभाज ॥  
वरम देह द्विज कै मैं पाई ॥ सुर दुर्लभ पुरान श्रुति गाई ॥  
बेलउ तहै बालकन्ह मीला ॥ करउ सकल खनियक लीला ॥  
प्रौढ़ भए मोहि पिता पढ़ावा ॥ समझउ सुनउ गुनउ नहिं भावा ॥  
मन ते सकल बासना भगी ॥ केवल राम चरन लय लगि ॥  
कहु खोस अस कवन अभागि ॥ खरी सेव सुरधनुहि त्यागि ॥  
प्रम मगन मोहि कहि कहु न सोइहई ॥ होउ पिता पढ़ाई पढ़ाई ॥  
भए कालवस जय पियु माता ॥ मैं जन गयउ भजन जनजाता ॥  
जहै जहै विपिन मुनीसर पावउ ॥ आश्रम जाइ जाइ सिव नावउ ॥  
ब्रह्मउ तिनहहि राम गुन गाहा ॥ कहहि सुनउ देखिबत खयानाहा ॥  
सुनत फिरउ हरि गुन अनुवादा ॥ अग्याहत गति संसु प्रसादा ॥  
छूटी विविधि दुषना गादी ॥ एक लालसा उर आति गादी ॥  
राम चरन गोरिज जग देखौ ॥ तब निज जन्म सफल करि लेखौ ॥  
जहि पूछउ सोइ मुनि अस कहइ ॥ ईसर सभ भूतमय अहइ ॥  
निगुन मत नहिं मोहि सोइहई ॥ समुन प्रस राति न सोइहई ॥

श्री०-गुर के बचन सुनि करि राम चरन मनु ला

खुपति जस गावत फिरउहन छन नव अवसर



मरविजय बट छायौ मुनि लोमस आसीन ।

देखि चरन सिरे नाथउ बचन कहैतु आनि दीन ॥ ११० (ख) ॥

मुनि मम बचन बिनीत भई मुनि कृपाल जगाराज ।

मोहि सादर पूजव भए छिज आवहु केहि काज ॥ ११० (ग) ॥

तब मैं कछा कृपालिनि तुम सवु म सुआन ।

सगुन ब्रह्म अवराधन मोहि कहैतु अगवान ॥ ११० (घ) ॥

तब मुनीस खपति गुन गाथा । कहै कछुक सादर खगनाथा ॥

ब्रह्मव्यान रत मुनि विद्यानी । मोहि परम अधिकारी जानी ॥

लगी करन ब्रह्म उपदेसा । अज अहैत अगुन हृदयेसा ॥

अकल अनीह अनाम अरुपा । अजमय गाम्य अवड अन्या ॥

मन गीतीत असल अजिनासी । निर्विकार निरवधि सुख रासी ॥

सो तैं ताहि ताहि नाहि भेदा । याहि बौचि इव गावहि बेदा ॥

विबिधि भाँति मोहि मुनि समुझावा । निगुन मत मम हृदय न आव

पुनि मैं कहैतु नाइ पद सीसा । सगुन उपासन कहैतु मुनीसा ॥

राम भगति जल मम मन पीना । किमि बिजयाइ मुनीस प्रवीना ॥

सोइ उपदेस कहैतु करि दया । निज नयनन्हि देखौ खराया ॥

भरि लोचन बिजोकि अवधेसा । तब मुनिहउ निगुन उपदेसा ॥

मुनि पुनि कहि हेरिकया अन्या । खहि सगुन मत अगुन निरुपा

तब मैं निगुन मत कर दूरी । सगुन निकपउ करि हठ भूरी ॥

उत्तर प्रतिउत्तर मैं कीन्हा । मुनि तन भए कोष के चीन्हा ॥



बो-तुरत भयउ मै काल तब गुनि मुनि पद सिर नई ।

सुमति राम खुषस मान हरावत चलेउ उदाई ॥ १२ (क) ॥

उसा जे राम चरन तब बिगत काम मरु कोष ।

निज प्रभुमय देखहि जगत केहि सन करहि बिरोध ॥ १३ (ख) ॥

सुख खोस नहि कछु सिधि दूषन । उर प्रेक खुबंखनिभूषन ॥

कृपासिधु मुनि मति करि मोरी । लोनी प्रेम परिच्छा मोरी ॥

मन बच कम मोहि निज जन जाना । मुनि मति गुनि कपी भगवाना

सिधि मम महेत सीलता देखी । राम चरन बिखास बिसेयी ॥

अति विषमय गुनि गुनि पछिताई । सादर मुनि मोहि लोने बोलै

मम परितोष विविधि विधि कीन्हे । हरषित रामभक्त तब दीन्हे ॥

बालकल्प राम कर ध्याना । कहेउ मोहि मुनि कृपानिधाना ॥

सुंदर सुखद मोहि अति भावा । सो प्रथमहि मै गुहाहि सुनावा ॥

मुनि मोहि कछुक काल तहै राखा । रामचरितमानस तब भाषा ॥

सादर मोहि यह कथा सुनाई । गुनि बोले मुनि गिरा सुहाई ।

रामचरित सर गुप्त सुहावा । सुमु प्रसाद ताल मै पावा ।

तोहि निज भगत राम कर जानी । ताले मै सब कहेउ बखानी ।

राम भगति लिनै के उर नाहीं । कबहुँ न ताल कहिअ लिनै पावै

मुनि मोहि विविधि भाँति समुझावा । मै सम्यग मुनि पद सिर नावा ॥



टी०-तौ यह तन मोहि प्रिय भयउ राम पद नैह ।

निज प्रभु दरसन पायउ गए सकल संहै ॥ ११४ (क) ॥

मासपरायण, उत्तमिषवा विश्राम

भगति पद दठ करि रहैउ टोनिह महोनिष साप ।

सुनि दुलैम वर पायउ देखहु भजन प्रताप ॥ ११४ (ख) ॥

जै अशि भगति जानि परिहरौ । केवल यान हैव भ्रम करौ ॥

ते जइ कामधन गहूँ लगि । खोजत आऊँ फिरिहै पय लगि ॥

सुनु खोस हरि भगति बिहाई । जे सुख चाहिहै आन उपाई ॥

ते सठ महोनिष प्रिय तरनी । पैर पार चाहिहै जइ करनी ॥

सुनि भुवि के बचन भवानी । बोलैउ गकड़ हरि भई यानी ॥

तब प्रसाद प्रभु मम उर माहौ । संसय सोक मोह भ्रम नाहौ ॥

सुनैउ पुनीत राम गुन आभा । तुम्हरी कपाँ लहेउ विश्रामा ॥

एक बात प्रभु पूछउ तोही । कहहु बुझाइ कपानिष मोही ॥

कहहिं संत सुनि बेट पुराना । नहिं कहु दुलैम यान समाना ॥

सोइ सुनि तुम्ह सन कहैउ गोसाहूँ । नहिं आदरहु भगति की नाहूँ ॥

यानहि भगतिहि अंतर केत । सकल कहहु प्रभु कपा निकेत ॥

सुनि उरगारि बचन सुख माना । सादर बोलैउ कमा सुजाना ॥

भगतिहि यानहि नहिं कहु भेटा । उभय हरिहै भव संभव खेटा ॥

नाथ मुनीस कहहिं कहु अंतर । सावधान सोउ सुनु बिहंगर ॥

यान विराम जोग विरामा । ए सब प्रकष सुनहु देखिजाना ॥

पुरुष प्रताप प्रबल सब भाँती । अजला अदल सहेज जई जाती  
 दो०—पुरुष त्यागि सक नारिहि जो बिरक्त मति धीर ।

न तु कामी बिषयावस बिमुख जो पद रविवीर ॥ १५ (क) ॥  
 सो०—सोच मुनि त्यागनिधान मृगनयनी बिषु मुख निरखि ।

बिषस होइ हेरिजान नारि बिहनुमाया भगत ॥ १५ (ख) ॥  
 इहो न पच्छयात कछु राखउ । बेट पुरान संत मत मावउ ॥

मोह न नारि नारि कै कथा । पञ्चगारि यह रीति अर्जुना ॥  
 माया भागि सुनई वृन्द दोऊ । नारियग जानई सब कोऊ ॥

पुनि रविवीरहि भागि पिआरी । माया खलु नदीकी बिचारी ॥  
 भागिहि सज्जकेल रघुराया । ताते होइ डरपति अति माया ॥

राग भागि निकपम निकपणी । बसइ जासु उर सदा अजापी ॥  
 तेहि बिबेक माया संकेचाई । करि न सकइ कछु निज प्रभुतई ॥

अस बिचारी जे मुनि ब्राम्हणी जाचाई भागि सकल सुख खानी  
 दो०—यह रहस्य रचिनाथ कर बेगि न जानइ कोइ ।

जो जानइ रघुपति ऊँ पाँ सपनई मोह न होइ ॥ १६ (क) ॥  
 औरउ त्याग भागि कर भेट सुनई सुप्रवीन ।

जो सुनि होइ राग पद प्रीति सदा आविछीन ॥ १६ (ख) ॥  
 सुनई तात यह अकथ कहानी । समझत बनई न जाइ बजानी ॥

हेरि अंस जीव अजिनासी । चेतन असल सहेज सुख रासी ॥  
 सो मायावस भयउ गोसाई । ब्रह्मा कीर मरकट की नई ॥

जइ चेतनहि ग्रंथि पुरि गइ । जदलि मया छूटत कठिनई ॥  
 तब ते जीव मयउ संसारी । छूट न ग्रंथि न होइ सुजारी ॥  
 श्रुति पुरान बहू कहैउ उपाई । छूट न अधिक अधिक अक्षरोंई  
 जीव हृदय तम मोह विषयी । ग्रंथि छूट किमि परइ न देखी ॥  
 अस संजोग हंस जग करई । तबहु कदाचित सो निरअरई  
 सात्त्विक अज्ञा धनु सुहाई । जौ हरि कपा हृदय बस आई ॥  
 जग तप ब्रत जग नियम अपरा । जे श्रुति कहै सुम धर्म अचारा ॥  
 तेइ पुन हरित चरै जग गाई । भाव बल्य सिद्ध पाइ येनाई ॥  
 नोइ निवृत्ति पाव निरवासा । निर्मल मन अहीर निज दासा ॥  
 परम धर्ममय पय दूहि माई । अवटै अनल अकाम बनाई ॥  
 तीष सकत तब जमा जुड़ावै । धुति सम जावत देइ जमावै ॥  
 सुदिता मयै विचार मयानी । दम अपार ख सुख सुबानी ॥  
 तब माथ काटि लेइ नवनीता । विमल विरगा सुभा सुपुनीता ॥  
 टी०—जोग अतिवि कोरि प्रगट तब कर्म सुमासुम लाई ।  
 छुटि सिरावै यान घुल समवा मल जाई आई ॥ १७० (क) ॥  
 तब विद्यानरुपिनी बुद्धि बिभट घुल पाई ।  
 चित दिआ भुरि धरै दंड समवा दिआदि बनाई ॥ १७० (ख) ॥  
 दीनि अवस्था दीनि गुन तेहि कपास व काटि ।  
 तैल वरीय सुवारि पुनि जाती कहे सुगारि ॥ १७० (ग) ॥

०-एहि बिधि लैसै दीप तेज रासि विद्यानमय ।

जागहिं जासु समीप जगहिं मर्यादिक सलम सब ॥ ११७ (ब) ॥

मसि इति वृत्ति अवलंब । दीपसिखा सोइ परम प्रबल ॥

तम अगुमव सुख सुप्रकाश । तब भव मूल भेद भ्रम नाश ॥

ल अविद्या कर परिवार । मोह आदि तम मिटइ अपार ॥

सोइ बुद्धि पाइ उजियारा । उर गहूँ बैसि ग्रंथि निरुआरा ॥

रत ग्रंथि जानि खगाराया । बिष अनेक करइ तब माया ॥

दि सिद्धि प्रेइ बडु भाई । बुद्धिहि लेम दिखवहिं आई ॥

ल बल छल करि जाहिं समीप । अंचल यात बुझावहिं दीप ॥

इ बुद्धि जाँ परम स्यानी । निन्ह तन चितव न अनहिं त जानी ॥

तेहि बिष बुद्धि नहिं बाधी । तौ बहोरि सुर करहिं उपाधी ॥

दी दार झरोखा नाग । तहूँ तहूँ सुर बैठे करि आग ॥

मात देखहिं बिषय बधारी । ते होठ देखि कपट उधारी ॥

स सो प्रभजन उर गहूँ जाई । तबहिं दीप विद्यान बुझाई ॥

श्रिय न छूटि मिटा सो प्रकाश । बुद्धि निकल भई बिषय बलाश ॥

इतिन्ह सुरन्ह न भयान सोहाई । बिषय भोग पर प्रीति सदहाई ॥

बिषय समीर बुद्धि कृत भोगी । तेहि बिधि दीप को बार बहोरी ॥

श्लो०-तब फिर जीव बिबिध बिबिध पावइ संसति कलस ।

हरि माया आनि दुखर तरि न जाइ बिहोस ॥ ११८ (क) ॥



कहेव कठिन समुझत कठिन साधव कठिन बिबेक ।

होइ दुनाच्छर न्याय जाँ पुनि प्रसूह अनेक ॥ १८ (ख) ॥  
 यान पंथ केषान के धारा परत खोस होइ नहिं वारा ॥  
 जो निर्विष पंथ निबूहई सो कैवल्य परम पद लहेई ॥  
 अति दुर्लभ कैवल्य परम पद । संत पुरान नाम आगम बर ॥  
 राम भजत सोइ मुकति गोसाई । अनदेखित आवइ बरिआई ॥  
 जिन मल विनु जल रहि न सकाई । कोटि भाँति कोउ करै उपाई ॥  
 तथा मोच्छ सुख सुख खराई । रहि न सकइ हरि भगति बिबाई ॥  
 अस विचारि हरि भगत सयाने । मुक्ति निरादर भगति छुमाने ॥  
 भगति करत विनु जतन प्रयास । संसृति मूल आवधा नास ॥  
 भोजन करिअ वेष्टित हित लगि । जिन सो असन पचवै जठरागि ॥  
 अहि हरिभगति सुराम सुखदाई । को अस भूत न जाहि सोदाई ॥  
 दो०—सेवक सेव्य भाव विनु भव न तरिअ उरगारि ।  
 भगई राम पद पंकज अस सिद्धांत विचारि ॥ १९ (क) ॥  
 जो चेतन कहँ जहँ करइ जहँहि करइ वैतन्य ।  
 अस समर्थ खुनायकहि भगई जीव ते वन्य ॥ १९ (ख) ॥  
 कहेउ यान सिद्धांत बुझाई । सुनई भगति मनि कै प्रसूताई ॥  
 राम भगति चितमानि सुंदर । बसइ गकड़ जाके उर अंतर ॥  
 परम प्रकास रूप दिन राती नहिं कछु चहिअ दिआ पत जाती ॥  
 सोइ दसिद निकट नहिं आवा । लोभ बाढ नहिं वाहि बुझावा ॥

प्रबल आश्रय तम मिटि जाई। होरहि सकल सलम समुदाई ॥  
 खल कामादि निकट नहि जाई। बसई भगति जाके उर माही ॥  
 मरल सुवासम अरि हित होई। तेहि मानि निज सुख पाव न कोई  
 व्यापहि मानस रोग न भरी। जिन्ह के बस सब जीव दुखारी ॥  
 राम भगति मनि उर बस जाके। दुख लखेस न समझे ताके ॥  
 चरु सिरामनि तेइ जग माही। जे मनि लागि सुजान कराही ॥  
 सो मनि जदहि प्राप्त जा अहई। राम कृपा निज कोउ लहई  
 सुख उपाय पाइवे कैसे। नर इतमान्य देहि भटभरे ॥  
 पावन पवत वेद पुरान। राम कथा कचिराकर नाना ॥  
 मनीं सज्जन सुमति किरासी। त्याग निराग नयन उरगारी ॥  
 भाव सहित खोजइ जो प्रानी। पाव भगति मनि सब सुख खानी  
 मोरे मन प्रभु अस बिखासा। राम ते अधिक राम कर दासा ॥  
 राम सिधु वन सज्जन धीरा। चंदन तरु देहि संत समीरा ॥  
 सब कर फल देहि भगति सुहाई। सो निज संत न काहै पाई ॥  
 अस विचारि जोइ कर सतसंगा। राम भगति तेहि सुखम बिहंगा  
 टी०—अब पयोनिधि मंदर त्याग संत सुर आहि ।  
 कथा सुधा मधु काहहि भगति मधुरता जाहि ॥ १२० (क) ॥  
 बिरति चम अंस त्याग मंद लेख मोहि दिनु माहि ।  
 अब पाइअ सो देहि भगति देखि खोस बिचारि ॥ १२० (ख) ॥  
 पुनि सप्रेम बोलेउ खगारु । जो कपाल मोहि ऊपर भाऊ ॥

नाथ मोहि निज सेवक जानी। सम प्रखमम कहहु ब्रह्मानी ॥  
 प्रथमहि कहहु नाथ मतिधीरा। सग ते दुर्लभ कवन सरीरा ॥  
 बह दुख कवन कवन सुख प्राप्ति। सोउ संछेपहि कहहु विचारी ॥  
 संत अवत मरम गुनहु जानहु। तिनहु कर सहज सुभाउ ब्रह्मनहु ॥  
 कवन पुन्य श्रुति विदित विचारा। कहहु कवन अव परम कराला ॥  
 मानस रोग कहहु समझाहु। गुनहु सर्वथ कप अपिधाहु ॥  
 ताल सुनहु सादर अति प्रीति। मँ संछेप कहहु यह नीति ॥  
 नर तन सम नाहि कवनिउ देही। जीव चराचर जानव तेही ॥  
 नरक स्वर्ग अपवर्ग निसेनी। ज्ञान विराग भगति सुम देनी ॥  
 सो तनु धरि हरि भजहि न जे नर। होहि विषय रत मंद मंद नर ॥  
 काँच किरिच बदलै ते ठेही। कर ते डारि परममनि देही ॥  
 नाहि दखि सम दुख जग माही। संत मिलन सम सुख जग नाही ॥  
 पर उपकार बचन मन काया। संत सहज सुभाउ खगारया ॥  
 संत सहहि दुख पाहिन जगती। पाहुँख हेतु अवत अमारी ॥  
 भूँत तन सम संत कृपाला। पाहिन निति सह विपति विचारा ॥  
 सन देव खल पर बंधन करहु। खल कटहु विपति सहि मरहु ॥  
 खल विनु खारय पर अपकारी। आहि मूषक इव सुनु उरगारी ॥  
 पर संपदा विनासि नखाही। जिनिस सति वृति हिम उपल विजाही ॥  
 दुष्ट उदय जग आरति हेतु। जया प्रसिद्ध अपम ग्रह केतु ॥  
 संत उदय संत सुखकारी। निख सुखद जिनिस इंदु तमारी ॥  
 परम धर्म श्रुति विदित आहिष। पर निदा सम अव न गरीषा ॥

एहि बिधि सकल जीव जग रोगी । सो कहै रघु मय प्रीति विद्योगी ॥  
 भेषज पुनि कोटिन्ह नहि रोग जाहि हरेजान ॥ १२१ (ख) ॥  
 तेम धर्म आचार तप त्याग जस जप दान ।  
 पौषहि संत जौ कहुँ सो किम छहै समधि ॥ १२१ (क) ॥  
 दू०—एक व्याधि बस नर मरिहै ए असुखि बहूँ व्याधि ।

जुग बिधि उपर मत्सर अविशेका । कहै छी कहेँ कुरोग अनैका ॥  
 देना उदरवृद्धि अति भारी । बिबिध दुषना नवन विजारी ॥  
 अहंकार अति दुखद उमकआ । दम कपट मद मान नैकअ ॥  
 पर सुख देखि जगनि सोइ छहै । कब दुखता मन कटिछहै ॥  
 समता दाई कहुँ इराधाई । हरष बिषाद गारहै बहूँताई ॥  
 विषय मनोरथ दुगुम नाग । ते सब सुख नाम को जग ॥  
 प्रीति करहि जौ दीनिउ भाई । उपजइ सम्यगत दुखदाई ॥  
 काम बल कफ लोभ अघार । क्रोध पित नित छाती जग ॥  
 मोह सकल व्याधिन्ह कर भूँज । निन्ह ते पुनि उपजहि बहूँ सुख ॥  
 सुनहुँ तब अग मानस रोग । निन्ह ते दुख पावहि सब लोग ॥  
 सग कै निदा जे जहँ करही । ते समगारुइ होइ अवतरही ॥  
 होहि उदक संत निदा रत । मोह निरा प्रिय ग्यान मान गत ॥  
 सुरभीति निदक जे अभिमानी । रौख नरक परहि ते प्रानी ॥  
 हज निदक बहूँ नरक भोग करि । जग जनमइ गयस सरीर धरि ॥  
 हर गुर निदक दाईर होई । जन्म सहस पाव तन सोई ॥

मानस रोग कष्टक मं गण । दृष्टिं सय कं लखि विरलेन्द पाए  
 जाने ते: छीजहि कष्ट पापी । नास न पवहि जन परितपा ॥  
 विषय कुपय्य पाइ अंकरे । मुनिहु दृढय का नर यापरे ॥  
 राम कृपा नासहि सय रोगा । जाँ एहि माँति जनै संजोगा ॥  
 सदगुर नैद वचन विस्वासा । संजम यह न विषय कै आसा ॥  
 रघुपति मागि सजीवन मूरी । अर्जुपान भद्रा मति परी ॥  
 एहि विधि पलेहि सो रोग नसाही । नाहि न जनन कोटि नहि जाही  
 जानिय तव मन विरज गोसाँही । जय जय त्रिलोचन अधिकाई  
 सुमति दुधा पाटइ नित नई । विषय आस दुर्बलता राई ॥  
 विमल अ्यान जल जन सो नहई । तय रह राम भगति उर छहई ॥  
 सिव अज सुकसनकादिक नारद । जे मुनि ब्रह्म विचार विषारद ॥  
 सब कर मत लगानायक एहा । करिअ राम एद पंकज नेहा ॥  
 भूति पुरान सब ग्रंथ कहेही । रघुपति मागि विना सुख नाही  
 कमठ पीठ जामहि वर याप । ब्रह्मा सुत वर कहिहि मारा ॥  
 फेलेहि नम वर बह्विधि फेला । जीव न छह सुख हरि प्रतिकला  
 योगा जाइ वर भुजाजल पाना । वर जामाई सब सीस विधाना ॥  
 अधकाठ वर रनिहि नसावै । राम विमुख न जीव सुख पावै  
 दैम ते धनल प्रगट वर दहै । विमुख राम सुख पाव न कोइ ॥  
 १०-बारि मय पल दहै वरसिकता ते वर लेल ।

विषु हरि भजन न भव तरिअ यह सिद्धान्त अपेख ॥ १२२ (क) ॥



दी०—आसु नाम भव भयन हरन धीर अथ सूँ ।

सो केपाल मोहि तो पर सदा रहउ अचकल ॥ १२४ (क) ॥

सुनि सुखि के वचन सुभ होख राम पर नहे ।

बोलेउ प्रेम सहित नियो गच्छ विगत सहेह ॥ १२४ (ख) ॥

मैं कतकल भयउ तब गनी । सुनि खीर भगति रस सानी ॥  
राम चरन नैनन रति भई । माया जनिन विपति सब गई ॥  
मोह जलधि गहिर उमह भए । मो कहै नाथ विविध सुख दए ॥  
मो पहिं होइ न प्रति उपकार । बंदउ तब एव गयहिं गरा ॥  
पूरेन काम राम अनुरागी । उमह सम तान न कोउ बड़भगी  
संतपिय सति गिरि धरनी । परहित होइ सगह कै करनी ॥  
संत हरेय नवनीत समान । कइ कविन्ह पर कहै न जाना ॥  
निज परिणाम दखइ नवनीता । पर दुख दखहिं संत सुपनीता ॥  
जीवन जन्म सुफल भूम भयक । तब प्रसाद संसय सब भयक ॥  
जानेहु सदा मोहि निज किंकर । पुनि पुनि उमा कहइ विहंगमर ॥  
दी०—आसु चरन सिद्ध नाइ कोरि प्रेम सहित मतिधोर ।  
गयउ गच्छै सुकंठ तब हरेयु गानि खीबीर ॥ १२५ (क) ॥

धन्य धरि सोई जेन सतसुखा । धन्य जन्म द्विज भगति अमुखा ।  
 सो धन धन्य प्रथम गति जाकी । धन्य पुन्य रत भगति सोई पाकी ।  
 धन्य सो भूषु नीति जो करई । धन्य सो द्विज निज धर्म न टरई ।  
 धन्य देस सो जई सुरसरी । धन्य गति पवित्रत अनुसरी ।  
 सोई कति कोविद सोई रत्नधारी । जो छल छलिं भजई रघुनारी ।  
 नीति निपुन सोई परम स्याना । श्रुति सिद्धांत नीक तेहि जाना ।  
 धर्म परायन सोई कुल जाता । राम चरन जाकर मन राता ।  
 सोई सर्वानु गूनी सोई श्यामा । सोई महिं महिंत पंडित दत्ता ।  
 जे यह कथा निरंतर सुनहिं मानि विस्वास ॥ १२३ ॥

टी०-सुनि दुर्लभ हरि भगति नर पावहिं विनहिं प्रयास ।  
 सो रघुनाथ भगति श्रुति गढ़ । राम कर्पा काहूँ एक पाई ।  
 जहँ छलि साधन वेद बखानी । सब कर फल हरि भगति भवान ।  
 भूत दया द्विज गुर सेवकाई । निर्या निनय निबेक बड़ाई ।  
 नाना कर्म धर्म भव दाना । संजम दम जप तप मख नाना ।  
 तीर्थान साधन समुदाई । जोग निराम भवान निपुनाई ।  
 मन कम बचन जनिअ अव जाई । सुनहिं जे कथा भवन मन लाई ।  
 प्रगत कल्पतरु ककना पुंजा । उपजई प्रीति राम पद कंजा ।  
 कहैऊ परम पुनीत इतिहासा । सुनत भवन छूटहिं भवपासा ।  
 विनु हरि कृपा न होई सो गावहिं वेद पुरान ॥ १२५ (ख) ॥  
 निरिज संतसमागम सम न लाभ कहु आन ।



टी०-सो कैल धन्य उमा सुव जात पूज्य सुप्रीत ।

श्रीरघुवीर परायण जेहि नर उपज बिनीत ॥१२७॥

मति अजुल्य कथा सँ भाषी । जद्यपि प्रथम गुप्त करि राखी ॥

तब मन प्रीति देखि अधिकारु । तब सँ रघुपति कथा सुनारु ॥

यह न कहिअ सठही हठसीलहि । जो मन लाइ न सुन हरिलीलहि ॥

कहिअ न जोधिअहि कोधिहि कामहि । जो न मजइ सवर । चर स्वाभिहि ॥

हिज डोहिहि न सुनइअ कजूरु । सुरपति सरिस डोइ नप जगूरु ॥

राम कथा के तेइ अधिकारी । जिनहूँ केँ सतसंगति आति प्यारी ॥

गुर पद प्रीति नीति रत जेई । हिज सेवक अधिकारी तेई ॥

ता कहूँ यह प्रियेय सुखदारु । जाहि प्रानपिय श्रीरघुमारु ॥

टी०-राम चरन रति जो चह अथवा पद निर्वान ।

भाष साहित सो यह कथा करव अवन पुट पान ॥१२८॥

राम कथा गिरिजा सँ बरनी । कलि मल समान मनोमल हरनी ॥

संसति रोग सजीवन मूरी । राम कथा गावहि श्रुति सूरी ॥

एहि मरुँ कविचर सत सोपाना । रघुपति भगति केर पंधाना ॥

आति हरिकृपा जाहि पर डोई । पाऊँ देख एहिं मारग सोई ॥

मन कामना सिद्धि नर पावा । जे यह कथा कपट लजि गावा ॥

कहहिं सुनहिं अनुमोदन करही । ते गोपद डेव भवनिधि तरही ॥

सुनि सज कथा हृदय अति भारु । गिरिजा जोली गिरा सुहरु ॥

नाथ क्यूँ मम गत सदेह । राम चरन उपजेउ नव नेह ॥

॥ १०-सुं कृतकृत्य भयुः अथ तव प्रसादं विन्देत् ।

उपजी राम भगति दृढं बीजे सकल कलेस ॥ २९ ॥

यह सुम सुं उमा संजादा । सुख संपादन समन विषादा ॥

यय भंजन भंजन सदेह । जन रंजन सजन प्रिय एह ॥

राम उपासक जे जग माहीं । एहि सम प्रिय तिन्ह के कछु नाहीं

विपति केषुं जयामति गावा । सुं यह पावन चरित सुहेवा ॥

एहि कलिकाल न साधन दूजा । जोग जय जप तप पूजा ॥

रामहि सुमिरिअ गाइअ रामहि । संतत सुनिअ राम गुन ग्रामहि ॥

रासु पतित पावन बड़ बाना । गावाहि कलि अति संत पुराना ॥

गाहि भजहि मन तंज कटिछाई । राम भजै गति केहि नहि पाई ॥

॥ १०-पाई न केहि गति पतित पावन राम भजि सुनु सठ मना ।

गानिका अजामिल व्याध गीध गजादि खल नहि घना ॥

आमीर जमान कियत खस स्वपचाहि अति अथरुप जे ।

कहि नाम बारक दोष पावन होहिं राम नमामि ते ॥ ११ ॥

रघुवंसभूषन चरित यह नर कहहिं सुनहिं जे गावहों ।

कलि मल मनोमल छोड़ि विनु अम राम धाम सिधवाहों ॥

सत पंच चौपाई मनोहर जानि जो नर उर धरे ।

दासन अविद्या पंच जलित विकार श्री रघुवर होरे ॥ १२ ॥

सुंदर सुजान केषा निधान अनाथ पर कर प्रीति जो ।

सो एक राम अकाम हित निबानप्रद सम आन को ॥

( उत्तरकाण्ड समाप्त )

समस्तः समाप्तः ।

इति श्रीमद्रामचरितमानस सकलकविकण्ठविश्वसे

नमोऽर्पयाम, नमो विद्याय ॥

मासपारयाम, नमो विद्याय ।

ते संसारपवङ्गयोरिकिरणैर्ह्यनित्यं नमोऽर्पयामः ॥ २ ॥

श्रीमद्रामचरितमानसमिदं भक्त्यावगाह्यते य

मायासाहसजगदहं सुविमलं प्रभासिष्ये सुभक्तम् ।

पुण्यं पापहरे सर्वं शिवकरं विज्ञानमस्तिक्यदं

मायावद्विषयं चकार तुलसीदासजया नमस्तस्य ॥ १ ॥

मया तद्वृत्तान्तमनिरतं स्नानस्नानमनिरतं

श्रीमद्रामपदाब्जमस्तिक्यमनिरतं प्राप्स्ये तु रामायणम् ।

श्री०-महर्षे प्रभुणा कृतं सुकविना श्रीशम्भुना दत्तम्

लिखितं रघुनाथ चरितं प्रियं जगद् मोहि राम ॥ १३० (ख) ॥

कामिनि नारि पिबति लिखितं जगद् मोहि प्रियं लिखितं राम ।

अस्य लिखितं रघुवंशमनिरतं विष्णुस भव श्री ॥ १३० (क) ॥

दी०-मो राम दीन न दीन हितं तुष्टं समान रघुवीर ।

प्रायो परम विद्यासु राम समान प्रभु नारो कर्तुं ॥ १३० ॥

जगत् कथा खलस्य ते मतिमदं तुलसीदास ॥ १३० ॥



०.२	महिला साइज मूल
०.५	मोटा साइज-मूल
०.४	महिला साइज-सटीक
०.७	मोटा साइज-सटीक
०.७१	हैटैकॉर सटीक
<u>श्रीमत्सुखामास</u>	
०.१	सुन्दरकाण्ड
०.१	कवल मूल
०.३१	कवल भाषा
०.०१	सटीक (दो लिटरेसि)
<u>बाल्याकौय रामायण</u>	
०.१	एकदश स्कंध
०.०२	श्रीमद्भागवतमूल
०.५	ग्राम-सुधासगर
०.४	मूल-सटीक
०.५	" मूल मोटा साइज
०.००१	भागवत-सुधासगर
०.००२	भागवत सटीक
०.००२	श्रीशुक-सुधासगर
<u>श्रीमद्भागवत</u>	
०.५०	सनजिवात-श्रीक०

०.००	श्रीशुक-सुधासगर
०.५१	महाभारत-एडिच्य
०.५०	महाभारत-नामाजिक०
०.००	हैटैकॉर सटीक
०.५०	अजिवातसहस्रनामोच्चारण
०.००	कण्डसु शान्तिपर्वतक
०.००	विशदसु शान्तिपर्वतक
०.००	आदि, समा, वनपर्व
<u>श्रीमद्भागवतमूल</u>	
०.५०	शान्तिपर्वतक
	अजिवातसहस्रनामोच्चारण-
०.५३१	शान्तिपर्व
०.००७	शान्तिपर्वतक
०.५०	उद्योग, श्रीमद्भागवत
०.५०	वन, विशदपर्व
०.३३१	आदि, समापर्व
<u>महाभारत-सटीक</u>	
०.३५	द्वितीयसहस्रली-मूल
०.००	द्वितीयसहस्रली सटीक
०.२५	मोटा साइज
	द्वितीयसहस्रली-मूल,





[illegible]



६.०	कलकत्ता
६.०	पुणे
६.०	मुंबई
६.०	अहमदनगर
२.० ८	पुणे
२.० ८	पुणे

### मुंबई-पुणे

६.० ८	पुणे
६.० ८	पुणे
५.० ८	(पुणे) मुंबई
५.० ८	मुंबई-पुणे
५.० ८	(पुणे) मुंबई
५.० ८	मुंबई-पुणे
०.२०	मुंबई-पुणे
०.२०	मुंबई-पुणे
०.३०	पुणे
०.३०	पुणे

### मुंबई-पुणे-अहमदनगर

०.३०	अहमदनगर
०.३०	अहमदनगर
०.३०	अहमदनगर

०.३०	अहमदनगर
५.० ८	अहमदनगर
५.० ८	अहमदनगर
५.० ८	अहमदनगर

### मुंबई-पुणे-अहमदनगर

५.० ८	अहमदनगर
५.० ८	अहमदनगर
५.० ८	अहमदनगर
५.० ८	अहमदनगर
५.० ८	अहमदनगर
५.० ८	अहमदनगर

### मुंबई-पुणे-अहमदनगर

०.३०	अहमदनगर
५.० ८	अहमदनगर
५.० ८	अहमदनगर
५.० ८	अहमदनगर
५.० ८	अहमदनगर
५.० ८	अहमदनगर
५.० ८	अहमदनगर
५.० ८	अहमदनगर

### मुंबई-पुणे-अहमदनगर



(२५५५) १५५५ ०५, १५५५-१५५५-१५५५

॥ अथ पुनर्लोकानां नामकारिकां लिखे ॥

[illegible]

